
अलौकिक दुनिया
के
रहस्यमय शब्द
Mysterious words of the supernatural world
L.SPENCE

अलौकिक दुनिया

के

रहस्यमय शब्द

अलौकिक दुनिया के रहस्यमय शब्द

Mysterious words from the supernatural world

<u>AUTHOR</u>

L.SPENCE

प्रस्तुतकर्ता : वी.सी.सिंह.

अलौकिक दुनिया

के

रहस्यमय शब्द

1.अबादोन **:** (विनाशक)। सातवें प्रधान क्रम के राक्षसों का मुखिया। अबादोन सेंट जॉन द्वारा सर्वनाश में टिड्डों के राजा को दिया गया नाम है। उसे कभी-कभी विनाशकारी देवदूत के रूप में माना जाता है।

2.अबादी **(**जीनेट**) :** गैसकोनी के सिबोरे गांव की एक युवा जादूगरनी। एक दिन वह अपने पिता के घर में सो रही थी, जबकि धार्मिक अनुष्ठान हो रहा था। एक राक्षस ने मौके का फायदा उठाते हुए उसे शैतान के विश्राम-दिवस पर ले गया, जहां वह जल्दी ही खुद को एक बड़ी भीड़ के बीच में पाती है। उसने देखा कि मुख्य राक्षस के सिर पर जानूस की तरह दो चेहरे थे।

वह उत्सव में शामिल नहीं हुई और उसे उसी तरह से उसके घर ले जाया गया, जिस तरह से उसे वहां से ले जाया गया था। दहलीज पर उसे अपना ताबीज मिला, जिसे राक्षस ने उसे ले जाने से पहले सावधानी बरतते हुए उसके सीने से निकाल लिया था। उसने जो कुछ भी बुरा हुआ था, उसे कबूल किया, अपनी जादू-टोना त्याग दिया और इस तरह खुद को चुड़ैलों और जादूगरों के आम दुषपरिमाणों से बचा लिया।

3.अबारिल**:** एक सीथियन, अपोलो का उच्च पुजारी और प्रसिद्ध जादूगर। उसने अपने गुरु अपोलो की इतनी चापलूसी से प्रशंसा की कि भगवान ने उसे एक सुनहरा तीर दिया, जिस पर वह एक पक्षी की तरह हवा में उड़ सकता था, इसलिए यूनानियों ने उसे एरोबेट कहा। पाइथागोरस, उनके शिष्य ने उनसे यह तीर चुरा लिया, और इसकी सहायता से कई अद्भुत कारनामे किए। अरबोट्स

भविष्य की भविष्यवाणी करते थे, तूफानों को शांत करते थे, बीमारी को भगाते थे, और बिना खाए-पीए रहते थे।

उन्होंने पेलोप्स की हड्डियों से मिनर्वा की एक मूर्ति बनाई, जिसे उन्होंने ट्रोजन्स को स्वर्ग से उतरे एक ताबीज के रूप में बेच दिया। यह प्रसिद्ध पैलेडियम था, जिसने उस शहर की रक्षा की और उसे अभेद्य बना दिया, जिसमें यह स्थित था।

4. अब्युम **:** भूत-प्रेत से मुक्ति दिलाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक जड़ी-बूटी। इस पर क्रॉस का चिन्ह बना होता है और इसे घर के चारों कोनों पर लटका दिया जाता है।

5. एडलबर्ट**:** आठवीं शताब्दी का एक फ्रांसीसी छद्म रहस्यवादी।उसने दावा किया कि एक देवदूत ने उसे पृथ्वी के सभी भागों से असाधारण पवित्रता के अवशेष लाए हैं।उसने दावा किया कि वह भविष्य की भविष्यवाणी करने और विचारों को पढ़ने में सक्षम है।

वह लोगों से कहा करता था, "मुझे पता है कि तुमने क्या किया है," "स्वीकारोक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। शांति से जाओ, तुम्हारे पाप क्षमा हो गए हैं।"उसके तथाकथित "चमत्कारों" ने उसे भीड़ का भय दिलाया, और वह अपने नाखूनों और बालों के लटों को शक्तिशाली ताबीज के रूप में देने की आदत में था।

उसने अपने नाम पर एक वेदी भी स्थापित की थी। अपने जीवन के इतिहास में, जिसका केवल एक अंश ही बचा है, वह हमें अपने जन्म के समय एक देवदूत द्वारा दी गई चमत्कारी शक्तियों के बारे में बताता है।उसने अपने शिष्यों को एक पत्र दिखाया जिसके बारे में उसने घोषणा की कि उसे सेंट माइकल के हाथों से यीशु मसीह की ओर से लाया गया था।

6. एडम**, (**एल**'**एब्बे**):** लगभग उसी समय जब टेम्पलर्स को फ्रांस से खदेड़ा जा रहा था, शैतान विभिन्न वेश में अब्बी एडम के सामने प्रकट हुआ, जो अपने मठ के एक सेवक के साथ वॉक्स डे सेर्नय के अपने मठ के एक निश्चित भाग की यात्रा कर रहा था। दुष्ट आत्मा ने पहले योग्य अब्बी की प्रगति का विरोध किया, जो बर्फ से सफ़ेद एक पेड़ के रूप में था, जो अकल्पनीय तेज़ी से उसकी ओर बढ़ा।

अब्बी का घोड़ा डर से काँप उठा, जैसा कि नौकर भी था, लेकिन अब्बी ने खुद क्रॉस का चिन्ह बनाया, और पेड़ गायब हो गया।

अच्छे आदमी ने निष्कर्ष निकाला कि उसने शैतान को देखा था, और वर्जिन को उसकी रक्षा करने के लिए बुलाया। फिर भी, शैतान कुछ ही देर में एक उग्र काले शूरवीर के रूप में फिर से प्रकट हुआ। "भाग जाओ," अब्बी ने कहा। "तुम मेरे भाइयों से दूर मुझ पर हमला क्यों कर रहे हो?" शैतान ने एक बार फिर उसे छोड़ दिया, केवल एक लंबे, पतली गर्दन वाले लंबे आदमी के रूप में वापस आने के लिए।

एडम ने उससे छुटकारा पाने के लिए उसे अपनी मुट्ठी से मारा। दुष्ट आत्मा सिकुड़ गई और एक छोटे से लबादे वाले भिक्षु की तरह दिखने लगी, जिसके कपड़ों के नीचे एक चमकदार हथियार था। उसकी छोटी-छोटी आँखें उसकी टोपी के नीचे से झांकती और झाँकती हुई दिखाई दे रही थीं।

उसने अपने हाथ में पकड़ी हुई तलवार से अबे पर वार करने की बहुत कोशिश की, लेकिन बाद वाले ने क्रॉस के चिह्न के साथ वार को पीछे हटा दिया। राक्षस बदले में एक सुअर और एक लंबे कान वाला गधा बन गया। अबे, जाने के लिए अधीर, जमीन पर एक घेरा बनाकर बीच में एक क्रॉस बना दिया। तब शैतान को थोड़ी दूर हटना पड़ा। उसने अपने लंबे कानों को सींगों में बदल दिया, जिससे अबे* को उसे साहसपूर्वक संबोधित करने में कोई बाधा नहीं हुई।

उसकी साफगोई से नाराज होकर शैतान ने खुद को एक बैरल में बदल लिया और बगल के खेत में लुढ़क गया। कुछ ही देर में वह एक गाड़ी के पहिये के रूप में वापस लौटा और भाई को खुद को बचाने का मौका दिए बिना उसके शरीर पर भारी रूप से लुढ़क गया, हालांकि, उसे कोई चोट नहीं पहुंचाई। उसके बाद उसने उसे शांति से अपनी यात्रा जारी रखने के लिए छोड़ दिया।

7. झील का अडाने**:** एक राक्षस जो पेरेदुर की माबिनोगी किंवदंती में वर्णित है। पेरेदुर को एक जादुई पत्थर मिलता है जो उसे अदृश्य बना देता है, और इस तरह वह इस राक्षस को मारने में सफल हो जाता है, जो प्रतिदिन यातनाओं के राजा के महल के निवासियों को मारता था।

8. सिद्ध पुरुष **:** वे होते हैं जो कठोर आत्म-त्याग के पश्चात और निरंतर आत्म-विकास के माध्यम से, दुनिया के शासन में सहायता करने के लिए खुद को तैयार कर लेते हैं। जिस माध्यम से यह पद प्राप्त किया जाता है, उसे लंबा

और कठिन कहा जाता है, लेकिन अंत में सफल व्यक्ति उस उद्देश्य को पूरा कर लेता है जिसके लिए उसे बनाया गया था और वह अपने साथियों से आगे निकल जाता है।

सिद्धों की गतिविधियाँ बहुविध होती हैं, जो बाकी मानवजाति की गतिविधियों की दिशा और मार्गदर्शन से संबंधित होती हैं। थियोसोफिस्ट कहते हैं कि उनकी शक्तियों की तरह उनका ज्ञान भी मनुष्य से कहीं अधिक है, और वे आध्यात्मिक और भौतिक दोनों क्षेत्रों में शक्तियों को नियंत्रित कर सकते हैं, और कहा जाता है कि वे सदियों तक अपने जीवन को लम्बा खींच सकते हैं। उन्हें ग्रेट व्हाइट ब्रदरहुड, ऋषि, रहट या महात्मा के रूप में भी जाना जाता है।

जो लोग दुनिया की बेहतरी के लिए ईमानदारी से काम करना चाहते हैं, वे सिद्धों के प्रशिक्षु या चेले बन सकते हैं, जिस स्थिति में बाद वाले को "मास्टर" के रूप में जाना जाता है, लेकिन प्रशिक्षु को पहले आत्म-त्याग और आत्म-विकास का अभ्यास करना चाहिए ताकि वह पर्याप्त रूप से योग्य बन सके। गुरु अन्यथा अप्राप्य शिक्षण और ज्ञान प्रदान करता है, और संचार और प्रेरणा द्वारा प्रशिक्षु की मदद करता है। मैडम ब्लावात्स्की ने आरोप लगाया कि वह इन गुरुओं की प्रशिक्षु थी, और दावा किया कि वे तिब्बती पहाड़ों में रहते थे। मध्ययुगीन जादूगरों और कीमियागरों द्वारा अपने विज्ञान के मास्टर को दर्शाने के लिए भी निपुण शब्द का इस्तेमाल किया गया था।

9. अदहाब**-**आल **:** मुसलमानों का यातना स्थल, जहां दुष्टों को अंधेरे फ़रिश्ते मुनकर और नकीर द्वारा यातना दी जाती है।

10. शपथ**:** भूत भगाने का एक सूत्र जिसके द्वारा दुष्ट आत्मा को, ईश्वर के नाम पर, वही करने या कहने का आदेश दिया जाता है जो भूत भगाने वाला उससे चाहता है।

11. एड्रामेलेह **:** विएरियस (q.v.) के अनुसार, नरकीय क्षेत्रों का चांसलर। दानव राजा की अलमारी का रक्षक और शैतानों की उच्च परिषद का अध्यक्ष। उसे असीरियन शहर सेफरवैम में पूजा जाता था, जहाँ उसकी वेदी पर बच्चों को जलाया जाता था। रब्बियों का कहना है कि वह खुद को खच्चर या कभी-कभी मोर के रूप में दिखाता है।

12. एरोमेनी: वायुमंडलीय घटनाओं के अवलोकन द्वारा भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने की कला, जैसे कि, उदाहरण के लिए, जब किसी महान व्यक्ति की मृत्यु धूमकेतु के दिखने से होती है। फ्रैंकोइस डे ला टूर ब्लैंच कहते हैं कि एरोमेनी हवा में दिखाई देने वाले भूतों के माध्यम से भाग्य बताने की कला है, या राक्षसों की सहायता से भविष्य की घटनाओं की पुनः प्रस्तुति है, जो बादलों पर एक जादुई लालटेन की तरह प्रक्षेपित की जाती हैं। "गड़गड़ाहट और बिजली के लिए," वे कहते हैं, "ये शगुन से संबंधित हैं, और आकाश और ग्रहों का पहलू ज्योतिष विज्ञान से संबंधित है।"

13. एटल्टेस या एक्वुलियस: जादुई गुणों वाला एक कीमती पत्थर, जो लोहे के ऑक्साइड और थोड़े सिलेक्स और एल्यूमिना से बना होता है, और कहा जाता है कि यह चील के पेट या गर्दन में पाया जाता है। माना जाता है कि यह बीमारी को ठीक करता है और असमय जन्म को रोकता है। गर्भपात को रोकने के लिए इसे बांह पर और प्रसव में सहायता के लिए जांघ पर बांधना चाहिए।

14. बंटू जनजातियाँ : ज़ुलु और अन्य बंटू जनजातियों में जादू टोना का पंथ प्रचलित था, लेकिन गुप्त रूप से। पता लगाने के परिणाम भयानक थे। 'चुड़ैल का पता लगाने के लिए, चुड़ैल खोजने वालों की एक जाति की स्थापना की गई थी, जिन्हें "चुड़ैल डॉक्टर" कहा जाता था, जिनका कर्तव्य अपराधियों को "सूंघना" था। ये लगभग सभी महिलाएँ थीं।

लेडी बार्कर कहती हैं, "यह समझना मुश्किल नहीं है," इंग्लैंड के सुदूर इलाकों में बहुत पहले तक जो अंधविश्वास और क्रूरता थी, उसे ध्यान में रखते हुए कि ऐसी महिलाएं जंगली लोगों के बीच कितनी शक्तिशाली हो जाती हैं, या दुश्मन से छुटकारा पाने का कितना लुभावना अवसर प्रदान कर सकती हैं। बेशक वे असाधारण व्यक्ति हैं; औसत मोटी, मेहनती काफिर महिलाओं की तुलना में अधिक चौकस, अधिक चतुर और अधिक निडर, साथ ही उनमें महान शारीरिक शक्तियों और मजबूत उन्मादी प्रवृत्तियों का विरोधाभासी मिश्रण होता है। वे खुद को उन्माद की हद तक काम करती हैं, और अपनी अलौकिक समझ पर उतना ही दृढ़ विश्वास करती हैं जितना कि ज़ूलस के कांपते हुए घेरे में कोई भी व्यक्ति, जिसके लिए उनके द्वारा उठाए गए व्हिस्क का एक स्पर्श तत्काल मृत्यु की सजा है।

ज़ुलु चुड़ैल-खोजकर्ताओं के साथ काली लड़कियाँ और महिलाएँ होती हैं, जो ग्रीक कोरस की तरह ताली बजाती हैं और एक धीमी नीरस धुन पर नाचती हैं, जिसका

माप और लय कभी-कभी एक मोहरे और एक झूले के साथ बदल जाती है। औपचारिक पोशाक भी उतनी ही ज़रूरी है क्योंकि ऐसी चीज़ें भीड़ की कल्पना को सीधे आकर्षित करती हैं और उन्हें नेक्रोमैंसर के उपकरणों से आसानी से प्रभावित होने के लिए तैयार करती हैं।

"इसिनयांगा", "अबंगोमा" या "चुड़ैल खोजकर्ता", जिनका वर्णन लेडी बार्कर ने हमारे लिए किया है, ने ऐसी पोशाक पहनी हुई थी जो लंदन के थिएटर को गौरवान्वित कर सकती थी। उनमें से एक का चित्रण करना पर्याप्त होगा, जिसका नाम नोज़िनयांगा है। उसका भयंकर चेहरा, गाल और माथे पर लाल रंग के धब्बे से भरा हुआ था, जो आंशिक रूप से साकाबुला पक्षी के लंबे पंखों के हेलमेट जैसे पंख से ढका हुआ था। अपने दाहिने हाथ में उसने अस्सेगाई या लांस का एक हल्का-सा बंडल उठाया हुआ था और अपनी बाईं बांह पर धब्बेदार बैल की खाल से बनी एक छोटी और सुंदर ढाल लटकाई हुई थी।

उसने दो बड़े रूमालों से बना पेटीकोट पहना हुआ था। लेकिन अगर उसकी स्कर्ट में थोड़ी-बहुत सजावट थी, तो वह कमी मोतियों के हार, बकरी के बालों से बने किनारों और लाल रंग के लटकनों की बहादुरी से पूरी हो जाती थी, जो उसे कोट से कमर तक ढके हुए थे। उसकी भरपूर छाती तेंदुए की खाल के बाल्ड्रिक के नीचे उठती-गिरती थी, जिसे बड़े-बड़े पीतल के घुंडियों से बांधा गया था, जबकि उसकी पीठ के नीचे एक विशाल बोआ-कंस्ट्रिक्टर की खूबसूरती से सूखी और चपटी खाल लटक रही थी।

जब समुदाय ने यह निश्चय कर लिया कि चुड़ैलों के कारण कुछ दुर्भाग्य हुआ है, तो अगला कदम स्पष्ट रूप से उन्हें पहचानना और दंडित करना होगा। इस उद्देश्य के लिए राजा एक बड़ी सभा बुलाता था, और अपने लोगों को चार या पाँच दिनों के लिए एक घेरा बनाकर जमीन पर बैठा देता था। चुड़ैल खोजने वाले लोग बीच में अपनी जगह लेते थे, और जैसे-जैसे वे धीरे-धीरे उन्मत्त अवस्था में पहुँचते थे, जो कि राक्षसी कब्जे जैसी होती थी, वे अपनी कुग्गा-पूँछ से काँपते हुए दर्शकों में से किसी एक को हल्के से बदल देते थे, जिसे तुरंत घसीट कर ले जाया जाता था और वहीं पर काट दिया जाता था।

और केवल वह ही नहीं, बल्कि उसकी झोपड़ी में रहने वाले सभी जीवित प्राणी - पत्नियाँ और बच्चे, कुत्ते और बिल्लियाँ - एक भी जीवित नहीं बचा, न ही एक भी लकड़ी खड़ी बची। कभी-कभी इस तरह से एक पूरा क्राल नष्ट कर दिया जाता था, और पाठक समझ जाएगा कि निजी बदला लेने या राजा की अत्याचारी प्रवृत्तियों को पूरा करने के लिए क्रूर प्रथा कितनी भयानक हो सकती थी।

लेडी बार्कर ने नोजिलवेन के नाम से एक भयानक छोटी जादूगरनी का वर्णन किया है, जिसकी अजीबोगरीब, उदास नज़र में कुछ अजीब और असहज था। उसने अपने हिस्से के लिए सुंदर कपड़े पहने थे, कमर से घुटने तक मुड़ी हुई लिंक्स की खाल में, उसके शरीर का ऊपरी हिस्सा जंगली जानवरों के दांतों और नुकीले दांतों, मोतियों, रंगीन सूत के गुच्छों, साँप की खाल की पट्टियों और अंगोरा बकरी के ऊन के किनारों से ढका हुआ था।

यह, एक सजावट के रूप में, सुंदर और प्रभावी दोनों था; इसे शरीर के चारों ओर और प्रत्येक कोहनी के ऊपर पहना जाता था, और चमकीले रंग के बीच और सांवली त्वचा के खिलाफ नरम सफेद गुच्छे में गिरता था। लिंक्स-पूंछ उसके चेहरे के प्रत्येक तरफ लपेट की तरह लटकी हुई थी, जो साकाबुला पंखों की अधिकता से ढकी हुई थी और लगभग छिपी हुई थी।

लेडी बार्कर कहती हैं, "इस पक्षी के पंख बहुत सुंदर होते हैं, और यह इतना दुर्लभ है कि स्थानीय लोग इसके दुम के पंखों को एक विशेष महत्व और आकर्षण देते हैं; ये एक युवा मुर्गे के पंखों जैसे होते हैं, घुमावदार और पतले, और गहरे भूरे रंग के, प्रत्येक पंख के सिरे पर एक सफ़ेद आँख होती है।" इन सभी मोटे, तैरते हुए पंखों के बीच छोटे-छोटे मूत्राशय और दाँतों से बनी कटारें या पिनें बिखरी हुई थीं। प्रत्येक चुड़ैल-खोजकर्ता अपने खुद के बाल, या बल्कि ऊन, बहुत ज़्यादा चिकना करके और सुतली से तब तक लपेटे हुए होते थे जब तक कि वे बालों की तरह दिखना बंद न हो जाएँ, और चेहरे के चारों ओर एक मोटी झालर की तरह लटके रहते थे, जिसे गहरे लाल रंग से रंगा गया था।

नोजिलवाने ने दुम झुकाकर, बिल्ली की तरह रेंगते हुए, जैसे कोई रास्ता खोज रही हो, कदम आगे बढ़ाया। उसके लहराते शरीर की हर हरकत लड़कियों के हाथों की ताल और उनके धीमे-धीमे गाने के साथ तालमेल बिठा रही थी। जल्द ही उसने वह चीज़ ढूँढ़ने का नाटक किया जिसे वह ढूँढ़ रही थी, और जंगली पिरोएट की एक श्रृंखला के साथ, हवा में उछली, अपने भालों को हिलाते हुए और एक बैचैन्टे की तरह अपनी छोटी ढाल को लहराते हुए।

पार्टी की एक और सदस्य, नोवाम्सो ने दृढ़ निश्चय किया कि उसकी साथी को सारी तालियाँ नहीं बटोरनी चाहिए, और वह भी, एक चीख और एक छलांग के साथ, तेज़ आवाज़ और ज़ोरदार तालियों की आवाज़ के साथ नृत्य में शामिल हो गई। नोवाम्सो ने अपनी पीठ दिखाने के लिए बहुत उत्सुकता दिखाई, जहाँ एक शानदार साँप की खाल, पीतल के सिर वाली कीलों से एक नियमित पैटर्न में जड़ी हुई, एक धारा की तरह बह रही थी। वह तेंदुए की खाल से बनी एक शानदार किल्ट भी पहने हुए थी, जिस पर लाल रंग के रोसेट लगे हुए थे, और उसका

शौचालय किसी भी अन्य महिला से ज़्यादा सावधान और कलात्मक माना जाता था।

उसकी चूड़ियाँ ज़्यादा चमकीली थीं, उसकी बकरी की झालरें ज़्यादा सफ़ेद थीं, और उसका चेहरा ज़्यादा विस्तृत रूप से रंगा हुआ था। हालाँकि, नोज़िलवाने के पास युवावस्था और एक अद्भुत आत्मनिर्भरता थी। हालाँकि, बाकी सभी लोग शामिल हो गए और एक काल्पनिक दुश्मन की तलाश की, और बदले में उसकी खोज पर खुशी मनाई, लेकिन जल्द ही उनकी साँस फूलने लगी और वे थक गए, और जब उनके सेवक उन्हें अभिषेक करने और पानी पीने के लिए ले गए तो वे खुश हो गए।

15. मध्य अफ्रीका**:** मध्य और पूर्वी अफ्रीका की जादुई मान्यताएँ बहुत कम जानी जाती हैं। वे ज़्यादातर मृतकों के पंथ और बुतपरस्ती से जुड़ी हैं। जहाँ तक पहले का सवाल है: जब मृतक झाड़ियों में रहने से थक जाते हैं, तो वे अपने किसी ऐसे व्यक्ति के पास आते हैं, जिस पर उनका सबसे ज़्यादा असर होता है। और आत्मा उस आदमी से कहती है: "मैं झाड़ियों में रहने से थक गई हूँ, कृपया शहर में मेरे लिए एक छोटा सा घर बनाओ, जो तुम्हारे घर के जितना करीब हो सके।" और वह उससे नाचने और गाने के लिए भी कहता है, और तदनुसार वह आदमी रात में महिलाओं को इकट्ठा करता है ताकि वे नाचें और गाएँ।

फिर, अगले दिन, लोग ओबाम्बो या भूत की कब्र पर जाते हैं और एक अशिष्ट मूर्ति बनाते हैं, जिसके बाद बांस की अर्थी, जिस पर शव को कब्र में ले जाया जाता है, और जमीन की कुछ धूल, उस व्यक्ति के घर के पास बनी एक छोटी सी झोपड़ी में ले जाया जाता है, और दरवाजे पर एक सफेद कपड़ा लपेटा जाता है। यह एक दिलचस्प तथ्य है, जो यह दर्शाता है कि इन लोगों के पास कैरन और स्टाइल्स के पुराने ग्रीक मिथक की तरह एक किंवदंती है, कि इस समारोह के दौरान गाए जाने वाले गीतों में से एक में निम्नलिखित पंक्ति आती है: "आप अच्छे कपड़े पहने हुए हैं, लेकिन आपके पास दूसरी तरफ ले जाने के लिए कोई डोंगी नहीं है/'

16. भूत-प्रेत का कब्जा **:** लगभग सभी असभ्य देशों में मिर्गी के रोग को भूत-प्रेत के कब्जे का परिणाम माना जाता है। मध्य अफ्रीका में पीड़ित को मब्विरी द्वारा ग्रसित माना जाता है, और उसे केवल औषधि-पुरुष या बुतपरस्ती के हस्तक्षेप से ही राहत मिल सकती है। सड़क के बीच में उसके रहने के लिए एक झोपड़ी बनाई जाती है, और वह पुजारी और उसके शिष्यों के साथ तब तक रहता

है जब तक वह ठीक नहीं हो जाता या पागल नहीं हो जाता। वहाँ दस दिन या पखवाड़े तक लगातार मौज-मस्ती होती है; रोगी के रिश्तेदारों के खर्च पर खूब खाना-पीना और अंतहीन नृत्य होता है बांसुरी और ढोल की ध्वनि के साथ। स्पष्ट कारणों से बुतपरस्ती से पता चलता है कि एमबीवीरी अच्छे जीवन को घृणा की दृष्टि से देखता है।

रोगी नाचता है, आमतौर पर पागलपन का दिखावा करता है, जब तक कि मिर्गी का दौरा नहीं आ जाता, उसके सभी भयानक सहवर्ती लक्षण- उन्मत्त घूरना, ऐंठन वाले अंग, दांत पीसना और झागदार होंठ। इस अवधि में आदमी के कार्यों को खुद के लिए नहीं, बल्कि उस राक्षस के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है जिसने उसे नियंत्रित किया है। जब कोई इलाज हो जाता है, वास्तविक या दिखावटी, तो रोगी एक छोटा बुतपरस्ती घर बनाता है, कुछ प्रकार के भोजन से परहेज करता है, और कुछ कर्तव्य निभाता है। कभी-कभी यह प्रक्रिया रोगी के पागलपन में समाप्त हो जाती है; उसे झाड़ियों में भाग जाने, सभी मनुष्यों से छिपने और जंगल की जड़ों और जामुनों पर रहने के लिए जाना जाता है।

17.जंगल के घाटियों में। रीड कहते हैं, "ये बुतपरस्त लोग, प्राचीन जर्मनों की तरह पुजारी डॉक्टर हैं। उन्हें जड़ी-बूटियों और मानव प्रकृति का भी गहरा ज्ञान है, क्योंकि वे हमेशा राज्य में वास्तविक शक्ति का एकाधिकार करते हैं। लेकिन यह बहुत संदिग्ध है कि क्या उनके पास पौधों से गुण और जहर निकालने के अलावा कोई रहस्य है।

झाड़ियों में पहली यात्रा के दौरान मैंने इनमें से एक डॉक्टर को बुलाया। उस समय मैं शेकानी के बीच रह रहा था, जो अपने बुतपरस्ती के लिए प्रसिद्ध हैं। वह आधा दर्जन शिष्यों के साथ आया था। वह एक लंबा आदमी था, जिसने सफेद कपड़े पहने थे, तेंदुए की खाल से बनी कमरबंद पहनी थी, जिसमें से एक लोहे की घंटी लटक रही थी, जो हमारी भेड़ों की घंटियों के आकार की थी। उसकी आँखों पर चाक के दो निशान थे। मैंने अपने कुछ बाल लिए, उन्हें जलते हुए कांच से तराशा और उसे दे दिया।

उसने उसे अपने छोटे से घास के थैले में डाल लिया क्योंकि गोरे आदमी के बाल पहली श्रेणी की वासना है। फिर मैंने एक गिलास में थोड़ा रास्पबेरी सिरका डाला, पहले थोड़ा सा पिया, देहाती अंदाज में, और उसे पेश किया। उसे बताया कि यह महान डॉक्टरों के दिमाग से निकला खून है। इस पर उसने इसे बड़े सम्मान के साथ स्वीकार किया, और अपनी उंगलियों को उसमें डुबोया जैसे कि यह

स्नेप-ड्रैगन हो, अपने माथे, दोनों पैरों के बीच और अपनी पीठ के पीछे जमीन पर छिड़का।

फिर उसने अपना गिलास एक शिष्य को सौंप दिया, जिसने उसे खाली कर दिया, और उसके बाद बहुत ही धर्मनिरपेक्ष तरीके से अपने होठों को चाटा। फिर मैंने उसके वासना को थोड़ा देखना चाहा। उसने पाउंड पर लाल चाक से कुछ चित्रलिपि बनाई, जिनमें से मैंने वृत्त, क्रॉस और अर्धचंद्र को अलग किया। उसने कहा कि अगर मैं उसे एक बढ़िया 'डश/ दूँ तो वह मुझे इसके बारे में सब कुछ बताएगा। लेकिन चूंकि वह किसी भी बात को तर्क के आधार पर नहीं लेंगे और मुझे पता था कि वह सार्वजनिक रूप से मुझे कोई बहुत महत्वपूर्ण बात नहीं बताएंगे, इसलिए वार्ता स्थगित कर दी गई।"

17. थियोटिक**-**मैन **:** को शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो उसकी अलौकिक शक्तियों के दावे पर सवाल उठाने के लिए तैयार हो। वह न केवल एक डॉक्टर और एक पुजारी है - दो ऐसी क्षमताएँ जिनमें उसका प्रभाव अनिवार्य रूप से बहुत शक्तिशाली है - बल्कि वह एक जादूगर भी है, और यह एक ऐसा पद है जो उसे वास्तव में एक दुर्जेय अधिकार प्रदान करता है। जब कोई योग्य व्यक्ति मरता है, तो उसकी मृत्यु को हमेशा जादू-टोने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, और चुड़ैल को खोजने के लिए बुतपरस्त व्यक्ति की सहायता ली जाती है।

जब कोई व्यक्ति लंबे समय से बीमार रहता है, तो वे एनपीएमबी को बुलाते हैं, और अगर वह उसे ठीक नहीं कर पाती है, तो बुतपरस्त को बुलाते हैं। वह रात में आता है, एक सफेद पोशाक में, उसके सिर पर मुर्गे के पंख होते हैं, और उसके पास घंटी और छोटा गिलास होता है। वह दो या तीन रिश्तेदारों को एक कमरे में बुलाता है। वह बोलता नहीं है, लेकिन हमेशा अपने गिलास में देखता रहता है। फिर वह उन्हें बताता है कि यह बीमारी एमबीवीरी, ओबाम्बो या भगवान की नहीं है, बल्कि यह एक चुड़ैल से आई है।

वे उससे कहते हैं, "हम क्या करें?" वह बाहर जाता है और कहता है। * मैंने तुम्हें बता दिया है। मुझे और कुछ नहीं कहना है।" वे उसे एक डॉलर का कपड़ा देते हैं, और हर रात वे सड़क पर इकट्ठे होते हैं, और रोते हैं। "मैं उस आदमी को जानता हूँ जिसने मेरे भाई को जादू कर दिया। उसे ठीक करना तुम्हारे लिए अच्छा है।" फिर चुड़ैल उसे ठीक कर देती है। लेकिन अगर वह आदमी ठीक नहीं होता तो वे शेकानी देश से झाड़ी के डॉक्टर को बुलाते हैं। वह झाड़ी की भाषा में बोलता है।

रात को वह सड़क पर निकलता है और सभी लोग उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं। अपने हाथ में बाघ-बिल्ली की खाल लेकर वह इधर-उधर घूमता है, जब तक कि वह लगातार गाता हुआ बाघ की खाल चुड़ैल के पैरों में नहीं रख देता। उसके गाने के अंत में लोग चुड़ैल को पकड़ लेते हैं और उसे जंजीरों में जकड़ देते हैं और कहते हैं, "अगर तुम हमारे भाई को स्वस्थ नहीं करोगे, तो हम तुम्हें मार देंगे।"

18. अगाबर्टे: स्कैंडिनेविया में रहने वाली वैग्नोस्टे नामक एक विशालकाय महिला की बेटी। वह एक शक्तिशाली जादूगरनी थी, और उसे शायद ही कभी उसके असली रूप में देखा जाता था। कभी-कभी वह एक बूढ़ी औरत का रूप ले लेती थी, झुर्रीदार और झुकी हुई, और मुश्किल से चल पाती थी। कभी वह कमज़ोर और बीमार दिखाई देती थी, और कभी लंबी और मज़बूत, जिससे उसका सिर बादलों को छूता हुआ लगता था। ये परिवर्तन उसने बिना किसी प्रयास या परेशानी के किए। लोग उसके चमत्कारों से इतने प्रभावित थे कि उन्हें विश्वास हो गया कि वह पहाड़ों को गिरा सकती है, पेड़ों को उखाड़ सकती है, नदियों को बड़ी आसानी से सुखा सकती है। उनका मानना था कि उसके जादुई करतबों को पूरा करने के लिए राक्षसों की एक सेना से कम कुछ भी नहीं होना चाहिए। वह स्कॉटिश कैलीच भ्यूर, एक प्रकृति डायन की तरह लगती है।

19. अफाथलॉन: एक परिचित आत्मा जो केवल दोपहर के समय ही प्रकट होती है। यह किसी मनुष्य या जानवर का रूप ले लेती है, या यहाँ तक कि खुद को किसी ताबीज, बोतल या जादुई अंगूठी में बंद कर लेती है।

20. अफाथोडेमन : एक अच्छा दानव, जिसकी मिस्र के लोग मानव सिर वाले सर्प के रूप में पूजा करते थे। प्राचीन लोगों द्वारा पूजे जाने वाले ड्रैगन या उड़ने वाले सर्पों को अगाथोडेटनॉन या अच्छे जिन्न भी कहा जाता था।

21. अफ़्ला: दुष्टात्मा को भगाने के लिए रब्बियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक कबाली शब्द। यह हिब्रू शब्दों, अथाह गैबोर लियोलम, एडोनाई के शुरुआती अक्षरों से बना है, जिसका अर्थ है, "तू शक्तिशाली और शाश्वत है। प्रभु।" यह शब्द न केवल यहूदियों के बीच इस्तेमाल किया जाता था, बल्कि अधिक अंधविश्वासी ईसाइयों के बीच भी यह एक पसंदीदा हथियार था, जिसके साथ सोलहवीं शताब्दी के अंत तक दुष्टात्मा से मुकाबला किया जाता था। यह

जादू पर कई किताबों में भी पाया जाता है, विशेष रूप से पोप लियो III के एनचिरिडियन में।

22. अफ़्लाओफ़ोटल्स**:** एक प्रकार की जड़ी-बूटी जो अरब के रेगिस्तान में उगती है, और जिसका इस्तेमाल जादूगरों द्वारा राक्षसों को बाहर निकालने के लिए किया जाता था। अन्य पौधों का इस्तेमाल तब तक बुरी आत्माओं को दूर रखने के लिए किया जाता था जब तक जादूगर को उनकी ज़रूरत होती थी।

23. अफ्रेडा **(**मैरी ऑफ**) :** एक स्पेनिश नन, जिसने सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में एक रचना प्रकाशित की जिसका शीर्षक था, ईश्वर का रहस्यमय शहर, सर्वशक्तिमान का चमत्कार, अनुग्रह का रसातल: परम पवित्र वर्जिन मैरी के जीवन का दिव्य इतिहास; ईश्वर की माता, हमारी रानी और मालकिन, इन अंतिम समय में पवित्र वर्जिन द्वारा जीसस की बहन मैरी के समक्ष प्रकट हुई, जो एग्रेडा शहर के बेदाग गर्भाधान के मठ की मठाधीश हैं, और उसी बहन द्वारा अपने वरिष्ठों और स्वीकारोक्तिकर्ताओं के आदेश से लिखी गई हैं। यह रचना, जिसकी सोरबोन द्वारा निंदा की गई थी, कई अजीब और चमत्कारी घटनाओं का एक दिखावा है जो वर्जिन के जन्म से लेकर उसके बाद तक हुई, जिसमें उसके शुरुआती वर्षों में स्वर्ग की यात्रा भी शामिल है, जब उसे नौ सौ स्वर्गदूतों का रक्षक दिया गया था।

24. अहिरिमनेस**:** कैकोडेमन्स के प्रमुख या गिरे हुए स्वर्गदूतों को फारसियों और चाल्डियन द्वारा दिया गया नाम। माना जाता है कि इन कैकोडेमन्स को उनके पापों के कारण स्वर्ग से निकाल दिया गया था; उन्होंने पृथ्वी के विभिन्न भागों में बसने का प्रयास किया, लेकिन उन्हें हमेशा अस्वीकार कर दिया गया, और बदला लेने के लिए वे निवासियों को चोट पहुँचाने में अपना आनंद पाते थे। ज़ेनोक्रिटस ने सोचा कि तपस्या और आत्म-पीड़ा, हालांकि देवताओं को स्वीकार्य नहीं थी, कैकोडेमन्स के द्वेष को शांत करती है।

अहिरिमनेस और उनके अनुयायियों ने अंततः पृथ्वी और स्थिर सितारों के बीच के सभी स्थानों में अपना निवास बनाया, और वहाँ अपना क्षेत्र स्थापित किया, जिसे अरहिमन-आबाद कहा जाता है। चूँकि अहिरिमनेस बुराई की आत्मा थी, इसलिए फ़ारसी द्वैतवाद में उसका प्रतिरूप ओरमुज़्द था, जो रचनात्मक और परोपकारी प्राणी था।

25. हवा भूतों को दिखाई देने में मदद करती है: पहले कुछ अधिकारियों का मानना था कि भूत हवा में लिपटा हुआ था, जिससे वह दिखाई देने लगा। इस प्रकार जहाँ भी हवा थी, वहाँ भूत दिखाई दे सकता था।

26. आकाश, या ध्वनिमय ईथर: प्रकृति के पाँच प्राथमिक सिद्धांतों में से एक, जिसका उल्लेख हिंदू योग के श्वास विज्ञान में किया गया है। यह इन सिद्धांतों में से पहला है; इसे "महान शक्ति" द्वारा दिया गया है, और इससे अन्य सिद्धांत निर्मित होते हैं। इन ईथर की तुलना मनुष्य की पाँच इंद्रियों से की जा सकती है। अलग-अलग ध्वनियाँ सुनने के लिए, हिंदू थियोसोफिस्ट आकाश पर "एकाग्र" होता है।

27. अकाथसो : वृक्षों में निवास करने वाली बुरी आत्माएं।

28. अखनलम: मध्य थेबैस का एक शहर, जो एक समय में महानतम जादूगरों के निवास स्थान के रूप में जाना जाता था। पॉल लुकास ने अपनी दूसरी यात्रा में अखनीम के अद्भुत सर्प की बात की है, जिसकी पूजा मुसलमान एक देवदूत के रूप में करते थे और ईसाई इसे राक्षस असमोडस मानते थे।

29. एलास्टर : एक क्रूर दानव, जो विएरियस के अनुसार हेड्स के राजा के मुख्य जल्लाद का पद संभालता था। उसकी अवधारणा कुछ हद तक नेमेसिस से मिलती जुलती है। कहा जाता है कि ज़ोरोस्टर ने उसे "जल्लाद" कहा था। अन्य लोग उसे विनाशकारी देवदूत के साथ भ्रमित करते हैं। दुष्ट जिन्न को पहले एलास्टर कहा जाता था। प्लूटार्क का कहना है कि सिसरो, जो ऑगस्टस के खिलाफ़ द्वेष रखता था, ने सम्राट के चूल्हे पर आत्महत्या करने की योजना बनाई, और इस तरह उसका एलास्टर बन गया।

30. एलेह्लंडस: ग्यारहवीं शताब्दी का एक अरब चिकित्सक, जिसे कुछ अधिकारियों ने जादूगरों की श्रेणी में रखा था, लेकिन अन्य लोगों ने उसे केवल एक अंधविश्वासी लेखक माना। वह अपने रोगियों को ठीक करने के लिए मंत्रमुग्ध शब्दों और अलंकारिक संयोजनों का उपयोग करता था। दानवशास्त्रियों का मानना था कि शैतान उसकी शक्ति के लिए जिम्मेदार था, और उन्होंने

अपने कथनों को इस तथ्य पर आधारित किया कि उसने जादू कला के सिद्धांत नामक एक कार्य लिखा था, हालाँकि, वह शायद एक प्राकृतिक दार्शनिक से अधिक दुर्जेय नहीं था, उस समय जब विज्ञान और दर्शन के सभी मामले संदेह के घेरे में थे।

उनके कुछ सिद्धांत जादुई प्रकृति के थे, यह सच है, जैसे कि जब उन्होंने सपनों की घटनाओं को यह कहकर समझाने का प्रयास किया कि वे तत्वों का काम थे, जो सोते हुए व्यक्ति के दिमाग के सामने अपनी अजीब कल्पनाएँ दिखाते थे जैसे अभिनेता थिएटर में खेलते हैं। लेकिन कुल मिलाकर उन्हें जादू के अभ्यास से जोड़ने के लिए बहुत कम है।

31. अलदल्नेह : एक मिस्री दानव, जिसे दानवशास्त्री तूफानों, भूकंपों, वर्षा-तूफानों, तूफानों आदि का शासक मानते हैं। यह वही है जो जहाजों को भी डुबोता है। जब वह दृश्य रूप में प्रकट होता है तो वह एक महिला का रूप ले लेता है।

32. एलीटोरियस: यह पत्थर लगभग एक बीन के आकार का, क्रिस्टल जैसा साफ, कभी-कभी मांस के रंग का नसों वाला होता है। कहा जाता है कि इसे मुर्गे के पेट से निकाला जाता है। यह अपने मालिक को साहसी और अजेय बनाता है, उसे धन-संपत्ति दिलाता है, प्यास बुझाता है, और पति को अपनी पत्नी से प्यार करने के लिए प्रेरित करता है, या जैसा कि एक अन्य लेखक ने कहा है, "महिला को उसके पति के लिए अनुकूल बनाता है।" लेकिन इसका सबसे अद्भुत गुण यह है कि यह खोए हुए राज्य को वापस पाने और विदेशी राज्य हासिल करने में मदद करता है।

33. अलेक्जेंडर अब एलेक्जेंड्रा: (एलेसेंड्रो एलेसेंड्री) एक नेपल्स के वकील, जिनकी मृत्यु 1523 में हुई। उन्होंने अद्भुत, नामी डे रेबस एडमिटाबिलिबस पर एक शोध प्रबंध प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने इटली में घटित चमत्कारों, सत्यापित सपनों, कई भूतों और प्रेतों से जुड़ी परिस्थितियों का वर्णन किया, जिनके बारे में उनका कहना है कि उन्होंने खुद उन्हें देखा था। उन्होंने इस शोध प्रबंध के बाद अपनी प्रसिद्ध रचना जेनियलियम डिएरम लिखी, जिसमें उन्होंने कई चमत्कारिक घटनाओं का बहुत ही विश्वास के साथ वर्णन किया है। उन्होंने बताया कि कैसे एक शाम वे रोम के एक घर में कई दोस्तों के साथ पार्टी में शामिल होने के लिए निकले, जो लंबे समय से भूतों और राक्षसों से भरा हुआ था।

आधी रात को, जब वे सभी कई रोशनी वाले एक कमरे में इकट्ठे हुए, तो उन्हें एक भयानक भूत दिखाई दिया, जिसने उन्हें ऊंची आवाज में बुलाया और कमरे में मौजूद आभूषणों को इधर-उधर फेंक दिया। समूह के सबसे साहसी लोगों में से एक भूत के सामने रोशनी लेकर आगे बढ़ा, जिस पर वह गायब हो गया। उसके बाद कई बार वही भूत दरवाजे से फिर से अंदर आया। अलेक्जेंडर, जो सोफे पर लेटा हुआ था, उसने पाया कि राक्षस उसके नीचे सरक गया था, और जब वह सोफे से उठा, तो उसने देखा कि उसके सामने एक मेज पर एक बड़ी काली भुजा दिखाई दी।

इस समय तक समूह के कई लोग आराम करने के लिए चले गए थे, और रोशनी बंद थी, लेकिन उनके चिल्लाने पर मशालें लाई गईं, जिस पर भूत ने दरवाजा खोला, आगे बढ़ते हुए घरेलू कर्मचारियों के पीछे सरक गया, और गायब हो गया। अलेक्जेंडर ने कई अन्य प्रेतवाधित घरों का दौरा किया, लेकिन ऐसा लगता है कि वह आसानी से धोखा खा गया था, और किसी भी तरह से वह व्यक्ति नहीं था जो मानसिक शोध कर सके।

34. ऑल्स डे टेल्यूक्स: 1528 में पेरिस में एक रोचक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसका शीर्षक था। ला मर्वेइल्यूज़ हिस्ट्री डे इस्प्रिट क्वी, डेपुइस नागुइरे, सेस्ट अप्पारु एन मोनासुरे डेस रेलीजियस डे सेंट पियरे डी लियोन, लैक्वेल एस्ट प्लीन डे ग्रैंड एडमिरेशन, कॉम ऑन पोर्रा वोइस पार ला लेक्चर डे से प्रेजेंट लिव्रे, फार एड्रियन डी मोंटालम्बर्ट, औमोनियर डु रॉय फ्रेंकोइस टेर। यह कार्य मठ में एलिस डे टेल्यूक्स की आत्मा के प्रकट होने से संबंधित है, जो एक नन थी जो 1513 में मठ के सुधार से पहले वहां रहती थी।

ऐसा लगता है कि एलिस ने एक सांसारिक जीवन व्यतीत किया था, एक नन के लिए अनुचित तरीके से आनंद और आनंद का पीछा करते हुए, अंत में वेदी से गहने चुरा लिए और उन्हें बेच दिया। इस आखिरी जघन्य अपराध के बाद, उसने निश्चित रूप से मठ छोड़ दिया और कुछ समय तक बाहर अपना अपमानजनक करियर जारी रखा, लेकिन मरने से पहले उसने अपने पापों का पश्चाताप किया और वर्जिन की मध्यस्थता के माध्यम से क्षमा प्राप्त की। हालांकि, यह उसके ईसाई भोज के लिए लाभदायक नहीं था और उसे सामान्य प्रार्थनाओं और अंतिम संस्कार की रस्मों के बिना दफनाया गया था। कई वर्षों के बाद, जब मठ में अन्य और बेहतर ननों ने कब्जा कर लिया, तो उनमें से एक, लगभग अठारह साल की लड़की, सिस्टर एलिस की प्रेत द्वारा अपनी नींद से जाग गई।

उसके बाद कुछ समय तक आत्मा उसे जहाँ भी जाती थी, वहाँ लगातार पीछा करती थी, जहाँ वह खड़ी थी, उसके पास जमीन पर लगातार थपथपाती थी और यहाँ तक कि इच्छुक ननों से संवाद भी करती थी। सभी संकेतों से, यह एक अच्छी और भक्त आत्मा थी जो इस तरह मठ में प्रवेश करती थी, लेकिन अच्छी बहनें, जो शैतान की चालों से अच्छी तरह वाकिफ थीं, इस विषय पर संदेह करती थीं। बुरी आत्मा को शांत करने के लिए ल्योन के बिशप और कथावाचक एड्रियन डी मोंटालम्बर्ट की सेवाओं को बुलाया गया।

कई प्रार्थनाओं और औपचारिकताओं के बाद, एलिस की आत्मा को एक निर्दोष पाया गया, जिसकी देखभाल एक संरक्षक देवदूत ने की। उसने अपनी वर्तमान स्थिति और ईसाई दफन की अपनी इच्छा के बारे में कई सवालों के जवाब दिए और कैथोलिक चर्च के सिद्धांतों की पुष्टि की, विशेष रूप से शुद्धिकरण के बारे में, जिसे लेखक ने लूथरन के भ्रम के लिए विजयी रूप से आगे बढ़ाया।

सिस्टर एलिस के अवशेषों को पवित्र भूमि पर ले जाया गया और उसकी आत्मा को शुद्धिकरण से मुक्त करने के लिए प्रार्थना की गई, लेकिन किसी कारण से वह कुछ समय के लिए युवा नन का पीछा करती रही और अपनी अंतिम यात्रा पर उसे सेंट जॉन द इवेंजेलिस्ट द्वारा रचित पाँच गुप्त प्रार्थनाएँ सिखाईं।

35. ऑल हैलोज़ ईव: ब्रिटेन में चार प्रमुख अग्नि त्योहारों में से एक, माना जाता है कि यह 1 नवंबर को मनाया जाता था, जब ड्र्यूड्स की आग को छोड़कर सभी आग बुझा दी जाती थी, जिनकी वेदियों से केवल पवित्र अग्नि को गृहस्वामियों द्वारा एक निश्चित कीमत पर खरीदा जाना चाहिए था। यह त्यौहार अभी भी आयरलैंड में समहेन या ला सैमन I.*., सूर्य का पर्व के रूप में जाना जाता है; जबकि स्कॉटलैंड में, इसे हैलोवीन के नाम से जाना जाता है।

ऑल हैलोज़ ईव, जैसा कि रोम के चर्च में मनाया जाता है, प्राचीन रोमनों के फेरेलिया से मेल खाता है, जब वे मृतकों के सम्मान में बलिदान करते थे, उनके लिए प्रार्थना करते थे और उन्हें प्रसाद चढ़ाते थे। प्राचीन समय में, यह त्यौहार 21 फरवरी को मनाया जाता था, लेकिन रोमन चर्च ने इसे अपने कैलेंडर में 1 नवंबर को स्थानांतरित कर दिया। इसे मूल रूप से दिवंगत लोगों की आत्माओं को आराम और शांति देने के लिए डिज़ाइन किया गया था। स्कॉटलैंड के कुछ हिस्सों में, युवा लोगों के लिए पहाड़ियों और बढ़ते मैदानों की चोटियों पर आग जलाना अभी भी प्रथागत है, और इस तरह की आग को "हेलोवीन ब्लीज़" के नाम से जाना जाता है।

पहले इन अलावों को सूर्य के प्रतीक के रूप में एक गोलाकार खाई से घेरना प्रथागत था। शेरिफ बार्कले हमें बताते हैं कि लगभग सत्तर साल पहले, हैलोवीन पर डंकल्ड से एबरफेल्डी की यात्रा करते समय, उन्होंने पहाड़ियों की चोटियों पर तीस आग जलती हुई देखीं, जिनमें आग की लपटों के चारों ओर नाचते हुए लोगों की प्रेत आकृतियाँ थीं। पर्थशायर में, "हेलोवीन ब्लीज़" निम्नलिखित सुरम्य शैली में बनाया जाता है। हीथ, झाड़ू और सन के कपड़े एक डंडे पर बाँधे जाते हैं।

फिर फगोट को जलाया जाता है; एक युवा इसे अपने कंधों पर लेता है और इसे इधर-उधर ले जाता है। जब लकड़ियाँ जल जाती हैं तो दूसरी लकड़ियाँ भी उसी तरह से डंडे से बाँध दी जाती हैं और जलाई जाती हैं जैसे पहले वाली लकड़ियाँ जलाई गई थीं। इनमें से कई जलती हुई लकड़ियाँ अक्सर एक ही समय में गाँवों में ले जाई जाती हैं।

स्कॉटलैंड में अंधविश्वासी लोग "हेलोवीन" को एक ऐसी रात मानते हैं जिस दिन अदृश्य दुनिया में अनोखी शक्ति होती है। माना जाता है कि शैतानी महामहिम ने उन्हें इस वर्षगांठ पर बहुत अधिक स्वतंत्रता दी है, जो कि चुड़ैलों के रूप में जानी जाने वाली दुष्ट प्राणियों की श्रेणी के समान है, जिनमें से कुछ को, ऐसा कहा जाता है, झाड़ू पर हवा को चीरते हुए देखा जा सकता है, जो देखने में अद्भुत है। फिर से, अन्य, जो कम हवाई स्वभाव के होते हैं, आराम से सड़क और हीथ पर जॉगिंग करते हैं, ऐसे चिकने टैबी बिल्लियों की पीठ पर बैठते हैं जिन्होंने अपने आवास के लिए खुद को कोयले-काले घोड़ों में बदलने की अनुमति दी है।

कहा जाता है कि हरे वस्त्र पहने परियाँ अपने पसंदीदा ठिकानों पर विशेष उत्सव बैठकें आयोजित करती हैं। अज्ञानी मानते हैं कि भविष्य की अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए पूरे वर्ष में ऐसी कोई रात नहीं है। रहस्यवादी समारोह की इस पूर्व संध्या से संबंधित रीति-रिवाज निम्नलिखित हैं: युवा और युवतियां, जो हरी कैल खींचने की रस्म में शामिल होते हैं, हाथ में हाथ डाले, आँखें बंद करके, किसी अविवाहित या कुंवारी लड़की के बगीचे में जाते हैं, और अपने रास्ते में आने वाले पहले "कैल के डंठल" को उखाड़ लेते हैं।

यदि इस तरह से सुरक्षित किए गए डंठल शानदार विकास वाले, तने में सीधे और जड़ों में अच्छी मात्रा में मिट्टी वाले साबित होते हैं, तो भावी पति (या पत्नियाँ) युवा, सुंदर और अनुपात में समृद्ध होंगे। लेकिन अगर डंठल छोटे, टेढ़े-मेढ़े हों और जड़ों में बहुत कम या बिल्कुल भी मिट्टी न हो, तो भावी जीवनसाथी सुंदरता और भाग्य में कमी पाएंगे।

जैसा दिल या तना स्वाद में मीठा या खट्टा साबित होता है, वैसा ही स्वभाव भी होगा। भावी साथी। इस प्रकार चखे गए डंठलों को बाद में संबंधित घरों के दरवाजों के ऊपर रखा जाता है, और उन व्यक्तियों के ईसाई नाम जो पहले नीचे से गुजरते हैं, भावी पतियों या पत्नियों के नामों से मेल खाते हैं।

गिलास में सेब खाने का भी रिवाज है। अपने लिए एक सेब लें और जैसे ही घड़ी में बारह बजे, अकेले कमरे में जाएँ जहाँ एक शीशा लगा हो। सेब को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटें, उनमें से एक को अपने बाएँ कंधे पर फेंकें और बिना पीछे देखे शीशे के पास जाएँ, बाकी को खाएँ, शीशे के सामने अपने बालों को सावधानी से कंघी करें।

ऐसा कहते हैं कि इस तरह से व्यस्त रहने पर, जिस व्यक्ति से आपकी शादी होने वाली है उसका चेहरा आपके बाएँ कंधे पर से झांकता हुआ दिखाई देगा। यह "हेलोवीन" खेल शीशे से भविष्यवाणी करने के उस तरीके का अवशेष माना जाता है जिसकी भूतपूर्व पोपों ने जादू-टोना करके निंदा की थी।

36. जलते हुए मेवे **:** दो मेवे लें और उन्हें आग में डाल दें, उनमें से एक पर अपना नाम लिखें और दूसरे पर अपने प्यार की वस्तु का नाम लिखें। अगर वे एक-दूसरे के बगल में चुपचाप जलते रहें, तो आपके प्रेम संबंध का परिणाम समृद्ध होगा; लेकिन अगर एक दूसरे से दूर हो जाता है, तो परिणाम प्रतिकूल होगा। और भांग के बीज बोने के लिए, आधी रात को अकेले बाहर निकलें और एक मुट्ठी भांग के बीज बोएँ, निम्नलिखित कविता दोहराते हुए "भांग के बीज, मैं तुम्हें बोता हूँ, भांग के बीज, मैं तुम्हें बोता हूँ और वह जो मेरा सच्चा प्यार है, पीछे आओ और मुझे हैल से मारो।"

फिर अपने बाएं कंधे पर देखें और आप उस व्यक्ति को देखेंगे जिसे हैल से मारते हुए शपथ दिलाई गई है। मकई को विनोइंग करने की रस्म भी एकांत में ही पूरी की जानी चाहिए। खलिहान में जाओ और दोनों दरवाज़े खोलो, अगर संभव हो तो उन्हें टिका से हटा दो, कहीं ऐसा न हो कि जिस प्राणी के आने की तुम उम्मीद कर रहे हो, वह उन्हें बंद कर दे और तुम्हें कोई चोट पहुँचा दे। फिर मकई को फटकने में इस्तेमाल होने वाला उपकरण लो और हवा के खिलाफ़ उसे नीचे गिराने की सभी क्रियाएँ करो। इस क्रिया को तीन बार दोहराओ, और तुम्हारे भावी साथी की आकृति एक दरवाज़े से अंदर जाती हुई और दूसरे से बाहर जाती हुई दिखाई देगी।

अगर इस समारोह में शामिल होने वाले लोगों की किस्मत में युवावस्था में मृत्यु हो जाती है, तो ऐसा माना जाता है कि एक ताबूत, जिसके पीछे शोक मनाने वाले लोग होंगे, खलिहान में प्रवेश करेंगे और उस अति साहसी युवक या युवती का पीछा करेंगे, जो इस तरह भविष्य की छिपी हुई चीज़ों को जानने की इच्छा रखता है।

दूसरा तरीका है बीन स्टैक को मापना। बीन स्टैक के चारों ओर तीन बार हाथ फैलाकर घूमें, जैसे कि आप उसे माप रहे हों, और तीसरी बार आप अपनी बाहों में अपने भावी साथी की छाया को पकड़ेंगे।

37. हेरिंग खाना **:** आराम करने से ठीक पहले एक कच्चा या भुना हुआ नमकीन हेरिंग खाएँ, और आपके सपनों में आपका पति (जो कि पत्नी के लिए है) आएगा और आपकी प्यास बुझाने के लिए आपको पानी पिलाएगा।

38. अल्लात**:** अल्लाह की पत्नी और उसके साथ चाल्डियन नरक पर संयुक्त शासक। एम. मास्पेरो ने उन्हें "उस महान देश की महिला" के रूप में वर्णित किया है, जहाँ मृत्यु के बाद वे सभी जाते हैं जिन्होंने यहाँ नीचे साँस ली है, और उनके भयानक न्यायाधीश के रूप में।

39. एलूअर**:** हेड्स के ग्रैंड ड्यूक विएरियस के अनुसार एक शक्तिशाली दानव। वह एक विशाल घोड़े पर सवार एक शूरवीर के रूप में दिखाई देता है। उसके चेहरे पर सिंह के समान विशेषताएं हैं; उसका रंग लाल है और उसकी आंखें जल रही हैं; और वह बहुत गंभीरता से बोलता है। कहा जाता है कि वह जिन लोगों को अपने संरक्षण में लेता है, उन्हें पारिवारिक सुख देता है और खगोल विज्ञान और उदार कला सिखाता है। उसके द्वारा छत्तीस सेनाओं को नियंत्रित किया जाता है।

40. एयरलाइंस**:** महिला राक्षस या जादूगरनी, हूणों की माताएँ। वे सभी प्रकार के रूप धारण करती थीं, लेकिन अपना लिंग नहीं बदलती थीं। यह नाम जर्मनों द्वारा लगभग एक फुट ऊँची बूढ़ी जादूगरनियों की छोटी मूर्तियों को दिया गया था। इन मूर्तियों को वे महान गुण मानते थे, उन्हें उसी तरह सम्मान देते थे जैसे नीग्रो अपनी बुतपरस्ती का सम्मान करते हैं; उन्हें बढ़िया कपड़े पहनाते थे, उन्हें आराम से रखते थे, और हर भोजन में उन्हें खाना और पीना परोसते थे।

उनका मानना था कि अगर इन छोटी मूर्तियों की उपेक्षा की गई तो वे चिल्लाएँगी, एक ऐसी तबाही जिसे हर कीमत पर टाला जाना चाहिए, क्योंकि इससे घर पर भयंकर दुर्भाग्य आता है। वे शायद मैनड्रैक थे, और उनके बारे में यह दावा किया जाता था कि वे सिर की हरकतों या अस्पष्ट शब्दों के ज़रिए भविष्य बता सकते हैं। नॉर्वे में आज भी उनसे सलाह ली जाती है।

41. अलरुई, डेविड : यहूदी बेंजामिन द्वारा अपनी यात्राओं में वर्णित एक यहूदी जादूगर। अलरुई ने खुद को राजा डेविड का वंशज बताया। उसने बगदाद में शिक्षा प्राप्त की, जादू की कला में इतनी अच्छी शिक्षा प्राप्त की कि वह अपने गुरुओं से भी अधिक कुशल हो गया। उसके झूठे चमत्कारों ने उसे इतनी प्रसिद्धि दिलाई कि कुछ यहूदियों ने उसे वह पैगम्बर मान लिया जो उनके राष्ट्र को यरूशलेम में पुनः स्थापित करने वाला था। फारस के राजा ने उसे जेल में डाल दिया, लेकिन कोई भी बोल्ट और सलाखें इतने भयानक जादूगर को लंबे समय तक नहीं रोक सकती थीं।

वह अपनी जेल से भाग गया और आश्चर्यचकित लोगों की आँखों के सामने लंबे समय तक दिखाई दिया, हालाँकि चारों ओर खड़े दरबारियों ने कुछ भी नहीं देखा, और केवल उसकी आवाज़ सुनी। व्यर्थ में राजा ने धोखेबाज को गिरफ्तार करने के लिए किसी को बुलाया। कोई भी उसे नहीं देख सकता था, और जब वे उसकी तलाश में टटोल रहे थे, तो वह महल से खिसक गया, राजा उसका पीछा कर रहा था, सभी चकित लोग अपने राजकुमार के पीछे भाग रहे थे।

आखिरकार वे समुद्र तट पर पहुँच गए, और अल्वुय ने मुड़कर सभी लोगों को अपना परिचय दिया। फिर, पानी की सतह पर एक दुपट्टा फैलाकर, वह उस पर हल्के से चला गया, इससे पहले कि उसका पीछा करने वाली नावें तैयार हो जातीं। इस साहसिक कार्य ने मनुष्य की स्मृति में रहने वाले सबसे महान जादूगर के रूप में उसकी प्रतिष्ठा की पुष्टि की। लेकिन अंत में एक तुर्की राजकुमार, जो फारसी राजा का एक अधीन था, ने जादूगर के ससुर को उसे मारने के लिए रिश्वत दी। और एक रात, जब अल्वुय अपने बिस्तर पर शांति से सो रहा था, एक खंजर के वार ने उसके अस्तित्व को समाप्त कर दिया।

42. अला-दानव: यह सेमिटिक दानव एक इंसान से उत्पन्न हुआ है; यह खुद को गुफाओं और कोनों में छिपाता है, और रात में सड़कों पर घूमता है। वह अनजान लोगों की घात में भी रहता है, और रात में शयन-कक्षों में घुसकर लोगों को डराता

है, धमकी देता है कि अगर उन्होंने अपनी आँखें बंद कीं तो वह उन पर हमला कर देगा।

43. अमलमोन : चार आत्माओं में से एक जो ब्रह्मांड के चार भागों पर शासन करती है। जादूगरों के अनुसार, अमाइमोन ब्रह्मांड के पूर्वी भाग का शासक था।

44. अमांडलनस: एक विविध रंग का पत्थर, जो इसे पहनने वाले को सपनों या पहेलियों से संबंधित किसी भी प्रश्न को हल करने में सक्षम बनाता है।

45. एमडुसेलस: हेड्स का ग्रैंड ड्यूक। विएरियस (q.v.) के अनुसार, उसका रूप एक गेंडे जैसा है, लेकिन जब उसे बुलाया जाता है, तो वह मानव आकार में दिखाई देता है। वह लोगों के आदेश पर संगीत कार्यक्रम देता है, जहाँ कोई सभी संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज़ सुनता है, लेकिन कुछ भी नहीं देख सकता। ऐसा कहा जाता है कि पेड़ खुद उसकी आवाज़ पर झुक जाते हैं। वह उनतीस सेनाओं का नेतृत्व करता है।

46. अमरलिया**,** संयुक्त राज्य अमेरिका**:**

अमेरिका की आदिवासी जनजातियों के बीच गुप्तविद्या के बारे में "उत्तरी अमेरिकी भारतीय" लेख के अंतर्गत चर्चा की जाएगी। संयुक्त राज्य अमेरिका के रूप में जाने जाने वाले क्षेत्र पर कब्जा करने वाली यूरोपीय जातियों का गुप्त इतिहास उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में उनके प्रवेश के कुछ समय बाद ही शुरू होता है। यह संभव है कि शुरुआती अंग्रेजी और डच बसने वाले अपने साथ जादू टोना के अभ्यास के बीज लेकर आए हों, लेकिन यह निश्चित है कि वे अपने साथ जादू टोना और टोना-टोटका में एक सक्रिय विश्वास लेकर आए थे।

हालाँकि, यह महत्वपूर्ण है कि सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक, 1692 में, जब सलेम के मंत्री के परिवार में जादू टोना का अलार्म बजा, और कई काले नौकरों पर कथित अपराध का आरोप लगाया गया, तब तक इस विश्वास के संबंध में कोई

कट्टरता नहीं फैली। यह बहुत संभव है कि ये नीग्रो वूडू या ओबेह (q.v.) का अभ्यास करते थे, लेकिन, जो भी हो, आरोप उन पर ही नहीं रुके।

अलार्म तेजी से फैल गया, और थोड़े समय में ही कई लोग सबसे तुच्छ बहाने पर संदेह के घेरे में आ गए। कॉलोनी के नए गवर्नर सर विलियम फिप्स, उत्तेजना में बह गए और न्यायिक अभियोगों को अधिकृत कर दिया। पहले व्यक्ति, ब्रिजेट बिशप नामक एक महिला को फांसी पर लटका दिया गया, और गवर्नर ने खुद को इसके बाद लगाए गए असाधारण आरोपों से शर्मिंदा महसूस करते हुए बोस्टन के पादरी की सहायता ली।

जैसा कि घटनाओं ने साबित किया, यह एक घातक बात थी* बोस्टन में, इस समय, ब्लैथर नाम के शुद्धतावादी मंत्रियों का एक प्रतिष्ठित परिवार था। मूल माथेर 1636 में डोरचेस्टर में बस गए थे, और तीन साल बाद उनके एक बेटे का जन्म हुआ, जिसका नाम उन्होंने इनक्रीस माथेर रखा। वह एक पादरी बन गए, जैसा कि उनका बेटा भी था। कॉटन माथेर, 1663 में पैदा हुए। इंक्रीज हार्वर्ड कॉलेज के अध्यक्ष थे, और उनके बेटे ने वहां एक प्रतिष्ठित पद संभाला, और बोस्टन में भी उपदेश दिया।

इन दोनों लोगों की कट्टरता और शैतानी क्रूरता की तुलना शायद मानव उत्पीड़न के इतिहास में कभी नहीं की गई है। पवित्रशास्त्र के इस आदेश पर पूरी तरह से भरोसा करते हुए: "तुम किसी चुड़ैल को जीवित नहीं रहने दोगे" और अपनी कट्टर मुहर से अंधे होकर, उन्होंने कॉलोनी के कई कीमती जीवन को खो दिया। वास्तव में, उनके शासन के आगे, स्प्रेंगर (q.v.) और बोडिन (q.v.) की कठोरताएँ महत्वहीन हो जाती हैं। यह आश्चर्यजनक ही है कि दान और प्रेम का उपदेश देने वाले मंत्री हजारों मनुष्यों को यातना देने और उन्हें फाँसी और स्तंभ पर लटकाने के लिए इस हद तक गिर सकते हैं।

1688 में ग्लोवर नाम की एक आयरिश धोबिन को बोस्टन के एक राजमिस्त्री, गुडविन ने अपने बच्चों की देखभाल के लिए नियुक्त किया था, और कुछ ही समय बाद उनमें ऐसे लक्षण दिखाई दिए, जिन्हें कॉटन माथेर ने जांच करने पर शैतानी कब्जे के लक्षण बताया।

उस बेचारी धोबिन को मुकदमे में लाया गया, दोषी पाया गया और उसे फाँसी दे दी गई; और कॉटन ब्लैथर ने इस मामले को लॉट्स मेमोरेबल शीर्षक से छापना शुरू किया। जादू-टोना और कब्जे से संबंधित प्रावधान जिसमें असाधारण मात्रा में सरलता और समान रूप से किसी भी तरह की समझदारी की कमी दिखाई गई। जादू-टोना और टोना-टोटका पर यूरोपीय लेखकों के कामों के मामले में, इस

पुस्तक ने भी विश्वास की ज्वाला को हवा दी, और कॉलोनी भर में हज़ारों अज्ञानी लोग जादू-टोने के ऐसे ही उदाहरणों की तलाश में लग गए।

पाँच अन्य लोगों को मुक़दमा चलाकर फांसी पर चढ़ा दिया गया, और जल्द ही इतने ही लोगों का यही हश्र हुआ, उनमें से एक सुसमाचार का मंत्री जॉर्ज बोरोज़ था, जो जादू-टोने में विश्वास नहीं करता था।

यह पर्याप्त था, और उसे तुरंत फांसी पर चढ़ा दिया गया। लोकप्रिय भावना उसके पक्ष में थी, लेकिन दुष्ट कॉटन ब्लैथर घोड़े पर सवार होकर फांसी की जगह पर आया, बोरोज़ को धोखेबाज़ करार दिया, और अपने न्यायाधीशों की कार्रवाई का समर्थन किया। विलार्ड नामक एक अन्य व्यक्ति, जिसे संदिग्ध चुड़ैलों को गिरफ्तार करने के लिए नियुक्त किया गया था, ने अपने पद पर बने रहने से इनकार कर दिया, और खुद भी गिरफ्तार हो गया।

उसने भागकर खुद को बचाने की कोशिश की, लेकिन उसका पीछा किया गया और उसे पकड़ लिया गया, और उसे विधिवत रूप से मार डाला गया। यहां तक कि जादू-टोने के आरोप में कुत्तों को भी मौत के घाट उतार दिया गया मौत की सज़ा, लेकिन जिन मजिस्ट्रेटों ने कार्यवाही की थी, वे अज्ञानी थे, उन्हें कुछ संदेह होने लगा कि उन्होंने जो रास्ता अपनाया था वह हिंसक और ख़तरनाक था। और लोगों की भावनाएँ इतनी बढ़ गईं कि गवर्नर ने कॉटन माथेर से अनुरोध किया कि वे जो कुछ किया गया था उसके बचाव में एक ग्रंथ लिखें।

इसका परिणाम प्रसिद्ध खंड, वंडर्स ऑफ़ द इनविजिबल वर्ल्ड था, जिसमें लेखक ने सलेम में कई परीक्षणों का विवरण दिया है, न्यू इंग्लैंड में चुड़ैलों के कामों की तुलना दुनिया के अन्य हिस्सों से की है, और आम तौर पर जादू टोने पर विस्तृत रूप से चर्चा की है। चुड़ैल उन्माद अब पूरे कॉलोनी में फैल गया। सबसे पहले इसे श्री हेल की पत्नी के आरोप से झटका लगा, जो एक मंत्री थे। उनके पति अभियोगों के एक उत्साही प्रवर्तक थे, लेकिन इस आरोप ने उनके विचारों को बदल दिया, और उन्हें पूरे आंदोलन के अन्याय का यकीन हो गया।

लेकिन कुछ लोगों ने यह सवाल उठाया कि क्या शैतान अपने उद्देश्यों के लिए एक निर्दोष और धर्मपरायण व्यक्ति के साथ-साथ एक दुष्ट व्यक्ति का रूप धारण नहीं कर सकता है, और इस पर निर्णय लेने के लिए हार्वर्ड कॉलेज के अध्यक्ष इंक्रीज माथेर की सहायता ली गई। उन्होंने एक पुस्तक लिखी, ए फर्दर अकाउंट ऑफ द ट्रायल्स ऑफ द न्यू इंग्लैंड विच्स, और जादू-टोने और दुष्ट आत्माओं द्वारा मनुष्यों का रूप धारण करने से संबंधित कई मामलों को जोड़ा, जिसके दौरान उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के पुष्टि की कि मानव जाति के

दुश्मन के लिए ऐसे व्यक्ति का रूप धारण करना संभव है जिसमें कोई छल-कपट न हो।

आंदोलन का एक नया दृश्य एंडोवर शहर था, जहाँ बहुत से लोगों पर जादू-टोने का आरोप लगाया गया और उन्हें जेल में डाल दिया गया, जब तक कि ब्रैडस्ट्रीट नामक एक शांति न्यायाधीश, जो अपनी प्रबुद्ध नीति के लिए विशेष उल्लेख के पात्र हैं, ने गिरफ्तारी के लिए कोई और वारंट देने से इनकार नहीं किया।

आरोप लगाने वाले तुरंत उस पर टूट पड़े और कहा कि उसने जादू-टोने से कई लोगों को मार डाला है और वह इतना भयभीत हो गया कि शहर से भाग गया। लेकिन कट्टरपंथी जो आरोप लगाना अपना काम समझते थे, वे और भी दुस्साहसी हो गए और उच्च पद के लोगों को निशाना बनाने लगे, आखिरकार उनमें इतनी हिम्मत आ गई कि वे गवर्नर फिप्स की पत्नी पर ही महाभियोग लगाने लगे।

इससे गवर्नर का चेहरा फीका पड़ गया और एक बोस्टन निवासी जिस पर आरोप लगाया गया था, उसने अपने आरोप लगाने वालों के खिलाफ चरित्र हनन का मुकदमा दायर कर दिया। इसके बाद पूरा आंदोलन शांत हो गया और जिन लोगों ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, उनमें से कई लोग अपने बयान से मुकर गए; लेकिन मैथर्स ने अपनी राय पर अड़े रहे और प्रतिक्रियावादी भावना को शैतान की जीत माना।

मार्गरेट रूल नाम की बोस्टन की एक लड़की को दौरे पड़ने लगे और जब कॉटन मैथर ने उससे मुलाकात की तो उसने पाया कि वह जुनून के शैतानी हमले से पीड़ित है। उन्होंने आंदोलन को फिर से शुरू करने की पूरी कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि शहर के एक प्रभावशाली व्यापारी रॉबर्ट कैलिफ़ ने भी लड़की की जांच की और खुद को संतुष्ट किया कि यह सब एक भ्रम था। उन्होंने ब्लैथर्स के सिद्धांतों को उजागर करते हुए अपनी जांच का एक लेख लिखा, जो अदृश्य दुनिया के अधिक आश्चर्य शीर्षक के तहत प्रकाशित हुआ है।

इस पुस्तक को कट्टरपंथी पादरियों के पक्षधरों ने सार्वजनिक रूप से जला दिया था, लेकिन जनता की आँखें अब खुल गई थीं, और आम तौर पर राय प्रतिष्ठित चुड़ैलों के आरोप और अभियोजन के खिलाफ थी। सलेम के लोगों ने अपने बीच से मंत्री, पेरिस को निकाल दिया, जिसके साथ अभियोजन शुरू हुआ था, और समुदाय में गहरा पश्चाताप हुआ। वास्तव में, न्यायिक कार्यवाही में शामिल अधिकांश लोगों ने अपना खेद व्यक्त किया; जूरी सदस्यों ने अपने पश्चाताप और भ्रम की दलील देते हुए एक कागज पर हस्ताक्षर किए।

लेकिन यह सब भी मैथर्स को मनाने में विफल रहा, और कॉटन ने अपना मैगनोलिया लिखा, जो न्यू इंग्लैंड का एक चर्च संबंधी इतिहास है, जिसे 1700 में प्रकाशित किया गया, जिसमें सलेम में शैतान की शक्ति के बारे में उनके मूल दृष्टिकोण को दोहराया गया है, और इस मामले में उनके द्वारा निभाई गई भूमिका के लिए कोई खेद नहीं दिखाया गया है। 1723 में, उन्होंने अपने पिता के द रिमार्केबल्स का संपादन किया, जिसमें उन्होंने अपने सिद्धांतों को दोहराने का अवसर लिया।

एक ही बिरादरी के सदस्यों द्वारा गठित। "जादूगर आम तौर पर पुरुष होते हैं; लेकिन मध्य अमेरिका में मच्छर तट के आदिवासियों के बीच, वे अक्सर महिलाएँ होती हैं जिन्हें सुकिया कहा जाता है, और कहा जाता है कि वे बहुत शक्ति का प्रयोग करती हैं। हेविट के अनुसार, इरोक्वाइस महिलाओं को पारंपरिक रूप से जादूगर कहा जाता है।" उत्तर की कई जनजातियों के जादूगरों की एक चाल यह थी कि वे खुद को हाथ-पैर से बाँध लेते थे और फिर बिना किसी प्रत्यक्ष सहायता या प्रयास के खुद को बंधन से मुक्त कर लेते थे।

सभ्य जादूगर जो इसी तरह की चाल करते हैं, वे एक कैबिनेट में छिपे रहते हैं, और अलौकिक सहायता का दावा करते हैं; लेकिन कुछ भारतीय जादूगरों ने यह करतब निगरानी में किया। भारतीय जादूगरों के लिए यह दिखावा करना आम बात थी कि वे बारिश ला सकते हैं, लेकिन चाल में बस तब तक अनुष्ठान करना शामिल था जब तक बारिश न हो जाए. . . .

47. अमियांटे: अग्निरोधी पत्थर की एक प्रजाति, जिसे प्लिनी और दानवविज्ञानियों ने जादू के आकर्षण के खिलाफ एक उत्कृष्ट विशिष्ट के रूप में अनुशंसित किया था।

48. आमोन: नरक साम्राज्य का एक महान और शक्तिशाली मार्क्विस।उसे एक साँप की पूंछ वाले भेड़िये के रूप में दर्शाया गया है, जो आग उगलता है। जब वह मानव रूप में प्रकट होता है, तो उसका सिर कुत्ते के दाँतों वाले एक बड़े उल्लू जैसा दिखता है। वह राक्षसों के राजकुमारों में सबसे शक्तिशाली है, अतीत और भविष्य को जानता है, और जब चाहे, झगड़ने वाले दोस्तों को मिला सकता है। वह चालीस सेनाओं की कमान संभालता है।

49. एमी: पाताल लोक के महामहिम राष्ट्रपति और नरक राजतंत्र के राजकुमारों में से एक। वह वहाँ ज्वाला से आच्छादित दिखाई देता है, लेकिन पृथ्वी पर, मानव रूप में। वह ज्योतिष और उदार कलाओं के रहस्यों को सिखाता है, और वफादार सेवक देता है। वह उन लोगों को प्रकट करता है जो उसके पक्ष में हैं, राक्षसों द्वारा संरक्षित खजाने के छिपने के स्थान। नरक की छत्तीस सेनाएँ उसके अधीन हैं। पतित स्वर्गदूत उसके आदेशों को स्वीकार करते हैं, और उसे उम्मीद है कि 200,000 वर्षों के अंत में, वह सातवें सिंहासन पर कब्जा करने के लिए स्वर्ग लौट आएगा।

50. एनाहेल्ट्स : आत्माओं को पानी से बुलाने के लिए भविष्यवाणी में इस्तेमाल किया जाता है, एक अन्य पत्थर, जिसे सिनोचिटिस कहा जाता है, उन्हें पूछताछ के दौरान वहीं रहने के लिए बाध्य करता है।

51. अनामलीह: एक अज्ञात दानव, बुरी खबर लाने वाला। उसे असीरियन के एक शहर सेफरवाफ्लन में पूजा जाता था। हो हमेशा खुद को बटेर की शक्ल में दिखाता है। " हमें बताया गया है कि उसका नाम "रूड राजा" का प्रतीक है, और कुछ अधिकारी घोषणा करते हैं कि यह दानव चंद्रमा है, क्योंकि एंड्रामेलेक सूर्य है।

52. एनानेल्थल्डस: लियोनार्डुआ ने इसे "एक नेक्रोमैंटिक पत्थर" के रूप में वर्णित किया है, जिसका गुण बुरी आत्माओं और भूतों को बुलाना है।

53. अनानला, या अग्नानी (जीन डी') : पंद्रहवीं शताब्दी के एक वकील, जिन्होंने चार पुस्तकें लिखीं, जिनका शीर्षक था, डे नैचुरड डीसेमोनम, (राक्षसों की प्रकृति पर), और जादू और जादू टोना पर एक ग्रंथ, जिनमें से कोई भी काम अच्छी तरह से ज्ञात नहीं है। 1458 में इटली में उनकी मृत्यु हो गई।

54. अनाराज़ेल: भूमिगत खजाने की रखवाली करने वाले राक्षसों में से एक, जिसे वह लोगों से छिपाने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है। यह वह है जो अपने साथियों गज़ियल और फ़कोर के साथ मिलकर घरों की नींव हिलाता है, तूफ़ान उठाता है, आधी रात को घंटियाँ बजाता है, भूत-प्रेत प्रकट करता है और हज़ारों भय पैदा करता है।

55. स्वर्गदूत**:** कभी-कभार पदों पर नियुक्त आध्यात्मिक प्राणी को दर्शाता है; और अंत में, पुजारी या बिशप के रूप में पद पर आसीन व्यक्ति को दर्शाता है। यहूदियों के बीच "मण्डली का स्वर्गदूत" आराधनालय का प्रमुख था। इस शब्द का शास्त्रीय उपयोग ऐसा है, जो आम बोलचाल में, अब अपने मुख्य अर्थ तक सीमित है, और केवल स्वर्ग के निवासियों को दर्शाता है।

अन्यजातियों के प्रेरित स्वर्गदूतों के बारे में "सेवा करने वाली आत्माएँ, जो उद्धार के वारिसों के लिए सेवा करने के लिए भेजी जाती हैं" के रूप में बोलते हैं, जो शब्द के अर्थ के साथ सख्ती से पालन करता है। मार्क I., 2 में, इसे जॉन बैपटिस्ट पर लागू किया गया है: "देखो मैं अपने दूत (* स्वर्गदूत ') को अपने चेहरे के आगे भेजता हूँ," और यह शब्द मलाकी की संगत भविष्यवाणी में भी वही (** मालक ") है।

इब्रानियों 12, 22, 24 में हम पढ़ते हैं: "तुम स्वर्गदूतों की असंख्य टोली, धर्मी लोगों की आत्माओं के पास पहुँचे हो," आदि, और उनकी बड़ी संख्या का यह विचार हमारे प्रभु के स्वयं के शब्दों से पुष्ट होता है, जहाँ, उदाहरण के लिए, वे घोषणा करते हैं कि उनकी माँग पर "बारह सेनाएँ" तैयार थीं। संट जॉन के रहस्योद्घाटन में, उनकी संख्या का एक विशाल विचार दिया गया है।

उन्हें स्वर्ग की "सेनाएँ" कहा जाता है। उनकी स्तुति के गीत को एक बड़ी भीड़ की आवाज़, और बहुत से जल की आवाज़, और शक्तिशाली गड़गड़ाहट की आवाज़ के रूप में वर्णित किया गया है।" संक्षेप में, उनकी गणना करने के प्रयास में संख्या की भावना अभिभूत हो जाती है।

56. अंगुरवडेल**:** जादुई गुणों वाली तलवार, जो आइसलैंडिक गाथा के नायक फंथजॉफ को विरासत में मिली थी। इसकी मूठ सोने की थी और यह उत्तरी रोशनी की तरह चमकती थी। शांति के समय में इसके ब्लेड पर कुछ अक्षर फीके और पीले होते थे; लेकिन युद्ध के दौरान वे आग की तरह लाल हो जाते थे।

57. एओल्मा मुंडी**:** दुनिया की आत्मा; एक शुद्ध ईथर आत्मा जिसे कुछ प्राचीन दार्शनिकों ने पूरी प्रकृति में फैला हुआ बताया था। कुछ लोग प्लेटो को इस विचार का प्रवर्तक मानते हैं; लेकिन यह अधिक प्राचीन मूल का है, और कुछ पूर्वी दार्शनिकों की प्रणालियों में प्रचलित है। स्टोइक्स द्वारा इसे ब्रह्मांड में एकमात्र

महत्वपूर्ण शक्ति माना जाता था; इसे कई दार्शनिक संप्रदायों द्वारा विभिन्न रूपों में और अधिक आधुनिक समय में पैरासेल्सस और अन्य लोगों द्वारा मनोरंजन किया गया है। यह शेलिंग के दर्शन में भी शामिल है।

रिच कहते हैं: 44 एनिमा मुंडी, या इस दुनिया का स्वर्ग, जिसमें तारे स्थिर हैं, को स्वर्ग या स्वर्ग की ग्रहणशीलता के रूप में समझा जाता है जिसमें भगवान निवास करते हैं, ताकि एक के रूप या मौलिक अवधारणाएं दूसरे के दिव्य विचारों के अनुरूप हों।

58. एनबर्ग**:** खदानों का एक दानव, जो मुख्य रूप से जर्मनी में जाना जाता है। एक बार उसने अपनी सांस से बारह खनिकों को मार डाला जो चांदी की खदान में काम कर रहे थे, जिसका प्रभार उसके पास था। वह एक दुष्ट और भयानक दानव है, जो घोड़े की आकृति में दर्शाया गया है, जिसकी गर्दन बहुत बड़ी है और आँखें डरावनी हैं।

59. एन्पील**:** रब्बियों द्वारा पक्षियों की सरकार का प्रभार संभालने वाले स्वर्गदूतों में से एक, प्रत्येक ज्ञात प्रजाति के लिए एक या अधिक स्वर्गदूतों के संरक्षण में रखा गया था।

60. एंसेलम डी पर्मा**:** एक ज्योतिषी, जिनका जन्म पर्मा में हुआ था, जहाँ 1440 में उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने ज्योतिषीय संस्थाएँ लिखीं, जो कभी छपी नहीं। विएरियस और कुछ अन्य दानवशास्त्रियों ने उन्हें जादूगरों के साथ वर्गीकृत किया, क्योंकि कुछ ढोंगी, जो रहस्यमय शब्दों के माध्यम से घावों को ठीक करते थे, ने "एंसेलमाइट्स" का नाम ले लिया था। लेकिन नौडा ने देखा कि वे दावा करते थे कि उन्हें उपचार का उपहार पर्मा के एंसेलम से नहीं, बल्कि कैंटरबरी के सेंट एंसेलम से मिला है, ठीक वैसे ही जैसे स्पेन के सैल्यूटाडोर्स कैथरीन, उनके संरक्षक संत और इटली में सांप के काटने से ठीक होने वाले सेंट पॉल को पहचानते थे।

61. अनितिफ **:** एक अल्पज्ञात राक्षस, जिसने 1643 में लूवियर्स की ननों के कब्जे के दौरान, सेंट माइकल की सिस्टर बारबरा के शरीर पर कब्जा कर लिया था।

62. सेंट एंथोनी**:** एक दिन एक बहुत बड़ा दानव अपनी सेवाएँ देने के लिए सेंट एंथोनी के पास आया। जवाब में संत ने उसकी तरफ़ देखा और उसके चेहरे पर

थूक दिया। दानव ने इस घृणा को इतना दिल से लिया कि वह बिना कुछ कहे गायब हो गया और उसके बाद बहुत समय तक धरती पर आने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। * यह कल्पना करना मुश्किल है कि सेंट एंथोनी शैतान के साथ इतना बुरा व्यवहार कर सकता था, अगर कोई नहीं जानता कि शैतान ने उसे कितने प्रलोभन दिए थे, हालाँकि यह स्वीकार करना मुश्किल है कि शैतान ने उस पर इतने हमले किए, जबकि उसने खुद कहा था "मैं दानव से उतना ही डरता हूँ जितना कि एक मक्खी से, और क्रॉस के चिन्ह से मैं उसे तुरंत भगा सकता हूँ।"

सेंट एथनासियस, जिन्होंने सेंट एंथोनी का जीवन लिखा था, ने अपने नायक के शैतान के साथ रोमांच के साथ कुछ ऐसी घटनाओं को भी शामिल किया है जो इनसे काफी अलग हैं। कुछ दार्शनिकों ने, अनीहोनी की महान बुद्धिमत्ता पर आश्चर्यचकित होकर, उनसे पूछा कि किस पुस्तक में उन्होंने इतना बढ़िया सिद्धांत पाया है। संत ने एक हाथ से धरती की ओर इशारा किया, दूसरे से आकाश की ओर। "ये मेरी पुस्तकें हैं," उन्होंने कहा, "मेरे पास कोई और नहीं है। यदि मनुष्य सृष्टि के चमत्कारों का अध्ययन करने की योजना बनाते हैं, जैसा कि मैं करता हूँ, तो उन्हें वहाँ पर्याप्त ज्ञान मिलेगा। उनकी आत्मा जल्द ही सृष्टि से सृष्टिकर्ता तक पहुँच जाएगी।" और निश्चित रूप से ये ऐसे व्यक्ति के शब्द नहीं थे जो शैतान के साथ व्यापार करता था।

63. फादर सेबेस्टियन मिचेलिस : डोमिनिकन भिक्षु द्वारा लिखित हिस्टोइर वेरिटेबल एट मिमोरेबल्स ट्रोइस पॉसिड्स डी फ्लैंड्रे का तीसरा ग्रंथ, एंटीक्रिस्ट पर भूत-प्रेत भगाने वाले लोगों के शब्दों पर बहुत प्रकाश डालता है। "शैतान के माध्यम से गर्भ धारण करने पर, वह पागल की तरह दुष्ट होगा, ऐसी दुष्टता के साथ जैसा कि पृथ्वी पर कभी नहीं देखा गया। एक मानव शहीद के बजाय एक अमानवीय शहीद, वह ईसाइयों के साथ वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा कि नरक में आत्माओं के साथ किया जाता है।

उसके पास आराधनालय के कई नाम होंगे, और वह जब चाहे उड़ सकेगा। बेलज़ेबब उसका पिता होगा, लूसिफ़र उसका दादा होगा।" भूत भगाने वाले राक्षसों के रहस्योद्घाटन से पता चलता है कि 1613 में एंटीक्रिस्ट जीवित था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अभी तक अपना विकास प्राप्त नहीं किया है " उसे जादूगरों के सब्त के दिन बपतिस्मा दिया गया था, उसकी माँ, एक यहूदी महिला, जिसे ला बेले-फ्लेर कहा जाता था, से पहले।

वह 1613 में तीन साल का था। कहा जाता है कि लुइस गौफ्रिडी ने उसे पेरिस के पास एक मैदान में बपतिस्मा दिया था। भूत भगाने वाली एक जादूगरनी ने दावा किया कि उसने छोटे एंटीक्रिस्ट को अपने घुटनों पर रखा था। उसने कहा कि

उसका व्यवहार घमंडी था, और कि तब भी वह कई तरह की भाषाएँ बोलता था, लेकिन उसके पैरों की जगह पंजे थे, और उसने कोई चप्पल नहीं पहनी थी। वह बहुत नुकसान करेगा, लेकिन सांत्वना देने वाले लोग होंगे, क्योंकि पवित्र आत्मा अभी भी जीवित है।" (मर्लिन देखें।) उसके पिता को एक पक्षी की आकृति में दिखाया गया है, जिसके चार पैर, एक पूंछ, एक बैल का सिर बहुत चपटा, सींग और काले झबरा बाल हैं।

वह अपने पिता को एक मुहर के साथ चिह्नित करेगा जो इसे लघु रूप में दर्शाता है। माइकलिस कहते हैं कि उसके चारों ओर घृणित चीजें होंगी। वह पोप के कारण रोम को नष्ट कर देगा, और यहूदी उसकी मदद करेंगे। वह मृतकों को पुनर्जीवित करेगा, और तीस साल की उम्र में लूसिफ़र, सात सिर वाले ड्रैगन के साथ शासन करेगा, और तीन साल के शासन के बाद, मसीह उसे मार देगा।एंटीक्रिस्ट के बारे में कई ऐसे विवरण उद्धृत किए जा सकते हैं, जिनके प्रकट होने की धमकी लंबे समय से दी जा रही है, लेकिन अभी तक कोई पूर्ति नहीं हुई है।

(सेक एंड ऑफ द वर्ल्ड।) हालांकि, हमें कई साल पहले ल्योंस में रुसैंड द्वारा प्रकाशित एक खंड का उल्लेख करना चाहिए, जिसका नाम है, लेस प्रिकुरसर्स डीएस वी एंटच्रिस्ट। यह कार्य दर्शाता है कि एंटीक्रिस्ट का शासन, यदि यह शुरू नहीं हुआ है, तो निकट आ रहा है; अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिक, विश्वकोशकार और क्रांतिकारी कुछ भी नहीं थे, बल्कि एंटीथ्रिस्ट के लिए रास्ता तैयार करने और आगे बढ़ने के लिए अवतरित हुए राक्षस थे। हमारे अपने समय में यह अक्सर कहा जाता है कि एंटीक्रिस्ट कोई और नहीं बल्कि जर्मनी का पूर्व कैसर है।

64. प्रेत**:** प्रेत **(**लैटिन शब्द एपेरर्स से**,** जिसका अर्थ है प्रकट होना**) :**
अपने शाब्दिक अर्थ में केवल एक उपस्थिति है, अर्थात, किसी भी प्रकार की एक संवेदी धारणा, लेकिन रोजमर्रा के उपयोग में इस शब्द का एक अधिक सीमित अर्थ है और इसका उपयोग केवल एक असामान्य या अति-असामान्य उपस्थिति या धारणा को दर्शाने के लिए किया जाता है, जिसे किसी भी प्राकृतिक वस्तुनिष्ठ कारण से संदर्भित नहीं किया जा सकता है। इस अर्थ में लिया गया यह शब्द सभी दूरदर्शी दिखावट, मतिभ्रम, दिव्यदृष्टि और इसी तरह की असामान्य धारणाओं को शामिल करता है।

"भूत" और "प्रेत" अक्सर समानार्थी शब्दों के रूप में उपयोग किए जाते हैं, हालांकि पूर्व का महत्व निश्चित रूप से बहुत व्यापक है। भूत एक मृत मानव का

दृश्य प्रेत है, और इस शब्द का अर्थ है कि यह उस व्यक्ति की आत्मा है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। जानवरों और निर्जीव वस्तुओं के प्रेत भी अक्सर होते हैं। सभी प्रेत दृश्य छवियों का रूप नहीं लेते हैं; श्रवण और स्पर्श संबंधी गलत धारणाएँ, हालांकि कम आम हैं, लेकिन अज्ञात नहीं हैं, और एक घर का रिकॉर्ड है जो बैंगनी रंग की निरंतर गंध से "भूतिया" था।

65. भूत**-**प्रेत में विश्वास का विकास**:** इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह विश्वास जो भूत-प्रेत को उस प्राणी की आत्मा से जोड़ता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है - एक ऐसा विश्वास जो सभी देशों और सभी समयों में व्यापक रूप से प्रचलित है - सीधे प्राचीन एनिमिज्म सिद्धांत से जुड़ा है, जिसने प्रकृति में हर चीज को, मनुष्य से लेकर सबसे छोटे कीड़े तक, आकाशीय पिंडों से लेकर एक महत्वहीन पौधे या पत्थर तक, एक अलग आत्मा से संपन्न किया है।

यह समझना मुश्किल नहीं है कि आत्माओं की अवधारणा कैसे उत्पन्न हुई होगी। सर जे. फ्रैक्सर ने अपनी पुस्तक गोल्डन बॉ में कहा है: "जैसा कि जंगली लोग आमतौर पर निर्जीव प्रकृति की प्रक्रियाओं की व्याख्या यह मानकर करते हैं कि वे उन घटनाओं में या उनके पीछे काम करने वाले जीवित प्राणियों द्वारा निर्मित होती हैं, उसी तरह वे जीवन की घटनाओं की भी व्याख्या करते हैं। यदि कोई जानवर जीवित रहता है और चलता है, तो वह सोचता है कि ऐसा केवल इसलिए हो सकता है क्योंकि उसके अंदर एक छोटा जानवर है जो उसे चलाता है।

यदि कोई व्यक्ति जीवित रहता है और चलता है, तो ऐसा केवल इसलिए हो सकता है क्योंकि उसके अंदर एक छोटा आदमी या जानवर है जो उसे चलाता है। जानवर के अंदर का जानवर, आदमी के अंदर का आदमी, आत्मा है। और जैसे किसी जानवर या आदमी की गतिविधि आत्मा की उपस्थिति से समझाई जाती है, वैसे ही नींद या मृत्यु की शांति उसकी अनुपस्थिति से समझाई जाती है।

नींद या समाधि अस्थायी है, मृत्यु आत्मा की स्थायी अनुपस्थिति है।" कभी-कभी मानव आत्मा को एक पक्षी के रूप में दर्शाया जाता था - एक चील, एक कबूतर, एक कौवा - या किसी प्रकार के जानवर के रूप में, जैसे कि एक नदी की आत्मा घोड़े या साँप के रूप में हो सकती है, या मानव आकार में एक पेड़ की आत्मा हो सकती है; लेकिन अधिकांश लोगों के बीच यह विश्वास था कि आत्मा शरीर की एक सटीक प्रतिकृति है जो हर विशेषता में, यहाँ तक कि पोशाक आदि के विवरण में भी शरीर से मिलती जुलती है।

इस प्रकार, जब एक आदमी सपने में किसी दूसरे को देखता था, तो यह सोचा जाता था कि या तो सपने देखने वाले की आत्मा ने सपने देखने वाले व्यक्ति से मुलाकात की थी, या कि बाद वाले की आत्मा ने सपने देखने वाले से मुलाकात की थी। तर्क की एक आसान प्रक्रिया द्वारा, सिद्धांत को जानवरों और निर्जीव चीजों के सपनों को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया था, जो आत्माओं से संपन्न थे।

और इस प्रकार यह काफी संभावना है कि मतिभ्रम जिसके साथ आदिम लोगों के साथ-साथ संस्कृति के बाद के चरण में कभी-कभी दौरा किया गया था, और जिसे वे निस्संदेह अच्छी तरह से प्रेरित करना जानते थे, उन्हें उन चीज़ों की आत्मा माना जाना चाहिए जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। अगर यह मान लिया जाए कि टेलीपैथी और दिव्यदृष्टि कभी-कभी वर्तमान समय में और सभ्य लोगों के बीच काम करती है, तो यह और भी अधिक प्रचुर प्रमाणों पर माना जा सकता है कि वे आदिम जातियों के लिए जाने जाते थे।

और यह स्पष्ट है कि इन क्षमताओं का भूत-प्रेतों में विश्वास के विकास में एक शक्तिशाली प्रभाव होगा। एक मृत व्यक्ति का भूत, फिर से, अनिवार्य रूप से कब्र से परे खट्टे अस्तित्व की निरंतरता का सुझाव देगा, और एक बीमार व्यक्ति का भूत, या किसी अन्य गंभीर संकट में - जैसे कि आजकल टेलीपैथिक रूप से माना जा सकता है - भी माना जाएगा।

66. आत्मा के रूप में : जो ऐसे समय में शरीर से अनुपस्थित थी।एक व्यापक रूप से फैली हुई राय है कि भूत एक फिल्मी, अवास्तविक प्रकृति के होते हैं, और यह भी आदिम मनुष्य की पहली एनिमिस्टिक अवधारणाओं में अपनी शुरुआत करता प्रतीत होता है। संस्कृति के बहुत शुरुआती चरण में हम आत्मा और सांस को भ्रमित पाते हैं - उन्हें लैटिन स्पिरिटस और ग्रीक न्यूमा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में भी पहचाना जाता है।

इसलिए, यह कितना स्वाभाविक है कि ठंडी हवा में सफ़ेद धुंध में संघनित सांस को भूतों के रूप में माना जाना चाहिए। एक अन्य परिकल्पना के अनुसार, भूत की छायादार प्रकृति आत्मा और छाया के शुरुआती भ्रम के कारण हुई हो सकती है। इस प्रकार आत्मा के एनिमिस्टिक विचारों ने प्रेत में विश्वास को जन्म दिया है।

लेकिन एनिमिज्म इस विश्वास को और मजबूत करने में एक और योगदान देता है कि कई आत्माएँ ऐसी हैं जिनके पास शरीर नहीं है और कभी नहीं था, वे सच्चे

अलौकिक प्राणी हैं, जो आत्माओं से अलग हैं - देवता, प्राथमिक आत्माएँ और वे दुष्ट आत्माएँ जिन्हें बीमारी, आपदा, भूत-प्रेत और जादू-टोना के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। प्राणियों का यह वर्ग लोकप्रिय लोककथाओं की परियों, कल्पित बौनों, ब्राउनीज़, बोगीज़ और भूतों में विकसित हुआ है, जिनमें से कई भूतों के बारे में दर्ज किया गया है।

67. मनुष्य के साथ स्वर्गदूत या आत्मा : की बातचीत उतनी ही मधुरता से सुनी जाती है जितनी एक मनुष्य के साथ दूसरे मनुष्य की बातचीत; फिर भी यह दूसरों को नहीं सुनाई देती जो पास खड़े हैं, बल्कि 'केवल मनुष्य' को सुनाई देती है। इसका कारण यह है कि स्वर्गदूत या आत्मा की बातचीत पहले मनुष्य के विचारों में प्रवाहित होती है, और फिर आंतरिक तरीके से श्रवणेन्द्रिय में प्रवेश करती है, और इस तरह उसे भीतर से सक्रिय करती है, जबकि मनुष्य की बातचीत पहले हवा में प्रवाहित होती है, और बाहरी तरीके से श्रवणेन्द्रिय में प्रवेश करती है, जिसे वह बाहर से सक्रिय करती है। इसलिए, यह स्पष्ट है कि मनुष्य के साथ स्वर्गदूत और आत्मा की बातचीत मनुष्य में सुनी जाती है, और चूँकि यह श्रवणेन्द्रिय को समान रूप से प्रभावित करती है, इसलिए यह समान रूप से मधुर होती है।"

68. प्रेत के विभिन्न वर्ग। - प्रेत के विभिन्न वर्गों में से कई पर ऊपर विचार किया गया है, और अन्य को उनके अलग-अलग शीर्षकों के अंतर्गत निपटाया गया है, यहाँ उन्हें गिनने से अधिक कुछ करना शायद ही आवश्यक है। प्रेत को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - प्रेरित और स्वतःस्फूर्त। पहले वर्ग में सम्मोहन और सम्मोहन के बाद के मतिभ्रम (सम्मोहन देखें) और नशीले पदार्थों और मादक पदार्थों, उपवास, तप साधना, धूप, मादक मलहम और स्व-सम्मोहन के उपयोग से प्रेरित दर्शन (q.v.) शामिल हैं। माध्यमवादी या नींद में चलने वाली समाधि में देखे जाने वाले मतिभ्रम, बेशक, सम्मोहन के साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन आमतौर पर स्वतःस्फूर्त होते हैं, और अक्सर दिव्यदृष्टि (q.v.) से जुड़े होते हैं। क्रिस्टलोमेंसी (q.v.) या क्रिस्टल विजन

एक प्रकार का प्रेत है जिसे अक्सर दिव्यदृष्टि कहा जाता है, और इस मामले में टेलीपैथी का सिद्धांत विशेष रूप से लागू होता है। क्रिस्टल विजन प्रेरित प्रेत के शीर्षक के अंतर्गत आते हैं, क्योंकि क्रिस्टल ग्लोब में देखने से कुछ लोगों में सम्मोहन की एक प्रजाति उत्पन्न होती है, चेतना का कम या ज्यादा मामूली विघटन, जिसके बिना मतिभ्रम असंभव है। दिव्यदृष्टि का एक अन्य रूप दूसरी दृष्टि (q.v.) है। स्कॉटिश हाइलैंडर्स के बीच एक सामान्य क्षमता।

दूसरी दृष्टि से संपन्न व्यक्ति अक्सर प्रतीकात्मक प्रेत देखते हैं, उदाहरण के लिए, अंतिम संस्कार या ताबूत का दर्शन जब समुदाय में कोई मृत्यु होने वाली होती है। प्रतीकात्मक उपस्थिति वास्तव में दिव्यदृष्टि और आम तौर पर दर्शन की एक विशेषता है। दिव्यदृष्टि में पूर्वज्ञान और पूर्वाभास शामिल हैं - क्रमशः अतीत और भविष्य के दर्शन - साथ ही दूर से होने वाली समकालीन घटनाओं के प्रेत।

68. प्रेत के विभिन्न वर्ग : - प्रेत के विभिन्न वर्गों में से कई पर ऊपर विचार किया गया है, और अन्य को उनके अलग-अलग शीर्षकों के अंतर्गत निपटाया गया है, यहाँ उन्हें गिनने से अधिक कुछ करना शायद ही आवश्यक है। प्रेत को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - प्रेरित और स्वतःस्फूर्त। पहले वर्ग में सम्मोहन और सम्मोहन के बाद के मतिभ्रम (सम्मोहन देखें) और नशीले पदार्थों और मादक पदार्थों, उपवास, तप साधना, धूप, मादक मलहम और स्व-सम्मोहन के उपयोग से प्रेरित दर्शन (q.v.) शामिल हैं।

माध्यमवादी या नींद में चलने वाली समाधि में देखे जाने वाले मतिभ्रम, बेशक, सम्मोहन के साथ जुड़े हुए हैं, लेकिन आमतौर पर स्वतःस्फूर्त होते हैं, और अक्सर दिव्यदृष्टि (q.v.) से जुड़े होते हैं। क्रिस्टलोमेंसी (q.v.) या क्रिस्टल विजन एक प्रकार का प्रेत है जिसे अक्सर दिव्यदृष्टि कहा जाता है, और इस मामले में टेलीपैथी का सिद्धांत विशेष रूप से लागू होता है। क्रिस्टल विजन प्रेरित प्रेत के शीर्षक के अंतर्गत आते हैं, क्योंकि क्रिस्टल ग्लोब में देखने से कुछ लोगों में सम्मोहन की एक प्रजाति उत्पन्न होती है, चेतना का कम या ज्यादा मामूली विघटन, जिसके बिना मतिभ्रम असंभव है।

दिव्यदृष्टि का एक अन्य रूप दूसरी दृष्टि (q.v.) है। स्कॉटिश हाइलैंडर्स के बीच एक सामान्य क्षमता। दूसरी दृष्टि से संपन्न व्यक्ति अक्सर प्रतीकात्मक प्रेत देखते हैं, उदाहरण के लिए, अंतिम संस्कार या ताबूत का दर्शन जब समुदाय में कोई मृत्यु होने वाली होती है। प्रतीकात्मक उपस्थिति वास्तव में दिव्यदृष्टि और आम तौर पर दर्शन की एक विशेषता है। दिव्यदृष्टि में पूर्वज्ञान और पूर्वाभास शामिल हैं - क्रमशः अतीत और भविष्य के दर्शन - साथ ही दूर से होने वाली समकालीन घटनाओं के प्रेत।अक्सर मरने वाले व्यक्ति को दिव्यदृष्टि की शक्ति का श्रेय दिया जाता है। सपने, सख्ती से कहें तो, प्रेत होते हैं, लेकिन सामान्य उपयोग में यह शब्द केवल संयोगवश या सत्य सपनों या उन "रात के दृश्यों" के लिए लागू होता है, जो विचित्र रूप से स्पष्ट होते हैं।

69. आर्टेल : उन आत्माओं में से एक जिसे तल्मूड के रब्बियों ने पक्षियों के लोगों पर राजकुमार और राज्यपाल बनाया था।

70. अर्दत-उले : (सेमिटिक स्पिरिट)। वह एक महिला आत्मा या राक्षस है जो मनुष्यों से विवाह करती है और पुरुषों के घरों में बहुत नुकसान करती है।

71. एरिग्नोटे: लुसियन ने बताया कि कोरिंथ में, क्रैनकस क्वार्टर में, एक निश्चित घर था जिसमें कोई नहीं रहता था, क्योंकि यह एक भूत द्वारा प्रेतवाधित था। मिस्र के जादुई किताबों के बारे में अच्छी तरह से जानने वाले एरिग्नोटे नामक एक व्यक्ति ने रात बिताने के लिए खुद को घर में बंद कर लिया और शांति से दरबार में पढ़ना शुरू कर दिया। जल्द ही भूत ने अपना रूप दिखाया और एरिग्नोटे को डराने के लिए उसने सबसे पहले एक कुत्ते का रूप धारण किया, फिर एक बैल का और अंत में एक शेर का।

लेकिन एरिग्नोटे बिल्कुल भी परेशान नहीं हुआ। उसने अपनी किताबों में पाए गए सूत्रों से भूत को बुलाया और उसे दरबार के एक कोने में जाने के लिए मजबूर किया, जहाँ वह गायब हो गया। अगले दिन जिस स्थान पर भूत छिपा था, उसे खोदा गया और एक कंकाल मिला। 'जब उसे ठीक से दफनाया गया, तो भूत फिर कभी नहीं देखा गया। यह किस्सा एथेनोडोरस के साहसिक कारनामे का रूपांतरण है, जिसे लुसियन ने प्लिनी में पढ़ा था।

72. एरियोह : कुछ डेमोनोलॉफ़िस्टों के अनुसार प्रतिशोध का दानव। वह अलास्टर से अलग है, और केवल विशेष मामलों में प्रतिशोध के साथ खुद को व्यस्त रखता है जहां उसे उस उद्देश्य के लिए नियुक्त किया जाता है।

73. अर्नुफ्ल्स: एक मिस्र का जादूगर, जिसने मार्कस ऑरेलियोआ और उसकी सेना को एक ऐसे दर्रे में उलझा हुआ देखा जिसका प्रवेश द्वार उनके दुश्मनों द्वारा बंद कर दिया गया था, और जलते हुए आकाश के नीचे प्यास से मर रहा था, उसने चमत्कारिक बारिश करवाई, जिससे रोमियों को अपनी प्यास बुझाने में मदद मिली, जबकि गरज और ओलों ने दुश्मन को अपने हथियार डालने के लिए मजबूर कर दिया।

74. अष्टबुला पोल्टरजिस्ट, द: उन्नीसवीं सदी के मध्य में ओहियो के अष्टबुला काउंटी की एक महिला की उपस्थिति में हुई असाधारण गड़बड़ी का कथित

कारण। सबसे पहले वह अपने पति की मृत्यु पर एक माध्यम बन गई, और भूत-प्रेत और अन्य अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न कीं। फिर कुछ समय के लिए उसने मार्लबोरो में शरीर रचना विज्ञान का अध्ययन किया, और उसके बाद ऑस्टिनबर्ग में अपने घर लौट आई, जहाँ अजीब अभिव्यक्तियों का एक खतरनाक प्रकोप हुआ।

जब वह अपने कमरे में जाती थी तो सीढ़ी की छड़ें उसके पीछे चलती थीं, घर के चारों ओर हल्की वस्तुएँ उड़ती थीं, और अजीबोगरीब आवाज़ें सुनाई देती थीं। मार्लबोरो में, जब उसने अपने शारीरिक अध्ययन को फिर से शुरू किया, तो गड़बड़ी हिंसा में बढ़ गई, और उसे और उसकी रूममेट को एक लाश का भयानक दृश्य दिखाई दिया, जिसे वे दिन के समय काट रहे थे। उस समय के संशयवादी डॉ. रिचमंड का मानना था कि ये घटनाएँ माध्यम से निकलने वाले चुंबकीय-ऑडिक उत्सर्जन का परिणाम थीं।

75. एस्पफडोमनी**:** इंडीज में प्रचलित भविष्यवाणी का एक कम ज्ञात रूप, जैसा कि हमें कुछ यात्रियों द्वारा बताया गया है। डेल-एंकर कहते हैं कि भविष्यवक्ता या जादूगर एक चक्र बनाता है, एक बकलर पर बैठकर उसमें अपना स्थान ग्रहण करता है, और कुछ जादू-टोना करता है। वह मंत्रमुग्ध हो जाता है और एक परमानंद में डूब जाता है, जिससे वह केवल वही बातें बताने के लिए बाहर निकलता है जो उसका ग्राहक जानना चाहता है, और जो शैतान ने उसे बताई हैं।

76. एस्पिलेटो **(**मारियो **<**पी**):** लेबर के देश में एंडे की चुड़ैल, जो हेनरी चतुर्थ के शासनकाल में रहती थी। उसे उन्नीस साल की उम्र में गिरफ्तार किया गया था, और उसने कबूल किया कि उसे "सब्बाथ" पर ले जाया गया था, और वहाँ उसे कई भयानक अनुष्ठान करने के लिए मजबूर किया गया था।

77. गधा**:** मिस्र के लोग बुराई के देवता टाइफॉन को चढ़ाए जाने वाले केक पर उसकी छवि बनाते थे। रोमन गधे से मिलना अपशकुन मानते थे, लेकिन अरब और यहूदिया में इस जानवर का सम्मान किया जाता था और अरब में ही सिलनस के गधे ने अपने मालिक से बात की थी। अन्य बात करने वाले गधे थे बालाम का गधा जिसे महोमेट ने अल्बोरैक के साथ अपने स्वर्ग में रखा था; शेबा की रानी आसिस का गधा; और वह गधा जिस पर सवार होकर ईसा मसीह यरूशलेम में आए थे।

कुछ लोगों ने निर्दोष जानवर में कुछ पवित्र और रहस्यमय पाया है, और पहले एक ऐसी भविष्यवाणी की जाती थी जिसमें गधे के सिर का इस्तेमाल किया जाता था। गधे का सम्मान केवल भक्त ही नहीं करते, क्योंकि बुद्धिमान अग्रिप्पा ने अपनी पुस्तक ऑन द वैनिटी ऑफ द साइंसेज में उससे माफ़ी मांगी थी। मद्रास के भारतीयों के बीच। गधे ने विवेक और विवेक के साथ आज्ञा का पालन किया। दानवशास्त्रियों ने कहा कि ये अद्भुत गधे, अगर दानव नहीं थे, तो कम से कम मनुष्य के रूप में रूपांतरित थे, जैसे कि अपुलसियस, जिसे गधे में बदल दिया गया था।

विंसेंट डी ब्यूवैस दो महिलाओं के बारे में बात करते हैं, जो रोम के पास एक छोटी सी सराय चलाती थीं, और अपने मेहमानों को सूअर, मुर्गी या भेड़ में बदल कर बाज़ार में बेचती थीं। उनमें से एक ने, उन्होंने आगे कहा, एक निश्चित हास्य अभिनेता को गधे में बदल दिया, और जब वह अपनी नई खाल के नीचे अपनी प्रतिभा को बनाए रखता था, तो वह उसे शहर के बाहरी इलाकों में मेलों में ले जाती थी, जिससे उसे बहुत पैसा मिलता था। एक पड़ोसी ने इस समझदार गधे को अच्छी कीमत पर खरीदा, और इसे सौंपते समय जादूगरों ने खरीदार को चेतावनी देने का दायित्व महसूस किया कि गधे को पानी में न जाने दें।

इसके नए मालिक ने कुछ समय तक चेतावनी पर ध्यान दिया, लेकिन एक दिन बेचारा गधा किसी तरह आज़ाद हो गया और अपने आप को एक झील में फेंक दिया, जब वह अपने प्राकृतिक आकार में वापस आ गया, तो उसके चालक को बहुत आश्चर्य हुआ। यह मामला पोप के कानों तक पहुँचा, जिन्होंने दोनों चुड़ैलों को दण्डित किया, जबकि हास्य अभिनेता अपने पेशे में वापस लौट आया।

78. थियोसोफी में सूक्ष्म शरीर

वह शरीर है जो सूक्ष्म जगत में कार्य करता है। मनुष्य के बाकी पाँच शरीरों की तरह, यह भी पदार्थ से बना है, लेकिन सामान्य भौतिक शरीर की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म है। यह जुनून, भावनाओं और इच्छाओं का साधन है, और चूँकि यह भौतिक शरीर से परे भी फैला हुआ है, इसलिए यह वह माध्यम है

जिसके माध्यम से इन्हें बाद वाले शरीर तक पहुँचाया जाता है। जब यह सघन शरीर से अलग होता है, जैसा कि नींद के दौरान, या दवाओं के प्रभाव से, या दुर्घटनाओं के परिणामस्वरूप होता है - तो यह अपने साथ महसूस करने की क्षमता ले जाता है, और इसके वापस आने पर ही दर्द या ऐसी कोई अन्य घटना महसूस की जा सकती है।

अलगाव की इन अवधियों के दौरान सूक्ष्म शरीर भौतिक शरीर की सटीक प्रतिकृति होता है, और चूँकि यह विचार के प्रति अत्यंत संवेदनशील होता है, मृत और मरते हुए लोगों की प्रेत-जिनके बारे में सीमा क्षेत्र के नए विज्ञान में बहुत कुछ सुना जाता है-यहां तक कि सबसे छोटे विवरण में भी उन भौतिक शरीरों से मिलते-जुलते हैं जिन्हें उन्होंने हाल ही में छोड़ा है।

सूक्ष्म जगत, निश्चित रूप से, मध्यम शक्तियों वाले दिव्यदर्शी के लिए भी आसानी से उपलब्ध है, और इसलिए उपयुक्त शरीर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। विचार के विषय पर थियोसोफिकल शिक्षण के अनुसार, उत्तरार्द्ध वह अमूर्तता नहीं है जिसे आमतौर पर माना जाता है, बल्कि निश्चित रूपों से निर्मित है जिसका आकार विचार की गुणवत्ता पर निर्भर करता है, और यह निश्चित कंपन भी पैदा करता है, जिसे रंगों के रूप में देखा जाता है। इसलिए, दिव्यदर्शी किसी व्यक्ति के विकास की स्थिति को उसके सूक्ष्म शरीर की उपस्थिति से बताने में सक्षम हैं।

एक अस्पष्ट उपस्थिति अपूर्ण विकास को दर्शाती है, जबकि एक अंडाकार उपस्थिति अधिक परिपूर्ण विकास को दर्शाती है। चूंकि रंग विचार के प्रकार के संकेतक हैं, इसलिए सूक्ष्म शरीर में इनकी विविधता धारक के चरित्र को इंगित करती है।

निम्न विचार तीव्र रंगों को जन्म देते हैं, इसलिए उदाहरण के लिए क्रोध को सूक्ष्म शरीर के लाल रंग से पहचाना जाएगा, और इसके विपरीत, उच्च विचारों को कोमल रंगों की उपस्थिति से पहचाना जा सकेगा, उदाहरण के लिए धार्मिक विचार, जो नीले रंग का कारण बनते हैं। यह शिक्षा सूक्ष्म शरीर से उच्चतर शरीरों के लिए सही है, लेकिन सूक्ष्म शरीर का रंग भौतिक दुनिया में रहने वालों के लिए उच्चतर शरीरों के रंग की तुलना में बहुत अधिक परिचित है, जिनसे वे अपेक्षाकृत अपरिचित हैं।

सूक्ष्म शरीर के भावनात्मक और अन्य कार्यों के पीछे एक निश्चित सिद्धांत है। जिस पदार्थ से उत्तरार्द्ध बना है, वह निश्चित रूप से एक बुद्धिमान जीवन के

साथ जीवित नहीं है, लेकिन फिर भी इसमें एक प्रकार का जीवन है जो अपने अस्तित्व और जरूरतों को समझने के लिए पर्याप्त है। इस जीवन के विकास का चरण अवतरण का है, जहां तक इसका संबंध है, अभी तक मोड़ नहीं आया है। दूसरी ओर, जो शरीर धारण करता है, वह ऊपर की ओर बढ़ना शुरू कर देता है, और इसलिए उसके और सूक्ष्म शरीर के बीच शक्तियों का निरंतर विरोध होता है।

इसलिए, उसका सूक्ष्म शरीर उसके अंदर ऐसे स्थूल, प्रतिगामी विचारों को बढ़ाता है, जिन्हें वह पोषित कर सकता है, क्योंकि इन विचारों की दिशा उसकी अपनी दिशा से मेल खाती है। हालाँकि, अगर वह अपने सूक्ष्म शरीर के विरोध का विरोध करता है, तो सूक्ष्म शरीर की लालसा धीरे-धीरे कमज़ोर होती जाती है और अंत में हवा के साथ गायब हो जाती है। और इस तरह सूक्ष्म शरीर की संरचना बदल जाती है, स्थूल विचार अपने माध्यम स्थूल सूक्ष्म पदार्थ की मांग करते हैं, शुद्ध विचार सूक्ष्म सूक्ष्म पदार्थ की मांग करते हैं।

भौतिक जीवन के दौरान सूक्ष्म शरीर में विभिन्न प्रकार के पदार्थ आपस में मिल जाते हैं, लेकिन भौतिक मृत्यु के समय सूक्ष्म शरीर के पदार्थ में मूल जीवन सहज रूप से आत्म-संरक्षण की तलाश करता है, और इसलिए यह पदार्थ को सात संकेंद्रित कोशों की श्रृंखला में खुद को पुनर्व्यवस्थित करने का कारण बनता है, सबसे घना बाहर और सबसे महीन अंदर होता है। भौतिक दृष्टि आँखों पर निर्भर करती है, लेकिन सूक्ष्म दृष्टि सूक्ष्म पदार्थों के विभिन्न प्रकारों पर निर्भर करती है जो विभिन्न उतार-चढ़ावों के प्रति ग्रहणशीलता की स्थिति में होते हैं।

सूक्ष्म पदार्थ के बारे में जागरूक होने के लिए, सूक्ष्म शरीर में सूक्ष्म पदार्थ होना आवश्यक है, और इसी तरह अन्य प्रकार के पदार्थ भी। इसलिए, जब पुनर्व्यवस्था होती है, तो केवल स्थूल प्रकार के पदार्थों का ही दर्शन संभव होता है क्योंकि केवल उसी प्रकार का पदार्थ सूक्ष्म शरीर के मोटे बाहरी आवरण में दर्शाया जाता है। इन परिस्थितियों में, सूक्ष्म क्षेत्र का नया निवासी केवल इसका सबसे बुरा रूप ही देखता है, और अपने साथी निवासियों का भी केवल सबसे बुरा रूप ही देखता है, भले ही वे स्वयं जितनी निम्न अवस्था में न हों। यह अवस्था, निश्चित रूप से शाश्वत नहीं है, और विकास प्रक्रिया के अनुसार, सूक्ष्म पदार्थ का स्थूल आवरण धीरे-धीरे खत्म हो जाता है, और मनुष्य छह कम स्थूल आवरणों से ढका रहता है।

ये भी समय बीतने के साथ-साथ घिसकर अपने यौगिक तत्वों में विलीन हो जाते हैं और अंत में जब सभी में से सबसे कम स्थूल आवरण का अंतिम विघटन होता है, तो व्यक्ति सूक्ष्म जगत को छोड़कर मानसिक जगत में चला जाता है।

हालाँकि, सूक्ष्म शरीर की यह पुनर्व्यवस्था अपरिहार्य नहीं है और जो लोग सीख चुके हैं और जानते हैं, वे शारीरिक मृत्यु के समय इसे रोकने में सक्षम हैं। ऐसे मामलों में परिवर्तन बहुत छोटा प्रतीत होता है और तथाकथित मृत व्यक्ति अपना जीवन जीते रहते हैं और अपना काम उसी तरह करते रहते हैं जैसे वे भौतिक शरीर में करते थे।

79. सूक्ष्म जगत (समतल या क्षेत्र) :

काम लोक, थियोसोफी में, सात लोकों में से दूसरा सबसे निचला लोक है, भावनाओं, इच्छाओं और जुनूनों का लोक। मनुष्य शारीरिक मृत्यु के बाद इसमें प्रवेश करता है, और उसके विकास की अवस्था के अनुसार अलग-अलग अवधियों के लिए कार्य करता है, आदिम जंगली सूक्ष्म लोक में अपेक्षाकृत कम समय बिताता है, जबकि सभ्य मनुष्य अपेक्षाकृत अधिक समय बिताता है। उपयुक्त शरीर सूक्ष्म (q.v.) है, जो भौतिक शरीर की तरह पदार्थ से बना है, फिर भी इसकी बनावट बाद वाले की तुलना में बहुत महीन है।

हालाँकि यह मृत्यु के बाद के निवास के अपने पहलू में सबसे महत्वपूर्ण और सबसे दिलचस्प है, यह कहा जा सकता है कि भौतिक जीवन के दौरान भी, मनुष्य - न केवल दिव्यदर्शी जो इसे आसानी से प्राप्त करते हैं, बल्कि सामान्य मनुष्य भी - अस्थायी रूप से इसमें निवास कर सकते हैं और करते भी हैं। यह नींद के दौरान, या एनेस्थेटिक्स या दवाओं की क्रिया के कारण, या दुर्घटनाओं के कारण होता है, और फिर अंतःप्रवेशी सूक्ष्म शरीर अपने सघन भौतिक पड़ोसी को छोड़ देता है, और अपने साथ सुख और दर्द की भावना लेकर, थोड़े समय के लिए अपनी दुनिया में रहता है।

यहाँ भी जंगली की स्थिति उसके अधिक विकसित साथियों से भिन्न होती है, क्योंकि पूर्व अपने आस-पास के वातावरण से बहुत दूर नहीं जाता है, जबकि बाद वाला मानवता के लाभ के लिए उपयोगी, सहायक कार्य कर सकता है। इसके अलावा, यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि देह रहित मानव ही सूक्ष्म दुनिया के एकमात्र निवासी नहीं हैं, क्योंकि इसके बहुत से निवासी पूरी तरह से गैर-मानव प्रकृति के हैं - देवताओं या स्वर्गदूतों के निम्न क्रम, और

प्रकृति-आत्माएँ या तत्व, अच्छे और बुरे दोनों, जिनमें परियाँ शामिल हैं जो मानव दृष्टि की शक्तियों से परे हैं, और प्रलाप की दृष्टि में मौजूद राक्षस।

हालाँकि, अब सूक्ष्म जगत पर ध्यान देना पर्याप्त होगा, क्योंकि यह भौतिक मृत्यु के तुरंत बाद की स्थिति है और इसमें स्वर्ग और नरक दोनों शामिल हैं, जैसा कि इन्हें लोकप्रिय रूप से माना जाता है।

80 . पदार्थ के सात विभागों के अनुरूप : सात विभाग हैं, ठोस, तरल, गैसीय, ईथर, सुपर-ईथर, उपपरमाण्विक और परमाणु, और, जैसा कि सूक्ष्म शरीर पर लेख में उल्लेख किया गया है, यह मनुष्य के तत्काल भाग्य में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि अज्ञानता के कारण उसने अपने सूक्ष्म शरीर के पदार्थ को म्यान में पुनर्व्यवस्थित होने दिया है, तो वह एक समय में अपने परिवेश के केवल एक हिस्से के बारे में ही जानता है, और अनुभव के बाद ही, जिसमें से अधिकांश अत्यंत दर्दनाक हो सकते हैं, वह उस आनंद का आनंद लेने में सक्षम होता है जो सूक्ष्म दुनिया के उच्च विभागों में निहित है।

इन विभागों में सबसे निचला, सातवां, स्थूल और अनियंत्रित वासनाओं वाले लोगों का वातावरण है, क्योंकि यह और उनके सूक्ष्म शरीर का अधिकांश पदार्थ एक ही प्रकार का है, और यह एक बहुत ही नरक का निर्माण करता है, और एकमात्र नरक है जो मौजूद है। यह अवीची है, इच्छाओं का स्थान जो भौतिक शरीर की अनुपस्थिति के कारण संतुष्ट नहीं हो सकती, जो उनकी संतुष्टि का साधन था। इन इच्छाओं की यातनाएँ पुराने ईसाई रूढ़िवाद में नरक की आग की यातनाओं के अनुरूप हैं।

हालाँकि, उस रूढ़िवाद के विपरीत, दर्शन सिखाता है कि पीड़ा की स्थिति शाश्वत नहीं है, बल्कि समय के साथ समाप्त हो जाती है जब इच्छाएँ लंबे समय तक बिना पूर्ति के कुतरती रहती हैं, अंततः मर जाती हैं, और इसलिए अवीची को एक शुद्धिकरण अवस्था के रूप में देखना अधिक सही है।

हालाँकि, साधारण मनुष्य सूक्ष्म जगत के इस सातवें विभाजन का अनुभव नहीं करता है, बल्कि अपने चरित्र के अनुसार खुद को तीन अगले उच्चतर विभाजनों में से एक में पाता है। छठा विभाजन उसके भौतिक अस्तित्व से बहुत कम भिन्न है, और वह अपने पुराने परिवेश में अपने पुराने दोस्तों के बीच रहता है, जो निश्चित रूप से उसकी उपस्थिति से अनजान हैं, और वास्तव में, अक्सर यह महसूस नहीं करते हैं कि जहाँ तक भौतिक दुनिया का संबंध है, वह मर चुका है।

पाँचवाँ और चौथा विभाग अधिकांश मामलों में इससे काफी मिलता-जुलता है, लेकिन उनके निवासी उन गतिविधियों और रुचियों में कम और कम डूबते जाते हैं, जिनमें अब तक वे उलझे हुए थे, और उनके सूक्ष्म शरीर का प्रत्येक आवरण क्रमशः क्षीण होता जाता है, जैसा कि भोगवादी के शरीर का स्थूल बाह्य आवरण होता है। तीन उच्चतर विभाग अभी भी सामान्य भौतिक दुनिया से अधिक दूर हैं, और उनके निवासी आनंद की ऐसी स्थिति का आनंद लेते हैं, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते; सांसारिक चिंताएँ और परवाहें बिलकुल गायब हैं, निम्न विभागों में निम्नतर इच्छाओं का आग्रह समाप्त हो गया है, और अब उच्चतम विचारों और आकांक्षाओं के वातावरण में लगातार रहना संभव है। तीसरा विभाग आध्यात्मिक "ग्रीष्म भूमि" के अनुरूप कहा जाता है, जहाँ निवासी अपने स्वयं के निर्माण की दुनिया में रहते हैं - अपने विचारों के निर्माण की दुनिया में।

पदार्थ के सात विभागों के अनुरूप सात विभाग हैं, ठोस, तरल, गैसीय, ईथर, सुपर-ईथर, उपपरमाण्विक और परमाणु, और, जैसा कि सूक्ष्म शरीर पर लेख में उल्लेख किया गया है, यह मनुष्य के तत्काल भाग्य में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि अज्ञानता के कारण उसने अपने सूक्ष्म शरीर के पदार्थ को म्यान में पुनर्व्यवस्थित होने दिया है, तो वह एक समय में अपने परिवेश के केवल एक हिस्से के बारे में ही जानता है, और अनुभव के बाद ही, जिसमें से अधिकांश अत्यंत दर्दनाक हो सकते हैं, वह उस आनंद का आनंद लेने में सक्षम होता है जो सूक्ष्म दुनिया के उच्च विभागों में निहित है।

इन विभागों में सबसे निचला, सातवां, स्थूल और अनियंत्रित वासनाओं वाले लोगों का वातावरण है, क्योंकि यह और उनके सूक्ष्म शरीर का अधिकांश पदार्थ एक ही प्रकार का है, और यह एक बहुत ही नरक का निर्माण करता है, और एकमात्र नरक है जो मौजूद है। यह अवीची है, इच्छाओं का स्थान जो भौतिक शरीर की अनुपस्थिति के कारण संतुष्ट नहीं हो सकती, जो उनकी संतुष्टि का साधन था।

इन इच्छाओं की यातनाएँ पुराने ईसाई रूढ़िवाद में नरक की आग की यातनाओं के अनुरूप हैं। हालाँकि, उस रूढ़िवाद के विपरीत, दर्शन सिखाता है कि पीड़ा की स्थिति शाश्वत नहीं है, बल्कि समय के साथ समाप्त हो जाती है जब इच्छाएँ लंबे समय तक बिना पूर्ति के कुतरती रहती हैं, अंततः मर जाती हैं, और इसलिए अवीची को एक शुद्धिकरण अवस्था के रूप में देखना अधिक सही है।

हालाँकि, साधारण मनुष्य सूक्ष्म जगत के इस सातवें विभाजन का अनुभव नहीं करता है, बल्कि अपने चरित्र के अनुसार खुद को तीन अगले उच्चतर विभाजनों

में से एक में पाता है। छठा विभाजन उसके भौतिक अस्तित्व से बहुत कम भिन्न है, और वह अपने पुराने परिवेश में अपने पुराने दोस्तों के बीच रहता है, जो निश्चित रूप से उसकी उपस्थिति से अनजान हैं, और वास्तव में, अक्सर यह महसूस नहीं करते हैं कि जहाँ तक भौतिक दुनिया का संबंध है, वह मर चुका है। पाँचवाँ और चौथा विभाग अधिकांश मामलों में इससे काफी मिलता-जुलता है, लेकिन उनके निवासी उन गतिविधियों और रुचियों में कम और कम डूबते जाते हैं, जिनमें अब तक वे उलझे हुए थे, और उनके सूक्ष्म शरीर का प्रत्येक आवरण क्रमशः क्षीण होता जाता है।

जैसा कि भोगवादी के शरीर का स्थूल बाह्य आवरण होता है। तीन उच्चतर विभाग अभी भी सामान्य भौतिक दुनिया से अधिक दूर हैं, और उनके निवासी आनंद की ऐसी स्थिति का आनंद लेते हैं, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते; सांसारिक चिंताएँ और परवाहें बिलकुल गायब हैं, निम्न विभागों में निम्नतर इच्छाओं का आग्रह समाप्त हो गया है, और अब उच्चतम विचारों और आकांक्षाओं के वातावरण में लगातार रहना संभव है। तीसरा विभाग आध्यात्मिक "ग्रीष्म भूमि" के अनुरूप कहा जाता है, जहाँ निवासी अपने स्वयं के निर्माण की दुनिया में रहते हैं - अपने विचारों के निर्माण की दुनिया में।

81. आत्मध्यान**:** श्रीमत् शंकराचार्य के राजयोग दर्शन में, आत्मध्यान आत्मा और ब्रह्म के एकत्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक चरणों में से एक है। यह चौदहवाँ चरण है और यह "जम ब्रह्म" विश्वास से उत्पन्न होने वाली सर्वोच्च आनंद की स्थिति है।

82. आत्मा**:** इसका अनुवाद "आत्मा" है, लेकिन बेहतर अनुवाद "स्वयं" है, और हिंदू धर्म में इसका अर्थ है आत्मा का ईश्वर के साथ मिलन। ऐसा माना जाता है कि आत्मा न तो शरीर है, न ही मन, न ही विचार, बल्कि ये केवल ऐसी स्थितियाँ हैं, जिनके कारण आत्मा पर बादल छा जाते हैं, जिससे वह ईश्वर के साथ अपनी एकता की भावना खो देती है। उपनिषदों में कहा गया है "आत्मा, छोटे से भी छोटी, महान से भी बड़ी, प्राणी के हृदय में छिपी हुई है;" और "शुरुआत में आत्मा थी।"

83. अगस्त **:** आत्माएँ, शेल्फ़ ऑफ़ द: जापान देश में, हर घर में एक अलग कमरा होता है, जिसे स्पिरिट चैंबर कहा जाता है, जिसमें एक शेल्फ़ या मंदिर होता है, जिसमें परिवार के मृतक सदस्यों के नाम वाली पट्टियाँ होती हैं, जिसमें

सिर्फ़ मितामा (आत्मा) शब्द जोड़ा जाता है। यह पूर्वजों की पूजा की एक प्रजाति है, और इसे "घर" पूजा के रूप में जाना जाता है।

84. अंख**:** मिस्र में जीवन का प्रतीक, शायद वह जीवन जो मृत्यु के बाद भी व्यक्ति के पास रहता है। यह अनुमान लगाया जाता है कि यह पुरुष और महिला सिद्धांतों के मिलन, जीवन की उत्पत्ति का प्रतीक है, और अमेरिकी क्रॉस की तरह यह चार हवाओं, बारिश लाने वाले और उर्वरकों का प्रतीक है। इसे हर तरह की सामग्री में निर्मित पाया गया है, और कभी-कभी डैड या टैट प्रतीक (q.v.) के साथ संयोजन में पाया जाता है। इसे आमतौर पर देवता अपने दाहिने हाथ में धारण करते हैं।

85. आभा**:** एक उत्सर्जन जो मनुष्य को घेरे रहता है, मुख्यतः सिर को घेरे रहता है, और माना जाता है कि यह तंत्रिका तंत्र से निकलता है। इसे विभिन्न रंगों से भरे प्रकाश के बादल के रूप में वर्णित किया गया है। यह दिव्य दृष्टि से देखा जाता है, भौतिक दृष्टि से अदृश्य होता है। कुछ अधिकारी आभा के अस्तित्व को ऐसे पवित्र उदाहरणों में खोजते हैं जैसे मूसा के चारों ओर चमकने वाली धुंधली रोशनी, जिसे इस्राएल के बच्चे नहीं देख पाए थे, जब वह दस आज्ञाओं के साथ उत्कीर्ण पत्थर की पटियाएँ लेकर पहाड़ से नीचे उतरे थे; अत्यधिक चमकदार रोशनी जो उनके धर्मांतरण के समय संट पॉल की दृष्टि के चारों ओर चमकी थी; और यीशु मसीह के रूपांतरण में, जब उनका वस्त्र इतना चमकीला था कि पृथ्वी पर कोई भी धोबी उसे सफेद नहीं कर सकता था।

कई मध्ययुगीन संतों के बारे में कहा जाता है कि वे प्रकाश के बादल से घिरे हुए थे। सेंट जॉन ऑफ द क्रॉस के बारे में कहा जाता है कि जब वे वेदी पर या प्रार्थना में घुटने टेकते थे, तो उनके चेहरे से एक खास चमक निकलती थी; सेंट फिलिप नेरी को लगातार रोशनी में लिपटा हुआ देखा जाता था; सेंट चार्ल्स बोर्रोमो भी इसी तरह से प्रकाशित थे। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि जब कोई व्यक्ति उच्च विचार और आध्यात्मिक आकांक्षा में लगा होता है, तो आभा के रंग कुछ समय के लिए अधिक चमकदार और पारदर्शी हो जाते हैं, इसलिए उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।

ईसाई कला में, संतों और पवित्र पात्रों के सिर के चारों ओर एक प्रभामंडल या निंबस चित्रित किया जाता है, जिसे आभा का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जाता है; कभी-कभी पूरे शरीर के साथ-साथ सिर के चारों ओर एक चमकदार बादल दिखाया जाता है, जिसे ऑरियोला कहा जाता है। यह भी माना जाता है कि

मध्यकालीन चित्रों और रंगीन कांच में शरीर और कपड़ों के रंग चित्रित व्यक्ति के आभा रंगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अभिप्रेत हैं।

प्राचीन काल के राजाओं और पुजारियों द्वारा पहने जाने वाले मुकुट और विशिष्ट सिर-वस्त्र, आभा के प्रतीक माने जाते हैं। पूर्व की कई पवित्र पुस्तकों में, महान शिक्षकों और पवित्र पुरुषों के चित्रण में पूरे शरीर में प्रकाश फैला हुआ दिखाया गया है। इसके उदाहरण भारत और सीलोन की मंदिर गुफाओं, जापानी बौद्ध पुस्तकों, मिस्र, ग्रीस, मैक्सिको और पेरू में भी पाए जा सकते हैं।

गुप्त साहित्य में आभा की परंपरा बहुत पुरानी है, 16वीं शताब्दी में पैरासेल्सस ने इसका उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है: "महत्वपूर्ण शक्ति मनुष्य में बंद नहीं होती, बल्कि उसके चारों ओर एक चमकदार क्षेत्र की तरह फैलती है, और इसे दूर से भी क्रियाशील बनाया जा सकता है। इन अर्ध-प्राकृतिक किरणों में मनुष्य की कल्पना स्वस्थ या रुग्ण प्रभाव उत्पन्न कर सकती है।

यह जीवन के सार को विषाक्त कर सकती है और बीमारियाँ पैदा कर सकती है, या यह अशुद्ध हो जाने के बाद इसे शुद्ध कर सकती है और स्वास्थ्य को बहाल कर सकती है।" फिर से: हमारे विचार केवल चुंबकीय उत्सर्जन हैं, जो हमारे मस्तिष्क से निकलकर, समान दिमागों में प्रवेश करते हैं और हमारे जीवन के प्रतिबिंब के साथ हमारे रहस्यों की मृगतृष्णा को वहाँ ले जाते हैं।" एक आधुनिक थियोसोफिकल विवरण इस प्रकार है: "आभा एक अत्यधिक जटिल और उलझी हुई अभिव्यक्ति है, जिसमें एक ही क्षेत्र में कई प्रभाव संचालित होते हैं।

आभा को बनाने वाले कुछ तत्व शरीर से प्रक्षेपित होते हैं, अन्य सूक्ष्म सिद्धांतों से, और अन्य "उच्च स्व" या स्थायी अहंकार से जुड़े अधिक आध्यात्मिक सिद्धांतों से; और विभिन्न आभाएँ एक दूसरे के चारों ओर नहीं पड़ी हैं, बल्कि सभी एक साथ मिश्रित हैं और एक ही स्थान पर हैं। गुप्त प्रशिक्षण द्वारा निर्देशित, दिव्यदर्शी संकाय आभा में विभिन्न तत्वों का पूर्ण विश्लेषण कर सकता है, और उन नाजुक रंगों का अनुमान लगा सकता है जिनसे यह बना है - हालांकि सभी एक साथ मिश्रित हैं - जैसे कि प्रत्येक को अलग-अलग देखा गया हो।

अधिक सटीक रूप से वर्गीकृत, आभा के विभाजन इस प्रकार बताए गए हैं: i, स्वास्थ्य आभा; 2, प्राण आभा; 3, "कर्म" आभा, जो मनुष्य में पशु आत्मा की आभा है; 4, चरित्र की आभा; 5, आध्यात्मिक प्रकृति की आभा। "स्वास्थ्य आभा" का वर्णन इस प्रकार किया गया है: "यह लगभग रंगहीन है, लेकिन रेडियल स्ट्रिएशन की एक अजीब प्रणाली होने के कारण यह बोधगम्य हो जाती

है, यानी यह शरीर से सभी दिशाओं में समान रूप से विकीर्ण होने वाली सीधी रेखाओं की एक बड़ी संख्या से बनी होती है।"

दूसरी, या ** प्राण "आभा% को एक निश्चित सीमा तक इच्छा के नियंत्रण में कहा जाता है, जब यह ** लिंग चरिरा" या सूक्ष्म शरीर के भीतर घूमती है, तो यह "एक नाजुक गुलाबी रंग की होती है, जिसे यह खो देती है, और बाहर की ओर विकीर्ण होने पर नीला हो जाती है।" तीसरी आभा "अभिव्यक्ति का क्षेत्र या दर्पण है जिसमें हर भावना, हर इच्छा प्रतिबिंबित होती है।" इस आभा के रंग लगातार बदलते रहते हैं, जैसा कि दिव्यदर्शी दृष्टि से देखा जाता है।

"क्रोध का विस्फोट पूरे आभा को गहरे लाल रंग की चमक से भर देगा, जबकि अचानक आतंक एक पल में सब कुछ भयावह ग्रे में बदल देगा।" चौथी आभा स्थायी चरित्र की है, और कहा जाता है कि इसमें व्यक्तित्व के पिछले सांसारिक जीवन का रिकॉर्ड होता है। पाँचवीं आभा अक्सर दिव्यदर्शी लोगों द्वारा भी नहीं देखी जाती है, लेकिन इसे देखने वालों द्वारा वर्णित किया जाता है, केवल उन मामलों में जहाँ आध्यात्मिक प्रकृति सबसे शक्तिशाली कारक है, "चौंकाने वाली चमक के साथ बाकी सभी आभाओं को मात देती है।"

यह घोषित किया जाता है कि आभा के रंगों को भौतिक दृष्टि से देखे जाने वाले सामान्य रंगों के संदर्भ में पर्याप्त रूप से वर्णित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि वे बहुत अधिक चमकीले होते हैं, और अधिक विविध रंगों और रंगों के होते हैं। इनका प्रतीकात्मक अर्थ मोटे तौर पर निम्नलिखित क्रम का है गुलाब, शुद्ध स्नेह; चमकीला लाल, क्रोध और बल; गंदा लाल, जुनून और कामुकता; पीला, शुद्धतम नींबू रंग, बौद्धिक गतिविधि का उच्चतम प्रकार; नारंगी,स्वार्थी उद्देश्यों, गर्व और महत्वाकांक्षा के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बुद्धि; भूरा,लोभ।

हरा रंग विभिन्न महत्वों का रंग है; इसका मूल अर्थ है किसी दूसरे की स्थिति में खुद को रखना। अपने निचले पहलुओं में यह छल और ईर्ष्या का प्रतिनिधित्व करता है; भावनात्मक सरगम में उच्चतर, यह अनुकूलनशीलता का प्रतीक है, और अपने सबसे उच्च स्तर पर, जब यह पत्तियों के रंग पर बताता है, सहानुभूति, अन्य लोगों के लिए सोचने का सार।

कुछ रंगों में हरा रंग निम्न बौद्धिक और आलोचनात्मक क्षमताओं का प्रतीक है, जो पीले रंग में विलीन हो जाता है। 'नीला धार्मिक भावना और भक्ति को दर्शाता है, इसके विभिन्न रंगों को भक्ति की विभिन्न डिग्री के अनुरूप कहा जाता है, जो बुतपरस्ती से लेकर सबसे ऊंचे धार्मिक आदर्शवाद तक बढ़ता है। बैंगनी रंग

मानसिक क्षमता, आध्यात्मिकता, राजसीपन, ज्ञान से उत्पन्न आध्यात्मिक शक्ति और गुप्त श्रेष्ठता का प्रतिनिधित्व करता है।

86. ऑस्टाटकेओ**-**पॉलीगौर **:** फारसी दुष्टात्माओं का एक वर्ग। इनकी संख्या आठ है और ये दुनिया के आठों पक्षों पर राज करते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं: (1) इंदिरेन, इन जिन्नियों का राजा; (?) ऑग्ने-बौगौवेन, अग्नि का देवता; (3) ईमेन मृत्यु और नरक का राजा; (4) नेरुडी, विशालकाय आकृति में पृथ्वी; (5) वैवू, वायु और हवाओं का देवता (6) वरूणोन, बादलों और बारिश का देवता; (7) गुओबेरेन, धन का देवता; (8) एस्सौनीन या शिवेन।

87. आत्मकथा **(Autography) :** एक शब्द जिसका प्रयोग कभी-कभी "प्रत्यक्ष" लेखन की आध्यात्मिक घटना को दर्शाने के लिए किया जाता है।

88. अवलेहल **:** थियोसोफिक नरक है। यद्यपि यह यातना का स्थान है, फिर भी यह नरक की सामान्य अवधारणा से बहुत हद तक भिन्न है। इसकी पीड़ाएँ शारीरिक लालसाओं की पीड़ाएँ हैं, जो भौतिक शरीर की कमी के कारण संतुष्ट नहीं हो सकती हैं। मृत्यु के बाद भी मनुष्य वैसा ही बना रहता है जैसा वह मृत्यु से पहले था, और यदि जीवन में वह प्रबल इच्छाओं या जुनून से ग्रस्त रहा है, तो ऐसा जुनून अभी भी जारी रहता है, हालाँकि, जिस सूक्ष्म तल में वह खुद को पाता है, वहाँ इन इच्छाओं या जुनूनों की संतुष्टि असंभव है।

बेशक, इन यातनाओं का तरीका अनंत है, चाहे वह पुष्टिकृत कामुक व्यक्ति हो जो उन्हें भुगतता है, या अधिक सामान्य व्यक्ति जो, शारीरिक चीजों से बंधे बिना, फिर भी दुनिया के मामलों को अपने जीवन में बहुत अधिक होने देता है, और अब बर्बाद हो गया है।

89. बा **(**मिस्र में आत्मा की अवधारणा**) :** जो एक मानव-मनका पक्षी के रूप में मृत्यु के बाद शरीर को छोड़ देता है और देवताओं की ओर उड़ जाता है। यह ममी को सांत्वना देने और अमरता के बारे में उसे आश्वस्त करने के उद्देश्य से समय-समय पर ममी के पास लौटता है। कभी-कभी यह अंख (q.v.) और तिफ (q.v.) को पकड़ता है और कभी-कभी मृतक के लिए कब्र-शाफ्ट से नीचे उड़ते हुए या ममी के सीने पर बैठे हुए दर्शाया जाता है। इसे कभी-कभी ममी के डिब्बों के ढक्कन पर उकेरा जाता था। बुक ओज थी डेड में एक अध्याय बा को प्रचुर मात्रा

में भोजन देने का वादा करता है, इसलिए यह अवधारणा पूरी तरह से आध्यात्मिक नहीं लगती।

90. बाल्बर: उहट विएरियस के अनुसार। दूसरे क्रम का एक दानव: नरकीय गठबंधन का स्वामी। उसे नरक के अभिलेखों का सचिव और रक्षक कहा जाता है।

91.एसेर **:** अग्नि तत्व का एक देवदूत। एसेर जोरोस्टर के पिता का नाम भी है।

92. भूत**-**प्रेत **:** - जो आत्माएँ मनुष्य के शत्रु थे, उनमें मृतकों के भूत भी सबसे अधिक विषैले थे,और खास तौर पर उन लोगों के भूत जिन्हें ठीक से दफनाया नहीं गया था। ये बेघर आत्माएँ (कब्र मृतकों का घर थी) खाने-पीने की चीज़ों या भूतहा घरों की तलाश में सड़कों पर भटकती रहती थीं। अक्सर वे मनुष्य को वास्तविक नुकसान पहुँचाती थीं। भयानक रूप से, वे बच्चों के सामने प्रकट होती थीं और उन्हें मौत के घाट उतार देती थीं। वे यात्रियों को रोकती थीं और दुःखी लोगों का मज़ाक उड़ाती थीं। चीख़-उल्लू एक माँ थी जो प्रसव-काल में ही मर गई थी और रात-रात भर एकांत स्थानों पर अपने दुःख का रोना रोती थी।

कभी-कभी वह राक्षसी रूप में प्रकट होती थी और यात्रियों को मार देती थी। एडम की पहली पत्नी लिलिथ एक राक्षस थी जो कभी खूबसूरत थी और प्रेमियों को धोखा देने और उनके खिलाफ़ बुरा काम करने की आदत में थी। एक डायन, लैबर्टू, पहाड़ों और दलदलों को प्रेतवाधित करती थी और बच्चों को उसके हमलों से बचाने के लिए मंत्रमुग्ध करना पड़ता था। उसका एक मानवीय इतिहास भी था। यह विश्वास कि मृतकों की आत्माओं को रहस्योद्घाटन करने के लिए उनकी कब्रों से बुलाया जा सकता है, बेबीलोनिया में भी प्रचलित था।

गिलगमेश महाकाव्य में, नायक अपने पुराने दोस्त और साथी योद्धा ई-बानी की कब्र पर जाता है। भूत एक "अजीब झोंके" की तरह उठता है और उससे पूछे गए विभिन्न सवालों का बहुत दुख के साथ जवाब देता है। भविष्य के जीवन के बारे में बेबीलोन का दृष्टिकोण गहन निराशा और निराशावाद से भरा हुआ था। सबसे भाग्यशाली और औपचारिक रूप से दफनाए गए मृतकों के भूतों का भी भाग्य अंधेरे और धूल के बीच रहना था। ई-बानी के भूत ने गिलगमेश से कहा कि वह मछली है - शायद ईए जनजाति का मछली कुलदेवता।

मृतकों को देवताओं के स्वर्ग में प्रवेश नहीं दिया जाता था। जब एक पसंदीदा इंसान, जैसे कि बेबीलोनियन नूह, देवताओं की संगति में शामिल हुआ, तो उसने उसे एक द्वीप स्वर्ग सौंपा जहाँ गिलगमेश ने उससे मुलाकात की। वहाँ वह अपनी पत्नी के साथ रहता था। गिलगमेश को उतरने की अनुमति नहीं थी, और वह अपनी नाव में बैठकर अपने अमर पूर्वज से बातचीत करता था। देवताओं ने जीवन का भोजन खाकर और जीवन का जल पीकर अमरता प्राप्त की। डोनाल्ड मैकेंज़ी।

93.बैचलर**:** यह नाम उनके शैतानी महामहिम को दिया गया था, जब वह चुड़ैलों के साथ प्रेम संबंध बनाने के उद्देश्य से एक बड़े बकरे की आड़ में प्रकट हुए थे।

94. बेल**:** ग्रैंड ग्रिमोइरे (q.v.) में उल्लिखित एक राक्षस, और नरकीय शक्तियों का प्रमुख। यह उसके साथ है कि विएरियस ने प्रसिद्ध स्यूडोनोमार्चिया दासमोहुम की अपनी सूची शुरू की। वह नरक के पहले सम्राट के रूप में बेल का उल्लेख करता है, और कहता है कि उसकी संपत्तियाँ उसके पूर्वी क्षेत्रों में स्थित हैं। उसके तीन सिर हैं, एक केकड़े का, दूसरा बिल्ली का और तीसरा आदमी का। साठ-छह सेनाएँ उसकी आज्ञा मानती हैं।

95.बेलोलेन **:** मैरी: लेबर देश की एक जादूगरनी, जो फ्रांस के हेनरी चतुर्थ के शासनकाल में नरकीय सब्बाथ में शामिल हुई थी। उसके खिलाफ अभियोग में यह बात सामने आई कि उसने सब्बाथिक मीटिंग में एक छोटे बच्चे का कान खाया था। उसकी कई जादू-टोने की हरकतों के कारण उसे जेल में डाल दिया गया।

96.बाल्टाज़ो**:** 1566 में लियोन की एक युवती निकोल ऑब्री पर कब्जा करने वाले राक्षसों में से एक। वह उसे राक्षस-कब्ज़ से मुक्त करने के बहाने उसके पति के साथ खाना खाने गया, जो उसने पूरा नहीं किया। यह देखा गया कि रात के खाने में उसने शराब नहीं पी, जो दर्शाता है कि राक्षस शराब से दूर रहते हैं।

97. बाल्टस **:** जीन फ्रेंकोइस: एक विद्वान जेसुइट जिनकी मृत्यु 1743 में हुई। 1709 में स्ट्रासबर्ग में प्रकाशित फॉन्टेनेल के ओरेकल के इतिहास के अपने संदर्भ में, उन्होंने पुष्टि की कि पूर्वजों के दैवज्ञ राक्षसों का काम थे, और वे पृथ्वी पर मसीह के मिशन के दौरान मौन हो गए थे।

98. बंशी : "इसलिए, आयरलैंड में, घृणित 'बंशी' कई परिवारों के लिए भय का स्रोत है, जिनके खिलाफ उसकी दुश्मनी है। * ऐसा प्रतीत होता है/मैकनैली कहते

हैं, 'एक कुलीन परिवार, जिसका नाम मेयो में अभी भी जाना जाता है, में इस विवरण की एक बंशी रहती है - एक युवा लड़की की आत्मा, जिसे धोखा दिया गया था, और बाद में परिवार के एक पूर्व मुखिया द्वारा हत्या कर दी गई थी।

अपनी अंतिम सांस के साथ उसने अपने हत्यारे को शाप दिया, और वादा किया कि वह हमेशा उसके और उसके साथ रहेगी। कई वर्षों के बाद, सरदार ने अपने तरीके सुधारे, और उसका युवावस्था का अपराध लगभग खुद भी भूल गया था, जब एक रात, जब वह और उसका परिवार आग के पास बैठे थे, तो महल की दीवारों के बाहर अचानक सबसे भयानक चीखें सुनाई दीं; सभी बाहर भागे, लेकिन कुछ भी नहीं देखा।

रात भर चीखें जारी रहीं जैसे कि महल राक्षसों द्वारा घेर लिया गया था, और दुखी आदमी ने बंशी की चीख में उस युवा लड़की की आवाज़ पहचान ली जिसकी उसने हत्या की थी। अगली रात उसकी हत्या उसके एक साथी ने कर दी जब वह अपने अनुयायियों के पास गया, तो फिर से जंगली अलौकिक चीखें उसके भाग्य पर खुशी से झूमती हुई सुनाई दीं। उस रात के बाद से, ऐसा कहा जाता है कि 'घृणास्पद बंशी' ने बदला लेने की खुशी के साथ परिवार को सूचित करना कभी नहीं छोड़ा, जब भी उनके किसी सदस्य का समय आया।

98. बैफोमेट : टेम्पलर्स (q.v.) की बकरी की मूर्ति और जादूगरों के सब्बाथ का देवता। नाम तीन संक्षिप्त रूपों से बना है: टर्न. ओएचपी. एब, टेटनप्ली ऑम्नियम होमिनम पैक्ट्स अबास, *' मंदिर के पिता। मनुष्यों के बीच सार्वभौमिक शांति।" कुछ अधिकारियों का मानना है कि बैफोमेट एक राक्षसी सिर था, जबकि अन्य का मानना है कि यह बकरी के रूप में एक राक्षस था। एक वास्तविक बैफोमेटिक मूर्ति का विवरण इस प्रकार है: "परमात्मा की एक सर्वेश्वरवादी और जादुई आकृति। दो सींगों के बीच रखी गई मशाल, त्रय की संतुलित बुद्धि का प्रतिनिधित्व करती है।

बकरी का सिर, जो कृत्रिम है, और कुत्ते, बैल और गधे की कुछ विशेषताओं को जोड़ता है, पदार्थ की विशेष जिम्मेदारी और शरीर में शारीरिक पापों के प्रायश्चित का प्रतिनिधित्व करता है। हाथ मानवीय हैं, श्रम की पवित्रता को प्रदर्शित करने के लिए; वे ऊपर और नीचे रहस्यवाद का संकेत बनाते हैं, दीक्षा लेने वालों पर रहस्य को प्रभावित करने के लिए, और वे दो चंद्र अर्धचंद्रों की ओर इशारा करते हैं, ऊपरी सफेद और निचला काला, जो अच्छे और बुरे, दया और न्याय के पत्राचार को समझाता है।

शरीर का निचला हिस्सा घूंघट से ढका हुआ है, जो सार्वभौमिक पीढ़ी के रहस्यों को दर्शाता है, जिसे केवल कैडुसियस के प्रतीक द्वारा व्यक्त किया जाता है। बकरी का पेट शल्कयुक्त है, और इसका रंग हरा होना चाहिए, ऊपर का अर्धवृत्त नीला होना चाहिए; स्तन तक पहुँचने वाले पंख विभिन्न रंगों के होने चाहिए। बकरी के स्तन मादा होते हैं, और इस प्रकार इसकी एकमात्र मानवीय विशेषताएँ मातृत्व और परिश्रम हैं, अन्यथा मोचन के संकेत हैं। इसके माथे पर, सींगों के बीच और मशाल के नीचे, सूक्ष्म जगत का चिह्न है, या आरोही में एक किरण के साथ पेंटाग्राम, मानव बुद्धि का प्रतीक है, जिसे मशाल के नीचे इस तरह रखा जाता है, जो बाद की लौ को दिव्य रहस्योद्घाटन की छवि बनाता है।

इस पैंथियोस को एक घन पर बैठाया जाना चाहिए, और इसका पैर-स्टूल एक एकल गेंद, या एक गेंद और एक त्रिकोणीय स्टूल होना चाहिए।

99. बार्कू : एक राक्षस जिसके पास दार्शनिक पत्थर का रहस्य था।

100. दाढ़ी वाला दानव : वह दानव जो दार्शनिक पत्थर का रहस्य सिखाता है। वह बहुत कम जाना जाता है। * डिमन बार्बू को बारबाटोस के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो एक महान और शक्तिशाली दानव है जो हेड्स में एक ड्यूक है, हालांकि दार्शनिक नहीं है; न ही बारबास के साथ, जो यांत्रिकी में रुचि रखता है। ऐसा कहा जाता है कि दाढ़ी वाले दानव को इस नाम से जाना जाता है।

101. बीहार्ड**:** सोलोमन की कुंजी में एक राक्षस का उल्लेख किया गया है, जिसके पास हवाओं और तूफानों पर शक्ति है। वह ओले, गरज और बारिश करता है।

102. बेली पारो**:** लाइबेरिया, अफ्रीका का एक गुप्त समाज, जिसके पंथ में दिवंगत आत्माओं के साथ भाईचारे का वर्णन है। इस समाज के बारे में एक प्रारंभिक लेखक डैपर कहते हैं: *'उनके पास एक और प्रथा भी है जिसे वे बेली पारो कहते हैं, जिसके बारे में वे कहते हैं कि यह मृत्यु, नया जन्म और आत्माओं या आत्मा के समुदाय में शामिल होना है, जिसके साथ आम लोग जंगल में रहते हैं और आत्माओं के लिए तैयार किए गए प्रसाद को खाने में मदद करते हैं।'

यह वर्णन स्पष्ट नहीं है, लेकिन यह स्पष्ट है कि जो लोग इस समाज में शामिल होते हैं, वे आध्यात्मिक माने जाने की इच्छा रखते हैं, या मर चुके हैं और फिर से जीवित हो गए हैं; और यह कि उनका समाज उन सभी लोगों की बिरादरी से अधिक कुछ नहीं है, जिन्होंने इस प्रशिक्षण को आम तौर पर प्राप्त किया है।

103. बेलो**,** जीन**:** फ्रांस में लेबर जिले की एक जादूगरनी, जिस पर हेनरी चतुर्थ के शासनकाल में जादू-टोना करने का आरोप लगाया गया था, जिसने उससे पूछताछ की, उसने कहा कि वह वर्ष 1609 की सर्दियों में शैतान की विश्राम सभाओं में जाने लगी थी, उसे वहाँ शैतान के सामने पेश किया गया जिसने उसे चूमा, यह एक अनुमोदन चिह्न था जो उसने केवल सबसे महान जादूगरों को दिया था। उसने बताया कि सब्बाथ एक प्रकार का बाल मास्क था, जिसमें कुछ लोग अपने सामान्य रूप में आते थे, जबकि अन्य कुत्ते, बिल्ली, गधे, सूअर और अन्य जानवरों की आड़ में नृत्य में शामिल होते थे।

104. बेनेमल्न्र्नेन **:** हिब्रू चुड़ैलें जो नवजात शिशुओं को चुराने के उद्देश्य से प्रसव पीड़ा से गुजर रही महिलाओं को परेशान करती हैं।

105. बेनजेस **:** द: ईस्ट इंडीज के लोग, जो शैतान की पूजा करते थे; और जिनके मंदिर और पगोडा उसकी भयानक मूर्तियों से भरे हुए हैं। कालीकट के राजा के पास एक मंदिर था जो शैतान की भयानक आकृतियों से भरा हुआ था, और जिसे केवल कई दीपों की चमक से रोशन किया जाता था। केंद्र में एक तांबे का सिंहासन था, जिस पर एक शैतान बैठा था, जो उसी धातु से बना था, उसके सिर पर एक बड़ा मुकुट था, तीन विशाल सींग और चार अन्य जो उसके माथे से निकले हुए थे। उसकी जीभ और शून्य हाथ पर दो आकृतियाँ थीं - आत्माएँ, जिनके बारे में भारतीयों का कहना है कि वह उन्हें निगलने की तैयारी कर रहा है।

106. बेरांडे**:** 1577 में फ्रांस के मौबेक में एक जादूगरनी को जला दिया गया था। उसका सामना एक युवती से हुआ जिस पर उसने जादू-टोना करने का आरोप लगाया, जिसे लड़की ने नकार दिया, जिस पर उस युवती ने दावा किया, "क्या तुम्हें याद नहीं है कि क्रॉइक्स डू पाटे में आखिरी नृत्य के दौरान, तुम जहर की एक बोतल लेकर आई थी?" इस पर युवती ने कबूल किया, और उसे उसके आरोप लगाने वाले के साथ जला दिया गया।

107. ब्लैक मैजिक **:** शैतान के प्रभाव के नीचे असंख्य भीड़ और राक्षसों और आत्माओं की सेनाएँ थीं, जो मनुष्य के मन में आने वाली हर बुराई या आपदा को प्राप्त करने और उसे अंजाम देने के लिए तैयार और सक्षम थीं। एक ग्रिमोयर में यह बुरी आत्माओं के नौ समूहों के बारे में बताता है, ये हैं झूठे देवता, झूठी आत्माएँ, अधर्म के पात्र, बदला लेने वाले अस्मोडस के नेतृत्व में, सर्प द्वारा भ्रमित करने वाले, मेरिगम द्वारा अशांत, अपोलियन द्वारा रोष, एस्टारोथ द्वारा कलंक लगाने वाले और मैमोन द्वारा प्रलोभन देने वाले। इन राक्षसों को

फिर से अलग-अलग नाम दिया गया है, प्रत्येक नाम का अर्थ स्वामी की क्षमता को दर्शाता है, जैसे विध्वंसक, विध्वंसक, कोलाहल, तबाही, इत्यादि।

108. नेक्रोमेंसी **(q.v.) :** मृतकों को बुराई के पारंपरिक उद्देश्यों के लिए आह्वान और अपवित्र अनुष्ठानों द्वारा उठाना था। ऑपरेशन का दृश्य खून से भरे गड्ढों के आसपास हो सकता है और एक अँधेरे और घुटन भरे कमरे में, एक चर्च के प्रांगण में या झूलते हुए सूली के नीचे एक खंडहर जैसा दिखता है, और इस तरह बुलाए गए और जीवन में लाए गए भूतों की संख्या शायद एक धर्मगुरु की हो। किसी भी उद्देश्य के लिए, प्रक्रिया में आमतौर पर ईसाई अनुष्ठान का अपवित्रीकरण शामिल होता है, जैसे कि शैतानी जनसमूह और जानवरों और सरीसृपों को प्रदूषित संस्कारों का प्रशासन; जानवरों की खूनी बलि, अक्सर बच्चों की;

आम तौर पर गोलाकार संरचना वाले कामुक नृत्य, जैसे कि चुड़ैलों के विश्रामदिन में, जिसमें अकल्पनीय बुराई और घृणा, वास्तविकता और कल्पना की सभी विकृतियाँ और राक्षसीताएँ भाग लेती हैं, जो अश्लील पागलपन के दुःस्वप्न में समाप्त होती हैं। हम शैतान की आकृति को नक्काशीदार स्क्रीन और स्टाल से बाहर झांकते हुए पा सकते हैं और उसके राक्षसों को गॉर्गॉयल्स की भीड़ में दिखाई दे सकते हैं, जो आला और कोने से मुस्कुराते और घूरते हैं, और छज्जों के नीचे इकट्ठा होते हैं।

109. ब्लेक मास**:** जादूगरों और जादूगरों के बयानों से पता चलता है कि शैतान भी अपने सब्बाथ पर मास करता है। लिमोसिन के फॉसस गांव के एक धर्मत्यागी पुजारी पियरे ऑपेटिट को शैतान के मास के रहस्यों को मनाने के लिए जला दिया गया था। सब्बाथ के नियमित रूप से आने वाले लोग पवित्र शब्दों को बोलने के बजाय कहते थे: "बील्ज़ेबब, बील्ज़ेबब, बील्ज़ेबब।" तितली के आकार का शैतान उन लोगों के चारों ओर उड़ता था जो मास मना रहे थे, और उसने एक काला होस्ट खाया, जिसे निगलने से पहले उन्हें चबाना पड़ता था।

110. बोनवॉल्ट**,** पियरे**:** सत्रहवीं शताब्दी में पोइटो का एक जादूगर, जिसे शैतान के विश्रामदिन पर जाते समय गिरफ़्तार कर लिया गया था। उसने कबूल किया कि जब वह पहली बार उस अपवित्र बैठक में मौजूद था, तो उसके माता-पिता उसे वहाँ ले गए थे और शैतान को समर्पित कर दिया था, जिसे उसने मरने के बाद अपनी हड्डियाँ छोड़ने का वादा किया था, लेकिन उसने अपनी नारकीय महिमा को अपनी अमर आत्मा छोड़ने का सौदा नहीं किया था। उसने स्वीकार किया कि उसने शैतान को अपना स्वामी कहा था, कि मनुष्य के शत्रु ने शैतानी

एजेंसी के माध्यम से विभिन्न जादुई कार्यों में उसकी सहायता की थी। अंत में उसे मौत की सज़ा सुनाई गई।

उसके भाई जीन पर उसी समय जादू-टोना करने का आरोप था, उसने शैतान से सहायता के लिए प्रार्थना की, और उसे ज़मीन से लगभग चार या पाँच फ़ीट ऊपर उठाया गया और उस पर पटक दिया गया, जिससे उसकी त्वचा उसी समय नीले-काले रंग की हो गई। उसने कबूल किया कि वह सब्त के दिन एक युवक से मिला था, जिसके ज़रिए उसने अपनी एक उंगली शैतान को देने का वादा किया था। उसने यह भी बताया कि कैसे उसे हवा के ज़रिए सब्त के दिन लाया गया था, कैसे उसे कुछ लोगों को मारने के लिए पाउडर मिले थे, जिनका उसने नाम लिया था, और इन अपराधों के लिए उसे मौत की सज़ा मिली थी।

111. बोरू**:** कई कहानियों में एक काल्पनिक प्रेत के रूप में वर्णित एक भिक्षु जैसा भूत जो पेरिसवासियों को दिखाई देता है, रात के सबसे अंधेरे घंटों में सड़कों पर घूमता है, और डरपोक लोगों की खिड़कियों में झांकता है - कई बार गुजरता है और फिर से देखता है। नर्सें अपने छोटे बच्चों को भिक्षु बोरू से डराने के लिए इस्तेमाल करती हैं। भूत की उत्पत्ति अज्ञात है।

112.आत्माओं का पुल**:** यह अंधविश्वास कि मृतकों की आत्माएं पुल के माध्यम से दूसरी दुनिया में जाती हैं, काफी व्यापक रूप से फैला हुआ है। रेव. एस. बैरिंग गोल्ड ने अपने लोकगीतों के बूह में कहा है: "जैसे-जैसे लोग अधिक सभ्य होते गए और मृत्यु के रहस्य के बारे में अधिक गहराई से सोचने लगे, उन्होंने एक ऐसी जगह की कल्पना की जहाँ आत्माएँ रहती थीं, और इंद्रधनुष के बारे में उलझन में पड़कर, इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह एक पुल था जिसके माध्यम से आत्माएँ बादलों के ऊपर अपने निवास पर चढ़ती थीं।

आकाशगंगा को विभिन्न रूप से देवताओं का मार्ग या आत्माओं का मार्ग कहा जाता था। नॉर्समेन के बीच, ओडिन ने बौनों की सहायता से अपने स्वर्गीय महल का निर्माण करने के बाद, बिफ्रॉस्ट पुल का निर्माण किया, जिसे लोग इंद्रधनुष कहते हैं, जिसके द्वारा उस तक पहुँचा जा सकता था। यह तीन रंगों का है; बीच वाला लाल है, और आग का है, जो किसी भी अयोग्य आत्मा को भस्म कर देता है जो पुल पर चढ़ने का साहस करती है।

स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ने वाले पुल के इस विचार के संबंध में, जिस पर आत्माएँ चढ़ती हैं, लोगों द्वारा अपने रिश्तेदारों की अच्छी आत्माओं के लिए पुल बनाने की प्रथा शुरू हुई। रूनिक पर डेनमार्क और स्वीडन में कब्रों पर हमें इस तरह के शिलालेख मिलते हैं: 'नेगेइलफ्र ने अपने अच्छे बेटे अनंद के लिए यह

पुल बनवाया था।' 'माँ ने अपने इकलौते बेटे के लिए पुल बनवाया था/ 'होल्डफास्ट ने अपने पिता हैम के लिए पुल बनवाया था, जो विबी में रहते थे।' ^ होल्डफास्ट ने इगुल और अपनी प्यारी पत्नी उरा के लिए सड़क बनवाई थी।' सुंडबीस्टीन में, अप लैंड्स में, एक शिलालेख है जो दर्शाता है कि तीन भाइयों और बहनों ने अपने पिता के लिए एक घाट पर पुल बनाया था।

इस धरती से अनंत काल तक आत्मा के लिए मार्ग के साधन के रूप में पुल प्राचीन लोगों को भी ज्ञात रहा होगा क्योंकि मृत्यु की देवी डेमेटर के पंथ में, एलुसिस में, जहाँ उसके रहस्यों को जाना जाता था, ताकि मृत्यु के तुरंत बाद एलीसियम में पहुँचा जा सके, पुल पुजारियों का एक आदेश था; और देवी का नाम लेडी ऑफ द ब्रिज था। रोम में भी पुजारी एक पुल-निर्माता पोंटिफ़ेक्स था, क्योंकि उसने आत्माओं का प्रभार संभाला था।

ऑस्ट्रिया और जर्मनी के कुछ हिस्सों में अभी भी यह माना जाता है कि बच्चों की आत्माओं को इंद्रधनुष के माध्यम से स्वर्ग तक ले जाया जाता है, इंग्लैंड और चीनियों दोनों में इसे धनुष पर उंगली से इशारा करना पाप माना जाता है। हमारे पास इस विचार का कोई निशान नहीं बचा है कि यह आत्माओं का पुल है। संभवतः इसे एक बुतपरस्त विश्वास माना जाता था और तदनुसार निषिद्ध था, उत्तर में आज भी बच्चे जब इंद्रधनुष देखते हैं, तो कुछ टहनियों या तिनकों से जमीन पर क्रॉस बनाते हैं, ताकि धनुष को काट दिया जा सके।" रेनबो को भगाने के लिए वेस्ट राइडिंग नुस्खा है: "दो लकड़ियों का क्रॉस बनाएं और उसके ऊपर चार कंकड़ रखें, एक-एक दोनों सिरों पर।

113.भय का पुल**:** सर वाल्टर स्कॉट द्वारा उल्लेखित एक पुरानी मान्यता है कि शरीर को छोड़ते समय आत्मा को भय के पुल से गुजरना पड़ता है, जो एक धागे की तरह संकरा पुल है, जो एक बड़ी खाई को पार करता है। यदि आत्मा इसे पार करने में सफल हो जाती है तो वह स्वर्ग में प्रवेश करेगी, यदि वह गिर जाती है तो वह स्वर्ग में प्रवेश करेगी।

114.गंधक**:** प्लिनी का कहना है कि पहले घरों को गंधक के इस्तेमाल से बुरी आत्माओं से बचाया जाता था।

115. झाड़**:** रूमामा और टस्कनी में ऐसा माना जाता है कि तकिये के नीचे रखी झाड़ू चुड़ैलों और बुरी आत्माओं को दूर रखती है।

116. झाड़ू: चुड़ैलें अपनी रात्रि यात्रा के दौरान हवा में स्विच या झाड़ू पर सवार होकर सब्त के दिन जाती थीं। क्या झाड़ू जादुई तरीके से उड़ने वाले घोड़े की जगह ले लेती है?

117. बुगेट: एक फ्रांसीसी फोटोग्राफर जो 1874 में लंदन आया और वहाँ उसने काफी कुशलता से आत्माओं की तस्वीरें बनाईं। कई लोगों ने आत्माओं की तस्वीरों में अपने दोस्तों को पहचानने का दावा किया, और बुगेट के गिरफ़्तार होने और यह स्वीकार करने के बाद भी कि उसने छल-कपट का सहारा लिया था, फिर भी कई लोग थे जिन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह धोखेबाज़ था, और सोचा कि उसे छल-कपट स्वीकार करने के लिए रिश्वत दी गई थी, जिसमें वह निर्दोष था। (स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ी देखें।)

118. ब्यून: विएरियस के अनुसार यह सबसे शक्तिशाली दानव है और नरकीय क्षेत्रों के ग्रैंड ड्यूक्स में से एक है। इसका स्वरूप एक मनुष्य जैसा है। यह केवल संकेतों के माध्यम से ही बोलता है, यह लाशों को हटाता है, कब्रिस्तानों में रहता है और कब्रों और मृतकों के स्थानों के आसपास राक्षसों को संगठित करता है। यह अपनी सेवा करने वालों को समृद्ध और वाक्पटु बनाता है। नरक की सेना की तीस टुकड़ियाँ इसकी पुकार का पालन करती हैं। इसके प्रभुत्व वाले राक्षस जिन्हें ब्यूनिस कहा जाता है, उन्हें तातार लोग बहुत दुष्ट मानते हैं। उनकी शक्ति महान है और उनकी संख्या बहुत अधिक है। लेकिन उनके जादूगर हमेशा इन राक्षसों के साथ संवाद में रहते हैं जिनके माध्यम से वे अपनी काली प्रथाओं को अंजाम देते हैं।

119. बर्मा: बर्मी लोग मानते हैं कि आत्मा अमूर्त और शरीर से स्वतंत्र है, जिससे यह केवल विशेष आकर्षण द्वारा बंधी होती है। यह अपनी इच्छा से शरीर को छोड़ कर वापस आ सकती है, लेकिन इसे पकड़ा भी जा सकता है और वापस लौटने से रोका भी जा सकता है। मृत्यु के बाद आत्मा शव के पास एक अदृश्य तितली के रूप में मंडराती है, जिसे उइप्या के नाम से जाना जाता है। एक चुड़ैल या राक्षस उइप्या को तब पकड़ सकता है जब वह नींद के घंटों के दौरान भटकती है, जब बीमारी का परिणाम निश्चित होता है।

जादूगर या शैतान को आत्मा को मुक्त करने के लिए प्रेरित करने के लिए उसे प्रसाद चढ़ाया जाता है। बर्मा के उत्तरी पहाड़ियों के काचिफ्ल्स का मानना है कि बुरी नज़र वाले लोगों में दो आत्माएँ होती हैं, दूसरी आत्मा बुरे प्रभाव का कारण होती है।

120. आत्माओं में विश्वास : .-बर्मा में आत्माओं में विश्वास, जो कि अधिकतर दुष्ट हैं, बहुत आम है, और धार्मिक विश्वास में एक प्रमुख स्थान रखता है और आकाशीय पिंड विकास की उस स्थिति में हैं जिसके परिणामस्वरूप वे आमतौर पर पूर्ण विकसित देवता बन जाते हैं, जिनके साथ शांति पूजा करने का स्थान लेती है। लेकिन जंगल की आत्माएँ अच्छी तरह से चिह्नित एनिमिस्टिक विशेषताओं के साथ सच्चे राक्षस हैं।

इस प्रकार नॉट या सेइक्त हर पेड़ या उपवन में निवास करता है। उसका स्वभाव आमतौर पर दुष्ट होता है, लेकिन कभी-कभी हम उसे किसी गाँव का संरक्षक या संरक्षक पाते हैं। किसी मामले में उसके पास एक मंदिर होता है जहाँ उसे भोजन और पेय के उपहारों से प्रसन्न किया जा सकता है। इनमें से कई राक्षसी आकृतियाँ लगभग देवत्व प्राप्त कर चुकी हैं, उनके पंथ इतने व्यापक हो गए हैं, और ह्मिन नट, चिटोन और वान्नेइन नट को शक्ति के शैतान के रूप में उदाहरण दिया जा सकता है, जिसका भय व्यापक जिले में फैल गया है।

हर इच्छा की पूर्ति नट या आत्माओं पर निर्भर करती है, जो मनुष्य के संबंध में सभी शक्तिशाली हैं। वे असंख्य हैं। हर घर में उसके पूरक होते हैं, जो उसके कई कमरों में झुंड बनाकर रहते हैं और उसके चूल्हे, दरवाजे के चौखट, बरामदे और कोनों में अपना निवास बनाते हैं। नट जंगली जानवरों में भी निवास करते हैं या उन्हें प्रेरित करते हैं, और माना जाता है कि सभी दुर्भाग्य उनसे उत्पन्न होते हैं। बर्मन मानते हैं कि अधिक भौतिकवादी मृतक जीवित लोगों को बुरी नज़र से परेशान करते हैं, बर्मन को प्रसव के दौरान मरने वाली महिलाओं के भूतों से बहुत डर लगता है।

काचिन मानते हैं कि ऐसी महिलाएं पिशाच (स्वामक्स) बन जाती हैं, जो अपने बच्चों के साथ मर जाती हैं। बच्चों की आत्माएँ अक्सर बिल्लियों और कुत्तों के शरीर में निवास करती हैं। बर्मन इस बात को लेकर बहुत सावधान रहते हैं कि वे आत्मा-जगत के निवासियों के प्रति कैसे बोलते और कार्य करते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि अपमान या उपहास से उन पर दुर्भाग्य या बीमारी आ जाएगी। बर्मन राक्षसी प्रणाली में असंख्य संरक्षक आत्माएँ शामिल हैं, और इन्हें मुख्य रूप से ब्राह्मण आयात माना जाता है।

ये घरों में दुष्ट नटों की तरह निवास करती हैं, और गाँव के समुदायों और यहाँ तक कि कुलों के संरक्षक हैं। उन्हें विधिवत रूप से प्रसन्न किया जाता है, जिसके समारोहों में उन्हें चावल, बीयर और चाय-सलाद दिया जाता है। - 'महिलाओं को दुष्ट नटों को भगाने के लिए भूत भगाने वाले के रूप में नियुक्त किया जाता है,

लेकिन संरक्षक नटों से जुड़े त्योहारों पर उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं होती है।

121. जादू.—बर्मी जादू में ताबीज बनाना शामिल है, गुप्त औषधि का निर्माण जो भ्रम, दूसरी दृष्टि, भविष्यवाणी की स्थिति, अदृश्यता या अभेद्यता का कारण होगा। यह अक्सर "सहानुभूतिपूर्ण" होता है।और भारतीय और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा किए जाने वाले भूत-विद्या और ज्योतिष में ओवरलैप होता है, जो अपने स्वयं के ज्ञान को बढ़ाने के लिए देशी स्रोतों का भी सहारा लेते हैं।

122. मक्खन, चुड़ैलें***:** शैतान स्वीडन की चुड़ैलों को बिल्लियाँ देता है जिन्हें वाहक कहा जाता है, क्योंकि उन्हें उनकी मालकिनों द्वारा पड़ोस में चोरी करने के लिए भेजा जाता है। लालची जानवर ऐसे मौकों पर अपनी भूख मिटाने से नहीं चूकते। कभी-कभी वे पेट भरने के लिए बिल्लियाँ खाते हैं और उन्हें अपना स्टोलन भोजन उगलना पड़ता है। उनकी उल्टी हमेशा रसोई के बगीचों में पाई जाती है, पीले रंग की होती है और इसे चुड़ैलों का मक्खन कहा जाता है।

124. कैओडेमन**:** निम्न श्रेणी के देवता, जिनमें से एक के बारे में यह माना जाता था कि वह प्रत्येक नश्वर के जन्म से ही उसके निरंतर साथी के रूप में जुड़ा हुआ था, और वह प्रेरणा देने में सक्षम था, और देवताओं और मनुष्यों के बीच एक प्रकार के संदेशवाहक के रूप में कार्य करता था। कैओडेमन शत्रुतापूर्ण स्वभाव के थे, जबकि अगाथोडेमन मित्रवत थे। ऐसा कहा जाता है कि कैसियस को दिखाई देने वाले कैओडेमन में से एक बहुत बड़ा कद और काले रंग का व्यक्ति था। इन डेमन्स में विश्वास शायद पारंपरिक है, और ऐसा कहा जाता है कि वे विद्रोही देवदूत हैं जिन्हें उनके अपराधों के लिए स्वर्ग से निकाल दिया गया था।

उन्होंने ब्रहमांड के विभिन्न हिस्सों में बसने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ; और उनका अंतिम निवास पृथ्वी और सितारों के बीच का पूरा स्थान माना जाता है। वहाँ वे रहते हैं, सभी तत्वों से घृणा करते हैं, और बदला लेने और चोट पहुँचाने में अपना आनंद पाते हैं। उनके राजा को यूनानियों ने हेडीस, मिस्रियों ने टाइफॉन और फारसियों और चाल्डियनों ने अहिरिमनेस कहा था।

125.कैओडेमन **:** प्राचीन लोगों द्वारा एक बुरी आत्मा को दिया गया नाम। वह इतनी बार अपना रूप बदलता था कि कोई भी यह नहीं बता सकता था कि वह किस रूप में मनुष्य के सामने आता है। प्रत्येक व्यक्ति में एक अच्छी और एक बुरी प्रतिभा भी होती थी, जिसमें से एक बुराई कैओडेमन थी। ज्योतिषियों ने सूर्य के बारहवें घर को भी कैओडेमन कहा है, जिसे बुराई माना जाता है।

126.Cftlatin : आयरिश पौराणिक कथाओं का एक ज़हरीला बहुरूपी राक्षस। यह प्राणी एक पिता और उसके सत्ताईस बेटों से बना था, जिनके हथियारों में से कोई भी, मात्र स्पर्श से, नौ दिनों के भीतर एक आदमी को मार सकता था। इस राक्षसी को कुचुलेन के खिलाफ भेजा गया था, जो अपनी ढाल पर इसके अट्ठाईस भालों को पकड़ने में सफल रहा। हालाँकि, कबीले ने उसे नीचे गिरा दिया और उसका चेहरा बजरी में दबा दिया। कुचुलेन की सहायता एक उल्स्टर निर्वासित के बेटे ने की, जिसने प्राणी के सिर काट दिए जबकि कुचुलेन ने उसे काट दिया।

127. दुष्ट आत्माएँ **-** दुष्ट आत्माएँ, जिनके बारे में वे सबसे अधिक दुर्भावनापूर्ण इरादे रखते हैं, उन्हें प्रार्थना कहते हैं। इनमें से सबसे भयावह किस्म "दुष्ट मृत" (खमोक प्रार्थना) है, जिसमें प्रसव के दौरान मरने वाली महिलाओं की आत्माएँ शामिल हैं। पेड़ों में अपने छिपने के स्थान से ये आत्माएँ अपनी भयानक हँसी से निर्दोष राहगीरों को पीड़ा पहुँचाती हैं और उन पर पत्थर बरसाती हैं। ये अभ्यास, निश्चित रूप से, या तो मारने के लिए या उनके ध्यान के दुर्भाग्यपूर्ण प्राप्तकर्ताओं को पागल बनाने के लिए किए जाते हैं। पेड़ों के बीच छिपे हुए शरारती राक्षस भी हैं जो मानव जाति पर भयानक और लाइलाज बीमारियाँ फैलाते हैं।

128. कंबोडिया **:** कंबोडिया में सभी बुरी आत्माओं में सबसे भयानक हैं श्री अप या भूत, जो सिर्फ़ सिर और पाचन नली से पहचाने जाते हैं, रात में अपने भयानक कामों की तलाश में घूमते हैं। वे अपनी भयानक और खून से लथपथ आँखों के लिए जाने जाते हैं, और उनसे बहुत डर लगता है, क्योंकि नुकसान पहुँचाने की उनकी इच्छा भी चोट पहुँचा सकती है। जब किसी को भूत के रूप में घोषित किया जाता है, तो उसके साथ बहुत सख्ती से पेश आया जाता है, या तो अधिकारियों द्वारा, जो उसे निर्वासन या मौत की सज़ा दे सकते हैं, या ग्रामीणों द्वारा, जो कभी-कभी कानून को अपने हाथों में ले लेते हैं और कथित अपराधी को दंडित करते हैं।

129. कैंडेलब्रम **:** (नीरोमनी देखें।) नीली जलती हुई मोमबत्तियाँ : एक अंधविश्वास है कि आत्माओं के आने पर मोमबत्तियाँ और अन्य रोशनियाँ नीली जलती हैं, संभवतः भूतों के साथ सल्फरयुक्त वातावरण के कारण।

130. कैसाप्टा**,** बेबीलोनियन वल्टह**:** (सेमिट्स देखें।) कैटल ऑफ द इन्टीरियर मैन, द: आत्मा के दिव्यता की ओर आरोहण के सात चरणों को दिया गया

रहस्यमय नाम। मानसिक विकास की ये सात प्रक्रियाएँ संक्षेप में इस प्रकार हैं: (i) प्रार्थना की अवस्था, जिसमें ईश्वर पर ध्यान केंद्रित किया जाता है; (2) मानसिक प्रार्थना की अवस्था, जिसमें व्यक्ति सभी चीजों के रहस्यमय महत्व को खोजने का प्रयास करता है; (3) अस्पष्ट रात, जो सबसे कठिन मानी जाती है, जिसमें स्वयं को पूरी तरह से त्याग दिया जाना चाहिए; (4) शांति की प्रार्थना, ईश्वर की इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण; (5) एकता की अवस्था, जिसमें मनुष्य की इच्छा और ईश्वर की इच्छा एक हो जाती है; (6) परमानंद प्रार्थना की अवस्था, जिसमें आत्मा आनंद से भर जाती है, और प्रेम उसमें प्रवेश करता है; (7) मोह की अवस्था, जो रहस्यपूर्ण विवाह, पूर्ण मिलन और ईश्वर और स्वर्ग का आंतरिक मनुष्य में प्रवेश है।

131. कैटाबोलग्नेस**:** राक्षस जो लोगों को ले जाते थे, उन्हें मार देते थे,' और उन्हें तोड़ते और कुचलते थे, उनके ऊपर यह शक्ति रखते थे। हमें बताया जाता है कि एक निश्चित कैम्पस्टर ने एक किताब लिखी थी जिसमें यह बताया गया है कि इन राक्षसों ने अपने एजेंटों, जादूगरों और जादूगरों के साथ कैसा व्यवहार किया।

132. बिल्लियाँ**,** ब्लफ़िन**:** ये स्कॉटिश हाइलैंड्स में पाई जाती हैं, और कहा जाता है कि ये जंगली नस्ल की हैं, कुत्तों जितनी बड़ी, काले रंग की, छाती पर एक सफ़ेद धब्बा, और धनुषाकार पीठ और सीधे बाल वाली। कुछ लोगों का कहना है कि ये बिल्लियाँ जंगली नस्ल की हैं, कुत्तों जितनी बड़ी, काले रंग की, छाती पर एक सफ़ेद धब्बा, और धनुषाकार पीठ और सीधे बाल वाली।

133. चैग्रिन या कैग्रलनो**:** महाद्वीपीय जिप्सियों द्वारा माना जाने वाला एक दुष्ट आत्मा। इसका आकार एक हाथी जैसा होता है, रंग पीला होता है, और लंबाई में डेढ़ फुट और चौड़ाई में एक हाथ होता है। "मुझे यकीन है/" विलिसलॉकी कहते हैं, "कि यह प्राणी कोई और नहीं बल्कि उतना ही राक्षसी प्राणी है जिसे हरगिन कहा जाता है, जिसे अभी भी उत्तर पश्चिमी भारत के निवासी मानते हैं। घोड़े चैग्रिन का विशेष शिकार होते हैं, जो उन्हें थकावट की स्थिति में ले जाता है, जैसा कि चिली के गुएकुबू (q.v.) करते हैं।

अगले दिन वे बीमार और थके हुए दिखाई देते हैं, उलझे हुए अयाल और पसीने से नहाए हुए। जब ऐसा देखा जाता है तो उन्हें लहसुन के रस से रगड़े गए एक खूंटे से बांध दिया जाता है, फिर एक लाल धागा क्रॉस के रूप में जमीन पर रख दिया जाता है, या फिर जानवर के कुछ बालों को नमक, भोजन और चमगादड़ के खून के साथ मिलाकर रोटी बना ली जाती है, जिससे घोड़े के खुर को लगाया जाता है। मिश्रण युक्त खाली बर्तन को एक ऊंचे पेड़ के तने में रख दिया जाता है जबकि ये शब्द बोले जाते हैं।

134. चेलियोडोनी: यह भूत-प्रेत और बुरी आत्माओं के भ्रम के विरुद्ध एक अच्छा उपाय है। यह शरीर की शक्ति को भी बढ़ाता है, और इसे धारण करने वाले को कानून के मामले में सौभाग्यशाली बनाता है। कूड़े के प्रभाव के लिए इसे छेद कर गधे के बालों से लटकाना चाहिए। काली किस्म कर्कशता को रोकती है और आवाज को साफ करती है।

135. चेन्स: इंडो-चीनी मूल की एक जाति, जिसकी संख्या लगभग 130,000 है, जो अन्नाम, स्याम, कोचीन-चीन और कंबोडिया में बसी हुई है। आसपास की आबादी के बीच जादूगर के रूप में उनकी कुछ प्रतिष्ठा है, यह भ्रष्टाचार संभवतः एक विजित जाति के पौराणिक प्रभाव से उत्पन्न हुआ है। उनके जादूगर दूर से हत्या करने या जादुई सूत्रों की सहायता से बर्बादी और बीमारी लाने में सक्षम होने का दावा करते हैं। कंबोडियाई मंत्रों के बीच, जादूगरों को आम लोगों द्वारा सौहार्दपूर्वक परखा जाता है, क्योंकि उन्हें उन सभी बुराइयों का स्रोत माना जाता है जो उनके साथ होती हैं, और उनमें से अधिकांश आमतौर पर गुप्त हत्या करके अपने दिन समाप्त करते हैं।

वे लगभग हमेशा महिला लिंग के होते हैं, और आधी रात के समय जंगल की गहराई में आयोजित एक गुप्त दीक्षा के माध्यम से बहनत्व में प्रवेश करते हैं। वास्तव में दीक्षा की वास्तविक विधि हमें ज्ञात है। जादूगरनी बनने की इच्छा रखने वाली महिला दीमक का घोंसला खरीदती है और उस पर एक मुर्गे की बलि देती है (कुक देखें), उसे सिर से पूंछ तक दो टुकड़ों में काटती है और पूरी नग्न अवस्था में उसके सामने नाचती है, जब तक कि उसके मंत्रों के प्रभाव से पक्षी के दोनों हिस्से एक दूसरे के पास नहीं आ जाते और वह फिर से जीवित हो जाता है और कौवे को आवाज़ देता है। जादूगरनी को उनके रंग के रंग को बदलने की प्रवृत्ति और उनकी सूजी हुई और लाल आँखों के लिए जाना जाता है।

उनके पास बुरी आत्माओं को शांत करने के लिए कई अनुष्ठान हैं, जिसमें पड़ोसी और आस-पास की आबादी के साथ-साथ वे भी पूरी तरह से विश्वास करती हैं। इसलिए घर बनाने में कई तरह के अनुष्ठान करने चाहिए, साथ ही रक्षक देवताओं का आह्वान भी करना चाहिए। वे भाग्यशाली और अशुभ दिनों में विश्वास करती हैं और जब तक शुभ संकेत न हों, तब तक कोई भी महत्वपूर्ण काम नहीं करती हैं। उनके पास कई अजीबोगरीब अंधविश्वास हैं। इस प्रकार वे दिन के समय संग्रहीत अनाज को नहीं छेड़ेंगे, क्योंकि वे कहते हैं कि तब वह सो जाता है, और रात होने तक प्रतीक्षा करते हैं, उसके बाद ही उससे भोजन प्राप्त करते हैं।

उनके पास कई जादुई कृषि सूत्र भी हैं, जैसे कि कटाई और कटाई से पहले फसल के खेत में खड़े चावल के तनों को "निर्देश" देना और "पास करना", ताकि वे भंडारण के योग्य हो सकें। ब्राह्मणी जंजीरों के अनुसार अच्छे पुरुषों की आत्माएँ सूर्य के पास, महिलाओं की आत्माएँ चंद्रमा के पास और कुली वर्ग की आत्माएँ बादलों में चली जाती हैं, लेकिन ये केवल अस्थायी प्रवास के स्थान हैं, - जब तक कि सभी अंततः पृथ्वी के केंद्र में निवास करने न लगें।

मेटामप्सी चोसिस में विश्वास भी अत्यधिक लोकप्रिय है। देखें ई. आयमोनियर, लेस टचेम्स एट लेउर रिलीजन, पेरिस, 1891; आयमोनियर चाटौ, डिसिओनेयर कैम-फ्रांसेसे, पेरिस, 1906; कहटन, नई वेस रिसर्च.

136. चेस्मे **:** बिल्ली के आकार का कुआँ या फव्वारा - तुर्कों की आत्मा या अप्सरा। वह लोरेल की तरह ही युवाओं को मौत के घाट उतार देती है।

137. शेवेलियर्स डी पी एनफर**:** ये राक्षस बिना रैंक वाले राक्षसों से ज़्यादा शक्तिशाली हैं, लेकिन शीर्षक वाले राक्षसों से कम शक्तिशाली हैं - काउंट्स, मार्क्विस और ड्यूक। उन्हें सुबह से लेकर सूर्योदय तक और सूर्यास्त से लेकर अंधेरे तक बुलाया जा सकता है।

138. दानववाद और जुनून **:** चीनी लोग राक्षसों में पूरी तरह से विश्वास करते हैं, जिनके बारे में वे कल्पना करते हैं कि वे हर तरफ से उन्हें घेरे हुए हैं। पीबल्स कहते हैं: "अंग्रेज अधिकारी, अमेरिकी मिशनरी, मंदारिन और कई चीनी साहित्यकार (कन्फ्यूशियन, ताओवादी और बौद्ध धर्मावलंबी) घोषणा करते हैं कि किसी न किसी रूप में और किसी न किसी नाम से आत्मावाद चीन का लगभग सार्वभौमिक विश्वास है। इसे आम तौर पर * पैतृक पूजा कहा जाता है।

139.चेन सिन लिंग **(**डब्लू**.** जे**.** प्लम्ब**)** में लोक शिक्षक कहते हैं**:** "तु-चिंग जिले में बुरी आत्माओं या राक्षसों द्वारा जुनून बहुत आम है।" वह आगे लिखते हैं कि चांग-लो में भी बहुत सारे मामले हैं।" फिर से वे कहते हैं: "जब कोई व्यक्ति इस तरह से पीड़ित होता है, तो आत्मा (क्वेई) उसके शरीर पर बिना इस बात की परवाह किए कि वह स्वस्थ है या कमजोर, कब्ज़ा कर लेती है। राक्षस की शक्ति का विरोध करना आसान नहीं है। शारीरिक बीमारियों के बिना भी, प्रेतग्रस्त व्यक्ति बीमार दिखते हैं। जब राक्षस के मोहक जादू के तहत, वे अपने सामान्य स्वभाव से अलग दिखते हैं।

•• ज्यादातर मामलों में आत्मा किसी व्यक्ति के शरीर पर उसकी इच्छा के विपरीत कब्ज़ा कर लेती है, और वह इस मामले में असहाय होता है। क्वेई में

व्यक्ति की आत्मा को बाहर निकालने की शक्ति होती है, जैसा कि नींद या सपनों में होता है। जब व्यक्ति चेतना में जागता है, तो उसे इस बात का ज़रा भी ज्ञान नहीं होता कि क्या हुआ है।" भूत-प्रेत से ग्रसित व्यक्तियों की हरकतें बहुत अलग-अलग होती हैं।

वे इधर-उधर उछलते हैं और अपनी भुजाएँ हिलाते हैं, और फिर राक्षस उन्हें बताता है कि वह कौन सी आत्मा है, अक्सर कोई गलत नाम लेता है, या धोखे से खुद को भगवान कहता है, या नश्वर लोगों के निवास में आने वाले जिन्न में से कोई कहता है। या, शायद, यह किसी मृत पति या पत्नी की आत्मा होने का दावा करता है। शांत किस्म के क्वेई भी होते हैं, जो दूसरे लोगों की तरह बात करते और हँसते हैं, बस उनकी आवाज़ बदल जाती है।

कुछ की आवाज़ पक्षियों जैसी होती है। कुछ मंदारिन बोलते हैं - उत्तरी चीन की भाषा - और कुछ स्थानीय बोली; लेकिन हालाँकि भाषण आदमी के मुँह से निकलता है, लेकिन जो कहा जाता है वह उससे आता हुआ नहीं लगता। बाहरी रूप और तरीके भी बदल जाते हैं। "ऐसे लोगों का एक वर्ग भी है जो 'रहस्योद्घाटन का हॉल' नामक संस्था की स्थापना करते हैं। वर्तमान समय में इस अभ्यास में बहुत से लोग लगे हुए हैं।

वे अधिकांशतः महान योग्यता वाले साहित्यिक व्यक्ति हैं। बड़ी संख्या में लोग प्रतिक्रियाओं के लिए उनके पास जाते हैं। ऊपर बताए गए माध्यम भी बहुत हैं। उपरोक्त सभी अभ्यास आत्माओं द्वारा मनुष्यों को अपने वश में करने की कोशिश नहीं हैं; बल्कि वे लोग हैं जो आत्माओं द्वारा उन्हें अपने वश में करने की कोशिश करते हैं, और खुद को स्वेच्छा से अपने साधन के रूप में इस्तेमाल करने देते हैं।

140. "सभी वर्गों में भूत-प्रेत **:** के कब्जे के मामले बहुत हैं। ये स्वस्थ लोगों के साथ-साथ कमज़ोर और बीमार लोगों में भी पाए जाते हैं। जुनून के कई निर्विवाद मामलों में, अनिच्छुक विषयों ने प्रतिरोध किया है, लेकिन उन्हें खुद को राक्षस के नियंत्रण में प्रस्तुत करने के लिए बाध्य होना पड़ा है।" .... *.... कब्जे के अधिकांश मामलों में, बीमारी की शुरुआत दुख, क्रोध या शोक के दौरे से होती है। ये स्थितियाँ राक्षसों के लिए द्वार खोलती हैं।

बाहरी अभिव्यक्तियाँ भयंकर और हिंसक होती हैं। यह हो सकता है कि विषय बारी-बारी से बात करता और हँसता है; वह थोड़ी देर चलता है और फिर बैठ जाता है, या वह ज़मीन पर लोटता है, या उछलता है; या शरीर में विकृतियाँ और गर्दन में मरोड़ दिखाता है। ... उनके बीच भूत-प्रेत भगाने वालों को बुलाना आम

बात थी, जो लिखित मंत्रों का उपयोग करते थे, या छंदों का जाप करते थे, या सुइयों से शरीर को छेदते थे। ये इलाज के चीनी तरीकों में से हैं।

141. "राक्षस : कई प्रकार के होते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जो स्पष्ट रूप से अपने आपको प्रकट करते हैं, और कुछ ऐसे होते हैं जो गुप्त रूप से कार्य करते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें कठिनाई से बाहर निकाला जा सकता है, और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें आसानी से बाहर निकाला जा सकता है। "परिचित राक्षसों द्वारा कब्ज़े के मामलों में, व्यक्ति द्वारा कही गई बात निश्चित रूप से उसकी अपनी इच्छा से नहीं होती है। जब राक्षस बाहर निकल जाता है और व्यक्ति को होश आता है, तो उसे कुछ भी याद नहीं रहता कि उसने क्या कहा या क्या किया। यह लगभग हमेशा सच होता है।

चीनी लोग राक्षसों को बाहर निकालने के लिए जो तरीके अपनाते हैं, वे हैं उन्हें ताबीज और कागजी पैसे जलाकर या उनसे भीख मांगकर या उन्हें उकसाकर या जादू-टोने और मंत्रों से डराकर या सुइयों से चुभोकर या उंगलियों से चुटकी बजाकर भगाना, जिस स्थिति में वे चिल्लाते हैं और जाने का वादा करते हैं।
“मैं पहले सुइयों के माध्यम से राक्षसों को बाहर निकालने का आदी था। उस समय हमारे गांवों में बुरी आत्माओं द्वारा कब्ज़े के मामले बहुत आम थे, और मेरी सेवाओं की बहुत मांग थी। ..."

मिशनरी रेवरेंड टिमोथी रिचर्ड ने भी डॉ. नेवियस के परिपत्र के जवाब में लिखा है: चीनी लोग आत्मा की रूढ़िवादी परिभाषा है, 'मृतक की आत्मा'; जिनमें से कुछ सर्वश्रेष्ठ को देवताओं के पद पर पदोन्नत किया जाता है। ... ऐसी कोई बीमारी नहीं है जिसके लिए चीनी आमतौर पर अधीन हैं जो राक्षसों के कारण नहीं हो सकती है। इस मामले में मन अछूता है। यह केवल शरीर है जो पीड़ित है; और चीनी देवताओं को प्रतिज्ञा और प्रसाद द्वारा राक्षस से छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं। इस मामले में विषय एक अनैच्छिक है।

142. चिटोन : एक बुरी आत्मा।

143.मंडल**,** आध्यात्मिक**:** व्यक्तियों का एक समूह जो आत्मा संचार के लिए सत्र आयोजित करने के उद्देश्य से अंतराल पर मिलते हैं। यह आवश्यक है कि उनमें से कम से कम एक माध्यम हो; कभी-कभी एक मंडल में कई माध्यम होते हैं। लेकिन वास्तव में मंडल के सभी सदस्यों को सावधानी से चुना जाना चाहिए, यदि सत्रों को घटनाओं का उत्पादक होना है। बैरन डी गुल्डेनस्टुबे ने अपने प्रैक्टिकल एक्सपेरिमेंटल न्यूमेटोलॉजी, या स्पिरिट्स की वास्तविकता और उनके प्रत्यक्ष लेखन की अद्भुत घटना में, जो आंदोलन के इतिहास में जल्दी

प्रकाशित हुआ, अमेरिकी फैशन के अनुसार एक मंडल बनाने के लिए दिशा-निर्देश दिए।

"नैतिक शर्तों को अलग रखते हुए," वे कहते हैं, "जो समान रूप से आवश्यक हैं, यह ज्ञात है कि अमेरिकी मंडल सकारात्मक और विद्युत या नकारात्मक चुंबकीय धाराओं के भेद पर आधारित हैं।" मंडल में बारह व्यक्ति होते हैं, जो समान अनुपात में सकारात्मक और नकारात्मक या संवेदनशील तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह भेद सदस्यों के लिंग के अनुसार नहीं है, हालांकि सामान्य तौर पर महिलाएं नकारात्मक और संवेदनशील होती हैं, जबकि पुरुष सकारात्मक और चुंबकीय होते हैं।

मंडलियां बनाने से पहले प्रत्येक व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक संरचना का अध्ययन किया जाना चाहिए, क्योंकि कुछ नाजुक महिलाओं में मर्दाना गुण होते हैं, जबकि कुछ मजबूत पुरुष, नैतिक रूप से, महिलाएं हैं। एक मेज को एक स्पष्ट और हवादार जगह पर रखा जाता है; माध्यम एक छोर पर बैठा होता है और पूरी तरह से अलग होता है; अपने शांत और चिंतनशील मौन से वह बिजली के कंडक्टर के रूप में कार्य करता है और यह ध्यान दिया जा सकता है कि एक अच्छा नींद में चलने वाला व्यक्ति आमतौर पर एक उत्कृष्ट माध्यम होता है।

छह विद्युत या नकारात्मक स्वभाव, जिन्हें आम तौर पर उनके भावनात्मक गुणों और उनकी संवेदनशीलता से पहचाना जाता है, माध्यम के दाईं ओर रखे जाते हैं, सबसे संवेदनशील उसके बगल में होता है। यही नियम सकारात्मक व्यक्तित्वों के साथ भी लागू होता है, जो माध्यम के बाईं ओर होते हैं, जिनमें से सबसे सकारात्मक उसके बगल में होता है।

एक श्रृंखला बनाने के लिए, बारह व्यक्ति अपना दाहिना हाथ मेज पर रखते हैं, और अपना बायाँ हाथ पड़ोसी के हाथ पर रखते हैं, इस प्रकार मेज के चारों ओर एक घेरा बनाते हैं। ध्यान दें कि माध्यम या माध्यम, यदि एक से अधिक हैं, तो उन लोगों से पूरी तरह से अलग हैं जो श्रृंखला बनाते हैं।" वर्तमान समय में एक वृत्त का निर्माण इसी तरह से पूरा किया जाता है। एम. कैरेल फ्लेमरियन कहते हैं कि लिंगों का परिवर्तन आम तौर पर "तरल पदार्थों को मजबूत करने" के लिए प्रदान किया जाता है।

यह कि जब चक्र कुछ जांचकर्ताओं से बना होता है, तो यह सत्र उतना ही उत्पादक हो सकता है, जो किसी नियम का पालन नहीं करते हैं, बल्कि अपने स्वयं के नियमों का पालन करते हैं, हाल के वर्षों में बहुतायत से साबित हुआ है। एक अपरिहार्य विशेषता माध्यम है।

144. फटा हुआ पैर: एक पुरानी मान्यता है, जो अनगिनत भूत-प्रेतों की कहानियों से पुष्ट होती है, कि शैतान हमेशा फटे हुए पैर के साथ दिखाई देता है, जो एक तरह का विशिष्ट चिह्न है। यह सुझाव दिया गया है कि शैतान, किसी भी मनुष्य से नीचे गिर गया है, उसे पूर्ण मानव रूप लेने की अनुमति नहीं है, लेकिन उसके पास किसी प्रकार की विकृति होनी चाहिए, यानी फटा हुआ पैर।

145. मुर्गा: मुर्गे को हमेशा से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जादुई अभ्यास से जोड़ा जाता रहा है, और इस संबंध में इसे एक से अधिक दृष्टिकोणों से देखा जाना चाहिए। वह भोर का संदेशवाहक है, और राक्षसों और जादूगरों की सभाओं के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, जहाँ उसकी तीखी चीख ने भोर की घोषणा की, जिसने नरक के सब्त को भगा दिया।

ऐसा कहा जाता है कि ऐसी आकस्मिकता को टालने के उद्देश्य से, जादूगर मुर्गे के सिर और छाती पर जैतून का तेल लगाते थे, या फिर उसके गले में बेल की टहनियों का एक पट्टा बाँध देते थे। कई मामलों में इस पक्षी की यंत्र-मानसिकता के माध्यम से भविष्य का अनुमान लगाया जाता था। (एलीट्रीओमैनॉय देखें)। यह भी माना जाता है कि मुर्गे के पेट में एक पत्थर पाया गया था, जिसे लैपिलस एलेक्टोरियस कहा जाता था, जो पक्षी के ग्रीक नाम से लिया गया था, जिसका गुण शक्ति और साहस देना था, और कहा जाता है कि क्रोटोना के मिलो की विशाल शक्ति को इसी ने प्रेरित किया था।

मुर्गे को अक्सर आत्माओं को पाताल लोक में ले जाने वाला मार्गदर्शक माना जाता है, और इस संबंध में यूनानियों ने इसे पर्सेफोन और हर्मीस के साथ जोड़ा था, और बुतपरस्त समय के स्लाव अक्सर मृतकों और घर के साँपों के लिए मुर्गों की बलि देते थे, जिनमें वे मानते थे कि उनके पूर्वज पुनर्जन्म लेते हैं। इसके विपरीत, मुर्गे को कभी-कभी नरक से जुड़ा हुआ माना जाता था, खासकर अगर उसका रंग काला हो।

वास्तव में उसे अक्सर काले जादू में नियोजित किया जाता है, शायद इसका सबसे पहला उदाहरण अथरिया वेद में है। हंगरी में शैतान को खुश करने के लिए एक काले मुर्गे की बलि दी जाती है, और जर्मनी में इसी उद्देश्य के लिए एक काली मुर्गी का इस्तेमाल किया जाता था। ग्रीक साइरेन, तल्मूड के शेडिम और इज़्पुज़्टेक, जिनसे मृत एज़्टेक मिक्टलान, मृतकों के स्थान के रास्ते पर मिलते हैं, सभी के पैर मुर्गे के होते हैं।

146. प्राचीन लोगों में कुछ राक्षसों का उल्लेख : अक्सर मिलता है जो खुद को, खास तौर पर दोपहर के समय, उन लोगों के सामने प्रकट करते हैं जिनके साथ वे परिचित हैं। वे ऐसे लोगों से मनुष्यों या जानवरों के रूप में मिलते हैं या खुद को एक पत्र, खाते या शीशी में या यहां तक कि एक अंगूठी में बंद कर देते हैं, जो अंदर से चौड़ी और खोखली होती है। "जादूगर जाने जाते हैं," लेयोयर कहते हैं, "जो उनका उपयोग करते हैं/ और मुझे बहुत अफसोस है कि मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि यह प्रथा बहुत आम है।"

147. नियंत्रण**: -** एक आध्यात्मिक शब्द, जो उस आत्मा को दर्शाता है जो किसी माध्यम के भौतिक संगठन को नियंत्रित करता है। - (अध्यात्मवाद देखें।)

148. नरक के काउंट्स**:** नरकीय पदानुक्रम में उच्च क्रम के राक्षस, जो कई सेनाओं की कमान संभालते हैं। उन्हें दिन के किसी भी समय बुलाया जा सकता है, बशर्ते आह्वान किसी जंगली, कम भीड़ वाली जगह पर हो।

149. कौआ **:** कौए का कांव-कांव करना अशुभ संकेत है।

150. मृत्यु**-**गोएह**:** एक व्यापक अंधविश्वास है कि मृत्यु एक गाड़ी में सवार होकर आत्माओं को उठाती हुई घूमती है। इस विश्वास का स्वरूप निश्चित रूप से इलाके के अनुसार बदलता रहता है। इंग्लैंड और वेल्स के कुछ हिस्सों में मृत्यु-गाड़ी आधी रात को चुपचाप बिना खुरों या पहियों की आवाज़ के गुज़र जाती है। गाड़ी और घोड़ा दोनों काले होते हैं, और एक काला शिकारी कुत्ता आगे-आगे दौड़ता है। कुछ इलाकों में घोड़े और कोचवान बिना सिर के होते हैं, जो निस्संदेह प्रेत की प्रभावशीलता को बढ़ाता है। ब्रेटन किसान आधी रात को चरमराती धुरी वाली गाड़ी के आने की आवाज़ सुनता है। यह अंकोन मृत्यु है - और जब गाड़ी किसी घर के सामने रुकती है तो उसमें मौजूद किसी व्यक्ति की मृत्यु अवश्य होती है।

151. दानव धर्म **:** राक्षसों की सरकार; बुरी आत्माओं का तात्कालिक प्रभाव; अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के कुछ लोगों का धर्म जो शैतानों की पूजा करते हैं।

152. डेमोनोग्राफी **:** राक्षसों का इतिहास और विवरण और उनसे जुड़ी सभी बातें। इस विषय पर लिखने वाले लेखक - जैसे कि वियरस, डेलेंक्रे, लेलोयर -।

153. दानव विज्ञान : जादू की वह शाखा जो पुरुष आत्माओं से संबंधित है। धार्मिक विज्ञान में यह अलौकिक प्राणियों के बारे में ज्ञान को इंगित करता है जो देवता नहीं हैं। लेकिन, यहाँ केवल इसके जादुई महत्व के संबंध में ही चर्चा की जानी चाहिए। ग्रीक शब्द डेटमोन, मूल रूप से "प्रतिभा" या "आत्मा" को इंगित करता था, लेकिन इंग्लैंड में इसका अर्थ सक्रिय रूप से पुरुष आत्माओं से है। प्राचीन दानव विज्ञान मिस्र, सेमिट्स, जीनियस और शैतान-पूजा, और जंगली दानव विज्ञान के लेखों में पाया जाएगा, जो विभिन्न देशों और जातियों के शीर्षकों के अंतर्गत हैं जहाँ इसकी उत्पत्ति हुई थी। माइकल पेसेलस के अनुसार, राक्षसों को छह बड़े समूहों में विभाजित किया गया है।

पहला, अग्नि के राक्षस। दूसरा, हवा के राक्षस। तीसरा, पृथ्वी के राक्षस। चौथा पानी और नदियों में रहता है, और तूफान और बाढ़ का कारण बनता है; पाँचवाँ भूमिगत है, जो भूकंप की तैयारी करता है और ज्वालामुखी विस्फोट को उत्तेजित करता है। छठा, छाया है, जो भूतों की प्रकृति का कुछ है। सेंट ऑगस्टीन सभी राक्षसों को अंतिम श्रेणी के अंतर्गत समझते हैं। Psellus का यह वर्गीकरण मध्य युग की उस प्रणाली से अलग नहीं है, जिसने सभी आत्माओं को चार तत्वों, अग्नि, वायु, पृथ्वी और जल, या सैलामैंडर, सिल्फ़, अनडाइन और ग्नोम में विभाजित किया था।

राक्षसों के बारे में मध्ययुगीन विचार, निश्चित रूप से, प्राचीन ईसाई और गूढ़ज्ञानवादी धारणा से सीधे जुड़ा हुआ था। प्रारंभिक ईसाई काल के गूढ़ज्ञानवादियों ने प्लेटो द्वारा आत्माओं के विभिन्न आदेशों के वर्गीकरण की नकल करते हुए, स्वर्गदूतों के पदानुक्रम के संबंध में एक समान व्यवस्था करने का प्रयास किया था, जिसका क्रम इस प्रकार था: - पहला और सबसे ऊंचा क्रम सेराफिम, दूसरा करूब, तीसरा सिंहासन का क्रम, चौथा प्रभुत्व, पांचवां सद्गुण, छठा शक्ति, सातवां प्रधानता, आठवां महादूत, नौवां और सबसे निचला स्वर्गदूत।

इस वर्गीकरण की, प्रेरितों द्वारा स्पष्ट रूप से निंदा की गई थी, फिर भी, अजीब बात है, यह लगभग मध्य युग के न्यूमेटोलॉजिस्ट से भी अधिक समय तक जीवित रहा। इन विद्वानों ने इस बात का उल्लेख करते हुए कि लूसिफ़र ने स्वर्ग के विरुद्ध विद्रोह किया था और महादूत माइकल ने उसके विरुद्ध युद्ध किया था, बहुत समय तक इस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाया: "इस अवसर पर स्वर्गदूतों के कौन से समूह गिरे थे?"

अंततः यह प्रचलित राय बन गई कि लूसिफ़र सेराफिम के समूह का था। अनंत शोध के बाद यह भी साबित हुआ कि अगारेस, बेलियाल और बारबाटोस, जिनमें

से प्रत्येक ने उच्च श्रेणी के स्वर्गदूतों को पदच्युत किया था, गुणों के समूह के थे; बिलेथ, फोकलोर और फीनिक्स सिंहासन के समूह के थे; गोआप गुणों और सिंहासन दोनों के समूह के थे; और मुरमुर सिंहासन और स्वर्गदूतों के समूह के थे।

इसी तरह कई अन्य महान शैतानों के दावों की भी जांच की गई और, समान रूप से संतोषजनक तरीके से, उनका निर्धारण किया गया। बाद में, यह जानने के लिए जांच का विषय बन गया: 'इस प्रतियोगिता में कितने गिरे हुए स्वर्गदूत शामिल थे? "यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न था, जिसके कारण बहुत ही कठिन शोध हुआ और विभिन्न प्रकार के असंगत मत सामने आए। इसके बाद यह प्रश्न उठा कि "युद्ध कहाँ लड़ा गया था - निम्न स्वर्ग में, हवा के सबसे ऊँचे क्षेत्र में, आकाश में या फिर स्वर्ग में?" 'यह कितने समय तक चला? - क्या एक सेकंड के दौरान, या समय के क्षण (पुन्सियम एम्पोरिस), दो, तीन या चार सेकंड के दौरान?

" ये बहुत ही कठिन समाधान वाले प्रश्न हैं, लेकिन अंततः जो धारणा प्रबल हुई, वह यह थी कि युद्ध शुरू होने की तिथि से ठीक तीन सेकंड में संपन्न हुआ था; और जब लूसिफ़र अपने कई अनुयायियों के साथ नरक में गिर गया, तो बाकी लोग मनुष्य को लुभाने के लिए हवा में छोड़ दिए गए। इन सभी जांचों से एक और नया सवाल उठा: "क्या लूसिफ़र के साथ और भी स्वर्गदूत मारे गए, या माइकल के साथ बने रहे?" हालांकि, विद्वान क्लर्कों का मानना था कि विद्रोही प्रमुख को एक बेहतर सेना ने हराया था, और इसके परिणामस्वरूप, अंधेरे के शैतानों की संख्या प्रकाश के स्वर्गदूतों की तुलना में कम थी।

154. सर वाल्टर स्कॉट द्वारा डेमोनोलॉजी और वेल्थोरोफ्ट**:** यह कार्य सर वाल्टर स्कॉट के विशाल साहित्यिक उत्पादन में एक जिज्ञासु और दयनीय स्थान रखता है। अपने वित्तीय डिबडेल के चार साल बाद, 1826 में, लेखक को हल्का आघात लगा, और इसके तुरंत बाद जॉन मुरे* जो उस समय "द फैमिली लाइब्रेरी" नामक एक वृत्तांत प्रकाशित कर रहे थे, ने सर वाल्टर से डेमोनोलॉजी पर एक खंड लिखने के लिए कहा। सहमति तुरंत दी गई, लेकिन, जैसा कि स्कॉट की पत्रिका में एक प्रविष्टि से स्पष्ट है, उन्हें काम में बहुत दिलचस्पी नहीं थी, और वास्तव में वे इसमें केवल इसलिए लगे क्योंकि वे अभी भी अपने ऋणों को माफ करने की प्रक्रिया में थे, और उन्हें हर वह कमीशन स्वीकार करना पड़ा जो उन्हें दिया गया था।

संक्षेप में, पुस्तक को विशुद्ध रूप से व्यावसायिक उद्देश्य से शुरू किया गया था, और इसे तब लिखा गया था जब लेखक की मानसिक क्षमताएँ अनिवार्य रूप

से सुस्त थीं, जिसका स्वाभाविक परिणाम यह था कि यह उनकी अन्य रचनाओं की तुलना में असीम रूप से कमतर है। लेकिन यहाँ अपनी हीनता के बावजूद, सर वाल्टर की पुस्तक में रहस्यवाद के छात्रों के लिए अपनी रुचि है। लेखक अपनी पुस्तक के उन हिस्सों में काफी कमजोर है जिन्हें काल्पनिक कहा जा सकता है -

उदाहरण के लिए, वे पृष्ठ जिनमें वह मध्य युग में जादू-टोने और इस तरह की चीजों में विश्वास के प्रचलन का वर्णन करने का श्रमसाध्य प्रयास करता है - लेकिन उसकी अद्भुत और अच्छी तरह से संग्रहीत स्मृति ने उसे उन अंशों को लिखने में मदद की जो पूरी तरह से तथ्यों से संबंधित थे, और इस प्रकार फ्रांस और स्वीडन में दानव विज्ञान के उनके विवरण में और जोन ऑफ आर्क के बारे में जो कुछ भी वह कहता है, वह काफी मूल्यवान है।

इसके अलावा, प्रारंभिक स्कॉटिश साहित्य का उसका गहन ज्ञान उसके उन सभी अध्यायों को एक विलक्षण महत्व देता है जो उसकी जन्मभूमि से संबंधित हैं, जबकि यह जानना दिलचस्प है कि यहाँ-वहाँ, वह अपने अमर उपन्यासों पर कुछ हद तक प्रकाश डालता है, उदाहरण के लिए, जब वह उन भूतों के बारे में बात करता है जिनके बारे में उसने पहले वुडस्टॉक में बात की थी।

155. दानव-मनोय**:** राक्षसों के माध्यम से भविष्यवाणी। यह भविष्यवाणी उनके द्वारा की गई भविष्यवाणी या उन लोगों को दिए गए उत्तरों के द्वारा होती है जो उन्हें बुलाते हैं।

156. डेमोनोमेनला**:** उन लोगों का उन्माद जो राक्षसों और जादूगरों के बारे में बताई गई हर बात पर विश्वास करते हैं, जैसे बोडिन, डेलेंक्रे, लेलोयर और अन्य। बोडिन के काम का शीर्षक है डेमोनोमेनिया ऑफ़ द सॉर्सेरर्स, लेकिन इस मामले में यह शैतानी को दर्शाता है।

157. प्रेम-स्थल का डरमोट**:** आयरिश किंवदंती का विशिष्ट प्रेमी, और डरमोट और ग्रैनिया के मिथक का नायक। इस तरह से उसे प्रेम-स्थल मिला। एक रात वह और उसके तीन साथी रात के आश्रय के लिए एक झोपड़ी में घुसे, जिसमें एक बूढ़ा आदमी, एक युवा लड़की (युवा), एक भेड़ (दुनिया) और एक बिल्ली (मृत्यु) रहती थी। रात के दौरान लड़की ने डरमोट के माथे पर प्रेम-स्थल लगाया, और उसके बाद से, ऐसा कहा जाता है, 'कोई भी महिला उसे प्यार किए बिना नहीं देख सकती थी। वह फिन की मंगेतर ग्रैनिया से प्यार करने लगा, जिसने उसे अपने साथ भागने के लिए मजबूर किया।

पूरे आयरलैंड में उनका पीछा किया गया, लेकिन सोलह साल की कानूनी लड़ाई के बाद, डरमोट को अपनी पैतृक संपत्ति में लौटने की अनुमति दी गई। उसे बेन के सूअर, बुलबेन, (q.v.) ने मार डाला, जो एक मंत्रमुग्ध जानवर था, जो उसका सौतेला भाई था। उनके शरीर को दाना के लोगों द्वारा सोने की परत चढ़ी अर्थी पर ले जाया गया और आयरिश प्रेम के देवता एंगस ओग ने उन्हें एक आत्मा दी, ताकि वह हर दिन वापस आ सकें और उनसे बात कर सकें। डरमोट सौर नायक के प्रकार का था; और जिस अर्थी पर उनका शरीर ले जाया गया वह शापित था।

158. देवता**:** थियोसोफी में, आत्माओं के उन रैंकों या आदेशों में से एक का गठन करते हैं जो देवता के अधीन ब्रह्मांड पर शासन करने वाले पदानुक्रम की रचना करते हैं। उनकी संख्या बहुत बड़ी है और उनके कार्य मानव जाति के लिए सभी ज्ञात नहीं हैं, हालाँकि आम तौर पर इन कार्यों को प्रणालियों और जीवन के विकास से जुड़ा हुआ कहा जा सकता है।

देवों के तीन प्रकार हैं- अशरीरी देव, रूप देव और जुनून देव। अशरीरी देव उच्च मानसिक दुनिया से संबंधित हैं, उनके शरीर मानसिक तत्व सार से बने हैं, और वे पहले तत्व साम्राज्य से संबंधित हैं। रूप देव निम्न मानसिक दुनिया से संबंधित हैं, और जबकि उनके शरीर भी मानसिक तत्व सार से बने हैं, वे दूसरे तत्व साम्राज्य से संबंधित हैं। जुनून देव सूक्ष्म दुनिया से संबंधित हैं और उनके शरीर सूक्ष्म तत्व सार से बने हैं। देवता अत्यंत महान और अत्यंत गौरवशाली प्राणी हैं, जो अपार ज्ञान और शक्ति से युक्त हैं, शांत किन्तु अप्रतिरोध्य हैं, तथा दिखने में भी भव्य हैं।

159. शैतान**:** ग्रीक शब्द डायबोलोस से लिया गया नाम, जिसका अर्थ है "निंदा करने वाला।" बुराई की सर्वोच्च आत्मा का नाम, जो ईश्वर और मनुष्य का दुश्मन है। आदिम धार्मिक प्रणालियों में बुराई की कोई अवधारणा नहीं है, और देवता न तो अच्छे हैं और न ही बुरे, जैसा कि हम इन शब्दों को समझते हैं, लेकिन एक ही समय में "अच्छे" और "बुरे" गुण हो सकते हैं। इस प्रकार हमारे पास पुराने धर्मों में ऐसे प्राणियों के बहुत कम निशान हैं जो पूरी तरह से बुरे हैं, और मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि शैतान की अवधारणा जैसा कि आज हमारे पास है, लगभग पूरी तरह से हिब्रू और ईसाई है।

मिस्र और बेबीलोन में, अपेपी और तियावथ जैसे व्यक्ति, हालांकि स्पष्ट रूप से शैतानी व्यक्तित्व के विकास की रेखा में हैं, किसी भी तरह से नरक क्षेत्रों के शासक नहीं हैं। फिर से यूनानियों का पाताल लोक केवल मृतकों की छाया का शासक है, और ओलंपस या मानव जाति का दुश्मन नहीं है। यह अजीब बात है कि मेक्सिको में, नरक के स्वामी मिक्टलांटेकुटली, मृतकों के क्षेत्र के किसी भी

यूरोपीय या एशियाई शासक की तुलना में कहीं अधिक प्रत्यक्ष रूप से शैतानी व्यक्ति हैं। लेकिन कुछ पौराणिक कथाओं में, राक्षसों के बारे में अक्सर संकेत मिलते हैं, जिन्होंने शैतान की हमारी धारणा को आसानी से प्रभावित किया होगा। ऐसा ही हिंदू सर्प अही और हिब्रू लेविथान है, जो अराजकता का सिद्धांत है।

ट्यूटनिक पौराणिक कथाओं में हमारे पास लोकी का भयावह रूप है, जो मूल रूप से अग्नि का देवता था, लेकिन बाद में बुराई का अवतार बन गया। शैतान की धारणा का भी प्राचीन सर्प-पूजा से गहरा संबंध प्रतीत होता है, जो कि अधिकांश पूर्वी देशों में प्रवेश कर गई थी। इस प्रकार हम पाते हैं कि शैतान की हिब्रू धारणा, जैसा कि माना जाता है, निर्वासन के बाद की अवधि में उत्पन्न हुई, और बेबीलोनियन या असीरियन प्रभाव के निशान प्रदर्शित करती है।

यह संभावना नहीं है कि कैद से पहले हिब्रू लोगों द्वारा बुरी आत्माओं के संबंध में कोई विशिष्ट सिद्धांत अपनाया गया था। इस विषय पर लिखते हुए, श्री एफ. टी. हॉल ने अपनी पुस्तक द पेडिग्री ऑफ द डेविल में कहा है: '• शब्द *शैतान' और *शैतान' जो पुराने नियम में पाए जाते हैं, निश्चित रूप से शैतान की आधुनिक अवधारणा के लिए लागू नहीं होते हैं, जो कि दुष्ट आत्मा है; हालाँकि पुराने हिब्रू मन में एक उपजाऊ मिट्टी को पहचानना मुश्किल नहीं है, जिसमें बाद में विकसित होने वाला यह विचार आसानी से जड़ पकड़ सकता है। *शैतान' का मूल विचार एक 'विरोधी' या *विरोध का एजेंट है।' जिस स्वर्गदूत के बारे में कहा जाता है कि उसने बालाम का विरोध किया था, उसी को *प्रभु का दूत/ और *शैतान' कहा गया है।

जब उनके राजा आकीश के अधीन पलिश्ती शाऊल के अधीन इस्राएलियों के विरुद्ध शत्रुता शुरू करने वाले थे और दाऊद और उसके लोग पलिश्तियों के साथ मार्च करने वाले थे; बाद वाले ने विरोध किया, कि कहीं युद्ध के दिन दाऊद शत्रु के पास भागकर उनके लिए *शैतान' न बन जाए। जब दाऊद अपने जीवन के अंतिम दिनों में अबशालोम के विद्रोह और मृत्यु के बाद यरूशलेम लौट रहा था; और उसके हाल ही में असंतुष्ट प्रजाजन भी उसके अधीन हो रहे थे; उनमें से एक उग्र शिमी भी था।

जकर्याह की भविष्यवाणी में, शैतान को फिर से, एक स्पष्ट व्यक्तित्व के साथ, महायाजक यहोशू के दाहिने हाथ पर खड़ा दिखाया गया है, ताकि उसका विरोध कर सके: ऐसा लगता है कि वह आरोप के लिए खुले व्यक्ति के खिलाफ सख्त न्याय का दावा कर रहा है; क्योंकि यहोशू ने गंदे कपड़े पहने हैं - पाप और प्रदूषण का प्रकार। यहोवा नरम पड़ जाता है, और दया न्याय पर विजय पाती है: गंदे

कपड़े हटा दिए जाते हैं, और अच्छे कपड़े बदल दिए जाते हैं। यहाँ भी, शैतान का चरित्र, हालांकि कठोर है, लेकिन सद्गुणों से रहित नहीं है, क्योंकि यह न्याय की भावना को दर्शाता है।

160. शैतान की पूजा : (i) शैतान या लूसिफ़र की पूजा।(2) अर्ध-सभ्य या बर्बर लोगों द्वारा राक्षसी रूप वाले देवताओं की पूजा।शैतान की पूजा या शैतानीपन अनियमित और कभी-कभी महामारी की तरह होता है। यह द्वैतवाद के शुरुआती दिनों से है और शायद फारसी द्वैत प्रणाली में उत्पन्न हुआ था जब विरोधी देवता ओरमुजद और अहिरमन ने क्रमशः अच्छे और बुरे सिद्धांतों का प्रतीक किया था। शुद्ध शैतानवाद के उदाहरण तुलनात्मक रूप से दुर्लभ हैं, और इसे जादू टोने के सब्बाटिक तांडव के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए जो (2) की प्रकृति का अधिक हिस्सा है, या उसके साथ समझौता करने के उद्देश्य से बुराई को बुलाने के साथ है। शैतानवाद का अभ्यास करने वाले आधुनिक समूह छोटे और अस्पष्ट हैं, और, जैसा कि वे असंगठित हैं, उनके बारे में विवरण स्पष्ट हैं।

यह जंगली जातियों की 'शैतान पूजा' का एक अच्छा उदाहरण है। चीनी लोग भी शैतानों को खुश करते हैं (चीन देखें) जैसा कि बर्मा और कंबोडिया के लोग करते हैं (q.v.) लेकिन किसी भी तरह से बुरी आत्माओं को दी जाने वाली उनकी बलि को "मोर्शिप" के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है, ठीक उसी तरह जैसे शास्त्रीय समय के देवताओं को शैतान नहीं माना जा सकता है, क्योंकि उन्हें प्रारंभिक ईसाई धर्म द्वारा ऐसा लेबल दिया गया था।

161. शैतान का पुल **:** एबरिस्टविथ के पास, एफ़ोन माइनाच पर बना एक पुल। कहानी यह है कि एक बूढ़ी औरत जिसने अपनी गाय खो दी थी, उसने खाई के उस पार देखा जिस पर वह खड़ी थी, लेकिन उसे नहीं पता था कि उस तक कैसे पहुँचा जाए। उस मोड़ पर शैतान एक साधु के रूप में उसके सामने प्रकट हुआ और वादा किया कि अगर वह उसे पुल पार करने वाली पहली जीवित चीज़ दे दे तो वह पुल पार कर देगा।

बूढ़ी औरत सहमत हो गई, पुल बन गया और चालाक शैतान ने विनती की कि वह इसे आज़माए। लेकिन बूढ़ी औरत ने उसके फटे खुर और घुटने को पीछे की ओर मुड़ा हुआ देखा था, इसलिए उसने अपनी जेब से एक पपड़ी निकाली और उसे खड्ड के पार फेंक दिया, और अपने छोटे कुत्ते को उसे लाने के लिए कहा। शैतान को मात दे दी गई, जैसा कि वह आमतौर पर ऐसी कहानियों में होता है।

162. शैतान की जंजीर**:** स्विटजरलैंड में एक परंपरा है कि सेंट बर्नार्ड ने क्लेयरवैंक्स के एबे के पड़ोस में कुछ पहाड़ों में शैतान को जंजीर से बांध दिया है। इसी से देश के किसानों द्वारा पालन की जाने वाली प्रथा आई है, जिसमें काम पर जाने से पहले हर सोमवार सुबह हथौड़े से निहाई पर तीन वार किए जाते हैं। इस तरह शैतान की जंजीर मजबूत हो जाती है, ताकि वह किसी तरह से घायल न हो जाए।

163. शैतान की कमरबंद**:** मध्यकालीन समय में चुड़ैलों पर अक्सर शैतान की कमरबंद पहनने का आरोप लगाया जाता था, संभवतः दुष्ट के प्रति निष्ठा के प्रतीक के रूप में। जादुई कमरबंद आमतौर पर पहने जाते थे, और एक आधुनिक लेखक का सुझाव है कि वर्तमान समय में विज्ञापित चुंबकीय बेल्ट की उत्पत्ति इसी प्रथा से हुई थी।

164. शैतान का खंभा**:** प्राग में एक खंभे के तीन पत्थर सुरक्षित हैं, जिन्हें शैतान रोम से एक पुजारी को कुचलने के लिए लाया था, जिसके साथ उसने समझौता किया था, और उसे तब मारना चाहता था जब वह प्रार्थना कर रहा था। लेकिन किंवदंती कहती है कि सेंट पीटर ने शैतान और उसके खंभे को लगातार तीन बार समुद्र में फेंक दिया, जिससे पुजारी को पश्चाताप करने का समय मिल गया। शैतान इतना क्रोधित हुआ कि उसने खंभा तोड़ दिया और खुद को बचा लिया।

165. घंटियों से डरना **:** घंटियों से शैतान डरते हैं: यह एक पुराना अंधविश्वास था कि बुरी आत्माएँ घंटियों से डरती थीं और उनकी आवाज़ से भाग जाती थीं।

166.डेवन**,** जादू टोना**:** डेवनशायर में जादू टोने में विश्वास अभी भी खत्म नहीं हुआ है, जैसा कि क्रेडिटन काउंटी कोर्ट में कुछ साल पहले सुनाए गए एक दिलचस्प मामले में दिखाया गया था, जब एक युवती ने आरोप लगाया था कि उसे एक किराने की दुकान में एक औषधि दी गई थी, और इसके परिणामस्वरूप, या तो उस औषधि या दुकान में दिए गए मंत्र के कारण, वह हर दिन पतली होती जा रही थी। केवल वे लोग जो डेवन में लंबे समय तक रहे हैं, वे ही इस व्यापक विश्वास को समझ सकते हैं जो काउंटी के दूरदराज के कोनों में अभी भी मौजूद है, "बुरी नज़र" की शक्ति, और सभी प्रकार के अजीब अंधविश्वासों को दी जाने वाली मान्यता।

चुड़ैलों के बारे में माना जाता है कि वे मृत्यु के बाद भी घातक प्रभाव डाल सकती हैं, जब तक कि उन्हें उनके पैरों के अंगूठे नीचे करके न दफनाया जाए। बहुत समय पहले, एक महिला को चुड़ैल होने का संदेह था, उसे टिवर्टन से बीस मील की दूरी पर इस तरह से दफनाया गया था। देश के किसी भी हिस्से में जादू टोने

पर कल्म वैली से ज़्यादा विश्वास नहीं किया जाता है। स्थानीय कहावत है कि घाटी में इतनी चुड़ैलें हैं कि वे कुल्मस्टॉक में बीकन हिल पर एक हॉगहेड साइडर रोल कर सकती हैं, और इलाके में रहने वाले बूढ़े लोग यह कहने में शर्म नहीं करते कि वे जादू टोना में विश्वास करते हैं।

चुड़ैलें दो तरह की होती हैं- काली और सफ़ेद। पहली वाली दावा करती हैं कि उनके पास उन लोगों को सभी तरह के दुर्भाग्य के लिए दोषी ठहराने की शक्ति है, जिन पर उन्हें जादू करने के लिए कहा जाता है; दूसरी वाली भोले-भाले ग्राहकों पर यह विश्वास करके थोपती हैं कि वे बुरे जादू को दूर कर सकती हैं और अच्छी किस्मत ला सकती हैं - बेशक, एक विचार के लिए। स्पष्ट कारणों से 'चुड़ैलों' के पास जाने के बारे में आम तौर पर गुप्त रखा जाता है, लेकिन कभी-कभी विवरण लीक हो जाते हैं।

कल्मस्टॉक जिले में, बहुत समय पहले नहीं, एक युवा लड़की अपनी माँ के साथ एक चुड़ैल के पास गई, ताकि एक भटके हुए प्रेमी पर जादू कर सके, जिस पर किसी अन्य युवती पर अपना प्यार लुटाने का संदेह था।

चुड़ैल ने दावा किया कि वह युवक को उसके पहले प्यार के पास वापस ला सकती है या उसे सभी प्रकार की यातनाएँ दे सकती है, लेकिन उसकी कीमत निषेधात्मक थी, और इसलिए युवक को उससे शादी करने के लिए छोड़ दिया गया, जिससे वह चाहे। किसान चुड़ैलों के सबसे लाभदायक ग्राहक होते हैं, और यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि वे आम तौर पर घर से दूर, बाजार में "बुद्धिमान महिला" से मिलने का प्रयास करते हैं। कुछ साल पहले, किसान जब भी किसी दुर्भाग्य में होते थे, तो चुड़ैल से सलाह लेने के लिए कई मील दूर एक्सेटर जाते थे, और यह आम तौर पर बताया जाता है कि उन्हें आज के समय में शहर में भी इसी तरह की सलाह मिल सकती है। कई फार्महाउसों में डायरियों में बाइबिल रखी जाती है ताकि डायन मक्खन बनाने के काम में बाधा न डालें। "मुझे 'चुड़ैल' बनाया गया है," या ** मुझे 'चुड़ैल' बनाया गया होगा," ये अभिव्यक्तियाँ डेवोन में सप्ताह में हर दिन सुनी जाती हैं।

आम तौर पर, यह माना जाता है कि अनदेखी किए जाने से सबसे ज़्यादा नुकसान जानवरों को होता है।" मरने वाले मवेशियों की हानि को बुरी आत्माओं की शक्ति के कारण माना जाता है, और कई अंधविश्वासी लोगों के अनुसार, चुड़ैलों का सूअरों पर एक अजीबोगरीब शक्ति होती है। एक आदमी जो मानता था कि उसके सूअरों को जादू कर दिया गया है, उसे कुछ समय पहले कहा गया था कि वह सूअर का दिल ले, उसमें पिन और सुई भर दे, और उसे आग पर भून

दे। उसने यह विश्वास करते हुए किया कि इससे उसके सूअरों की मृत्यु दर कम हो जाएगी।

167. प्राचीन फारस के डिव, जिसे डीओ, ड्यू या डाइव कहा जाता है, को मध्य युग के यूरोपीय शैतान के समान माना जाता है। फारस के रोमांस में उन्हें नर और मादा के रूप में दर्शाया गया है, लेकिन नर डिव को अधिक खतरनाक माना जाता है, और यह उनके चरित्र से है, जो एक कथित प्रमुख में व्यक्त किया गया है, कि शैतान को उसके प्रसिद्ध गुणों के साथ चित्रित किया गया है। फारस की किंवदंतियों के अनुसार, नर डिव को आदम के निर्माण से सात हज़ार साल पहले दुनिया की सरकार सौंपी गई थी, और उनके बाद मादा डिव या पेरिस ने शासन किया, जिन्होंने अपने प्रमुख जियान बेन जियान के अधीन दो हज़ार साल तक शासन किया।

पेरिस के प्रभुत्व को एब्लिस (कुरान का शैतान) ने समाप्त कर दिया था, जिसे आग के तत्वों से बनाया गया था, और जिसका निवास पहले फ़रिश्तों के पास था। एब्लीस या हारिस, जैसा कि उसे भी कहा जाता है, विद्रोही स्वर्गदूतों का नेता बन गया जब उन्हें पहले बनाए गए मनुष्य को श्रद्धांजलि देने का आदेश दिया गया, और जिन्न की पूरी जाति, नर और मादा देवताओं, जिन्हें उसने पहले अधीन कर लिया था, के साथ शामिल होने के कारण वह उनके समान अनुग्रह से वंचित हो गया।

एब्लीस और उसके तत्काल अनुयायियों को नरक क्षेत्रों में लंबे समय तक पीड़ा सहने की निंदा की गई, लेकिन शेष को पृथ्वी पर भटकने की अनुमति दी गई, जो उनके और मानव जाति के लिए दुख का एक निरंतर स्रोत था, जिनकी आज्ञाकारिता उनके उपकरणों द्वारा परीक्षण की जाती है, और उनके पतन और पीड़ा के उदाहरण द्वारा सुरक्षित होती है। उन्हें विभिन्न रूप धारण करने चाहिए, विशेष रूप से सर्प का, और फारसी रोमांस से जुड़े चित्रों में उन्हें मध्य युग की कहानियों में हमारे अपने शैतानों, राक्षसों और दिग्गजों के रूप में दर्शाया गया है।

बाद के युगों के लेखकों, अरब और फ़ारसी दोनों ने, इन दुष्ट जिन्नों के निवास को काफ़ पर्वत में स्थानीयकृत किया है; उनकी राजधानी अहेरमान-आबाद है, जो उनके प्रमुख अहेरमान का निवास है, जिसकी पहचान मनिचियन के अहेरमानों से की जाती है, उस उल्लेखनीय संप्रदाय के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने सिद्धांत ज़ोरोस्टर से उधार लिए थे। लिंग का भेद डिव्स की एक उल्लेखनीय विशेषता है, और इसके बुरे परिणाम शैतानी अंधविश्वास की एक प्रणाली में पढ़े जा सकते हैं।

168.चैप्पी' **-** रेशमी पोशाक पहने हुए है। "विख्यात विलिंगटन मिल में देखी गई भूतों में से एक भूरे रंग के कपड़ों में एक महिला थी। कभी-कभी कहा जाता था कि वह एक लबादे में लिपटी हुई है, उसका सिर झुका हुआ है और उसके हाथ उसकी गोद में हैं। वाल्टन एबे में एक सिरहीन महिला थी जो खून से सने कपड़े पहने, अपने बच्चे को गोद में लिए एक खास कमरे में भटकती थी;

और संक्षेप में, हमारे देश के घरों में रहने वाले अधिकांश भूत अपनी विशिष्ट पोशाक के लिए जाने जाते हैं। लेकिन सांसारिक वस्त्र में भूतों के प्रकट होने के तथ्य ने कई दार्शनिकों का उपहास उड़ाया है, जो आध्यात्मिक अभिव्यक्ति की संभावना को स्वीकार करते हुए भी इस बात से इनकार करते हैं कि कपड़ों के सूट में भूत हो सकता है।

जॉर्ज क्रूइशांक भी, जो भूतों में विश्वास नहीं करते थे, इस मामले को इस प्रकार सारांशित करते हैं: * चूंकि आत्माओं के लिए पृथ्वी की सामग्री से बने कपड़े पहनना स्पष्ट रूप से असंभव है, इसलिए हमें यह जानना चाहिए कि क्या कोई भूत है जो पृथ्वी की सामग्री से बने कपड़े पहन सकता है। भूतों के वस्त्रों के लिए आध्यात्मिक परिधान की दुकानें जो धरती पर आते हैं।' भूतों के मानवीय वेश में दिखने पर चाहे जो भी आपत्ति हो, लेकिन उन्होंने अभी तक इस विश्वास को खत्म नहीं किया है कि उन्हें इस तरह के वस्त्र पहने हुए देखा जा सकता है, और बायरन ने न्यूस्टेड एबे के मठों और अन्य भागों में रहने वाले 'ब्लैक फ्रायर' का वर्णन करते हुए हमें बताया कि वह हमेशा सजे-धजे रहता था। टोपी, मोतियों और गहरे रंग के परिधान में।

दरअसल, जैसा कि डॉ. टायलर टिप्पणी करते हैं, 'यह सभ्य लोगों की भूत कहानियों की एक आदतन विशेषता है, जैसे कि जंगली दुनिया की, कि भूत सजे-धजे आते हैं, और यहां तक कि जीवन में पहने जाने वाले जाने-माने कपड़ों में भी।' और वह आगे कहते हैं कि वस्तु-आत्माओं का सिद्धांत अल्गोंगुइन जनजातियों, फिजी समूह के द्वीपवासियों और बुराह के करेन द्वारा माना जाता है - ऐसा माना जाता है कि न केवल मनुष्यों और जानवरों में आत्मा होती है, बल्कि अकार्बनिक चीजों में भी होती है। इस प्रकार, मेरिनर, फिजी विश्वास का वर्णन करते हुए लिखते हैं: 'यदि कोई पत्थर या कोई अन्य पदार्थ टूट जाता है, तो अमरता भी उसका पुरस्कार है; बल्कि, कृत्रिम शरीरों को मनुष्यों, सूअरों और रतालू के समान सौभाग्य प्राप्त होता है।

यदि कोई कुल्हाड़ी या छेनी घिस जाती है या टूट जाती है, तो उसकी आत्मा देवताओं की सेवा के लिए उड़ जाती है। फिजी के लोग आपको अपने एक द्वीप पर एक प्रकार का प्राकृतिक कुआँ या ज़मीन में गहरा गड्ढा दिखा सकते हैं,

जिसके तल से पानी की एक धारा बहती है, जिसमें आप पुरुषों और महिलाओं, जानवरों और पौधों, स्टॉक और पत्थरों, डोंगियों और घोड़ों और इस द्वीप के सभी टूटे हुए बर्तनों की आत्माओं को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। 'जैसा कि देखा गया है, इस तरह की एनिमिस्टिक अवधारणाएँ सभ्य समुदायों में प्रचलित लोकप्रिय विचार से अधिक तर्कहीन नहीं हैं कि आत्माएँ सभी प्रकार के परिधानों में दिखाई देती हैं।'

169. टेडवर्थ का ढोलकिया: एक भूत-प्रेत जिसने टेडवर्थ* विल्ट्स के श्री जॉन मोम्पेसन के घर में वर्ष 1661 और उसके बाद से ही आतंक मचा रखा था। उस वर्ष मार्च में मोम्पेसन ने एक आवारा ढोलकिया को शांति न्यायाधीश के समक्ष पेश किया था, जिसके द्वारा उसका ढोल जब्त कर लिया गया था। वाद्य-यंत्र को मोम्पेसन के घर ले जाया गया, जब वह अनुपस्थित था, और तुरंत ही एक हिंसक भूत-प्रेत उपद्रव शुरू हो गया। घर के सदस्यों को भूत-प्रेत दिखाई दिए, फर्नीचर के टुकड़े अपने आप हिलते हुए दिखाई दिए, अदृश्य हाथों से छोटी-छोटी वस्तुएं इधर-उधर फेंकी गईं, छोटे बच्चे अपने बिस्तर पर लेटे हुए हवा में उड़ रहे थे, और हर रात ढोल बजने की निरंतर ध्वनि आ रही थी।

ढोलकिया, जिसे उपद्रव का कारण समझा गया था, को तब ले जाया गया, जब पीड़ित घर में एक बार फिर शांति स्थापित हुई; लेकिन कुछ ही समय बाद वह वापस लौटने में सफल हो गया, जब उपद्रव नए जोश के साथ शुरू हो गया। इस भूत-प्रेत का कोई प्रत्यक्ष विवरण नहीं है, सिवाय जोसेफ ग्लैनविल के - सैडुसीस्मस ट्रायम्फेटस, 1668 - और यद्यपि ग्लैनविल पूरी कहानी के लिए हमारे विशेषज्ञ हैं, लेकिन इसका वह हिस्सा जिसे उन्होंने स्वयं देखा है, निश्चित रूप से सबसे अद्भुत नहीं है, लेकिन इसमें बच्चों के बिस्तर के आस-पास सुनाई देने वाली खरोंच और हांफने की आवाजें हैं।

170.डी.एन. पोटेट : फ्रांस में अध्यात्मवाद के मूल संस्थापकों में से एक, तथा उस देश में टेबल-टर्निंग के प्रथम प्रयोगवादियों में से एक।

171,एब्लिस, : या हार्ट्स जैसा कि उसे भी कहा जाता है: मुसलमानों का "शैतान"। ऐसा कहा जाता है कि वह अज़ाज़िल का एक कैदी था, जो ईश्वर के सबसे निकट का स्वर्ग है; और जब स्वर्गदूतों को पहले आदमी के सामने झुकने का आदेश दिया गया, तो एब्लिस विद्रोह करने वालों में सबसे प्रमुख था। उन्हें अज़ाज़िल से बाहर निकाल दिया गया, और एब्लिस और उसके अनुयायियों को लंबे समय तक नरक में पीड़ा सहने की सजा सुनाई गई। ऐसा माना जाता है कि वह अग्नि के तत्वों से बना था; और उसने दुनिया की सरकार में पेरिस का स्थान लिया।

172. इच-उल्टौट: **-** एक गेलिक शब्द जिसका अर्थ है जल-घोड़ा। इच-उटस्क हाइलैंड लोक-कथाओं का एक भूत था, जिसे केल्पी द्वारा धारण किया जाने वाला एक पसंदीदा रूप माना जाता था, ताकि आत्माओं को अपने स्वामी शैतान की ओर आकर्षित किया जा सके। एक सुंदर घोड़े के भेष में, सुंदर रूप से सुसज्जित, केल्पी सड़क के किनारे मासूमियत से चरता था।

थका हुआ यात्री, जो वहाँ से गुजर रहा था, और यह विश्वास करते हुए कि यह शानदार जानवर अपने स्वामी से भटक गया है, उसे अपने रास्ते पर मदद करने के लिए उसका उपयोग करने का प्रलोभन दिया; और धोखेबाज केल्पी, भेड़ के बच्चे की तरह चुप रहा जब तक कि यात्री पूरी तरह से सवार नहीं हो गया, फिर एक विजय की शैतानी चीख के साथ बगल के तालाब में सिर के बल कूद गया।

यह माना जाता था कि बदकिस्मत आदमी की आत्मा, जिसे मौत की तैयारी करने का कोई समय नहीं मिला था, इस तरह सुरक्षित रूप से शैतान के पास सुरक्षित हो जाएगी; जबकि केल्पी को उसकी परेशानी के बदले में शव मिला।

173.जादू का भी अभ्यास : करते थे। बाद के विवरणों के अनुसार, उनके कार्य तुलनात्मक रूप से सरल थे, क्योंकि मानव शरीर को छत्तीस भागों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक निश्चित दानव करता था, और प्रभावित भाग के दानव को बुलाना ही उसके उपचार के लिए पर्याप्त था - मामलों का एक मौलिक दृष्टिकोण मिस्रियों का था। मृतकों की पुस्तक में हम पाते हैं कि धन्य लोगों के शरीर की भलाई के लिए अलग-अलग देवता जिम्मेदार थे; इस प्रकार नू के पास भूतों का प्रभार था। यह अवधारणा कि मनुष्य का का या दोहरा भाग मृत्यु के बाद इधर-उधर भटकता है, भूतों में मिस्रियों के विश्वास में बहुत सहायक थी।

उनके अनुसार मनुष्य में एक भौतिक शरीर, एक छाया, एक दोहरा भाग, एक आत्मा, एक हृदय, एक आत्मा जिसे हिट कहा जाता है, एक शक्ति, एक नाम और एक आध्यात्मिक शरीर शामिल होता है। जब शरीर मर जाता है तो छाया उससे दूर चली जाती है, और उसे केवल एक रहस्यमय समारोह के प्रदर्शन द्वारा वापस लाया जा सकता है; डबल कब्र में शरीर के साथ रहता था और वहाँ आत्मा उससे मिलने आती थी जिसका निवास स्वर्ग में था।

आत्मा एक पहलू से भौतिक वस्तु थी और माना जाता था कि का या डबल की तरह वह भी कब्र में लाए जाने वाले अंतिम संस्कार के प्रसाद में हिस्सा लेती थी; मांस और पेय के कब्र के प्रसाद का एक मुख्य उद्देश्य डबल को कब्र में रखना

और भोजन की तलाश में कब्र के बाहर भटकने की आवश्यकता को दूर करना था।

कई ग्रंथों से यह स्पष्ट है कि जब तक डबल को पर्याप्त भोजन नहीं दिया जाता, वह कब्र से बाहर भटक जाता और अपने रास्ते में मिलने वाले किसी भी तरह के अपशिष्ट को खा जाता और किसी भी तरह का गंदा पानी पी जाता। लेकिन छाया, और डबल और आत्मा के अलावा, मृतक की आत्मा, जिसका आमतौर पर स्वर्ग में निवास होता था, कभी-कभी कब्र में पाई जाती थी।

हालांकि, यह कहने के लिए अच्छे कारण हैं कि मनुष्य का अमर हिस्सा जो कब्र में रहता था और मृतक की मूर्ति में उसका विशेष निवास था, वह * डबल था।' यह इस तथ्य से साबित होता है कि कब्र का एक विशेष हिस्सा का, या डबल के लिए आरक्षित था, जिसे 'का का घर' कहा जाता था, और एक पुजारी, जिसे का का पुजारी कहा जाता था, को विशेष रूप से वहां सेवा करने के लिए नियुक्त किया गया था।

174. इंग्लैंड **:** में जादू टोने के खिलाफ पहला कानून 1541 में संसद द्वारा पारित किया गया था। 1551 में इस पर और भी कानून बनाए गए, लेकिन 1562 तक संसद ने जादू टोने को मृत्युदंड योग्य अपराध के रूप में परिभाषित नहीं किया। उसके बाद से चुड़ैलों पर नियमित रूप से अत्याचार होने लगे। एलिजाबेथ के शासनकाल के अंतिम वर्षों में कई लोगों को जलाया गया।

175.हंटिंगटन काउंटी : के वोरबोइस गांव में थ्रोगमॉर्टन और सर सैमुअल क्रॉमवेल रहते थे। मिस्टर थ्रोगमॉर्टन के परिवार में उनकी पत्नी और पांच बेटियां थीं, जिनमें सबसे बड़ी जोन, पंद्रह साल की लड़की थी, उसके दिमाग और कल्पना में भूत-प्रेत और जादू-टोने की बातें भरी हुई थीं। एक बार उसे सैमुअल नाम के एक मजदूर परिवार की झोपड़ी के पास से गुजरना पड़ा। इस परिवार में एक आदमी, उसकी पत्नी और उनकी बड़ी बेटी थी।

मदर सैमुअल दरवाजे पर काली टोपी पहने बैठी थी और बुनाई में व्यस्त थी। जोन ने घोषणा की कि वह एक चुड़ैल है, घर भागी और अजीब तरह के दौरे पड़ने लगे, उसने कहा कि मदर सैमुअल ने उसे जादू कर दिया है। समय के साथ-साथ अन्य बेटियों को भी इसी तरह के दौरे पड़ने लगे माता-पिता को अब संदेह होने लगा कि उनके बच्चों पर वास्तव में जादू किया गया है और उन्होंने इस मामले की सूचना लेडी क्रॉमवेल को दी, जिन्होंने परिवार की अंतरंग मित्र के रूप में इस मामले को उठाया और सर सैमुअल के साथ मिलकर आदेश दिया कि कथित चुड़ैल को कड़ी परीक्षा देनी चाहिए।

इस बीच बच्चों ने अपनी कल्पना को मुक्त कर दिया और बूढ़ी महिला के बारे में सभी प्रकार की अजीब और विचित्र कहानियाँ गढ़ लीं। अंततः थ्रोगमॉर्टन ने बेचारी बूढ़ी महिला को अपने मैदान में घसीटा, जहाँ उसे यातनाएँ दी गईं, उसके शरीर में पिन ठूँसकर देखा गया कि क्या खून निकाला जा सकता है। लेडी क्रॉमवेल ने बूढ़ी महिला के मुट्ठी भर बाल फाड़े और उसे श्रीमती थ्रोगमॉर्टन को दिया और उनसे जादू टोने के खिलाफ़ मारक के रूप में इसे जलाने का अनुरोध किया।

इन चोटों से पीड़ित होकर बुढ़िया ने अपने अत्याचारियों के खिलाफ़ एक श्राप का आह्वान किया जिसे बाद में याद किया गया, हालाँकि उसे दोनों परिवारों के हाथों बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा, उनके मवेशियों और पशुओं के साथ होने वाली सभी बुराइयों और दुर्भाग्यों का जिम्मा उसके कंधों पर था। आखिरकार लेडी क्रोमवेल को एक बीमारी ने जकड़ लिया जिससे उसकी मौत हो गई और बूढ़ी मदर सैमुअल पर इसकी जिम्मेदारी डाल दी गई।

उसे कबूल करने और अपने किए को सुधारने के लिए मनाने के लिए बार-बार प्रयास किए गए। अंत में, असहनीय पीड़ा से पीड़ित होकर, उसने खुद को आत्माओं के खिलाफ़ एक भूत भगाने का आह्वान करने के लिए राजी कर लिया और कबूल किया कि उसके पति और बेटी भी उसके साथ थे और उन्होंने खुद को शैतान को बेच दिया था। इस कबूलनामे के आधार पर पूरे परिवार को हंटिंगडन जेल में कैद कर दिया गया। अगले सत्र में तीनों सैमुअल्स पर विभिन्न अपराधों और लेडी क्रोमवेल को "मृत्यु तक मोहित करने" के आरोप में मुकदमा चलाया गया। यातना की पीड़ा में बूढ़ी महिला ने वह सब कुछ स्वीकार कर लिया जो अपेक्षित था, लेकिन उसके पति और बेटी ने दृढ़ता से अपनी बेगुनाही का दावा किया। सभी को फाँसी और जलाने की सजा सुनाई गई। अप्रैल 1595 में फाँसी दी गई।

ऐसा कहा जाता है कि 1594 में डर्बी के अर्ल ने अपनी मौत का कारण जादू-टोना बताया, हालाँकि उसे इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि उसे किसने जादू किया था। जेम्स I. जो खुद जादू-टोने में माहिर थे और डेमोनोलॉजी पर प्रसिद्ध ग्रंथ के लेखक थे, के सिंहासन पर बैठने से इंग्लैंड में चुड़ैलों के उत्पीड़न को बहुत बढ़ावा मिला। "गरीब बूढ़ी महिलाओं और कम उम्र की लड़कियों को घुमाया जाता था, शपथ दिलाई जाती थी, उनके बाल काटे जाते थे और उन्हें यातनाएँ दी जाती थीं, फाँसी के तख्ते चरमराते थे और आग जलाई जाती थी।"

1606 में किंग्स लिन में हेनरी स्मिथ नामक एक किराने वाले की पत्नी पर मुकदमा चलाया गया, क्योंकि उसने एक नाविक को श्राप दिया था जिसने एक लड़के को मारा था, और अपने पड़ोसियों को श्राप दिया था क्योंकि वे अपने व्यापार में उससे अधिक समृद्ध थे। सबसे बेतुके सबूतों को सुनने के बाद उसे दोषी ठहराया गया और मौत की सजा सुनाई गई।

फाँसी पर लटकाए जाने पर उसने जादू टोने के विभिन्न कृत्यों को कबूल किया। इन चुड़ैल खोजने वालों में सबसे प्रसिद्ध एसेक्स में मैनिंगट्री के मैथ्यू हॉपकिंस थे। उन्होंने "चुड़ैल खोजने वाले जनरल" की उपाधि धारण की, और एक सहायक और एक महिला के साथ, जिसका कर्तव्य शैतान के निशानों के लिए महिला संदिग्धों की जाँच करना था, उन्होंने एसेक्स, ससेक्स, हंटिंगडन और नॉरफ़ॉक की काउंटियों की यात्रा की।

एक वर्ष में इस हत्यारे ने - बेहतर नाम के अभाव में - साठ लोगों की हत्या कर दी। उसका सामान्य परीक्षण तैराकी का था। आरोपी के हाथ और पैर एक साथ बंधे हुए थे। उसे एक चादर में लपेटा गया और एक तालाब में फेंक दिया गया।

अगर वह डूब जाती, जैसा कि अक्सर होता था, तो उसे निर्दोष माना जाता था, लेकिन अगर वह तैरती थी, तो उसे दोषी घोषित कर दिया जाता था और तुरंत उसे मार दिया जाता था। एक और परीक्षण था बिना किसी हिचकिचाहट या ठोकर के प्रभु की प्रार्थना को दोहराना, एक ऐसी चीज़ जो एक चुड़ैल के लिए असंभव मानी जाती है। एक अवसर पर उसे चर्च की बाइबिल के सामने तौला गया, अगर वह उससे ज़्यादा वज़नी होती तो उसे आज़ादी मिल जाती। यह आरोप लगाया जाता है, लेकिन निश्चितता के बिना, कि उसके ढोंग का पता चलने पर गुस्साई भीड़ ने उसे तैराकर उसकी अपनी परीक्षा में डाल दिया। लेकिन क्या वह डूबा या मार दिया गया, इस पर अधिकारी सहमत नहीं हैं।

176. विंडी हैट का ब्रियो**:** हेक्टर ऑफ़ बोएस के अनुसार, स्वीडन के राजा एरिक या हेनरी, जिनका उपनाम विंडी होई था, अपनी टोपी या कैप को अपने सिर पर घुमाकर हवा का रुख बदल सकते थे, ताकि वह उस राक्षस को दिखा सकें जिसके साथ वह गठबंधन में था कि वह हवा को किस दिशा में बहना चाहता है। राक्षस ने संकेत का इतनी तत्परता से पालन किया कि राजा की टोपी मौसम के लिए लोगों के काम आ सकती थी।

177. एस्किमो**:** एस्किमो का धर्म अभी भी काफी हद तक जादुई अवस्था में है। उनके जादूगर या औषधि-पुरुष, जिन्हें वे एंजेकोक कहते हैं, पुजारियों की तुलना में जादूगरों के चरित्र को अधिक दर्शाते हैं और वे शिकार अभियान पर जाने से

पहले या बीमारी से पीड़ित होने पर हमेशा उनसे सलाह लेते हैं। उन अवसरों पर किए जाने वाले समारोहों की प्रकृति का अनुमान कैप्टन लियोन के विवरण से लगाया जा सकता है, जिन्होंने एक अवसर पर एक जहाज के केबिन में टॉमगा या परिचित आत्मा को बुलाने के लिए टूलमैक नामक एक एंजेकोक को नियुक्त किया था।

178. इस्वरिटी मिसेज: एक अंग्रेजी माध्यम जिसने 1855 की शुरुआत में निजी सत्र दिए थे। इन सत्रों में उनके निजी मित्रों और उनके द्वारा पेश किए गए पूछताछकर्ताओं को प्रवेश दिया गया था। जब प्रार्थना की गई और रोशनी बंद हो गई तो आत्माएं रैप, टेबल-टिल्टिंग, रोशनी और आत्माओं की आवाज़ों के साथ खुद को प्रकट करती हैं। श्री मोरेल थियोबाल्ड, एक प्रमुख अध्यात्मवादी, श्री और श्रीमती एवरिटल के पड़ोसी और मित्र थे, और पहली बार उनके वाद्यवादन के माध्यम से इस विषय की ओर आकर्षित हुए थे।

179. फेयरफैक्स**,** एडवर्ड**:** सोलहवीं शताब्दी के एक अंग्रेजी कवि, डेमोनोलॉजी पर एक काम के लेखक, जिसमें उन्होंने जादूगरों के बारे में कुछ हद तक विश्वासपूर्वक बात की है।

180.परिचित **:** जादूगर, जादूगर या चुड़ैल की सेवा करने वाली आत्माएँ। यह विचार संभवतः बुतपरस्ती से उत्पन्न हुआ था (q.v.) खास तौर पर इसलिए क्योंकि कई परिचितों को जादूगर या जादूगर द्वारा पहनी जाने वाली अंगूठियों, लॉकेट या अन्य गहनों में रहने वाला माना जाता था। डेलरियो से हमें पता चलता है कि इन आत्माओं को यूनानियों द्वारा "पैरेड्री" कहा जाता था, क्योंकि वे हमेशा हाथ में रहती थीं; और लैटिन लोगों द्वारा, "फैमिलिएरेस", "मार्टिनेली" या "मैजिस्टेली" के अलावा, जिनके नामों के लिए उन्होंने कोई कारण नहीं बताया।

कॉर्नेलियस अग्रिप्पा की काली हिरणी आधुनिक समय की सबसे प्रसिद्ध परिचितों में से एक है। उनकी कहानी पॉलस जोवियस ("एलोगिया" सी.आई.) के अधिकार पर आधारित है और इसे थेवेट ने अपने हिस्ट, डेस होम्स प्लस इलस्ट्रेस एट स्कैवन्स, XVIII में कॉपी किया है। जोवियस ने बताया कि अग्रिप्पा के साथ हमेशा एक काले कुत्ते के रूप में शैतान रहता था, और जब उसने मृत्यु को निकट आते देखा, तो उसने जानवर की गर्दन से जादुई शिलालेखों में जड़े कीलों से सजे एक कॉलर को निकाला और उसे इन यादगार शब्दों के साथ विदा किया, "अबी पेर्डिता बेस्टिया क्यूए मी टोटर्न पेर्डिडिस्टी।" (दूर हो जाओ, शापित जानवर, जिसके माध्यम से मुझे अब नरक में डूबना होगा।) ऐसा कहा जाता है कि इस प्रकार संबोधित किया गया कुत्ता जल्दबाजी में साओन नदी के किनारे

भाग गया, जिसमें वह सिर के बल गिर गया, और उसके बाद कभी नहीं देखा गया।

ले लोयर कहते हैं: - "जिन राक्षसों को उन्होंने अंगूठियों और ताबीजों में कैद किया था, उनके बारे में सलामांका और टोलेडो के जादूगर और उनके गुरु पिकाट्रिक्स, साथ ही इटली में जो लोग इस तरह के सामान का व्यापार करते थे, वे यह कहने से बेहतर जानते थे कि वे उन लोगों को दिखाई दिए थे या नहीं जिन्होंने उन्हें अपने पास रखा था या खरीदा था। और सच में मैं उन लोगों से भयभीत हुए बिना नहीं बोल सकता जो उनके साथ इस तरह की अश्लील परिचितता का दिखावा करते हैं, यहां तक कि अंगूठी में बंद प्रत्येक विशेष राक्षस की प्रकृति के बारे में बात करते हुए भी; चाहे वह मरक्यूरियल, जोवियल, सैटर्निन, मार्शल या कामोद्दीपक आत्मा हो;

आवश्यकता पड़ने पर वह किस रूप में प्रकट होता है; रात में कितनी बार वह अपने स्वामी को जगाता है; चाहे वह स्वभाव से सौम्य हो या क्रूर; क्या उसे किसी दूसरे में स्थानांतरित किया जा सकता है; और यदि, एक बार वश में हो जाने पर, वह प्राकृतिक स्वभाव को बदल सकता है, ताकि लोगों को शनि के रंग का बना सके जोवियल, या जोवियल्स सैटर्नाइन, इत्यादि। इस शीर्षक के अंतर्गत संकलित की जाने वाली कहानियों का कोई अंत नहीं है, जिन पर यदि मैं विश्वास करूँ, जैसा कि हमारे समय के कुछ विद्वानों ने किया है, तो यह मेरे शोधपत्र को बहुत कम उपयोगी बना देगा।

इसलिए मैं कैम्ब्रे के जोएलियम द्वारा उल्लिखित क्रिस्टल रिंग के बारे में बात नहीं करूँगा, जिसमें एक छोटा बच्चा वह सब देख सकता था जो वे उससे माँगते थे, और जिसे अंततः धारक द्वारा तोड़ दिया गया था, क्योंकि वह ऐसा अवसर था जिससे शैतान ने उसे बहुत अधिक पीड़ा पहुँचाई थी। मैं उस राक्षस के बारे में तो बिल्कुल भी नहीं कहूँगा जो उसमें बंद था, जिससे उसे हर पाँच दिन में बात करनी चाहिए थी। अंत में, पोइटो के एक सज्जन के बारे में जो कुछ वे बताते हैं, उसका संक्षिप्त उल्लेख ही पर्याप्त होगा, जिसने एक युवा महिला के सीने से एक खास ताबीज निकाल लिया था जिसमें एक शैतान बंद था। "इसे आग में फेंक दिया।

181 . परिचित आत्माएं ऐसी होती हैं जिन्हें पवित्र छल्लों, शीशियों, बक्सों और ताबूतों में रखा जाता है; ऐसा नहीं है कि आत्माएं, जिनके पास शरीर नहीं होता, उनकी इच्छा के विरुद्ध वहां कैद की जा सकती हैं, बल्कि ऐसा लगता है कि वे अपनी स्वतंत्र इच्छा और स्वैच्छिक गतिविधियों से सीमित होती हैं।

182. एक विद्वान जर्मन : चिकित्सक ने एक उदाहरण दिया है जिसमें शैतान ने स्वयं ही अपने आपको एक अंगूठी में बंद कर लिया था, जिससे यह सिद्ध हो गया कि उसके साथ खिलवाड़ करना कितना खतरनाक है।

183.जादूगरों की चर्बी : एक समय ऐसा कहा जाता था कि शैतान अपने जादू-टोने के लिए मानव चर्बी का इस्तेमाल करता था। जादूगरनी सब्त के दिन जाने के लिए खुद पर इसी चर्बी का लेप करती थीं।

184.फॉक्स, सिस्टर्स: दो अमेरिकी लड़कियाँ जिन्होंने 1847 में अर्काडिया, न्यूयॉर्क में स्पिरिट-रैपिंग का अभ्यास शुरू किया। उनके कामों का विवरण इस पुस्तक में दिया गया है।

185.ऐसा प्रतीत होता है कि ड्यूक ऑफ ऑरलियन्स पर भी जादू-टोने का वही संदेह था जो उसके इतालवी साथी पर था। ड्यूक ऑफ बरगंडी के आदेश से उसकी हत्या के बाद - उन मुसीबतों की शुरुआत जिसने फ़्रैंक* के विनाश का कारण बना - बाद वाले ने अपराध के औचित्य के रूप में अपने शिकार के खिलाफ़ कई आरोप लगाए, और इनमें से एक यह था कि ड्यूक ऑफ ऑरलियन्स ने जादू-टोने के ज़रिए उसकी मौत का प्रयास किया था। इस कथन के अनुसार, उसने एक जादूगर - एक और धर्मत्यागी भिक्षु - को अपने माउंटजॉय के महल में बुलाया था, जहाँ उसे इन भयावह योजनाओं में नियोजित किया गया था। उसने सूर्योदय से पहले एक पड़ोसी पहाड़ पर अपने जादुई समारोह किए, जहाँ हरमन और एस्ट्रामोन नाम के दो राक्षस उसके सामने प्रकट हुए; और ये उसके इरादे को पूरा करने में उसके सक्रिय साधन बन गए।

186. फ्रायर रश (जर्मन रौश) : माना जाता है कि सत्रहवीं शताब्दी के भिक्षुओं और भिक्षुओं को उसी दुष्टता की स्थिति में रखने के लिए नरक क्षेत्रों से एक गृह-आत्मा भेजी गई थी, जिसमें वे तब मौजूद थे। उसे एक रसोइए के रूप में मठवासी घरों में प्रवेश मिला; संभवतः वह नशे की आत्मा का प्रतिनिधि है। एक जर्मन मिथक।

187.गैलिगल, लियोनोरा: मारेचल डी'एंकर कॉन्सिनी की पत्नी, जिसे 1617 में लोगों ने मार डाला था। उसे जादूगरनी माना जाता था और कहा जाता था कि उसने रानी को जादू-टोना किया था। उसके पास जादू के पात्रों से भरी तीन पुस्तकें, ताबीज और ताबीज मिले थे। उसके मुकदमे में यह स्थापित हुआ कि मारेचल और उसकी पत्नी ने जादूगरों, ज्योतिषियों और जादूगरों से सलाह ली थी और मोम की मूर्तियों का इस्तेमाल किया था और उन्होंने मुर्गों की बलि देने

के लिए नैन्सी से जादूगरों को बुलाया था, इसके अलावा उन्होंने कई अन्य जादू-टोने और अंधेरे के काम भी किए थे।

ऐसा कहा जाता है कि अपने स्वयं के अपराध स्वीकार करने पर उसे दोषी ठहराया गया और 1617 में उसका सिर काटकर जला दिया गया। लेकिन जब राष्ट्रपति कोर्टिन ने उससे पूछा कि उसने किस जादू से रानी को वश में किया है, तो उसने गर्व से उत्तर दिया: "मेरा जादू एक कमजोर दिमाग पर एक मजबूत दिमाग की शक्ति थी।"

188.गार्नेट**,** जूल्स**:** फ्रांस में जादू के इतिहास के लेखक, पेरिस, 181 8. इस जिज्ञासु कार्य में सब्बाथ का वर्णन, राक्षसों पर एक शोध प्रबंध, प्राचीन लोगों के बीच जादू से जुड़े अंधविश्वासों पर एक प्रवचन मिलेगा।

189. डोडल्लोन**,** पियरे**:** एक जादूगर, जिसे 1610 में खरगोश के रूप में रात में घूमने के कारण जला दिया गया था।

190.तूफानों को लाना हमेशा शैतान का काम : या उसके अनुयायियों की जादूगरी माना जाता था। उनके क्रोध में जंगलों या पवित्र शिखरों के ऊपर उसकी नारकीय रेलगाड़ी के कुचलने की आवाजें सुनी जा सकती थीं और यहां ओडिन और उसके सैनिकों में आए बदलाव को देखा जा सकता है। इसका एक और उदाहरण तब मिलता है जब मारे गए लोगों के चयनकर्ता वाल्किरी युद्ध के स्थानों पर सवार होकर अपने बुरे मिशनों पर झाड़ू की छड़ियों पर सवार होकर मध्ययुगीन चुड़ैलों में बदल गए हैं। आग के महल, जहां शैतान जंगली मौज-मस्ती करता है; बुरे ज्ञान से पुनर्जीवित लाशों का समूह; फाँसी पर लटके लोगों की आत्माओं से पुनर्जीवित अलौकिक वृद्धि, फाँसी और सूली के नीचे जीवन के लिए उछलती हुई; पहाड़ियों के छोटे आदमी, दुर्भावनापूर्ण आत्माएँ, अपनी धुंध की टोपी और अदृश्यता के लबादे के साथ; इनमें बुतपरस्त और ईसाई कहानियों का मिलन देखा जा सकता है, और जादू में उस भयानक विश्वास की उत्पत्ति, और उसके आतंक और मौत की श्रृंखला, जो मध्य युग के सबसे काले रहस्यों में से एक है।

जादू टोना को पहले समझदार और शिक्षित लोगों द्वारा भ्रम के रूप में उपहास किया गया था, और इसमें विश्वास करना वास्तव में कुछ पहले की परिषदों द्वारा निषिद्ध था। पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में इसने प्रमुखता प्राप्त की, इस तथ्य से इसमें बहुत मदद मिली कि जादू, टोना और जादू टोना अब चर्च की नज़र में एक अपराध बन गया था - एक ऐसा अपराध जिसके लिए ज़ब्ती और मौत की सज़ा दी जा सकती थी।

यह सच कहा जा सकता है कि पवित्र पिता और जिज्ञासुओं ने सबसे पहले काले जादू को व्यवस्थित और तैयार किया। ऐसे अधिकार के तहत, इसमें विश्वास पनपा, जिसने लोगों को या तो एक भयानक भय या अपवित्र जिज्ञासा से भर दिया।

किसी व्यक्ति पर जादू-टोना और जादू-टोना करने का आरोप लगाने के पीछे आत्मा की देखभाल के अलावा कई और कारण थे; व्यक्तिगत झगड़े, राजनीतिक दुश्मनी, धार्मिक मतभेद और राजकोष की ज़रूरतें इसे अपने कुख्यात उद्देश्यों को प्राप्त करने का एक अचूक और सुनिश्चित साधन मानती थीं। हालाँकि यह हो सकता है, आरोप ऊँचे और निचले स्तर पर लगाए गए, और इस तरह मौत ने भरपूर फ़सल काटी।

191. गेर्सन* जीन ओहमर्टीर दा **:** पेरिस विश्वविद्यालय के विद्वान और धर्मपरायण चांसलर, जिनकी मृत्यु 1429 में हुई। वे आत्माओं की परीक्षा के लेखक थे, जिसमें सच्चे और झूठे रहस्योद्घाटन में अंतर करने के नियम शामिल थे; और ज्योतिष सुधार के लेखक थे, जिसे बड़ी सफलता मिली।

192. बकरी**:** शैतान को अक्सर बकरी के आकार में दर्शाया जाता है, और इस तरह वह चुड़ैलों के सब्त की अध्यक्षता करता है। बकरी "न्याय के दिन पापी पुरुषों का प्रतीक" भी है।

193. भूत-प्रेत **:** एक आत्मा जो पहले घरों में छिपकर रहती थी। वे आम तौर पर शरारती और विचित्र किस्म के होते थे। जूनियस के अनुसार, होब भूत-प्रेत इसलिए कहलाते थे क्योंकि वे एक पैर पर उछलते थे।

194. ईश्वर**:** ईश्वर की प्राचीन जादुई अवधारणा के अनुसार ब्रह्मांड की योजना में बुराई अच्छाई का अपरिहार्य विपरीत और पूरक है। ईश्वर छाया के अस्तित्व की अनुमति देता है ताकि यह प्रकाश की शुद्धता को तीव्र कर सके। वास्तव में उसने दोनों को बनाया है और वे अविभाज्य हैं, एक दूसरे के लिए आवश्यक है और दूसरे के बिना समझ से परे है। अच्छाई का विचार ही अपना अर्थ खो देता है यदि इसे बुराई से अलग करके देखा जाए - गेब्रियल शैतान के लिए एक आवरण है और शैतान गेब्रियल के लिए।

आध्यात्मिक दुनिया की दोहरी प्रकृति जीवन के हर विभाग में व्याप्त है - भौतिक और आध्यात्मिक। यह प्रकाश और अंधकार, ठंड और गर्मी, सत्य और त्रुटि में व्यक्त की जाती है, संक्षेप में, किसी भी दो विरोधी शक्तियों की नानी

प्रकृति के महान प्राथमिक नियम को स्पष्ट करने के लिए काम करेगी - अर्थात सकारात्मक या अच्छे और नकारात्मक के बीच निरंतर संघर्ष।

195. गॉडफ्रे**:** प्रोवेंस का एक पादरी, जिसने कई महिलाओं को बहकाया था। उनमें से एक, एक नन, ने खुद को बचाने के लिए दावा किया कि गॉडफ्रे ने उसे मोहित किया था। गिरफ्तार और कैद किए जाने के बाद, उसे तब तक प्रताड़ित किया गया जब तक उसने यह स्वीकार नहीं कर लिया कि वह एक जादूगर है, और उसने अपनी सांसों और अन्य जादू के माध्यम से इस महिला और कई अन्य को भ्रष्ट कर दिया था। उसे अपनी अत्यधिक पीड़ा में, चुड़ैलों के सब्त के दिन अपनी उपस्थिति के बारे में बोलने और इसका एक लंबा विवरण देने के लिए भी प्रेरित किया गया था।

इन स्वीकारोक्ति के बाद, प्रकृति की पीड़ा से क्रूरतापूर्वक जबरन जबरन लिया गया था, ऐक्स की संसद ने 30 अप्रैल, 1611 को उसे जादू, टोना, अधर्म और घृणित वासना के दोषी के रूप में जिंदा जलाए जाने की निंदा की - एक ऐसी सजा जिसे बिना किसी सजा के निष्पादन में ले जाया गया।

196. "इन दुष्ट जिन्नों से छुटकारा **:** ` पाने के लिए उनके पास कोई रास्ता नहीं है, सिवाय इसके कि 'दिखाई देने वाले व्यक्ति' के शरीर को खोदा जाए और उस पर कुछ प्रार्थनाएँ दोहराकर उसे जला दिया जाए। ऐसा करने से शरीर राख में बदल जाता है और फिर दिखाई नहीं देता।» और वे इसे एक स्पष्ट मामले के रूप में देखते हैं, या तो ये शरारती और द्वेषपूर्ण शव अपनी मर्जी से अपनी कब्रों से बाहर आते हैं और उन लोगों की मौत का कारण बनते हैं जो उन्हें देखते हैं या उनसे बात करते हैं; या यह कि शैतान खुद इन शवों का इस्तेमाल मानव जाति को डराने और नष्ट करने के लिए करता है। उन्होंने अब तक कोई ऐसा उपाय नहीं खोजा है जो उन्हें इन विपत्तियों से छुटकारा दिला सके, इन शापित उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किए गए शवों को जलाने या क्षत-विक्षत करने से बेहतर है। कभी-कभी अंत को दिल को चीरकर और शवों को फिर से जलाने से पहले जमीन के ऊपर सड़ने देकर पूरा किया जाता है, या सिर को काटकर या मंदिरों में एक बड़ी कील ठोककर।

197. गुरूबू **:** चिली के अरूकेनियन लोगों में गुरूबू दुष्ट आत्माएं हैं, जो महान आत्मा, टोगिन और उसके साथियों को परेशान करने और परेशान करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देते हैं।

198. गुलेनफोर्ट**:** फादर एटीन बॉर्बन, एक डोमिनिकन, जिनकी मृत्यु 1262 में हुई थी, ने एक अजीब कहानी रिकॉर्ड में छोड़ी है। उन्होंने बताया कि जब वे

लियोन के सूबा में प्रचार कर रहे थे, तो कई महिलाएँ उनके पास आईं और कबूल किया कि वे अपने बच्चों को सेंट गुइनफोर्ट के पास ले गई हैं। यह जानने के लिए उत्सुक थीं कि यह किस तरह का संत हो सकता है, जिसके पंथ में स्वीकारोक्ति की आवश्यकता होती है।

फादर बॉर्बन ने मामले की जांच की और पाया कि गुइनफोर्ट एक कुत्ता था। यह वास्तव में वह कुत्ता था जिसने कुत्ते और साँप की प्रसिद्ध कहानी को जन्म दिया था, जिसमें एक कुत्ते को इस गलत संदेह के तहत मार दिया जाता है कि उसने एक बच्चे को मार दिया है, जिसे वास्तव में उसने एक साँप के हमले से बचाया था। यह कुत्ता-शहीद था, जिसके 'मंदिर' में महिलाएँ अपने बच्चों को लेकर आई थीं।

199. फ्लेबोंडला: परियों, चुड़ैलों, वीणाओं, रोषों और दुष्टों के भूतों की रानी। यह परिभाषा पियरे डेलांकर के कथन के अनुसार है, जो राक्षसों के अस्तित्व पर उनके काम में है।

200. हॉलेलनैटलॉन: संवेदी स्पष्टता की एक झूठी धारणा जो संगत संवेदी प्रभाव की उत्तेजना के बिना उत्पन्न होती है। इसमें यह भ्रम से भिन्न है, जो कि वास्तविक संवेदी धारणा की केवल गलत व्याख्या है। दृश्य और श्रवण संबंधी मतिभ्रम सबसे आम हैं, और विशेष रूप से पूर्व; लेकिन अन्य इंद्रियों का मतिभ्रम भी अनुभव किया जा सकता है, हालांकि यह इतनी आसानी से पहचाना नहीं जा सकता है। मानव आकृतियाँ और आवाज़ें सबसे अधिक बार मतिभ्रम का विषय बनती हैं, लेकिन कुछ प्रकारों में अन्य प्रकार की वस्तुएँ भी देखी जा सकती हैं - जैसे, उदाहरण के लिए, प्रलाप के चूहे और कीड़े। हालाँकि मतिभ्रम अक्सर विभिन्न मानसिक और शारीरिक बीमारियों से जुड़ा होता है, फिर भी यह तब भी अनायास हो सकता है जब एजेंट शरीर और मन की पूरी शक्ति से कोई विचलन नहीं दिखाता है, और इसे प्रेरित किया जा सकता है - यानी, सम्मोहन में - लगभग 90 प्रतिशत विषयों में।

स्वस्थ और पागल मतिभ्रम के बीच आवश्यक अंतर यह है कि पहले मामले में एजेंट प्रतिबिंब द्वारा छाप की व्यक्तिपरक प्रकृति को पहचान सकता है, भले ही इसमें वस्तुनिष्ठता का हर आभास हो; जबकि दूसरे मामले में रोगी को यह नहीं समझाया जा सकता कि दृश्य वास्तविक नहीं है।

201. हॉलेलनैटलॉन: संवेदी स्पष्टता की एक झूठी धारणा जो संगत संवेदी प्रभाव की उत्तेजना के बिना उत्पन्न होती है। इसमें यह भ्रम से भिन्न है, जो कि वास्तविक संवेदी धारणा की केवल गलत व्याख्या है। दृश्य और श्रवण संबंधी

मतिभ्रम सबसे आम हैं, और विशेष रूप से पूर्व; लेकिन अन्य इंद्रियों का मतिभ्रम भी अनुभव किया जा सकता है, हालांकि यह इतनी आसानी से पहचाना नहीं जा सकता है। मानव आकृतियाँ और आवाज़ें सबसे अधिक बार मतिभ्रम का विषय बनती हैं, लेकिन कुछ प्रकारों में अन्य प्रकार की वस्तुएँ भी देखी जा सकती हैं - जैसे, उदाहरण के लिए, प्रलाप के चूहे और कीड़े।

हालाँकि मतिभ्रम अक्सर विभिन्न मानसिक और शारीरिक बीमारियों से जुड़ा होता है, फिर भी यह तब भी अनायास हो सकता है जब एजेंट शरीर और मन की पूरी शक्ति से कोई विचलन नहीं दिखाता है, और इसे प्रेरित किया जा सकता है - यानी, सम्मोहन में - लगभग 90 प्रतिशत विषयों में। स्वस्थ और पागल मतिभ्रम के बीच मुख्य अंतर यह है कि पहले मामले में एजेंट प्रतिबिंब द्वारा, प्रभाव की व्यक्तिपरक प्रकृति को पहचान सकता है, भले ही उसमें वस्तुनिष्ठता की हर झलक हो; जबकि दूसरे मामले में रोगी को यह नहीं समझाया जा सकता कि दृश्य वास्तविक नहीं है।

मतिभ्रम छवियों के लिए एक समान व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिसे कई लोग क्रिस्टल में, या यहां तक कि पानी के एक बूँद में, या स्याही की एक बूंद में देखकर प्रेरित कर सकते हैं, और जिन्हें अक्सर सूचना देने और दृश्यों और लोगों को पुन: पेश करने के लिए घोषित किया जाता है, जिनके बारे में एजेंट को कोई जानकारी नहीं होती है। यह सुझाव दिया जाता है कि वे छवियां जो एजेंट की अचेतन चेतना में उत्पन्न नहीं होती हैं, उन्हें अन्य दिमागों से टेलीपैथिक रूप से प्राप्त किया जा सकता है। (देखें "क्रिस्टल-गेसिंग ।)

कोलेक्टिव$ मतिभ्रम एक ऐसा शब्द है जो मतिभ्रम के लिए प्रयोग किया जाता है जो कई लोगों द्वारा साझा किया जाता है। हालांकि, सुझाव (q.v.) या अधिक से अधिक, टेंस के अलावा किसी अन्य एजेंसी के संचालन का कोई सबूत नहीं है।

202. हंबरुआन**:** बोर्नियो के दयाक लोगों में हंबरुआन या जीवित व्यक्ति की आत्मा अपनी इच्छा से शरीर छोड़ सकती है और जहाँ चाहे वहाँ जा सकती है; हालाँकि, यह बुरी आत्माओं द्वारा कब्जा किए जाने के लिए उत्तरदायी है। यदि ऐसा होता है, तो व्यक्ति बीमार पड़ जाता है और यदि उसकी आत्मा को जल्दी से मुक्त नहीं किया जाता है, तो वह मर जाता है।

203. हठ योग**:** योग अभ्यास का सबसे प्रारंभिक और इसलिए सबसे सरल रूप। आत्माराम स्वामी की हठ योग प्रदीपिका का अंग्रेजी अनुवाद 1893 में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में चार अध्याय हैं: पहला अध्याय परिवेश, आचरण, आसन आदि के बारे में सलाह देता है; दूसरा अध्याय श्वास अभ्यास, तैयारी,

शुद्धि से संबंधित है; तीसरा अध्याय दस मुद्राएँ देता है जो चमत्कारी शक्तियाँ प्रदान करती हैं; और चौथा एक प्रकार का पूरक है, और योग अभ्यास के परिणामों से संबंधित है। योग के फल विस्तृत हैं, और बहुत सर्वज्ञ चरित्र के हैं।

204. प्रेतवाधित घर: कुछ समय पहले कई दैनिक समाचार पत्रों में लगातार कई सप्ताह तक एक विज्ञापन छपा था, जिसमें "बेकिंगटन कैसल के नाम से प्रसिद्ध एक प्राचीन गोथिक हवेली, बाथ से दस मील और फ्रोम से दो मील दूर" की बिक्री की पेशकश की गई थी; और इस विज्ञापन के लेखक ने बेकिंगटन के आसपास के शानदार दृश्यों और घर की दुर्लभ स्थापत्य कला की सुंदरता का वर्णन करने के बाद कहा कि यह स्थान अधिक वांछनीय है क्योंकि इसके बारे में बताया गया है कि यह प्रेतवाधित है।

ऐसा प्रतीत होता है कि शाही महल, जिनकी आजकल कड़ी निगरानी और सुरक्षा की जाती है, और हमेशा की तरह, ऐसे निवासियों से पूरी तरह वंचित नहीं हैं। एक किंवदंती के अनुसार विंडसर कैसल में सर जॉर्ज विलियर्स का भूत अक्सर आता है, और इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि एक बार, चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में, यह भूत राजा के एक सज्जन को दिखाई दिया और उसे बताया कि बकिंघम के ड्यूक को जल्द ही एक हत्यारे के हाथों मार दिया जाएगा - एक भविष्यवाणी जो जल्द ही पूरी हो गई, जैसा कि लेस ट्रोइस मॉमस्केटेयर्स के सभी पाठकों को निस्संदेह याद होगा, यह घटना उस अमर कहानी में शामिल है।

फिर हैकवुड हाउस में, बेसिंग स्टोक के पास, एक कमरा है जिसमें कोई भी सोने की हिम्मत नहीं करता, सभी को डर है कि * 4 ग्रे महिला "हर रात वहाँ दिखाई देती है; जबकि कोल्ने के पास वायकोलर हॉल में एक भूत सवार है जो साल में एक बार इस जगह पर आता है, और बगीचे में पूरी गति से सवारी करता है। डिल्स्टन, टाइनसाइड से जुड़ी किंवदंती बहुत अलग है, जहाँ एक पुरानी महिला विंडरमेयर समय-समय पर दिखाई देती है, और अपने दुर्भाग्यपूर्ण पति के लिए जोर से विलाप करती है, जिसे 1715 के जैकोबाइट विद्रोह में अपने हिस्से के लिए निष्पादित किया गया था; जबकि ब्लैकबर्न के सैल्म्सबरी हॉल में एक और तरह का भूत है, पड़ोस के लोग पुष्टि करते हैं कि समय-समय पर वे एक अजीब महिला और उसके शूरवीर को हॉल के मैदान में घूमते हुए देखते हैं, जो रेशमी व्यंग में लिप्त हैं।

शायद यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि इस विशेष प्रकृति के भूत उल्लेखनीय रूप से आम हैं, और लगभग हर काउंटी की आध्यात्मिक विद्या में मुख्य रूप से शामिल हैं; लेकिन अधिक भयानक प्रेत भी प्रबल हैं, और इनमें से एक है एमी रॉब्सर्ट का भूत, जो अभी भी ऑक्सफ़ोर्डशायर में कम्नोर की जागीर में भटकता

है। क्योंकि यह ध्यान में रखना चाहिए कि एमी एक वास्तविक महिला थी, और सर वाल्टर स्कॉट के दिमाग की महज रचना नहीं थी। उसकी शादी 1550 में लीसेस्टर के अर्ल से हुई थी, और उसकी दुखद मौत का आरोप आम तौर पर उसी पर लगाया जाता है; लेकिन एक परंपरा मौजूद है कि रानी एलिजाबेथ वास्तव में जिम्मेदार व्यक्ति थी, और एमी के एक प्रामाणिक चित्र को याद करते हुए, जो उसे एक आकर्षक और असाधारण सुंदरता वाली महिला बताता है, यह विश्वास करना आसान है कि बदकिस्मत रानी उससे नफरत करती थी और उसे रास्ते से हटाने के लिए सख्त कदम उठाए थे।

कई पादरी एक पादरी के भूत में आनन्दित होते हैं, जिसकी पहले उसके क्रोधित पैरिशियन द्वारा हत्या कर दी गई थी; और यहाँ कई भूतिया मठ और कॉन्वेंट हैं, जबकि यॉर्क के होली ट्रिनिटी चर्च में एक भूतिया नन सर्दियों की शाम को कभी-कभी दिखाई देती है और पैटरनोस्टर्स का उच्चारण करते हुए घूमती है। उसके बारे में कहानी यह है कि एक बार गृहयुद्ध के दौरान सैनिकों के एक दल ने इस इमारत को लूटने का मन बनाया और इस इरादे से वहाँ पहुँचने पर उनका सामना एक मठाधीश से हुआ जिसने उन्हें चेतावनी दी कि अगर वे कोई अपवित्र कार्य करेंगे तो उन्हें ईश्वरीय प्रकोप का सामना करना पड़ेगा।

उन्होंने उसकी धर्मपरायणता पर हँसा और यह कभी नहीं सोचा कि वह कोई प्रतिरोध करेगी, उन्होंने इमारत में घुसने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही उन्होंने हमला शुरू किया, उनके प्रतिद्वंद्वी ने उनमें से एक से तलवार छीन ली और बहादुरी से बचाव किया। एक भयंकर युद्ध हुआ, मठाधीश ने खुद को एक सच्ची वीरांगना साबित किया और अपने कई दुश्मनों को मार डाला; फिर भी अंततः उसने अपनी जान गँवा दी, और उसका भूत ही है जो आज भी उस चर्च में आता-जाता है जिसे वह बचाना चाहती थी।

इंग्लैंड में रोमांस से भरपूर शेरवुड फ़ॉरेस्ट जैसे कुछ ही हिस्से हैं, जो कभी रॉबिन हुड के कारनामों का स्थल हुआ करता था; और इस क्षेत्र में कम से कम एक जगह है जहाँ कई भूतों का निवास है, न्यूस्टेड एबे, जो लॉर्ड बायरन के पूर्वजों का निवास स्थान है। वहाँ के बगीचे का एक हिस्सा लोकप्रिय रूप से 'शैतान की लकड़ी' के नाम से जाना जाता है, यह नाम इस बात की ओर इशारा करता है कि इस जगह पर कभी दुष्ट शैतान के गुर्गे रहते थे, जबकि घर के एक कमरे में एक निश्चित ** सर जॉन बायरन, ग्रे दाढ़ी वाले छोटे, का भूत रहता है, जिसने संभवतः किसी अजीबोगरीब तरीके से अपने दिन समाप्त किए।

उसका चित्र भोजन कक्ष में हॉल के ऊपर लटका हुआ है, और पिछली सदी के मध्य में न्यूस्टेड में रहने वाली एक युवा महिला ने दृढ़ता से दावा किया कि एक

बार जब वह इस कमरे में दाखिल हुई थी, तो उसने पाया कि चित्र गायब था, और उसका विषय अग्नि के पास बैठा एक ब्लैक-लेटर फोलियो पढ़ रहा था! कवि बायरन खुद भी अपने घर के इर्द-गिर्द फैली सभी भूतिया परंपराओं को बहुत प्यार से संजोते थे और यह दर्ज है कि जब उन्हें पता चला कि घर के नीचे पत्थर के ताबूत हैं, तो उन्होंने तुरंत उनमें से एक को खोदा और फिर खोला।

उन्होंने इसकी कुछ भयानक सामग्री का इस्तेमाल अपनी लाइब्रेरी को "सजाने" के लिए किया, जबकि उन्होंने ताबूत को बड़े हॉल में रख दिया, जिसके बाद से नौकर रात में वहाँ से गुजरने से डरते थे। उन्होंने अपनी एक कविता में न्यूस्टेड की अलौकिक विद्या का भी इस्तेमाल किया और इससे हमें पता चलता है कि जब भी कोई महत्वपूर्ण घटना इसके मालिकों के साथ घटित होती थी, तो एक भूत भिक्षु हवेली में परेड करता था।

205. इंग्लैंड से आयरलैंड की ओर बढ़ते हुए हमें कई भूतिया घर मिलते हैं; उदाहरण के लिए, एंट्रिम में डनसेवेरिक, जहाँ एक भूतपूर्व सरदार की आत्मा अभी भी रहती है, जो अपने जीवनकाल में इतना दुष्ट था कि उसके लिए नरक के द्वार भी बंद हो गए हैं। और आयरलैंड से स्कॉटलैंड की ओर बढ़ते हुए हमें कई भूतिया इमारतें भी मिलती हैं, खास तौर पर होलीरूड पैलेस और हर्मिटेज और ग्लैमिस के महल। यह मारे गए रिजियो का भूत है जो होलीरूड में अक्सर आता है, फिर भी यह जोड़ा जाना चाहिए कि यह दृश्य आजकल शायद ही कभी देखा जाता है; और शायद नियति ने, यह जानते हुए कि इतालवी गायक के साथ शर्मनाक व्यवहार किया गया था, अंततः उसकी आत्मा को उदास एडिनबर्ग पैलेस की तुलना में अधिक आरामदायक विश्राम-स्थल प्रदान किया हो। लेकिन इसके विपरीत, हर्मिटेज का भूत अभी भी व्यायाम का काफी आदी है, और सच में उसकी कहानी उसे दुर्लभ गतिविधि और महत्वाकांक्षा वाले व्यक्ति के रूप में चिह्नित करती है। लॉर्ड
सौलिस उसका नाम था, और संभवतः फ़ॉस्टस के कारनामों के बारे में सुनने के बाद, उसने कसम खाई कि वह भी शैतान को भगा देगा, जो उदारता से समय से पहले प्रकट हो गया था। ** धरती पर तुम्हारा बहुत बड़ा अधिकार होगा," दुष्ट ने सोलिस से कहा "यदि तुम इसके बदले में अपनी आत्मा का आदान-प्रदान करोगे"; इसलिए उसके स्वामी ने अपने जीवन के रक्त से आवश्यक समझौते पर हस्ताक्षर किए, और उसके बाद से उसके दिन हर संभव आनंद के आनंद में व्यतीत होने लगे।

हालांकि, जल्द ही उसे लगा कि उसका अंत निकट है, और उसने अपने आस-पास के कुछ जागीरदारों को बुलाकर उन्हें मृत्यु के बाद उसके भयानक भाग्य के बारे में बताया। वे स्तब्ध रह गए, लेकिन सोलिस के चले जाने के तुरंत

बाद उनके मन में यह विचार आया कि यदि वे उसके नश्वर अवशेषों को पूरी तरह से नष्ट कर दें, तो वे उसकी आत्मा को बेलज़ेबब के चंगुल से बचा सकते हैं। इसलिए शव को सीसे में लपेटकर उन्होंने उसे जलती हुई भट्टी में फेंक दिया, और स्पष्ट रूप से इस दाह संस्कार ने उसके स्वामी को अधोलोक से बचा लिया, क्योंकि यदि वह वहाँ गया होता तो उसकी आत्मा अभी भी हर्मिटेज में सक्रिय नहीं होती।

अर्ल ऑफ़ द अर्ल की पारिवारिक सीट ग्लैमिस कैसल से जुड़ी भूत-कहानी स्ट्रैथमोर, अलौकिक कहानियों की श्रेणी और फ़ाइल से काफी अलग है, और इनमें से किसी से भी संबंधित सत्यता का अधिक नग्न आभास देता है। यह सर्वविदित बात है कि ग्लैमिस में एक गुप्त कक्ष है, एक कक्ष जो स्ट्रैथमोर परिवार के कुछ सदस्यों को ही ज्ञात एक रहस्य को संजोए हुए है, और तीन या चार पीढ़ियों पहले एक महिला, जो ग्लैमिस में एक आगंतुक के रूप में रह रही थी, ने प्रतिज्ञा की कि वह पहेली को हल करेगी।

उसकी पहली कठिनाई वास्तविक कमरे का पता लगाना था, लेकिन एक दोपहर, जब बाकी सभी घर के लोग बाहर जा रहे थे, उसने सिरदर्द का बहाना किया और इस तरह पूरी तरह से अकेले रहने की कोशिश की। उसका अगला कदम एक कमरे से दूसरे कमरे में जाना था, प्रत्येक की खिड़की में एक रूमाल रखना, और ऐसा करने के बाद वह बाहर गई और महल के चारों ओर घूमने लगी ताकि देख सके कि कोई कमरा उसकी खोज से बच गया है या नहीं। बहुत जल्द ही उसने एक खिड़की देखी जिसमें कोई हैंडकर चीफ नहीं था, इसलिए वह फिर से घर के अंदर गई, यह सोचकर कि उसकी खोज को पुरस्कृत किया जाने वाला था। लेकिन उसने जितना भी प्रयास किया, वह लापता कमरे को नहीं ढूंढ पाई; और जब वह खोज रही थी, तो अन्य मेहमान घर लौट आए, उनके साथ तत्कालीन लॉर्ड स्ट्रैथमोर भी थे। जो कुछ हो रहा था, उसे जानकर वह बहुत क्रोधित हुआ, और उस रात महल के एक लंबे गलियारे में चीखें सुनाई दीं।

मेहमान यह पता लगाने के लिए अपने कमरों से बाहर भागे कि क्या गड़बड़ है, और धुंधली रोशनी में उन्होंने एक अमानवीय सिर वाले एक जिज्ञासु प्राणी को देखा, जो एक वृद्ध पुरुष सेवक से कुश्ती कर रहा था, जिसने अंततः माँ को ले जाने की योजना बनाई। कहानी यहीं समाप्त होती है, लेकिन जैसा कि पहले कहा गया है, इसमें सच्चाई का आभास होता है, संभावना यह है कि, ग्लेरिस महल परिवार का कोई वंशज पागल या भयानक रूप से विकृत था, और तदनुसार उसे एक ऐसे कमरे में कैद किया गया था, जहाँ पहुँचना मुश्किल और गुप्त था।

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अनगिनत अन्य भूत-कहानियाँ इस तरह के किसी न किसी आधार पर टिकी हुई हैं, क्योंकि, जबकि सार्वजनिक रूप से शैतानों को दिखाने की विचलित करने वाली प्रथा तुलनात्मक रूप से नई है, शैतान खुद दुनिया की सबसे प्राचीन संस्थाओं में से हैं, शायद भूतों और दर्शनों जितनी ही प्राचीन। इस जगह पर कम प्रसिद्ध प्रेतवाधित आवासों की संख्या का संकेत देना असंभव है, एक ऐसा संकेत जिस पर उनके मालिक सख्त आपत्ति कर सकते हैं।

206. नरक: इस शब्द की व्युत्पत्ति संभवतः मूल शब्द हेलन से हुई है जिसका अर्थ है ढकना, जो भूमिगत या छिपे हुए स्थान को दर्शाता है। वार्ड की पौराणिक कथाओं में हम इसे हेट के रूप में पाते हैं, "केवल मृतकों का स्थान, किसी भी तरह से दंड का स्थान नहीं। इस तरह की अवधारणा के पीछे विकास की कमोबेश स्पष्ट श्रृंखला है। दंड के स्थान का ईसाई विचार सीधे यहूदी अवधारणा शेओल से प्रभावित था, जिसने बदले में बेबीलोनियन स्रोतों से आकार लिया। यह विचार वास्तव में दंड के स्थान के रूप में कब बनना शुरू हुआ, यह स्पष्ट नहीं है, क्योंकि प्राचीन सेमाइट्स, मिस्रियों और यूनानियों के बीच, हम अंडरवर्ल्ड को केवल मृतकों का स्थान मानते हैं।

इस प्रकार मिस्र में हम एमेंटी को स्पष्ट रूप से मृतकों का स्थान पाते हैं, जिसमें जीवन के कार्य अधिकांश भाग के लिए दोहराए जाते हैं। यह बर्बर लोगों के बीच भी मामला है, जो केवल मृतकों की भूमि को मानव अस्तित्व का विस्तार मानते हैं, जिसमें मनुष्य कमोबेश छायादार जीवन जीता था। बर्बर लोग मृत्यु के बाद दंड में विश्वास नहीं करते हैं, और मानते हैं कि नैतिक नियम का कोई भी उल्लंघन संक्षेप में दंडनीय है। इस जीवन में निपटा जाता है। यह केवल तब होता है जब एक उच्च नैतिक संहिता टोटेमिक या इसी तरह के नियम से उभरती है कि दंड के स्थान का विचार पुजारी-कला द्वारा आविष्कार किया जाता है।

हालांकि, यह हमेशा ऐसा नहीं होता है: 'ग्रीस, रोम और स्कैंडिनेविया में, हम पाते हैं कि हेडिस को केवल मृतकों के स्थान के रूप में देखा जाता था, जहां, छायादार भूतों की तरह, मानव जाति इधर-उधर उड़ती रहती थी, प्रेत की तरह बड़बड़ाती और चीखती थी। यूनानियों के अनुसार, हेडिस जमीन की सतह से केवल बारह फीट नीचे था, इसलिए ऑर्फियस को एक बार फिर पृथ्वी पर पहुंचने के लिए भूमिगत क्षेत्रों से बहुत लंबी यात्रा नहीं करनी पड़ी होगी।

नरक को आम तौर पर एक संप्रभुता के रूप में माना जाता है, एक ऐसा स्थान जो निश्चित रूप से एक सामान्य तरीके से एक सम्राट द्वारा शासित होता है जिसे खगोलीय शक्तियों द्वारा इस उद्देश्य के लिए वहां रखा गया था। मध्य

अमेरिका में, हम किचे हेड्स में जुड़वाँ शासक पाते हैं, ज़िबाल्बा, जिनके नाम हुन-केम और वुकुब-केम दिए गए हैं। ये बाद वाले सक्रिय रूप से घातक हैं, मैक्सिकन के मिक्टलान के विपरीत, जिसका साम्राज्य आम लोगों के लिए था। ये केवल चार साल तक ही वहाँ रह सके, जिसके बाद वे अंततः पूरी तरह से विलुप्त हो गए। मैक्सिकन मिक्टलान को एक विशाल राक्षस के रूप में दर्शाते हैं जिसका मुँह खुला रहता है और जो अपने शिकार को खाने के लिए तैयार रहता है, और यह हम बेबीलोनियन टियाविथ में समानांतर पाते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सभी पौराणिक कथाओं में एक निश्चित चरण में, मृतकों के स्थान की अवधारणा को दंड के स्थान के विचार के साथ भ्रमित किया गया था। यूनानियों ने आम तौर पर मानवता के दुखद अंत पर शोक व्यक्त किया, जिसे मृत्यु के बाद हमेशा के लिए अर्ध-अंधकार में रहने के लिए अभिशप्त किया गया था। पुरस्कार के स्थान के अस्तित्व की संभावना उन्हें कभी पसंद नहीं आई। जीवंत यूनानी मन के लिए जीवन पूरी तरह से और पूरी तरह से अधिक ईमानदार सेमिटिक विवेक था, जिसने निकट पूर्व में दंड के स्थान की अवधारणा को विकसित किया।

इस प्रकार, मृतकों के स्थान के रूप में माना जाने वाला शेओल, आग का घर बन गया, जिसमें दुष्ट और अन्यायी लोगों को उनके पापों के लिए धकेल दिया जाता था। यह निश्चित रूप से बेबीलोनियन और मिस्र के आदर्शों द्वारा पूर्वाभासित था, क्योंकि हम पाते हैं कि मिस्रवासी औचित्य की परीक्षा को आसानी से अस्वीकार करने में असमर्थ थे; अस्वीकृति के विचार से जल्द ही सक्रिय दंड का विचार उभरेगा। नरक की सेमिटिक अवधारणा को संभवतः यूरोप में ईसाई धर्म के आगमन पर फिर से मजबूत किया गया था, और यूरोप की अन्य पौराणिक कथाओं से संबंधित मृतकों के स्थानों की अवधारणा द्वारा रंग दिया गया था। इस प्रकार स्कैंडिनेवियाई विचार, जो हमारे सैक्सन पूर्वजों का भी था, निस्संदेह दंड के स्थान की अंग्रेजी अवधारणा को रंग दिया।

207.ह्यूएट, **पियरे-डैनियल:** एवरेन्चेस के एक प्रसिद्ध बिशप, जिनकी मृत्यु 1721 में हुई। उनके संस्मरणों में ग्रीक द्वीपसमूह के पिशाचों से संबंधित कई रोचक अंश मिलते हैं। •• वे कहते हैं कि "ब्रुकोलैग्नेस या द्वीपसमूह के पिशाचों के बारे में कई अजीब बातें कही जाती हैं। उस देश में कहा जाता है कि यदि कोई दुष्ट जीवन जीता है और पाप में मरता है, तो वह मृत्यु के बाद फिर से प्रकट होगा जैसा कि वह अपने जीवनकाल में करता था, और ऐसा व्यक्ति जीवित लोगों के बीच बहुत भय पैदा करेगा।" ह्यूएट का मानना था कि ऐसे लोगों के

शरीर शैतान की शक्ति के लिए छोड़ दिए जाते हैं, जो मानव जाति के उत्पीड़न के लिए उनकी आत्मा को अपने भीतर रखता है।

फादर रिचर्ड, एक जेसुइट, जो इन द्वीपों में एक मिशन पर कार्यरत थे, ने ह्यूएट को पिशाचवाद के कई मामलों का विवरण प्रदान किया। सेंट एरिनी द्वीप में, प्राचीन लोगों के थेरा ने पिशाचवाद के इतिहास में सबसे महान अध्यायों में से एक को अंजाम दिया। उनका कहना है कि इन लोगों को पिशाचों द्वारा सताया जाता था, कि वे उन्हें जलाने के उद्देश्य से लगातार लाशों को खोदते रहते थे। ह्यूट कहते हैं कि यह सबूत विश्वसनीय है क्योंकि यह एक ऐसे गवाह से निकला है जो बेदाग ईमानदारी से भरा हुआ है, जिसने जो लिखा है उसका प्रत्यक्ष प्रदर्शन किया है।

वे आगे कहते हैं कि इन द्वीपों के निवासी किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके पैर, हाथ, नाक और कान काट देते हैं और वे इस कृत्य को एक्रोटेरियासिन कहते हैं। वे इन सभी को मृतक की कोहनी के चारों ओर लटका देते हैं। यह उल्लेखनीय है कि बिशप को लगता है कि आधुनिक यूनानियों ने शास्त्रीय समय में अपने पूर्वजों से शवों को जलाने की प्रथा विरासत में ली होगी और वे कल्पना करते हैं कि जब तक शव को आग में नहीं डाला जाता, मृतक की आत्मा के साथ सब ठीक नहीं हो सकता।

208.इम्हेटेप**:** एक मिस्री देवता, पटा और नट का पुत्र, जिसे भूत भगाने की महान शक्तियाँ दी गई थीं। भूत-प्रेत के कब्जे के मामलों में अक्सर उसकी अपील की जाती थी।

209.भारत**:** रहस्यमय प्रणालियाँ। - भारत की विभिन्न धार्मिक प्रणालियों का विवरण देना इस तरह के कार्य के दायरे से बाहर होगा, और हमें इन प्रणालियों के इर्द-गिर्द मौजूद रहस्यवाद और दानव विद्या के वर्णन और साम्राज्य के मूल लोगों के जादू और टोना-टोटके की रूपरेखा तक ही खुद को सीमित रखना होगा।

हिंदू धर्म - यह कहा जा सकता है कि हिंदुओं का रहस्यवाद वेदों के विस्तृत और व्यावहारिक अनुष्ठान के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी। यदि इसकी प्रवृत्ति को संक्षेप में कहा जाए तो यह उचित ही कहा जा सकता है कि यह निःस्वार्थता का प्रबल समर्थक है; यह विषय और वस्तु, उपासक और उपासना की एक सर्वेश्वरवादी पहचान है; इसका उद्देश्य अनंत में अंतिम लीन होना है; यह पूर्ण निष्क्रियता, सूक्ष्मतम आत्म-परीक्षण, भौतिक शक्तियों की समाप्ति को

सिखाता है; तथा रहस्यवादी सिद्ध के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में विश्वास करता है।

भारतीय ब्रह्मवादियों के लिए केवल एक परम सत्ता, एक वास्तविकता है। सच है कि अहं अद्वितीयम् "द्वितीय रहित एक" का सर्वेश्वरवादी सिद्धांत देवताओं के असंख्य पंथों, बड़े और छोटे, और एक समृद्ध दानवशास्त्र को स्थापित करता है; लेकिन यह समझना होगा कि ये केवल आत्मा के भ्रम हैं, वास्तविकता नहीं। आत्मा के पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने पर, उसके भ्रम पूरी तरह से दूर हो जाते हैं, लेकिन सामान्य मनुष्य के लिए निरपेक्ष सत्ता की अवैयक्तिकता बेकार है।

उसे अवैयक्तिक निरपेक्ष और उसके भौतिक स्व के बीच की खाई को पाटने के लिए एक प्रतीकात्मक देवता की आवश्यकता होती है, इसलिए हिंदू धर्म के कई देवता हैं जिन्हें दीक्षित लोग केवल सर्वोच्च आत्मा की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं। इस तरह की मूर्तिपूजा के सबसे असभ्य रूप भी उच्चतर अर्थ रखते हैं। जैसा कि सर अल्फ्रेड लायल कहते हैं: "यह (ब्राह्मणवाद) सभी पूजाओं को एक ही आध्यात्मिक सत्य के बाहरी दृश्य संकेत के रूप में मानता है, और यह दिखाने के लिए तैयार है कि प्रत्येक विशेष छवि या अनुष्ठान सार्वभौमिक दिव्यता के किसी पहलू का प्रतीक है। प्राचीन काल के मूर्तिपूजकों की तरह हिंदू भी प्राकृतिक वस्तुओं और शक्तियों की पूजा करते हैं, जैसे कि पहाड़, नदी या जानवर।

ब्राह्मण प्रकृति को दिव्य ऊर्जा का वस्त्र या आवरण मानते हैं जो हर उस चीज को प्रेरित करती है जो मनुष्य की समझ से परे है। प्राचीन काल से ही भारत में तपस्वी जीवन को देवता के साथ संवाद के लिए सबसे सच्ची तैयारी माना जाता रहा है। तप बहुत प्रचलित है, खासकर शिव के पंथ के संबंध में, जिन्हें इस वर्ग का आदर्श माना जाता है। योगी या जोगी (योगी दर्शन के शिष्य), मानसिक अमूर्तता का अभ्यास करते हैं, और माना जाता है कि वे अलौकिक शक्तियों को प्राप्त करते हैं। उनकी तप साधना पागलपन या मानसिक शून्यता है, और उनकी तथाकथित अलौकिक शक्तियाँ अधिकतर भविष्यसूचक होती हैं, या बहुत से मामलों में शुद्ध जादू और जादू होती हैं।

परम हंस, अर्थात् "सर्वोच्च हंस" विश्व-आत्मा के समान होने का दावा करते हैं, और उनका ब्रह्म के ध्यान के अलावा कोई व्यवसाय नहीं है। कहा जाता है कि वे सुख या दुःख के प्रति समान रूप से उदासीन होते हैं, गर्मी या सर्दी के प्रति असंवेदनशील होते हैं, और तृप्ति या अभाव में असमर्थ होते हैं। संन्यासी वे होते हैं जो सांसारिक मामलों का त्याग करते हैं: वे भिक्षुओं के चरित्र के होते हैं, और सामान्य नियम के रूप में बेहद गंदे होते हैं।

दंडी या कर्मचारी शिव के भैरव रूप के उपासक होते हैं। श्री जे. सी. ओवेन ने अपनी पुस्तक 'मिस्टिक्स, एसेटिक्स एंड सेक्ट्स ऑफ इंडिया' में इन साधुओं या पवित्र पुरुषों के बारे में कहा है: "साधुवाद चाहे प्राकृतिक घटनाओं पर दूरगामी शक्तियों के अधिग्रहण के लिए तप की प्रभावकारिता के विशिष्ट विचार को कायम रखता हो या दिव्य सत्ता के साथ परमानंदपूर्ण संवाद के अवर्णनीय आनंद की तैयारी के रूप में दुनिया से अलगाव की अपरिहार्यता के विश्वास की गवाही देता हो, निस्संदेह लोगों की आंखों के सामने सर्वोच्च आदर्श के रूप में पवित्रता और संयम का जीवन और मानवीय मामलों की दुनिया की अवमानना रखने की प्रवृत्ति रखता है।

इसने आम लोगों के बीच समुदाय के अधिक समृद्ध सदस्यों के दान पर गरीबों के अधिकारों और दावों की भावना को भी बनाए रखा है। इसके अलावा, भारत में उत्पन्न हुए स्वतंत्र संप्रदायों की बहुलता द्वारा साधुवाद ने सहिष्णुता की भावना को जन्म दिया है और उसका समर्थन किया है, जो सबसे सतही पर्यवेक्षक की नजर से बच नहीं सकता है। हिंदू धर्म की गूढ़ शाखाओं में से एक शाक्त पंथ है। शाक्त लोग शक्ति या स्त्री सिद्धांत के उपासक हैं, जो एक सृजनात्मक और प्रजनन एजेंसी है। प्रत्येक प्रमुख देवता की अपनी शक्ति होती है, जिसके माध्यम से उसके सृजनात्मक कार्य संपन्न होते हैं, इसलिए शाक्त उपासक सभी संप्रदायों से लिए गए हैं।

लेकिन मुख्य रूप से शिव के पंथ के संबंध में ही शाक्त पूजा का अभ्यास किया जाता है। इसका मुख्य स्थान भारत का हिस्सा है - बंगाल, बिहार और असम। यह दो अलग-अलग समूहों में विभाजित है। मूल स्वयंभू देवताओं को खुद को पुरुष और महिला ऊर्जाओं में विभाजित करने के लिए माना जाता था, जिसमें पुरुष आधा दाहिना हाथ और महिला आधा बायाँ हाथ होता है। इस अवधारणा से हमें "दाहिने हाथ" पर्यवेक्षकों और "बाएँ हाथ" पर्यवेक्षकों के दो समूह मिलते हैं। तानिरस या रहस्यमय लेखन में, शिव अपनी पत्नी पार्वती द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर में शाक्त गुप्तविद्या के रहस्यों को एक वार्तालाप की प्रकृति में प्रकट करते हैं। दाएं हाथ के उपासक अब तक सबसे अधिक संख्या में हैं। अनुष्ठानों के प्रदर्शन में सख्त गोपनीयता का पालन किया जाता है, और केवल एक छोटी जाति, कनलस, तंत्र के रहस्यवादी और अपमानित अनुष्ठानों को पूरा करती है।

210. ब्राह्मणवाद**:** ब्राह्मणवाद एक ऐसी व्यवस्था है जिसकी शुरुआत हिंदुओं की पुरोहित जाति ब्राह्मणों ने अपेक्षाकृत बहुत पहले की थी। यह भारत का सबसे बेहतरीन रहस्यवादी धर्म है और इसके लोगों की पुरातन मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह बताता है कि चेतन प्रकृति के असंख्य अस्तित्व एक

शाश्वत आत्मा की कई अभिव्यक्तियाँ हैं, जिसकी ओर वे अपने अंतिम लक्ष्य परम आनंद के रूप में प्रवृत्त होते हैं। मनुष्य का उद्देश्य खुद को पैमाने में नीचे गिरने से रोकना है और धीरे-धीरे खुद को ऊपर उठाना है या यदि संभव हो तो उस अस्तित्व की स्थिति से तुरंत परम लक्ष्य प्राप्त करना है जिसमें वह है।

मनु की संहिता का निष्कर्ष है "वह जो अपनी आत्मा में सभी प्राणियों में सर्वोच्च आत्मा को देखता है और उन सभी के प्रति समभाव रखता है, वह परम आनंद की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त करता है।" पशु प्रवृत्तियों का दमन, आत्मा की पूर्ण शुद्धता और पूर्णता, ब्राह्मण वर्ग के नैतिक आदर्श थे। लेकिन देवता से मिलन की कोई आशा रखने से पहले अस्तित्व की चार अवस्थाओं या क्रमों से गुजरना आवश्यक था। ये थे: ब्रह्मचारी, या धार्मिक मामलों का छात्र; गृहस्थ, या गृहस्थ; वनवासी, या संन्यासी; और संवासिन या भिक्षु, फकीर या धार्मिक भिक्षुक।

उच्च जातियों का व्यावहारिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति इनमें से कम से कम पहले दो चरणों का अभ्यास करता था, जबकि पुरोहित वर्ग पूरा पाठ्यक्रम लेता था। हालाँकि, बाद में यह किसी भी तरह से नियम नहीं था, क्योंकि अध्ययन का दायरा बहुत कठिन था, जो अक्सर अड़तालीस साल तक चलता था, और नवदीक्षित को घर-घर जाकर भीख माँगकर अपना भरण-पोषण करना पड़ता था। वह आमतौर पर किसी धार्मिक शिक्षक के घर से जुड़ा होता था; और अपनी शिक्षा के कई वर्षों के बाद आमतौर पर शादी कर लेता था, क्योंकि यह बिल्कुल आवश्यक माना जाता था कि वह अपने पीछे एक बेटा छोड़ जाए जो उसकी आत्मा और उसके पूर्वजों की आत्मा को भोजन प्रदान करे। कहा जाता है कि तब वह "गृहस्थ" बन गया था और उसे अपने विवाह के दिन घर में लाई गई अग्नि को हमेशा जलाए रखना था।

जब वह बड़ा हुआ, तो उसके लिए जीवन के तीसरे चरण में प्रवेश करने का समय आ गया और उसने "अपने आप को सभी पारिवारिक संबंधों से अलग कर लिया, सिवाय इसके कि (यदि वह चाहे) उसकी पत्नी उसके साथ जा सकती थी, और एकांत स्थान पर संन्यास ले लिया, अपने साथ अपनी पवित्र अग्नि और अपने दैनिक बलिदानों के लिए आवश्यक उपकरण लेकर।" यह निर्धारित किया गया है कि कम कपड़े पहने और बाल और नाखून कटे हुए होने के कारण संन्यासी को पूरी तरह से जंगल में उगने वाले जंगली भोजन - जड़ें, जड़ी-बूटियाँ, जंगली अनाज, इत्यादि पर रहना चाहिए।

जब तक बिल्कुल आवश्यक न हो, उसे उपहार स्वीकार करने की अनुमति नहीं थी और उसका समय वेद के तत्वमीमांसा भागों को पढ़ने, प्रसाद चढ़ाने और

सांसारिक इच्छाओं के प्रति पूरी तरह उदासीनता पैदा करने के उद्देश्य से तपस्या करने में व्यतीत होता था।

इस तरह वह अपने आपको धार्मिक भिक्षु या भिक्षु की अंतिम और सबसे उच्च श्रेणी में रखता है। इसमें केवल ध्यान करना शामिल है। वह एक पेड़ के नीचे एकांत में अपना निवास बनाता है, और दिन में केवल एक बार अपने काम के अंत में वह लोगों के घरों के पास जाकर थोड़ा भोजन मांगता है। इस तरह वह मृत्यु की प्रतीक्षा करता है, न तो विलुप्त होने की इच्छा रखता है और न ही अस्तित्व की, जब तक कि वह अंततः उसके पास नहीं पहुंच जाती, और वह शाश्वत ब्रह्म में लीन नहीं हो जाता।

ब्राह्मणवाद के शुद्धतम सिद्धांत वेदांत दार्शनिक प्रणाली में पाए जाते हैं, जो वेद, या प्राचीन संस्कृत भजनों के संग्रह को प्राचीन ऋषियों या द्रष्टाओं के दर्शन के माध्यम से धार्मिक विश्वास के प्रकट स्रोत के रूप में मान्यता देता है। यह पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि हिंदू चेतन प्रकृति के पूरे दायरे को एक आत्मा द्वारा पार किया जाने वाला मानते हैं, जो अपने पिछले अस्तित्व में अपने कार्यों के अनुसार पैमाने पर ऊपर और नीचे यात्रा करता है। हिंदुओं के लिए सभी चेतन प्राणियों में प्राण तत्व अनिवार्य रूप से समान प्रतीत होता है, और यह सीधे ब्राह्मणवादी पुनर्जन्म के सिद्धांत की ओर ले जाता है, जिसने हिंदू मन पर इतनी शक्तिशाली पकड़ बना ली है।

211.भारत की राक्षसी विद्या: हिंदू पौराणिक कथाओं के इर्द-गिर्द एक बहुत बड़ी और जटिल राक्षसी विद्या एकत्रित हो गई है। देवता राक्षसों के साथ निरंतर युद्ध करते रहते हैं। इस प्रकार दुर्गा ने चंड और असुर का वध किया, और अपने ही नाम की एक राक्षसी दुर्गा को भी मार गिराया। विष्णु ने भी एक से अधिक राक्षसों का वध किया, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि दुर्गा राक्षस जाति की बहुत बड़ी दुश्मन थी। असुर, संभवतः देवताओं का एक बहुत प्राचीन और आदिवासी समूह था, जो बाद में लोकप्रिय कल्पना में राक्षस बन गया, और राक्षस बादल-राक्षस थे।

उन्हें नरभक्षी के रूप में वर्णित किया गया है, वे कोई भी रूप ले सकते थे, और लगातार देवताओं को डराते रहते थे। वे कब्रिस्तानों में रहते हैं, बलि में बाधा डालते हैं, मृतकों को जीवित करते हैं, सभी प्रकार से मानव जाति को परेशान और पीड़ित करते हैं। वास्तव में वे स्लावोनिक देशों के पिशाचों के लगभग समान हैं; और यह असिकोफ़ के इस निष्कर्ष में बहुत सहायक है कि स्लावोनिक पिशाच मूल रूप से बादल-आत्माएँ थीं।

हम पाते हैं कि देवताओं को राक्षसों द्वारा लगातार परेशान किया जाता था; और कुल मिलाकर हम यह निष्कर्ष निकालने में उचित हो सकते हैं कि जिस तरह तुआथा-डे-दानन ने आयरलैंड के बाद के देवताओं को परेशान किया, उसी तरह इन आदिवासी देवताओं ने अप्रवासी आर्यों के देवताओं के साथ निरंतर युद्ध का अस्तित्व बनाए रखा।

212. भारत का लोकप्रिय जादू-टोना और टोना-टोटका: भारत की लोकप्रिय जादू-टोना और टोना-टोटका यूरोप से बहुत मिलती-जुलती है। भारत की द्रविड़ या आदिवासी जातियाँ हमेशा से जादू-टोने में दृढ़ विश्वास रखती रही हैं, और यह संभव है कि यहाँ हमें एक विजित लोगों के पौराणिक प्रभाव का उदाहरण मिले। हालाँकि, वे इसके बारे में जो भी ज्ञान रखते हैं, उसके बारे में बहुत ही कम जानते हैं। यह व्यावहारिक रूप से उन्हीं तक सीमित है, और इससे जल्दबाजी में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत की आर्य जातियों के पास कोई जादू-टोना नहीं है।

लेकिन यह पूरी तरह से असंभव है, और सच्चाई शायद इसके बिल्कुल विपरीत है; हालाँकि, ब्राह्मणवाद द्वारा लोकप्रिय धार्मिक भावना पर की गई असाधारण रूप से उच्च माँगों ने संभवतः बहुत ही प्रारंभिक काल के निम्न पंथों के अंधविश्वासों को कुचल दिया, और छोटे-मोटे जादू-टोने के अभ्यास को निम्न जातियों तक सीमित कर दिया, जो निश्चित रूप से द्रविड़ या आदिवासी रक्त के थे। हम पाते हैं कि जादू-टोना कोला, भील और संथाल जैसी अलग-थलग और कम विकसित जातियों में सबसे ज़्यादा प्रचलित है। खानाबदोश लोग जादू-टोने में भी दृढ़ विश्वास रखते हैं, जिसका सबसे भयानक रूप जिगर खोर या जिगर खाने वाला है, जिसके बारे में अबुल फ़ज़ल कहते हैं: इस वर्ग का कोई व्यक्ति नज़रों और मंत्रों से दूसरे का जिगर चुरा सकता है।

अन्य विवरण कहते हैं कि किसी व्यक्ति को देखकर वह उसे उसकी इंद्रियों से वंचित कर देता है और फिर उससे अनार के बीज जैसी कोई चीज़ चुरा लेता है, जिसे वह अपने पैर की पिंडली में छिपा लेता है; आग में फूलने के बाद वह इसे खाने के लिए अपने साथियों में बाँट देता है, जिसके बाद मोहित व्यक्ति का जीवन समाप्त हो जाता है। जिगर खोर दूसरे व्यक्ति को मंत्र सिखाकर और उसे जिगर की टिकिया खिलाकर अपनी कला का संचार करने में सक्षम होता है। ये जिगर खोर ज़्यादातर महिलाएँ होती हैं। ऐसा कहा जाता है कि वे बहुत कम समय में बहुत दूर से खुफिया जानकारी ला सकते हैं और अगर उन्हें पत्थर बांधकर नदी में फेंक दिया जाए, तो भी वे डूबेंगे नहीं।

किसी को भी इस दुष्ट शक्ति से वंचित करने के लिए, वे उसके मंदिरों और शरीर के हर जोड़ को दाग देते हैं, उसकी आँखों में नमक भर देते हैं, उसे चालीस दिनों के लिए भूमिगत कक्ष में लटका देते हैं, और उस पर कुछ मंत्र दोहराते हैं। हालाँकि, चुड़ैल ढाई दिनों तक आदमी के जिगर को नहीं खाती है, और भले ही उसने इसे खा लिया हो, और उसे किसी भूत-प्रेत भगाने वाले के हाथों में डाल दिया गया हो, उसे उस आदमी के शरीर में किसी जानवर का जिगर बदलने के लिए मजबूर किया जा सकता है जिसे उसने पीड़ित किया था। हम चुड़ैलों द्वारा लोगों की अंतड़ियाँ निकालने, उन्हें चूसने और फिर उन्हें बदलने की कहानियाँ भी सुनते हैं।

यह सब निस्संदेह प्राचीन फ्रांस और जर्मनी की तरह, और शायद स्लावोनिक देशों में भी, चुड़ैल और पिशाच के मूल संयोजन को दर्शाता है; वास्तव में, दोनों एक ही थे। भारत में महा-चुड़ैल रालारात्री, या "काली रात" की साल्वोनिक वेयरवोल्फ या पिशाच की तरह जुड़ी हुई भौहें, बड़े गाल, उसके होंठ चौड़े और दाँत बाहर निकले हुए हैं और वह एक असली पिशाच है। लेकिन उसके पास सामान्य जादू-टोने की शक्तियाँ भी हैं, जैसे कि दूसरी दृष्टि, छलनी बनाना, तूफ़ानों पर नियंत्रण, बुरी नज़र, और इसी तरह की अन्य शक्तियाँ।

चुड़ैलें जानवरों का रूप भी लेती हैं, खास तौर पर बाघों का; और ऐसे परीक्षणों की कहानियाँ बताई जाती हैं, जिनमें स्थानीय लोगों ने यह सबूत दिया कि उन्होंने कुछ बाघों को उनके बिलों तक ट्रैक किया था, जहाँ पहुँचने पर उन्होंने पाया कि वहाँ कोई कुख्यात चुड़ैल या जादूगर रहता है। ऐसे चुड़ैल-बाघों के लिए आम उपाय यह है कि उन्हें और कोई शरारत करने से रोकने के लिए उनके दाँत तोड़ दिए जाएँ। अजीब बात यह है कि भारतीय चुड़ैल, अपने यूरोपीय प्रोटोटाइप की तरह, अक्सर एक बिल्ली के साथ होती है।

जंगल के लोग कहते हैं कि बिल्ली बाघ की चाची है और उसने उसे पेड़ पर चढ़ने के अलावा बाकी सब कुछ सिखाया है। कोटा के प्रसिद्ध रीजेंट ज़ालिम सिन का मानना था कि बिल्लियाँ चुड़ैलों से जुड़ी होती हैं, और खुद को मंत्रमुग्ध कल्पना करते हुए उन्होंने आदेश दिया कि हर बिल्ली को उनके प्रांत से बाहर निकाल दिया जाना चाहिए।

213. यूरोप : की तरह, चुड़ैलों को कुछ खास चिह्नों से जाना जाता है। माना जाता है कि वे सभी प्रकार के अपशिष्ट खाकर अपने शिल्प के रहस्यों को सीखती हैं। उनके बारे में प्रचलित मान्यता यह है कि वे अक्सर बहुत सुंदर और साफ-सुथरी होती हैं, और हमेशा अपने बालों के बीच में लाल रंग की सीसे की एक साफ लाइन लगाती हैं। उन पर मृत बच्चों को खोदकर निकालने और अपने

गुप्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्हें जीवित करने का आरोप लगाया जाता है। जब तक वे चुड़ैल हैं, तब तक वे मर नहीं सकतीं और जब तक, जैसा कि इटली में होता है, वे जादू-टोने के अपने ज्ञान को किसी और को नहीं दे सकतीं।

वे कुरान की एक आयत से दो अक्षर और आधे अक्षर दोहराते हुए मंत्रों को उल्टा पढ़ते हैं। अगर किसी खास मंत्र को "आगे-पीछे" दोहराया जाए, तो उसे इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति अपने पड़ोसी के लिए अदृश्य हो जाएगा, लेकिन अगर वह इसे पीछे की ओर दोहराता है, तो वह अपनी पसंद का कोई भी रूप धारण कर लेगा। एक चुड़ैल अपने शिकार पर बालों का एक गुच्छा, नाखूनों की कतरन या उसके शरीर के किसी अन्य हिस्से, जैसे कि दांत पर कब्ज़ा करके शक्ति प्राप्त कर सकती है।

इस कारण से भारत के मूल निवासी ऐसे लोगों के निपटान के बारे में बेहद सावधान रहते हैं, उन्हें घास से ढकी जगह में या पानी के आस-पास की जगह में ज़मीन में गाड़ देते हैं, जिसे चुड़ैलें सार्वभौमिक रूप से नापसंद करती हैं।

कुछ लोग अपने बालों की कतरनें बहते पानी में भी फेंक देते हैं। यूरोप की चुड़ैलों की तरह, वे भी मोम, आटे या इसी तरह के पदार्थों से लोगों की छवियाँ बनाने और उन्हें यातना देने का अभ्यास करती हैं, इस विचार के साथ कि जिस व्यक्ति को वे चोट पहुँचाना चाहती हैं, उसे दर्द महसूस होगा। भारत में चुड़ैलों के परिचित को बिट या "हीरो" के रूप में जाना जाता है, जो उसे मानव को चोट पहुँचाने में मदद करता है। प्रत्येक महीने की 14, 15 और 29 तारीख को डायन की शक्ति सबसे अधिक होती है, और विशेष रूप से दीपोत्सव और दुर्गा के त्यौहार पर।

डायनों को अक्सर पहाड़ी लोगों के बीच कड़ी सजा दी जाती है और उन्हें यातना देने में शैतानी चालाकी दिखाई जाती है। उनके बुरे प्रभाव को खत्म करने के लिए, उन्हें अरंडी के पौधे की छड़ों से पीटा जाता है और आमतौर पर इस प्रक्रिया में उनकी मृत्यु हो जाती है। उन्हें अक्सर करीर द्वारा अपने काम के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले गंदे पानी को पीने के लिए मजबूर किया जाता है, या उनकी नाक काट दी जाती है, या उन्हें मार दिया जाता है। जैसा कि कहा गया है, उनके दांत अक्सर तोड़ दिए जाते हैं, उनके सिर मुंडे जाते हैं और उन पर मल फेंका जाता है।

महिलाओं के मामले में उनके सिर मुंडे जाते हैं और उनके बाल किसी सार्वजनिक स्थान पर एक पेड़ से बांध दिए जाते हैं। उन्हें दागा भी जाता है; उनके पैरों में हल का फाल बांध दिया जाता है; और उन्हें चमड़े के कारखाने का पानी पीने के लिए मजबूर किया जाता है। विद्रोह के दौरान, जब ब्रिटिश सत्ता शिथिल हो गई थी,

द्रविड़ लोगों द्वारा चुड़ैलों और जादूगरों पर सबसे अधिक अत्याचार किए गए थे। उनकी आँखों में पिसी हुई मिर्च डाली गई ताकि देखा जा सके कि क्या वे आँसू लाएँगी, और उन दुखी प्राणियों को एक पेड़ से सिर नीचे की ओर लटका दिया गया, उन्हें हिंसक रूप से एक तरफ से दूसरी तरफ घुमाया गया।

फिर उन्हें एक बकरी का खून पीने के लिए मजबूर किया गया, और उन बुरी आत्माओं को भगाने के लिए जिन्हें उन्होंने कुछ बीमार व्यक्तियों के शरीर में प्रवेश कराया था। उन पर किए जाने वाले अंग-भंग और क्रूरताएं ऐसी हैं कि उन्हें दोहराया नहीं जा सकता, लेकिन डायन के जादू का प्रतिकार करने का एक पसंदीदा तरीका है उससे खून निकालना, और स्थानीय पुजारी अक्सर डायन की जीभ में सुई चुभोते हैं, और परिणामस्वरूप खून को चावल पर डालते हैं और उसे खाने के लिए मजबूर करते हैं।

बंबई में, आदिवासी थारूओं के पास जादू टोने की विशेष शक्तियाँ मानी जाती हैं, इसलिए "थारूओं की भूमि" डायन-भूमि का पर्याय बन गई है। गोरखपुर में, डायन भी बहुत हैं, और आधे जिप्सी बंजारे, या अनाज-वाहक, जादू टोने में कुख्यात विश्वासी हैं। अपने दिलचस्प लोकप्रिय धर्म और उत्तरी भारत के लोक-कथा में, श्री डब्ल्यू. क्रुक, जिन्हें स्थानीय चरित्र के अध्ययन के लिए असाधारण अवसर मिले हैं, और जिन्होंने भारतीय लोकप्रिय पौराणिक कथाओं के अंधेरे स्थानों को साफ करने के लिए बहुत कुछ किया है, भारतीय डायनों के विभिन्न प्रकारों के बारे में कहते हैं:

"वर्तमान समय में उत्तर-पश्चिमी प्रांतों के पूर्वी जिलों में सबसे अधिक भयभीत करने वाली अर्ध-देवी चुड़ैल लोना या नोना है, जो एक चमारिन या करीर जाति की महिला है। उसकी किंवदंती इस प्रकार है। महान चिकित्सक धन्वंतर, जो मुसलमानों के लुकमान हकीम से मेल खाते हैं, एक बार राजा परीक्षित को ठीक करने के लिए जा रहे थे, और उन्हें धोखा दिया गया और सांप राजा तक्षक ने काट लिया। इसलिए उन्होंने अपने बेटों से कहा कि वे उन्हें भूनकर उनका मांस खाएं और इस तरह उनकी जादुई शक्तियों को प्राप्त करें। सांप राजा ने उन्हें अपवित्र भोजन खाने से मना कर दिया और उन्होंने उस बर्तन को गंगा में प्रवाहित कर दिया।

लोना नाम की एक करीर महिला ने इसे पाया और इसे खाया, और इस तरह धन्वंतर की रहस्यमय शक्तियों को प्राप्त किया। वह इलाज में कुशल हो गई, विशेष रूप से सांप के काटने के। अंत में वह एक चुड़ैल थी, क्योंकि वह असाधारण तेज़ी से सांप के काटने के इलाज में माहिर थी। चावल के पौधे। एक दिन लोगों ने उसे देखा, और देखा कि जब उसे लगा कि वह अनजान है, तो उसने

अपने कपड़े उतार दिए, और पौधों के बंडल को अपने हाथों में लेकर हवा में फेंक दिया, कुछ मंत्र पढ़ते हुए।

जब पौधे तुरंत अपने उचित स्थानों पर व्यवस्थित हो गए, तो दर्शकों ने आश्चर्य से चिल्लाया, और खुद को खोजते हुए, नोना देश भर में भाग गई, और उसने जो चैनल बनाया वह आज भी लोनी नदी है। इसलिए भड़ौच में एक संत ने एक नया रास्ता बनाया "एक और भयानक चुड़ैल, जिसकी कथा मथुरा में कही जाती है, वह है पूतना, जो निचली दुनिया के राजा बलि की बेटी थी।

उसने शिशु कृष्ण को सोते हुए पाया और उसे अपने शैतानी दूध से दूध पिलाना शुरू कर दिया। पहली बूंद एक नश्वर बच्चे को जहर दे सकती थी, लेकिन कृष्ण ने इतनी ताकत से उसके स्तन को खींचा कि उसने उसका जीवन-रक्त चूस लिया और वह राक्षसी, अपनी पीड़ा की चीखों से पूरे ब्रज की भूमि को भयभीत करते हुए, बेजान होकर जमीन पर गिर पड़ी। यूरोपीय चुड़ैलें बच्चों का खून चूसती हैं; यहाँ दिव्य कृष्ण चुड़ैल पर वार करते हैं।" अवध के पलवार राजपूतों की एक चुड़ैल पूर्वज है।

214. "यूरोप की तरह भारत में भी जादू**-**टोने का इतिहास **:** लोगों के इतिहास के सबसे दुखद पन्नों में से एक है। आजकल, ब्रिटिश कानून की ताकत ने उन भयानक अत्याचारों को लगभग पूरी तरह दबा दिया है, जो स्थानीय प्रशासन के तहत आदतन किए जाते थे। लेकिन खास तौर पर देश के सुदूर और असभ्य इलाकों में यह अंधविश्वास अभी भी लोगों के दिमाग में मौजूद है और हमारे आपराधिक रिकॉर्ड में इसके कभी-कभार मिलने वाले संकेत यह दिखाने के लिए काफी हैं कि हमारे मजिस्ट्रेट और पुलिस की गतिविधियों में कोई भी ढील निस्संदेह इसके कुछ और चौंकाने वाले रूपों में फिर से उभरने का कारण बनेगी।"

भारत के आदिवासी भूत-प्रेतों और अदृश्य आत्माओं से बहुत डरते हैं और उनका काफी समय इनके बुरे प्रभावों को दूर करने में बीतता है। उनके घरों और उनके पास आने-जाने के रास्तों पर हर तरह के सुरक्षात्मक उपकरण लगे रहते हैं और वे बुरे प्रभावों को दूर करने के लिए कई तरह के ताबीज पहनते हैं। इनके बारे में श्री क्रुक्स कहते हैं, "कुछ भारतीय भूत, जैसे अरेबियन नाइट्स के इफ्री, दस योजन या अस्सी मील तक लंबे हो सकते हैं। बंगाल की एक कहानी में भूत की पहचान इसलिए की जाती है क्योंकि वह बर्तन के लिए अपने हाथ कई गज तक फैला सकती है।

कुछ भूतों में वेताल की तरह मानव शवों में प्रवेश करने और बहुत बड़ा आकार लेने की बहुत खतरनाक शक्ति होती है। मिर्जापुर के खरवारों के बारे में एक

जंगली किंवदंती है, जो बताती है कि कितने समय पहले जनजाति की एक अविवाहित लड़की की मृत्यु हो गई थी, और उसका अंतिम संस्कार किया जा रहा था। जब रिश्तेदार चिता के लिए लकड़ियाँ इकट्ठा कर रहे थे, तो एक भूत शव में प्रवेश कर गया, लेकिन दोस्तों ने उसे बाहर निकाल दिया। तब से महिलाओं के शवों को अनदेखा न करने के लिए बहुत सावधानी बरती जाती है।

इसलिए, पंजाब में, जब किसी महान व्यक्ति का अंतिम संस्कार किया जाता है, तो हड्डियों और राख पर चौथे दिन तक ध्यान रखा जाता है, ताकि कोई जादूगर उनके साथ हस्तक्षेप न कर सके। अगर उसे मौका मिले, तो वह मृतक को जीवन दे सकता है, और उसके बाद भी उसे अपने प्रभाव में बनाए रखें। ग्रेट ब्रिटेन में मृतकों को जगाने की प्रथा की उत्पत्ति इसी से हुई है, एक ऐसी प्रथा जो संभवतः एक मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास से उत्पन्न हुई है, जिसमें अदृश्य दुनिया के कुछ एजेंटों द्वारा शव को ले जाने या जंगली जानवरों की अशुभ स्वतंत्रता के संपर्क में आने का खतरा होता है।'

लेकिन भारत में यह सबसे अच्छा तरीका माना जाता है, अगर शव को तुरंत निपटाया नहीं जा सकता है, तो उसे सावधानी से मापना चाहिए, और फिर कोई भी घातक भूत उस पर कब्जा नहीं कर सकता। "अधिकांश भूत जिनके बारे में हम अभी तक विचार कर रहे हैं, वे घातक हैं। हालाँकि, कुछ अन्य हैं जो मित्रवत हैं। ऐसे हैं जर्मन एल्व्स, रॉबिन गुड फेलो, पक, ब्राउनी और इंग्लैंड के हिल्टन के कौल्ड लैड, आइल ऑफ मैन के ग्लाशन, आयरलैंड के फौका या लेप्रेहॉन।

अपने कई रूपों में से एक में, ब्रह्मदैत्य, या अविवाहित मरने वाले ब्राह्मण का भूत है। बंगाल में माना जाता है कि वह अन्य भूतों की तुलना में अधिक साफ-सुथरा और कम शरारती है; भूत उसे पालकी में ले जाते हैं, वह लकड़ी की चप्पल पहनता है, और एक बरगद के पेड़ पर रहता है।

215. "अल्स्टर : में एक झील है जिसमें एक द्वीप है जो दो भागों में विभाजित है। इनमें से एक में विशेष पवित्रता का एक चर्च है, और यह सबसे सुखद और रमणीय है, साथ ही स्वर्गदूतों के दर्शन और संतों की भीड़ के लिए जो अक्सर यहाँ आते हैं, यह बहुत ही शानदार है। दूसरा भाग, ऊबड़-खाबड़ चट्टानों से ढका हुआ है, ऐसा कहा जाता है कि यह केवल शैतानों का निवास स्थान है, और लगभग हमेशा ही यह एक ऐसा रंगमंच होता है जहाँ दुष्ट आत्माओं की भीड़ अपने अनुष्ठान करती दिखाई देती है।

द्वीप के इस हिस्से में नौ गड्ढे हैं, और अगर कोई व्यक्ति संयोग से उनमें से किसी एक में रात बिताने का साहस करता है (जो कि, हम जानते हैं, कभी-कभी

कुछ लापरवाह लोगों द्वारा किया गया है), तो उसे तुरंत दुष्ट आत्माएँ जकड़ लेती हैं, जो पूरी रात उसे इतनी बुरी तरह से प्रताड़ित करती हैं, आग और पानी से उसे ऐसी असहनीय पीड़ाएँ देती हैं, और विभिन्न प्रकार की अन्य यातनाएँ देती हैं, कि जब सुबह होती है तो उसके दयनीय शरीर में जीवन की कोई चिंगारी नहीं बचती ऐसा कहा जाता है कि जो व्यक्ति एक बार इन यातनाओं को अपने ऊपर लगाए गए प्रायश्चित के रूप में स्वीकार कर लेता है, उसे बाद में नरक की पीड़ा नहीं झेलनी पड़ती, जब तक कि वह कोई गहरा पाप न कर ले।

216. इस संबंध में श्री सेंट जॉन डी**.** सेमोर **(1913) ;** द्वारा आयरिश जादू टोना और दानव विज्ञान पर एक कार्य, उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण है। हम इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालते हैं कि श्री सेमोर को इस पुस्तक को लिखने से पहले इस विषय का कोई सामान्य ज्ञान था, और ऐसा प्रतीत होता है कि वे यह मानकर चलते हैं कि आयरलैंड में जादू टोना पूरी तरह से एक विदेशी प्रणाली है, जिसे एंग्लो नॉर्मन और उत्तर में स्कॉटिश आप्रवासियों द्वारा द्वीप में आयात किया गया है। यह निस्संदेह मामला है जहाँ तक पेल और उल्स्टर के जिलों का संबंध है, लेकिन निश्चित रूप से इसे आयरलैंड के सेल्टिक जिलों पर लागू नहीं किया जा सकता है।

इनके बारे में श्री सेमोर चुप हैं, लेकिन अधिकांश पाठकों को यह लगेगा कि सेल्टिक स्कॉटलैंड की उपमा, जो चुड़ैलों और चुड़ैल-प्रथाओं से भरपूर थी, शक्तिशाली सबूत है कि हाइलैंड्स में प्रचलित प्रणाली के समान एक प्रणाली आयरलैंड के आदिवासी जिलों में प्राप्त हुई थी। प्रारंभिक आयरिश कृतियों में जादू-टोने के अनेक संदर्भ हैं, और उनमें ऐसी प्रथाओं का वर्णन किया गया है जो पूरी दुनिया में जंगली जनजातियों के जादूगरों और औषधि-पुरुषों की प्रथाओं से काफ़ी मिलती-जुलती हैं। जानवरों का रूपान्तरण, चुड़ैलों के सबसे आम करतबों में से एक है, जिसका उल्लेख प्राचीन आयरिश चक्रों में बार-बार किया जाता है, और हाइबरनियन किंवदंतियों में ऐसे कुछ नायक हैं जिनके पास जादू करने का अच्छा भंडार नहीं है।

चमत्कार करने वाले ड्र्यूड भी प्रचुर मात्रा में हैं। श्री सीमोर का मानना है कि "सेल्टिक आयरलैंड में अदृश्य के साथ व्यवहार को इतनी घृणा के साथ नहीं देखा जाता था, और वास्तव में इसे रीति-रिवाज़ और पुरातनता की स्वीकृति प्राप्त थी।" उन्होंने यह भी कहा कि "सेल्टिक तत्व की अपनी अंधविश्वासी मान्यताएँ थीं, लेकिन ये कभी इस दिशा में (जादू टोने की दिशा में) विकसित नहीं हुईं। इस पर विश्वास करना बहुत मुश्किल है।

ऐसी प्रणाली के अभिलेखों की कमी इस बात का कोई मानदंड नहीं है कि यह कभी अस्तित्व में नहीं थी, और हमें यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि इस विषय की गहन जाँच से यह साबित हो जाएगा कि सेल्टिक आयरलैंड में जादू टोने की एक वास्तविक प्रणाली मौजूद थी, जैसा कि अन्य जगहों पर है, हालाँकि यह "सेल्टिक" नहीं हो सकती है।

जैसा भी हो, श्री सेमोर की पुस्तक आयरलैंड के उन एंग्लो-नॉर्मन और स्कॉटिश भागों से निपटने के लिए सबसे दिलचस्प है जहाँ जादू टोने में विश्वास अप्रवासी आबादी के मातृ-देशों में प्रचलित लोगों की तर्ज पर था। वह जादू टोने के कारणों का वर्णन करता है।

217.भूत-प्रेत**,** परियों का साया **:** और 'छोटे लोगों' के साथ व्यवहार भी इस पुस्तक में शामिल हैं; और श्री सेमोर ने खुद को आयरलैंड तक सीमित नहीं रखा है, बल्कि अपने एक देशवासी का अमेरिका तक पीछा किया है, जहाँ उन्होंने दिखाया है कि कैसे उसने कट्टरपंथी कॉटन माथेर (q.vJ. विचक्राफ्ट नोटिस) को अनुकूल रोजगार दिया था, जो एंट्रिम और आइलैंड मैगी में सत्रहवीं शताब्दी के जादू टोना नोटिस आठवें अध्याय को बनाते हैं; और नौवें और अंतिम में आयरलैंड में वर्ष 1807 से लेकर आज तक के जादू टोने के मामलों को दर्शाया गया है। अंतिम नोटिस 1911 में हत्या के मुकदमे की है, जब एक दुखी महिला पर एक अन्य व्यक्ति - एक वृद्ध पेंशनभोगी - को पागलपन के दौरे में मारने का मुकदमा चलाया गया था।

एक गवाह ने गवाही दी कि वह अपराध की सुबह सड़क पर अभियुक्त से मिला था, उसके हाथ में एक मूर्ति या आकृति थी, और वह तीन बार दोहरा रही थी "मैंने बूढ़ी चुड़ैल को मार डाला है। मुझे उसे मारने के लिए धन्य वर्जिन से शक्ति मिली है।" ऐसा प्रतीत होता है कि प्रश्न में उद्धृत चुड़ैल ने हत्यारे को चूहों और चूहों से पीड़ित करने की धमकी दी थी;

एक कृंतक स्पष्ट रूप से घुस गया था उसके निवास पर, और उसके बाद एक महिला की उज्ज्वल दृष्टि आई जिसने अभियुक्त को बताया कि वह खतरे में है, और उसे आगे बताया कि अगर वह अपने कपड़े उतारे बिना और उन्हें साफ किए बिना और अपना बिस्तर बिछाए बिना और घर की सफाई किए बिना वृद्ध पेंशनभोगी की पेंशन-बुक प्राप्त करती है, तो उसे "हमेशा के लिए गंदगी और चूहे और चूहे मिलेंगे।"

यह एक अलग मामला नहीं है, और यह दर्शाता है कि सभ्य देशों के अधिक दूरदराज के हिस्सों में इस तरह के अंधविश्वासों को कितनी मुश्किल से खत्म किया जाता है। हमने श्री सेमोर की पुस्तक की कुछ विस्तार से समीक्षा की है क्योंकि यह व्यावहारिक रूप से उस विषय पर मौजूद सभी चीजों का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन यह देखना दिलचस्प होगा कि वह ऐसे देशी आयरिश अभिलेखों की जांच करके अपने शोध को आगे बढ़ाते हैं जो मौजूद हैं। इस तरह के पाठ्यक्रम से संभवतः काफी मात्रा में विवरण का बचाव होगा जो उसे अपने देश के गुप्त इतिहास को पूरा करने में सक्षम करेगा।

218.लोहा**:** हॉलैंड के अनुसार प्लिनी ने इसके गुप्त गुणों का वर्णन इस प्रकार किया है: - "फिजिक में आयरन और स्टील के उपयोग के संबंध में, यह किसी अन्य कार्य के लिए नहीं है, बल्कि इसे खोलने, काटने और टुकड़े-टुकड़े करने के लिए है; चाकू या खंजर लें, और इसे किसी छोटे बच्चे या बड़े शरीर पर दो या तीन बार घुमाएँ। और फिर इसे उस व्यक्ति के चारों ओर घुमाएँ, यह सभी प्रकार के जहर, जादू-टोने या जादू-टोने से बचाता है। इसके अलावा, ताबूत या कब्र से कोई भी लोहे की कील निकालना, जिसमें कोई पुरुष या महिला दफन हो, और उसे किसी ऐसे दरवाजे के खंभे या खंभे पर चिपका देना, जो उस घर या शयन-कक्ष की ओर जाता हो, जहाँ कोई व्यक्ति रात में भूत-प्रेतों से पीड़ित हो, उसे ऐसी आत्माओं से बचाया और सुरक्षित किया जा सकता है।

भूत-प्रेत संबंधी भ्रम। इसके अलावा, ऐसा कहा जाता है कि अगर किसी को तलवार या खंजर की नोक से हल्का सा चुभन हो जाए, जो किसी व्यक्ति की मृत्यु का कारण बन सकती है, तो यह अचानक चुभन या टांके के साथ होने वाले बाजू या छाती के दर्द के लिए एक बेहतरीन उपाय है। स्कॉटलैंड और उत्तरी आयरलैंड के कुछ हिस्सों में, परियों के हमलों को दूर रखने के लिए लोहे की शक्ति में विश्वास है। ऐसा माना जाता है कि पालने पर रखा गया लोहे का पोकर, बच्चे के बपतिस्मा होने तक परियों को दूर रखेगा।

रेवरेंड जॉन जी. कैंपबेल ने अपने सुपरस्टीशंस ऑफ इक्स स्कॉटिश हाइलैंड्स में बताया है कि कैसे एक बच्चे के रूप में, उन्हें और एक अन्य लड़के को एक परी से सुरक्षित माना जाता था, जिसे एक निश्चित स्थान पर एक चाकू और दूसरे को एक कील के कब्जे से देखा गया था। यह अर्गिलशायर के एपिन में था।

219.इटली**:** (प्राचीन इटली के लिए रोम देखें।) मध्यकालीन इटली में जादू और टोना-टोटका चर्च के कई महान व्यक्तित्वों के इर्द-गिर्द केंद्रित था, और यहाँ तक कि कई पोपों को भी इतालवी जादूगरों और कीमियागरों की श्रेणी में गुप्त विज्ञान के इतिहासकारों द्वारा शामिल किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि

किसी प्रकार की परंपरा रही है, जिसकी उत्पत्ति किसी भी तरह से स्पष्ट नहीं है, कि पोप दसवीं शताब्दी से ही जादू के अभ्यास में लगे हुए थे, और यह आरोप लगाया गया था कि सिल्वेस्टर द्वितीय ने अपनी मृत्यु-शय्या पर इस आरोप को स्वीकार किया था।

लेवी ने कहा कि होनोरियस तृतीय, जिसने धर्मयुद्ध का प्रचार किया, एक घृणित नेक्रोमैन सेर था, और एक ग्रिमोइरे या पुस्तक का लेखक था जिसके द्वारा आत्माओं को बुलाया जाता था, जिसका उपयोग केवल पुरोहितों के लिए आरक्षित था। प्लेटिना ने मार्टिनस पोलोनस के हवाले से लिखा है कि सिल्वेस्टर, जो एक कुशल गणितज्ञ थे और कबाला में पारंगत थे, ने एक अवसर पर शैतान को बुलाया और पोप का ताज हासिल करने के लिए उसकी सहायता प्राप्त की। इसके अलावा उन्होंने अपनी आत्मा को शैतान को बेचने की कीमत के रूप में यह शर्त रखी कि उन्हें यरूशलेम के अलावा कहीं और नहीं मरना चाहिए, जिस स्थान पर उन्होंने आंतरिक रूप से दृढ़ संकल्प किया था कि वे खुद को कभी नहीं जाने देंगे।

वे विधिवत पोप बन गए, लेकिन एक अवसर पर रोम के एक निश्चित चर्च में सामूहिक प्रार्थना करते समय, उन्हें बहुत बीमार महसूस हुआ और अचानक उन्हें याद आया कि वे यरूशलेम के पवित्र क्रॉस को समर्पित एक चैपल में सेवा कर रहे थे।

उन्होंने चैपल में एक बिस्तर स्थापित किया, जिस पर उन्होंने कार्डिनल्स को बुलाया और कबूल किया कि उन्होंने व्यवस्था के साथ संवाद किया था कि जब वे मर जाएंगे तो उनके शरीर को हरे लकड़ी के एक रथ पर रखा जाएगा और दो घोड़ों द्वारा खींचा जाएगा, एक काला और दूसरा सफेद; उन्हें अपने रास्ते पर चलना चाहिए, लेकिन न तो उनका नेतृत्व किया जाना चाहिए और न ही उन्हें चलाया जाना चाहिए, और जहाँ वे रुके वहाँ उनके अवशेषों को दफनाया जाना चाहिए। लैटरन के सामने वाहन रुका, और इस मोड़ पर उसमें से सबसे भयानक आवाज़ें निकलीं, जिससे आस-पास खड़े लोगों को लगा कि सिल्वेस्टर की आत्मा को उनके समझौते के आधार पर शैतान ने पकड़ लिया है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि पोप के जादूगरों से जुड़ी ये किंवदंतियाँ पूरी तरह से काल्पनिक हैं और इन्हें प्लेटिना और पोलोनस के माध्यम से गैलफ्रिडस और गेरवाइस, जादूगर तक पहुँचाया जा सकता है, जिसे नॉड ने सही ही कहा है कि वह दंतकथाओं का सबसे बड़ा जालसाज और कलम उठाने वाला सबसे कुख्यात झूठा है। ऐसी ही एक कहानी पोप जोन की है, जो कई वर्षों तक पोप की गद्दी पर

बैठी रही, हालाँकि वह एक महिला थी और उसे अब तक की सबसे काली जादूगरनी माना जाता था।

उसे कई जादू की किताबों का श्रेय दिया जाता है। लेवी ने अपने जादू के इतिहास में एक दिलचस्प अंश लिखा है, जिसमें उन्होंने कहा है कि इस महिला पोप के जीवन में कुछ उत्कीर्णन, जो उसे दर्शाने का दावा करते हैं, कुछ और नहीं बल्कि प्राचीन टैरो हैं जो आइसिस को एक मुकुट पहनाते हैं।

उन्होंने कहा, यह सर्वविदित है कि इस महिला पोप के जीवन पर चित्रलिपि आकृति आइसिस को एक मुकुट पहनाते हुए दर्शाती है। दूसरा टैरो कार्ड अभी भी 'महिला पोप/ एक महिला होने के नाते' कहा जाता है, जो एक मुकुट पहनती है, जिस पर अर्धचंद्र या आइसिस के सींग के बिंदु हैं। यह बहुत अधिक संभव है कि प्रश्न में ग्रिमोयर का लेखक होनोरियस द्वितीय था, जो पोप विरोधी था, या शायद एक और होनोरियस जिसे यूक्लिड के बेटे और थेबंस के गुरु के रूप में वर्णित किया गया है।

लेकिन सभी इतालवी नेक्रोमैंसर और जादूगर किसी भी तरह से चर्च के लोग नहीं थे - वास्तव में मध्ययुगीन इटली शायद ही जादुई रूप से इच्छुक लोगों के लिए एक जगह थी, इसलिए ब्लैक आर्ट के खिलाफ चर्च के कानून बहुत सख्त थे।

220.यह स्पष्ट या निश्चित नहीं है कि पूर्व के जिन्न पश्चिम की पौराणिक कथाओं या दर्शन से उधार लिए गए थे, और अरबी शब्द जिन्न को लैटिन शब्द "जीनियस" द्वारा अनुवादित करने की प्रथा उन काल्पनिक प्राणियों की प्रकृति और कार्यों में किसी भी पहचान से नहीं बल्कि नामों में एक स्पष्ट समानता से उत्पन्न हुई थी। हालाँकि, नाम की यह समानता पूरी तरह से आकस्मिक रही होगी, क्योंकि अरबों को लैटिन भाषा का बहुत कम या बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था, और एक भी शब्द उससे सीधे नहीं निकला था; इसलिए, डेमन, न कि जीनियस वह शब्द था जिसका उपयोग उन्होंने पश्चिम से अपने पंथ के इस हिस्से को उधार लिया था।

इसके अलावा, जिन्न एक वास्तविक अरबी शब्द प्रतीत होता है, जो मूल रूप से M से निकला है जिसका अर्थ है पर्दा या छिपाना; इसलिए, इसका सही अर्थ है, "वह जो परदा पड़ा हो और जिसे देखा न जा सके।" ** एक अर्थ में, सीडीमुकी के लेखक फ़्रूजाबादी कहते हैं, "जिन्न शब्द का अर्थ है कोई भी आध्यात्मिक प्राणी जो हमारी सभी इंद्रियों से छिपा हो, और इसी कारण से, यह भौतिक प्राणी का विपरीत है। इस व्यापक अर्थ में, जिन्न शब्द में शैतान और फ़रिश्तों दोनों का अर्थ है, लेकिन फ़रिश्तों और जिन्न दोनों में कुछ गुण समान हैं; कुछ गुण

प्रत्येक में विशिष्ट हैं। प्रत्येक फ़रिश्त जिन्न है, लेकिन प्रत्येक जिन्न फ़रिश्त नहीं है।

दूसरे अर्थ में, यह शब्द विशेष रूप से एक विशेष प्रकार के आध्यात्मिक प्राणियों के लिए लागू होता है; क्योंकि ऐसे प्राणी तीन प्रकार के होते हैं; अच्छे, जो फ़रिश्तों के होते हैं; बुरे, शैतान; और मध्यवर्ती, जो अच्छे और बुरे दोनों को समझते हैं, जो जिन्न की श्रेणी बनाते हैं।" इस प्रकार अरब अच्छे और बुरे जिन्न को स्वीकार करते हैं, इस संबंध में यूनानियों से सहमत हैं, लेकिन फारसियों से भिन्न हैं। अरब नाइट्स द्वारा यूरोपीय पाठकों को लंबे समय से परिचित कराए गए जिन्न, अरब के शब्दकोशकार द्वारा वर्णित वही प्राणी नहीं थे, बल्कि भारतीय रोमांस के देवता और देवता थे, जो कपड़े पहने हुए थे।

इसलिए, पश्चिम के जिन्न और पूर्व के जिन्न के बीच मुख्य अंतर ये प्रतीत होता है; जिन्न निम्न श्रेणी के देवता थे, मनुष्यों के निरंतर साथी और संरक्षक, उपयोगी या भविष्यसूचक आवेग देने में सक्षम, देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ और संदेशवाहक की प्रजाति के रूप में कार्य करते थे। कुछ को मित्रवत माना जाता था, अन्य को शत्रुतापूर्ण, और कई लोगों का मानना था कि प्रत्येक प्रकार का एक व्यक्ति अपने जन्म से ही हर नश्वर से जुड़ा होता है। पहले वाले को अगाथोडेमन कहा जाता था, दूसरे को कैकोडासमोन; और बाद में जो कैसियस के सामने प्रकट हुआ, उसे विशाल कद और काले रंग के व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है, जहाँ से, निस्संदेह, बाद के समय में, वह रंग शैतान को दे दिया गया है।

अच्छी प्रतिभा ने लोगों को अच्छाई के लिए प्रेरित किया, बुरी ने बुरे कामों के लिए। प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिभा उसकी अपनी छाया के समान थी। अक्सर उसे एक साँप के रूप में दर्शाया जाता था; उसकी उम्र भी अलग-अलग थी; उसे आम तौर पर प्लेन के पत्तों की माला पहनाई जाती थी। ट्राजन और हैड्रियन के सिक्कों में प्रतिभा ने अपने दाहिने हाथ से एक वेदी पर एक पैटेरा रखा है, और अपने बाएँ हाथ में एक प्रकार का कोड़ा थामे हुए है।

उनके बलिदान पूरी तरह से रक्तहीन थे, जिसमें शराब और फूल शामिल थे, और जो व्यक्ति आहुति देता था, वह प्याला चखने वाला पहला व्यक्ति होता था। उन्हें साष्टांग प्रणाम करके पूजा जाता था, विशेष रूप से जन्मदिन पर, जिसे उनकी विशेष देखभाल के लिए रखा जाता था। रोमन पुरुष अपने जीनियस की कसम खाते थे, महिलाएँ अपने जूनो की। राज करने वाले राजकुमार की प्रतिभा असाधारण गंभीरता की शपथ थी।

स्थानीय और व्यक्तिगत जिन्न थे, जिनके बारे में कई विवरण "वोसियस" डी आइडल में पाए जा सकते हैं। इसके विपरीत, जिन्न, जो हिंदू पौराणिक कथाओं के डी6वेट्स और राक्षसों के वंशज प्रतीत होते हैं, अरबों द्वारा कभी भी पूजे नहीं गए, न ही उन्हें देवता के एजेंट से अधिक कुछ माना जाता था। वास्तव में, मुस्लिम धर्म की स्थापना के बाद से, उन्हें अदृश्य आत्माओं के रूप में वर्णित किया गया है, और उनके करतब और विकृतियाँ जो रोमांस में दिखाई देती हैं, एशियाई लोगों द्वारा उतनी ही कम मानी जाती हैं, जितनी कि "आर्थर की गोल मेज" की कहानियों पर हम खुद मानते हैं। मुसलमान डॉक्टरों द्वारा उनके अलौकिक अस्तित्व को बनाए रखा जाता है, लेकिन इसका कवियों द्वारा चित्रित उनके चरित्र और कार्यों से बहुत कम संबंध है।

221.जल्लिस्तान**:** एक काल्पनिक देश जो फारसियों के बीच एक लोकप्रिय विश्वास के अनुसार, सुलैमान के अधीन रहने वाले जिन्न का निवास स्थान था।

222.जुडाह हा**-**लेवल **(1085) :** प्रसिद्ध हिब्रू धर्मशास्त्री और रहस्यवादी। ऐसा लगता है कि उन्हें प्राथमिक आत्माओं की कुछ अवधारणा थी, क्योंकि स्वर्गदूतों के बारे में उनका कहना है कि "कुछ को पदार्थ के सूक्ष्म तत्वों से, कुछ समय के लिए बनाया गया है।"

223."का**:** मनुष्य के सात भागों में से एक की मिस्र की अवधारणा; एक आध्यात्मिक दोहरा या सूक्ष्म शरीर। न केवल मानव जाति के पास एक का था, बल्कि जानवरों और निर्जीव वस्तुओं के पास भी था। प्रत्येक जीव को जन्म के समय एक का मिला था। जब वह मर जाता था तो उसका का उसे छोड़ देता था, लेकिन माना जाता था कि वह शरीर के पास मंडराता था और कभी-कभी उसे पुनर्जीवित करता था। इस उद्देश्य के लिए ममी के पास मूर्तियाँ रखी जाती थीं, जिसमें का को अस्थायी आश्रय मिल सकता था। मृतक के दोस्तों द्वारा का को भोजन उपलब्ध कराया जाता था, जो उसके उपयोग के लिए कब्र में प्रावधान छोड़ देते थे।

224.कबालीवादी ब्रह्माण्ड **:** विज्ञान चार अलग-अलग दुनियाओं की कल्पना करता है, जिनमें से प्रत्येक उत्सर्जन के दशक की एक अलग प्रणाली बनाती है, जिसे निम्नलिखित तरीके से सत्यापित किया गया था: उत्सर्जन की दुनिया या स्वर्गीय मनुष्य, एन सोफ से एक सीधा उत्सर्जन। इससे सृजन की दुनिया या शुद्ध प्रकृति की ब्रियाइक दुनिया उत्पन्न होती है, लेकिन फिर भी पहले की तरह आध्यात्मिक नहीं है। एंजल मेटाट्रॉन इसमें निवास करता है और शुद्ध आत्मा की दुनिया का गठन करता है। वह दृश्यमान दुनिया को नियंत्रित करता है और ग्रहों के चक्करों का मार्गदर्शन करता है।

इससे निर्माण की दुनिया या येत्क्सिरेटिक दुनिया बनती है, जो अभी भी कम परिष्कृत है, जो स्वर्गदूतों का निवास है। अंत में इनसे क्रिया या पदार्थ की दुनिया निकलती है, बुरी आत्माओं का निवास, जिसमें दस नरक हैं, जिनमें से प्रत्येक शैतानी पतन की गहराई तक पहुँचने तक कम होता जाता है। इस क्षेत्र का राजकुमार सामेल है, जो दुष्ट आत्मा है, उत्पत्ति का सर्प है, अन्यथा "जानवर" है।

लेकिन ब्रह्मांड मनुष्य के निर्माण के बिना अधूरा था; स्वर्गीय आदम, जो दसवाँ सेफ़िरोथ है, ने सांसारिक आदम का निर्माण किया, जिसका प्रत्येक सदस्य दृश्यमान ब्रह्मांड के एक भाग से मेल खाता है। हमें बताया जाता है कि मानव रूप चार अक्षरों के आकार का है जो यहूदी टेट्राग्रामेशन, झावा का गठन करते हैं, इस प्रकार, अक्षर झावा।

संपूर्ण मानव जाति की आत्माएँ उत्सर्जन की दुनिया में पहले से मौजूद हैं, और सभी को मानव शरीर में निवास करने के लिए नियत किया गया है। जिस सेफ़िरोथ से यह निकलता है, उसी तरह प्रत्येक आत्मा में दस शक्तियाँ होती हैं, जिसमें त्रिदेवों की एक त्रिमूर्ति शामिल होती है - आत्मा, आत्मा, क्रूडर आत्मा या नेप्टेश। प्रत्येक आत्मा, दुनिया में प्रवेश करने से पहले नर और मादा से मिलकर एक होती है, लेकिन जब वह इस धरती पर उतरती है, तो दोनों भाग अलग हो जाते हैं और अलग-अलग शरीरों को जन्म देते हैं। धरती पर आत्मा की नियति उसमें प्रत्यारोपित पूर्ण रोगाणुओं को विकसित करना है, जिन्हें अंततः एन सोफ में वापस लौटना होगा।

यदि वह उस अनुभव को प्राप्त करने में सफल नहीं होती है जिसके लिए उसे धरती पर भेजा गया है, तो उसे शरीर में तीन बार फिर से निवास करना होगा जब तक कि वह विधिवत शुद्ध न हो जाए। जब सेफिरोथ की दुनिया की सभी आत्माएँ परिवीक्षा की इस अवधि से गुज़र जाएँगी और एन सोफ की गोद में वापस आ जाएँगी, तो जयंती शुरू हो जाएगी; यहाँ तक कि शैतान को भी उसके देवदूत स्वभाव में बहाल कर दिया जाएगा, और अस्तित्व अंतहीन सब्त होगा। कबाला कहता है कि ये गूढ़ सिद्धांत हिब्रू शास्त्रों में निहित हैं, लेकिन उन्हें अशिक्षित लोगों द्वारा नहीं समझा जा सकता है; हालाँकि, वे आध्यात्मिक रूप से समझदार व्यक्तियों के लिए स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं।

225.काबोटर्मनेकेन्स**:** फ्लेमिश किसानों के अनुसार, ये छोटी आत्माएँ हैं जो देश की महिलाओं, विशेषकर डेयरी में काम करने वाली महिलाओं पर छल करती हैं।

226.कपिल**:** हिंदू मानते हैं कि वे भगवान विष्णु हैं, जो ब्रह्मा के पुत्र हैं, जो अपने चौबीस अवतारों में से पाँचवें अवतार हैं। उन्होंने दार्शनिक प्रस्तावों की एक श्रृंखला लिखी जिसे सूत्र के नाम से जाना जाता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि केवल दार्शनिक अध्ययन से ही ईश्वर के साथ मिलन प्राप्त किया जा सकता है।

227.कार्डेक**,** एलन**:** फ्रांसीसी अध्यात्मवादी डेनिज़ार्ड रिवैल का उपनाम, जिनके सिद्धांतों को महाद्वीप और विशेष रूप से फ्रांस में बड़े पैमाने पर स्वीकार किया गया था। अध्यात्मवाद में मुख्य सिद्धांत पुनर्जन्म का सिद्धांत था। अध्यात्मवाद में धर्मांतरण से पहले रिवैल ने खुद को पशु चुंबकत्व में बहुत व्यस्त रखा था। 1856 में उन्हें विक्टोरियन सरदो द्वारा एक अध्यात्मवादी मंडली में शामिल किया गया था। उनकी लिव्रे डेस एस्पर्टिस और उनके द्वारा इसके बाद किए गए कार्य मुख्य रूप से माध्यमों के माध्यम से प्राप्त संचार पर आधारित थे।

उनका व्यापक प्रसार हुआ और अध्यात्मवाद के सिद्धांत, कम से कम फ्रांस में, प्रतिद्वंद्वी अध्यात्मवाद के सिद्धांतों की तुलना में बहुत अधिक लोकप्रिय हो गए, जिसके सिद्धांतों में पुनर्जन्म शामिल नहीं था। एलन और कार्डी नाम जो एम. रिवैल ने ग्रहण किए थे, वे नाम थे जो उन्होंने दो पूर्व अवतारों में धारण किए थे, जो उन्हें माध्यमवादी संचार द्वारा प्रकट किए गए थे। वे ला रिव्यू स्पिरिट्स के संपादक थे, और पेरिसियन सोसाइटी फॉर स्पिरिचुअलिस्टिक स्टडीज के संस्थापक और अध्यक्ष थे, जहाँ एम. कैमिलक फ्लेमरियन, जो उस समय उन्नीस वर्ष के थे, ने 1861 में मानसिक विज्ञान से अपना पहला परिचय प्राप्त किया।

एलन कार्डी की मृत्यु 1869 में हुई, उस समय तक उनके सिद्धांत पूरी तरह से स्थापित हो चुके थे। हालाँकि, ब्रिटेन में, उन्होंने बहुत कम प्रगति की, इस देश में उनकी एकमात्र उल्लेखनीय शिष्या मिस अन्ना ब्लैकवेल थीं।

228.केली**,** एडवर्ड**:** केल्पी**,** द**:** एक जल आत्मा जो स्कॉटलैंड में नदियों और झरनों में रहती है। केल्पी एक शरारती स्वभाव की प्रतीत होती है, और अक्सर मिलों के पानी के पहियों को रोकने और नदियों को बढ़ाने का आरोप लगाया जाता है। केल्पी को कभी-कभी अनियंत्रित बच्चों को डराने के लिए आतंक के नाम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है; और यह माना जाता था कि वह महिलाओं को भी खा जाता है।

229.केफालोनोमेनी**:** भविष्यवाणी की एक विधि जो गधे के पके हुए सिर पर विभिन्न संकेत बनाकर की जाती है। यह जर्मनों के लिए परिचित था और

लोम्बार्ड्स ने इसके स्थान पर बकरी का सिर लगाया। प्राचीन लोग गधे के सिर पर जलता हुआ कार्बन रखते थे और उन लोगों के नाम बोलते थे जिन पर किसी अपराध का संदेह होता था। यदि नाम बोलने के साथ ही चटकने की आवाज़ आती थी, तो बाद वाले को दोषी व्यक्ति का नाम माना जाता था।

230.सिसिली के राजा रॉबर्ट **:** (चौदहवीं शताब्दी का अंग्रेजी रोमांस, लेखक अज्ञात)। इसे कभी छापा नहीं गया। यह बताता है कि कैसे सिसिली के राजा रॉबर्ट को गर्व के कारण एक पुजारी पर उपहास करने के लिए बहकाया गया था जो मास पढ़ रहा था। उसे दंडित करने के लिए, भगवान ने एक देवदूत को नीचे भेजा, और उसने रॉबर्ट का रूप धारण करके राजा को अपने मूर्ख की तरह बना दिया: उसे कुत्तों के साथ लेटने के लिए भेज दिया गया। एक लंबी और अपमानजनक तपस्या के बाद उसे आखिरकार अपना सही आकार फिर से पाने की अनुमति दी गई।

231.कीनोएटन्स **:** एक पत्थर जो शैतानों को बाहर निकालने में अच्छा माना जाता है।

232.किशुफ़**:** कबाला में, उच्च जादुई प्रभाव। यह दो शाखाओं में विभाजित है, एक प्राथमिक और एक आध्यात्मिक, और इसमें भूत-प्रेत भगाने की क्रिया शामिल है। कभी-कभी किशुफ़ मध्यकालीन समय की जादू-टोने से एक अद्भुत समानता प्रदर्शित करता है। जादूगरों के बारे में कहा जाता था कि वे खुद को जानवरों में बदल लेते थे, और बहुत कम समय में लंबी दूरी तय कर लेते थे। वे मनुष्यों और जानवरों में दर्द, बीमारी और मृत्यु भी पैदा कर सकते हैं। चुड़ैलों से और भी जुड़ी हुई हैं "महिलाएँ जो शेडिम के साथ एक अनुबंध करती हैं, और निश्चित समय पर उनसे मिलती हैं, उनके साथ नृत्य करती हैं, और इन आत्माओं से मिलने जाती हैं जो बकरियों के रूप में उनके सामने आती हैं।

कई देशों में ऐसी महिलाओं को मार दिया जाता है।" किशुफ़ का यह रूप सच्चा जादू है; दूसरा रूप, भौतिक किशुफ़, बल्कि दुष्ट सहानुभूति है, जिसमें विभिन्न उप-स्थितियों में झूठे "तालमेल" पैदा करके प्राकृतिक तत्वों पर परेशान करने वाले प्रभाव शामिल हैं।

233.चुम्बन**:** मध्य युग की कुख्यात चुड़ैल फ्लोरेंस न्यूटन पर कई बार आरोप लगाया गया था कि उसने लोगों को फुफकार के ज़रिए चुम्बन किया है। पहला आरोप एक नौकरानी पर लगाया गया था जिसने उसे भिक्षा देने से मना कर दिया था। लगभग एक हफ़्ते बाद चुड़ैल ने उसे हिंसक तरीके से चूमा, जिसके

बाद से उसे दौरे पड़ने लगे और उसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाया गया, कभी उसे दो पंखों वाले बिस्तरों के बीच रखा गया, और इसी तरह।

चुड़ैल ने डेविड जोन्स नामक एक व्यक्ति की भी हत्या कर दी, जो जेल में उसकी निगरानी कर रहा था, उसके हाथ चूमने से और उसी तरह से तीन यूगल एल्डरमेन के बच्चों की भी मौत हो गई।

234.कोमासो **:** पेड़ों पर निवास करने वाली बुरी आत्माएं।

235.कूंस का स्पिरिट रूम**:** 1852 में एक किसान जोनाथन कूंस द्वारा डोवर, एथेंस काउंटी, ओहियो में बनाया गया एक लॉग सेंस-रूम। कूंस, जो कि अध्यात्मवाद में जल्दी ही शामिल हो गए थे, को बताया गया था कि उनमें और उनके आठ बच्चों में मध्यम शक्तियाँ विकसित होंगी, और स्पिरिट-रूम का उपयोग उनके माध्यम द्वारा उत्पन्न अभिव्यक्तियों के लिए किया जाना था। कमरे में आध्यात्मिक सेंस के लिए आवश्यक उपकरण रखे गए थे - रैपिंग, टैम्बोरिन और अन्य संगीत वाद्ययंत्रों के लिए टेबल; फॉस्फोरस, जिसके माध्यम से आत्माएँ खुद को दिखा सकती थीं।

स्पिरिचुअल टेलीग्राफ के संपादक चार्ल्स पार्ट्रिज सहित बैठने वालों द्वारा देखी गई घटनाएँ विविध प्रकृति की थीं, लेकिन मुख्य रूप से उसी अवधि की अन्य अभिव्यक्तियों के समान थीं। कून की लॉग बिल्डिंग में आने वाली आत्माओं ने दावा किया कि वे आदम के समय से पहले रहने वाले पुरुषों का एक समूह थे - जिनकी संख्या एक सौ पैंसठ थी - और जिनसे जॉन और कैटी किंग जैसे प्रसिद्ध आत्मा व्यक्तित्वों का जन्म हुआ था।

236.केस्टाका जीन **:** जूल्स डोनेल का छद्म नाम। एक स्वर्गीय ज्ञानवादी और 33वीं डिग्री के दीक्षार्थी, जिन्होंने ईसाई दृष्टिकोण को अपनाया, उन्होंने "लूसिफ़र अन मास्क्ड" शीर्षक के तहत ला वेरियू के पन्नों में अपने शैतानी कारनामों का खुलासा किया। वह एक महिला, "मैडम एक्स" के निजी चैपल में शैतानी घटनाओं के बारे में बताता है, जो अक्सर उसके पन्नों में दिखाई देती है, और जिसे कैथनेस की दिवंगत काउंटेस माना जाता है, जो जैनसेन और शास्त्रीय देवताओं के दर्शन करती है।

साक्ष्य से यह निश्चित है कि एम. कोस्टका कभी भी शैतानी या लूसिफ़ेरियन पंथ के साथ व्यक्तिगत संपर्क में नहीं आया, और उसके शैतानी अनुभव केवल शौकिया शैतानवादी के थे।

237.ज़ेसोरीयर, मैरी**:** सोलहवीं सदी की एक चुड़ैल, जिसे नब्बे साल की उम्र में गिरफ़्तार किया गया था। पूछताछ करने पर उसने बताया कि वह अब चुड़ैल नहीं रही; वह रोज़ प्रार्थना करती थी; और उसने चालीस साल से सब्त का पालन नहीं किया था। सब्त के बारे में पूछे जाने पर उसने कबूल किया कि उसने शैतान को देखा था, और वह कुत्ते या बिल्ली के रूप में उसके पास आया था। उसने कहा कि एक बार उसने शैतान से प्रार्थना करके एक पड़ोसी को मार डाला था।

238.ज़ेफ़्लैटलॉन**:** अध्यात्मवादियों के बीच इस्तेमाल होने वाला एक शब्द • • मानव शरीर या अन्य वस्तुओं को हवा में ऊपर उठाने को दर्शाता है बिना किसी दृश्य साधन के, और संभवतः अशरीरी आत्माओं के माध्यम से। इस प्रकार मेजों और अन्य कम या ज्यादा वजनदार वस्तुओं का उत्तोलन भौतिक माध्यमों के बीच एक आम उपलब्धि है, चाहे अलौकिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता हो या न हो। पुराने समय की चुड़ैलों के बारे में भी माना जाता था कि वे अपनी रात्रि यात्राओं में कुछ हरकतों का इस्तेमाल करती थीं, अपने स्वामी शैतान की कलाओं द्वारा हवा में ले जाई जाती थीं। और भूत-प्रेत को भी हवा में लटका हुआ माना जाता था, बिना किसी सहारे के, जिस माध्यम से वह खुद को प्रकट करता था।

एक आध्यात्मिक घटना के रूप में मानव शरीर का उत्तोलन आंदोलन के शुरुआती चरण में ही जाना जाने लगा था, जिसे 1851 की शुरुआत में गॉर्डन माध्यम के संबंध में दर्ज किया गया था। लेकिन उत्तोलित माध्यमों में सबसे महत्वपूर्ण डी. डी. होम थे, और इस दिशा में उनके कई कारनामों के बारे में गवाहों द्वारा बताया गया है जो खुद उनकी वास्तविकता के बारे में आश्वस्त थे। हालांकि, यह ध्यान दिया जा सकता है कि उत्तोलन आमतौर पर एक अंधेरे सेंस-रूम में होता था, जब किसी भी अप्रिय घटना का एकमात्र संकेत होता था।

घटना की पुष्टि माध्यम के अपने उद्गारों से होती थी, इस तथ्य से कि उसकी आवाज़ हवा में बहुत ऊपर से आती हुई प्रतीत होती थी, और कभी-कभी उसके जूते कुर्सी के पिछले हिस्से या बैठने वालों में से किसी एक के हाथ को खरोंचते थे। रेव्ह. स्टेनटन मूसा, जो कई मौकों पर लेविटेटेड थे, ऐसा लगता है कि उन्होंने भी अंधेरे में या ज़्यादा से ज़्यादा अरे की रोशनी में अपनी सेंस आयोजित की थी। श्रीमती गुप्पी (नी निकोल्स) अपनी शादी से पहले कई बार लेविटेटेड थीं, इस तथ्य के बावजूद कि वह बहुत मोटी थीं, और बाद में लेविटेशन के बारे में एक दिलचस्प कहानी 8 जून, 1871 के इको में एक पत्र में बताई गई है।

239.उल्थ**:** विएरस और अन्य दानवविज्ञानियों के अनुसार,लिलिथ वह राजकुमार या राजकुमारी थी जो सुकुबी नामक राक्षसों की अध्यक्षता करती थी।

लिलिथ के अधीन राक्षसों का नाम उनके प्रमुख के समान ही था, और वे नवजात शिशुओं को नष्ट करना चाहते थे। इसी कारण से ट्यूज़ ने चार कोनों पर लिखा था।

240. लिटिल वर्ल्ड**:** एक गुप्त समाज को दिया गया नाम जिसने अठारहवीं शताब्दी में इंग्लैंड में स्टुअर्ट राजवंश को फिर से स्थापित करने की साजिश रची थी। इस समाज के बारे में कई कहानियाँ बताई जाती हैं - जैसे, उदाहरण के लिए, कि शैतान व्यक्तिगत रूप से उनकी सभाओं की अध्यक्षता करता था।

241. लोगो**:** फोहट **-** ईश्वर को नामित करने के लिए थियोसॉफी में बहुत आम तौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। महान धर्मों के साथ-साथ थियोसॉफी की योजना की शुरुआत एक ऐसे देवता से होती है, जो अपने आप में, मानवीय ज्ञान या धारणा से परे है, चाहे वह सामान्य हो या दिव्यदृष्टि वाली अवस्था में। लेकिन जब देवता अपने सृजन कार्यों के माध्यम से मनुष्य के सामने खुद को प्रकट करता है। उसे लोगोस के रूप में जाना जाता है। अनिवार्य रूप से वह अनंत है, लेकिन जब वह एक "रिंग पास-नॉट" को घेरता है जिसके भीतर एक ब्रहमांड का निर्माण होता है, तो उसने खुद के लिए सीमाएँ निर्धारित की हैं, और हम उसके बारे में जो कुछ भी जान सकते हैं वह इन सीमाओं में समाहित है।

हमारे लिए वह एक त्रिगुण पहलू में प्रकट होता है - ईसाई त्रिमूर्ति - लेकिन यह, निश्चित रूप से, केवल एक दिखावा है, और वास्तव में वह एक एकता है। यह त्रिगुण पहलू उसे इच्छा, बुद्धि और गतिविधि के रूप में दिखाता है, और इनमें से प्रत्येक से एक रचनात्मक जीवन तरंगें निकलीं, जिन्होंने ब्रहमांड का निर्माण किया। तीसरी से वह तरंग आई जिसने पदार्थ का निर्माण किया, दूसरी से वह तरंग आई जिसने फैले हुए पदार्थ को एकत्रित करके रूप दिया, और पहली से वह तरंग आई जिसने अपने साथ मोनाड को लाया, वह स्वयं की वह चमक जिसने निर्मित पदार्थ को अपने अधिकार में ले लिया, जिससे विकासवादी प्रक्रिया शुरू हुई।

242. ज़ोंडुन **:** फ्रांस के लाउडुन में स्थापित उर्सुलाइन्स का कॉन्वेंट 1633 में शैतानी कब्जे के प्रकोप का दृश्य था। कॉन्वेंट में रहने वाली कई ननों में शैतानी कब्जे के लक्षण दिखाई दिए, वे अजीबोगरीब भाषा में बात करती थीं और सबसे असाधारण और उन्मादी तरीके से व्यवहार करती थीं। यह मामला इतना बढ़ गया कि संस्था से जुड़ी लगभग सभी नन अस्थायी पागलपन की एक ही स्थिति में आ गईं। कॉन्वेंट की मदर सुपीरियर, जीन डे बेल्फ़िएल, उन्मादी स्वभाव की प्रतीत होती हैं और उन्होंने संस्था के अन्य कैदियों को संक्रमित करने में ज़्यादा

समय नहीं लगाया, वह, क्लेयर नाम की एक बहन और पाँच अन्य ननों के साथ, तथाकथित बुरी आत्माओं से ग्रस्त होने वाली पहली थीं। प्रकोप पड़ोसी शहर में फैल गया और पूरा मामला इतना निंदनीय हो गया कि रिचेल्यू ने इसकी जाँच के लिए एक आयोग नियुक्त किया।

शैतानों को भूत भगाने की प्रक्रिया से गुजरना पड़ा, जो इस मामले में निष्फल साबित हुई और ननों के हमले जारी रहे। लेकिन जब एक और अधिक भव्य समारोह आयोजित किया गया, तो वे खुद को दूर ले गए, लेकिन केवल थोड़ी देर के लिए, फिर से पहले से भी अधिक हिंसा के साथ वापस लौटे। संदेह, या बल्कि अन्याय, पूरे मामले के प्रमुख और स्रोत के रूप में कॉन्वेंट के कन्फ़ेसर अर्बेन ग्रैंडियर के व्यक्ति पर टिका हुआ था।

उन्हें गिरफ्तार किया गया और उन पर जादू-टोने के अभ्यास के माध्यम से ननों को शैतान के कब्जे में देने का आरोप लगाया गया। 'सच्चाई यह है कि पड़ोसी पादरी ग्रैंडियर से बेहद ईर्ष्या करते थे क्योंकि उन्होंने उनके सूबा में दो लाभ प्राप्त किए थे, जिसके वे मूल निवासी नहीं थे, और उन्होंने पहले संभव क्षण में उनके विनाश की योजना बनाई थी।

निर्दोष होने के उनके विरोध के बावजूद। दुर्भाग्यपूर्ण पुजारी को पड़ोसी प्रेसीडेंसी के न्यायाधीशों की एक परिषद के समक्ष पेश किया गया, जिन्होंने उसके शरीर पर विभिन्न निशान पाए जो निस्संदेह एक जादूगर के लक्षण थे, और ऐसा कहा जाता है कि जांच ने इस तथ्य को प्रकाश में लाया कि ग्रैंडियर की कोई अच्छी प्रतिष्ठा नहीं थी। हालाँकि, हमें उसके बारे में सबसे बुरी बात पर विश्वास करने से बचना चाहिए, क्योंकि इस बारे में स्रोत निस्संदेह धार्मिक पूर्वाग्रह से दूषित हैं।

ऐसा कहा जाता है कि उसके कागजात जब्त किए जाने पर उनमें धार्मिक अभ्यास को नष्ट करने वाली बहुत सी बातें पाई गईं। हालाँकि, वे शैतान के साथ उस समझौते को खोजने में विफल रहे, जिसकी उन्होंने तलाश की थी, हालाँकि बाद में इसके कई संस्करण कमोबेश भोले-भाले लोगों द्वारा प्रस्तुत किए गए और सड़क के किनारे बेचे गए।

दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति को खंभे पर जलाने की निंदा की गई - एक सजा जो विधिवत रूप से निष्पादित की गई। हालाँकि, उनकी मृत्यु के बाद, उन्मादी बहनों का कब्ज़ा खत्म नहीं हुआ; राक्षस पहले से कहीं ज़्यादा उग्र हो गए और उन्होंने अपने नामों का जवाब असमोडस, लेविथान और बेहेमोथ इत्यादि से दिया। सरीन नामक एक बहुत ही पवित्र भाई को इस मामले को खत्म करने के लिए नियुक्त किया गया था।

कमज़ोर और अस्वस्थ होने के बावजूद, उनके पास एक अदम्य आत्मा थी, और प्रार्थना में बहुत संघर्ष करने के बाद आखिरकार राक्षसों को भगाने में सफल रहे। पूरा मामला 1839 में प्रकाशित हिस्टोरिक डेस डायबल्स डे लाउडन में वर्णित है, जो आधुनिक समय के सबसे असाधारण जुनून में से एक का विस्तृत विवरण देता है।

243.लोयर, पियरे ला: सीउर डे ला ब्रोस, शाही पार्षद और जनसांख्यिकीविद्, का जन्म 1550 में अंजु के हुईउए में हुआ था। वह डिस्कोर्स एट हिस्ट्री डेस स्पेक्टर्स, विज़न्स एट अपैरिशन्स डेस एस्पिरिट्स, एंजेस, डेमन्स एट एंटेस सेंटॉन्ट्रेंट ऑक्स होमेस नामक कार्य के लेखक थे। यह कार्य आठ पुस्तकों में विभाजित है, जो सभी शताब्दियों के अद्भुत दर्शन और चमत्कारों से संबंधित हैं, और सबसे प्रसिद्ध लेखक पवित्र और साथ ही अपवित्र हैं, जिन्होंने गुप्त विषयों, प्रेत के कारण, अच्छी और बुरी आत्माओं की प्रकृति, राक्षसों, परमानंद, आत्माओं के सार, प्रकृति और उत्पत्ति, जादूगरों और टोना-टोटका करने वालों, उनके संचार के तरीके, बुरी आत्माओं और धोखेबाजों से निपटा है।

इसे पेरिस में 1605 में एक क्वार्टो वॉल्यूम में प्रकाशित किया गया था। पहली पुस्तक भूतों, प्रेत और आत्माओं से संबंधित है; दूसरी लोयर के समय के भौतिकी, इंद्रियों को होने वाले भ्रम, चमत्कार, जादू-टोने और जादू-टोने के अमृत और कायापलट से संबंधित है; तीसरी पुस्तक आत्माओं की डिग्री, ग्रेड और सम्मान स्थापित करती है, पबिलिनियन और पॉलीक्राइट्स के इतिहास का सारांश देती है, और भूतों और राक्षसों के साथ विविध रोमांचों का वर्णन करती है;

चौथी पुस्तक भूतों के प्रकट होने, राक्षसों से ग्रस्त व्यक्तियों की बातचीत, इन भूतों और राक्षसों के देशों और निवास स्थानों, अद्भुत शगुन आदि के कई उदाहरण देती है; पांचवीं आत्मा के विज्ञान, इसकी उत्पत्ति, प्रकृति, मृत्यु के बाद इसकी स्थिति और भूतों के बारे में बताती है; छठा भाग पूरी तरह से आत्माओं के प्रेत के साथ लिया गया है, और दिखाता है कि कैसे खुश लोग पृथ्वी पर वापस नहीं आते हैं, बल्कि केवल वे लोग लौटते हैं जिनकी आत्माएं पाताल में जल रही हैं;

सातवीं पुस्तक में जिनकी आत्माएं पाताल में जल रही हैं; सातवीं पुस्तक में एंडोर की चुड़ैल का मामला और सैमुअल की आत्मा का आह्वान, सामान्य रूप से आह्वान और इस विज्ञान में जादूगरों और जादूगरों द्वारा अपनाए जाने वाले तरीकों के बारे में बताया गया है; अंतिम पुस्तक भूत भगाने, धूम्रीकरण, प्रार्थना और शैतानों को बाहर निकालने के अन्य तरीकों और भूत भगाने वालों द्वारा

इन्हें नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सामान्य तरीकों का कुछ विवरण देती है। समग्र रूप से यह कार्य अत्यंत उत्सुक है, यद्यपि विवादास्पद और कुछ भागों में थोड़ा नीरस है, तथा उस समय के गुप्त विज्ञान पर काफी प्रकाश डालता है।

244. लुब्लन: वह मछली जिसका पित्त टोबियास ने अपने पिता की दृष्टि वापस लाने के लिए इस्तेमाल किया था। ऐसा कहा जाता है कि यह नेत्र रोग के विरुद्ध बहुत शक्तिशाली है, और इसका हृदय राक्षसों को भगाने में शक्तिशाली है।

245. लूसिफ़र: शाब्दिक रूप से उफ़-लाने वाला, शैतान की अवधारणा के लिए लागू किया जाने वाला नाम। जिसे अक्सर एक गिरे हुए तारे या देवदूत से तुलना की जाती है। लूसिफ़र की मिल्टन की अवधारणा एक ऐसी शक्ति के रूप में है जो अच्छाई या बुराई के लिए शक्तिशाली है, जिसने बहुत अच्छा किया हो सकता है, बहुत गर्वित और बहुत शक्तिशाली है, जो ज्ञानोदय के साथ असंगत है। वह केवल अच्छाई की अनुपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है; एक नकारात्मक इकाई जो सकारात्मक नहीं है। पुराने जादूगरों के विचारों के अनुसार, वह पूर्व की अध्यक्षता करता है।

उसे सोमवार को बुलाया जाता था, जिसके केंद्र में उसका नाम था। जादूगर के सामने प्रकट होने की अपनी विनम्रता की कीमत के रूप में उसने केवल एक चूहा मांगा। लूसिफ़र यूरोपीय और एशियाई लोगों को नियंत्रित करता है। वह एक सुंदर बच्चे के आकार में दिखाई देता है। जब वह क्रोधित होता है तो उसका चेहरा लाल हो जाता है, लेकिन उसके बारे में कुछ भी राक्षसी नहीं है। वह, दानव विज्ञान के कुछ छात्रों के अनुसार, पाताल लोक का महान न्यायधीश है। वह सब्त के दिन की प्रार्थनाओं में सबसे पहले पुकारा जाता है। [शैतान-पूजा देखें।)

246. मैग्ला पोस्टहुमा: 1706 में ओलमुट्ज़ में प्रकाशित और फर्डिनेंड डी शेर्टी द्वारा लिखित वैम्पायरवाद पर एक लघु ग्रंथ। इसकी समीक्षा करते हुए कैलमेट (q.v.) अपने शोध प्रबंध में कहते हैं कि पिशाच 1 "लेखक एक महिला की कहानी बताता है जो एक निश्चित गांव में मर गई, सभी संस्कार प्राप्त करने के बाद, और सामान्य समारोहों के साथ चर्चयार्ड में दफना दी गई। उसकी मृत्यु के लगभग चार दिन बाद, गांव के निवासी एक असामान्य शोर और चीख से भयभीत हो गए, और उन्होंने एक भूत देखा, कभी कुत्ते के आकार में, और कभी आदमी के रूप में, जो बहुत से लोगों को दिखाई दिया, और उन्हें अत्यधिक पीड़ा में डाल दिया, उनके गले को दबाकर और उनके स्तनों को दबाकर, लगभग दम घुटने तक।

कई ऐसे थे जिनके शरीर पर उसने चोट पहुंचाई, और उन्हें अत्यंत कमजोर कर दिया, जिससे वे पीले, दुबले और विकृत हो गए। उसका क्रोध कभी-कभी इतना अधिक होता था कि वह जानवरों को भी नहीं छोड़ता था, क्योंकि गायें अक्सर जमीन पर गिरी हुई, आधी मृत पाई जाती थीं; कभी-कभी कई बार उनकी दुम एक दूसरे से बंधी होती थी और उनकी भयानक रंभाहटें उनके दर्द को बयां कर देती थीं।

घोड़े अक्सर लगभग मरने की कगार पर पाए जाते थे, पसीने से लथपथ और सांस फूलने लगती थी, मानो वे एक लंबी और थकाऊ दौड़ में भाग ले रहे हों; और ये विपत्तियाँ कई महीनों तक जारी रहीं।" ग्रंथ के लेखक ने एक वकील की हैसियत से इस विषय की जाँच की है और तथ्य की बात तथा उससे उत्पन्न होने वाले कानूनी पहलुओं पर चर्चा की है।

उनका स्पष्ट मत है कि यदि संदिग्ध व्यक्ति वास्तव में इन शोरगुल, उपद्रवों और क्रूरता के कृत्यों का लेखक था, तो कानून शव को जलाने को उचित ठहराएगा, जैसा कि अन्य भूतों के मामले में किया जाता है जो फिर से आते हैं और जीवित प्राणियों को परेशान करते हैं। उन्होंने इस तरह के भूतों की कई कहानियाँ भी बताई हैं और उनके द्वारा की गई शरारतों का विवरण दिया है। अन्य कहानियों में से एक बोहेमिया के कदम शहर के पास ब्लो गाँव के एक चरवाहे की है, जो काफी समय तक एक साथ दिखाई दिया और कई लोगों को बुलाया, जो सभी आठ दिनों के भीतर मर गए।

अंत में, ब्लो के निवासियों ने चरवाहे के शरीर को खोदा और उसे एक खूँटा गाड़कर जमीन में गाड़ दिया। वह व्यक्ति, इस हालत में भी, इस पर हँसा उसने अपने आस-पास काम करने वाले लोगों से कहा कि वे उसे कुत्तों से बचाने के लिए एक छड़ी देने के लिए बहुत आभारी हैं। उसी रात उसने खुद को खंभे से उतारा, कई लोगों को डरा दिया, और कई लोगों की जान ले ली, जितना उसने अब तक नहीं किया था।

फिर उसे जल्लाद के हाथों में सौंप दिया गया, जिसने उसे शहर के बाहर जलाने के लिए एक गाड़ी में डाल दिया। जैसे-जैसे वे आगे बढ़े, शव सबसे भयानक तरीके से चीखने लगा, और अपने हाथ-पैर इधर-उधर फेंकने लगा, मानो वह जीवित हो, और जब उसे फिर से खंभे से मारा गया, तो उसने जोर से चीख मारी, और घाव से बहुत सारा ताजा, बहता हुआ खून निकला। अंत में शव को जलाकर राख कर दिया गया और इस निष्पादन ने भूत के प्रकट होने और गांव में उत्पात मचाने पर अंतिम रोक लगा दी।

यही तरीका अन्य स्थानों पर भी अपनाया गया है, जहां इन भूतों को देखा गया है और उन्हें जमीन से बाहर निकालने पर उनके शरीर ताजा और फूले हुए लगे हैं, उनके अंग लचीले और लचीले हैं, उनमें कोई कीड़े या सड़न नहीं है, लेकिन बहुत बदबू भी है। लेखक कई अन्य लेखकों के उद्धरण देता है, जो इन भूतों के बारे में जो कुछ उसने बताया है, उसकी पुष्टि करते हैं, जो, उसके अनुसार, अभी भी सिलेसिया और मोराविया के पहाड़ों में दिखाई देते हैं।

ऐसा लगता है कि उन्हें दिन और रात दोनों समय देखा जाता है और जो चीजें पहले उनकी थीं, वे बिना किसी व्यक्ति को उन्हें छूते हुए देखे, हिलती-डुलती और अपना स्थान बदलती देखी जाती हैं। और इन मामलों में एकमात्र उपाय, दिखाई देने वाले व्यक्तियों के सिर को काट देना और शरीर को जला देना है।

247.यह एक सर्वविदित तथ्य है कि काला जादू और टोना-टोटका अभी भी प्रचलित है, जिसे यहाँ विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है (कैविल पूजा देखें): लेकिन उस उच्च जादू का क्या जिसने कम से कम आधुनिक समय में इतने सारे प्रतिभाशाली लोगों को आकर्षित किया है? हम यह नहीं कह सकते कि जादुई विशेषज्ञों की वास्तविक परंपरा लेवी के साथ समाप्त हो गई, क्योंकि दुनिया के इतिहास में कभी भी ये सामान्य लोगों को ज्ञात नहीं हैं; लेकिन हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि महान कला का अभ्यास गुप्त रूप से पहले की तरह ही लगन से किया जाता है,

और पुराने दिनों के जादूगरों की तरह ही उच्च स्वभाव वाले लोग अभी भी निजी तौर पर उस कला का अनुसरण करते हैं, जो अपने सहोदर धर्म की तरह ही कम दिव्य नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य के मन में निम्न मूल से विकसित हुई है, जिसकी आत्मा समय के साथ स्वर्ग के प्रकाश को और अधिक दृढ़ता से प्रतिबिंबित करती है, जैसे कि भोर में समुद्र पहले मंद रूप से लाल हो जाता है, अंततः दिन के पूरे वैभव को प्रतिबिंबित करता है।

248. मटगटनॉट**,** एड्सले**:** उन माध्यमों में से एक, जिनके ट्रान्स कथनों को फ्रांसीसी अध्यात्मवादी अल्फोंस कैगनेट ने रिकॉर्ड किया है, जिन्होंने 1848 में अपनी एटकेन्स डे ला वी फ्यूचर डेवोर्स प्रकाशित की थी। उनके रुख, जिनके बारे में कैगनेट ने उपस्थित लोगों में से यथासंभव अधिक से अधिक लोगों से लिखित विवरण प्राप्त करने का प्रयास किया, सबसे मूल्यवान साक्ष्यों में से हैं, जो अध्यात्मवाद उत्पन्न कर सकता है। बैठने वालों के अनुपस्थित या मृत मित्रों के उनके विवरण विलक्षण रूप से सटीक थे, हालांकि उनकी आत्माओं के साथ

उनकी कथित बातचीत काल्पनिक प्रतीत होती है। कम से कम उनके सेंस संचार के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

249. भूतविद्या : मलेशिया में आम तौर पर जिन्न का भूत होता है, जिसमें कुछ हद तक पुरानी हिंदू आत्मा का मिश्रण होता है। इनकी संख्या एक सौ नब्बे है। इन्हें कभी-कभी "वफादार" और "काफिर" में विभाजित किया जाता है और आगे शाही संगीत वाद्ययंत्रों, राज्य और शाही हथियारों के जिन्न में विभाजित किया जाता है। अफ्रिट को भी जाना जाता है। फ़रिश्ते भी बहुत हैं और वे पूरी तरह से अरबी मूल के हैं। इनके अलावा मुख्य अलौकिक प्राणी इस प्रकार हैं: -पोलोंग, या परिचित; हंटू पेंट-बम, या भूत शिकारी; जादी-जादियन, या वेयर टाइगर; हंटू, या मारे गए व्यक्ति का भूत; जेमलंग, या पृथ्वी-आत्मा।

250. माल्फास: नरकीय क्षेत्रों का महान राष्ट्रपति, जहाँ वह कौवे के रूप में प्रकट होता है। जब वह मानव रूप में प्रकट होता है तो उसकी आवाज़ बहुत कर्कश होती है। वह अभेद्य गढ़ और मीनारें बनाता है, अपने दुश्मनों की प्राचीरें गिराता है, अच्छे कारीगर ढूँढ़ता है, परिचित आत्माएँ देता है, बलिदान स्वीकार करता है, और बलिदान करने वालों को धोखा देता है। चालीस सेनाएँ उसके अधीन हैं।

251. जेफैंड्रागोरस: दाढ़ी रहित छोटे आदमियों की आकृतियों में दिखने वाले जाने-पहचाने राक्षस। डेलरियो कहते हैं कि एक दिन एक मंदरागोरा, एक जादूगर के अनुरोध पर प्रवेश कर रहा था, जिस पर जादू-टोने के आरोप में मुकदमा चल रहा था, उसे न्यायाधीश ने बाहों में पकड़ लिया, जो आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता था, ताकि वह खुद को उसके अस्तित्व के बारे में यकीन दिला सके और उसे आग में फेंक दिया, जहाँ निश्चित रूप से वह बिना किसी नुकसान के बच जाएगा।

माना जाता है कि मंदरागोरा शैतान द्वारा जादूगरों को दी जाने वाली छोटी गुड़िया या आकृतियाँ होती हैं, ताकि ज़रूरत के समय उनसे सलाह ली जा सके; और ऐसा लगता है कि यह अवधारणा सीधे बुत से निकली है, जो किसी भटकती आत्मा के स्वागत के लिए एक जादूगर या औषधि-पुरुष द्वारा बनाया गया निवास स्थान है, जो वहाँ अपना निवास बनाना चाहता है।

पेटिट अल्बर्ट नामक कृति के लेखक कहते हैं कि एक बार, फ़्लैंडर्स में यात्रा करते समय और लिली शहर से गुज़रते समय, उन्हें उनके एक मित्र ने एक बूढ़ी महिला के घर चलने के लिए आमंत्रित किया, जो एक महान भविष्यवक्ता होने का दिखावा करती थी। इस वृद्ध व्यक्ति ने दोनों मित्रों को एक अंधेरे कैबिनेट में ले जाया, जो केवल एक दीपक से रोशन था, जहाँ वे एक कपड़े से ढकी हुई मेज

पर एक छोटी सी मूर्ति या मंडरागोरा को देख सकते थे, जो एक तिपाई पर बैठी थी और बायाँ हाथ आगे करके रेशम की एक बहुत ही नाज़ुक ढंग से बनी हुई रस्सी को पकड़े हुए थी, जिसमें से एक बहुत ही पॉलिश किया हुआ लोहे का एक छोटा सा टुकड़ा लटका हुआ था।

इसके नीचे एक क्रिस्टल ग्लास रखकर, ताकि लोहे का टुकड़ा प्याले के अंदर लटका रहे, बूढ़ी औरत ने आकृति को आदेश दिया कि वह लोहे को कांच पर इस तरह मारे जैसा वह चाहती है, साथ ही आकृति से कहा: "मैं तुम्हें आज्ञा देती हूँ, मंदरागोरा, उन लोगों के नाम पर जिनकी आज्ञाकारिता तुम्हें करनी है, यह जानने के लिए कि क्या यह सज्जन व्यक्ति अपनी यात्रा में खुश रहेगा जो वह करने जा रहा है। यदि ऐसा है, तो लोहे को प्याले पर तीन बार मारो।" लोहे ने मांग के अनुसार तीन बार मारा, बूढ़ी औरत ने किसी भी उपकरण को छूए बिना, बूढ़ी औरत ने किसी भी उपकरण को छूए बिना, दोनों दर्शकों को बहुत आश्चर्यचकित किया। जादूगरनी ने मंदरागोरा से कई अन्य प्रश्न पूछे, जिसने कांच पर एक या तीन बार मारा जैसा कि उसे अच्छा लगा।

लेकिन, जैसा कि लेखक ने दिखाया है, यह सब बूढ़ी औरत की एक चाल थी, क्योंकि प्याले में लटका हुआ लोहे का टुकड़ा बहुत हल्का था और जब बूढ़ी औरत चाहती थी कि यह कांच से टकराए, तो वह अपने एक हाथ में चुंबकीय पत्थर के एक बड़े टुकड़े से जड़ी एक अंगूठी पकड़ लेती थी, जिसके गुण से लोहा कांच की ओर खिंच जाता था। प्राचीन लोग मैनड्रैगोरस या मैनड्रेक नामक पौधे को बहुत गुण देते थे, जो कुछ हद तक एक आदमी के आकार का माना जाता था और जब इसे धरती से तोड़ा जाता था तो यह एक तरह की मानवीय चीख निकालता था। इसे कई तरह की बीमारियों से बचाने के लिए भी पहना जाता था।

252. मसीहा: वह देवदूत जिसके बारे में यहूदियों का मानना था कि वह राशि चक्र पर शासन करता है। उनकी रब्बी किंवदंतियों में से एक के अनुसार, मसलेह वह माध्यम था जिसके माध्यम से मसीहा की शक्ति और प्रभाव राशि चक्र के क्षेत्र में प्रसारित होता था।

253. भौतिकीकरण: एक शब्द जो आत्मा द्वारा एक अस्थायी भौतिक संगठन के निर्माण को दर्शाता है, जो दृश्यमान और स्पर्शनीय है, जिसके माध्यम से वह भौतिक वस्तुओं के संपर्क में आ सकती है। भौतिकीकरण आध्यात्मिकता की भौतिक घटनाओं में सबसे महत्वपूर्ण है, और इसके शुरुआती चरणों में यह सिर और हाथों या अस्पष्ट चमकदार आकृतियों के भौतिकीकरण तक ही सीमित था। अधिकांश भौतिक घटनाओं की तरह, इसकी उत्पत्ति अमेरिका में हुई थी, जहाँ इसे आंदोलन के इतिहास में तुलनात्मक रूप से शुरुआती दौर में जाना जाता था।

1860 की शुरुआत में रॉबर्ट डेल ओवेन और अन्य लोगों द्वारा फॉक्स बहनों के साथ सेंस आयोजित किए गए थे, जिसमें घूंघट और चमकदार आकृतियाँ देखी गईं। एक सिटर, मि। लिवरमोर ने केट फॉक्स के साथ सेंस की एक श्रृंखला के दौरान कई बार अपनी मृत पत्नी की आत्मा को देखा और पहचाना, जो लगभग छह वर्षों तक चली।

हालाँकि, इस मामले में, कोई अन्य सिटर नहीं था, और सेंस अंधेरे में आयोजित किए गए थे, पूरा माहौल धोखाधड़ी के लिए विशेष रूप से अनुकूल था। 1871 में एक अन्य अमेरिकी माध्यम, श्रीमती एंड्रयूज ने ऐसी बैठकें कीं, जिनमें भौतिक रूप देखे गए, और अगले वर्ष श्रीमती गुप्पी और एक अन्य माध्यम ने इंग्लैंड में इसी तरह की घटना के निर्माण का प्रयास किया, लेकिन कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली। माध्यम। हेम और विलियम्स, कुछ महीनों बाद एक अंधेरे सेंस-रूम में छायादार रूपों और चेहरों को भौतिक बनाने में सफल हुए। हालाँकि, यह मिस फ्लोरेंस कुक थीं, जिनकी घटनाओं के बारे में सर विलियम क्रुक्स ने बहुत अधिक गवाही दी है, जिन्होंने इस प्रकार की आत्मा अभिव्यक्ति का सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन किया।

मिस कुक, अपने आध्यात्मिक जीवन की शुरुआत में, सोलह या सत्रह साल की एक छोटी लड़की थीं, जिन्हें एक समकालीन लेखक ने "एक सुंदर, यहूदी जैसी छोटी लड़की" के रूप में वर्णित किया था। वह उस समय एक निजी माध्यम थीं, हालाँकि शुरुआत में उन्होंने हर्न के साथ कुछ भौतिकीकरण सत्र आयोजित किए थे। कहा जाता है कि बचपन से ही एक आत्मा लड़की उसके पास आती थी, जिसने बताया कि धरती पर उसका नाम एनी मॉर्गन था, लेकिन आत्मा की दुनिया में उसका नाम केटी किंग था।

बाद के नाम के तहत मिस कुक का नियंत्रण आध्यात्मिक हलकों में बहुत प्रसिद्ध हो गया था। आमतौर पर माध्यम को एक तरह की अलमारी या कैबिनेट में रखा जाता था, जिसे उसकी कुर्सी से बांध दिया जाता था और डोरियों को सील कर दिया जाता था। एक छोटा अंतराल होता था, जिसके दौरान बैठने वाले आध्यात्मिक भजन गाते थे, और अंत में कैबिनेट से एक आकृति निकलती थी जो सफेद रंग के कपड़े पहने होती थी और एक साधारण इंसान से अलग नहीं दिखती थी।

एक अवसर पर श्री कुक के घर पर एक सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें कई प्रतिष्ठित आध्यात्मिक लोग मौजूद थे। आमंत्रित अतिथियों में श्री डब्ल्यू. वोल्कमैन भी थे, जिन्होंने माध्यम की ईमानदारी और "केटी" की वास्तविकता को स्वयं परखने का विचार किया। लगभग चालीस मिनट तक भौतिक आत्मा

का बारीकी से निरीक्षण करने के बाद मि. वोल्कमैन ने निष्कर्ष निकाला कि मिस कुक और कैटी एक ही हैं, और जैसे ही सफ़ेद वस्त्र पहने व्यक्ति कैबिनेट में वापस जाने वाला था, वह आगे बढ़ा और उसे पकड़ लिया। उसके क्रोधित साथी-बैठे लोगों ने "आत्मा" को छोड़ दिया, प्रकाश बुझ गया, और उसके बाद होने वाली खलबली में आत्मा गायब हो गई।

मिस कुक को कुछ मिनट बाद उसी तरह से बंधा हुआ पाया गया जैसे कि उसे कैबिनेट में रखा गया था, डोरियाँ टूटी नहीं थीं, सील बरकरार थी। उसने एक काली पोशाक पहनी थी, और कैबिनेट में सफ़ेद पर्दों का कोई निशान नहीं था। सर विलियम क्रुक्स, जिन्होंने इस घटना की जांच की इस माध्यम के कुछ वर्षों की अवधि तक विस्तारित होने के कारण, श्री वोल्कमैन के पास केटी के दावों की जांच करने का बेहतर अवसर था, और उन्होंने यह रिकॉर्ड पर छोड़ दिया था कि आत्मा का रूप माध्यम से लंबा था, उसका चेहरा बड़ा था और उंगलियां लंबी थीं;

और जबकि फ्लोरेंस कुक के बाल काले और रंग गहरा था, केटी का रंग गोरा था, और उसके बाल हल्के भूरे रंग के थे। इसके अलावा, सर विलियम, केटी के पूर्ण विश्वास का आनंद लेते हुए, एक से अधिक अवसरों पर उसे और मिस कुक को एक ही समय में देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। लेकिन मिस कुक एकमात्र माध्यम नहीं थी जिसे केटी किंग द्वारा नियंत्रित किया गया था, जो अपने पिता जॉन किंग के साथ, समय के साथ भौतिकीकरण माध्यमों के साथ सबसे लोकप्रिय आत्मा बन गई।

उस समय से भौतिकीकरण निजी और व्यावसायिक दोनों माध्यमों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाने लगा, जिनमें श्रीमती शॉवर्स और उनकी बेटी रीटा, मिस लोटी फाउलर, विलियम एग्लिंटन और डी.डी. होम शामिल हैं; जबकि हाल के वर्षों में भौतिकीकरण यूसेपिया पल्लाडिनो की उपस्थिति में हुआ बताया जाता है। कई बैठने वालों ने इन लिपटी हुई आकृतियों और घूंघट वाले चेहरों में मृतक रिश्तेदारों और दोस्तों के रूप और विशेषताओं को देखने का दावा किया, हालांकि अक्सर इस तरह के दावे के लिए बहुत कम आधार होता था - माता-पिता अपनी बेटी को उसके बालों से पहचानते थे, एक आदमी अपनी माँ को उसकी टोपी के प्रकार से पहचानता था, और इसी तरह।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि धोखाधड़ी भौतिकीकरण सत्रों में बहुत बड़े पैमाने पर प्रवेश कर चुकी है और अभी भी प्रवेश कर रही है। माध्यमों के पास आम आकृतियाँ, मलमल के पर्दे, झूठे बाल और इसी तरह की संपत्तियाँ पाई गई हैं; साथी सत्र-कक्ष में तस्करी करके लाए गए हैं; रोशनी अक्सर कम कर दी जाती है या पूरी तरह से बुझा दी जाती है। इसमें यह तथ्य भी जोड़िए कि "केटी" के

अलावा अन्य आत्माएँ भी माध्यम के व्यक्तित्व में समाहित हो गई हैं, और यह देखा जाएगा कि संदेह पूरी तरह से अनुचित नहीं है।

फिर, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, मृतक मित्रों की जल्दबाजी और समय से पहले पहचान, जिनकी समानता माध्यम से कम रुचि रखने वाले पर्यवेक्षक के लिए स्पष्ट है, ने भी वास्तविक आत्मा के भौतिकीकरण के मामले को बर्बाद करने में बहुत योगदान दिया है। फिर भी, हमें आधुनिक जांचकर्ताओं में से कुछ सबसे प्रतिष्ठित लोगों के कथन पर विश्वास करना चाहिए, जो धोखाधड़ी की संभावनाओं के प्रति पूरी तरह से सजग हैं, सही अवलोकन की आदतों के लिए प्रशिक्षित हैं।

एम. फ्लेमरियन ने यूसेपिया पल्लाडिनो की उपस्थिति में देखे गए भौतिकीकरणों को माध्यम के व्यक्तित्व से निकलने वाले तरल उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए बाध्य महसूस किया, जबकि उन्हें दी गई पहचान को भ्रम का परिणाम माना। अन्य कहते हैं कि आत्मा द्वारा निर्मित भौतिक संगठन पदार्थ के सूक्ष्म कणों से बना है भौतिक जगत। समय-समय पर किए गए अनेक खुलासों की व्याख्या करने के लिए अध्यात्मवादियों द्वारा कमोबेश चतुराईपूर्ण चरित्र के विभिन्न सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं।

स्पष्ट धोखाधड़ी के एक मामले में वे घोषणा करते हैं कि आत्माओं ने कैबिनेट में विग और ड्रेपरियाँ छिपाने के लिए माध्यम को नियंत्रित किया है। यदि किसी व्यक्ति द्वारा आत्मा को पकड़े जाने पर वह स्वयं माध्यम साबित होती है तो इसका स्पष्टीकरण भी दिया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि माध्यम अपनी महत्वपूर्ण ऊर्जा का एक निश्चित हिस्सा आत्मा को प्रदान करता है, ताकि आत्मा "प्रकट" हो सके।

जब उत्तरार्द्ध को बेरहमी से पकड़ लिया जाता है तो माध्यम की महत्वपूर्ण आत्माओं के ये दो स्थान फिर से एकजुट हो जाते हैं, ताकि या तो माध्यम आत्मा को कैबिनेट में खींच ले, या आत्मा माध्यम को बाहर खींच ले। आम तौर पर कैबिनेट के बिना मिलन इसलिए होता है क्योंकि माध्यम ने अपनी ऊर्जा को जितना उसने बनाए रखा था, उससे अधिक नियंत्रण में दे दिया है।

254. उपचार माध्यम.**--**रोग का निदान और उपचार आध्यात्मिक माध्यमों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाता रहा है, जो पुराने सोमनाम्बुल्स और चुंबकीय विषयों के मार्ग का अनुसरण करते हैं। ये उत्तरार्द्ध न केवल अपने स्वयं के रोगों की प्रगति का पता लगाने के लिए, बल्कि निदान करने और उपचार का एक तरीका निर्धारित करने के लिए भी अभ्यस्त थे। शुरू में यह उन लोगों की

बीमारियों के लिए निर्धारित नहीं था जिनके साथ वे तालमेल में थे; और इसी तरह माध्यम, अपने नियंत्रण और रोगी के बीच तालमेल स्थापित करने के बाद, उपचार का एक तरीका निर्धारित करने के लिए प्रभावित होता था।

शुरू में यह उचित नहीं माना जाता था कि उपचार माध्यम अपनी सेवाओं के लिए कोई पारिश्रमिक स्वीकार करे, लेकिन बाद के उपचारकों ने आमतौर पर शुल्क की मांग की। यह सच है कि ईसाई वैज्ञानिकों, मेस्मेरिस्ट, मैग्नेटिस्ट और अन्य जैसे उपचार माध्यमों ने काफी हद तक वास्तविक उपचारों को प्रभावित किया है, लेकिन आत्मा के प्रभाव या सुझाव से यह एक ऐसा बिंदु है जिस पर बहुत अधिक मतभेद हैं। यहाँ चर्चा की जानी चाहिए।

यह दावा किया जाता है कई माध्यमों के लिए कि उन्होंने लंबे समय से चली आ रही बीमारियों को ठीक किया है, जिन्हें इनक्यूराब्ज कहा जाता था - हृदय रोग, क्षय रोग, कैंसर, पक्षाघात, और भी बहुत कुछ। कुछ लोगों को तुरंत ठीक करने की शक्ति का श्रेय भी दिया जाता है, जैसे कि क्योर डी'आर्स और अन्य चमत्कारी उपचारक। लूर्डेस के पानी की अद्भुत शक्ति को अध्यात्मवादियों द्वारा निर्जीव प्राणियों का उपहार माना जाता है, जो पहली बार एक बच्चे को उसके आत्मा मार्गदर्शक द्वारा एक सफेद देवदूत के रूप में प्रकट किया गया था।

255.मेटेमप्सिकोसिस या ट्रांसमाइग्रेशन: मृत्यु के समय आत्मा का उस शरीर के अलावा किसी दूसरे शरीर में जाना जिसे उसने छोड़ा है। मेटेमप्सिकोसिस में विश्वास प्राचीन काल में बहुत व्यापक था, और आज भी ब्राह्मवाद और बौद्ध धर्म में, साथ ही यूरोपीय लोक-कथाओं और अंधविश्वासों में जीवित है*

ब्राह्मण और बौद्ध मानते हैं कि आत्मा पिछले अवतार में अपने कर्मों के अनुसार किसी अन्य मानव शरीर, या निम्न जानवरों में से किसी एक के शरीर, या यहाँ तक कि किसी पौधे या पेड़ में भी प्रवेश कर सकती है। इस प्रकार यह लगातार अवतारों के लिए अभिशप्त है, जब तक कि सभी इच्छाओं और भावनाओं के दमन द्वारा यह सर्वोच्च सत्ता में खुद को खो नहीं देता।

पाइथागोरस और यूनानियों का विचार बहुत समान था, जो मानते थे कि सभी भौतिक अस्तित्व पिछले अवतार में किए गए पापों के लिए एक दंड है। वास्तव में यह संभव है कि पाइथागोरस ने अपना सिद्धांत ब्राह्मणवादी सिद्धांत से लिया हो। प्राचीन मिस्र के लोग भी मेटेमप्सिकोसिस में विश्वास करते प्रतीत होते हैं। अफ्रीका और अमेरिका की कुछ जंगली जनजातियों में आजकल आम तौर पर पुनर्जन्म को मान्यता दी जाती है। 1 ये जंगली लोग तब तक आत्मा को अपने तत्व से बाहर मानते हैं जब तक कि उसे रहने के लिए दूसरा शरीर नहीं

मिल जाता, जिसे वह जितनी जल्दी हो सके पा लेती है। टोटेमिज्म शायद आत्मा के जानवर के शरीर में जाने में विश्वास को बढ़ावा दे सकता है।

यूरोप में भी शुरुआती समय में मेटामसाइकोसिस में विश्वास पनपा और कई लोकप्रिय लोक-कथाएँ, जैसे कि स्कॉटलैंड में मिल्क-व्हाइट डू के नाम से जानी जाने वाली, जिसके कई रूप कई देशों में पाए जाते हैं, में मृतकों की आत्माओं के जानवरों, पक्षियों या मछलियों में प्रवेश करने का संदर्भ मिलता है। कुछ जगहों पर यह माना जाता है कि चुड़ैलें मरने पर खरगोशों में बदल जाती हैं और इसी कारण से इन इलाकों के लोग खरगोश खाने से इनकार करते हैं। यहूदी किबालिस्ट भी मेटामसाइकोसिस के सिद्धांत में विश्वास करते थे और इसके निशान स्वीडन बोर्ग के लेखन में पाए जाते हैं।

256.पिशाचवाद**:** जैसा कि देखा गया है, सहगुन मैक्सिकन नेक्रोमैंसर को पिशाच के साथ मिला देता है, और यह ध्यान देने योग्य बात है कि यह लोक-विश्वास किसी भी यूरोपीय संबंध से स्वतंत्र रूप से अमेरिका में उत्पन्न हुआ होगा। लेकिन हमें मेक्सिको में पिशाचवाद जैसा कुछ और उदाहरण मिलता है। यह उन महिलाओं के भूतों या भूतों के संबंध में पाया जाता है जो बच्चे को जन्म देते समय मर जाती हैं। ये चौराहे पर घूमते हैं, अपने पीछे छोड़े गए बच्चों के लिए रोते और चिल्लाते हैं।

लेकिन कई अन्य देशों की तरह, विशेष रूप से बर्मा में, वे दुष्ट हैं - उनकी बुरी प्रवृत्तियाँ संभवतः जीवित लोगों की खुशी के प्रति ईर्ष्या के कारण होती हैं। कहीं वे उनके घरों में घुसकर उनके बच्चों को घायल न कर दें, इसलिए मैक्सिकन लोग साल के कुछ समय में हर संभव छेद और दरार को बंद कर देते हैं। चौराहों पर इन भूतों (सहगुन ने इन्हें "देवी" कहा है) का प्रकट होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हम जानते हैं कि ऐसे चौराहों पर अपराधियों को दफनाना, पिशाच की लाश के इसी तरह के निपटान का एक उदाहरण मात्र था, जिसका सिर काटकर उसके बगल में रख दिया गया था, और जिसे उसके ठिकाने के बारे में भ्रमित करने के उद्देश्य से चौराहे पर दफनाया गया था।

257.मध्याह्न राक्षस**:** प्राचीन लोग अक्सर कुछ राक्षसों का उल्लेख करते थे जो विशेष रूप से मध्याह्न के समय उन लोगों को दिखाई देते थे जिनके साथ उनका समझौता होता था। वे मनुष्यों या जानवरों के रूप में प्रकट होते थे, और खुद को किसी पात्र, आकृति, शीशी या किसी खोखले वलय के अंदर बंद कर लेते थे।

258.खदानें**,** भूतिया **:** यह विश्वास कि खदानें भूतिया होती हैं, एक प्राचीन और सार्वभौमिक मान्यता है, जो संभवतः उनमें सुनाई देने वाली कई अजीबोगरीब

आवाज़ों और गूँजों तथा निरंतर उदासी से उत्पन्न होती है। कभी-कभी भूतिया भूत-प्रेत भयावह ज्वलंत आँखों वाले विशालकाय जीव होते हैं। ऐसा ही एक जर्मन "बर्गमडनच" था, जो एक भिक्षु के वेश में एक भयानक व्यक्ति था, जो, हालांकि, उन लोगों के सामने सामान्य मानव रूप में प्रकट हो सकता था जिनके प्रति वह अच्छा व्यवहार करता था।"

खदानों में अक्सर अजीबोगरीब दस्तकें सुनाई देती हैं। जर्मनी में इन्हें कोबोल्ड्स के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, जो दुर्भावनापूर्ण स्वभाव के छोटे काले प्राणी हैं। कभी-कभी सफ़ेद खरगोश या खरगोश भी देखे जाते हैं। भूमिगत जीवन में निरंतर खतरे के कारण कई अलौकिक "चेतावनी" उत्पन्न होती हैं, जो आम तौर पर रहस्यमय आवाज़ों का रूप लेती हैं। इंग्लैंड के मिडलैंड काउंटियों में "सेवन व्हिसलर" प्रसिद्ध हैं और उनकी चेतावनियों पर गंभीरता से ध्यान दिया जाता है।

कोयले से भरे टब पर एक हल्की नीली लौ जल रही थी, जिसे "ब्लूकैप" कहा जाता था और उसका काम कोयले के टब को ट्रॉली-वे की ओर ले जाना था। ब्लूकैप अपनी सेवाएँ मुफ़्त में नहीं देता था। हर पखवाड़े उसकी मज़दूरी खदान के एक कोने में छोड़ दी जाती थी और उसे उचित तरीके से हड़प लिया जाता था। एक और शरारती योगिनी "कट्टी सोम्स" थी, जो टब में एक सहायक पुटर को जोड़कर निशानों या सोम्स को काटती थी। बेसिलिस्क, जिनकी भयानक आँखें खनिक को मार देती थीं, भूमिगत कार्यकर्ता के लिए भय का एक और स्रोत थे।

ये, साथ ही साथ अन्य रहस्यमय दुश्मन जो घातक प्रहार करते थे, उन्हें खूंखार, लेकिन किसी भी तरह से भूतिया, अग्नि-नम से जोड़ा जा सकता है। कीमती धातुओं की खदानें अभी भी अलौकिक प्राणियों द्वारा ईर्ष्यापूर्वक संरक्षित हैं। पृथ्वी-तत्व के प्राणी ग्नोम, भूमिगत खजाने के विशेष संरक्षक हैं, और वे अपने प्रांत को परेशान करने के लिए बहुत चिंतित नहीं हैं। कीमती पत्थरों वाली खदानों की भी उतनी ही अच्छी तरह से देखभाल की जाती है।

पेरू के भारतीय कहते हैं कि पन्ना की खदानों में बुरी आत्माएँ रहती हैं, जबकि लॉस एस्मेराल्डोस के पड़ोस में एक खदान की रक्षा एक डरावने ड्रैगन द्वारा की जाती है। यह भी कहा गया है कि ज़हरीले धुएं और गैसें जो अक्सर खनिकों के जीवन को नष्ट कर देती हैं, वे बुरी आत्माओं द्वारा विकीर्ण किए गए हानिकारक प्रभाव हैं।

259.मोनाड : एक थियोसोफिकल शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है एक इकाई (ग्रीक मोनास)। मोनाड को अक्सर "दिव्य चिंगारी" के रूप में वर्णित किया जाता

है, और यह धारणा विशेष रूप से उपयुक्त है, क्योंकि यह लोगो, दिव्य अग्नि का एक हिस्सा है। लोगो के तीन पहलू हैं। इच्छा, बुद्धि और गतिविधि, और, चूंकि मोनाड लोगो का हिस्सा है, इसलिए इसमें भी ये तीन पहलू हैं। यह लगातार अपनी उपयुक्त दुनिया, मोनाडिक में रहता है, लेकिन, दिव्य विकासवादी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, इसकी किरण पदार्थ के विभिन्न क्षेत्रों के माध्यम से नीचे की ओर ले जाती है जब तीसरी जीवन लहर का प्रवाह होता है।

यह पहले आध्यात्मिक पदार्थ के एक परमाणु के साथ खुद को तैयार करके आध्यात्मिक क्षेत्र में गुजरता है और इस प्रकार एक परमाणु शरीर में खुद को प्रकट करता है, तीन पहलुओं वाली आत्मा के रूप में। जब यह अगले क्षेत्र, अंतर्ज्ञान में प्रवेश करता है, तो यह अपनी इच्छा के पहलू को पीछे छोड़ देता है और अंतर्ज्ञान क्षेत्र में, एक अंतर्ज्ञान शरीर में एक आत्मा के रूप में प्रकट होता है जिसमें बुद्धि और क्रियाशीलता के पहलू होते हैं।

इस क्षेत्र से अगले उच्च मानसिक क्षेत्र में जाने पर, यह बुद्धि के पहलू को पीछे छोड़ देता है, और एक आकस्मिक शरीर में एक आत्मा के रूप में प्रकट होता है जिसमें क्रियाशीलता का पहलू होता है। इस कुछ हद तक गूढ़ सिद्धांत को दूसरे रूप में कहें तो, इस स्तर पर, मोनाड ने खुद को तीन क्षेत्रों में प्रकट किया है। आध्यात्मिक में इसने आत्मा को इच्छाशक्ति से, अंतर्ज्ञान में इसने आत्मा को बुद्धि से और उच्च मानसिक में इसने आत्मा को क्रियाशीलता या बुद्धि से संक्रमित कर दिया है, और अब यह एक मानवीय अहंकार है, जो लगभग सामान्य शब्द **आत्मा" के अनुरूप है, एक अहंकार जो सभी परिवर्तनों के बावजूद तब तक एक जैसा रहता है जब तक कि अंततः विकासवादी उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता और इसे फिर से लोगो में वापस प्राप्त नहीं कर लिया जाता।

उच्च मानसिक क्षेत्र से मोनाड निम्न मानसिक क्षेत्र में उतरता है और एक मानसिक शरीर में मन के रूप में प्रकट होता है, फिर सूक्ष्म क्षेत्र में जाता है और सूक्ष्म शरीर में भावना के रूप में प्रकट होता है और अंत में भौतिक क्षेत्र में जाता है और एक भौतिक शरीर में जीवन शक्ति के रूप में प्रकट होता है। ये तीन निम्न शरीर, मानसिक, सूक्ष्म और भौतिक, मानव व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं जो मृत्यु पर मर जाता है और जब मोनाड पुनर्जन्म की प्रक्रिया को पूरा करने के लिए इन शरीरों में फिर से प्रकट होता है, तो इसका नवीनीकरण होता है।

260.धन**:** शैतान से मिलने वाला धन घटिया किस्म का होता है और ऐसा धन, परी-धन की तरह, आम तौर पर धरती, सीसा, टोड या किसी अन्य बेकार या घृणित वस्तु में बदल जाता है। टूर्स के ग्रेगरी कहते हैं, "एक युवक को एक अजनबी से मुड़ा हुआ कागज़ मिला, जिसने उससे कहा कि वह इससे जितना

चाहे उतना पैसा निकाल सकता है, बशर्ते कि वह इसे खोले नहीं। युवक ने कागज़ों से कई सोने के सिक्के निकाले, लेकिन आखिरकार जिज्ञासा ने उसे काबू में कर लिया, उसने इसे खोला और एक बिल्ली और एक भालू के पंजों के भीतर एक टोड के पैर और अन्य घृणित टुकड़े पाए, जबकि उसी क्षण उसका धन गायब हो गया।"

लोकप्रिय अंधविश्वास में यह माना जाता है कि यदि कोई व्यक्ति पहली बार कोयल को अपनी जेब में पैसे के साथ सुनता है, तो उसके पास पूरे साल कुछ पैसे होंगे, जबकि यदि वह उसी भाग्यशाली स्थिति में पहली बार अमावस्या को देखता है, तो उसे पूरे महीने पैसे की कमी नहीं होगी।

261.मोप्सेस: जर्मनी में आयातित एक गुप्त संघ, जो ज्ञानवादी सब्बाथ के अनुष्ठानों का जश्न मनाता था। इसने कबालीवादी "बकरी" की जगह हर्मेटिक एम कुत्ते को पूजा की वस्तु के रूप में स्थापित किया। आदेश के लिए उम्मीदवार को एक बड़े हंगामे के बीच आंखों पर पट्टी बांधकर निपुण लोगों के घेरे में लाया जाता था, और मूर्ति को सलाम करने के बाद दीक्षा दी जाती थी। पहचान का संकेत एक मुंह बनाना था। हालांकि समाज का पूरा सिद्धांत काले जादू का था।

मोप्सेस ने केवल कैथोलिकों के बीच भर्ती की, और स्वागत समारोह में शपथ के लिए उन्होंने आदेश के किसी भी रहस्य को उजागर न करने के लिए सम्मान पर एक गंभीर प्रतिबद्धता को प्रतिस्थापित किया, - जिसके अभ्यास मध्ययुगीन जादूगरों के सब्बाथ से बहुत मिलते जुलते थे।

262.नेक्रोमेंसी: या मृतकों की आत्माओं के माध्यम से भविष्यवाणी, ग्रीक शब्दों नेक्रोस, मृत; और मैंटिया, भविष्यवाणी से। यह अपने इतालवी रूप निग्रोमेंसिया के माध्यम से है कि इसे "ब्लैक आर्ट" के रूप में जाना जाने लगा। यूनानियों के साथ यह मूल रूप से मृतकों से परामर्श करने के लिए पाताल लोक में उतरने का संकेत देता था, न कि मृतकों को फिर से नश्वर क्षेत्र में बुलाने का। यह कला लगभग सार्वभौमिक उपयोग की है। आधुनिक विशेषज्ञों के बीच नेक्रोमेंसी कला में उचित रूप से अपनाए जाने वाले सटीक तरीकों के बारे में काफी मतभेद हैं, और यह ध्यान में रखना चाहिए कि नेक्रोमेंसी, जिसे मध्य युग में जादू कहा जाता था, आधुनिक आध्यात्मिक अभ्यास में बदल जाती है। हालाँकि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि नेक्रोमेंसी गुप्तविद्या की कसौटी है, क्योंकि अगर सावधानीपूर्वक तैयारी के बाद विशेषज्ञ आत्मा को दूसरी दुनिया से ऊपर उठाने में सफल हो जाता है, तो उसने अपनी कला का मूल्य साबित कर दिया है।

इस स्थान पर इस बात पर मनोवैज्ञानिक चर्चा करना निरर्थक होगा कि यह कार्य संभव है या नहीं, और हम अपने आपको अतीत के ऋषियों द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री तक ही सीमित रखेंगे, जिन्होंने इस प्रक्रिया को किस प्रकार से अपनाया जाना चाहिए, इस बारे में पूर्ण विवरण छोड़ा है। जादूगर और शैतान के बीच समझौता होने की स्थिति में, किसी समारोह की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि जादूगर हमेशा अपने स्वामी के आदेश का पालन करने के लिए तैयार रहता है। -

हालांकि, सच्चे जादूगर के साथ ऐसा कभी नहीं होता, जो अपनी स्वतंत्रता का ख्याल रखता है, और कला के अपने गहन ज्ञान और अपनी कमांड की शक्तियों पर भरोसा करता है; इसलिए उसका उद्देश्य किसी आत्मा को अपने सामने आने के लिए "बाधित" करना और ऐसे प्राणियों को भड़काने के खतरे से खुद को बचाना होता है। यह समझना चाहिए कि जादूगर के पास हमेशा एक सहायक होता है, और नामित प्रत्येक वस्तु को काले जादू में अच्छी तरह से ज्ञात नियमों के अनुसार तैयार किया जाता है।

सबसे पहले उन्हें ऐसे उद्देश्य के लिए उपयुक्त स्थान तय करना होता है; जो या तो भूमिगत तिजोरी में होना चाहिए, जिसके चारों ओर काला कपड़ा लटका हो, और जिसे जादुई मशाल से रोशन किया गया हो; या फिर किसी घने जंगल या रेगिस्तान के बीच में, या किसी विस्तृत, कम भीड़-भाड़ वाले मैदान में, जहाँ कई सड़कें मिलती हों, या प्राचीन महलों, मठों, मठों आदि के खंडहरों के बीच, या समुद्र तट पर चट्टानों के बीच, किसी निजी चर्च के प्रांगण में, या किसी अन्य गंभीर, उदास स्थान पर रात के बारह से एक बजे के बीच, या तो जब चाँद बहुत चमकीला चमक रहा हो, या फिर जब तत्व गड़गड़ाहट, बिजली, हवा और बारिश के तूफानों से विचलित हों;

क्योंकि, इन स्थानों, समयों और ऋतुओं में, यह तर्क दिया जाता है कि आत्माएँ कम कठिनाई से खुद को नश्वर आँखों के सामने प्रकट कर सकती हैं, और इस मौलिक बाहरी दुनिया में कम से कम दर्द के साथ दिखाई देती रहती हैं। जब उचित समय और स्थान तय हो जाता है, तो एक जादुई घेरा बनाया जाता है, जिसके भीतर, गुरु और उनके सहयोगी को सावधानीपूर्वक सेवानिवृत्त होना होता है।

घेरे के आयाम इस प्रकार हैं: - आम तौर पर जमीन का एक टुकड़ा चुना जाता है, नौ फीट वर्ग, जिसकी पूरी सीमा पर एक के भीतर एक समानांतर रेखाएं खींची जाती हैं, जिनके बीच में कई क्रॉस और त्रिकोण होते हैं, जिसके करीब पहला या बाहरी घेरा बनाया जाता है, फिर, उसी के भीतर लगभग आधा फीट की दूरी पर,

एक दूसरा घेरा बनाया जाता है, और उसके भीतर पहले के अनुरूप एक और वर्ग बनाया जाता है, जिसके केंद्र में वह सीट या स्थान होता है जहां गुरु और सहयोगी को रखा जाता है।

आकृति की विभिन्न रेखाओं और कोणों द्वारा बनाई गई रिक्तियों को भगवान के पवित्र नामों से भर दिया जाता है, जिनके बीच में क्रॉस और त्रिकोण होते हैं। जादूगरों और अन्य लोगों द्वारा मंडलियों की स्थापना और उपयोग के लिए दिए गए कारण यह है कि इतनी सारी भूमि पवित्र शब्दों और अनुष्ठानों द्वारा पवित्र और पवित्र की जाती है, जिसका उपयोग वे इसे बनाने में करते हैं, इसमें सभी बुरी आत्माओं को अपनी सीमाओं से बाहर निकालने के लिए एक गुप्त शक्ति होती है, और शुद्ध पवित्र जल से छिड़के जाने पर, भूमि सभी अशुद्धियों से शुद्ध हो जाती है;

इसके अलावा, भगवान के पवित्र नाम इसके हर हिस्से पर लिखे होने के कारण, इसकी शक्ति इतनी शक्तिशाली हो जाती है कि कोई भी बुरी आत्मा इसे तोड़ने या जादूगर या उसके साथी तक पहुँचने की क्षमता नहीं रखती है, क्योंकि वे इन पवित्र नामों के प्रति स्वभाव से ही द्वेष रखते हैं। और त्रिकोणों के लिए दिया गया कारण यह है कि यदि आत्मा को सच बोलने के लिए आसानी से नहीं लाया जा सकता है, तो उन्हें भूत भगाने वाले द्वारा उसी में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जहाँ, भगवान के सार और दिव्यता के नामों के आधार पर, वे केवल वही बोल सकते हैं जो सच और सही है।

इसलिए, इस विवरण के अनुसार, यह चक्र जादूगर का मुख्य किला और ढाल है, जहाँ से उसे अपनी जान जोखिम में डालकर भी तब तक नहीं निकलना चाहिए, जब तक कि वह आत्मा को पूरी तरह से त्याग न दे, खासकर अगर वह उग्र या नरक प्रकृति का हो। ऐसे कई उदाहरण दर्ज हैं जो इस तरह से मारे गए इसका मतलब है; खास तौर पर "चियांकुंगी", जो मिस्र का प्रसिद्ध ज्योतिषी था, जो 17वीं शताब्दी में इंग्लैंड में बहुत प्रसिद्ध था।

उसने एक शर्त लगाई, आत्मा को जगाने के लिए •'बोकिम," और चक्र का वर्णन करने के बाद, उसने अपनी बहन नेपुला को अपने सहयोगी के रूप में अपने पास बैठाया। भूत भगाने के तरीकों को बार-बार दोहराने और आत्मा को प्रकट होने के लिए कहने के बाद, और अभी तक उसकी मांग का जवाब नहीं मिलने पर, वे व्यवसाय से अधीर हो गए, और चक्र छोड़ दिया, लेकिन इसकी कीमत उन्हें अपनी जान देकर चुकानी पड़ी; क्योंकि वे तुरंत उस नारकीय आत्मा द्वारा पकड़ लिए गए और कुचल कर मारे गए, जो उस क्षण तक पर्याप्त रूप से विवश नहीं थी, ताकि वह खुद को मानवीय आँखों के सामने प्रकट कर सके।

जादू के घेरे को पवित्र करने का एक निर्धारित तरीका है, जिसे हम सामान्य दृष्टांत में अनावश्यक मानकर छोड़ देते हैं। जादूगर की उचित पोशाक या "पोंटिफ़िकलिबस" एक बढ़िया सफ़ेद लिनन से बना एक एफ़ोद है, उसके ऊपर काले रंग के बोम्बैज़िन का एक पुजारी का लबादा है, जो ज़मीन तक पहुँचता है, जिस पर कुंवारी चर्मपत्र पर सही ढंग से खींची गई पृथ्वी की दो मुहरें हैं, और उसके बाहरी वस्त्र के सीने पर चिपका दी गई हैं। उसकी कमर के चारों ओर एक चौड़ी पवित्र कमरबंद बंधी हुई है, जिस पर या, या,—ऐ, ऐ,—एलिब्रा,—एल्चिम,—सदाई,—पाह अडोनाई,—तुओ रोबोर,—सिंकटस सम नाम लिखे हैं।

उसके जूतों पर चारों ओर क्रॉस के साथ टेट्राग्रामराटन लिखा होना चाहिए; उसके सिर पर सैबल सिल्क की एक ऊँची मुकुट वाली टोपी और उसके हाथ में एक पवित्र बाइबल है, जो शुद्ध हिब्रू में छपी या लिखी हुई है। इस तरह से तैयार होकर, और मंत्रमुग्ध घेरे में खड़े होकर, जादूगर भूत-प्रेत भगाने के भयानक रूप को दोहराता है; और कुछ ही देर में, राक्षसी आत्माएँ अजीब और डरावनी आवाज़ें, चीखें, काँपना, चमकना और सबसे भयानक चीखें और चिल्लाहटें निकालती हैं, जो उनके दिखने के पूर्व संकेत हैं।

उनका पहला रूप आम तौर पर भयंकर और भयानक शेरों या बाघों के रूप में होता है, जो आग उगलते हैं और घेरे के चारों ओर भयानक रूप से दहाड़ते हैं; इस दौरान भूत-प्रेत भगाने वाले को किसी भी तरह की घबराहट नहीं होनी चाहिए; क्योंकि, उस स्थिति में, वे प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे और परिणाम उसके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

इसके विपरीत, उसे दृढ़ संकल्प का एक हिस्सा जुटाना चाहिए और सभी तरह के बंधन और कारावास को दोहराना जारी रखना चाहिए, जब तक कि वे त्रिकोण के प्रभाव के करीब नहीं आ जाते, जब उनके रूप कम क्रूर और डरावने दिखने लगेंगे और अधिक विनम्र और विनम्र बन जाएँगे। जब इस तरह से जादू के रूपों को पर्याप्त रूप से दोहराया जाता है, तो आत्माएं अपने पाशविक रूपों को त्याग देती हैं, और मानव रूप में प्रवेश करती हैं, सौम्य चेहरे और व्यवहार वाले नग्न पुरुषों की तरह दिखाई देती हैं, फिर भी जादूगर को सावधान रहना चाहिए कि वे उसे ऐसे कोमल इशारों से धोखा न दें, क्योंकि वे उन लोगों के साथ अपने व्यवहार में अत्यधिक धोखेबाज और धोखेबाज हैं जो उन्हें बिना किसी समझौते के प्रकट होने के लिए मजबूर करते हैं, उनके पास उसके दिमाग को वश में करने या उसके विनाश को पूरा करने के अलावा और कुछ नहीं होता है। समारोह समाप्त होने के

बाद भी बहुत सावधानी से आत्मा को बाहर निकालना चाहिए, और उसने उससे की गई सभी मांगों को पूरा किया है।

जादूगर को तब तक धैर्यपूर्वक इंतजार करना चाहिए जब तक कि वह अपने आने की घोषणा करने वाले सभी भयानक रूपों से गुजर न जाए, और केवल जब आखिरी चीख बंद हो जाए, और आग और गंधक का हर निशान गायब हो जाए, तो वह घेरे को छोड़ सकता है और सुरक्षित रूप से घर लौट सकता है। यदि किसी मृत व्यक्ति की आत्मा को जगाना है, तो आधी रात को कब्र का सहारा लेना चाहिए, और जादू-टोना का एक अलग रूप आवश्यक है।

फिर भी एक और, किसी भी शव के लिए नरक संस्कार है जो लटका हुआ है, डूब गया है, या अन्यथा खुद को मार डाला है; "और इस मामले में जादू-टोना शरीर पर किया जाता है, जो अंत में उठेगा, और सीधा खड़ा होकर, एक कमजोर और खोखली आवाज़ में उन सवालों का जवाब देगा जो उससे पूछे जाते हैं। एलीपस लेवी, अपने अनुष्ठान में पारलौकिक जादू कहते हैं कि 'उद्बोधन में हमेशा एक मकसद और एक उचित अंत होना चाहिए, अन्यथा वे अंधकार और मूर्खता के काम हैं, स्वास्थ्य और तर्क के लिए खतरनाक हैं।'

किसी आह्वान का स्वीकार्य मकसद प्यार या बुद्धिमत्ता हो सकता है। प्रेम के आह्वान के लिए कम उपकरणों की आवश्यकता होती है और हर तरह से आसान होते हैं। प्रक्रिया इस प्रकार है: ** सबसे पहले, हमें उस व्यक्ति की स्मृतियों को ध्यानपूर्वक एकत्रित करना चाहिए जिसे हम देखना चाहते हैं, जिन वस्तुओं का उसने उपयोग किया था और जिन पर उसकी छाप बनी हुई है; हमें वह कमरा भी तैयार करना चाहिए जिसमें वह व्यक्ति रहता था, या अन्यथा उसी तरह का कमरा, और उसमें उसका चित्र सफेद कपड़े में लपेटकर रखना चाहिए, उसके पसंदीदा फूलों से घिरा होना चाहिए, जिन्हें प्रतिदिन नवीनीकृत किया जाना चाहिए। फिर एक निश्चित तिथि मनाई जानी चाहिए, या तो व्यक्ति का जन्मदिन, या वह दिन जो उसके और हमारे अपने स्नेह के लिए सबसे भाग्यशाली था, जिसमें से एक पर हम विश्वास कर सकते हैं कि उसकी आत्मा, चाहे कहीं और धन्य हो, स्मृति को नहीं खो सकती; यह स्मरण का दिन होना चाहिए, और हमें चौदह दिनों के अंतराल के दौरान इसके लिए व्यवस्था करनी चाहिए।

इस अवधि के दौरान हमें किसी को भी स्नेह के वही सबूत देने से बचना चाहिए जो हमें मृतकों से उम्मीद करने का अधिकार है; हमें सख्त शुद्धता का पालन करना चाहिए, एकांत में रहना चाहिए, और प्रतिदिन केवल एक मामूली और हल्का स्नान करना चाहिए। हर शाम उसी समय हमें शोकग्रस्त व्यक्ति की

स्मृति में समर्पित कक्ष में खुद को बंद कर लेना चाहिए, केवल एक छोटी सी रोशनी का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि अंतिम संस्कार के दीपक या मोमबत्ती की। यह प्रकाश हमारे पीछे रखा जाना चाहिए, चित्र को खुला रखना चाहिए और हमें इसके सामने एक घंटे तक मौन रहना चाहिए; अंत में, हमें कमरे में थोड़ी अच्छी धूपबत्ती जलाकर पीछे की ओर चले जाना चाहिए।

आह्वान के लिए निर्धारित दिन की सुबह, हमें खुद को ऐसे सजाना चाहिए जैसे कि किसी उत्सव के लिए, पहले किसी को सलाम न करें, रोटी, शराब और जड़ों या फलों का एक ही भोज बनाएं; कपड़ा होना चाहिए भोजन सफेद होना चाहिए, दो ढक्कन रखे जाने चाहिए, और टूटी हुई रोटी का एक हिस्सा अलग रखा जाना चाहिए; जिस व्यक्ति का हम आह्वान करना चाहते हैं उसके गिलास में थोड़ी शराब भी रखनी चाहिए।

भोजन को आह्वान कक्ष में अकेले और ढके हुए चित्र की उपस्थिति में खाया जाना चाहिए; अंत में सब कुछ हटा दिया जाना चाहिए। मृत व्यक्ति का गिलास और उसकी रोटी का हिस्सा छोड़कर, जिसे चित्र के सामने रखा जाना चाहिए। शाम को, नियमित यात्रा के समय, हमें चुपचाप कक्ष में जाना चाहिए, सरू की लकड़ी की एक स्पष्ट आग जलानी चाहिए, और उस पर सात बार धूप डालना चाहिए, उस व्यक्ति का नाम उच्चारण करना चाहिए जिसे हम देखना चाहते हैं। फिर दीपक को बुझा देना चाहिए, और आग को बुझने देना चाहिए। इस दिन चित्र का अनावरण नहीं किया जाना चाहिए। जब ज्वाला बुझ जाए, तो राख पर और धूप डालें और मृतक के धर्म के अनुसार तथा ईश्वर के बारे में उसके विचारों के अनुसार ईश्वर का आह्वान करें।

यह प्रार्थना करते समय हमें आह्वान किए गए व्यक्ति के साथ अपनी पहचान बनानी चाहिए, जैसा उसने कहा था वैसा ही बोलना चाहिए, जैसा उसने विश्वास किया था वैसा ही विश्वास करना चाहिए; फिर, पंद्रह मिनट के मौन के बाद, हमें उससे इस तरह बात करनी चाहिए जैसे वह मौजूद हो, स्नेह और विश्वास के साथ, उससे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारे सामने प्रकट हो। इस प्रार्थना को मानसिक रूप से दोहराएं, दोनों हाथों से चेहरा ढक लें; फिर उसे तीन बार ऊंची आवाज में पुकारें; कुछ मिनटों के लिए अपनी आंखें बंद करके घुटनों के बल बैठें; फिर उसे फिर से तीन बार मधुर और स्नेही स्वर में पुकारें, और धीरे-धीरे आंखें खोलें।

यदि कोई परिणाम न निकले, तो अगले वर्ष उसी प्रयोग को पुनः दोहराया जाना चाहिए, और यदि आवश्यक हो तो तीसरी बार, जब यह निश्चित हो जाए कि वांछित दृश्य प्राप्त हो जाएगा, और जितना अधिक विलंब होगा, यह उतना ही

अधिक यथार्थवादी और प्रभावशाली होगा। "ज्ञान और बुद्धि का आह्वान अधिक गंभीर समारोहों के साथ किया जाता है। यदि किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से संबंधित है, तो हमें इक्कीस दिनों तक उसके जीवन और लेखन पर ध्यान करना चाहिए, उसके स्वरूप का विचार बनाना चाहिए, उसके साथ मानसिक रूप से बातचीत करनी चाहिए, और उसके उत्तरों की कल्पना करनी चाहिए;

उसके चित्र या कम से कम उसके नाम को अपने साथ लेकर चलना चाहिए; इक्कीस दिनों तक शाकाहारी भोजन करना चाहिए, और अंतिम सात दिनों तक कठोर उपवास करना चाहिए। हमें इसके बाद जादुई वक्तृत्व का निर्माण करना चाहिए। इस वक्तृत्व को हमेशा अंधेरा रखना चाहिए; लेकिन यदि हम दिन में काम करते हैं, तो हम उस तरफ एक संकीर्ण छिद्र छोड़ सकते हैं, जहाँ आह्वान के समय सूर्य चमकेगा, और उद्घाटन के सामने एक त्रिकोणीय प्रिज्म और प्रिज्म के सामने पानी से भरा एक क्रिस्टल ग्लोब रख सकते हैं। यदि ऑपरेशन रात के लिए आयोजित किया जाता है, तो जादुई दीपक को इस तरह से रखा जाना चाहिए कि इसकी एक किरण वेदी पर धुआँ छोड़ दे। तैयारियों का उद्देश्य जादुई एजेंट को भौतिक रूप के तत्व प्रदान करना है, और कल्पना के तनाव को यथासंभव कम करना है, जिसे बिना किसी खतरे के स्वप्न के पूर्ण भ्रम में नहीं बदला जा सकता।

बाकी के लिए, यह आसानी से समझा जा सकता है कि सूरज की रोशनी की किरण, या दीपक की किरण, जो विभिन्न रंगों की हो, और कर्लिंग और अनियमित धुएं पर पड़ रही हो, किसी भी तरह से एक आदर्श छवि नहीं बना सकती। पवित्र अग्नि से युक्त चफिंग-डिश वक्तृत्व के केंद्र में होनी चाहिए, और इत्र की वेदी पास में होनी चाहिए। ऑपरेटर को प्रार्थना करने के लिए पूर्व की ओर और आह्वान करने के लिए पश्चिम की ओर मुड़ना चाहिए; उसे या तो अकेले या दो व्यक्तियों की सहायता से सख्त मौन बनाए रखना चाहिए; उसे जादुई वस्त्र पहनने चाहिए, जिसका वर्णन हमने सातवें अध्याय में किया है, और उसे वर्वेन और सोने से सजाया जाना चाहिए।

उसे ऑपरेशन से पहले स्नान करना चाहिए, और उसके सभी अंडरगारमेंट्स सबसे बरकरार और साफ-सुथरे होने चाहिए। समारोह की शुरुआत उस आत्मा की प्रतिभा के अनुकूल प्रार्थना से होनी चाहिए जिसे बुलाया जाना है और जिसे वह स्वयं स्वीकार करेगा यदि वह अभी भी जीवित है। उदाहरण के लिए, सेंट ब्रिजेट की शैली में प्रार्थनाएँ पढ़कर वोल्टेयर को याद करना असंभव होगा। प्राचीन काल के महान पुरुषों के लिए, हम क्लेंथेस या ऑर्फ़ियस के भजन देख सकते हैं, जिसमें पाइथागोरस के स्वर्णिम छंदों को समाप्त करने वाला प्रार्थना शामिल है। अपोलोनियस के अपने आह्वान में, हमने अनुष्ठान के लिए

पैट्रिकियस के जादुई दर्शन का उपयोग किया, जिसमें ज़ोरोस्टर के सिद्धांत और हर्मीस ट्रिस्मे जिस्टस के लेखन शामिल थे। हमने ऊंची आवाज़ में अपोलोनियस के नुक्टेमरॉन को ग्रीक में पढ़ा और निम्नलिखित जादू जोड़ा:

" हे सबके पिता, और आप तीन बार शक्तिशाली हेमीज़, मृतकों के कंडक्टर, उपस्थित होने की कृपा करें। हेफेस्टस के पुत्र एस्क्लेपियस, हीलिंग आर्ट के संरक्षक; और आप ओसिरिस, शक्ति और जोश के भगवान, आप स्वयं भी उपस्थित रहें। अर्नेबासेनिस, दर्शनशास्त्र के संरक्षक, और फिर से इमुथे के पुत्र एस्क्लेपियस, जो कविता की अध्यक्षता करते हैं।

• • * • " अपोलोनियस, अपोलोनियस, अपोलोनियस, आप ओरोमासडेस के बेटे ज़ोरोस्टर का जादू सिखाते हैं; और यह देवताओं की पूजा है।" यहूदी धर्म से निकले धर्मों से संबंधित आत्माओं के आह्वान के लिए, सुलैमान के निम्नलिखित कबालीवादी आह्वान का उपयोग किया जाना चाहिए, या तो हिब्रू में, या किसी अन्य भाषा में जिसके साथ संबंधित आत्मा को परिचित माना जाता है: - "राज्य की शक्तियाँ, तुम मेरे बाएँ पैर के नीचे रहो और मेरे दाहिने हाथ में रहो। महिमा और अनंत काल, मुझे दोनों कंधों से पकड़ो, और मुझे जीत के पथ पर निर्देशित करो। दया और न्याय, तुम मेरे जीवन का संतुलन और वैभव बनो। बुद्धि और ज्ञान, मुझे ताज पहनाओ।

माल्च्तद की आत्माएँ, मुझे उन दो स्तंभों के बीच ले चलो जिन पर मंदिर की पूरी इमारत टिकी हुई है। नेत्सा और होद के स्वर्गदूत, मुझे जेसोड के घनाकार पत्थर पर मजबूत करो। हे गेदुएल हे गेबुरेल\ हे टिपहेवेल\ बिनेल, तुम मेरे प्यार हो। रुआच होचमाएल, तुम मेरी रोशनी हो। 1 हे केथेतिएल, तुम जो हो और जो तुम होगे, वही बनो 1 त्सचिम, सद्दै के नाम पर मेरी सहायता करो 1 करूब, अदोनै के नाम पर मेरी ताकत बनो 1 बेनी-एलोहिम, बेटे के नाम पर मेरे भाई बनो, और ज़ेबाओथ की शक्ति से 1 एलोइम, टेट्रा-ग्रामायन के नाम पर मेरे लिए युद्ध करो 1 मलाकीम, जोद के नाम पर मेरी रक्षा करो 1 सेराफिम, एल्वोह \ हस्मालिम के नाम पर मेरे प्यार को शुद्ध करो, मुझे एलोई और शचीना के वैभव से प्रकाशित करो 1 अरलीम, कार्य करो 1 ओफ़ानिम, घूमो और चमको 1 हाजोथ ए कदोश, रोओ, बोलो, दहाड़ो, चिल्लाओ मैं कदोश, कदोश, कदोश, सद्दै, अदानै, जोतचावा, ईएज़ेरी: हालेलु-याह, हलेलुयाह, हलेलुयाह। आमीन।'

सबसे पहले, जादू-टोने में यह याद रखना चाहिए कि शैतान, बेलज़ेबूब, एड्रामेलेक और अन्य लोगों के नाम आध्यात्मिक एकता को नहीं दर्शाते, बल्कि अशुद्ध आत्माओं की सेना को दर्शाते हैं। सुसमाचार में अंधकार की आत्मा कहती है, "हमारा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं।" संख्या कानून का गठन

करती है, और प्रगति विपरीत रूप से होती है - यानी शैतानी विकास में सबसे आगे, और परिणामस्वरूप सबसे पतित, सबसे कम बुद्धिमान और सबसे कमज़ोर होते हैं।

इस प्रकार, एक घातक कानून राक्षसों को नीचे की ओर धकेलता है जब वे चाहते हैं और खुद को ऊपर चढ़ने पर विश्वास करते हैं। इसी तरह जो लोग खुद को प्रमुख कहते हैं वे सबसे अधिक नपुंसक और सबसे तिरस्कृत हैं। जहाँ तक विकृत आत्माओं की भीड़ का सवाल है, वे एक अज्ञात, अदृश्य, समझ से परे, मनमौजी, अडिग सरदार के सामने काँपते हैं, जो कभी अपना कानून नहीं समझाता, जिसका हाथ हमेशा उन लोगों पर प्रहार करने के लिए फैला रहता है जो उसे समझने में विफल रहते हैं।

वे इस प्रेत को बाल, बृहस्पति और यहाँ तक कि अन्य अधिक आदरणीय नामों से पुकारते हैं, जिन्हें नरक में अपवित्र किए बिना नहीं सुनाया जा सकता। लेकिन यह प्रेत केवल ईश्वर की छाया और अवशेष है, जो उनकी जानबूझकर की गई विकृतियों के कारण विकृत हो गया है, और न्याय के प्रतिशोध और सत्य के पश्चाताप की तरह उनकी कल्पना में बना हुआ है। 14 जब प्रकाश की जागृत आत्मा उदास या चिढ़े हुए चेहरे के साथ प्रकट होती है, तो हमें उसे एक नैतिक बलिदान देना चाहिए, अर्थात, जो कुछ भी उसे अपमानित करता है उसे त्यागने के लिए आंतरिक रूप से तैयार होना चाहिए; और भाषण देने से पहले, हमें उसे यह कहते हुए विदा करना चाहिए:

शांति तुम्हारे साथ रहे 1 मैंने तुम्हें परेशान नहीं करना चाहा; तुम मुझे पीड़ा मत दो। मैं तुम्हें परेशान करने वाली किसी भी चीज़ के लिए खुद को सुधारने का प्रयास करूँगा। मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे लिए प्रार्थना करता हूँ, और आगे भी प्रार्थना करता रहूँगा। तुम भी मेरे साथ और मेरे लिए प्रार्थना करो, और अपनी गहरी नींद में लौट जाओ, उस दिन की प्रतीक्षा करते हुए जब हम एक साथ जागेंगे। मौन और अलविदा! "

263.•• अंत में, ऑपरेटर को अपनी आँखें बंद करके और अपने हाथों से अपने फीते को ढँककर, ऊँची लेकिन कोमल आवाज़ में आह्वान किए गए व्यक्ति : को पुकारना चाहिए, उसके सभी नामों का तीन बार उच्चारण करना चाहिए। तीसरी अपील के कुछ क्षण बाद, उसे अपने हाथ को क्रॉस के आकार में फैलाना चाहिए और अपनी आँखें ऊपर उठाकर, अपने सामने, पहचानने योग्य तरीके से, प्रिय प्राणी को देखना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि, वह उस ईथर पदार्थ को देखेगा जो नाशवान स्थलीय शरीर से अलग है, आत्मा का तरल आवरण, जिसे कबालीवादी दीक्षाओं ने पेरिस्पिरिट कहा है। यह पदार्थ मानव रूप को सुरक्षित

रखता है लेकिन मानवीय दुर्बलताओं से मुक्त होता है, और विशेष विशेषताओं द्वारा सक्रिय होता है जिससे हमारे सार की अविनाशी व्यक्तितत्व प्रकट होती है।

तब आह्वान करने वाला और आह्वान करने वाला एक पारस्परिक और रहस्यमय विचार-संचरण द्वारा समझदारी से अंतर-संचार कर सकते हैं। दिवंगत आत्मा संचालक को परामर्श देगी; यह कभी-कभी रहस्यों को उजागर करेगी जो पृथ्वी पर उसके प्रियजनों के लिए लाभदायक हो सकते हैं, लेकिन यह किसी ऐसे प्रश्न का उत्तर नहीं देगी जिसका संबंध शरीर की इच्छाओं से हो; यह कोई गड़ा हुआ खजाना नहीं खोजेगी, न ही यह किसी तीसरे व्यक्ति के रहस्यों को उजागर करेगी; यह उस श्रेष्ठ अस्तित्व के रहस्यों के बारे में चुप है जिसे यह अब प्राप्त कर चुकी है।

हालांकि, कुछ मामलों में यह खुद को या तो खुश घोषित करेगी या दंड में। यदि यह बाद वाला है, तो यह जादूगर की प्रार्थना या किसी धार्मिक अनुष्ठान के लिए कहेगी, जिसे हमें निश्चित रूप से पूरा करना चाहिए। अंत में, यह उस समय का संकेत देगी जब आह्वान को फिर से शुरू किया जा सकता है। जब यह गायब हो जाता है, तो संचालक को पूर्व की ओर मुड़ना चाहिए, वेदी पर आग को फिर से जलाना चाहिए, और धूप की अंतिम आहुति देनी चाहिए। फिर उसे मुकुट और गाई भूमि को अलग करना चाहिए, अपनी मोमबत्ती लेनी चाहिए, और अपना चेहरा पश्चिम की ओर करके तब तक सेवानिवृत्त होना चाहिए जब तक कि वह वक्तृता से बाहर न निकल जाए।

उसका अंतिम कर्तव्य फूलों और पत्तियों के अंतिम अवशेषों को जलाना है। उनकी राख, जो कि वापसी के समय एकत्र की गई राख के साथ संयुक्त है, को मर्टल बीज के साथ मिलाया जाना चाहिए, और एक खेत में इतनी गहराई पर गुप्त रूप से दफन किया जाना चाहिए कि यह हल के फाल से होने वाली गड़बड़ी से सुरक्षित रहे।" अंतिम दो उदाहरण, निश्चित रूप से, "श्वेत" नेक्रोमेंसी के हैं। जंगली जनजातियों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया निश्चित रूप से पूरी तरह से अलग है।

कुछ ऑस्ट्रेलियाई जनजातियों में नेक्रोमेंट्स को बिरराक कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि एक बिरराक को "मर्ट" (भूत) द्वारा दीक्षा दी जाती थी, जब वे उसे झाड़ियों में भटकते हुए मिलते थे। यह भूतों से था कि वह दूर से गुजरने वाली घटनाओं या अभी होने वाली घटनाओं से संबंधित सवालों के जवाब प्राप्त करता था, जो उसके कबीले के लिए रुचिकर या महत्वपूर्ण हो सकते थे। झाड़ियों में एक आध्यात्मिक सत्र का विवरण काम इलारोई और कुर्नाई में दिया गया है" (पृष्ठ 254): t4 आग बुझा दी गई; बिरार्क ने बीच-बीच में 'कू-ई' की आवाज़

निकाली। आखिरकार दूर से एक उत्तर सुनाई दिया, और कुछ ही देर बाद लोगों के ज़मीन पर लगातार कूदने की आवाज़ आई।

फिर अंधेरे में एक आवाज़ सुनाई दी जो अजीब लहजे में पूछ रही थी कि क्या चाहिए? 'सत्र के अंत में, आत्मा की आवाज़ ने कहा, 4 हम जा रहे हैं।' अंत में, बिरार्क एक लगभग दुर्गम पेड़ के शीर्ष पर पाया गया, जाहिर तौर पर सो रहा था।

264.जापान में भूतों को : कई तरीकों से जगाया जा सकता है। एक तरीका यह है कि एक एंडोन (एक फ्रेम में एक कागज़ की लालटेन) में सौ रशलाइट्स डाल दी जाती हैं, और सौ पंक्तियों का एक मंत्र दोहराया जाता है। प्रत्येक पंक्ति के अंत में इनमें से एक रशलाइट को निकाल लिया जाता है, और फिर भूत-द्रष्टा अंधेरे में एक लाइट जलाकर बाहर चला जाता है, और जब भूत दिखाई देना चाहिए, तो उसे बुझा देता है। जिन लड़कियों ने अपने प्रेमियों को मौत के घाट उतार दिया है, वे अक्सर इस जादू को आजमाती हैं। स्कॉटलैंड में प्रचलित प्रक्रिया इस प्रकार थी। प्रेतवाधित कमरे को तैयार किया गया।

वह, जिसे यह साहसिक कार्य करना था, रात होने पर कमरे में दाखिल हुआ, अपने साथ एक मेज, एक कुर्सी, एक मोमबत्ती, एक कंपास, एक क्रूस (अगर मिल सकता था) और एक बाइबिल लेकर। पास से उसने फर्श के बीच में एक घेरा बनाया, जो कुर्सी और मेज को रखने के लिए काफी बड़ा था। उसने घेरे के अन्दर कुर्सी और मेज रखी, और मेज पर जलती हुई मोमबत्ती के पास बाइबिल और क्रूस रख दिया। अगर उसके पास क्रूस नहीं था, तो वह घेरे के अन्दर फर्श पर एक क्रॉस की आकृति बनाता। जब यह सब हो जाता, तो वह कुर्सी पर आराम करता, बाइबिल खोलता और आत्मा के आने का इंतजार करता। ठीक आधी रात को आत्मा आती।

कभी-कभी दरवाजा धीरे से खुलता, और सफेद चादर ओढ़े एक महिला चुपचाप अन्दर आती, जिसका चेहरा दुख से भरा होता और वह उस आदमी को अपनी कहानी सुनाती जब वह उससे भगवान के नाम पर पूछता कि उसे क्या चाहिए। सुबह उसे जो चाहिए होता, वह हो जाता और आत्मा हमेशा के लिए आराम कर लेती। कभी-कभी आत्मा फर्श से उठती, और कभी-कभी दीवार से बाहर आती। एक ऐसी भी थी जो जोर से उछलकर कमरे में घुसती, घेरे के चारों ओर बेतहाशा नाचती, और आदमी के सिर के चारों ओर एक लंबा कोड़ा मारती, लेकिन घेरे के अन्दर कदम रखने की हिम्मत नहीं करती।

अपने उन्मत्त नृत्य में विराम के दौरान, भगवान के नाम पर, उससे पूछा गया कि वह क्या चाहता है। उसने अपना नृत्य रोक दिया और अपनी इच्छाएँ बताईं।

उसकी इच्छाएँ पूरी की गईं और आत्मा को शांति मिली।" बर्न, ड्रेसडेन, वारसॉ और वियना के न्यायालयों के बारे में व्रक्सल के संस्मरणों में शेवेलियर डे सेक की आत्मा को जगाने का एक मनोरंजक वर्णन है। रिपोर्टें प्रसारित की गई थीं कि ड्रेसडेन में उनके महल में एक बड़ी राशि गुप्त रखी गई थी, और यह आग्रह किया गया था कि यदि उनकी आत्मा को प्रकट होने के लिए मजबूर किया जा सके, तो उनसे दिलचस्प रहस्य उगलवाए जा सकते हैं।

जिज्ञासा और लालच ने तदनुसार उनके प्रमुख उत्तराधिकारी प्रिंस चार्ल्स को प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया, और, नियत रात को, श्रेफ़र ने प्रेत को जगाने में ऑपरेटर की भूमिका निभाई। उन्होंने गैलरी के कोने में जाकर अपनी कार्यवाही शुरू की, जहाँ कई रहस्यमयी समारोहों के साथ घुटनों के बल बैठकर उन्होंने आत्मा को प्रकट होने के लिए बुलाया।

आखिरकार बाहर की सभी खिड़कियों पर एक जोरदार खटपट सुनाई दी, जो किसी भी अन्य चीज़ की तुलना में कांच के किनारे पर खींची गई कई गीली उंगलियों द्वारा उत्पन्न प्रभाव से अधिक मिलती जुलती थी। इस ध्वनि ने अच्छी आत्माओं के आगमन की घोषणा की, और उसके तुरंत बाद एक भयावह और असामान्य प्रकृति की चीख सुनाई दी, जो बुरी आत्माओं की उपस्थिति का संकेत देती थी। श्रेफ़र ने अपना आह्वान जारी रखा, जब ** अचानक दरवाजा हिंसक रूप से खुला, और एक काली गेंद या ग्लोब जैसी कोई चीज़ कमरे में लुढ़क गई।

यह धुएं या बादल में घिरा हुआ था, जिसके बीच में एक मानवीय चेहरा दिखाई दे रहा था, शेवेलियर डे सैक्स के चेहरे की तरह, जिसमें से एक ऊंची और क्रोधित आवाज निकल रही थी, जो जर्मन में कह रही थी, "कार्ल, क्या वोल्ते डु मिट मिच?" - 1 चार्ल्स, तुम मेरे साथ क्या करोगे? " बार-बार भूत भगाने के द्वारा श्रेफर ने अंततः प्रेत को भगा दिया, और भयभीत दर्शक उसके जादुई प्रभाव के बारे में पूरी तरह आश्वस्त होकर तितर-बितर हो गए।

265.पोर्फिरी ने परमानंद के बारे में प्लोटिनस के सिद्धांत को संशोधित किया; यह कहते हुए कि उस स्थिति में मन व्यक्तित्व की चेतना नहीं खोता। वह इसे एक सपना कहता है जिसमें आत्मा, दुनिया के लिए मृत, दिव्य गतिविधि की एक प्रजाति तक बढ़ जाती है, तर्क, क्रिया और स्वतंत्रता से ऊपर उठ जाती है। वह दुष्ट जिन्नों के एक निश्चित वर्ग में विश्वास करता था, जो जंगली जानवरों का शिकार करने में आनंद लेते थे, और अन्य जो शरीर की बेड़ियों से छूटी हुई आत्माओं का शिकार करते थे; ताकि उनसे बचने के लिए आत्मा को एक बार फिर मांस में शरण लेनी पड़े। पोर्फिरी की थियोसोफिक अवधारणाएँ, जो

प्लोटिनस की अवधारणाओं पर आधारित थीं, इम्बलिचस के थियोर्जिक रहस्यों द्वारा दृढ़तापूर्वक और सक्षम रूप से पार की गईं, जिनके लिए पुजारी देवता से भरा एक पैगंबर था।

पोर्फिरी की आलोचना करते हुए, इम्बलिचस कहते हैं: "अक्सर, प्रेरणा के क्षण में, या जब प्रेरणा कम हो जाती है, एक ज्वलंत उपस्थिति दिखाई देती है, - प्रवेश करने वाली या प्रस्थान करने वाली शक्ति। जो लोग इस ज्ञान में कुशल हैं, वे इस महिमा के चरित्र से बता सकते हैं कि दिव्यता का पद किस तरह का है, जिसने रहस्यवादी की आत्मा की लगाम को कुछ समय के लिए पकड़ लिया है, और उसे अपनी इच्छानुसार निर्देशित करता है।

कभी-कभी इस प्रभाव के अधीन व्यक्ति का शरीर हिंसक रूप से उत्तेजित होता है, कभी-कभी यह कठोर और गतिहीन होता है। कुछ मामलों में मधुर संगीत सुनाई देता है, दूसरों में, असंगत और भयावह ध्वनियाँ। विषय का व्यक्ति अलौकिक ऊँचाई तक फैल जाता है और ऊँचा हो जाता है; अन्य मामलों में, इसे हवा में उठा दिया गया है। अक्सर, न केवल तर्क का सामान्य अभ्यास, बल्कि संवेदना और पशु जीवन निलंबित हो गया प्रतीत होता है; और प्रेरणा का विषय आग के आवेदन को महसूस नहीं करता है, थूका, चाकुओं से काटा, और दर्द का एहसास नहीं हुआ।

हाँ, अक्सर, जितना अधिक शरीर और मन जागरण और उपवासों द्वारा समान रूप से कमजोर हो गए हैं, उतना ही अधिक अज्ञानी या मानसिक रूप से मूर्ख एक युवा हो सकता है जो इस प्रभाव में लाया जाता है, उतनी ही अधिक स्वतंत्र रूप से और बिना मिलावट के दिव्य शक्ति प्रकट होगी। तो स्पष्ट रूप से ये चमत्कार मानव कौशल या बुद्धि का काम नहीं हैं, बल्कि अलौकिक एजेंसी के हैं। मैंने जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है, वे सच्ची प्रेरणा के लक्षण हैं। * •* अब, हे एगाथोकल्स, आध्यात्मिक अस्तित्व के चार महान क्रम हैं, - देवता, डेमन, नायक या अर्ध-देवता, और आत्माएँ।

आप स्वाभाविक रूप से यह जानने के लिए इच्छुक होंगे कि किसी देवता या डेमन की उपस्थिति को स्वर्गदूतों, रियासतों या आत्माओं से कैसे अलग किया जाता है। तो फिर, जान लें कि मनुष्य के सामने उनका प्रकट होना उनकी प्रकृति के अनुरूप है, और वे हमेशा उन लोगों के सामने खुद को प्रकट करते हैं जो आध्यात्मिक प्रकृति के पदानुक्रम में उनके पद के अनुरूप तरीके से उनका आह्वान करते हैं। देवताओं के प्रकटन एक समान हैं, डेमन्स के विभिन्न। देवता सौम्य पहलू के साथ चमकते हैं। जब कोई देवता खुद को प्रकट करता है, तो वह

अक्सर सूर्य या चंद्रमा को छुपाता हुआ दिखाई देता है, और ऐसा लगता है कि वह पृथ्वी को समाहित करने के लिए बहुत विशाल है।

महादूत एक साथ भयानक और सौम्य होते हैं; देवदूत और भी अधिक दयालु होते हैं; डेमन्स भयानक होते हैं। मैंने जिन चार प्रमुख वर्गों का उल्लेख किया है, उनके नीचे घातक डेमन्स, एंटी-गॉड्स रखे गए हैं। "प्रत्येक आध्यात्मिक आदेश के पास अपने स्वयं के उपहार होते हैं जो दीक्षा प्राप्त करने वालों को प्रदान किए जाते हैं जो उन्हें आह्वान करते हैं। देवता शरीर का स्वास्थ्य, शक्ति और मन की शुद्धता प्रदान करते हैं, और संक्षेप में, हमारे स्वभाव को उनके उचित सिद्धांतों पर बढ़ाते और पुनर्स्थापित करते हैं।

स्वर्गदूतों और महादूतों के पास केवल अधीनस्थ उपहार होते हैं। हालाँकि, दानव आकांक्षी के लिए शत्रुतापूर्ण होते हैं, - शरीर और मन दोनों को पीड़ित करते हैं, और हमारे कामुक से बचने में बाधा डालते हैं। प्रधानताएँ, जो उप-चंद्र तत्वों को नियंत्रित करती हैं, लौकिक लाभ प्रदान करती हैं। निम्न श्रेणी के लोग, जो पदार्थ की अध्यक्षता करते हैं, अक्सर भौतिक उपहारों में अपनी उदारता प्रदर्शित करते हैं। आत्माएँ जो शुद्ध हैं, स्वर्गदूतों की तरह, उनके प्रभाव में लाभकारी हैं। उनका प्रकट होना आत्मा को उसके ऊपर के प्रयासों में प्रोत्साहित करता है। नायक महान कार्यों के लिए प्रेरित करते हैं।

ये सभी शक्तियाँ, एक अवरोही श्रृंखला में, प्रत्येक प्रजाति पर निर्भर करती हैं जो उसके ठीक ऊपर है। अच्छे दानव आशीर्वाद के प्रतीकों से घिरे हुए दिखाई देते हैं, निर्णय निष्पादित करने वाले दानव दिखाई देते हैं दण्ड के साधनों के साथ। "पवित्र नींद और स्वप्नों द्वारा भविष्यवाणी के बारे में जो कुछ तुम्हें बताया गया है, उसमें विश्वास करने के लिए कुछ भी अयोग्य नहीं है। मैं इसे इस प्रकार समझाता हूँ: - आत्मा का दोहरा जीवन है, एक निम्न और एक उच्च।

नींद में वह आत्मा शरीर के बंधन से मुक्त हो जाती है और मुक्त होकर अपनी दिव्य बुद्धि के जीवन में प्रवेश करती है। फिर, जब वह महान क्षमता जो वास्तव में मौजूद वस्तुओं को देखती है - बुद्धि की दुनिया में मौजूद वस्तुएं - भीतर से जागृत होती हैं और अपनी शक्ति के प्रति जागती हैं, तो कौन आश्चर्यचकित हो सकता है कि मन, जो अपने आप में सभी होने वाली चीजों के सिद्धांतों को समाहित करता है, को अपनी मुक्ति की इस अवस्था में, उन पूर्ववर्ती सिद्धांतों में भविष्य को पहचानना चाहिए जो उस भविष्य को वैसा बना देंगे जैसा वह होना चाहिए? आत्मा का महान भाग इस प्रकार अमूर्तता द्वारा उच्चतर प्रकृतियों से जुड़ जाता है और देवताओं के ज्ञान और पूर्वज्ञान में भागीदार बन जाता है।

266.न्यूजीलैंड**:** माओरी अंधविश्वास। न्यूजीलैंड के पौराणिक पात्रों में "मृतकों की आत्माएं" हमेशा एक बहुत ही प्रमुख भूमिका निभाती हैं, और माओरी लोगों को देखने में हमारी मुख्य रुचि इस तथ्य में निहित है कि इन आत्माओं में विश्वास और उनके साथ खुला संवाद अभी भी मौजूद है। पुजारी या तोहंगा शब्द के आधुनिक अर्थ में स्पष्ट रूप से माध्यम हैं। कभी-कभी वे अपने उपहार के साथ पैदा होते हैं, और कभी-कभी वे अपने माता-पिता द्वारा पुजारी पद के लिए समर्पित होते हैं और प्रार्थना, उपवास और चिंतन द्वारा पूर्वी परमानंद के तरीके से अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं। यह बात साबित हो चुकी है कि माओरी लोगों में अच्छे भविष्यवक्ता होते हैं।

उस समय जब ग्रेट ब्रिटेन न्यूजीलैंड को उपनिवेश बनाने में व्यस्त था, उसके अधिकारी अक्सर घर पर लिखते थे कि माओरी को कभी भी पूरी तरह से नहीं जीता जा सकेगा; उन पर हमला करने के लिए भेजे गए दलों की जानकारी; नावों का रंग और उनके पहुंचने का समय; दुश्मन की संख्या और उनकी सुरक्षा के लिए आवश्यक सभी विवरण, हमेशा जनजातियों को उनके भविष्यवक्ताओं या तोहंगा द्वारा पहले से ही बता दिए जाते थे।

माओरी लोगों में सबसे अच्छे प्राकृतिक भविष्यवक्ता और द्रष्टा महिला लिंग के होते हैं; और यद्यपि मिशनरी अद्भुत घटनाओं का हिसाब लगाने की कोशिश करते हैं वे जो शक्तियाँ प्रदर्शित करती हैं, विशेषकर आत्मा की आवाज़ के लिए, जो मृतकों के साथ उनके संवाद का एक सामान्य चरण है - इस परिकल्पना पर कि जो महिलाएँ "जादू-टोना की कला" का अभ्यास करती हैं, वे पेट की बात करने वाली होती हैं - यह प्रयास किया गया स्पष्टीकरण शायद ही कभी उस बुद्धिमत्ता के आधार को कवर करता है जो हाल ही में सामने आई है।

जनरल कमिंग्स ने अपनी पुस्तक ओल्ड न्यूज़ीलैंड में तोहंगावाद का एक दिलचस्प मामला बताया है। एक युवा सरदार को जन्म और मृत्यु का रजिस्ट्रार नियुक्त किया गया था, अचानक उसकी मृत्यु हो गई। रजिस्ट्री की किताब खो गई और बहुत असुविधा हुई। उस आदमी के रिश्तेदारों ने उसकी आत्मा को बुलाने के अपने इरादे की सूचना दी और जनरल कमिंग्स को समारोह में उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। नियत समय आ गया।

आग जलाई गई। तोहंगा कमरे के सबसे अंधेरे कोने में चले गए। सब कुछ शांत था, सिवाय मृतक योद्धा सरदार की बहनों के रोने की आवाज़ के। हम तीस लोग थे, जो गंदगी से भरे फर्श पर बैठे थे, दरवाज़ा बंद था और आग अब जलकर राख

हो गई थी। अचानक आंशिक अंधेरे से एक आवाज़ आई, नमस्कार, नमस्कार मेरे परिवार को, मेरे कबीले को, तुम्हें, पकेहा, मेरे दोस्त को। हमारी भावनाओं में तूफान आ गया। सबसे बड़ी बहन चिल्लाई और अपनी बाँहें फैलाकर उस दिशा में दौड़ी जहाँ से आवाज़ आई थी। उसके भाई ने उसे पकड़ लिया और पूरी ताकत से उसे रोक लिया। बाकी लोग चिल्लाए, 'क्या यह तुम हो? क्या यह तुम हो? सचमुच यह तुम ही हो 1 औए टू औक 1' और फर्श पर बिल्कुल बेसुध होकर गिर पड़े। बड़ी औरतें और कुछ बूढ़े आदमी ज़रा भी नहीं हिले, हालाँकि उन्हें लगा कि यह मुखिया की आत्मा है।

"दृश्य की नवीनता, दिखाई देने वाले अंधकार और प्रकट गहरी रुचि पर विचार करते हुए, आत्मा ने फिर कहा, *मेरे परिवार से बात करो; मुझसे बात करो, मेरे कबीले से; मुझसे बात करो, पकेहा से 1 'आखिरकार सन्नाटा टूट गया, और भाई बोला: 'तुम्हारा क्या हाल है? क्या उस देश में तुम्हारा हाल ठीक है?' उत्तर आया, यद्यपि तोहंगा-माध्यम की आवाज में नहीं, बल्कि अजीब कब्र की आवाजों में: *मैं ठीक हूँ; मेरा स्थान एक अच्छी जगह है। मैंने अपने दोस्तों को देखा है; वे सभी मेरे साथ हैं 1 ' कमरे के दूसरे हिस्से से एक महिला ने अब उत्सुकता से चिल्लाया, *क्या तुमने मेरी बहन को देखा है? ' 'हाँ, मैंने उसे देखा है; वह हमारे सुंदर देश में खुश है।' * उससे कहो कि उसके लिए मेरा इतना बड़ा प्यार कभी खत्म नहीं होगा।*
हाँ, मैं संदेश ले जाऊँगा।' यहाँ देशी महिला फूट-फूट कर रोने लगी और मेरा सीना सहानुभूति से भर गया। *• आत्मा ने फिर से बात की, संपत्ति और स्मृति चिन्हों के बारे में निर्देश देते हुए, मैंने सोचा कि मैं इस सब की वास्तविकता को और अधिक अच्छी तरह से परखूँगा: और मैंने कहा, 'हमें आपकी पुस्तक पंजीकृत नामों के साथ नहीं मिल रही है; आपने इसे कहाँ छिपाया है? ' जवाब तुरंत आया, 'मैंने इसे अपने घर की तहू और छप्पर के बीच छिपा दिया है; सीधे आपके ऊपर, जैसे ही आप दरवाजे से अंदर जाते हैं।'

भाई देखने के लिए बाहर भागा। सब कुछ शांत था। पाँच मिनट में वह जल्दी से वापस आया, उसके हाथ में पुस्तक थी। यह देखकर मैं चकित रह गया। 'अब देर हो चुकी थी, और आत्मा ने अचानक कहा, 'मेरे परिवार को अलविदा, अलविदा, मेरे कबीले; मैं जाता हूँ।' उपस्थित लोगों ने एक प्रभावशाली विदाई की सांस ली, जब आत्मा ने फिर से हवा में ऊंची आवाज में कहा, * अलविदा मैं "यह, हालांकि दुखद प्रतीत होता है, हर तरह से अक्षरशः सत्य है। लेकिन यह क्या है? पेट की आवाज़, शैतान, या क्या! . . ." श्रीमती ब्रिटन ने अपनी उन्नीसवीं सदी के चमत्कारों में कहा है:

"लेखिका के पास खुद इन 'असभ्य लोगों' के पास मौजूद मध्यमवादी शक्ति के कई सबूत हैं, लेकिन चूंकि उनके अनुभवों को बहुत व्यक्तिगत चरित्र का माना जा सकता है, इसलिए हम अन्य स्रोतों से अपने उदाहरण चुनेंगे। इनमें से एक श्री मार्सडेन द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जो न्यूज़ीलैंड के औपनिवेशिक इतिहास के शुरुआती दिनों में एक खनिक के रूप में प्रसिद्ध थे, जो 'आध्यात्मिक संचार के माध्यम से' अमीर बने।

श्री मार्सडेन एक सज्जन व्यक्ति थे जिन्होंने माओरी लोगों के बीच बहुत समय बिताया था, और जो अभी भी * किंग कंट्री' में निवास करते हैं, यानी - वह जिला जिस पर उनका नियंत्रण है। श्री मार्सडेन ने लेखक को बताया कि सोने की खान में उनकी सफलता पूरी तरह से एक देशी महिला के माध्यम से प्राप्त संचार के कारण थी, जो आत्माएँ - माओरी, जैसा कि याद किया जा सकता है, हमेशा इस बात पर जोर देते थे कि आत्माएँ नश्वर लोगों से मिलने के लिए हवा के माध्यम से धरती पर उतरती हैं।

श्री मार्सडेन लंबे समय से सोने के क्षेत्रों में सफलतापूर्वक खोज कर रहे थे। उनके साथ उनका एक मित्र और साथी था, जिससे वे बहुत जुड़े हुए थे, लेकिन वह दुर्घटनावश एक चट्टान से गिरकर मारा गया था। इस व्यक्ति की आत्मा बिना किसी अनुरोध के आई, एक अवसर पर जब श्री मार्सडेन एक स्थानीय द्रष्टा से परामर्श कर रहे थे, ताकि यह पता लगाया जा सके कि उनकी खोई हुई एक मूल्यवान घड़ी का क्या हुआ। आत्मा की आवाज़ सबसे पहले हवा में सुनी गई, जाहिर तौर पर झोपड़ी की छत के ऊपर - जिसमें वे बैठे थे, श्री मार्सडेन को उनके परिचित नाम मार्स से पुकारते हुए।

इन ध्वनियों से बहुत चौंककर, जो मीडियम के आदेश पर कई बार दोहराई गईं, वह तब तक पूरी तरह से स्थिर रहा जब तक कि उसके दोस्त की आवाज़ उसके सुप्रसिद्ध स्कॉच लहजे में उसके कानों के पास नहीं आई, जबकि उसके बगल में धूसर धुंधले पदार्थ का एक स्तंभ खड़ा हो गया। झोपड़ी की मंद रोशनी में यह प्रेत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, जिसमें केवल एक खुला प्रवेश द्वार था, लेकिन कोई खिड़की नहीं थी।

हालाँकि उसने जो देखा और सुना उससे वह बहुत चौंक गया था, लेकिन मि. मार्सडेन के पास इतनी सूझबूझ थी कि उसने धीरे से अपना हाथ धुंधले स्तंभ में डाला जो बरकरार था, मानो उसका पदार्थ स्पर्श करने पर कोई प्रतिरोध न कर रहा हो। माओरी महिला की गंभीर फुसफुसाहट से, जो प्रेत के सामने घुटनों के बल गिर गई थी, उसे स्थिर रहने की चेतावनी मिलने पर, उसने आज्ञा का पालन

किया, जब एक आवाज़ - जो बहुत दूर से लग रही थी - फिर भी उसके दोस्त के स्कॉच लहजे में स्पष्ट रूप से बोल रही थी, ने उसे निगरानी करने की सलाह दी। अकेले-क्योंकि वह पूरी तरह से गायब हो चुका था-लेकिन उस नदी के किनारे जाना जिसके किनारे उन्होंने आखिरी बार साथ में खाना खाया था, उसे छह मील और आधे मील तक खोजता, और फिर जंगल के बीच उसके रास्ते पर चलते हुए, वह एक ढेर के पास पहुँचता, जो उसे अमीर बना देता, अगर वह ऐसा ही रहना चाहता। जब वह और सुनने के लिए बेदम होकर इंतज़ार कर रहा था, तो मिस्टर मार्सडेन अपने बगल में एक हल्का विस्फोट सुनकर चौंक गया।

अपना सिर घुमाकर उसने देखा कि धुंध का स्तंभ गायब हो गया था, और उसकी जगह, एक मोमबत्ती के प्रतिबिंब की तरह एक त्वरित चमक, वह सब था जो उसने देखा। यहाँ पर सभा समाप्त हुई, और चकित खनिक झोपड़ी से बाहर निकल गया, उसे विश्वास हो गया कि उसने अपने दोस्त की आत्मा को उससे बात करते हुए सुना है। उसने आगे कहा, उसने दिए गए निर्देशों का स्पष्ट रूप से पालन किया, और जंगल की गहराई में नाले के तल पर पत्थरों पर पड़े सतही सोने के ढेर के पास पहुँचा।

उन्होंने इसे इकट्ठा किया, और यद्यपि उन्होंने कई दिनों तक उस स्थान पर खोजबीन की, लेकिन उन्हें इस बहुमूल्य धातु का एक और कण नहीं मिला। उन्होंने गहरी साँस लेते हुए कहा कि जो कुछ उन्होंने हासिल किया था, वह वास्तव में उन्हें जीवन भर के लिए स्वतंत्र बनाने के लिए पर्याप्त था, अगर इसे जल्द ही निरर्थक अटकलों में बर्बाद नहीं किया जाता। माओरी मन अंधविश्वास से इतने गहरे तक भरा हुआ है कि सभ्य, सुशिक्षित वर्गों में आज भी कई अभिव्यक्तियाँ और क्रियाएँ देखी जा सकती हैं, जिनका मूल अलौकिक के सहज भय में है।

पाल मॉल गेक्सस में एक लेखक ने कहा कि वर्तमान समय के माओरी लोगों में अंधविश्वास के कई स्तर मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, उरेवेरा देश के सुदूर क्षेत्रों में डायबलरी ने अपनी प्रारंभिक शक्ति को बहुत कम खो दिया है; वहाँ तोहंगा अभी भी देश में एक शक्ति है। अधिक प्रबुद्ध मूल निवासियों के बीच आम तौर पर एक एहतियाती नीति का पालन किया जाता है; वे कहते हैं कि दो रहस्यमय शक्तियों टापू और तनाकुटा के साथ संघर्ष से बचना हमेशा समझदारी और सुरक्षित होता है।

टापू इन दोनों में से कम खतरनाक है। ; एक घर, -एक व्यक्ति, या एक लेख को तपु या पवित्र माना जा सकता है, और यदि तपु की अवहेलना की जाती है तो किसी को नुकसान होगा। लेकिन मकुटा एक शक्तिशाली दुष्ट मंत्र है जो

जानबूझकर नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है, आम तौर पर मौत लाने के लिए। तोहंगा को मृतकों की आत्माओं के साथ गठबंधन में समझा जाता है। माओरी मृत्यु से डरते हैं, और उन्हें मृतकों से डर लगता है। दफनाने के स्थानों पर शायद ही कभी दिन के समय जाया जाता है, कभी भी रात के समय नहीं।

रात में। माना जाता है कि मृतकों की आत्माएँ कभी-कभी दफ़न की जगहों के आस-पास भटकती हैं। माओरी विद्या के विशेषज्ञों के पास जाने के बिना, जिनके पास कई और विविध सिद्धांत हैं, एक बेहतर तरीका यह पता लगाना है कि आज का औसत माओरी अपने आस-पास की दुनिया में काम करने वाली अजीब शक्तियों और प्रभावों के बारे में क्या सोचता और मानता है। इस प्रकार का एक माओरी - जो पढ़ और लिख सकता है, चालीस वर्ष से कम उम्र का है, और काफी बुद्धिमान है - लेखक के साथ एक लंबी बातचीत में शामिल हो गया।

उनका मानना था कि, मजिस्ट्रेट के बावजूद, तोहंगाओं के पास, किसी तरह, आम लोगों की तुलना में कहीं अधिक शक्ति थी। उन्हें नहीं लगता था कि उन्हें यह शक्ति "टियापो" (शैतान?) से मिली थी; वे बस खुद को लोगों और दुनिया की कई चीजों का मालिक बनाने में सक्षम थे। तोहंगावाद के कई स्तर हैं। एक साधारण पुरुष या महिला तोहंगा के खिलाफ शक्तिहीन थी, लेकिन एक तोहंगा दूसरे पर विजय प्राप्त कर सकता था।

वक्ता को एक ऐसे उदाहरण के बारे में पता था जिसमें एक तोहंगा ने अपने कमज़ोर प्रतिद्वंद्वी से तोहंगा की शक्ति को पूरी तरह से खत्म कर दिया था। यह पूर्वी तट की एक हाल ही की घटना थी। तीन माओरियों ने गलती से अपने सूअरों को तोहंगा के आलू के खेत में घुसने दिया था और इसका परिणाम बहुत नुकसान और हानि थी। तोहंगा खतरनाक किस्म का था और बहुत क्रोधित होकर उसने तीनों लोगों को मार डाला, जिनमें से सभी की तुरंत मौत हो गई। कोई भी इतना साहसी नहीं था कि तोहंगा पर उन लोगों की मौत का आरोप लगा सके;

वे सभी इस भयानक मकुता से डरते थे। आखिरकार एक और तोहंगा के बारे में सुना गया, जो बहुत शक्तिशाली था। इस दैवज्ञ से सलाह ली गई और वह तोहंगा नंबर एक से प्रभावी ढंग से निपटने और सूअरों के मालिक की हत्या के लिए उसे दंडित करने के लिए सहमत हो गया। इसलिए, उसके निर्देशों का पालन करते हुए, पहले उल्लेखित व्यक्ति को पकड़ लिया गया और उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे महान जादूगर के घर ले जाया गया।

यह ज्ञात होना चाहिए कि कई माओरी गर्म पानी से डरते हैं, वे इसे संभालना नहीं चाहते, यहां तक कि खाना पकाने या सफाई से जुड़े उद्देश्यों के लिए भी नहीं। गर्म पानी के एक बड़े टब में छोटे तोहंगा को रखा गया, जो पागलों की तरह संघर्ष कर रहा था, फिर उसे बाइबिल से फाड़ा गया एक पृष्ठ दिया गया, जिसे उसे चबाने और निगलने का आदेश दिया गया। गर्म पानी के उपचार, सफेद आदमी की पवित्र मात्रा के छोटे हिस्से के साथ, ने अपेक्षित काम किया; वह व्यक्ति अब एक तोहंगा नहीं था, और अपनी खोई हुई शक्तियों पर झल्लाहट करते हुए, वह जल्द ही मर गया।" अध्यात्मवाद।

डुनेडिन में सबसे शुरुआती जांचकर्ताओं में से एक, श्री जॉन लोगन थे। अध्यात्मवाद के कारण से सार्वजनिक रूप से पहचाने जाने से पहले, एक संघ का गठन किया गया था, जिसके सदस्य निजी मंडलियों और अर्ध सार्वजनिक समारोहों में अपनी जांच को लगातार आगे बढ़ाते थे। डुनेडिन में अध्यात्मवाद के शुरुआती विकास के संबंध में सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक, हालांकि, श्री लोगन की अभियोग और चर्च परीक्षण था, जिसकी परिस्थितियों को संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है।

यह सज्जन, हालांकि शहर के पहले प्रेस्बिटेरियन चर्च में एक उच्च पद पर थे, मंडलियों में भाग लिया और अध्यात्मवादी घटनाओं को देखा और वर्तमान में यह बताया गया कि उनके अपने निकट रिश्तेदारों में से एक बहुत ही उल्लेखनीय माध्यम था। 19 मार्च, 1873 को, श्री लोगन को एक चर्च सम्मेलन में उपस्थित होने के लिए बुलाया गया था, जो आयोजित किया जाना था।

अपने मामले की सुनवाई के उद्देश्य से, और यदि आवश्यक हो, तो अपने ** अपराध से निपटने के लिए। इस घटना में श्री लोगन को उनकी चर्च सदस्यता से वंचित कर दिया गया। डुनेडिन के अलावा कई प्रमुख शहरों में, शुरू में केवल बेकार की जिज्ञासा के लिए आयोजित मंडलियों ने अपने सामान्य माध्यमवादी शक्ति का फल दिया है, और यह फिर से सहयोगी कार्रवाई और स्थानीय समाजों में संगठन में विस्तारित हुआ है।

एक साल से अधिक समय तक, डुनेडिन के अध्यात्मवादियों और उदारवादियों ने अपने व्याख्याता के रूप में श्री चार्ल्स ब्राइट की सेवाएँ प्राप्त कीं। यह सज्जन एक बार ऑलबर्न्स आर्गस के संपादकीय कर्मचारियों से जुड़े थे, और एक सक्षम लेखक के रूप में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी, और उदार विचारक। डुनेडिन में श्री ब्राइट के व्याख्यानों की बहुत सराहना की गई, और उनकी विद्वत्तापूर्ण शैली

और आकर्षक तरीके से, शहर में उदारवादी लोगों को एकजुट करने में मदद मिली।

उत्तरी द्वीप के प्रमुख शहर ऑकलैंड में, धार्मिक विचारों के कारण के लिए वही अच्छी सेवा रेवरेंड श्री एडगर के भाषणों द्वारा प्रदान की गई थी, जो एक पादरी थे, जिनके आध्यात्मिक सिद्धांतों ने उन्हें सांप्रदायिक संगठनों से अलग कर दिया था, और उनके आसपास शहर के आध्यात्मिक लोगों को आकर्षित किया था। इन सज्जनों द्वारा किए गए अच्छे कामों के अलावा, श्री पीबल्स, वॉकर, जे। टायरमैन की कभी-कभार की गई यात्राएँ और द्वीपों के हर हिस्से में आयोजित कई निजी मंडलियों के प्रभाव ने पूरे न्यूजीलैंड में आध्यात्मिक विचारों और सिद्धांतों के सामान्य, हालांकि शांत, प्रसार को बढ़ावा दिया।

267.लोलाल**,** क्रुतोफ फ्रलेद्रेह**: (1733-1811),** बर्लिन : के एक जर्मन लेखक और पुस्तक विक्रेता, रहस्यमय दृष्टिकोण से दिलचस्प हैं क्योंकि उनके साथ कुछ अजीबोगरीब अनुभव हुए और जिसका उन्होंने बर्लिन की रॉयल सोसाइटी के समक्ष पढ़े गए अपने व्यक्तिगत विवरण में वर्णन किया है। उनके मामले की परिस्थितियों को, जो मनोविज्ञान के इतिहास में सबसे प्रसिद्ध में से एक है, उनके अपने शब्दों से बेहतर तरीके से प्रस्तुत करना असंभव होगा। "वर्ष 1791 के पहले दो महीनों में," वे कहते हैं, "मैं बहुत ही अप्रिय प्रकृति की कई घटनाओं से मन में बहुत अधिक प्रभावित हुआ था;

और 24 फरवरी को एक ऐसी परिस्थिति आई जिसने मुझे बहुत अधिक परेशान कर दिया। सुबह दस बजे मेरी पत्नी और एक अन्य व्यक्ति मुझे सांत्वना देने आए; मैं बहुत अधिक मानसिक रूप से विचलित था, क्योंकि कई घटनाओं ने मेरी नैतिक भावनाओं को पूरी तरह से घायल कर दिया था, और जिससे मुझे राहत मिलने की कोई संभावना नहीं दिख रही थी, जब अचानक मैंने अपने से दस कदम की दूरी पर एक आकृति देखी - एक मृत व्यक्ति की आकृति।

मैंने उसकी ओर इशारा किया, और अपनी पत्नी से पूछा कि क्या उसने उसे नहीं देखा। उसने कुछ नहीं देखा, लेकिन बहुत घबरा गई, मुझे शांत करने का प्रयास किया, और चिकित्सक को बुलाया। आकृति लगभग सात या आठ मिनट तक रही, और अंततः मैं थोड़ा अधिक शांत हो गया; और चूंकि मैं बहुत थक गया था, इसलिए मैं जल्द ही एक परेशान करने वाली नींद में चला गया, जो आधे घंटे तक चली। एक घंटे के बाद।

यह दृश्य मेरे मन की उस तीव्र उत्तेजना के कारण था जिसमें मैं था, और यह माना जाता था कि मुझे उस कारण से और कुछ भी आशंका नहीं होनी चाहिए;

लेकिन हिंसक स्नेह ने मेरी नसों को कुछ अप्राकृतिक स्थिति में डाल दिया था। इससे आगे के परिणाम सामने आए, जिनके लिए अधिक विस्तृत विवरण की आवश्यकता है। 1 *• दोपहर में, चार बजे के कुछ समय बाद, आकृति दिखाई दी जिसे मैंने सुबह देखा था, वह फिर से प्रकट हो गया।

जब यह हुआ, तब मैं अकेला था, एक ऐसी परिस्थिति जो, जैसा कि आसानी से कल्पना की जा सकती है, बहुत अप्रिय नहीं हो सकती। इसलिए मैं अपनी पत्नी के कमरे में गया, जिसे मैंने यह बात बताई। लेकिन वहाँ भी वह आकृति मेरा पीछा करती रही। कभी वह मौजूद थी, कभी गायब हो जाती थी, लेकिन वह हमेशा एक ही खड़ी आकृति थी। छह बजे के कुछ समय बाद कई पीछा करने वाली आकृतियाँ भी दिखाई दीं; लेकिन उनका उस खड़ी आकृति से कोई संबंध नहीं था।

मैं इस प्रेत के लिए कोई और कारण नहीं बता सकता, सिवाय इसके कि, हालाँकि मेरा मन बहुत अधिक शांत था, मैं इतनी जल्दी इस तरह की गहरी और दुखद झुंझलाहट के कारण को पूरी तरह से भूल नहीं पाया था, और मैंने इसके परिणामों पर विचार किया, ताकि, यदि संभव हो, तो उनसे बच सकूँ; और यह रात के खाने के तीन घंटे बाद हुआ, उस समय जब पाचन शुरू होता है। •• अंततः मैं उस अप्रिय घटना के संबंध में अधिक शांत हो गया, जिसने पहली बार प्रेत को जन्म दिया था; लेकिन यद्यपि मैंने बहुत बढ़िया दवाइयों का उपयोग किया था और अन्य मामलों में भी मैं पूरी तरह से स्वस्थ था, फिर भी प्रेत कम नहीं हुए, बल्कि इसके विपरीत उनकी संख्या में वृद्धि हुई और वे अत्यंत असाधारण तरीके से परिवर्तित हो गए। •*

पहले भयानक दिन के बाद मृत व्यक्ति की आकृति मुझे कभी नहीं दिखाई दी, लेकिन कई अन्य आकृतियाँ बाद में बहुत स्पष्ट रूप से दिखाई दीं, कभी-कभी - जैसे कि मैं जानता था, हालांकि, ज्यादातर ऐसे लोगों की जिन्हें मैं नहीं जानता था, और जो मुझे पता थे, उनमें जीवित और मृत दोनों तरह के व्यक्ति थे, लेकिन ज्यादातर पहले वाले, और मैंने यह अवलोकन किया, कि जिन परिचितों से मैं रोजाना बात करता था, वे मुझे कभी भी भ्रम की तरह नहीं दिखाई दिए; वे हमेशा ऐसे थे जो दूर थे।

"यह भी ध्यान देने योग्य है कि ये आकृतियाँ मुझे हर समय और सबसे अलग-अलग परिस्थितियों में समान रूप से अलग और स्पष्ट दिखाई देती थीं। चाहे मैं अकेला था या किसी के साथ, दिन के उजाले में, रात के समय की तरह ही, मेरे अपने घर में भी और मेरे पड़ोसी के घर में भी; फिर भी जब मैं किसी दूसरे

व्यक्ति के घर पर होता था, तो वे कम दिखाई देते थे, और जब मैं सार्वजनिक सड़क पर चलता था, तो वे बहुत कम दिखाई देते थे।

जब मैं अपनी आँखें बंद करता था, तो कभी-कभी आकृतियाँ गायब हो जाती थीं, कभी-कभी वे मेरे बंद होने के बाद भी बनी रहती थीं। यदि वे पहले मामले में गायब हो जाती थीं, तो मेरी आँखें फिर से खोलने पर, लगभग वही आकृतियाँ दिखाई देती थीं, जिन्हें मैंने पहले देखा था। 44 मैं कभी-कभी अपने चिकित्सक और अपनी पत्नी से उन प्रेतात्माओं के बारे में बात करता था जो उस समय मेरे चारों ओर मंडराती थीं; क्योंकि आम तौर पर आकृतियाँ स्थिर की तुलना में अधिक बार गतिशील दिखाई देती थीं। वे हमेशा मौजूद नहीं रहती थीं - वे अक्सर मुझे पूरी तरह से छोड़ देती थीं, और फिर थोड़े या लंबे समय के लिए दिखाई देती थीं; एक या एक से अधिक बार; लेकिन, सामान्य तौर पर, कई एक साथ दिखाई दिए।

अधिकांशतः मैंने दोनों लिंगों की मानव आकृतियाँ देखीं; वे आम तौर पर इधर-उधर ऐसे चलते थे जैसे उनका एक-दूसरे से कोई संबंध न हो, जैसे किसी मेले में लोग जहाँ सब कुछ हलचल भरा हो; कभी-कभी ऐसा लगता था जैसे वे एक-दूसरे से कोई काम कर रहे हों। एक या दो बार मैंने उनके बीच घोड़े पर सवार लोगों, कुत्तों और पक्षियों को देखा; ये सभी आकृतियाँ मुझे अपने प्राकृतिक आकार में दिखाई दीं, बिल्कुल वैसे ही जैसे वे वास्तविक जीवन में मौजूद हों, शरीर के खुले हिस्सों पर कई रंग और कपड़ों के सभी प्रकार और रंगों के साथ। लेकिन मुझे लगता है कि रंग प्रकृति की तुलना में कुछ हद तक फीके थे।

किसी भी आकृति में कोई विशिष्ट विशेषता नहीं थी, वे न तो भयानक, हास्यास्पद, न ही घृणित थीं; उनमें से अधिकांश अपनी उपस्थिति में साधारण थीं, - कुछ तो सुखद भी थीं। •' कुल मिलाकर, मैं जितनी देर इस अवस्था में रहा, भूत-प्रेतों की संख्या उतनी ही बढ़ती गई और भूत-प्रेत अधिक बार दिखाई देने लगे। लगभग चार सप्ताह बाद मैंने उन्हें बोलते हुए सुनना शुरू किया: कभी-कभी भूत-प्रेत एक-दूसरे से बात करते थे, लेकिन अधिकांशतः वे एक-दूसरे से बात करते थे।

वे मुझसे बात करते थे, ये भाषण सामान्य रूप से संक्षिप्त होते थे और इनमें कभी कोई अप्रिय बात नहीं होती थी, बुद्धिमान और सम्मानित मित्र अक्सर मेरे पास आते थे, जो मेरे दुख में मुझे सांत्वना देने का प्रयास करते थे, जिसका मेरे मन पर अभी भी गहरा प्रभाव है। यह भाषण मैं अक्सर अकेले में सुनता था; हालांकि कभी-कभी मैं इसे लोगों के साथ, वास्तविक व्यक्तियों की बातचीत के

साथ मिला कर सुनता था; अक्सर केवल एक वाक्य में, लेकिन कभी-कभी जुड़े हुए प्रवचन में भी।

"हालांकि इस समय मैं शरीर और मन दोनों से काफी स्वस्थ था, और इन 'भ्रमों' से इतना परिचित हो गया था कि आखिरकार वे मुझे जरा भी अप्रिय भावना नहीं जगाते थे, बल्कि इसके विपरीत मुझे मनोरंजन और आनंद के लिए लगातार विषय प्रदान करते थे; फिर भी जब विकार काफी बढ़ गया, और ये आकृतियाँ मुझे पूरे दिन दिखाई देती रहीं, और रात के समय भी, अगर मैं जाग जाता, तो मुझे कई दवाओं का सहारा लेना पड़ता।"

फिर वह बताता है कि कैसे रक्त छोड़ने पर भूत-प्रेत गायब हो गए। 41 यह 20 अप्रैल को पूर्वाह्न ग्यारह बजे किया गया था। मैं सर्जन के साथ अकेला था; लेकिन ऑपरेशन के दौरान, कमरा हर तरह के मानव रूपों से भरा हुआ था, जो एक दूसरे पर तेजी से चढ़ रहे थे। यह साढ़े चार बजे तक जारी रहा, ठीक उसी समय जब पाचन शुरू होता है।

मैंने तब देखा कि आकृतियाँ धीरे-धीरे चलने लगीं; इसके तुरंत बाद रंग धीरे-धीरे हल्के होते गए; हर सात मिनट में वे अपनी तीव्रता खोते गए, भूतों की अलग-अलग आकृति में कोई बदलाव नहीं हुआ। लगभग साढ़े छह बजे सभी आकृतियाँ पूरी तरह से सफेद हो गईं, और बहुत कम हिलती-डुलती थीं; फिर भी आकृतियाँ पूरी तरह से अलग दिखाई दे रही थीं; धीरे-धीरे वे स्पष्ट रूप से कम स्पष्ट होती गईं, बिना उनकी संख्या में कमी आए, जैसा कि अक्सर पहले होता था। आकृतियाँ न तो हिलीं, न ही गायब हुईं, जो कि अन्य अवसरों पर भी अक्सर होता था।

इस बार वे तुरंत हवा में विलीन हो गईं; कुछ तो पूरे के पूरे टुकड़े भी काफी समय तक बने रहे, जो धीरे-धीरे आँखों से ओझल हो गए। लगभग आठ बजे उनमें से किसी का भी कोई निशान नहीं बचा था, और उसके बाद से मैंने कभी भी उसी तरह की कोई उपस्थिति का अनुभव नहीं किया। उस समय से दो या तीन बार मुझे ऐसा महसूस हुआ है, अगर मुझे खुद को व्यक्त करने की अनुमति दी जाए, या ऐसा एहसास हुआ जैसे मैंने कुछ देखा हो जो एक पल में फिर से गायब हो गया।

वर्तमान विवरण लिखते समय मुझे इस अनुभूति से आश्चर्य हुआ, इसे और अधिक सटीक बनाने के लिए, मैंने 1791 के कागजात पढ़े, और उस समय की सभी परिस्थितियों को अपनी स्मृति में याद किया। हम कभी-कभी, मन की सबसे बड़ी शांति में भी, अपनी कल्पना के इतने कम स्वामी होते हैं।"

268.सूफियों का मानना : था कि रहस्यमय चिंतन की वांछित अवस्था को प्राप्त करने के लिए, भौतिक इंद्रियों के द्वार को बंद करना आवश्यक है, ताकि आंतरिक या आध्यात्मिक इंद्रियाँ अधिक स्वतंत्र रूप से काम कर सकें। इस आदेश को कभी-कभी शाब्दिक रूप से लिया जाता था, जैसे कि ब्राह्मण योगियों ने, जो दूरदर्शी परमानंद प्राप्त करने के लिए सावधानीपूर्वक अपनी आँखें, कान, नाक और मुँह बंद कर लिए थे। इस प्रकार रहस्यमय रात्रि आशा, भय, आत्म-चेतना और हर मानवीय भावना के सभी बाहरी इंद्रिय-छापों को बंद कर देती है, ताकि आंतरिक प्रकाश को अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सके।

269.जुनून और कब्ज़ा: जुनून, लैटिन ऑब्सेशनम से - ऑब्सिडेरे, घेरना, पारंपरिक विश्वास के अनुसार, बाहर से एक बुरी आत्मा के लगातार हमले के कारण पागलपन का एक रूप है, यह कब्जे के विपरीत है, अंदर से एक बुरी आत्मा द्वारा नियंत्रण, दोनों का अर्थ है किसी भी तरह से व्यक्तित्व का हड़पना और शरीर पर एक विदेशी और निर्जीव इकाई का नियंत्रण। यह विश्वास मानव इतिहास के शुरुआती अभिलेखों में और प्राचीन धर्मों के जादुई अनुष्ठानों और सूत्रों में पाया जा सकता है, जिनका उपयोग इन हमलावर प्रभावों के खिलाफ़ आकर्षण और भूत भगाने के लिए किया जाता है।

भारतीय, ग्रीक और रोमन साहित्य में ऐसे कई उदाहरण हैं, बाइबल में भी शाऊल के मामले से लेकर "एक दुष्ट आत्मा से परेशान" होने तक के कई उदाहरण हैं, जो डेविड की वीणा की धुन से बेदखल हो गया था, और ईसा मसीह के चमत्कारों तक, जिन्होंने भूत-प्रेतों की सेना को बाहर निकाल दिया था। प्लेटो ने अपने रिपब्लिक में न केवल विभिन्न ग्रेड के राक्षसों की बात की है, बल्कि उनसे ग्रस्त लोगों के इलाज और उनके लिए प्रावधान करने की एक विधि का भी उल्लेख किया है।

सोफोकल्स और युरिपिडीज ने भूत-प्रेतों का वर्णन किया है और इस विषय का उल्लेख हेरोडोटस, प्लूटार्क, होरेस और कई अन्य क्लासिक्स में भी पाया जाता है। मध्य युग में भयानक और भयावह प्रकरणों का पता शैतान और उसके सैनिकों द्वारा भूत-प्रेत के कब्जे और जुनून की संभावना में निर्विवाद विश्वास से लगाया जा सकता है। • सभी पागलपन इसी कारण से होते थे, वास्तव में यह शैतान की दृश्यमान अभिव्यक्ति थी, जिसे केवल जादू-टोने से भगाया जा सकता था, पवित्र अनुष्ठानों का पालन करना, या बाद में, अंदर की यातनाग्रस्त आत्मा की भलाई के लिए शारीरिक रूप से जला दिया जाना और नष्ट कर दिया जाना।

सभी युगों और स्थानों में काले जादू के अनुष्ठान, जानबूझकर शैतान और उसके राक्षसों द्वारा इस कब्जे को उजागर करते हैं ताकि अचूक ज्ञान के संचार और लाभ के लिए ऐसा माना जाता है कि वे प्रदान करते हैं और इसके परिणामस्वरूप मनुष्य और उसके भाग्य पर शक्ति और नियंत्रण होता है। आधुनिक विज्ञान ने मानव मनोविज्ञान में अपने धैर्यपूर्ण और श्रमसाध्य शोधों के साथ, इस हैरान करने वाले रहस्य की कुंजी दी है, जो मानव मन को एक अतुलनीय रूप से नाजुक उपकरण के रूप में दर्शाता है, जो विशेष रूप से इंद्रियों की धारणाओं और मस्तिष्क पर उनके असंख्य छापों की दया पर निर्भर है, इसका संतुलन एक झटके, एक दवा, एक क्षणिक उत्तेजना, अक्सर विचारों के एक समूह पर लंबे समय तक और गहन एकाग्रता से इतनी आसानी से हिल जाता है। यह ध्यान देने योग्य है कि सभी युगों और देशों की मतिभ्रमकारी महामारियों में यह अपरिवर्तनीय विशेषता पाई जाती है: वे किसी प्रमुख कारण, विचारधारा या उस समय प्रचलित धार्मिक भावना से जुड़ी होती हैं। मध्य युग में जब स्वर्गदूतों, संतों और शैतानों की सकारात्मक झलकियों में गहन विश्वास पनपा, तो लोगों की कल्पना पर हावी हो गई और इस तरह से वह बहुत नाटकीय हो गई।

मानव आत्मा का जानवरों में पुनर्जन्म एक और लोकप्रिय विश्वास था और इसके साथ ही लाइकेनथ्रोपी (q.v.) का भयानक अंधविश्वास जुड़ा हुआ है, जो चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में फ्रांस और जर्मनी में बड़ी संख्या में लोगों को जकड़े हुए था। तेरहवीं शताब्दी में पेरूस में फ्लैगेलेंट उन्माद का उदय हुआ, जो प्लेग के प्रकोप के कारण होने वाली घबराहट के कारण हुआ था* इन लोगों का मानना था कि बिना ध्वजारोहण के पापों की क्षमा नहीं होती।

उन्होंने कट्टर उत्साह के साथ इसका प्रचार किया और उनके समूह, हर जगह अनुयायियों को इकट्ठा करते हुए, शहर और देश भर में घूमते थे, कम कपड़ों में जिन पर कंकालों को दर्शाया गया था और उन्मत्त आंदोलनों के साथ सार्वजनिक रूप से खुद को कोड़े मारते थे। इन प्रदर्शनों को ही पहली बार "मृत्यु का नृत्य" नाम दिया गया था। नृत्य उन्माद, मन के विचलन और शरीर की उन्मत्त विकृतियों के साथ जर्मनी में चौदहवीं शताब्दी में बहुत प्रचलित था, और सोलहवीं शताब्दी में इटली में जहाँ इसे "टारेंटिज्म" कहा जाता था और स्रोत के रूप में, टारेंटुला मकड़ी के काटने को जिम्मेदार ठहराया गया था।

इलाज के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले संगीत और गाने अभी भी मौजूद हैं। एडमंड पैरिश ने अपने काम हेलुसिनेशन्स एंड इल्यूजन्स में इस विषय पर निम्नलिखित टिप्पणियाँ की हैं: •• अगर इसे असली कोरिया नहीं माना जाता है, तो मध्य युग में जर्मनी और नीदरलैंड में फैली नृत्य की महामारी इसी शीर्षक के अंतर्गत आती है। ऐक्स में दिखाई देने के बाद यह कुछ ही महीनों में लीज, उट्रेच

और पड़ोसी शहरों में फैल गया, मेटक्स, कोलोन और स्ट्रासबर्ग (1418) का दौरा किया और सोलहवीं शताब्दी तक रहने के बाद धीरे-धीरे खत्म हो गया।

इस बीमारी में ऐंठन, नृत्य के साथ होने वाली विकृतियाँ, मतिभ्रम और इसी तरह की अन्य बीमारियाँ शामिल थीं। पेट पर पट्टी बांधने के साथ-साथ शरीर के उस हिस्से पर लात और वार करके हमले को रोका जा सकता था। संगीत का नर्तकियों पर बहुत प्रभाव था, और इस कारण से इसे सड़कों पर बजाया जाता था ताकि हमले इस तरह से संकट में पहुँच सकें और जल्दी से जल्दी गायब हो जाएँ। बहुत ही मामूली परिस्थितियाँ इन दौरों को ला सकती थीं, उदाहरण के लिए नुकीले जूते देखना और लाल रंग देखना जिसे नर्तक भयभीत होकर पकड़ते थे।

इस तरह के प्रकोप को रोकने के लिए अधिकारियों ने नुकीले जूते पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया था। अपने नृत्य के दौरान कई पीड़ितों को लगा कि वे खून में डूबे हुए हैं या उन्हें स्वर्गीय दर्शन हुए हैं।" वही लेखक अन्य उदाहरणों पर टिप्पणी करता है: - "इस श्रेणी में भूत-प्रेत के कब्जे का इतिहास भी शामिल है। आत्माओं द्वारा कब्जे में होने का विश्वास, जो अक्सर अलग-अलग मामलों में पाया जाता है, कुछ समय में महामारी के रूप में प्रकट होता है।

सोलहवीं शताब्दी में ब्रैंडेनबर्ग और हॉलैंड और इटली में ऐसी महामारी फैली, खासकर कॉन्वेंट में। 1350-60 में इसने सेंट ब्रिगिटा के कॉन्वेंट, ज़ैंथन में, कोलोन के पास एक कॉन्वेंट और अन्य पर हमला किया। ननों ने घोषणा की कि शैतान ने उनसे मुलाकात की थी और उसके साथ कामुक बातचीत की थी। इन और अन्य 'भूतग्रस्त' दुष्टों को कभी-कभी कालकोठरी में फेंक दिया जाता था, कभी-कभी जला दिया जाता था।

ऐक्स में उर्सुलाइन्स का कॉन्वेंट एक ऐसे ही नाटक का दृश्य था (1609-11) जहाँ दो प्रेतग्रस्त ननों ने, सभी प्रकार की प्रेतों से पीड़ित होकर, एक पुजारी पर जादू-टोना करने का आरोप लगाया, जिसके आरोप में उसे जलाकर मार दिया गया (ग्रैंडलर, अर्बलन देखें)। लाउडन (1632-39) की ननों का प्रसिद्ध मामला एक समान दुखद निष्कर्ष पर पहुंचा, साथ ही लौवियर मामला (1642) जिसमें दो मुख्य पीड़ितों को आजीवन कारावास और सूली पर लटकाया गया।" अंधविश्वासी दिमागों पर जादू और जादू टोना के व्यापक विश्वास और भय ने सबसे असाधारण मतिभ्रम पैदा किया।

धार्मिक परमानंद भी इसी तरह का होता है, अंतर यह है कि यह तथाकथित अच्छी आत्माओं के कब्जे और उनके संपर्क में होता है। सभी देशों की पवित्र

पुस्तकों में इसके उदाहरण भरे पड़े हैं और अपवित्र इतिहास भी इसके उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। पुराने नियम में परमानंद के दर्शन और रहस्योद्घाटन के कई परिचित मामलों का हवाला दिया जा सकता है, साथ ही संतों और शहीदों की किंवदंतियों में पाए जाने वाले मामलों का भी हवाला दिया जा सकता है, जहाँ वे या तो स्वर्ग से रहस्योद्घाटन या शैतान के प्रलोभन के रूप में दिखाई देते हैं।

बाद के मामले में, एक वैज्ञानिक अधिकारी, क्रैफ्ट-एबिंग, निकट भविष्य की ओर इशारा करते हैं। धार्मिक परमानंद का यौन अशांति से संबंध। क्या "परमानंद" की यह स्थिति थी और निम्नलिखित मार्ग में पर्याप्त रूप से खोजी और प्रेरित की गई थी? रोवेस: - "पूर्वी और आदिम लोगों जैसे कि कंडूस, अमेरिकी भारतीय, ग्रीनलैंड के मूल निवासी, काम्ट्स चटका और युकाटन, बुत-पूजा करने वाले नीग्रो और पॉलिनेशियाई लोगों में, मतिभ्रम के साथ उन्माद की स्थिति अक्सर देखी जाती है, कभी-कभी यह अपने आप उत्पन्न होती है, लेकिन अधिक बार कृत्रिम रूप से प्रेरित होती है।

यह प्राचीन काल के देशों में भी जाना जाता था। इस स्थिति को प्रेरित करने के लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किए जाने वाले साधन जादुई ड्रम बजाना और तुरही बजाना, चीखना और घंटों प्रार्थना करना, नृत्य करना, कोड़े मारना, ऐंठन वाली हरकतें और विकृतियाँ, तपस्या, उपवास और यौन संयम हैं। वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए मादक पदार्थों का भी सहारा लिया जाता है। इस प्रकार पश्चिमी साइबेरिया में फ्लाईअगारिक का उपयोग किया जाता है, सैन डोमिंगो में जड़ी बूटी कोका, अमेरिकी भारतीयों की कुछ जनजातियों द्वारा तम्बाकू, और पूर्व में अफीम और हशीश का उपयोग किया जाता है।

प्राचीन मिस्र के लोग अपने मादक पेय पीते थे, और चुड़ैल के मरहम और फिल्ट्रे की रसीदें मध्यकालीन समय से हमारे पास आती रही हैं।" कई देशों में धार्मिक और भविष्यसूचक उद्देश्यों के लिए प्रेतबाधा की यह स्थिति प्रेरित की जाती है, साथ ही केवल भाग्य-कथन के लिए भी। वर्तमान समय में जुनून और प्रेतबाधा में यह विश्वास किस हद तक मौजूद है, इसकी पुष्टि टायलर ने प्रिमिटिव कल्चर में की है: - "यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राक्षसी कब्जे के सिद्धांत को बनाए रखा गया है, जो कि लगभग उन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, आधी मानव जाति द्वारा बनाए रखा गया है, जो इस प्रकार आदिम पुरातनता में अपने पूर्वजों के सुसंगत प्रतिनिधि के रूप में खड़े हैं।"

आधुनिक अध्यात्मवाद और थियोसोफी के पंथों में इसे उनके पंथों के प्रमुख सिद्धांत के रूप में पाया जा सकता है। जुनूनी सिद्धांत का उपयोग अपराध। ए. जे. डेविस द्वारा आधुनिक द्रष्टा डायका और उनके पीड़ितों के प्रकाशन से लिया

गया निम्नलिखित अंश इस आधुनिक विश्वास को इंगित करता है: - डायका का देश वह जगह है जहाँ नैतिक रूप से कमज़ोर और स्नेही रूप से अशुद्ध लोग एक अजीब परिवीक्षा में प्रवेश करते हैं वे लगातार संवेदनशील व्यक्तियों को शिकार बना रहे हैं जो अभी भी मांस में हैं और उनका मज़ाक उड़ा रहे हैं और वास्तव में ईमानदार और सच्चे लोगों की कीमत पर हँस रहे हैं।

वे (ये राक्षस जैसी आत्माएँ) सिखाती हैं कि अगर वे व्हिस्की और तम्बाकू का हिस्सा बन सकें या अपनी जलती हुई मुक्त-प्रेम प्रवृत्तियों को संतुष्ट कर सकें तो वे ऊपर उठेंगे और खुश रहेंगे। . . . ; सिद्धांतहीन बुद्धिजीवी होने के कारण उनका खेल उनके प्रभाव में रहने वाले लोगों की कीमत पर मनोरंजन के अलावा और कुछ नहीं है। इन प्राणियों के बारे में यह भी कहा जाता है कि वे घातक और रक्तपिपासु प्रकृति के होते हैं, जो अपने पास मौजूद प्राणियों को अक्सर भयानक चरित्र वाले लोगों की हत्या करने के लिए उकसाते हैं।

राक्षसी कब्जे के लक्षण। - मेलांचथॉन ने अपने एक पत्र में लिखा है कि हालांकि कभी-कभी उन्माद या माँ के लिए कुछ प्राकृतिक कारण हो सकते हैं, यह भी निश्चित है कि शैतान कुछ लोगों में प्रवेश करते हैं और प्राकृतिक कारणों से या बिना प्राकृतिक कारणों के पीड़ा और क्रोध पैदा करते हैं, जैसे कि कभी-कभी बीमारियों को ऐसे उपचारों से ठीक होते देखा जाता है जो प्राकृतिक नहीं होते। इसके अलावा, ऐसे तमाशे चमत्कार और भविष्य की भविष्यवाणी की प्रकृति के होते हैं।

बारह साल पहले सैक्सोनी की एक महिला, जो न तो पढ़ सकती थी और न ही लिख सकती थी, एक शैतान के नियंत्रण में थी, पीड़ा खत्म होने के बाद, ग्रीक और लैटिन में यह कहते हुए शब्द बोले कि लोगों में बहुत संकट होगा। डॉ. एसे निम्नलिखित देते हैं संभावित संकेतों के रूप में:

-

i. खुद को प्रेतग्रस्त मानना,
ii. दुष्ट जीवन जीना।
बीमार होना।
अकेले रहना,
iv. दीर्घकालिक बीमारियाँ, असामान्य लक्षण, गहरी नींद, अजीबोगरीब चीजों की उल्टी,
v. शैतान की निंदा करना और उसका बार-बार जिक्र करना,
vi. शैतान के साथ समझौता करना।
vii. आत्माओं द्वारा नियंत्रित होना।
viii. ऐसा चेहरा होना जो भय और डर को प्रेरित करता हो,

ix. जीने से थक जाना और उम्मीद छोड़ देना।
x. क्रोधित और हिंसक होना,
xi. जानवर की तरह चीखना और शोर मचाना।
लाउडॉन में प्रेतग्रस्त लोगों के विवरण में, हम सेंटेर, पुजारी और बिशप और नेल्मेस के सूबा के संस्थापक द्वारा मोंटपेलियर विश्वविद्यालय से पूछे गए प्रश्नों को पाते हैं, जो इस विश्वविद्यालय के संकेतों और न्यायिक उत्तरों को छूते हैं।

प्रश्न-क्या शरीर का झुकना और हिलना, कभी-कभी सिर का पैरों के तलवों को छूना, अन्य विकृतियाँ और अजीबोगरीब मुद्राएँ, सकारात्मकता के अच्छे लक्षण हैं? उत्तर-नकलची और कलाबाज ऐसी अजीबोगरीब हरकतें करते हैं, खुद को इतने तरीकों से मोड़ते और घुमाते हैं कि कोई भी यह निष्कर्ष निकालता है कि ऐसी कोई मुद्रा नहीं है जिसे पुरुष और महिलाएँ लंबे अभ्यास और प्रयोग के बाद नहीं कर सकते, यहाँ तक कि अनुभव की सहजता के साथ, नसों, मांसपेशियों और स्नायुबंधन के विस्तार द्वारा पैरों और शरीर के अन्य भागों को असामान्य रूप से फैलाने और फैलाने में सक्षम होते हैं। ऐसे प्रदर्शन प्रकृति की सीमाओं से परे नहीं हैं।

प्रश्न-क्या सिर की तेज़ी से आगे-पीछे की हरकतें, छाती और पीठ को छूना, प्रेतबाधा का एक अचूक संकेत है? उत्तर-यह हरकत इतनी स्वाभाविक है कि शरीर के अन्य भागों की हरकतों के बारे में जो कुछ कहा गया है, उसमें कुछ भी जोड़ने की ज़रूरत नहीं है। प्रश्न- क्या जीभ, गले और चेहरे पर अचानक सूजन आना और रंग का अचानक बदल जाना भूत-प्रेत के निश्चित लक्षण हैं?

उत्तर- छाती में सूजन और गड़बड़ी सांस लेने या साँस लेने के प्रयास श्वसन में सामान्य क्रियाएँ हैं - और उनसे कब्ज़े का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। गले की सूजन सांस के रुकने से हो सकती है और अन्य अंगों की सूजन उदासी भरे वाष्प से हो सकती है जो अक्सर शरीर के सभी हिस्सों में घूमते हुए देखे जाते हैं। इसलिए यह माना जाता है कि कब्ज़े का यह संकेत अस्वीकार्य है। प्रश्न- क्या एक भावना, मूर्खतापूर्ण लापरवाही, या भावना की कमी, बिना शिकायत किए या हिले-डुले और यहाँ तक कि रंग भी न बदले बिना चुभने या चुटकी लेने की हद तक कब्ज़े के कुछ संकेत हैं?

उत्तर- युवा लेसेडेमोनियन जिसने खुद को एक लोमड़ी द्वारा काटे जाने दिया जिसे उसने बिना महसूस किए चुरा लिया था, और वे लोग जो डायना की वेदी के सामने बिना एक बाल भी हिलाए, खुद को पीटते हैं, यहाँ तक कि मौत के घाट उतार देते हैं, वे सभी दिखाते हैं कि दृढ़ संकल्प के साथ, बिना शिकायत किए

पिन-चुभन को सहन किया जा सकता है। इसके अलावा, यह निश्चित है कि मानव शरीर में, कुछ लोगों में त्वचा के छोटे-छोटे क्षेत्र पाए जाते हैं, जो असंवेदनशील होते हैं, हालांकि पड़ोसी भाग काफी संवेदनशील हो सकते हैं, एक ऐसी स्थिति जो किसी पिछली बीमारी के बाद अधिक बार होती है। इसलिए, ऐसी स्थिति का भूत-प्रेत के कब्जे से कोई लेना-देना नहीं है।

प्रश्न- क्या भूत-प्रेत के कब्जे में आने वाले लोगों में भूत-प्रेत के आदेश पर होने वाली शारीरिक हरकतों की पूरी तरह से अनुपस्थिति, उनके सबसे हिंसक कार्यों के दौरान और बीच में, एक सच्चे शैतानी कब्जे का निर्विवाद संकेत है? उत्तर- शरीर के अंगों की हरकतें स्वैच्छिक होने के कारण अच्छे स्वभाव वाले व्यक्तियों के लिए अपनी इच्छा से हिलना-डुलना या न हिलना स्वाभाविक है, इसलिए इस तरह की हरकतों का बंद होना, अगर पूरी तरह से संवेदना का अभाव न हो, तो शैतानी कब्जे का अनुमान लगाने के लिए पर्याप्त आधार नहीं है। प्रश्न- क्या कुत्ते की तरह चीखना या आवाज, जो गले के बजाय छाती से आती है, वह भूत-प्रेत के कब्जे का संकेत है?

उत्तर-मानवीय कौशल इतनी आसानी से सभी प्रकार की अभिव्यक्तियों की नकल करने के लिए खुद को ढाल लेता है कि हर दिन ऐसे लोग मिलते हैं जो सभी प्रकार के जानवरों की अभिव्यक्ति, चीखें और गाने पूरी तरह से दे सकते हैं, और वह भी होंठों की लगभग अगोचर हरकत के साथ* फिर, बहुत से ऐसे लोग पाए जाते हैं जो अपने शब्दों को पेट में बनाते हैं और ऐसा लगता है कि वे उन्हें बनाने वाले की बजाय किसी अन्य वस्तु से आ रहे हैं। ऐसे लोगों को वेंट्रिलो क्विस्ट कहा जाता है।

हालाँकि, ऐसी स्थिति स्वाभाविक है, जैसा कि पास्क्वियर ने अपने शोध के अध्याय 38 में दिखाया है, जिसमें कॉन्स्टेंटिन नामक एक विदूषक का उदाहरण दिया गया है। प्रश्न-क्या बिना आँख हिलाए किसी वस्तु पर नज़र टिकाए रखना, प्रेतबाधा का अच्छा संकेत है? उत्तर-आँख की हरकत स्वैच्छिक है, शरीर के अन्य अंगों की तरह, और इसे हिलाना या स्थिर रखना स्वाभाविक है-इसलिए, इसमें ध्यान देने वाली कोई बात नहीं है। प्रश्न- क्या लैटिन में पूछे गए प्रश्नों के फ्रेंच में दिए गए उत्तर, जिन्हें भूत-प्रेत से ग्रसित माना जाता है, भूत-प्रेत के लक्षण हैं?

उत्तर- हम यह दावा करते हैं कि ऐसी भाषाएँ समझना और बोलना जो किसी ने नहीं सीखी हैं, निश्चित रूप से अलौकिक है, और इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यह शैतान के द्वारा या किसी अन्य कारण से हुआ है; लेकिन केवल कुछ प्रश्नों के उत्तर देने से लंबे अभ्यास के अलावा और कुछ नहीं पता चलता है, या यह कि उनमें से कोई उनके साथ गठबंधन में है और ऐसे उत्तरों में

योगदान करने में सक्षम है, जिससे यह कहना गलत लगता है कि शैतान लैटिन में पूछे गए प्रश्नों को सुनते हैं और फ्रेंच में और उस भाषा में उत्तर देते हैं जो उस व्यक्ति की स्वाभाविक भाषा है जिसे भूत-प्रेत से ग्रसित माना जाता है।

यदि इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ऐसा परिणाम किसी भूत-प्रेत के कब्जे का संकेत नहीं देता है, खासकर तब जब प्रश्न कम शब्दों के हों और इसमें कोई शामिल न हो। प्रश्न- क्या निगली हुई चीज़ों की उल्टी होना भूत-प्रेत के कब्जे का संकेत है? ए.—डेल्रियो, बोडिन और अन्य लेखकों का कहना है कि जादू टोना करके, जादूगर कभी-कभी शैतान के काम से कीलें, पिन और अन्य अजीब चीजें उगलने में कामयाब हो जाते हैं, जो शैतान के काम से होता है वास्तव में भूत-प्रेत से ग्रसित व्यक्ति के लिए भी यही करना चाहिए। लेकिन निगली हुई चीजों को उल्टी करना स्वाभाविक है, ऐसे लोग हैं जिनका पेट कमजोर होता है, जो निगली हुई चीजों को कई घंटों तक दबाए रखते हैं और फिर उसे वैसे ही वापस कर देते हैं जैसे उन्होंने खाया था; इसके अलावा, लिंटररी भोजन को आंत के माध्यम से वैसे ही वापस कर देती है जैसे उसने मुंह से खाया था। प्रश्न- क्या शरीर के विभिन्न भागों में लैंसेट से चुभन, बिना खून निकाले, भूत-प्रेत के ग्रसित होने का अच्छा संकेत है?

"ए.—यह उदासी स्वभाव की संरचना से संबंधित है, जिसमें रक्त इतना गाढ़ा होता है कि यह ऐसे छोटे घावों से नहीं निकल सकता है और यह इस वजह से है कि कई लोगों को जब सर्जन के लैंसेट से चुभोया जाता है, तो उनकी नसों में भी, एक बूँद भी खून नहीं निकलता है, जैसा कि अनुभव से पता चलता है। इस प्रकार यहाँ कुछ भी असाधारण नहीं है। प्रेतबाधा की दर्ज घटनाएँ।—बोलोइस बताता है कि कैसे निकोली, लियोन के प्रेतबाधा से ग्रस्त व्यक्ति के शरीर से छब्बीस शैतान निकले: "दोपहर के दो बजे, निकोली, जो शैतान से ग्रस्त था, को उक्त चर्च में

लाया गया, जहाँ उक्त डे मोट्टा ने भूत भगाने के साथ पहले की तरह काम किया। सभी विनती के बावजूद उक्त बेलज़ेबूब ने उन्हें ऊँची आवाज़ में बताया कि वह बाहर नहीं आएगा। रात के खाने के बाद उनके विनती पर लौटते हुए, उक्त डे मोट्टा ने उससे पूछा कि कितने शैतान निकले हैं, और उसने उत्तर दिया, * छब्बीस।' 'तुम्हें और तुम्हारे अनुयायियों को,' तब डे मोट्टा ने कहा, • अब दूसरों की तरह बाहर आना चाहिए।' • नहीं/ उसने उत्तर दिया, 'मैं यहाँ बाहर नहीं आऊँगा, लेकिन यदि तुम मुझे सेंट रेस्टिट्यूट के पास ले जाना चाहो, तो हम वहाँ बाहर आएँगे।

तुम्हारे लिए यह पर्याप्त है कि छब्बीस बाहर आ गए हैं।' तब उक्त डे मोट्टा ने इस बात का ठोस संकेत माँगा कि वे कैसे बाहर आए थे। गवाही के लिए उसने उन्हें सामने के गेट के ऊपर खजाने के बगीचे में देखने को कहा, क्योंकि वे तीन गुच्छे {यानी फ्रांस में अन्य लोगों की तरह, हरे मे-पोल (एक छोटा देवदार) और लीसे के चर्च के ऊपर से तीन स्लेट की शाखाओं को क्रॉस में बनाया गया था, जो कि सेंट-विंसेंट के मठाधीश, एम. डी वेलेस, मास्टर रॉबर्ट डी मे, चर्च नोट्रे-डेम ऑफ लाओन के कैनन और अन्य लोगों द्वारा दिखाए गए सभी सत्य पाए गए।"

वही लेखक लाओन के राक्षसी की विकृतियों का विवरण देता है: वह कहता है: - "जितनी बार पूज्य पिता ने उसकी आँखों के सामने पवित्र यजमान को घुमाया, और कहा, 'चले जाओ, भगवान के दुश्मन,' तो वह इधर-उधर करवटें बदलती रही, अपना चेहरा अपने पैरों की ओर घुमाती रही, और भयानक आवाज़ें निकालती रही। उसके पैर उलटे थे, पंजे एड़ी की स्थिति में थे, और आठ आदमियों की संयम शक्ति के बावजूद, उसने खुद को कठोर किया और खुद को हवा में छह फीट की ऊंचाई पर फेंक दिया, एक आदमी का कद, ताकि परिचारक, कभी-कभी उसके साथ हवा में भी चले जाते, अपने काम में पसीना बहाते। और यद्यपि वे अपनी पूरी ताकत से नीचे झुके, फिर भी वे उसे रोक नहीं पाए, और संयमित हाथों से छूटकर, उसने बिना किसी दिखावे के खुद को मुक्त कर लिया।

"लोगों ने ऐसा भयानक दृश्य देखा और सुना, एक ऐसा राक्षसी, घिनौना और डरावना व्यक्ति चिल्लाया, 'यीशु, हम पर दया करो।' कुछ लोग छिप गए, देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाए; अन्य, इस तरह के अत्यधिक और अविश्वसनीय पीड़ा की जंगली क्रूरता को पहचानते हुए, फूट-फूट कर रोने लगे, और दयनीय रूप से दोहराते रहे, 'यीशु, हम पर दया करो।' तब रेवरेंड लैदर ने उन लोगों को अनुमति दी जो रोगी, विकृत, मुड़े हुए और विकृत, और मृत्यु की कठोरता के साथ छूने और छूने की इच्छा रखते थे।

इनमें से प्रमुख सुधारक थे, जैसे कि फ्रेंकोइस सैंटेरे, क्रिस्टोफ़ल, पास्क्वॉट, ग्रेटियन डे ला रोशे, मास्क्वेट, जीन डू ग्लास, और अन्य जो सुधार की दिशा में अपनी प्रवृत्ति के लिए जाने जाते थे, सभी जोरदार व्यक्ति थे। उन सभी ने उसके अंगों को सीधा करने, उन्हें सामान्य स्थिति में लाने और उसकी आँखें और मुँह खोलने का प्रयास किया, लेकिन व्यर्थ। यह व्यर्थ था।

इसके अलावा, वह इतनी कठोर और दृढ़ थी कि अंग टूटने की बजाय टूट जाते, नाक और कान भी टूट जाते। और फिर, जैसा कि उसने बाद में कहा, वह भूत-प्रेत से ग्रसित थी, उसने घोषणा की कि वह अविश्वसनीय दर्द सह रहा था। अर्थात्,

आत्मा की पीड़ा से शैतान शरीर को पत्थर या संगमरमर बना देता है।" जीन ले ब्रेटन ने लूवियर्स में प्रेतग्रस्त लोगों के बारे में निम्नलिखित जानकारी दी है:
—
चौथा तथ्य यह है कि दिन में कई बार वे क्रोध और रोष के आवेग दिखाते हैं, जिसके दौरान वे खुद को राक्षस कहते हैं, हालांकि, किसी को भी अपमानित किए बिना, या यहां तक कि पुजारियों की उंगलियों को चोट पहुंचाए बिना, जो उनके क्रोध की ऊंचाई पर उनके मुंह में डाल दी गई थीं। *• पांचवां यह है कि इन क्रोधों के दौरान वे अजीब ऐंठन और विकृतियां दिखाते हैं, खुद को पीछे की ओर झुकाते हैं, अन्य चीजों के अलावा, हाथों का उपयोग किए बिना, एक चक्र के रूप में, और इस तरह से कि उनके शरीर को माथे पर उतना ही सहारा मिलता है जितना पैरों पर।

शरीर का बाकी हिस्सा बिना सहारे के होता है और लंबे समय तक ऐसा ही रहता है - यह स्थिति सात या आठ बार दोहराई जाती है। इस तरह के और कई अन्य करतबों के बाद, कभी-कभी चार घंटे तक जारी रखा जाता है, मुख्य रूप से भूत भगाने और गर्मी के दिनों में, वे सामान्य, तरोताजा और सामान्य नाड़ी के साथ आते हैं, जैसे कि उन्हें कुछ हुआ ही न हो।

"छठी बात यह है कि भूत भगाने के दौरान उनमें से कुछ अपनी इच्छा से बेहोश हो जाते हैं और यह स्थिति उस समय होती है जब चेहरा सबसे अधिक रक्त से भरा होता है और नाड़ी सबसे अधिक तेज़ होती है। वे अपने आप होश में आते हैं और बेहोशी की तुलना में उनका ठीक होना अधिक उल्लेखनीय होता है - यह पैर के अंगूठे की हरकत से शुरू होता है, फिर पैर और उनके क्रम में, पैर, जांघ, पेट, छाती और गले की हरकत, अंतिम तीन की हरकत व्यापक फैलाव वाली होती है।

इस बीच, चेहरा स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति से रहित होता है, जो अंत में मुंह बनाने और चिल्लाने के साथ लौटता है, आध्यात्मिक तत्व उसी समय अपनी पूर्व परेशान करने वाली विकृतियों के साथ लौटता है।" डॉक्टर एसे ने लौवियर्स के कॉन्वेंट की सिस्टर मैरी के मामले में निम्नलिखित जानकारी दी है: "आखिरी सेंट एस्प्रिट की सिस्टर मैरी थी, जो कथित तौर पर डैगन से ग्रस्त थी, एक बड़ी महिला, पतली कमर वाली, और अच्छे रंग की, बीमारी का कोई सबूत नहीं। वह भोजन कक्ष में आई। . . .

सिर सीधा और आँखें इधर-उधर घूम रही थीं, गा रही थीं, नाच रही थीं और कूद रही थीं। अभी भी इधर-उधर घूम रही थीं और अपने आस-पास के लोगों को हल्के से छू रही थीं, वह भाषा की शान से बोल रही थीं जो उनकी अच्छी भावना और अच्छे स्वभाव को व्यक्त करती थी (शैतान के व्यक्तित्व का उपयोग करते हुए)।

यह सब हरकतों और चाल-ढाल के साथ किया गया था, इसके बाद ईशनिंदा की हिंसा, फिर उनके प्रिय छोटे दोस्त मैग्डलीन, उनकी प्रिय और उनकी पसंदीदा मालकिन का संदर्भ।

और फिर, बिना किसी तरह के प्रयास के, उसने खुद को कांच के एक शीशे में प्रक्षेपित किया और एक केंद्रीय बार पर लटक गई। इरपन शारीरिक रूप से उसमें से गुजरी, लेकिन दूसरी तरफ से बाहर निकलने पर लैटिन में आदेश दिया गया, 'एस्ट इन नोमिने जेसु रेडिरेट नॉन पर एलियाम सेड पर ईडेम विआम।' कुछ चर्चा और वापस लौटने से साफ इनकार करने के बाद, वह फिर से उसी रास्ते से लौटी, जिसके बाद डॉक्टरों ने उसकी नाड़ी और जीभ की जांच की, जिसे वह हंसते हुए और दूसरी चीजों पर चर्चा करते हुए सहती रही।

उन्हें ऐसी कोई गड़बड़ी नहीं मिली जैसी उन्होंने उम्मीद की थी, न ही उसके कार्यों और शब्दों की हिंसा का कोई संकेत, उसके अस्तित्व में आने के साथ कुछ तुच्छ टिप्पणियाँ भी थीं। फिर कंपनी वापस चली गई।" लूवियर्स में भूत-प्रेत से ग्रसित लोगों के बारे में एक अन्य लेखक ने निम्नलिखित आश्चर्यजनक तथ्य दिए हैं: "इस चैपल के नैव के मध्य में संगमरमर का एक फूलदान रखा हुआ था, जिसका व्यास लगभग दो फीट और गहराई लगभग एक फीट थी, जिसके किनारे लगभग तीन अंगुल की चौड़ाई के बराबर थे।

यह इतना भारी था कि जमीन पर खड़े तीन सबसे मजबूत व्यक्तियों को भी इसे उठाने में कठिनाई होती, फिर भी यह लड़की, जो बहुत कमज़ोर लग रही थी, चैपल में आई और अपनी उंगलियों के सिरों से फूलदान को पकड़कर, उसे उस कुरसी से ऊपर उठा दिया जिस पर मैं बैठी थी।

उसे इतनी आसानी से जमीन पर गिरा दिया मानो वह कार्डबोर्ड या कागज का टुकड़ा हो। इतनी कमज़ोर लड़की में इतनी बड़ी ताकत देखकर वहाँ मौजूद सभी लोग हैरान रह गए। इसके अलावा, वह लड़की जंगली और पागल लग रही थी, इतनी अचानक और हिंसक हरकतों के साथ इधर-उधर भाग रही थी कि उसे रोकना मुश्किल था। वहाँ मौजूद एक मौलवी ने उसे हाथ से पकड़ लिया और यह देखकर हैरान रह गया कि उसने उसके शरीर के बाकी हिस्सों को इधर-उधर घूमने से नहीं रोका, मानो हाथ को सिर्फ़ एक स्प्रिंग से कंधे पर टिका दिया गया हो।

यह पूरी तरह से अप्राकृतिक प्रदर्शन लगभग सात या आठ बार किया गया और वह भी इतनी आसानी और गति से जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है।" रिलेशन (यू.एस. उर्सुलाइन्स पॉस्डेट्स टीटीऑक्सोंटे) में निम्नलिखित शामिल

हैं: - "एम. डी. चालोन्स जैसे ही वेदी पर पहुंचे (आधी रात को) मठ के बगीचे से और घर के आस-पास से एक उलझन भरी आवाज़ सुनाई दी, साथ में अज्ञात आवाज़ें और कुछ सीटी बज रही थीं; कभी-कभी अजीब और अस्पष्ट आवाज़ों के साथ ज़ोर से चीखने की आवाज़ें आती थीं, जैसे भीड़ से आ रही हों, जो रात की परछाइयों के बीच काफी डरावनी थीं।

उसी समय अलग-अलग जगहों से गायक मंडली की खिड़कियों पर पत्थर फेंके गए, जहाँ वे पवित्र मास मना रहे थे और यह इस तथ्य के बावजूद कि ये खिड़कियाँ मठ को घेरने वाली दीवारों से काफी दूरी पर थीं, जिससे यह असंभव हो गया कि वे बाहर से आए हों। एक जगह कांच टूट गया था, लेकिन पत्थर गायक मंडली में नहीं गिरा। इस शोर को अंदर और बाहर कई लोगों ने सुना। शहर के उस तरफ़ के गढ़ में रहने वाले प्रहरी ने अगले दिन कहा कि यह सुनकर वह घबरा गया और वेदी पर चैलोन के बिशप को संदेह हुआ कि घर में कुछ असाधारण चल रहा है और उस समय राक्षस या जादूगर कुछ प्रयास कर रहे थे, जिसे उसने गुप्त प्रार्थनाओं और आंतरिक भूत-प्रेत भगाने के द्वारा वहीं से दूर कर दिया।" "उसी शहर की फ्रांसिस्कन ननों ने शोर सुना और इससे भयभीत हो गईं। उन्होंने सोचा कि मठ उनके नीचे हिल रहा है और इस भ्रम और भय में उन्हें प्रार्थना का सहारा लेना पड़ा।" "उसी समय बगीचे में आवाज़ें सुनाई दीं, कमज़ोर और कराहती हुई और मानो मदद मांग रही हों। आधी रात के लगभग एक घंटे बाद और बहुत अंधेरा और तूफ़ानी था।

दो पादरी यह देखने के लिए भेजे गए कि मामला क्या है और उन्होंने मठ में मार्गुराइट कॉन्स्टेंस और डेनिस इयामी को पाया, पहला पेड़ पर और दूसरा गाना बजानेवालों की सीढ़ियों के बाहर बैठा था। वे स्वतंत्र थे और अपने होश में थे, फिर भी विचलित दिखाई दिए, विशेष रूप से बाद वाला, और बहुत कमजोर और पीला, हालांकि उसके चेहरे पर खून था; वह भयभीत थी और खुद को संभालने में कठिनाई हो रही थी।

दूसरी के चेहरे पर भी खून था, हालांकि वह घायल नहीं थी। घर के दरवाजे कसकर बंद थे और बगीचे की दीवारें दस या बारह फीट ऊंची थीं।" उसी दिन दोपहर में चैलोन के बिशप ने डेनिस लैमी को भगाने के इरादे से उसे बुलाया और जब वह नहीं मिली, तो उसने मन ही मन उसे सेंट ऐनी के चैपल में आने का आदेश दिया, जहाँ वह था। यह देखना आश्चर्यजनक था कि राक्षस ने इस आदेश का तुरंत पालन किया, जो केवल मन में तैयार किया गया था, क्योंकि लगभग एक चौथाई घंटे में चैपल के दरवाजे पर जोरदार दस्तक सुनाई दी, जैसे कि किसी ने जोर से दबाया हो।

दरवाजा खोलते ही यह लड़की अचानक चैपल में घुस गई, उछलती-कूदती, उसका चेहरा बहुत बदल गया और उसकी आँखें चमक उठीं। वह इतनी साहसी और हिंसक थी कि उसे रोकना मुश्किल था, न ही उसने स्टोल पहनने दिया जिसे उसने पकड़ लिया और चार या पाँच मौलवियों के प्रयासों के बावजूद हिंसक रूप से हवा में फेंक दिया, जिन्होंने उसे रोकने की पूरी कोशिश की, ताकि अंत में उसे बांधने का प्रस्ताव रखा जा सके, लेकिन जिस हालत में वह थी, उसमें यह बहुत मुश्किल माना गया।"

"एक अन्य अवसर पर, जब वह उन्माद की ऊंचाई पर थी राक्षस को आदेश दिया गया कि वह उसकी एक भुजा की नाड़ी बंद कर दे' और यह तुरन्त किया गया, पहले से कम प्रतिरोध और दर्द के साथ। इसे वापस करने के लिए आगे के आदेश पर भी तुरन्त प्रतिक्रिया की गई। लड़की को दर्द के प्रति असंवेदनशील बनाने का आदेश दिया गया था, उसने कहा कि वह दर्द के प्रति असंवेदनशील है, और साहसपूर्वक अपनी इच्छा के अनुसार अपनी भुजा को छेदने और जलाने की पेशकश की। भूत भगाने वाले ने, अपने पहले के अनुभव से दृढ़ होकर, एक पर्याप्त लंबी सुई ली और उसे पूरी लंबाई में, कील और मांस में घुसा दिया, जिस पर वह जोर से हंस पड़ी और कहा कि 'उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।

तदनुसार जैसा कि उसे आदेश दिया गया था, रक्त को बहने दिया गया था या नहीं, और उसने खुद सुई ली और उसे अपनी भुजा और हाथ के विभिन्न हिस्सों में चुभाया। इसके अलावा, कंपनी में से एक ने एक पिन ली और कलाई के ऊपर की त्वचा को थोड़ा बाहर निकालकर, उसे इस तरह से अंदर घुसाया कि केवल दो छोर दिखाई दे रहे थे, पिन का बाकी हिस्सा भुजा में धंसा हुआ था।

जब तक आदेश नहीं दिया जाता, तब तक न तो खून निकलता था, न ही किसी तरह की संवेदना या दर्द का कोई निशान होता था।" इसी विवरण में ऑक्सोन ननों के पास मौजूद होने के सबूत के तौर पर निम्नलिखित बातें दी गई हैं: - "शरीर का हिंसक आंदोलन केवल वे ही समझ सकते हैं जिन्होंने इसे देखा है। फुटपाथ या दीवारों पर पूरी ताकत से सिर को पीटना, इतनी बार और इतनी जोर से कि इसे देखकर कोई भी सिहर उठता है और फिर भी उनमें दर्द का कोई निशान नहीं दिखता, न ही कोई खून, घाव या चोट।

शरीर की अत्यधिक हिंसा की स्थिति में स्थिति, जहां वे अपने घुटनों पर खुद को सहारा देते हैं और सिर को एक फुट या उससे अधिक जमीन की ओर मोड़कर झुकाते हैं, जिससे ऐसा लगता है कि वह टूटा हुआ है। घंटों तक बिना हिले-डुले उनकी सहनशक्ति, सिर कमर के स्तर से नीचे झुका हुआ; इस स्थिति में उनकी सांस लेने की शक्ति; चेहरे की अविचल अभिव्यक्ति जो इन गड़बड़ियों के दौरान

कभी नहीं बदलती; नाड़ी की एकरूपता; इन हरकतों के दौरान उनकी शीतलता; जब वे अचानक वापस लौटते हैं तो उनकी शांत अवस्था और सांसों में किसी भी तरह की तेजी का न होना; सिर को पीछे की ओर मोड़ना, यहां तक कि जमीन की ओर, अद्भुत तेजी के साथ।

कभी-कभी लड़की अपने घुटनों के बल पर आगे की ओर तीस बार या चालीस बार सामने की ओर मुड़ी हुई होती है; कभी-कभी, उसी स्थिति में सिर को घुमाते हुए, शरीर एक तरह के अर्धवृत्त में घूमता है, जिसके परिणाम प्रकृति के साथ स्पष्ट रूप से असंगत होते हैं।" "भयंकर ऐंठन, सभी अंगों को प्रभावित करती है और चीख-पुकार के साथ होती है। कभी-कभी कुछ भूतों और प्रेतों को देखकर डर लगता है, जिनके बारे में वे कहते हैं कि वे भयभीत हैं, उनके चेहरे के भाव में ऐसा परिवर्तन होता है कि उपस्थित लोग भयभीत हो जाते हैं; कभी-कभी आँसू का सैलाब उमड़ता है जो नियंत्रण से बाहर होता है और कराहने और तीखी चीखों के साथ होता है।

फिर से, मुँह चौड़ा खुला रहता है, आँखें बेकाबू होती हैं और उनमें से केवल सफेदी दिखती है, पलकों के नीचे पुतली ऊपर की ओर मुड़ी रहती है - क्रॉस के चिन्ह के साथ-साथ भूत भगाने वाले के आदेश मात्र से पूरा शरीर सामान्य हो जाता है। "उन्हें अक्सर हाथों या पैरों की मदद के बिना ज़मीन पर रेंगते और रेंगते हुए देखा गया है; सिर या माथे का पिछला हिस्सा पैरों के तलवों को छू रहा हो सकता है। कुछ ज़मीन पर लेटते हैं, सिर्फ़ पेट के गड्ढे से ज़मीन को छूते हैं, शरीर के बाकी हिस्से, सिर, पैर और हाथ कुछ समय के लिए हवा में रहते हैं।

कभी-कभी, पीछे की ओर झुके हुए ताकि सिर का ऊपरी हिस्सा और पैरों के तलवे ज़मीन को छू सकें, शरीर के बाकी हिस्से को टेबल की तरह हवा में सहारा देते हुए, वे हाथों की मदद के बिना इस स्थिति में चलते हैं। उनके लिए घुटनों के बल ज़मीन को चूमना, चेहरा पीछे की ओर मोड़ना और सिर का ऊपरी हिस्सा पैरों के तलवों को छूना आम बात है। इस स्थिति में और हाथों को छाती पर क्रॉस करके वे अपनी जीभ से फुटपाथ पर क्रॉस का चिह्न बनाते हैं।

"जब वे स्वतंत्र और अनियंत्रित होते हैं और जब वे नियंत्रित और अपने उन्माद की गर्मी में होते हैं, तो उनकी स्थिति में एक स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। अपनी सेक्स और नाज़ुक बनावट के कारण और बीमारी के कारण वे कमज़ोर हो सकते हैं, लेकिन जब शैतान उनमें प्रवेश करता है और चर्च का अधिकार उन्हें प्रकट होने के लिए मजबूर करता है, तो वे कभी-कभी इतने हिंसक हो जाते हैं कि चार या पाँच आदमियों की सारी शक्ति भी उन्हें रोकने में असमर्थ हो सकती है।

यहाँ तक कि उनके चेहरे भी इतने विकृत और बदल जाते हैं कि वे पहचाने जाने योग्य नहीं रह जाते। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि इन हिंसक आवेगों के बाद, जो कभी-कभी तीन या चार घंटे तक चलते हैं; ऐसे प्रयासों के बाद जो सबसे मजबूत को कई दिनों तक आराम करने जैसा महसूस कराएँगे; लगातार चीखने और दिल तोड़ने वाली चीखों के बाद; जब वे फिर से सामान्य हो जाते हैं - एक क्षणिक प्रक्रिया - वे थके नहीं होते और शांत होते हैं, और उनका मन उतना ही शांत होता है, चेहरा उतना ही शांत, साँस उतनी ही आसान और नाड़ी उतनी ही कम बदली होती है, जैसे कि वे कुर्सी से उठे ही न हों।

"हालांकि, यह कहा जा सकता है कि इन लड़कियों ने जो भूत-प्रेत के लक्षण दिखाए हैं, उनमें से सबसे आश्चर्यजनक और साथ ही सबसे आम है, उन विचारों और आंतरिक आदेशों की समझ, जिनका इस्तेमाल भूत-प्रेत भगाने वाले और पुजारी हर दिन करते हैं, बिना किसी बाहरी अभिव्यक्ति के, चाहे वह शब्द हो या कोई और संकेत। उनके द्वारा समझे जाने के लिए उन्हें आंतरिक या मानसिक रूप से संबोधित करना ही आवश्यक है, एक तथ्य जो कि चालोंस के बिशप के प्रवास के दौरान कई अनुभवों और किसी भी पादरी द्वारा सत्यापित किया गया है, जो जांच करना चाहता था, कि कोई भी ऐसे विवरणों और कई अन्य बातों पर संदेह नहीं कर सकता है, जिनका विवरण यहां नहीं दिया जा सकता है।"

सोरबोन में कई आर्कबिशप या बिशप और डॉक्टरों ने ऑक्सोन की स्थिति के संबंध में निम्नलिखित अधिसूचना दी। "इन अलग-अलग स्थानों पर स्थित लड़कियों में धर्मनिरपेक्ष, नौसिखिया, प्रार्थिनी और नन हैं; कुछ युवा हैं, अन्य वृद्ध हैं; कुछ शहर से हैं, अन्य नहीं हैं; कुछ उच्च वर्ग की हैं, अन्य कम पैतृक हैं; कुछ अमीर हैं, अन्य गरीब और निम्न श्रेणी की हैं।

इस मठ में उपद्रव शुरू हुए दस साल या उससे अधिक हो गए हैं; यह उल्लेखनीय है कि छल का शासन इतने लंबे समय तक इतनी संख्या में और इतनी अलग-अलग स्थितियों और हितों वाली लड़कियों के बीच रहस्य को बनाए रखने में सक्षम था। शोध और एक सख्त जांच के बाद, चालोन के बिशप ने मठ या शहर में किसी को भी नहीं पाया, जो लड़कियों और पादरी के निर्दोषता और ईमानदारी के अलावा कुछ और बोल सके, जिन्होंने भूत भगाने में उनके साथ काम किया, और, खुद के लिए, उन्होंने उन्हें ईमानदारी और मूल्य के व्यक्तियों के रूप में पाया - यह सबूत है जो वह सत्य और न्याय के हित में पेश करते हैं।"

उपरोक्त के अलावा मोरेल, डॉक्टर और हर जगह मौजूद रहने वाले व्यक्ति का प्रमाण पत्र भी है, जो दावा करता है कि ये सभी चीजें प्रकृति की सीमाओं से परे हैं और केवल एक राक्षस के काम के रूप में हो सकती हैं; संक्षेप में, हम मानते हैं कि

इन लड़कियों के साथ सभी असाधारण निष्कर्ष मानव प्रकृति की शक्तियों से परे हैं और केवल एक राक्षस द्वारा उकसाया जा सकता है जो उनके शरीर पर कब्जा कर सकता है और उन्हें नियंत्रित कर सकता है। गौलार्ट ने वियर से राक्षसों की कई कहानियाँ लीं।

"एंटोनी बेनिवेनियस ने लिवरे डेस कॉजेज कैचीस डेस मैलाडीज के आठवें अध्याय में बताया है कि उसने सोलह साल की एक लड़की को देखा था, जिसके हाथ अजीब तरह से सिकुड़ जाते थे, जब भी उसे पेट में दर्द होता था। वह डर के मारे चिल्लाती थी और उसका पेट इतना फूल जाता था कि ऐसा लगता था कि वह आठ महीने की गर्भवती है - बाद में सूजन कम हो गई और, शांत लेटने में असमर्थ होने के कारण, वह बिस्तर पर इधर-उधर पलटी खाती थी, कभी-कभी अपने पैरों को अपने सिर के ऊपर रखती थी, जैसे कि कलाबाजी की कोशिश कर रही हो। यह उसने अपनी बीमारी के दौरान और जब तक कि यह धीरे-धीरे कम नहीं हो गई, तब तक जारी रखा।

जब उससे पूछा गया कि उसे क्या हुआ था, तो उसने इसके बारे में कुछ भी याद नहीं होने से इनकार कर दिया। लेकिन पूछने पर इस बीमारी के कारणों के बारे में हमारा मानना है कि यह गर्भाशय के दम घुटने और हृदय तथा मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले घातक वाष्पों के उठने से उत्पन्न हुई थी। हमें अंततः उसे दवाइयों से राहत देने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन ये दवाइयाँ बेकार थीं और अधिक हिंसक और भीड़भाड़ वाली होती जा रही थी, उसने आखिरकार मुड़ी हुई लंबी लोहे की कीलें, मोम में फंसी पीतल की सुइयाँ और बालों तथा अपने नाश्ते के एक हिस्से से बाँधकर फेंकना शुरू कर दिया - यह इतना बड़ा पिंड था कि एक आदमी के लिए इसे निगलना मुश्किल होता।

मुझे डर था, कई बार उल्टियाँ देखने के बाद, कि कहीं उसमें कोई दुष्ट आत्मा तो नहीं है, जिसने इन चीज़ों को हटाते समय वहाँ मौजूद लोगों को भ्रमित कर दिया और बाद में हमने ऐसी भविष्यवाणियाँ और अन्य बातें सुनीं जो पूरी तरह से मानवीय समझ से परे थीं।" "माइनर क्लैथ, जूलियर्स के डची में बाउटन ब्रोच के महल में रहने वाले एक रईस व्यक्ति थे, उनके पास विलियम नाम का एक नौकर था, जो चौदह साल से शैतान के द्वारा किए गए अत्याचारों से पीड़ित था, और जब शैतान के उकसावे पर वह बीमार होने लगा, तो उसने सेंट जेरार्ड से इलाज के लिए कहा, जो उसका छोटा सा काम करने आए थे... लेकिन पूरी तरह से असफल रहे।

उसे सूजे हुए गले और फीके चेहरे के साथ और उसके दम घुटने के डर से, क्लैथ की पत्नी और एक ईमानदार महिला जूडिथ ने घर के सभी लोगों के साथ

भगवान से प्रार्थना करना शुरू कर दिया। विलियम के मुँह से तुरंत ही अन्य चीज़ों के साथ-साथ चरवाहे की पतलून का पूरा अगला हिस्सा, पत्थर, धागे के कुछ पूरे और कुछ टूटे हुए बंडल, एक परुके जैसा कि महिलाएँ इस्तेमाल करती हैं, सुइयाँ, एक छोटे लड़के की सर्ज जैकेट का एक टुकड़ा और एक मोर का पंख निकला जिसे विलियम ने बीमार होने से आठ दिन पहले पक्षी की पूँछ से निकाला था।

जब उससे उसकी परेशानी का कारण पूछा गया तो उसने कहा कि वह कैम्फ्यूज़ के पास एक महिला से मिला था जिसने उसके चेहरे पर फूंक मारी थी और उसकी बीमारी उसी का नतीजा थी और कुछ नहीं। कुछ समय बाद जब वह ठीक हो गया तो उसने अपनी कही हुई बातों का खंडन किया और कबूल किया कि उसे शैतान ने जो कुछ भी कहना था, उसे कहने का निर्देश दिया था। उसने आगे कहा कि ये सभी अजीबोगरीब चीज़ें उसके पेट में नहीं थीं, बल्कि शैतान ने उसके गले में डाल दी थीं, इस तथ्य के बावजूद कि उसने उन्हें उल्टी करते हुए देखा था। शैतान भ्रम से धोखा देता है।

कभी-कभी खुद को मारने या भागने का विचार आता है। एक दिन, एक सूअर के बाड़े में घुसकर और हमेशा की तुलना में अधिक सावधानी से सुरक्षित रहते हुए, वह अपनी आँखें इतनी मजबूती से बंद करके बैठा रहा कि उन्हें खोलना असंभव था। अंत में, क्लेथ की ग्यारह वर्षीय सबसे बड़ी बेटी गर्ट्रूड उसके पास आई और उसे सलाह दी कि वह अपनी दृष्टि वापस पाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करे, लेकिन उसने उससे प्रार्थना करने को कहा और उसके प्रार्थना करने के तथ्य ने, दोनों को बहुत आश्चर्यचकित करते हुए, उसकी आँखें खोल दीं।

शैतान ने उसे अक्सर यह सलाह दी कि वह अपनी मालकिन या किसी और की बात न सुने जो ईश्वर के नाम पर सिर झुकाता है, जो उसकी मदद नहीं कर सकता क्योंकि वह एक बार मर चुका था, एक तथ्य जिसका खुलेआम प्रचार किया गया था।" "उसने एक बार रसोई की नौकरानी को बेरहमी से छूने की कोशिश की थी और उसने उसका नाम लेकर उसे डांटा था, जब उसने गुस्से में जवाब दिया था कि उसका नाम विलियम नहीं बल्कि बेल-ज़ेबब है, जिस पर मालकिन ने पूछा- 'क्या आपको लगता है कि हम आपसे डरते हैं?

जिसकी हम सेवा करते हैं वह आपसे असीम रूप से अधिक शक्तिशाली है।' फिर क्लैथ ने सेंट ल्यूक का ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ा, जहाँ उद्धारकर्ता की शक्ति द्वारा मूक शैतान को बाहर निकालने और शैतानों के राजकुमार बेल-ज़ेबब का भी उल्लेख किया गया है। अंत में विलियम ने आराम करना शुरू कर दिया और सुबह तक एक बेहोश आदमी की तरह सोता रहा, फिर कुछ शोरबा पीकर और

बहुत राहत महसूस करते हुए उसे अपने माता-पिता के पास घर भेज दिया गया, उसके बाद उसने अपने मालिक और मालकिन को धन्यवाद दिया और भगवान से उनके द्वारा दी गई परेशानी के लिए उन्हें पुरस्कृत करने के लिए कहा।

उसने बाद में शादी की और उसके बच्चे हुए, लेकिन उसे फिर कभी शैतान ने परेशान नहीं किया।" 18 मार्च, 1566 को एम्स्टर्डम, हॉलैंड में एक यादगार मामला हुआ, जिस पर गुएल्ड्रेस के चांसलर, एम। एड्रियन निकोलस ने एक सार्वजनिक भाषण दिया, जिसमें से निम्नलिखित है: - "लगभग दो महीने पहले तीस साल पहले इस शहर के बच्चे अजीब तरह से परेशान होने लगे, मानो उन्मत्त या पागल हो गए हों।

बीच-बीच में वे खुद को ज़मीन पर पटक देते और आधे घंटे या ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटे तक यह पीड़ा चलती। होश में आने पर उन्हें कुछ भी याद नहीं रहता, लेकिन उन्हें लगता कि वे सो गए थे और डॉक्टर, जादूगर और भूत भगाने वाले सभी कोई अच्छा काम करने में असमर्थ थे। भूत भगाने के दौरान बच्चों ने कई पिन और सुइयाँ, सिलाई के लिए उँगलियों के स्टॉल, कपड़े के टुकड़े, टूटे हुए जग और कांच, बाल और दूसरी चीज़ें उगल दीं।

बच्चे हमेशा इससे उबर नहीं पाते थे, लेकिन उन्हें बार-बार इसके हमले होते थे - ऐसी स्थिति की असामान्यता बहुत आश्चर्य का कारण बनती थी।" जीन लैंगिस, एक विद्वान चिकित्सक, अपने एपिट्रेस की पहली पुस्तक में, 1539 में फुगेनस्टाल में हुई घटना का विवरण देते हैं, जो कि आइस्टेटन के बिशपिक में एक गाँव है और जिसकी बहुत से गवाहों ने शपथ ली है: - "इस गाँव में एक हलवाहा, उलरिक नेउसेसर, एक तरफ के दर्द से बहुत परेशान था।

एक सर्जन द्वारा त्वचा में चीरा लगाने पर एक लोहे की कील निकाली गई, लेकिन इससे दर्द कम नहीं हुआ, बल्कि यह इतना बढ़ गया कि हताश होकर, बेचारे ने अंततः आत्महत्या कर ली। उसे दफनाने से पहले दो सर्जनों ने कई लोगों के सामने उसका पेट खोला, और उसमें लकड़ी के कुछ लंबे गोल टुकड़े, चार स्टील के चाकू, कुछ तीखे और नुकीले, अन्य आरी की तरह नोकदार, दो लोहे की छड़ें जो प्रत्येक नौ इंच लंबी थीं और बालों का एक बड़ा गुच्छा मिला।

किसी को आश्चर्य हुआ कि कैसे और किस तरह से पुराने लोहे के इस ढेर को उसके पेट के स्थान में एकत्र किया जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह शैतान का काम था जो किसी भी ऐसी चीज को करने में सक्षम है जिससे उसका डर बना रहे।" एम एंटोनी ल्यूक्वेट, फ्लीसे के आदेश के शूरवीर, पूरे फ्लैंडर्स में उच्च प्रतिष्ठा वाले और ब्रेबेंट के प्रिवी काउंसलर ने ब्रुगेस में विवाह किया था,

और उनकी पत्नी, विवाह के तुरंत बाद, एक दुष्ट आत्मा की पीड़ा दिखाने लगी, इतनी अधिक कि कभी-कभी, यहां तक कि कंपनी में भी, उसे अचानक उठा लिया जाता था और कमरों में घसीटा जाता था और एक कोने से दूसरे कोने में फेंक दिया जाता था, बावजूद इसके कि आसपास के लोग उसे रोकने और संभालने की कोशिश करते थे।

इस उन्माद में वह अपने शारीरिक स्वास्थ्य के बारे में बहुत कम सचेत थी और यह आम राय थी कि उसकी हालत उसके युवा और खुशमिजाज पति के पूर्व प्रेमी द्वारा प्रेरित की गई थी। इस बीच वह दुष्ट पीड़ा में बिना रुके गर्भवती हो गई और उसके प्रसव का समय निकट होने पर मौजूद एकमात्र महिला को दाई के लिए भेजा गया, लेकिन इसके बजाय, वह अंदर आई और खुद दाई का काम करने लगी जिससे विकलांग इतना परेशान हो गया कि वह बेहोश हो गई। होश में आने पर उसने पाया कि उसका प्रसव हो चुका है, फिर भी दोनों को आश्चर्य हुआ कि बच्चे का कोई निशान नहीं था। अगले दिन जब वह जागी तो उसने बिस्तर पर एक बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ पाया और उसने उसे दो बार दूध पिलाया।

कुछ ही देर बाद जब वह सो गई तो बच्चे को उसके बगल से उठा लिया गया और फिर कभी नहीं देखा गया। बताया गया कि दरवाजे के अंदर जादू के निशान वाले नोट मिले थे।" गौलार्ट ने वियर से हैमोन के पास कैंटोर्प के कॉन्वेंट की ननों द्वारा झेले गए भयानक आक्षेपों का विवरण देते हुए कहा, "हमले से ठीक पहले और उसके दौरान उनकी सांस बदबूदार थी और कभी-कभी घंटों तक ऐसी ही रहती थी।

प्रभावित होने के बावजूद उन्होंने अपनी सही निर्णय लेने की शक्ति और सुनने और अपने आस-पास के लोगों को पहचानने की शक्ति नहीं खोई, इस तथ्य के बावजूद कि जीभ और श्वसन अंगों की ऐंठन के कारण वे हमले के दौरान बोल नहीं सकती थीं। सभी पर समान रूप से असर नहीं हुआ, लेकिन जैसे ही एक पर असर हुआ, दूसरे भी, हालांकि अलग-अलग कमरों में थे, तुरंत ही प्रभावित हो गए।

एक ज्योतिषी, जिसे बुलाया गया था, ने कहा कि उन्हें रसोइया एल्से कामेंस ने जहर दिया था, और शैतान ने इस अवसर का फायदा उठाते हुए उनकी पीड़ा बढ़ा दी, उन्हें एक-दूसरे को काटने, प्रहार करने और एक-दूसरे को नीचे गिराने के लिए मजबूर किया। एल्से और उसके पतंगे के बाद हैमोन के एक व्यक्ति को एक दुष्ट आत्मा ने सताना शुरू कर दिया। चर्च के पादरी ने उनमें से पांच को घर ले जाकर चेतावनी दी और दुश्मन की चालों के खिलाफ उन्हें मजबूत किया।

वे उस पर हंसे और उस जगह की कुछ महिलाओं का जिक्र किया, जिनसे वे अपनी बकरियों पर बैठकर मिलना चाहते थे, जो उन्हें वहां ले जाने वाली थीं। तुरंत एक ने स्टूल पर बैठकर कहा कि वह चला गया, जबकि दूसरा, नीचे बैठा हुआ, खुद को दोहरा कर कमरे के दरवाजे की ओर लुढ़क गया जो अचानक खुल गया और जिसके माध्यम से वह सीढ़ियों के नीचे गिर गया, बिना खुद को चोट पहुंचाए।

" कोलोन में नाज़रेथ के कॉन्वेंट की नन (उसी लेखक के अनुसार) कैंटोर्प की तरह ही प्रभावित थीं। लंबे समय तक और विभिन्न तरीकों से शैतान द्वारा परेशान किए जाने के बाद वे 1564 में और भी अधिक प्रभावित हुईं, जब वे कपड़े अस्त-व्यस्त करके जमीन पर लेट गईं, जैसे कि मनुष्य के साथ यात्रा करने के लिए। इस दौरान उनकी आँखें बंद हो जाती थीं और बाद में शर्म के मारे वे अपनी आँखें खोलती थीं और महसूस करती थीं कि उन्हें कोई गहरा आघात पहुँचा है। चौदह साल की एक छोटी लड़की गर्ट्रूड को इस कॉन्वेंट में बंद कर दिया गया था और वह इस दुर्भाग्य का शिकार हुई थी। वह अक्सर बिस्तर पर अजीबोगरीब प्रेत द्वारा परेशान की जाती थी, जो उसकी मज़ाकिया हँसी के गवाह थे, हालाँकि उसने इस पर काबू पाने की व्यर्थ कोशिश की।

एक साथी उसे प्रेत से बचाने के लिए विशेष रूप से उसके पास सोता था, लेकिन बेचारी लड़की गर्ट्रूड के बिस्तर से आने वाली आवाज़ से डर जाती थी, शैतान ने आखिरकार उसे नियंत्रित कर लिया और उसे कई तरह की विकृतियों से गुज़रना पड़ा। . . . इस सारी परेशानी की शुरुआत एक पड़ोसी टेनिस कोर्ट में एक या दो ननों से हुई, जो किसी बिगड़ैल युवक द्वारा दीवारों के ऊपर से उनके प्रेम संबंधों को बनाए रखते थे। " "होम काउंटी के वेर्टेट में ननों द्वारा झेली गई यातनाएँ भी अद्भुत हैं।

इसकी शुरुआत एक गरीब महिला से होती है, जिसने लेंट के दौरान ननों से तीन पाउंड नमक उधार लिया था और ईस्टर से पहले दोगुना नमक लौटा दिया था। इसके बाद से उन्हें अपने छात्रावास में चीनी के बेर जैसी छोटी-छोटी सफ़ेद गेंदें और स्वादानुसार नमक मिलना शुरू हो गया, जिसे उन्होंने खाया नहीं और न ही उन्हें पता था कि ये कहाँ से आया है। कुछ ही देर बाद उन्हें एक बीमार आदमी की कराह सुनाई दी, फिर चेतावनी दी गई कि उठो और एक बीमार बहन की मदद के लिए जाओ, जो उन्होंने किया लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला।

कभी-कभी किसी कमरे का उपयोग करने की कोशिश में उसे अचानक खींच लिया जाता था और बिस्तर गंदा हो जाता था। कभी-कभी उन्हें पैरों से खींचकर

बाहर निकाला जाता था, कुछ दूर तक घसीटा जाता था और पैरों के तलवों पर इतनी गुदगुदी की जाती थी कि वे हँसते-हँसते मर ही जाते थे। कुछ लोगों के शरीर से मांस के टुकड़े निकाले गए, जबकि अन्य के पैर, हाथ और सिर मुड़े हुए थे। इस तरह से पीड़ित होकर कुछ लोगों ने बहुत सारा काला तरल पदार्थ उगल दिया, हालाँकि छह सप्ताह पहले उन्होंने रोटी के बिना सहिजन के रस के अलावा कुछ नहीं लिया था।

यह तरल पदार्थ इतना कड़वा और इतना तीखा था कि इससे उनके मुँह में छाले पड़ गए और कोई भी ऐसा कुछ नहीं निकल पाया जिससे उन्हें किसी और चीज़ की भूख लगे। कुछ लोगों को हवा में एक आदमी की ऊँचाई तक उठा दिया गया और अचानक से फिर से ज़मीन पर फेंक दिया गया। जब उनकी तीस महिलाएँ इस कॉन्वेंट में उन लोगों को बधाई देने के लिए आईं जो राहत महसूस कर रहे थे और लगभग ठीक हो गए थे, तो उनमें से कुछ तुरंत ही अपनी मेज़ से पीछे की ओर गिर गईं, बोलने की शक्ति खो बैठीं और किसी को पहचानने में असमर्थ हो गईं, जबकि अन्य हाथ-पैरों को मोड़कर मृत अवस्था में पड़ी थीं।

उनमें से एक को उपस्थित लोगों के रोकने के प्रयासों के विरुद्ध हवा में उठाया गया और फिर इतनी ज़ोर से ज़मीन पर गिराया गया कि वह मृत लग रही थी। हालाँकि, वह गहरी नींद से उठी और कॉन्वेंट से बिना किसी चोट के बाहर निकल गई। कुछ अपने पैरों के अगले हिस्से पर ऐसे हिल रही थीं जैसे उनके पैर नहीं हैं और जैसे पीछे से एक ढीली बोरी में घसीटा जा रहा हो। कुछ लोग तो बिल्लियों की तरह पेड़ों पर चढ़ जाते थे और उतनी ही आसानी से नीचे भी उतर आते थे।

मठाधीश ने ब्यूर की काउंटेस से कहा कि जब उसे दबाया गया तो वह जोर से चिल्लाई पैर में चोट इतनी गंभीर थी मानो कोई टुकड़ा निकाल दिया गया हो, और उसे तुरंत बिस्तर पर ले जाया गया और वह जगह काली और नीली हो गई, लेकिन आखिरकार वह ठीक हो गई। ननों की यह विक्षिप्तता तीन साल तक एक खुला रहस्य थी, लेकिन तब से इसे छिपा कर रखा गया है।" "हमने अभी जो कहा है, वह ज़ेंथस के पास तत्कालीन कॉन्वेंट में ब्रिजेट ननों के शुरुआती मामले पर भी समान रूप से लागू होता है।

अब, वे भेड़ की तरह उछलती या मिमियाती हैं या भयानक आवाज़ें निकालती हैं। कभी-कभी उन्हें चर्च में अपनी सीटों से धकेल दिया जाता था जहाँ उनके सिर के ऊपर उनके घूंघट बाँध दिए जाते थे। अन्य समय में उनके गले इतने बंद हो जाते थे कि वे खाना नहीं निगल सकती थीं, और यह पीड़ा उनमें से कुछ में दस साल तक चली। ऐसा कहा जाता है कि इस सबका कारण एक युवा नन थी, जिसके

माता-पिता ने उसे उस युवक से शादी करने की अनुमति देने से इनकार कर दिया था, जिससे वह प्यार करती थी।

इसके अलावा, इस युवक के रूप में शैतान उसके जुनून की ऊंचाई पर उसके पास आया था और उसे कॉन्वेंट में वापस जाने की सलाह दी थी, जो उसने तुरंत किया और जब वह वहाँ पहुँची तो वह उन्मत्त हो गई और उसकी हरकतें अजीब और भयानक थीं। यह समस्या प्लेग की तरह दूसरी ननों में फैल गई, और पहली नन ने खुद को अपने वार्डर के हवाले कर दिया और उसके दो बच्चे हुए। इस तरह शैतान कॉन्वेंट के अंदर और बाहर दोनों जगह अपनी घृणित योजनाओं को अंजाम देता है।"

"कार्डन बताता है कि एक हलवाहा... अक्सर कांच, नाखून और बाल उगलता था और होश में आने पर उसे अपने अंदर बड़ी मात्रा में टूटा हुआ कांच महसूस होता था, जो टूटे हुए कांच से भरी बोरी जैसी आवाज करता था। उन्होंने कहा कि इस शोर ने उन्हें बहुत परेशान किया और लगभग अठारह रातों से सात बजे के आसपास, हालांकि उन्होंने समय का ध्यान नहीं रखा था और यद्यपि वे अठारह वर्षों से ठीक महसूस कर रहे थे, उन्होंने अपने दिल में घंटों तक झटके महसूस किए थे। यह सब उसने बड़ी पीड़ा के साथ सहा।" मैंने अक्सर देखा है," गौलार्ट कहते हैं, "जॉर्ज नामक एक राक्षसी, जो तीस साल से लगातार एक दुष्ट आत्मा द्वारा सताया जा रहा था और अक्सर मैंने उसे फूलते हुए देखा है, और इतना भारी हो गया है कि आठ मजबूत आदमी उसे जमीन से नहीं उठा सकते।

फिर, भगवान के नाम पर और किसी अच्छे आदमी के हाथ से उसे प्रोत्साहित करने पर, वह अपने पैरों पर खड़ी हो जाती और झुकी हुई और कराहती हुई घर लौट आती। इस हालत में उसने दिन या रात में किसी को नुकसान नहीं पहुँचाया, और वह एक रिश्तेदार के साथ रहती थी, जिसके कई बच्चे उसके तौर-तरीकों के इतने आदी थे कि जब वे उसे अपनी बाँहों को मरोड़ते, अपने हाथों को मारते और उसके शरीर को इस अजीब तरीके से फूलते हुए देखते, तो वे घर के किसी हिस्से में इकट्ठा होते और उसे भगवान को सौंपते और उनकी प्रार्थनाएँ कभी व्यर्थ नहीं जातीं।

एक दिन उसे गाँव के दूसरे घर में पाया जहाँ वह रहती थी, मैंने उसे धैर्य रखने के लिए कहा। . . वह अजीब तरीके से दहाड़ने लगी और उसने बड़ी फुर्ती से अपना बायाँ हाथ मेरी ओर बढ़ाया और मेरे दोनों हाथों को उसमें जकड़ लिया, मुझे इस तरह मजबूती से पकड़ लिया जैसे मैं मजबूत रस्सियों से बंधा हुआ हूँ। मैंने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ, हालाँकि मैं औसत ताकत का हूँ।

उसने किसी और तरह से मेरे साथ हस्तक्षेप नहीं किया और न ही उसने मुझे अपनी दाहिनी पट्टी से छुआ। मुझे घटना बताने में जितना समय लगा, उतना समय तक पकड़े रखा और फिर उसने अचानक मुझे जाने दिया, मुझसे माफ़ी माँगी, और मैंने उसे भगवान को सौंप दिया और उसे चुपचाप घर ले गया। . . . अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले बहुत पीड़ा होने के कारण वह हल्के बुखार के साथ बिस्तर पर चली गई। दुष्ट का क्रोध तब इतना कम हो गया था कि रोगी, आश्चर्यजनक रूप से आंतरिक रूप से मजबूत हो गया, भगवान की प्रशंसा करना जारी रखा, जो उसके दुःख में उसके प्रति बहुत दयालु थे और जो भी उससे मिलने आया उसे सांत्वना दी। ...

मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि शैतान पर विजय प्राप्त हो गई थी, और वह अपने उद्धारकर्ता को पुकारते हुए शांतिपूर्वक मर गई।" गौलार्ट के अनुसार "ल्यूएनस्टीट गाँव और ब्रंसविक के डची में, बीस साल की एक युवा लड़की मार्गरेट एचेल्स थी, जो अपनी बहन के साथ रहती थी। जून में एक दिन जूते साफ करने की इच्छा से उसने लगभग छह इंच लंबा चाकू लिया और कमरे के एक कोने में बैठ गई क्योंकि वह अभी भी लंबे समय से चल रहे बुखार से कमजोर थी, जिसके बाद एक बूढ़ी औरत अंदर आई और पूछा कि वह कैसी है और क्या उसे अभी भी बुखार है और फिर बिना कुछ कहे चली गई।

जूते साफ होने के बाद उसने चाकू अपनी गोद में गिरा दिया लेकिन बाद में काफी खोजबीन के बावजूद उसे नहीं ढूंढ पाई। लड़की डर गई और तब और भी डर गई जब उसे मेज के नीचे एक काला कुत्ता मिला। उसने चाकू खोजने की उम्मीद में कुत्ते को बाहर निकाल दिया, लेकिन कुत्ता गुस्सा हो गया, अपने दांत दिखाए और गुर्राते हुए सड़क पर भाग गया। लड़की को तुरंत कुछ अनिर्धारित महसूस हुआ जो उसकी पीठ से ठंड की तरह गुजरा और अचानक बेहोश हो गई।

वह तीन दिनों तक बेहोश रही, फिर उसने सांस लेना शुरू किया और थोड़ा खाना खाया। जब उससे उसकी बीमारी के कारण के बारे में सावधानीपूर्वक पूछा गया तो उसने कहा कि जो चाकू उसकी गोद में गिरा था वह उसके बाएं हिस्से में घुस गया था और वहां उसे दर्द महसूस हो रहा था। हालाँकि उसके माता-पिता ने उसका खंडन किया, उसकी स्थिति को उसके उदासी स्वभाव, उसके लंबे संयम और अन्य चीजों के कारण बताया, लेकिन उसने शिकायत करना, रोना और लगातार निगरानी रखना बंद नहीं किया, इतना कि उसका दिमाग खराब हो गया और कभी-कभी दो दिनों तक वह कुछ भी नहीं खाती थी, भले ही उसे ऐसा करने के लिए विनम्रतापूर्वक कहा जाए, इसलिए कभी-कभी बल का उपयोग करना पड़ता था।

उसके हमले कभी-कभी दूसरों की तुलना में अधिक गंभीर होते थे और उसका आराम लगातार दर्द से टूट जाता था, जो उसे घेर लेता था, क्योंकि उसे खुद को एक छड़ी पर दोगुना रखने के लिए मजबूर किया जाता था। जिस चीज ने उसके दर्द को बढ़ाया और राहत की संभावना को कम किया, वह उसका दृढ़ विश्वास था कि चाकू उसके शरीर में दफन है और दूसरों का जिद्दी विरोधाभास जिन्होंने कहा कि यह असंभव है और इसे मन की एक प्रेत के अलावा कुछ नहीं माना, क्योंकि उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं दिख रहा था जो उन्हें उस पर विश्वास करने का आधार दे, सिवाय उसके लगातार शिकायतों और आंसुओं के। ये कुछ महीनों तक बने रहे और जब तक कि उसकी बाईं ओर दो झूठी पसलियों के बीच अंडे के बराबर ट्यूमर दिखाई नहीं दिया, जो उसके अपने परिधि में परिवर्तन के साथ आकार में उतार-चढ़ाव करता रहा।

तब लड़की ने उनसे कहा: * अब तक आप यह विश्वास नहीं करना चाहते थे कि चाकू मेरी तरफ था, लेकिन अब आप जल्द ही देखेंगे कि यह है।' 30 जून को, यानी लगभग तेरह महीने की परेशानी के बाद, उसकी तरफ विकसित हुए अल्सर से इतनी सामग्री बाहर आ गई कि सूजन कम होने लगी और चाकू की नोक दिखाई देने लगी और लड़की इसे बाहर निकालना चाहती थी लेकिन उसके माता-पिता ने उसे रोक दिया और ड्यूक हेनरी के सर्जन को बुलाया जो वाल्फ़ब्यूटेल के महल में था।

यह सर्जन 4 जुलाई को आया और उसने क्यूरेट से लड़की को सांत्वना देने, निर्देश देने और प्रोत्साहित करने और उसके जवाबों पर विशेष ध्यान देने की विनती की क्योंकि उसे एक राक्षसी माना जाता था। वह सर्जन से मिलने के लिए सहमत हो गई, इस विचार के बिना नहीं कि एक त्वरित मृत्यु होगी। बाद में, चाकू की नोक को बाहर निकलते हुए देखकर, उसे अपने औजारों से पकड़ा और पाया कि यह म्यान में दूसरे चाकू की तरह ही था और ब्लेड के बीच में बहुत घिस गया था।

अल्सर अंततः ठीक हो गया।" मेलानचथॉन को उद्धृत करते हुए गौलार्ट कहते हैं कि "ब्रांडेबर्ग के मार्क्विसेट में एक लड़की थी जिसने किसी व्यक्ति के कपड़ों से कुछ बाल खींचे और ये बाल तुरंत राज्य के सिक्कों में बदल गए जिन्हें लड़की ने दांतों से भयानक रूप से चबाया। इनमें से कुछ सिक्के अभी भी उन लोगों के पास रखे हुए हैं जिन्होंने उन्हें लड़की से छीन लिया और पाया कि वे असली हैं।

समय-समय पर यह लड़की बहुत पीड़ित होती थी लेकिन कुछ महीनों के बाद वह काफी ठीक हो गई और तब से ठीक है। उसके लिए अक्सर प्रार्थनाएँ की जाती हैं, लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं।" वही लेखक यह भी कहता है: "मैंने सुना है कि

इटली में एक पागल औरत थी, जो शैतान के वश में होने पर और लाज़ारे बोनामी द्वारा वर्जिल की सबसे अच्छी कविता के लिए पूछे जाने पर तुरंत जवाब देती थी:

'डिस्काइट जस्टीशियम मोनिटी एट नॉन टेम्नेरे डिवोस।' • उसने आगे कहा, * वर्जिल द्वारा लिखी गई सबसे अच्छी और सबसे योग्य कविता है; चले जाओ और मुझे आजमाने के लिए फिर कभी यहाँ मत आना/ "'लुईस मेलैट, एक युवा राक्षसी जो 1598 में रहती थी उसके अंगों का उपयोग करना बंद हो गया और उसे पाँच राक्षसों ने अपने वश में कर लिया, जो खुद को भेड़िया, बिल्ली, कुत्ता, सुंदरी और ग्रिफिन कहते थे। सबसे पहले इनमें से दो राक्षस उसके मुँह से मुट्ठी के आकार की गेंदों के रूप में निकले, पहला आग जैसा लाल, दूसरा, जो बिल्ली थी, बिल्कुल काला; बाकी सभी ने उसे कम हिंसा के साथ छोड़ दिया।
उसे छोड़ते समय वे सभी चूल्हे के चारों ओर कुछ चक्कर लगाते और गायब हो जाते। फ्रांसेस सेक्रेटेन के बारे में कहा जाता है कि उसने इस लड़की को इन शैतानों को गोबर के रंग की रोटी के टुकड़े में निगलने के लिए कहा था।

270.ओम**:** हिंदू धर्म में एक विशेष पवित्रता वाला संस्कृत शब्द। इसे वेद के प्रत्येक पाठ की शुरुआत और अंत में उच्चारित किया जाता है, और यह पुराणों का परिचयात्मक शब्द भी है। कथा-उपनिषद 1 में कहा गया है कि "जो कोई भी इस शब्द को जानता है, वह जो चाहता है उसे प्राप्त करता है।" इसकी उत्पत्ति के बारे में विभिन्न विवरण दिए गए हैं;

एक यह कि यह देवताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले सहमति का शब्द है, और संभवतः संस्कृत शब्द एवम का एक पुराना संकुचित रूप है जिसका अर्थ है "इस प्रकार।" मनु के नियम कहते हैं कि यह शब्द स्वयं ब्रह्मा द्वारा बनाया गया था, जिन्होंने वेदों से प्रत्येक से एक अक्षर निकाला; और इस प्रकार वे इसकी रहस्यमय शक्ति और पवित्रता की व्याख्या करते हैं। ओम हिंदुओं द्वारा आध्यात्मिक सूर्य को दिया गया नाम भी है, जो प्राकृतिक सूर्य "सूरज" के विपरीत है।

271.पाल्फोटिस**,** द**:** हिंदुस्तान के शैतान। कुछ हिंदू मानते हैं कि पैगोल मूल रूप से शैतान बनाए गए थे; अन्य मानते हैं कि उन्हें उनके महान पाप के कारण स्वर्ग से बाहर निकाल दिया गया था, और सभी दुनियाओं में से पृथ्वी ही एकमात्र ऐसी दुनिया है जिसके साथ उन्हें संभोग करने की अनुमति है। इनमें से कुछ शैतानों के अलग-अलग नाम हैं, और वे लोगों को विशेष पापों के लिए लुभाते हैं, - अन्य फिर से लोगों के शरीर में प्रवेश करते हैं और उन्हें अपने कब्जे

में ले लेते हैं। हिंदू यह भी मानते हैं कि दुष्ट लोगों की आत्माएँ पैगोल की संख्या में शामिल हो जाती हैं।

272.पैलिंगेनेसी**:** सत्रहवीं शताब्दी के दार्शनिकों द्वारा "पौधों के पुनरुत्थान" और विनाश के बाद उनके सूक्ष्म रूप को प्राप्त करने की विधि को दर्शाने के लिए प्रयुक्त एक शब्द। बहुत पहले के समय में, हम दार्शनिकों को संदेह करने के लिए इच्छुक पाते हैं कि क्या प्रेत प्राकृतिक सिद्धांतों पर आधारित नहीं हो सकते हैं, बिना यह मान लिए कि उनमें विश्वास या तो मतिभ्रम, मानव कल्पना या उन थोपे गए आरोपों से संबंधित है जिनका अभ्यास किया गया हो सकता है।

आखिरकार ल्यूक्रेटियस ने भूतों के बारे में प्रचलित धारणा पर हमला किया, यह कहते हुए कि वे मृतकों के महलों से लौटी आत्माएँ नहीं थीं, बल्कि पतली फ़िल्में, पेलिकल्स या झिल्लियाँ थीं, जो सरीसृपों के एक्सुविया या स्लॉ की तरह सभी शरीरों की सतह से अलग हो जाती थीं। एक राय, जो एपिक्यूरियन्स की राय से बिल्कुल अलग नहीं थी, 17वीं सदी के मध्य में यूरोप में पुनर्जीवित हुई। इसका उद्गम पैलिंजेनसी या पुनरुत्थान से हुआ था।

273. PARADISE - हिंदुस्तान के कुछ मूल निवासियों के पास गंगा के तट पर स्वर्ग : जैसी जगह की परंपरा है; लेकिन उनके विवरण उनके अंधविश्वासों और जलप्रलय और दुनिया के दूसरे लोगों के बारे में उनकी किंवदंतियों के साथ इस तरह से मिश्रित हैं कि कुछ हद तक समझ से परे हैं। एक लेखक जिसने कई वर्षों तक भारतीय पुराणों का परिश्रमपूर्वक अध्ययन किया था, ने जानकारी का एक नया स्रोत खोजा और भारत के लुमॉस पर्वत पर ईडन को स्थापित किया। "शास्त्रों से ऐसा प्रतीत होता है," वे कहते हैं, "कि आदम और हव्वा ईडन के पूर्व की ओर के देशों में रहते थे;

क्योंकि इसके पूर्वी प्रवेश द्वार पर भगवान ने ज्वलंत तलवार के साथ देवदूत को रखा था। इसकी पुष्टि पुराणों से भी होती है, जो मानव जाति के पूर्वज को काबुल और गंगा के बीच पहाड़ी क्षेत्रों में रखते हैं, जिसके किनारों पर, पहाड़ियों में, वे एक स्थान दिखाते हैं जहाँ वे कभी-कभी धार्मिक उद्देश्यों के लिए आते थे। यहाँ तीर्थयात्री अक्सर आते हैं। उस स्थान की ओर जाने वाले दर्रे के प्रवेश द्वार पर जहाँ मैं मानता हूँ कि ईडन का बगीचा था, और इसके पूर्व की ओर, हिंदुओं ने एक विनाशकारी देवदूत रखा है, जो प्रकट होता है, और इसे आम तौर पर एक करूब की तरह दर्शाया जाता है; मेरा मतलब है गरुड़, या चील, जिस पर विष्णु और बृहस्पति सवार हैं।

गरुड़ को आम तौर पर एक चील की तरह दर्शाया जाता है, लेकिन उसके मिश्रित चरित्र में कुछ हद तक करूब की तरह। उसे एक युवा व्यक्ति की तरह दर्शाया गया है, जिसके चेहरे, पंख और पंजे भगवान के समान हैं। गरुड़। शास्त्रों में देवता को करूब पर सवार दिखाया गया है, और हवा के पंखों पर उड़ते हुए दिखाया गया है। गरुड़ को विष्णु या बृहस्पति का वाहन (शाब्दिक रूप से वाहन) कहा जाता है, और वह शास्त्रों के करूब का उत्तर देता है; क्योंकि कई टिप्पणीकार इस शब्द को अप्रचलित मूल शब्द चराब से लेते हैं, जो चाल्डियन भाषा में है, जो संस्कृत के वाहन का पर्यायवाची है।"

हम यहाँ यह भी जोड़ सकते हैं कि पुराणों ने भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग को प्रथम मानव जोड़े के बारे में माना है; और वहाँ, एक बलिदान की पेशकश करते समय दक्ष की हत्या उसके ईर्ष्यालु भाई ने की थी, जो पृथ्वी पर एक भगोड़ा बनने के लिए अभिशप्त था। दूसरी ओर, हिंदू पौराणिक कथाओं के प्रसिद्ध मेरु में, हमें ईडन के मोज़ेक गार्डन का वर्णनात्मक प्रतिनिधित्व भी मिलता है। मेरु एक शंक्वाकार पर्वत है, जिसका सटीक स्थान निश्चित नहीं है; लेकिन चूँकि हिंदू भूगोलवेत्ताओं ने पृथ्वी को एक सपाट मेज माना है, और बीच में उगता हुआ पवित्र मेरु पर्वत, अंततः यह उनका दृढ़ विश्वास बन गया कि मेरु उत्तरी ध्रुव है, उनकी धारणा से कि उत्तरी ध्रुव दुनिया का सबसे ऊँचा भाग है।

हमें इतना दृढ़ता से बताया गया है, इस परंपरा में यह माना जाता है कि हालांकि कुछ हिंदू लेखकों ने स्वीकार किया है कि मेरु पर्वत एशिया के मध्य भाग में स्थित होना चाहिए, फिर भी अपने स्वर्ग के वास्तविक स्थान के रूप में उत्तरी ध्रुव के लिए अपनी धारणा और पूर्वाग्रह को त्यागने के बजाय, उन्होंने वास्तव में सूर्य को क्रांतिवृत्त से बाहर निकाल दिया, और ध्रुव को छोटे बुखारा के ऊंचे मैदानों पर रख दिया।

हालाँकि, अगर हम इस स्वर्ग के हिंदू विवरण की जाँच करें, तो हम तुरंत इसकी उत्पत्ति और मोज़ेक विवरण के साथ इसके करीबी सादृश्य का पता लगाने में सक्षम होंगे। मेरु के शिखर को विशाल विस्तार का एक गोलाकार मैदान माना जाता है, जो पहाड़ियों की एक पट्टी से घिरा हुआ है - एक स्वर्गीय पृथ्वी, अमर का निवास, और इसे इडा व्रत, या इडा का चक्र नामित किया गया है। यह कार्डिनल बिंदुओं की ओर चार अलग-अलग रंगों का है, और माना जाता है कि इसे सोने, चांदी, तांबे और लोहे के चार विशाल बट्रेस द्वारा समर्थित किया गया है।

फिर भी इसके वास्तविक स्वरूप के बारे में संदेह है, कुछ लोग आरोप लगाते हैं कि इसका रूप एक चौकोर पिरामिड का है, अन्य कहते हैं कि इसका आकार

शंक्वाकार है; अन्य कहते हैं कि यह एक उल्टे शंकु जैसा दिखता है; जबकि अन्य सोचते हैं, कि पहाड़ों की एक गोलाकार पट्टी के बजाय, मेरु तीन ऊँची चोटियों में समाप्त होता है। सावा दावा करते हैं कि उनके देवता शिव के सिर से एक विशाल नदी निकलती है, और वैष्णव कहते हैं कि यह विष्णु के पैरों के नीचे से निकलती है, और चंद्रमा के घेरे से गुज़रने के बाद, मेरु के शिखर पर गिरती है, और खुद को चार धाराओं में विभाजित करती है, जो चार दिशाओं की ओर बहती हैं।

अन्य लोग मानते हैं कि पवित्र पर्वत की चार नदियाँ जाम्बरी की जड़ों से निकलती हैं, जो एक विशाल आकार का पेड़ है, जिसके बारे में वे कहते हैं।सबसे व्यापक और गहन ज्ञान प्रदान करता है, तथा मानव की सबसे वांछनीय आकांक्षाओं को पूरा करता है। पाठक को ज्ञान के वृक्ष का मोज़ेक विवरण याद आएगा, जो बगीचे के बीच में खड़ा था, तथा नदी जो ईडन से निकलकर उसे सींचती थी, तथा जो स्वयं को अन्य नदियों की चार शाखाओं या धाराओं में विभाजित करती थी।

इस प्रकार मेरु में उत्पन्न होने वाली नदी, हिंदू आगे कहते हैं, चार विपरीत दिशाओं में चार दिशाओं में बहती है तथा माना जाता है कि यह चार चट्टानों से निकलती है, जो कई अलग-अलग जानवरों के आकार में खुदी हुई हैं, जिनमें से एक गाय है; तथा वे दावा करते हैं कि यह गंगा का उद्गम है। हालांकि, उनमें से कुछ का मानना है कि यह नदी पहले ब्रह्मा के पवित्र शहर के चारों ओर बहती है, तथा फिर मानसरोवर नामक झील में गिरती है, जहां से यह चार जानवरों के चट्टानी सिरों के माध्यम से पृथ्वी के विभिन्न भागों में बहती है।

गाय का सिर, जिससे गंगा निकलती है, वे दक्षिण की ओर रखते हैं; तथा उत्तर की ओर बाघ या सिंह का सिर है। घोड़े का सिर पश्चिम की ओर है और हाथी का सिर पूर्व की ओर है। कश्मीर की परंपराएं उस देश को स्वर्ग का मूल स्थल और प्रथम मानव जोड़े का निवास स्थान बताती हैं; और तिब्बत के बौद्ध लोग मेरु पर्वत के बारे में हिंदुओं के समान ही राय रखते हैं। हालाँकि, वे पवित्र उद्यान को गंगा के स्रोत के पास, पहाड़ की तलहटी में स्थित मानते हैं; लेकिन चार पवित्र नदियाँ उन्हीं जानवरों के सिर से निकलती हैं, जिन्हें दुनिया के विभाजनों का संरक्षक माना जाता है।

ज्ञान या जीवन के वृक्ष को वे ज़ाम्बरी कहते हैं, जिसके बारे में वे कहते हैं कि यह एक दिव्य वृक्ष है, जो अमर फल देता है और चार विशाल चट्टानों के पास फलता-फूलता है, जहाँ से कई नदियाँ निकलती हैं जो दुनिया को पानी देती हैं। आस-पास के देशों में रहने वाले मुसलमानों ने इस लोकप्रिय मान्यता को अपनाया है कि स्वर्ग कश्मीर में स्थित है, और कहा कि जब पहले आदमी को

वहाँ से निकाला गया था, तो वह और उसकी पत्नी कुछ समय के लिए अलग-अलग भटकते रहे।

वे बहलाका या बाल्क नामक स्थान पर मिले, ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने एक-दूसरे को लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के बाद गले लगाया था। दो विशाल मूर्तियाँ, जिनके बारे में वे कहते हैं कि बहलाका और बामियान के बीच अभी भी देखी जानी हैं, आदम और हव्वा का प्रतिनिधित्व करती हैं, और एक तिहाई छोटे आयाम उनके बेटे सेश या सेठ की हैं, जिनकी कब्र या उसका स्थान बहलाका के पास बताया गया है। कुछ लेखकों ने गंभीरता से कहा कि स्वर्ग उत्तरी ध्रुव के नीचे था, प्राचीन बेबीलोनियों और मिस्रियों के एक विचार पर बहस करते हुए, कि क्रांतिवृत्त या सौर मार्ग मूल रूप से भूमध्य रेखा के समकोण पर था, और इसलिए सीधे उत्तरी ध्रुव के ऊपर से गुजरता था।

मुसलमानों द्वारा आम तौर पर माना जाने वाला यह मत कि यह सात स्वर्गों में से एक में है, पिछली धारणा से अधिक हास्यास्पद नहीं है। डॉ. क्लार्क ने स्वर्ग के स्थान के संबंध में अतिशयोक्तिपूर्ण सिद्धांतों का सारांश दिया है। "कुछ लोग इसे इस प्रकार मानते हैं: तीसरे स्वर्ग में, अन्य चौथे में, कुछ चंद्रमा की कक्षा के भीतर, अन्य चंद्रमा में, कुछ हवा के मध्य क्षेत्रों में, या पृथ्वी के आकर्षण से परे, कुछ पृथ्वी पर, अन्य पृथ्वी के नीचे, और अन्य पृथ्वी के भीतर।" पूर्व को छोड़ने से पहले, यह देखा जा सकता है कि पूर्वी लोग आम तौर पर एशिया में स्वर्ग के चार स्थानों की गणना करते हैं: पहला सीलोन, जिसका पहले ही उल्लेख किया जा चुका है; दूसरा चाल्डिया में; तीसरा फारस के एक जिले में, जिसे नीलाब नामक नदी से पानी मिलता है; और चौथा सीरिया में दमिश्क के पास, और जॉर्डन के झरनों के पास।

यह अंतिम कथित स्थल केवल पूर्वी लेखकों के लिए विशिष्ट नहीं है, क्योंकि हम इसे कुछ यूरोपीय लोगों, विशेष रूप से हाइडेगर, ले क्लर्क और हार्डीइन द्वारा बनाए रखा हुआ पाते हैं। दमिश्क शहर के निवासियों द्वारा निम्नलिखित परंपराएँ मानी जाती हैं - एक ऐसा शहर जिसे सम्राट जूलियन द एपोस्टेट ने पूरे पूर्व की आँख, सबसे पवित्र और सबसे शानदार दमिश्क कहा था। •• मैं समझता हूँ," लैमार्टिन कहते हैं," कि अरब परंपराएँ दमिश्क के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं।

खोए हुए स्वर्ग की जगह, और निश्चित रूप से मुझे लगता है कि धरती पर कोई भी जगह ईडन के बारे में किसी के विचारों का जवाब देने के लिए बेहतर नहीं है। विशाल और उपजाऊ मैदान, नीली धारा की सात शाखाओं के साथ जो इसे सींचती हैं - पहाड़ों की राजसी रूपरेखा - चमकती हुई झीलें जो धरती पर स्वर्ग को

दर्शाती हैं - दो समुद्रों के बीच इसकी भौगोलिक स्थिति - जलवायु की पूर्णता - हर चीज यह संकेत देती है कि दमिश्क कम से कम उन पहले शहरों में से एक है जो मनुष्यों के बच्चों द्वारा बनाए गए थे - आदिम समय में भगोड़े मानवता के प्राकृतिक पड़ावों में से एक। यह वास्तव में उन स्थलों में से एक है जिसे भगवान ने शहर के लिए इंगित किया है - एक ऐसा स्थल जो कॉन्स्टेंटिनोपल जैसी राजधानी को बनाए रखने के लिए पूर्वनिर्धारित है।"

ओरिएंटल के अनुसार, दमिश्क पवित्र उद्यान के स्थल पर स्थित है, और शहर के बिना सबसे सुंदर घास का मैदान है जिसे बैराडी नदी द्वारा विभाजित किया गया है, लाल मिट्टी से एडम का निर्माण हुआ माना जाता है। इस क्षेत्र को लैटिन लोगों द्वारा एगर दमास्केनस नामित किया गया है, और इसके लगभग केंद्र में पहले एक स्तंभ खड़ा था, जिसका उद्देश्य उस सटीक स्थान को चिह्नित करना था जहाँ निर्माता ने पहले आदमी में जीवन की सांस फूँकी थी। ईडन गार्डन के प्राचीन राष्ट्रों के बीच मौजूद कई परंपराएँ निस्संदेह उन उत्सुक और शानदार उद्यानों की उत्पत्ति करती हैं जिन्हें पूर्वी राजकुमारों द्वारा डिज़ाइन और लगाया गया था, जैसे कि यहूदियों के राजा अरिस्टो-बुलस का गोल्डन गार्डन, जिसे पोम्पी ने जुपिटर कैपिटोलिनस को समर्पित किया था।

न ही पौराणिक कथाओं में ऐसी किंवदंतियों की कमी है। हम बृहस्पति, अलसीनस और सौभाग्यशाली द्वीपों के बगीचे हैं, लेकिन विशेष रूप से हेस्परिड्स के, जिनमें न केवल आदिम स्वर्ग है, बल्कि अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष की परंपराएं और महिला से किए गए मूल वादे प्रमुख रूप से विशिष्ट हैं। हेस्परिड्स के बगीचे ने सुनहरे फल पैदा किए, जिसकी रक्षा एक खतरनाक सांप ने की - कि इस भयंकर सरीसृप ने अपनी तहों से एक रहस्यमय पेड़ को घेर लिया - और हरक्यूलिस ने सांप का सामना करके और उसे मारकर फल प्राप्त किया।

नक्षत्र की कहानी, जैसा कि एराटोस्थनीज द्वारा संबंधित है, ईडन गार्डन और मानव जाति के आदिम इतिहास पर लागू होती है। प्राचीन लेखक नक्षत्र की ओर इशारा करते हुए कहते हैं, "यह सर्प वही है जो सुनहरे सेबों की रक्षा करता था और हरक्यूलिस द्वारा मारा गया था। क्योंकि, जब देवताओं ने जुनो को बृहस्पति के साथ उसके विवाह पर उपहार दिए, तो पृथ्वी भी सुनहरे सेब लेकर आई। जूनो ने उनकी सुंदरता की प्रशंसा करते हुए उन्हें देवताओं के बगीचे में लगाने का आदेश दिया; लेकिन यह देखकर कि एटलस की बेटी उन्हें लगातार तोड़ रही थी, उसने उनकी रक्षा के लिए एक विशाल सर्प को नियुक्त किया।

हरक्यूलिस ने राक्षस पर विजय प्राप्त की और उसे मार डाला। इसलिए, इस नक्षत्र में सर्प को अपना सिर ऊपर उठाए हुए दिखाया गया है, जबकि हरक्यूलिस, एक घुटने को मोड़कर उसके ऊपर खड़ा है, अपने पैर से उसके सिर को रौंद रहा है, और अपने दाहिने हाथ में एक क्लब लहरा रहा है।" यूनानियों ने हेस्परिड्स के बगीचे को माउंट एटलस के करीब रखा, और फिर इसे पश्चिमी अफ्रीका के क्षेत्रों में दूर ले जाया गया; फिर भी इसके एशियाई स्थल के बारे में सभी जानकारी शास्त्रीय पौराणिक कथाओं से मिटाई नहीं गई, क्योंकि अपोलोडोरस हमें बताता है कि कुछ लेखकों ने इसे लीबिया के एटलस में नहीं, बल्कि हाइपरबोरियन के एटलस में रखा है;

और वह आगे कहते हैं कि सर्प में स्पष्ट ध्वनियाँ निकालने की क्षमता थी। हमारे ट्यूटनिक पूर्वजों का मानना था कि दुनिया मूल रूप से एक स्वर्ग थी, और इसके पहले निवासी मनुष्य से अधिक थे, जिनका निवास एक शानदार हॉल था, जो बढ़िया सोने से चमकता था, जहाँ प्रेम, आनंद और मित्रता का शासन था। उनके सबसे तुच्छ बर्तन सोने से बने थे, और इसलिए इसे स्वर्ण युग की उपाधि दी गई। लेकिन इस खुशी को जल्द ही दिग्गजों के देश की कुछ महिलाओं ने खत्म कर दिया, जिनके बहकावे में आकर पहले नश्वर लोग झुक गए, और उनकी मासूमियत और ईमानदारी हमेशा के लिए खो गई। ईव का अपराध पेंडोरा की घातक जिज्ञासा का स्पष्ट प्रोटोटाइप है; और महिलाओं का आगमन दैत्यों के देश से, तथा मनुष्यों की एक विशिष्ट और शुद्धतर जाति के साथ उनके सम्बन्ध से, सेठ के पुत्रों का कैन की पुत्रियों के साथ विवाह, जो कि पूर्व-जलप्रलय के सार्वभौमिक दुराचार का मुख्य कारण था, की याद दिलाने में हम असमर्थ नहीं हो सकते।

हिन्दुस्तान की किंवदंतियाँ हमें शास्त्रीय पौराणिक कथाओं के स्वर्ण युग में स्वर्ग के सुख के विवरण भी प्रदान करती हैं। मौरिस कहते हैं, "इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि सत्य युग या पूर्णता के युग से ब्राह्मण स्पष्ट रूप से स्वर्ग में मनुष्य द्वारा भोगी जाने वाली पूर्णता और सुख की स्थिति का संकेत देते हैं। इस धारणा के बिना यह स्पष्ट करना असंभव है कि भारतीय लेखक शिष्टाचार की सार्वभौमिक शुद्धता और उस आदिम युग में प्रचलित विलासिता और असीम प्रचुरता के बारे में क्या दावा करते हैं।

न्याय, सत्य, परोपकार, तब मानव जाति के सभी वर्गों और वर्गों में प्रचलित थे। तब एक दूसरे के साथ व्यवहार में कोई जबरन वसूली, कोई धोखा, कोई धोखाधड़ी नहीं होती थी। देवता की वेदियों पर निरंतर आहुति चढ़ाई जाती थी; हर जीभ प्रशंसा करती थी, और हर दिल सर्वोच्च निर्माता के प्रति कृतज्ञता से चमकता था। देवताओं ने, नश्वर के आचरण के अपने अनुमोदन के प्रतीक के

रूप में, अक्सर अवतार लेने के लिए, और अभी तक अछूती जाति के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने, उन्हें कला और विज्ञान में निर्देश देने, अपने स्वयं के उदात्त कार्यों और शुद्ध प्रकृति को उजागर करने और उन्हें उन दिव्य क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था से परिचित कराने के लिए, जहां उन्हें तुरंत स्थानांतरित किया जाना था, जब उनकी सांसारिक परिवीक्षा की अवधि समाप्त हो गई।

274.परमा-हमसस : (भारत देखें।) पारस्केवा, संत : रूसी कैलेंडर के एक संत, जिनका पर्व 3 अगस्त को है। उस दिन रूस के सभी भागों से तीर्थयात्री शैतानों को भगाने के उद्देश्य से सेंट पीटर्सबर्ग में एकत्रित होते हैं। 1913 में हुई पीयो की हत्याओं की एक समाचार पत्र रिपोर्ट इस प्रकार है: - 44 सेंट पारस्केवा का एक और दिन आ गया और चला गया। सेंट पीटर्सबर्ग के उपनगरों में सामान्य रूप से नाटक के दृश्य खेले गए, और चर्च के अधिकारियों ने कोई जांच नहीं की, न ही पुलिस ने हस्तक्षेप किया। हजारों निम्न वर्ग के लोगों को एक तमाशा देखने के लिए फिर से विशेष ट्रेनें चलाई गई हैं, जिसकी सहनशीलता केवल वही लोग समझ सकते हैं जो पवित्र धर्मसभा के दिवंगत अभियोक्ता एम. पोबिडोनोस्त्सेफ़ के लेखन से परिचित हैं।

सेंट पारशवा का चर्च शहर के एक फैक्ट्री जिले में स्थित है। दीवारों में से एक के बाहरी हिस्से पर संत की एक छवि है, जिसे शैतानों को भगाने और मिर्गी, न्यूरोटिक्स और अन्य को चमत्कारी हस्तक्षेप द्वारा ठीक करने की शक्ति का श्रेय दिया जाता है। साथ ही, इस दिन को एक लोकप्रिय अवकाश बनाया जाता है, जिसमें सभी प्रकार के खेल और मनोरंजन, बूथ और लॉटरी, जलपान के स्टॉल और पीने के बार होते हैं।

समाचार पत्र इस वर्ष की कार्यवाही का विस्तृत विवरण बिना किसी टिप्पणी के प्रकाशित करते हैं, और यह शायद महत्वपूर्ण है कि रूढ़िवाद के एक स्तंभ, नोवोए वर्म्या ने उन्हें पूरी तरह से अनदेखा कर दिया। यह तब भी आश्चर्यजनक नहीं है जब कोई पढ़ता है कि एक ही अंडरगारमेंट पहने और नंगे हाथों वाली महिलाओं को कट्टर किसानों द्वारा छवि के स्तर तक उठाया जाता है ताकि वे इसे चूम सकें, और फिर उनके गले में अशुद्ध पानी और अशुद्ध तेल डाला जा सके।

पहली बीमार महिला का इलाज बाकी सभी के लिए विशिष्ट है। एक युवा किसान ने उसे हवा में उठा लिया, दो अन्य ने उसकी बाहें पूरी तरह फैलाकर पकड़ रखी थीं, जबकि चौथे ने उसके खुले हुए बालों को पकड़ लिया और उसके सिर को एक तरफ से दूसरी तरफ और ऊपर-नीचे घसीटते हुए चिल्लाया "चुंबन, चुंबन संत पारस केवा 1" महिला का कपड़ा जल्द ही फट गया। वह कराहने लगी। पुरुषों में

से एक ने चिल्लाया: "बाहर निकल जाओ 1 शैतान मैं कहता हूँ कि तुम कहाँ रह रहे हो 1" महिला के सिर को बालों से पीछे खींचा गया, उसका मुँह जबरदस्ती खोला गया, और उसमें मिट्टी के रंग का पानी (पवित्र जल कहा जाता है) डाला गया।

उसने पानी थूक दिया, और उसे कराहते हुए सुना गया, "ओह, वे मुझे डुबो रहे हैं 1" युवक ने खुशी से चिल्लाते हुए कहा, *"तो हमने तुम्हें पकड़ लिया, शैतान, है ना? उसे तुरंत छोड़ दो, नहीं तो वह तुम्हें डूबा देगी 1 "उसने पीड़िता के मुंह में पानी डालना जारी रखा, और उसके बाद शुद्ध तेल। उसके होंठ बंद कर दिए गए, ताकि वह उसे निगलने के लिए बाध्य हो। दुर्भाग्यपूर्ण महिला को फिर से उठाया गया और उसका चेहरा छवि के खिलाफ दबाया गया। "इसे चूमो मैं इसे चूमो मैं" उसे आदेश दिया गया, और उसने आज्ञा का पालन किया। उससे पूछा गया कि उसके "भूत" होने का कारण कौन था।

अन्ना, "फुसफुसाया गया उत्तर था। अन्ना कौन थी? उसका गाँव क्या था? वह किस झोपड़ी में रहती थी? एक नियमित पूछताछ। पहली पीड़िता की शारीरिक और मानसिक पीड़ा लगभग एक घंटे तक चली, जिसके अंत में उसे उसके रिश्तेदारों को सौंप दिया गया, उसके बाद उसे एक क्रॉस दिया गया, क्योंकि यह पाया गया कि उसके पास एक भी क्रॉस नहीं था। रेच, मोल्वा, आदि द्वारा प्रकाशित खातों के अनुसार, कई अन्य महिलाओं के साथ भी इसी तरह का व्यवहार किया गया था, अभ्यास पूरे दिन और रात तक चलता रहा। पुरुषों और तीर्थयात्रियों के साथ "ऐसा लगता है कि कम सख्ती से पेश आया गया होगा। यह समझाया गया है कि महिला के कपड़े उतारने का विचार यह है कि कोई गाँठ, धनुष या बन्धन नहीं होना चाहिए जहाँ शैतान और उसके सहयोगी आराम कर सकें।

और एक व्यक्ति के पास चर्च के चारों ओर घुटनों के बल रेंगती हुई महिलाओं की तस्वीर रह जाती है, जो भविष्य के लिए सर्वशक्तिमान की सहायता या अतीत में किए गए पापों के लिए उनकी क्षमा की याचना करती हैं।" "भूतग्रस्त" के साथ व्यवहार शैतानों को बाहर निकालने के लिए कई बर्बर लोगों द्वारा किए जाने वाले व्यवहार के समान है, और विशेष रूप से कंबोडिया के चाम्स के बीच जो भूतग्रस्त लोगों को कचरा खाने के लिए मजबूर करते हैं ताकि वे अपने आश्रय वाले शैतान से घृणा करें।

275.भौतिक दुनिया**:** जिसे पहले स्थूल तल के नाम से जाना जाता था - थियोसोफिकल योजना में सात दुनियाओं में सबसे निचली दुनिया है, वह दुनिया जिसमें सामान्य मनुष्य घूमता है और सामान्य परिस्थितियों में सचेत रहता है।

यह अहंकार के पदार्थ में उतरने की सीमा है, और वह पदार्थ जो उपयुक्त भौतिक शरीर की रचना करता है, इनमें से किसी भी दुनिया में सबसे सघन है। भौतिक पदार्थ में ठोस, तरल, गैस, ईथर, सुपर-ईथर, उप-परमाणु और परमाणु के सात विभाजन होते हैं, जो अन्य दुनियाओं के पदार्थ के समान हैं।

भौतिक शरीर के अलावा, जो सामान्य दृष्टि से परिचित है, एक सूक्ष्म शरीर है, ईथरिक डबल, जो सघन भौतिक शरीर के उपयोग के लिए सूर्य से जीवन शक्ति एकत्र करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और ईथरिक बॉडी और चक्रम पर लेखों का संदर्भ दिया गया है। मृत्यु के समय, भौतिक शरीर और ईथरिक डबल को अलग कर दिया जाता है और धीरे-धीरे अपने घटकों में विलीन हो जाते हैं। (विश्व, तल या गोले, थियोसोफी देखें।)

276.प्लेरार्ट**,** जेड**.** टी**. :** फ्रांसीसी अध्यात्मवादी और ला रिव्यू के संपादक स्पिरिचुअलिस्ट। एम. पेरीआर्ट का जन्म साधारण परिस्थितियों में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपने लिए पर्याप्त शिक्षा प्राप्त करने में कामयाबी हासिल की। वे समय के साथ कॉलेज ऑफ मौब्यूज में प्रोफेसर बन गए, और बाद में बैरन डू पोटेट के सचिव बन गए। 1858 में उन्होंने ला रिव्यू स्पिरिचुअलिस्ट की स्थापना की, और फ्रांसीसी आध्यात्मिकवादियों का नेतृत्व किया, जिनके और एलन कार्डेक के तहत आध्यात्मिकवादियों के बीच एक निश्चित प्रतिद्वंद्विता थी। 1878 में अपनी मृत्यु तक उन्होंने अपना समय और प्रतिभा उस आंदोलन को समर्पित करना जारी रखा जिसके साथ वे जुड़े थे।

277.पाइपर**,** श्रीमती**:** एक प्रसिद्ध ट्रान्स माध्यम, जिनके प्रवचन और लेखन आत्मा संचार की वास्तविकता के लिए सबसे अच्छा सबूत प्रस्तुत करते हैं। अमेरिका की मूल निवासी श्रीमती पाइपर 1884 में एक पेशेवर दिव्यदर्शी से परामर्श करते समय पहली बार मंत्रमुग्ध हो गई थीं। इन शुरुआती दिनों में कई आत्माओं ने उन्हें नियंत्रित करने का दावा किया था - श्रीमती सिडन्स, लॉन्गफेलो, बाख, केवल सबसे प्रसिद्ध का उल्लेख करने के लिए - लेकिन 1885 में, जब वह सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च के अवलोकन में आईं, तो उनका मुख्य नियंत्रण डॉ. फिन्यूइट था।

उस समय से उसके ट्रान्स कथन और लेखन - क्योंकि 1890 के बाद संचार आम तौर पर लिखित रूप में थे - एस.पी.आर. के सदस्यों द्वारा सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड और विश्लेषण किया गया था, मुख्य रूप से डॉ. हॉजसन के निर्देशन में। 1889-90 में श्रीमती पाइपर ने इस देश का दौरा किया और कई सत्र दिए, जिनमें से अधिकांश माध्यम में अलौकिक शक्तियों को प्रदर्शित करते प्रतीत हुए। सीमित स्थान में उनके उल्लेखनीय ट्रान्स प्रतिरूपण का विवरण देना असंभव

है। 1905 में उनकी मृत्यु के बाद डॉ. हॉजसन उनके नियंत्रण में से एक बन गए; श्री मायर्स और श्री गुरनी ने भी उन्हें नियंत्रित किया।

लेकिन शायद सबसे अधिक जीवंत और विश्वसनीय प्रतिरूपण या आत्मा-अभिव्यक्ति - जो भी हो - जॉर्ज पेलहम का था, जो एक युवा अमेरिकी लेखक और डॉ. हॉजसन के मित्र थे, जिनकी 1892 में अचानक मृत्यु हो गई थी। (ट्रान्स व्यक्तित्व देखें।) इस नियंत्रण द्वारा दी गई जानकारी, दोस्तों की उनकी पहचान, और इसी तरह, इतने सटीक थे कि कई लोगों को यकीन हो गया कि यह वास्तव में "जी.पी." था जो बोल रहा था।

उस समय से 1896 तक सत्र विशेष रूप से उत्पादक थे, लेकिन बाद के वर्ष में माध्यम का ऑपरेशन हुआ। फ़िनुइट, जो अक्सर अन्य नियंत्रणों और बैठने वाले के बीच मध्यस्थ के रूप में काम करता था, अब चला गया, और स्टैनटन मोसेस के "इम्परेटर" के नेतृत्व में अन्य आत्माओं के एक समूह ने श्रीमती पाइपर के जीव को नियंत्रित किया। ट्रान्स लेखन और कथन कम हो गए, और आत्माओं ने सिफारिश की कि मध्यम के स्वास्थ्य के कारण बैठने की संख्या कम कर दी जाए। फिर भी बाद में पाइपर हॉजसन, पाइपर-मायर्स और पाइपर-गर्नी नियंत्रणों के साथ कुछ उत्कृष्ट परीक्षण किए गए।
श्रीमती पाइपर भी उन लोगों में से एक थीं जिन्होंने 1906 और उसके बाद आयोजित "क्रॉस-कॉरेस्पोंडेंस" बैठकों में भाग लिया था, अन्य माध्यम श्रीमती थॉम्पसन, श्रीमती वेराल, मिस ^ वेराल, श्रीमती हॉलैंड, श्रीमती फोर्ब्स, आदि थे। (देखें "आध्यात्मिकतावाद, और क्रॉस-कॉरेस्पोंडेंसी।) यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि श्रीमती पाइपर की ट्रान्स घटना में कुछ अलौकिक क्षमता के सबूत हैं, सबसे अच्छे रूप में, टेलीपैथी के, हालांकि लेखक को वह परिकल्पना भी अपर्याप्त लगती है।

यह, उदाहरण के लिए, टेलीपैथी का एक बहुत ही जटिल रूप होगा, जो इन स्वचालित "क्रॉस-कॉरेस्पोंडेंस" स्क्रिप्ट में से कुछ को लिखने में सक्षम करेगा, जिसमें, मान लीजिए, दो स्क्रिप्ट में लेखकों के लिए समझ से बाहर के संकेत हैं, और उन्हें स्पष्ट करने के लिए तीसरी स्क्रिप्ट द्वारा प्रदान की गई कुंजी की आवश्यकता है। ऐसा मामला अनिवार्य रूप से सुझाव देता है कि एक ही बुद्धि तीनों माध्यमों को निर्देशित करती है। श्रीमती पाइपर का प्रतिरूपण जॉर्ज पेलहम, फिर से, कुछ स्पष्टीकरण की मांग करते हैं, क्योंकि ऐसा लगता है कि सारी जानकारी शायद ही बैठने वाले के दिमाग से ली गई होगी। (आध्यात्मिकता देखें।)

278.प्लेंचेट : आत्माओं से संवाद करने के उद्देश्य से बनाया गया एक यंत्र। इसमें लकड़ी का एक पतला-दिल के आकार का टुकड़ा होता है, जिसे दो छोटे पहिये के पहियों पर रखा जाता है और तीसरे सहारे के लिए नीचे की ओर एक पेंसिल रखी जाती है। हाथ को लकड़ी पर रखा जाता है और पेंसिल अपने आप लिखती है, या संभवतः माध्यम की मानसिक शक्ति के माध्यम से संचालित होने वाली आत्मा के नियंत्रण से। 1853 में, एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी अध्यात्मवादी, एम. प्लेनेहेट ने इस यंत्र का आविष्कार किया, जिसे उन्होंने अपना नाम दिया।

लगभग पंद्रह वर्षों तक इसका उपयोग केवल फ्रांसीसी अध्यात्मवादियों द्वारा किया जाता था। फिर वर्ष 1868 में अमेरिका में खिलौना बनाने वाली एक फर्म ने इस विचार को अपनाया और पुस्तक विक्रेताओं की दुकानों में बड़ी संख्या में प्लेनेहेट की बाढ़ ला दी। यह एक लोकप्रिय उन्माद बन गया, और यह यंत्र वहाँ और ग्रेट ब्रिटेन में हज़ारों की संख्या में बिका। इसका उपयोग मुख्यतः खिलौने के रूप में किया जाता था और किया जाता है तथा इससे प्राप्त होने वाले परिणाम जो कि आकर्षक और समझ से परे प्रतीत होते हैं, उन्हें एनिमल मैग्नेटिज्म द्वारा समझाया जाता है अथवा अवचेतन विचार की शक्ति से जोड़ा जाता है।

अध्यात्मवादियों के बीच इसका उपयोग आत्मा संचार के लिए किया जाता रहा है। स्वचालित लेखन को अक्सर प्लेनेहेट के उपयोग द्वारा विकसित किया गया है, कुछ माध्यम ऐसी पुस्तकें प्रकाशित करते हैं, जिनके बारे में उनका दावा है कि वे पूरी तरह से प्लेनेहेट के उपयोग के माध्यम से उनकी आत्मा द्वारा नियंत्रित की जाती हैं। डॉ. एशबर्न्स ने अपनी पुस्तक स्पिरिचुअलिज्म केमिकली एक्सप्लेन्ड में कहा है कि मानव शरीर गैसों का संघनन है, जो त्वचा से अदृश्य वाष्प के रूप में लगातार निकलती रहती है - अन्यथा बिजली; प्लेनेहेट के संपर्क में आने वाली उंगलियां इसे एक "ओडिक बल" संचारित करती हैं, और इस प्रकार इसे गति प्रदान करती हैं।

वे आगे कहते हैं कि कुछ लोगों के सिस्टम में फॉस्फोरस की अधिकता होती है और इस प्रकार निकलने वाली वाष्प "एक सकारात्मक रूप से जीवित, सोचने वाला, कार्य करने वाला शरीर बनाती है, जो एक पेंसिल को निर्देशित करने में सक्षम है।" प्लेनहेट के रूप में कई भिन्नताएँ हैं जैसे डायल-प्लेनहेट जिसमें नौ इंच वर्गाकार मोटे कार्डबोर्ड की नींव होती है जिसके सामने वर्णमाला छपी होती है और साथ ही एक से दस तक के अंक भी होते हैं। इसमें "हाँ", "नहीं", " अलविदा" और "नहीं पता" जैसे शब्द होते हैं। ये अक्षर, शब्द और अंक एक वृत्त के बाहरी किनारे पर छपे होते हैं, जिसका व्यास लगभग सात इंच होता है।

इस वृत्त के केंद्र में, और कार्डबोर्ड पर मजबूती से चिपका हुआ, लकड़ी का एक ब्लॉक होता है जो तीन इंच लंबा होता है।इंच वर्ग। इस ब्लॉक की ऊपरी सतह में एक गोलाकार चैनल है और इसमें गेंदें चलती हैं। गेंदों के ऊपर पाँच इंच व्यास का एक कठोर लकड़ी का गोलाकार टुकड़ा रखा जाता है और इसके बाहरी किनारे पर एक पॉइंटर लगा होता है। लकड़ी का ऊपरी टुकड़ा एक साधारण पेंच द्वारा निचले हिस्से से जुड़ा होता है, जिस पर ऊपरी प्लेट संचार के लिए उपयोग किए जाने पर घूमती है। एक अन्य रूप ओइजा बोर्ड है जिस पर सुविधाजनक क्रम में वर्णमाला के अक्षर मुद्रित होते हैं और जिस पर एक पॉइंटर आसानी से माध्यम के रूप में कार्य करने वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के हाथ की दिशा में चलता है।

ऐसा कहा जाता है कि इस "रहस्यवादी खिलौने" का एक रूप पाइथागोरस के दिनों में लगभग 540 ईसा पूर्व उपयोग में था। पाइथागोरस के एक फ्रांसीसी इतिहास में, लेखक ने उनके प्रसिद्ध दर्शनशास्त्र के स्कूल का वर्णन करते हुए दावा किया है कि भाईचारे ने अक्सर मंडलियों में सत्र आयोजित किए, जिसमें पहियों पर चलने वाली एक रहस्यवादी मेज, एक पत्थर की पटिया की सतह पर अंकित संकेतों की ओर बढ़ी, जिस पर चलती हुई मेज काम करती थी। लेखक ने कहा है कि संभवतः पाइथागोरस ने पूर्वी देशों में अपनी यात्राओं के दौरान उनके बीच कुछ ऐसे उपकरणों का उपयोग होते देखा और उनसे अपने विचार को अपनाया।

इस तरह के कुछ "संचार तंत्र" का एक और संकेत स्कैंडिनेवियाई ब्लोमस्टुरवल्ला द्वारा बताई गई किंवदंती में पाया जाता है कि बारहवीं शताब्दी में जोम्सविकिंगिया के लोगों के पास एक उच्च पुजारी था, जिसका नाम वी61सुंगा था, जिसकी भविष्यवाणियाँ पूरे देश में अपनी सटीकता के लिए प्रसिद्ध थीं। उसके पास एक छोटी हाथीदांत की गुड़िया थी जो चर्मपत्र या "अन्य पदार्थ" पर "एक नुकीले उपकरण" से खींची जाती थी, कुछ संकेत जिनकी कुंजी पुजारी के पास होती थी।

संचार हर मामले में भविष्यसूचक कथन थे, और ऐसा कहा जाता है कि हर मामले में सच हुए। किंवदंती को याद करने वाले लेखक ने सोचा कि यह संभव है कि पुजारी ने चीन में गुड़िया खरीदी हो। स्टॉकहोम के राष्ट्रीय संग्रहालय में इस प्रकार की एक गुड़िया है जो यंत्रवत् काम करती है, और जब मुड़ जाती है तो गोल-गोल घूमती है और कभी-कभी अपने दाहिने हाथ से हाथ में पकड़े हुए स्टाइलो जैसे नुकीले उपकरण से अजीबोगरीब संकेत बनाती है। इसकी उत्पत्ति और उपयोग को ऊपर वर्णित किंवदंती से जोड़ा गया है।

279. ग्रहीय आत्माएँ: थियोसोफिकल योजना में इन आत्माओं की संख्या सात है। वे परम से उत्पन्न होती हैं, और वे एजेंट हैं जिनके द्वारा परम ब्रह्मांड में अपने सभी परिवर्तनों को प्रभावित करता है।

280. पोल्टरजिस्ट: यह नाम उन अलौकिक कारणों को दिया गया है जो समय-समय पर विज्ञान के लोगों के साथ-साथ आम लोगों को भी हैरान करते हैं। शब्द पोल्टरजिस्ट (यानी, पॉटर गीसल, खड़खड़ाता भूत) इन प्राणियों के चरित्र का पर्याप्त संकेत देता है, जिनकी अभिव्यक्तियाँ, सबसे अच्छे रूप में, बचकानी और उद्देश्यहीन चालें हैं, और अक्सर एक खुले तौर पर शरारती और विनाशकारी प्रवृत्ति प्रदर्शित करती हैं।

पोल्टरजिस्ट किसी भी तरह से किसी एक देश का मूल निवासी नहीं है, न ही उसने अपना ध्यान किसी विशेष अवधि तक सीमित रखा है। लैंग ने मध्य युग से संबंधित कई मामलों का उल्लेख किया है, और कम से कम एक जो 856 ईसा पूर्व तक का है। जंगली और सभ्य दोनों देशों में भूत-प्रेत का यह अजीब रूप अच्छी तरह से जाना जाता है, और यह एक अजीब बात है कि हर मामले में घटनाएँ लगभग एक जैसी होती हैं।

गड़बड़ी हमेशा एक व्यक्ति के पड़ोस में विशेष रूप से सक्रिय देखी जाती है, आम तौर पर एक बच्चा या एक युवा महिला, और अधिमानतः एक मिर्गी या हिस्टीरिया से पीड़ित व्यक्ति। अध्यात्मवादियों द्वारा विकसित सिद्धांत के अनुसार, गड़बड़ी का यह केंद्र एक प्राकृतिक माध्यम है, जिसके माध्यम से आत्माएं जीवित प्राणियों की दुनिया के साथ संवाद करना चाहती हैं। पहले के समय में ऐसे व्यक्ति को एक चुड़ैल या चुड़ैल का शिकार माना जाता था, जो भी अनुमान परिस्थितियों के लिए सबसे उपयुक्त था।

भूत-प्रेत को जादू टोना से विकसित और आधुनिक अध्यात्मवाद के प्रत्यक्ष अग्रदूत के रूप में दर्शाया गया है, और वास्तव में, दोनों के बीच एक कड़ी है। पहले कुछ पुराने अभिलेखों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हुए, हम टेडवर्थ के ड्रमर (1661) और एपवर्थ केस (1716) के मामले पर संक्षेप में विचार कर सकते हैं। इन दोनों उदाहरणों में देखी गई अभिव्यक्तियाँ सामान्य क्रम की थीं।

आत्माएँ, यदि वे आत्माएँ थीं, तो वे परिचित बचकानी चालों से ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करती थीं, और दस्तक देने की उसी बोझिल प्रक्रिया के माध्यम से संवाद करती थीं। पहले नाम वाले उदाहरण की परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं: 1661 में, टेडवर्थ के बिट मोम्पेसन के कहने पर एक आवारा ढोल बजाने वाले को शांति के न्यायाधीश के सामने ले जाया गया, और उसका ढोल

छीन लिया गया, जिसे अंततः श्री मोम्पेसन के घर में आराम करने की जगह मिली, उस सज्जन के घर से अनुपस्थित रहने के दौरान।

तुरंत घर में हिंसक उपद्रव शुरू हो गया। जोर-जोर से अवरोध और धमाकों की आवाज़ें सुनाई दीं, और एक अदृश्य ढोल की धड़कन सुनाई दी। कमरे में सामान बेतहाशा उड़ रहे थे, और बिस्तर (विशेष रूप से वे जिन पर छोटे बच्चे लेटे थे) हिंसक रूप से हिल रहे थे। कुछ समय बाद ढोल बजाने वाले को ले जाया गया, जब अचानक से अभिव्यक्तियाँ बंद हो गईं, लेकिन उसके वापस आने के साथ ही फिर से प्रकोप शुरू हो गया। समकालीन राय ने मामले को ढोलकिया की ओर से जादू-टोना करने के लिए जिम्मेदार ठहराया, लेकिन श्री पोडमोर और अन्य आधुनिक लोगों का मानना है कि "बिस्तर पर लेटी हुई दो छोटी-छोटी लड़कियों" का भूत-प्रेत की रहस्यमयी दस्तक और खरोंच से बहुत कुछ लेना-देना था।

प्रसिद्ध एपवर्थ मामले में, जहाँ इस घटना को पूरे वेस्ले परिवार द्वारा अच्छी तरह से प्रमाणित किया गया है, और कई समकालीन पत्रों में इसका वर्णन किया गया है, गड़बड़ी में उड़ना, तेज और भयानक आवाज़ें और खटखटाहट जैसी सभी सामान्य अभिव्यक्तियाँ शामिल थीं। साथ ही खरगोशों, बेजरों आदि की प्रेतबाधाएँ भी थीं। पोडमोर का मानना है कि बेटियों में से एक, हेट्टी, किसी तरह से इस मामले में शामिल थी। उसने अकेले ही अभिव्यक्तियों का विवरण नहीं दिया, हालाँकि उसने ऐसा करने का वादा किया था।

भूत-प्रेत ने उसकी संगति के प्रति एक निश्चित पक्षपात दिखाया - एक ऐसी परिस्थिति जो, हालांकि, अप्रत्याशित नहीं थी, लेकिन ऐसा लगता है कि उसके परिवार के लिए कोई "P°^*1 महत्व नहीं रखती थी। एक और हालिया मामला जिसमें जादू-टोना करने का आरोप शामिल है, वह है सिडविले का मामला, जिसका वर्णन श्री लैंग ने अपने कॉक लेन और कॉमन सेंस में "ए मॉडर्न ट्रायल फॉर विचक्राफ्ट" शीर्षक के तहत किया है।

1849 में सिडविले के इलाजकर्ता, सीन इनफेरिएर को थोरेल नामक एक चरवाहे ने अदालत में बुलाया, जिसने आरोप लगाया कि कर्ट ने उसे जादू-टोना करने के लिए दोषी ठहराया था। अपने बचाव में कर्ट ने आरोप लगाया कि थोरेल ने खुद जादू-टोने के माध्यम से कुछ रहस्यमयी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न करने की बात कबूल की थी, जिसने एबे के कैदियों को परेशान किया था। मुकदमे के दौरान यह पता चला कि कर्ट, एक बीमार पैरिशियन से मिलने के दौरान, एक कुख्यात चरित्र के व्यक्ति को बिस्तर से भगा दिया था, जो जादू-टोने के लिए बदनाम था, जो रोगी का इलाज करने वाला था।

जादूगर ने इलाज से बदला लेने की कसम खाते हुए संन्यास ले लिया, और कुछ ही समय बाद उसे जेल भेज दिया गया। बाद में जब कर्ट के शिष्य दो छोटे लड़के नीलामी में थे, तो उन्हें मंजूरी दे दी गई थोरेल, जो जादूगर के शिष्य के रूप में जाने जाते थे, ने उन्हें यह संदेश दिया। उन्होंने बच्चों में से एक के सिर पर अपना हाथ रखा और कुछ अजीब शब्द बोले। जब लड़के एबे में वापस आए तो भूत-प्रेतों का प्रदर्शन शुरू हो गया।

दीवारों पर जोरदार प्रहार से ऐसा लग रहा था कि वे ढहने वाली हैं, बच्चों में से एक ने शिकायत की कि उसके पीछे एक आदमी की परछाई चल रही है और अन्य गवाहों ने घोषणा की कि उन्होंने एक भूरे रंग का हाथ और धुएं की माला देखी है। एबे में आने वाले कुछ लोग दस्तक देकर आत्माओं से बातचीत करने में सक्षम थे। यह सहमति हुई कि दीवारों में नुकीले लोहे ठोंके जाने चाहिए और ऐसा करने पर चीरों से धुआं और लपटें निकलती देखी गईं। अंत में थोरेल ने इलाज की तलाश की और कबूल किया कि गड़बड़ी उसके गुरु, जादूगर का काम थी।

वादी को दोषी नहीं ठहराया गया और न्यायाधीश ने संक्षेप में कहा कि इस मामले के "असाधारण तथ्यों" का कारण "अज्ञात रहा।" फरवरी, 1851 में, लड़कों को एबे से हटा दिया गया और अशांति समाप्त हो गई। उन उदाहरणों में से जहाँ आध्यात्मिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है, शायद सबसे उत्कृष्ट कॉक लेन भूत का मामला है, जो लगभग इतना प्रसिद्ध है कि उसे संक्षेप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है। 1761-2 में कॉक लेन के एक घर में खटखटाहट और खरोंचें सुनी गईं, जो आम तौर पर घर की छोटी बेटी एलिजाबेथ पार्सन्स के बिस्तर के पास होती थीं।

बहुत जल्द ही अभिव्यक्तियाँ इतनी स्पष्ट हो गईं कि शहर के सभी हिस्सों से लोग उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़े। एक नियम-संहिता पर सहमति बनी, जिसके माध्यम से यह पता चला कि आत्मा "फैनी" नामक एक महिला की थी, जिसने घोषणा की थी कि उसे उसकी मृत बहन के पति ने जहर दिया था, जिसके साथ वह लगभग दो साल पहले कॉक लेन के घर में रह रही थी, और उसने इच्छा व्यक्त की कि उसे फांसी पर लटका दिया जाए। वास्तव में, भूत-प्रेत द्वारा किसी अपराध का खुलासा करना एक सामान्य बात है, चाहे वह वास्तविक हो या काल्पनिक - और अधिकतर बाद वाला, जो पूरी तरह से आत्मा के चरित्र के अनुरूप होता है।

कॉक लेन मामले में जब लड़की को दूसरे घर में ले जाया गया तो भूत-प्रेत उसके पीछे-पीछे चले गए, और वह अपनी नींद में भी भूत के आने पर कांपने लगी। हालाँकि, जो मामला सबसे भयानक सबूत प्रस्तुत करता है, वह स्विटजरलैंड में

जोलर परिवार का है। 1860-2 में स्टैंस में, एक प्रमुख वकील और उत्कृष्ट चरित्र के व्यक्ति एम. जोलर के घर में गंभीर दंगे भड़क उठे। दस्तक सबसे पहले एक नौकरानी ने सुनी, जिसने यह भी कहा कि उसे अजीब भूरे रंग की आकृतियाँ और रोने की आवाज़ें सता रही थीं। 1861 की शरद ऋतु में उसे नौकरी से निकाल दिया गया और दूसरी नौकरानी को काम पर लगा दिया गया।

कुछ समय के लिए शांति रही, लेकिन 1862 की गर्मियों में उन्होंने दुगने जोश के साथ काम शुरू किया। एम. जोलर की पत्नी और सात बच्चों ने कई भयानक दृश्य और आवाज़ें सुनी और देखीं, लेकिन एम. जोलर खुद संशय में रहे। हालाँकि, अंततः उन्हें भी यकीन हो गया कि न तो छल-कपट और न ही कल्पना इस घटना की व्याख्या के लिए पर्याप्त होगी। इस बीच, प्रदर्शन और भी अधिक भयावह होते गए और घर की ओर उत्सुकता से आकर्षित हुए हज़ारों लोगों के सामने जारी रहे, जिनमें लैंड-कैप्टन ज़ेलगर, पुलिस निदेशक जौन, न्यायालय के अध्यक्ष और अन्य प्रमुख लोग शामिल थे, जिनमें से कुछ ने सुझाव दिया कि घर की गहन जांच के लिए एक आयोग नियुक्त किया जाना चाहिए।

जांच करने के लिए तीन पुलिस प्रमुखों को नियुक्त किया गया। उन्होंने एम. जोलर और उनके परिवार को वापस बुलाने की मांग की और बिना किसी असामान्य बात के छह दिनों तक घर में रहे और इस आशय की एक रिपोर्ट तैयार की। जैसे ही जोलर परिवार घर में दाखिल हुआ, फिर से व्यवधान शुरू हो गए। एम.7 टोलर सभी के लिए उपहास का पात्र बन गया, यहां तक कि उसके राजनीतिक और व्यक्तिगत मित्र भी, और अंततः उसे अपने पैतृक घर को छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह निस्संदेह भूत-प्रेत के सबसे चौंकाने वाले मामलों में से एक है। यहाँ, जैसा कि लगभग हर उदाहरण में, बच्चे स्पष्ट रूप से और अंतरंग रूप से अभिव्यक्तियों से जुड़े हुए हैं।

यह एक माध्यम का उनका चुनाव है जिसने भूत-प्रेत पर सबसे अधिक संदेह किया है, और यह इस पर है कि श्री पोडमोर ने अपनी धारणा को आधार बनाया है कि भूत-प्रेत के सभी दर्शन "शरारती छोटी लड़कियों" की चालाक चालों से जुड़े हैं। उनका सुझाव है कि "माध्यम" को सावधानीपूर्वक नियंत्रण में रखने से यह अधिक संभावना है कि भूत-प्रेत शर्मीला हो जाएगा, और अपने पारंपरिक कार्यों को करने से इनकार कर देगा!

इस सिद्धांत के लिए बहुत कुछ कहा जा सकता है। आध्यात्मिक सत्र के माध्यम को अक्सर सबसे ऊंचे कथनों और साहित्यिक, संगीतमय और कलात्मक रचनाओं के निर्माण का श्रेय दिया जाता है। भूत-प्रेत मिट्टी के बर्तनों को तोड़ने, फर्नीचर को इधर-उधर फेंकने और ड्राइंग-रूम में कोयले और गाजर

को मूर्त रूप देने जैसी व्यर्थ हरकतों में लिप्त रहता है। यदि वे परिपक्व आत्माएं हैं, जैसा कि वे होने का दावा करते हैं, तो उन्हें रहस्य के ऐसे करतब क्यों करने चाहिए जो या तो किसी बच्चे के मूर्खतापूर्ण अहंकार या विक्षिप्त मन के चालाक आवेगों से प्रेरित प्रतीत होते हैं?

तब अक्सर माध्यम की ओर से एक अजीब सी हिचकिचाहट होती है, जैसा कि हेट्टी वेस्ले के मामले में, घटनाओं के दृष्टिकोण पर एक कांपना, और मिर्गी और अन्य दौरे जैसी शारीरिक गड़बड़ी की प्रवृत्ति। और कभी-कभी भूत-प्रेत कबूल करता है, जैसा कि स्टॉक वेल में नौकरानी ऐन ने किया था, तारों और घोड़े के बालों की सहायता से परेशान करने वाली घटनाओं में हेरफेर करने के लिए। लेकिन जोलर परिवार के मामले में, "शरारती छोटी लड़कियों" का सिद्धांत बचकाना रूप से अपर्याप्त है। यह विश्वास करना लगभग असंभव है कि बच्चे सैकड़ों लोगों के सामने अभिव्यक्तियाँ कर सकते हैं।

यह समझना और भी मुश्किल है कि बच्चे और अज्ञानी व्यक्ति, जिन्हें संभवतः पिछले उदाहरणों का कोई ज्ञान नहीं है, ठीक उसी घटना को कैसे पहचान सकते हैं जो हर युग और जलवायु के भूत-प्रेतों द्वारा उत्पन्न की गई है। और जोलर मामले में, कई दर्शकों के साक्ष्य हैं कि सबसे हिंसक उपद्रव तब देखे गए जब पूरा परिवार घर के बाहर इकट्ठा था और इस तरह अभिव्यक्तियों में सहायता करने की स्थिति में नहीं था, जिसमें सभी खिड़कियां, दरवाजे, अलमारी और दराज खोलना, "पतले भूरे बादल" का भौतिकीकरण, शोर और भूत-प्रेत शामिल थे। संक्षेप में, यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि रहस्य का एक तत्व है जिसे स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, और जिसे सबसे वैज्ञानिक और आलोचनात्मक दिमाग नहीं समझ सकते हैं।

281. पोलिनेशिया: पोलिनेशिया में जादू पुरोहितों और उच्च वर्गों का विशेषाधिकार है, हालांकि इन जातियों के अलावा अन्य लोग भी कम जादू-टोना करते हैं। यहाँ एक प्रचलित मान्यता है जिसे मन या अलौकिक शक्ति के रूप में जाना जाता है, जो कुछ व्यक्तियों में निवास करती है। इस शक्ति का उपयोग करने का तरीका दो गुना है। इनमें से एक इनियाई नामक समाज द्वारा प्रचलित है, जहाँ कुछ ऐसे अनुष्ठान किए जाते हैं जो जनजाति के दुश्मनों पर विपत्ति लाने वाले माने जाते हैं। जादू करने की क्षमता को अगागरा के रूप में जाना जाता है, और जादूगर या जादूगर को तेना अगागरा कहा जाता है।

यदि जादूगर किसी दूसरे व्यक्ति पर जादू करना चाहता है, तो वह आमतौर पर उस व्यक्ति द्वारा अपने मुंह से छुई गई किसी चीज को सुरक्षित करने की कोशिश करता है, और इससे बचने के लिए, स्थानीय लोग उन सभी

खाद्य-कचरे को नष्ट करने में सावधानी बरतते हैं, जिन्हें वे नहीं खाते हैं, और जब उन्हें कोई कट या खरोंच लगती है, तो वे खून की एक बूंद भी सावधानी से इकट्ठा करते हैं, और उसे जला देते हैं या समुद्र में फेंक देते हैं, ताकि जादूगर उसे प्राप्त न कर सके। जादूगर उस व्यक्ति से संबंधित कुछ प्राप्त करता है जिसे वह घायल करना चाहता है, उसे जहरीले पौधों की पत्तियों और बांस के नुकीले टुकड़ों के साथ एक गहरे गड्ढे में दबा देता है, और साथ ही उपयुक्त मंत्रों का जाप करता है।

यदि वह इनियल समाज का सदस्य होता है, तो वह पूरे के ऊपर अपना एक पवित्र पत्थर रख देता है, क्योंकि उनका मानना है कि जब तक पत्थर उस वस्तु को दबाता रहेगा, जिसे गड्ढे में दफनाया गया है, वह व्यक्ति बीमार रहेगा। तुरंत ही एक व्यक्ति गिर जाता है बीमार होने पर वह यह पता लगाने के लिए इधर-उधर भटकता है कि उसे किसने मोहित किया है, और हमेशा कोई न कोई ऐसा होता है जो इस नरम आरोप को स्वीकार करता है।

यदि वह जादू हटाने में सफल नहीं होता है तो वह लगभग निश्चित रूप से हार मान लेगा, लेकिन यदि वह इसे हटाने में सफल हो जाता है, तो वह लगभग तुरंत ठीक होने लगता है; और अजीब बात यह है कि वह उस व्यक्ति या व्यक्तियों के प्रति कोई दुश्मनी नहीं दिखाता है जिन्होंने उसे "मोहित" किया है, - वास्तव में इसे एक स्वाभाविक बात के रूप में लिया जाता है, और वह चुपचाप उस समय की प्रतीक्षा करता है जब वह प्रशंसा का बदला चुकाने में सक्षम होगा।
ये टिप्पणियाँ अधिकांशतः न्यू ब्रिटेन पर लागू होती हैं, और इसकी जादू की प्रणाली व्यावहारिक रूप से वैसी ही है जैसी कि फिजी में वाकाद्रौनीकौ के रूप में जानी जाती है जिसके बारे में बहुत कम जानकारी है। प्रसिद्ध अग्रणी मिशनरी और खोजकर्ता रेव्ह डॉ. जॉर्ज ब्राउन ने अपनी कृति मेलानेशियन और पोलिनेशियन में इन लोगों की जादुई प्रणालियों का एक दिलचस्प विवरण दिया है, जिसमें उन्होंने भाई मिशनरियों के कई सूचनात्मक पत्रों को शामिल किया है, जो उद्धृत करने योग्य हैं। उदाहरण के लिए, रेव. डब्ल्यू. ई. ब्रोमिलो कहते हैं कि दक्षिण-पूर्वी न्यू गिनी के डोबू में: वेराबाना (बुरी आत्माएँ) वे हैं जो अंधेरे स्थानों में निवास करती हैं, और रात में घूमती हैं, और चुड़ैलों को चारों ओर प्रहार करने की अपनी शक्ति देती हैं।

बटाऊ पुरुषों की जादूगरी है, जो अंधेरे स्थानों से क्रोधित आँखों से देखते हैं, और पुरुषों, महिलाओं और यहाँ तक कि बच्चों पर छोटे-छोटे पत्थर फेंकते हैं, पहले उन पर थूकते हैं, जिससे मृत्यु हो जाती है। एक पेड़ गिरता है, यह एक चुड़ैल है जिसने ऐसा किया है, भले ही पेड़ पूरी तरह से सड़ चुका हो, या हवा का एक झोंका उसे तोड़ सकता है। एक आदमी दुर्घटना का शिकार होता है, यह वेराबाना

है। वह औषधि-पुरुष के प्रभाव से ठीक हो रहा है, लेकिन फिर से बीमार हो जाता है; यह बटाऊ काम कर रहा है, जैसा कि हमने अपने कामगारों की भयभीत चीखों से पता लगाया है, जैसा कि किसी सोए हुए व्यक्ति ने भयानक सपने में पुकारा है।

इन औषधि-पुरुषों के पास भी बहुत शक्ति है, और कोई भी नहीं आश्चर्य होता है, जब हमारी किसी लड़की की आँख में थोड़ी धूल चली जाती है और डॉक्टर उसमें से एक बड़ा पत्थर निकालता है; और जब किसी सरदार को सीने में दर्द होता है और ओबाबा उसमें से दो इंच की कील निकालता है। "यहाँ के लोगों का मानना है कि सभी बुरी आत्माएँ स्त्री हैं। वेराबाना एक महान शब्द है, लेकिन यह शब्द चुड़ैलों पर भी लागू होता है, जिन्हें वेराबाना के बर्तन कहा जाता है, लेकिन ज़्यादातर एक ही शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

मेरे पास घाटियों और जंगलों में रहने वाली आत्माओं के नाम हैं, लेकिन वे सभी महिलाएँ हैं या महिलाओं में प्रवेश करती हैं, जिससे उन्हें भयानक शक्तियाँ मिलती हैं। जब भी कोई बीमार होता है, तो बीमारी का कारण वेरा-हाना ही होता है, और कोई भी बूढ़ी महिला जो बीमार व्यक्ति से दुश्मनी करती है, उसे बीमारी का कारण माना जाता है। दूसरे दिन एक बच्चा मर गया, और दोस्त बहुत नाराज़ हुए क्योंकि चुड़ैलों ने लोटू, यानी ईसाई धर्म तापरोरो के शब्दों पर ध्यान नहीं दिया था, और छोटों को मारना छोड़ दिया था। 'ये शांति के समय हैं,' उन्होंने कहा, 'तो फिर बच्चा क्यों मरेगा?'
हमने, बेशक, अवसर का लाभ उठाया और उन्हें सिखाने की कोशिश की कि बीमारी गरीब बूढ़ी महिलाओं के प्रभाव के बिना मौत का कारण बनी। "जादूगर बरौ हैं, ऐसे पुरुष जिनकी शक्तियाँ सभी चुड़ैलों की शक्तियों से भी अधिक भयानक हैं। मैं दूसरे दिन जो ओबाओबा-दवा-पुरुष से बात कर रहा था, और मैंने उससे पूछा कि एक आदमी की छाती से पत्थर निकालने से उसका इलाज क्यों नहीं हुआ। * ओह/ उसने कहा, * उसे बरौ ने मारा होगा: यह एक बहुत ही तार्किक कथन है।

ओबाओबा के द्वारा ठीक नहीं किए जा सकने वाले मामले बरौ के भयंकर प्रहार के अंतर्गत आते हैं, जिससे जादूगर के अपने मंत्रों के अलावा कोई बच नहीं सकता।" ड्रौ-नी-काऊ की फिजी जादू-टोना यहाँ दूसरे रूप में दिखाई देती है जिसे सुमना या बकवास कहा जाता है। जादूगर अपने शिकार के बाल, या त्वचा, या भोजन के बाद बचा हुआ भोजन का एक छोटा सा हिस्सा अपने कब्जे में ले लेता है, और उसे सावधानी से एक पार्सल में लपेटता है, जिसे वह यथासंभव दूर तक भेज देता है।

सुमन की रिपोर्ट उस व्यक्ति को बताई जानी चाहिए जिसे वह मारना चाहता है, और वह बेचारा बहुत डर जाता है और मर जाता है।" रेव. एस. बी. फेलो किरिविना (ट्रोबिएंड्स समूह) के लोगों की मान्यताओं का निम्नलिखित विवरण देते हैं: - "जादूगर, जो बहुत अधिक संख्या में हैं, को हवा और बारिश बनाने, बगीचों को या तो फलदार या बंजर बनाने और बीमारी पैदा करने की शक्ति का श्रेय दिया जाता है, जिससे मृत्यु हो जाती है।

उनके संचालन के तरीके बहुत हैं। महान सरदार, जो मुख्य जादूगर भी है, हर साल भरपूर फसल सुरक्षित करने का एकमात्र अधिकार दावा करता है। इस कार्य को लोगों द्वारा पारलौकिक महत्व का माना जाता है। "हमारे बड़े सरदार बुलिटारा एक दिन मुझसे पूछ रहे थे कि क्या मेरे पास ये रहस्यमयी शक्तियाँ हैं। जब मैंने उनसे कहा कि मैंने ऐसा कोई दावा नहीं किया है, तो उन्होंने कहा, 'तुम्हारे देश में हवा, बारिश और फसल कौन पैदा करता है?' मैंने उत्तर दिया, भगवान आह/ उन्होंने कहा, * यही है। भगवान आपके लिए यह काम करते हैं, और मैं अपने लोगों के लिए करता हूँ। भगवान और मैं बराबर हैं।

ई ने यह कथन बहुत ही शांति से और एक ऐसे व्यक्ति की तरह कहा जिसने सबसे संतोषजनक स्पष्टीकरण दिया हो। " लेकिन एक बड़ा डर जो हर मूल निवासी के जीवन को अंधकारमय कर देता है, वह है बोगाऊ का डर, जादूगर जिसके पास बीमारी और मौत का कारण बनने की शक्ति है, जो रात के अंधेरे में अपने बेखबर शिकार के घर में चोरी से घुस जाता है, और दरवाजे के पास एक खास पेड़ की कुछ पत्तियाँ रख देता है, जिसमें रहस्यमयी शक्ति होती है जिसे उसने अपनी दुष्ट कलाओं से उन्हें प्रदान किया है।

अगली सुबह घर से बाहर निकलते समय, वह अभिशप्त व्यक्ति अनजाने में घातक पत्तियों पर पैर रखता है और तुरन्त घातक बीमारी से ग्रसित हो जाता है। हर तरह की आंतरिक बीमारी इसी तंत्र के कारण होती है। बुलिटारा ने मुझे उसकी जादू-टोने की विधा बताई। वह अपने घर के गुप्त कोने में, रात के अंधेरे में, एक छोटी सी आग पर, एक विशेष खाना पकाने के बर्तन में, जिसमें कई सामग्रियाँ होती हैं, अपने काढ़े को उबालता है; और जब बर्तन उबल रहा होता है, तो वह उसमें एक मंत्र बोलता है जो केवल कुछ लोगों को ही पता है।

इसमें डूबा हुआ पत्तों का गुच्छा तुरंत उपयोग के लिए तैयार हो जाता है। दूसरे दिन गाँवों से गुजरते हुए, मैं एक महिला से मिला, जो स्पष्ट रूप से मध्यम आयु की थी, जो स्पष्ट रूप से एक दुर्बलता रोग से पीड़ित थी, वह बहुत पतली और घिसी हुई थी। मैंने पूछा कि क्या उसे कोई दर्द है, और उसके दोस्तों ने कहा नहीं /

फिर उन्होंने समझाया कि कोई बोगाऊ उसका खून चूस रहा था। मैंने पूछा, 'वह यह कैसे करता है? * ओह उन्होंने कहा, * यह तो केवल उसे ही पता है।

वह उसका खून पाने में कामयाब हो जाता है जिससे वह मजबूत हो जाता है, जबकि वह हर दिन कमज़ोर होती जाती है, और अगर वह ज़्यादा समय तक चलता है तो वह मर जाएगी/ _. "जन्म के समय विकृतियाँ, और गूंगा या अंधा पैदा होना, शरीर से अलग आत्माओं के बुरे प्रभाव के कारण होता है, जो तुमा नामक निचले क्षेत्र में निवास करती हैं। साल में एक बार पूर्वजों की आत्माएँ फसल कटने के बाद एक शरीर में अपने पैतृक गाँव आती हैं। इस समय पुरुष विशेष नृत्य करते हैं, लोग खुलेआम अपने कीमती सामान को मंचों पर फैलाते हैं, और आत्माओं के लिए बड़े-बड़े भोज आयोजित किए जाते हैं।

एक निश्चित रात को, जब नामरामा नामक चंद्रमा पूर्ण होता है, तो सभी लोग - पुरुष, महिलाएँ और बच्चे - एक साथ मिलकर ज़ोरदार जयकार करते हैं, और इस तरह आत्माओं को तुमा की ओर वापस भगा देते हैं। " एक अजीबोगरीब प्रथा है, जिसमें मृतक रिश्तेदार के शरीर के विभिन्न अंगों को ताबीज के रूप में पहना जाता है। एक विधवा अपने सीने पर, गले में रस्सी के टुकड़े से लटकी हुई, अपने दिवंगत पति का निचला जबड़ा पहनती है, पूरे दांत भयानक और भयावह दिखते हैं।

मृत्यु के तुरंत बाद हाथ और पैर की छोटी हड्डियाँ निकाल ली जाती हैं, और चम्मच बना दिए जाते हैं, जिनका उपयोग सुपारी खाते समय मुँह में चूना डालने के लिए किया जाता है। अभी इसी सप्ताह हमसे तीन मील दूर एक गाँव में एक मुखिया की मृत्यु हुई, और उपरोक्त उद्देश्य के लिए एक पैर और एक हाथ, कुछ रिश्तेदारों द्वारा अपने मृत मित्र के हिस्से के रूप में हमारे गाँव में लाया गया। 44 इस लोगों की भावुक प्रकृति का एक प्रमाण है आत्महत्या के प्रयासों में तुलनात्मक रूप से अधिक बार देखा गया है।

उनका तरीका एक ऊंचे पेड़ की सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ना और टखनों को एक साथ बांधने के बाद खुद को नीचे फेंकना है। पिछले बारह महीनों के दौरान हमारे घर के पास दो प्रयास सफल रहे और कई अन्य को रोका गया। कुछ मामलों में कारण मामूली थे। एक युवक ने अपने गुस्से को खुद पर हावी होने दिया क्योंकि उसकी पत्नी ने उसका एक छोटा सा तंबाकू पी लिया था; वह पेड़ से एक जड़ के टुकड़े पर गिर गया, जो जमीन से ऊपर था और उसकी गर्दन टूट गई। एक मध्यम आयु वर्ग की और निःसंतान महिला, जो ईर्ष्यालु हो गई थी, अपने घर के पास एक पेड़ पर चढ़ गई और गाँव में अपने भाई को "अलविदा" कहते हुए तुरंत खुद को नीचे फेंक दिया।

सिर के बल गिरने से वह कुछ घंटों में मर गई; खोपड़ी की मोटी त्वचा कट गई थी, लेकिन जहाँ तक मैं देख सकता था खोपड़ी नहीं टूटी थी। पॉलिनेशिया के कुछ छोटे जादुई रीति-रिवाज ध्यान देने योग्य हैं। ड्यूक ऑफ यॉर्क समूह के मूल निवासियों का मानना है कि जिस व्यक्ति को वे पकड़ना चाहते हैं, उसे लगातार पुकारने से वह उनकी पुकार से दूर से भी उनकी ओर खिंचा चला आएगा। समुद्र में रहने के दौरान मूल निवासी न तो खाते हैं और न ही पीते हैं। न्यू गिनी और फिजी में अपने किसी नजदीकी रिश्तेदार के शोक में उंगली का जोड़ काटने की प्रथा प्रचलित है, जैसा कि दक्षिण अफ्रीका के बुशमैन करते हैं। (मैगी, प्रागैतिहासिक देखें।) वे जलपरी, दुमदार पुरुषों और बौनों में दृढ़ता से विश्वास करते हैं; और इनके बारे में वे अपने कथनों में सबसे सकारात्मक हैं।

ड्यूक ऑफ यॉर्क समूह के मूल निवासियों ने वास्तव में एक मिशनरी को बताया कि उन्होंने एक जलपरी पकड़ी है, जिसने एक निश्चित मूल निवासी से विवाह किया है, और उस जोड़े के कई परिवार हैं; "लेकिन दुर्भाग्य से," इस कहानी के लेखक कहते हैं, "मैं उन्हें कभी नहीं देख पाया।" कई अन्य जातियों की तरह, पॉलिनेशियाई लोग भी ग्रहण के समय बहुत भयभीत हो जाते हैं और इस घटना के दौरान वे ढोल पीटते हैं, चिल्लाते हैं और अपने देवताओं का आह्वान करते हैं।

समोआ में जादू का अभ्यास अन्य मेलानेशियाई समूहों की तरह नहीं किया जाता है, हालाँकि जादूगर अभी भी मौजूद है। हालाँकि, वह बहुत अधिक परिष्कृत है और जिस व्यक्ति को वह मोहित करना चाहता है, उससे जुड़ी किसी भी छोटी सी वस्तु के लिए पूछने के बजाय, वह संपत्ति की माँग करता है, जैसे कि मूल्यवान चटाई और अन्य चीजें जो उसके काम की हों। उसका काम करने का तरीका अपने देवता से संवाद स्थापित करना था, जो जादूगर के शरीर में प्रवेश करता था, जो हिंसक रूप से विकृत और ऐंठने लगता था। तब इकट्ठे हुए मूल निवासियों को एक परदे के पीछे से एक आवाज़ सुनाई देती थी, शायद एक पेट की आवाज़, जो आह्वान किए गए देवता की उपस्थिति की पुष्टि करती थी।

आम तौर पर माना जाता था कि बीमारी किसी देवता के क्रोध के कारण होती है, जिसे पुजारी या जादूगर द्वारा छिपाया जा सकता था और विधिवत रूप से प्रसन्न किया जा सकता था। "भगवान" को हमेशा कुछ मूल्यवान उपहार चाहिए होता है, जैसे कि ज़मीन का एक टुकड़ा, डोंगी या कोई और संपत्ति, और अगर पुजारी को पता चलता है कि उस व्यक्ति की कोई विशेष रूप से मूल्यवान वस्तु है, जिसने खुद को जादू-टोना करने वाला माना है, तो वह शर्त रखता है कि उसे उसे दे दिया जाएगा। पुजारियों की इस जाति को तौला-ऐतु के नाम से जाना जाता है, और वे औषधि-पुरुष के रूप में भी काम करते हैं।

282.पॉलीफ्रलेक्स**:** यह अशुभ पत्थर का लगभग एकमात्र उदाहरण है। जिस किसी के सिर पर यह होता है, उसके सिर के बाल झड़ जाते हैं।

283.*पोंटलीया**:** लाल सितारों वाला नीला पत्थर, या खून जैसी बूंदें और रेखाएं। यह शैतान को सवालों के जवाब देने के लिए मजबूर करता है, और उसे उड़ान भरने के लिए मजबूर करता है।

284.खसखस के बीज**:** कभी-कभी जादूगरों द्वारा धुएँ से भविष्यवाणी की जाती थी। इस उद्देश्य के लिए कुछ चमेली या खसखस के बीज जलते हुए अंगारों पर फेंके जाते थे; अगर धुआँ हल्का सा ऊपर उठकर सीधे आकाश में चला जाता था, तो यह शुभ संकेत होता था; लेकिन अगर यह इधर-उधर लटकता रहता था, तो इसे अपशकुन माना जाता था।

285.मरणोपरांत पत्र**:** मानसिक विज्ञान के कई अन्वेषकों, मानसिक अनुसंधान सोसायटी के सदस्यों और अन्य लोगों ने सीलबंद पत्र छोड़े हैं, जिनकी विषय-वस्तु केवल लेखक को ही ज्ञात है। लेखक की मृत्यु पर, और पत्र को खोले जाने से पहले, एक माध्यम द्वारा विषय-वस्तु को प्रकट करने का प्रयास किया जाता है। इस माध्यम से यह आशा की जाती है कि आत्मा संचार की वास्तविकता या अन्यथा को सिद्ध किया जा सके, क्योंकि, केवल लेखक ही जानता है कि पत्र में क्या है, इसलिए यह माना जाता है कि उसकी मृत्यु पर यह ज्ञान केवल उसकी आत्मा के माध्यम से ही संप्रेषित किया जा सकता है। यह परिकल्पना निश्चित रूप से इस तथ्य को नजरअंदाज करती है कि जानकारी लेखक के जीवनकाल के दौरान एक जीवित व्यक्ति द्वारा टेलीपैथिक रूप से प्राप्त की जा सकती है, और इस प्रकार माध्यम तक पहुंचाई जा सकती है। हालाँकि, अभी तक, परिकल्पनाएँ समय से पहले हैं, क्योंकि इस तरह के किसी भी प्रयास को उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली है।

286.पूर्वाभास **:** भविष्य की घटना की एक प्रभावशाली चेतावनी। पूर्वाभास बेचैनी की अस्पष्ट भावनाओं से लेकर, आसन्न आपदा का संकेत देने वाले, वास्तविक मतिभ्रम तक हो सकते हैं, चाहे दृश्य हो या श्रवण। सपने पूर्वाभास के अक्सर वाहन होते हैं, चाहे प्रत्यक्ष या प्रतीकात्मक, और सत्य सपनों के अनगिनत उदाहरण हैं। ऐसे मामलों में यह कहना मुश्किल है कि चेतावनी किसी बाहरी स्रोत से आई हो सकती है, जैसा कि अध्यात्मवादी कहते हैं, या क्या पूर्वाभासित आपदा का परिणाम, कम से कम आंशिक रूप से, स्व-सुझाव से हुआ हो सकता है।

उत्तरार्द्ध स्पष्ट रूप से पूर्वाभास के दूसरे रूप की व्याख्या है - यानी, चुंबकीय या मध्यम ट्रान्स में रोगियों द्वारा उनकी बीमारियों के संबंध में की गई भविष्यवाणियां। चुंबकीय विषय जिसने भविष्यवाणी की थी कि उसकी बीमारी कई सप्ताह पहले एक निश्चित तिथि पर संकट तक पहुंच जाएगी, संभवतः उसने खुद ही अपनी भविष्यवाणी के पूरा होने के लिए अवचेतन रूप से भाग लिया था। क्या यही बात "सत्य" सपनों और मतिभ्रम में नहीं हो सकती? हम जानते हैं कि सम्मोहन के बाद के सुझाव का पालन करने वाला व्यक्ति अपने कार्य को आस-पास की परिस्थितियों में स्वाभाविक रूप से बुनता है, हालाँकि उसके प्रदर्शन का क्षण महीनों पहले तय हो सकता है।

यह कि स्वप्नदर्शी और मतिभ्रमित व्यक्ति भी अपने पूर्वाभासों का सुझाव दे सकते हैं और उन्हें पूरा कर सकते हैं, या तो सीधे या किसी अन्य एजेंट को सुझाव के टेलीपैथिक संचार के माध्यम से, यह बहुत दूर की कौड़ी या असंभव नहीं लगता। फिर, बेशक, संयोग है। यह असंभव है लेकिन सत्यापित पूर्वाभासों का एक निश्चित अनुपात संयोग का परिणाम होना चाहिए। संभवतः, ऐसे प्रभाव, चाहे वे अस्पष्ट पूर्वाभास ही क्यों न हों या सपनों में सन्निहित हों या अन्यथा, कभी-कभी मौजूदा तथ्यों की वास्तविक, यदि अस्पष्ट, धारणा से निकाले गए अवचेतन निष्कर्ष होने चाहिए।

इस प्रकार, वास्तव में, उन्हें हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। फिर भी बहुत बार पूर्वाभास होते हैं। पूरी तरह से निराधार साबित होते हैं, यहां तक कि सबसे प्रभावशाली भी, जहां चेतावनी पर एक भूतिया आगंतुक द्वारा जोर दिया जाता है।

287.प्रेत **(**मृत आत्मा**) :** हिंदू मानते हैं कि मृत्यु के बाद आत्मा जिस रूप में आती है। यह प्रेत मनुष्य के अंगूठे के आकार के शरीर में रहता है और मृतकों के न्यायाधीश यमु के संरक्षण में रहता है। प्रेत को दण्ड दिया जाता है, जिसका शरीर इस उद्देश्य के लिए बड़ा किया जाता है और दुःख सहने के लिए मजबूत किया जाता है। एक वर्ष के अंत में श्राद्ध करने से आत्मा को इस अवस्था से मुक्ति मिलती है और उसे पितरों के स्वर्ग में ले जाया जाता है, जहाँ उसे उसके अच्छे कर्मों का पुरस्कार मिलता है। इसके बाद, एक अलग शरीर में, आत्मा अपने अंतिम निवास में प्रवेश करती है। प्रेत अवस्था से बचने के लिए श्राद्ध करना अत्यंत आवश्यक है।

288.भविष्यवाणी**:** समाज की आरंभिक अवस्था में, पैगम्बर और जादूगर संभवतः एक ही थे, जैसा कि आदिम लोगों के बीच आज भी है। यह कहना

कठिन है कि पैगम्बर का पद अधिक धार्मिक है या जादुई। वह आमतौर पर पुजारी होता है, लेकिन भविष्य को देखने और उसके संकेतों को पढ़ने की क्षमता को शायद ही धार्मिक गुण कहा जा सकता है। कई उदाहरणों में भविष्यवाणी केवल परमानंद की स्थिति में कही गई बातें होती हैं।

हम जानते हैं कि प्राचीन ग्रीस के दैवज्ञों से जुड़ी अजगर स्त्रियाँ प्राकृतिक गैसों या दवाओं के प्रभाव में भविष्यवाणी के शब्द बोलती थीं; और जब वैद्य भविष्य में झाँकने का प्रयास करते हैं, तो वे आमतौर पर किसी ऐसी दवा को लेकर परमानंद की स्थिति में पहुँच जाते हैं, जिसके प्रभाव के बारे में उन्हें अच्छी तरह से पता होता है। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता था; जादूगर अक्सर भविष्य में क्या संकेत और सत्य हैं, यह जानने के लिए अपनी सहायता के लिए किसी आत्मा को बुलाता था; लेकिन इसे भविष्यवाणी नहीं कहा जा सकता।

न तो यह शब्द के सही अर्थ में भविष्यवाणी है, क्योंकि इसमें कृत्रिम सहायता का उपयोग किया जाता है, और यह केवल कुछ वस्तुओं की उपस्थिति से ही भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करने का दिखावा कर सकता है। हम अक्सर भविष्यवाणी को परमानंद की स्थिति से अलग पाते हैं, उदाहरण के लिए इज़राइल के भविष्यवक्ताओं के बीच, जिन्होंने भविष्य की राजनीतिक घटनाओं के शांत कथन के साथ खुद को बहुत हद तक व्यस्त रखा, या मध्य अमेरिका के माया भारतीयों के उन पुजारियों को जिन्हें चिलन बालम के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने वर्ष में निर्धारित अंतराल पर 'उनके सामने आने वाली अवधि के बारे में कुछ कथन किए।
तो क्या भविष्यवाणी को देवता का सीधा कथन माना जाना चाहिए, जो मनुष्य को अपना मुखपत्र मानता है, या ज्ञान के फव्वारे से प्रेरणा लेने वाले व्यक्ति का कथन? तकनीकी रूप से, दोनों ही भविष्यवाणी के बारे में सत्य हैं, क्योंकि हम शास्त्रों में यह कहते हुए पाते हैं कि जब देवता मनुष्य के साथ संवाद करना चाहते थे, तो उन्होंने कुछ व्यक्तियों को अपने मुखपत्र के रूप में चुना। फिर से व्यक्ति (अक्सर भगवान द्वारा चुने गए लोगों के समान) महत्वपूर्ण क्षणों में प्रेरणा के लिए देवता से आवेदन करते थे।

भविष्यवाणी तब व्यावहारिक रूप से अचेतन जादूगर या द्रष्टा के माध्यम से ईश्वर के कथन हो सकते हैं, या देवता से प्रेरणा प्राप्त करने के बाद उस व्यक्ति द्वारा प्रेरित कथन हो सकते हैं। प्राचीन असीरिया में भविष्यवक्ता वर्ग को नाबू कहा जाता था, जिसका अर्थ है "बुलाना" या "घोषणा करना", - यह नाम संभवतः भगवान, ना-बि-यू, वक्ता या भाग्य के उद्घोषक, जिस पर उन्होंने शिलालेख लिखे थे, से लिया गया है। प्राचीन इब्रानियों में भविष्यवक्ता को नाभिया कहा जाता था, जो संभवतः कनानियों से लिया गया एक उधार लिया गया शीर्षक था।

हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि हिब्रू नाभिम अपने भविष्यसूचक प्रणाली के लिए आसपास के लोगों के ऋणी थे, जो कि कनानियों की तुलना में बहुत अधिक उच्च प्रकार का प्रतीत होता है।

बाइबिल के समय में फिलिस्तीन में भविष्यवक्ताओं की भीड़ दिखाई देती थी, और हमें बताया जाता है कि बाल के चार सौ भविष्यवक्ता ईज़ेबेल की मेज पर बैठते थे। यह तथ्य कि वे इस देवता के भविष्यवक्ता थे, लगभग यह साबित करता है कि वे पुजारी भी थे। हम पाते हैं कि इस्राएल के सबसे प्रसिद्ध भविष्यवक्ता उस देश के उत्तरी भाग से थे, जो कनानियों के प्रभाव के अधीन था। बाद में, अलग-अलग भविष्यवक्ता समाजों का गठन किया गया, - जिनके अस्तित्व का मुख्य कारण राष्ट्रीयता का संरक्षण प्रतीत होता है; और इस वर्ग ने द्रष्टाओं और जादूगरों की पुरानी जातियों को अवशोषित कर लिया, और कुछ हद तक उनके पदों को अपने अधीन कर लिया।

बाद के कुछ भविष्यवक्ताओं, - उदाहरण के लिए मीका - ने इनमें से कुछ कम द्रष्टाओं को केवल भविष्यवक्ता माना, जो वास्तव में बाल के भविष्यवक्ताओं से अलग नहीं थे। आमोस के साथ भविष्यवाणी का एक नया स्कूल शुरू हुआ - ^ - विहित भविष्यवक्ता, जो लेखक और इतिहासकार भी थे, और जिन्होंने केवल पेशेवर भविष्यवक्ताओं के साथ सभी संबंधों से इनकार किया। हिब्रू फिलिस्तीन में आम धारणा यह थी कि याहवे या ईश्वर भविष्यवक्ताओं के सबसे करीबी संपर्क में थे और उन्हें बताए बिना वह कुछ भी नहीं करेंगे।

उनके कथनों को सबसे अधिक महत्व दिया जाता था, जिसने एक से अधिक बार राष्ट्र के भाग्य का निर्धारण किया। वास्तव में किसी भी राष्ट्र ने अपने भविष्यवक्ता वर्ग के कथनों पर इतना ध्यान नहीं दिया जितना कि पुराने समय के यहूदियों ने दिया था। प्राचीन ग्रीस में, भविष्यवक्ता वर्ग आम तौर पर दैवज्ञों से जुड़ा हुआ पाया जाता था और रोम में उनका प्रतिनिधित्व ऑगर्स द्वारा किया जाता था। मिस्र में मेम्फिस में रा के पुजारी भविष्यवक्ताओं के रूप में कार्य करते थे, जैसा कि, शायद, हेकट के लोगों ने किया था।

प्राचीन सेल्ट्स और ट्यूटन के बीच, भविष्यवाणी अक्सर होती थी, भविष्यवाणी करने वाला एजेंट आमतौर पर खुद को परमानंद में रखता था।भविष्यवाणी कला के द्रष्टा, और उनके कुछ कथन अभी भी तथाकथित मर्लिन की भविष्यवाणियों में विद्यमान हो सकते हैं। अमेरिका में, जैसा कि कहा गया है, भविष्यवाणी कथन व्यावहारिक रूप से यूरोप और एशिया में समान रूप लेते थे। उत्तरी अमेरिका के शुरुआती यात्री कैप्टन जोनाथन कार्वर ने एक अजीबोगरीब उदाहरण का हवाला दिया है, जहाँ एक निश्चित जनजाति के द्रष्टाओं ने कहा कि

अगले दिन एक निश्चित समय पर किसी अन्य जनजाति से सहायता भेजे जाने से अकाल समाप्त हो जाएगा। उनके द्वारा बताए गए ठीक उसी क्षण एक डोंगी राहत की खबर लेकर एक हेडलैंड के चारों ओर घूमी।

कुछ साल पहले अटलांटिक मंथली में मैदानी जनजातियों के एक यात्री ने एक अजीब कहानी सुनाई थी, जिसने कहा था कि एक भारतीय वैद्य ने उनके और उनके साथियों के उनके जनजाति में आने से दो दिन पहले उनके आने की भविष्यवाणी की थी।

289.मानसिक : एक संवेदनशील, मानसिक प्रभावों के प्रति संवेदनशील व्यक्ति। मानसिक व्यक्ति जरूरी नहीं कि एक माध्यम हो, जब तक कि वह अशरीरी आत्माओं द्वारा नियंत्रित होने के लिए पर्याप्त रूप से संवेदनशील न हो। मानसिक शब्द में सोमनाम्बुल, चुंबकीय या सम्मोहन विषय, कोई भी व्यक्ति शामिल है जो किसी भी हद तक संवेदनशील है। एक दृष्टिकोण के अनुसार, सभी लोग कुछ हद तक आध्यात्मिक प्रभावों के प्रति संवेदनशील होते हैं, और उस हद तक मानसिक व्यक्ति के नाम के हकदार हैं।

290.मानसिक शरीर: एक आध्यात्मिक शब्द जो विभिन्न रूप से एक अगोचर शरीर पर लागू होता है जो "महान विघटन" पर आत्मा को ढंकता है, या आत्मा को ही। सार्जेंट कॉक्स ने अपने मैकेनिज्म ऑफ मैन में घोषणा की है कि आत्मा - मन या बुद्धि से बिल्कुल अलग, जो केवल मस्तिष्क का एक कार्य है - क्षीण पदार्थ से बनी है, और इसका भौतिक शरीर के समान ही रूप है, जो हर हिस्से में व्याप्त है। आत्मा से मानसिक शक्ति निकलती है, जिसके माध्यम से आध्यात्मिकता के सभी चमत्कार किए जाते हैं। इसकी एजेंसी के माध्यम से मनुष्य दूरदर्शी और दिव्य शक्तियों से संपन्न हो जाता है, और इसकी सहायता से वह गुरुत्वाकर्षण जैसी प्राकृतिक शक्तियों को प्रभावित कर सकता है। शरीर से मुक्त होने पर आत्मा बिजली की गति से यात्रा कर सकती है, न ही पत्थर की दीवारों या बंद दरवाजों जैसी भौतिक वस्तुओं से उसे कोई बाधा होती है। मानसिक शरीर को भौतिक शरीर और आत्मा के बीच मध्यस्थ के रूप में भी माना जाता है, एक प्रकार का आवरण, जो आत्मा से भी अधिक भौतिक होता है, जो मृत्यु के समय उसे घेरे रहता है।

यह आवरण, मानसिक शरीर या तंत्रिका तंत्र है, जो अन्य और उससे भी अधिक भौतिक कणों को अपनी ओर आकर्षित करके भौतिकीकरण के समय दिखाई देता है। समय के साथ मानसिक शरीर भी भौतिक शरीर की तरह ही क्षय हो जाता है और आत्मा को मुक्त छोड़ देता है। समाधि के दौरान आत्मा शरीर को छोड़ देती है, लेकिन मानसिक शरीर द्वारा महत्वपूर्ण कार्य जारी रहते हैं।

291.मानसिक शोध: तथाकथित "अलौकिक" से जुड़ी अस्पष्ट घटनाओं की सभी वैज्ञानिक जांच को शामिल करने वाला एक शब्द, जो उनके स्पष्टीकरण के उद्देश्य से किया जाता है। इनमें से कुछ घटनाएं पूरी दुनिया में जानी जाती हैं, और प्रागैतिहासिक काल से ही लगभग अपरिवर्तित बनी हुई हैं। ऐसी ही घटनाएं हैं लेविटेटियोआ, अग्नि-परीक्षा, क्रिस्टल-गज़िंग, विचार पढ़ना और प्रेत, और जब भी ये सामने आए, तो शायद ही कभी किसी मानसिक शोधकर्ता की आलोचनात्मक जांच की कमी रही हो, जो लोकप्रिय विश्वास के ज्वार में बहकर नहीं आया हो, बल्कि अभिव्यक्तियों की निष्पक्ष जांच के लिए अपने कुछ निर्णय को सुरक्षित रखता हो।
इस प्रकार गॉल ने अपने चुनिंदा विवेक के मामलों में चुड़ैलों और जादू टोना को छूते हुए (लंदन, 1646) कहा: "लेकिन अधिक विलक्षण या आश्चर्यजनक (चुड़ैलों के बयानों में वर्णित करतबों में से) केवल शैतान द्वारा किए जाते हैं]; चुड़ैल हर समय या तो एक मग्न परमानंद, एक मंत्रमुग्ध नींद, या एक उदास सपने में होती है; और चुड़ैलों की कल्पना, कल्पना, सामान्य ज्ञान, केवल अब जो किया जाता है, उससे भ्रमित होती है, या दिखावा करती है।" और उसी अवधि के कुछ अन्य लेखक इसी तरह के निष्कर्ष पर पहुंचे।

मध्ययुगीन अभिलेखों का उद्देश्य देखी गई घटनाओं की वास्तविकता की पुष्टि करना था, लेकिन यहाँ-वहाँ, यहाँ तक कि उन दिनों में भी, ऐसे संशयवादी थे जो उनमें कोई अलौकिक महत्व देखने से इनकार करते थे। पोल्टरजिस्ट गड़बड़ियाँ, फिर से, ध्यान और जाँच के बड़े हिस्से के लिए आईं, जिसके लिए, वास्तव में, वे खुद को उधार देने लगे। टेडवर्थ के ड्रमर के मामले की जाँच जोसेफ़ ग्लेनविल ने की थी, और उसके परिणाम उनके सद्दुसीसिमस ट्रायम्फेटस में दिए गए थे, जो 1668 में प्रकाशित हुआ था।

एपवर्थ केस, जो जॉन वेस्ले के पिता के घर में हुआ था, ने कई टिप्पणियाँ कीं, जैसा कि कॉक लेन घोस्ट, स्टॉकवेल पोल्टरजिस्ट और कई अन्य ने भी किया। * एनिमल मैग्नेटिस्ट और उनके उत्तराधिकारी मेस्मेरिस्ट, एक तरह से, मानसिक शोधकर्ता माने जा सकते हैं, क्योंकि सम्मोहन के ये रूप उन घटनाओं की लंबी जाँच के फल थे जो निस्संदेह ट्रान्स अवस्था के संबंध में मौजूद थीं।

यदि उनकी अटकलें बेबुनियाद थीं और उनकी जांच मामले की सच्चाई को उजागर करने में विफल रही, तो वैज्ञानिक प्रगति के उस चरण में, यह स्वाभाविक ही था कि वे ऐसा ही हों। और यहाँ-वहाँ पैरासेल्सस और मेसमर के लेखन में भी हम पाते हैं कि उन्हें वैज्ञानिक सत्यों की झलकियाँ मिली थीं जो

उनके युग से आगे थीं, वैज्ञानिक खोजों की पूर्वसूचनाएँ जो भविष्य की पीढ़ियों की जीत साबित करने वाली थीं। उदाहरण के लिए, पूर्व ने अपने लेखन में कहा है: 'इच्छा की जादुई शक्ति से, समुद्र के इस तरफ का व्यक्ति दूसरी तरफ के व्यक्ति को यह सुना सकता है कि इस तरफ क्या कहा जा रहा है।

एक आदमी का ईथर शरीर जान सकता है कि 100 मील या उससे अधिक की दूरी पर दूसरा आदमी क्या सोच रहा है।' यह असामान्य रूप से टेलीपैथी की प्रत्याशा की तरह पढ़ता है, जिसने हाल के वर्षों में इतनी उल्लेखनीय प्रमुखता प्राप्त की है, हालांकि अब इसे आम तौर पर "आदमी के ईथर शरीर" के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है। ऐसी चीजें कई मंत्रमुग्ध करने वालों और पुराने रहस्यवादियों को "आध्यात्मिक शोधकर्ताओं" के पदनाम का हकदार बनाती हैं।

जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता गया और व्यवस्थित तरीके इस्तेमाल में आए, ये जांच और भी अधिक खोजपूर्ण और निश्चित परिणामों में अधिक फलदायी होती गईं। 1848 में आधुनिक अध्यात्मवाद की शुरूआत ने निस्संदेह मानसिक अनुसंधान को एक उल्लेखनीय प्रोत्साहन दिया। आंदोलन इतना व्यापक था, इसके प्रभाव इतने स्पष्ट थे, कि यह अपरिहार्य था कि विज्ञान के किसी व्यक्ति को इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

कथित घटनाओं की जांच। इस प्रकार हम पाते हैं कि कार्पेंटर, फैराडे और डू मॉर्गन तथा महाद्वीप पर काउंट डी गैसपेरिन, एम. थ्यूरी और जेडलनर अध्यात्मवाद की जांच में लगे हुए थे। सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तिगत जांचकर्ताओं में से एक निस्संदेह सर विलियम क्रुक्स थे, जिन्होंने सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च की स्थापना से पहले कुछ समय तक स्वतंत्र रूप से काम किया था। हालाँकि, "साइकिक साइंस" के स्वतंत्र छात्रों द्वारा, जैसा कि इसे कहा जाने लगा, और डायलेक्टिकल सोसाइटी (q.v.) और साइकोलॉजिकल सोसाइटी जैसी सोसाइटियों द्वारा बहुत अच्छा काम किया गया था, लेकिन 1882 तक उन अस्पष्ट समस्याओं को स्पष्ट करने के लिए एक ठोस और सावधानीपूर्वक संगठित प्रयास नहीं किया गया था, जिन्होंने इतने लंबे समय तक विद्वानों और सरल लोगों की बुद्धि को उलझाए रखा था।

उस वर्ष सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च की स्थापना की गई थी, जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक और निष्पक्ष भावना से अलौकिक के क्षेत्र की जांच करना था। सोसायटी के मूल प्रॉस्पेक्टस से निम्नलिखित अंश, जिसे श्री पोडमोर ने अपने नेचुरलाइजेशन ऑफ द सुपरनैचुरल में उद्धृत किया है, पर्याप्त स्पष्टता के साथ इसके उद्देश्य और प्रस्तावित तरीकों को इंगित करता है।

यह व्यापक रूप से महसूस किया गया है कि वर्तमान समय एक संगठित और व्यवस्थित प्रयास करने का एक उपयुक्त समय है, जो विवादास्पद घटनाओं के उस बड़े समूह की जांच करने के लिए है, जिसे मेस्मेरिक, साइकिकल और स्पिरिचुअलिस्टिक जैसे शब्दों से नामित किया गया है। " कई सक्षम गवाहों की दर्ज गवाही से, अतीत और वर्तमान, जिसमें हाल ही में किए गए अवलोकन शामिल हैं.कुल मिलाकर, भले ही मानसिक शोध आत्मा की अमरता या जीवित और मृत के बीच संचार की संभावना जैसे मामलों को प्रदर्शित करने में सफल नहीं हुआ हो।

लेकिन इसने मनोविज्ञान और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र को व्यापक बनाने और सुझाव के उस सिद्धांत को प्रवेश दिलाने में अच्छा काम किया है जिसे बर्ट्रेंड और ब्रैड के समय से चिकित्सा पेशे द्वारा कभी भी खुले तौर पर स्वीकार नहीं किया गया था। जादू-टोना, चुंबकत्व, जादू-टोना, भूत-प्रेत और इसी तरह के विषयों में शामिल कई अस्पष्ट घटनाओं को आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के अनुरूप लाया गया है। मानसिक शोध के लिए सोसायटी की स्थापना के बाद से तीस साल से थोड़ा अधिक समय बीत चुका है, और संभवतः आने वाले समय में यह मानसिक घटनाओं के संबंध में प्रयोग और जांच करने और "अलौकिक" के साथ अपने व्यवहार में वैज्ञानिक तरीकों और विचारों की आदतों के उपयोग में जनता को शिक्षित करने में और भी अधिक हासिल करेगा।

291.साइकोग्राफ**:** स्वचालित लेखन की सुविधा के लिए एक उपकरण।
यह एक घूमने वाली डिस्क से बना होता है, जिस पर माध्यम की उँगलियाँ रखी जाती हैं, इस प्रकार वर्णमाला के ऊपर एक तर्जनी होती है। प्रोफेसर हरे ने अपने आध्यात्मिक प्रयोगों में इसी तरह की युक्ति का इस्तेमाल किया था।

292.मनोविज्ञान **:** मानव संपर्क के बिना रचित लेखन, तथा माना जाता है कि यह आत्माओं का कार्य है।

293.मनोविद्या **:** आत्माओं द्वारा भविष्यवाणी या मृतकों को बुलाने की कला।

294.साइकोमेट्री**:** अध्यात्मवादियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द, जो माध्यमों में आम माना जाता है, हाथ में छोटी वस्तुओं, जैसे कि घड़ी या अंगूठी, जो उनके पास होती है, को पकड़कर लोगों के चरित्र, परिवेश आदि को पढ़ने की क्षमता को दर्शाता है। साइकोमेट्रिक क्षमता की खोज करने का गौरव डॉ. जे. आर. बुकानन को है, जिन्होंने इसे विज्ञानों में वर्गीकृत किया और इसे यह नाम दिया। उनका सिद्धांत इस विश्वास पर आधारित है कि हर चीज जो कभी

अस्तित्व में रही है, हर वस्तु, दृश्य, घटना, जो दुनिया की शुरुआत से हुई है, उसने ईथर या सूक्ष्म प्रकाश पर अपने अस्तित्व का एक निशान छोड़ा है, जो दुनिया के बने रहने तक अमिट है;

और न केवल ईथर पर, बल्कि अधिक स्पर्शनीय वस्तुओं, पेड़ों और पत्थरों और सभी तरह की चीजों पर भी। ध्वनियाँ और सुगंध भी अपने आस-पास की चीज़ों पर छाप छोड़ती हैं। जिस तरह एक तस्वीर प्लेट पर खींची जा सकती है और जब तक उसे विकसित नहीं किया जाता है, तब तक अदृश्य रहती है, उसी तरह वे साइकोमेट्रिक "फोटोग्राफ" तब तक अदृश्य रहते हैं जब तक कि उन्हें विकसित करने की प्रक्रिया लागू नहीं की जाती है। और जो उन्हें प्रकाश में लाता है वह है - माध्यम का दिमाग।

सभी माध्यमों में साइकोमेट्रिक क्षमता अधिक या कम मात्रा में पाई जाती है। एक विशेषज्ञ, प्रोफेसर विलियम डेंटन ने घोषणा की है कि उन्होंने इसे हर दस में से एक पुरुष और दस में से चार महिलाओं में पाया। डॉ. बुकानन ने अपने छात्रों के साथ अपने शुरुआती प्रयोगों में दिखाया कि उनमें से कुछ केवल अपने हाथों में उन्हें पकड़कर विभिन्न धातुओं को पहचानने में सक्षम थे। जब उनके हाथों में चिकित्सा पदार्थ रखे गए तो उन्होंने ऐसे लक्षण प्रदर्शित किए जो शायद तब हो सकते थे जब पदार्थों को निगल लिया गया हो। बाद में उन्होंने पाया कि उनमें से कुछ केवल हाथ पकड़कर ही रोगी की बीमारी का निदान कर सकते थे।

उनके परिचित कई लोग, उनके माथे पर एक पत्र को दबाते ही, लेखक के चरित्र और परिवेश, जिन परिस्थितियों में पत्र लिखा गया था और अन्य विवरण बता सकते थे। जीवाश्म हड्डियों और दांतों के बारे में कुछ बहुत ही रोचक कहानियाँ बताई जाती हैं जो संवेदनशील लोगों को बताती हैं कि वे अपने प्रागैतिहासिक परिवेश के बीच किस जानवर का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रोफेसर डेंटन ने अपनी पत्नी और सास को उल्कापिंड के टुकड़े और अन्य पदार्थ दिए, जिन्हें कागज़ में लपेटा गया और टेलीपैथी की संभावना को रोकने के लिए अच्छी तरह मिलाया गया, जिससे उन्हें उपयुक्त चित्र दिखाई दिए। कई माध्यम जिन्होंने तब से साइहोमेट्री का अभ्यास किया है, अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गए हैं। जैसा कि कहा गया है, यह तरीका हाथ में पकड़ना या माथे पर कोई छोटी वस्तु रखना है, जैसे कि कपड़े का टुकड़ा, एक पत्र, या एक घड़ी, जब उपयुक्त दृश्य दिखाई देते हैं।

मनोचिकित्सक मंत्रमुग्ध हो सकते हैं, लेकिन आम तौर पर वे ऐसी स्थिति में होते हैं जो सामान्य से बहुत अलग नहीं होती है। साइकोमेट्रिक चित्र, जो संभवतः

साइकोमेट्रिक किए जाने वाले लेख पर मुद्रित किए गए हैं, की तुलना स्मृति में संजोए गए चित्रों से की गई है, जो प्रतीत होता है कि फीके हैं, फिर भी सही वसंत को छूने पर जीवंतता में आने के लिए तैयार हैं। हम यह भी मान सकते हैं कि भूतिया घरों में अक्सर देखी जाने वाली बीती हुई त्रासदियों का पूर्वाभ्यास वास्तव में एक साइकोमेट्रिक चित्र है, जिसने मूल घटना पर कमरे पर अपनी छाप छोड़ी। यही बात उन ध्वनियों और सुगंधों के बारे में भी कही जा सकती है जो कुछ घरों में भूतिया हैं।

295.राहु**:** जिनके नाम का अर्थ है 'पीड़ा देने वाला', हिंदू शैतानों में से एक है। उन्हें बुरी आत्माओं के हमलों को रोकने के साधन के रूप में पूजा जाता है; और वे वास्तव में शैतानी चरित्र के प्रतीत होते हैं।

296.राक्षस **:** एक भारतीय राक्षस। भारतीय लोक कथाओं में से एक में वह कालिख की तरह काला दिखाई देता है, उसके बाल बिजली की तरह पीले हैं, वह गरजने वाले बादल की तरह दिखता है। उसने अपने लिए अंतड़ियों की एक माला बना रखी थी; उसने बालों की एक बलि की रस्सी पहनी हुई थी; वह एक आदमी के सिर का मांस कुतर रहा था और खोपड़ी से खून पी रहा था। एक अन्य कहानी में इन ब्रह्म राक्षसों के पास भयानक दाँत, ज्वलंत बाल और अतृप्त भूख होती है। वे जंगलों में घूमते हैं और जानवरों को पकड़ते हैं और उन्हें खाते हैं।

श्री कैम्पबेल एक मराठा किंवदंती बताते हैं कि एक गुरु एक छात्र को व्याकरण सिखाने के लिए ब्रह्मपुरुष बन गया। उसने बनारस में एक घर में भूत-प्रेत का वास किया और छात्र उससे सबक लेने गया। उसने उसे एक साल में पूरा विज्ञान सिखाने का वादा किया, इस शर्त पर कि वह कभी घर से बाहर न जाए। एक दिन लड़का बाहर गया और उसे पता चला कि घर में भूत-प्रेत का वास है और उसे एक भूत पढ़ा रहा है। लड़का वापस लौटा और गुरु ने उसे आदेश दिया कि वह उसकी अस्थियों को गया ले जाए और उसकी आत्मा की मुक्ति के लिए आवश्यक अनुष्ठान करे। उसने ऐसा किया और विद्वान व्यक्ति की बेचैन आत्मा शांत हो गई।

297.रैंडोल्फ**,** पी**.**बी**. :** (आध्यात्मिकता देखें।) राफेल, देवदूत : हनोक की भविष्यवाणी में कहा गया है कि : "राफेल मनुष्यों की आत्माओं पर शासन करता है।" देवदूत पदानुक्रम की यहूदी रब्बी कथा में राफेल वह माध्यम है जिसके माध्यम से त्से बाओथ या सेनाओं के प्रभु की शक्ति सूर्य के क्षेत्र में प्रवेश करती है, जिससे उसे गति, गर्मी और चमक मिलती है।

298.रैपिंग: आधुनिक आध्यात्मिक आंदोलन की शुरुआत से पहले भी, खट-पट या टैपिंग की घटनाएँ हमेशा भूत-प्रेत की गड़बड़ियों के साथ होती रही हैं। इस प्रकार उन्हें "ड्रमर ऑफ़ टेडवर्थ एम (q.v.), "कॉक लेन घोस्ट/' और इस तरह की अन्य गड़बड़ियों के मामले में देखा गया, और साथ ही प्रीवॉर्स्ट की सीरेस (q.v.) जैसी विभिन्न सोमनाम्ब्यूल्स की उपस्थिति में भी। "रोचेस्टर रैपिंग" के साथ - 1848 में हाइडेसविले में प्रसिद्ध प्रकोप, जिसे सीधे आधुनिक आध्यात्मिकता की शुरुआत माना जा सकता है - इस घटना ने एक नया महत्व प्राप्त किया, तेजी से महामारी में बदल गया, आंदोलन के शुरुआती चरणों में आत्माओं के साथ संचार का मुख्य तरीका बना रहा।

हालाँकि बाद में इसे कुछ हद तक अधिक विस्तृत और जटिल घटनाओं द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था, यह जारी रहा, और अभी भी, सेंस-रूम की अभिव्यक्तियों के बीच कुछ महत्व का स्थान रखता है। गवाहों द्वारा दिए गए विवरण से यह स्पष्ट है कि रैप की गुणवत्ता और तीव्रता दोनों में काफी भिन्नता थी, कभी-कभी यह धीमी धमाकों के रूप में, कभी-कभी बिजली की चिंगारी जैसी स्पष्ट आवाज़ के रूप में और फिर गहरे, कंपन वाले स्वरों के रूप में दिखाई देती थी। निस्संदेह जिस तरीके से उन्हें बनाया जाता है, वह भी काफी हद तक भिन्न होता है।

वास्तव में, यह दिखाया गया है कि रैप टखने के जोड़ों, घुटने के जोड़ों, कंधों और अन्य जोड़ों द्वारा बनाया जा सकता है, एक व्यक्ति - रेव। एह नोयस - ने सत्रह अलग-अलग तरीकों की खोज करने का दावा किया है। रिकॉर्ड पर ऐसे उदाहरण भी हैं जहाँ विशेष रूप से निर्मित "मध्यम" तालिकाएँ अभिव्यक्तियों के लिए जिम्मेदार थीं। स्पष्ट रूप से आध्यात्मिक व्याख्या और धोखाधड़ी के स्पष्ट रूप से संदेहास्पद स्पष्टीकरण के अलावा, अन्य वैज्ञानिक या छद्म वैज्ञानिक सिद्धांत भी सामने आए हैं, जैसे बिजली, ओडाइल, एक्टेनिक बल या चुंबकत्व।

299.लाल टोपी: आयरलैंड की चुड़ैलें अपने बैठक स्थल पर हवा में उड़ने से पहले एक जादुई लाल टोपी पहनती थीं।

300.रॉड मैन : तूफानों का दानव। माना जाता है कि जब कोई लापरवाह यात्री उसके एकांत में घुसता है तो वह क्रोधित हो जाता है और हवाओं और तूफानों में अपना गुस्सा दिखाता है। फ्रांसीसी किसानों का मानना था कि एक रहस्यमय छोटा लाल आदमी नेपोलियन के सामने आने वाली मुसीबतों की सूचना देने के लिए प्रकट होता है।

301.रॉड पीटीजीएल: पहले यह माना जाता था कि आयरिश चुड़ैलें भूसे या घास के टुकड़ों को लाल सूअरों में बदल सकती हैं, जिन्हें वे बाज़ार में बेचती हैं। लेकिन जब सूअरों को खरीदारों द्वारा घर की ओर खदेड़ा जाता था, तो वे बहते पानी को पार करते हुए अपने मूल आकार में आ जाते थे।

302.पुनर्जन्म थियोसोफी सिद्धांत : का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है, और, जबकि इसे आम तौर पर जीवन के उत्तराधिकार के रूप में माना जाता है, इसे देखने का उचित पहलू एक एकल, अविभाज्य जीवन के रूप में है, जिसमें शरीर में विभिन्न अभिव्यक्तियाँ पूरे के केवल छोटे हिस्से हैं। मोनाड, दिव्य चिंगारी, अहंकार - जिसका व्यक्तित्व पुनर्जन्म के पूरे पाठ्यक्रम में एक जैसा रहता है - वास्तव में तीन उच्चतर दुनियाओं, आध्यात्मिक, अंतर्ज्ञान और उच्च मानसिक का निवासी है, लेकिन इसके विकास और इसके अनुभव और ज्ञान के विस्तार को आगे बढ़ाने के लिए, यह आवश्यक है कि यह सघन पदार्थ की दुनियाओं, निम्न मानसिक, वास्तविक और श्वसिकल में उतरे, और अपने साथ उच्चतर दुनियाओं में जो कुछ भी सीखा है उसे वापस ले जाए।

चूँकि एक अभिव्यक्ति के दौरान बहुत आगे बढ़ना असंभव है, इसलिए इसे बार-बार निम्नतर दुनियाओं में लौटना होगा। पुनर्जन्म के पीछे जो सिद्धांत है, वह शाश्वत पुरस्कार और शाश्वत दंड के सिद्धांत से पूरी तरह अलग है, जो ईसाई धर्म की शिक्षाओं के पीछे है। प्रत्येक व्यक्ति अंततः पूर्णता प्राप्त करेगा, हालांकि कुछ को ऐसा करने में दूसरों की तुलना में अधिक समय लगता है। उसकी प्रगति के नियम, पुनर्जन्म को नियंत्रित करने वाले नियम, विकास और कर्म के हैं। विकास (q.v.) यह तय करता है कि सभी को पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए और अपनी अव्यक्त शक्तियों और गुणों को अधिकतम विकसित करके, और निचले लोकों में प्रत्येक अभिव्यक्ति लक्ष्य के करीब एक छोटी यात्रा है।

जो लोग इस नियम को समझते हैं वे अपने प्रयासों से यात्रा को छोटा कर देते हैं जबकि जो इसे नहीं समझते हैं और इस प्रकार इसके कार्य में सहायता करते हैं, वे निश्चित रूप से यात्रा को लंबा कर देते हैं। कर्म (q.v.) यह तय करता है कि अच्छे या बुरे प्रभाव, उसी का अनुसरण करते हैं जो उनका कारण था। इसलिए, एक व्यक्ति ने एक अभिव्यक्ति में जो किया है, उसे दूसरे में लाभ या पीड़ा अवश्य होगी। यह असंभव हो सकता है कि उसके कार्य तुरंत प्रभावी हों, लेकिन प्रत्येक संग्रहीत है और जल्दी या बाद में फल देगा।

यह पूछा जा सकता है कि अनेक अभिव्यक्तियों के बजाय निम्न लोकों में एक लम्बा जीवन कैसे पर्याप्त हो सकता है, लेकिन यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि सघन पदार्थ जो इन शरीरों का वाहन है, प्रगति के एक समय के बाद,

विकासशील मोनैड की आवश्यकताओं के अनुरूप आगे परिवर्तन करने में असमर्थ हो जाता है और तदनुसार उसे एक नए शरीर के लिए अलग रखना पड़ता है। शारीरिक मृत्यु के बाद, मनुष्य पहले सूक्ष्म जगत में जाता है, फिर मानसिक जगत के स्वर्गीय भाग में, और इस परवर्ती जगत में उसका अधिकांश समय व्यतीत होता है, सिवाय इसके कि जब वह और भी उच्चतर क्षेत्र में जाने की तैयारी में अपने आगे के विकास के लिए ताजा अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने के लिए सघन लोकों में उतरता है।

स्वर्गीय जगत में ये अनुभव और यह ज्ञान उसके स्वभाव की बनावट में एक साथ बुने हुए हैं। जो लोग विकास की यात्रा पर बहुत आगे नहीं बढ़े हैं, उनमें निम्न लोकों में अभिव्यक्तियाँ तुलनात्मक रूप से अधिक बार होती हैं, लेकिन समय और विकास के साथ, ये अभिव्यक्तियाँ दुर्लभ हो जाती हैं और स्वर्ग लोक में अधिक समय व्यतीत होता है, जब तक कि अंततः पुनर्जन्म की महान प्रक्रिया समाप्त नहीं हो जाती और तीर्थयात्री पूर्णता की ओर ले जाने वाले मार्ग में प्रवेश नहीं कर लेते। (थियोसॉफ़ी, द पाथ और विभिन्न लोकों पर लेख देखें।)

303.रेसेल्थ हजाललम **:** यहूदी रब्बीनिक किंवदंती में स्वर्गदूतों के पदानुक्रमों की सेवा करने वाली आत्मा का नाम। इस स्वर्गदूत के लिए, दिव्यता का शुद्ध और सरल सार हजोथ हकाकोस के माध्यम से बहता है; वह प्राइमम मोबाइल का मार्गदर्शन करता है, और सभी को जीवन का उपहार देता है।

304.ब्लनाल्डो देस ट्रोल्स ईहेल्स**:** चार्ल्स IX के शासनकाल का एक बहुत ही खूंखार फ्रांसीसी जादूगर, जिसने अपने वध के समय राजा के सामने दावा किया था कि फ्रांस में उसके एक लाख से अधिक सहयोगी हैं, जिन्हें वे इस तरह आग के हवाले नहीं कर सकते थे - जिसका अर्थ निस्संदेह सब्बाथ के राक्षस थे।

305.रोचेस्टर रैपिंग्स**:** 1848 में न्यूयॉर्क के रोचेस्टर के पास हाइडेसविले में रैपिंग्स की शुरुआत हुई, जिसे रोचेस्टर रैपिंग्स के नाम से जाना जाता है, यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, इसलिए नहीं कि यह किसी अन्य भूत-प्रेत की गड़बड़ी से स्वाभाविक रूप से श्रेष्ठ है, बल्कि इसलिए कि इसने आधुनिक अध्यात्मवाद के आंदोलन की शुरुआत की। हाइडेसविले, अर्काडिया, वेन काउंटी, न्यूयॉर्क में एक छोटा सा गाँव है, और वहाँ, 1848 में, जॉन डी. फॉक्स अपनी पत्नी और दो छोटी बेटियों, मार्गरेटा, जो पंद्रह साल की थी, और केट, जो बारह साल की थी, के साथ रहते थे।

उनका घर एक छोटी लकड़ी की संरचना थी, जो पहले माइकल वीकमैन द्वारा किराए पर ली गई थी, जिसने बाद में स्वीकार किया कि वह अक्सर हाइडेसविले

के घर में दस्तक और अन्य अजीब आवाज़ों से परेशान हो जाता था। मार्च 1848 के अंत में, फॉक्स परिवार रहस्यमयी खटखटाहट से बहुत परेशान था, और 31 तारीख की शाम को वे जल्दी सो गए, उम्मीद करते हुए कि उन्हें कुछ अच्छी नींद आएगी। लेकिन खटखटाहट पिछले मौकों की तुलना में और भी अधिक जोरदार तरीके से हुई, और श्रीमती फॉक्स, जब खटखटाहट में खुफिया संकेत दिखाई दिए, तो बहुत घबरा गईं और उत्साहित हो गईं, उन्होंने इस घटना को देखने के लिए अपने पड़ोसियों को बुलाने का फैसला किया।

पड़ोसियों ने खटखटाहट को फॉक्स की तरह ही स्पष्ट रूप से सुना। जब ध्वनियों ने संकेत दिया कि वे किसी प्रकार की खुफिया जानकारी द्वारा निर्देशित थे, तो अदृश्य के साथ संचार में जाना मुश्किल नहीं था। इस अनौपचारिक "सत्र" के "बैठकों" द्वारा प्रश्न पूछे गए और यदि उत्तर सकारात्मक था, तो खटखटाहट सुनी गई, यदि नकारात्मक था, तो चुप्पी बरकरार रही। इस तरह से खटखटाने वाले ने संकेत दिया कि वह एक आत्मा थी, एक फेरीवाले की आत्मा जिसकी हत्या उसके घर में रहने वाले एक पूर्व निवासी ने उसके पैसों के लिए कर दी थी।

इसने उपस्थित लोगों की उम्र और पड़ोस में रहने वाले लोगों से संबंधित अन्य विवरणों से संबंधित अन्य प्रश्नों का भी सही उत्तर दिया। कुछ ही दिनों में सैकड़ों लोग इस चमत्कार को देखने के लिए हाइड्सविले पहुंचे। फॉक्स के विवाहित बेटे डेविड, जो अपने पिता के घर से लगभग दो मील दूर रहते थे, ने इस आशय का एक बयान छोड़ा है कि फॉक्स परिवार ने, रैप्स के निर्देशों का पालन करते हुए, जो संकेत देते थे कि फेरीवाले को तहखाने में दफनाया गया था, अप्रैल की शुरुआत में वहां खुदाई शुरू कर दी थी, लेकिन पानी ने उन्हें रोक दिया। हालांकि, बाद में, तहखाने में बाल, हड्डियां और दांत पाए गए। अस्पष्ट अफ़वाहें उड़ रही थीं कि एक फेरीवाला एक सर्दियों में गाँव में आया था, उसे बाद में फॉक्स द्वारा किराए पर लिए गए घर की रसोई में देखा गया था, और रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था, बिना गाँव वालों से किए गए अपने वादे को पूरा किए कि वह अगले दिन वापस आएगा।

लेकिन असली सबूत के तौर पर हत्या या फेरीवाले के अस्तित्व का कोई टुकड़ा नहीं था, जिसके जीवन के बारे में रैप्स द्वारा विस्तृत जानकारी दी गई हो। इन घटनाओं के तुरंत बाद केट फॉक्स ऑबर्न चली गईं, और मार्गरेटा रोचेस्टर, एन.वाई. चली गईं, जहाँ उनकी विवाहित बहन, मिसेज फिश (पूर्व में मिसेज अंडरबिल) रहती थीं, और दोनों जगहों पर रैपिंग का प्रकोप हुआ। नए माध्यम उभरे, मंडलियाँ बनीं, और जल्द ही अध्यात्मवाद अपने करियर पर काफी आगे बढ़ गया।

306.रोम**:** रोमवासियों में जादू-टोना बहुत प्रचलित था। जादू उनकी पूजा की प्रेरक शक्ति थी जो सामुदायिक उद्देश्यों के लिए जादुई अनुष्ठानों की एक संगठित प्रणाली थी। यह उनकी सोच और दुनिया को देखने के तरीके का आधार था, यह उनके दैनिक जीवन के हर पल और क्रियाकलाप में शामिल था, इसने उनके कानूनों और रीति-रिवाजों को प्रभावित किया। यह अंतर्निहित प्रवृत्ति कम होने के बजाय, बहुत हद तक अंधविश्वास की एक बड़ी प्रणाली में विकसित हुई और बाद के वर्षों में सभी देशों से उधार लिए गए अजीब देवताओं के लिए उन्माद पैदा हुआ। दुर्भाग्य और आपदा के समय में रोमन हमेशा एक देवता को उधार लेने के लिए तैयार रहते थे, अगर ऐसा होता तो उनके अपने देवताओं की तुलना में उनके पक्ष में अधिक वादा किया जाता।

यद्यपि मूल चरित्र में एक मजबूत रूढ़िवादी तत्व था, यद्यपि बुजुर्गों की प्रथा "पुरोहित बिरादरी द्वारा दृढ़ता से कायम थी, फिर भी यह आमतौर पर लोगों की इच्छा और स्वभाव के आगे झुक जाती थी। इस प्रकार, जैसे एक चट्टान अपने अलग-अलग स्तरों द्वारा अपने भूवैज्ञानिक इतिहास को दर्शाती है, वैसे ही रोमन देवताओं की थियोगोनी उस जाति की कहानी बताती है जिसने इसे गर्भ धारण किया था।

प्रागैतिहासिक प्रकृति देवता हैं, जो स्वदेशी जनजातियों से उधार लिए गए हैं, सबाइन्स के देवता, जिनसे युवा कॉलोनी ने अपनी पत्नियाँ चुराईं; इट्रस्केन्स, मिस्रियों, यूनानियों और फारसियों के देवता। कैपिटल पर बृहस्पति के मंदिर में एक आदिम देवता, एक पत्थर-देवता, टर्मिनस, सीमाओं की आत्मा की वेदी थी: ग्रोव के डायना के मंदिर में, एक फव्वारा अप्सरा की पूजा की जाती थी। इस विवरण के उदाहरण कई हैं।

307.आत्माएँ **:** देवताओं के अलावा भी आत्माएँ थीं जिन्हें प्रसन्न किया जाना था। वास्तव में रोमनों को पूजा के लिए दी जाने वाली वस्तुएँ अनगिनत थीं। अपुलियस इसका वर्णन इस प्रकार करता है जब वह एक देहाती सड़क के बारे में बताता है जहाँ कोई फूलों से लदी एक वेदी, मालाओं से लटकी एक गुफा, मवेशियों के सींगों से लदा एक ओक का पेड़, पवित्र रूप से एक पहाड़ी की बाड़, एक खुरदरा-काटा हुआ लट्ठा, एक टर्फ की वेदी जिस पर अर्घ्य से धुआँ निकलता था या एक पत्थर जिस पर तेल लगा होता था। मनुष्य के दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया में एक अध्यक्षता करने वाली आत्मा होती थी; वाणिज्य और पशुपालन में भी।

एडनेया खाना, पोटिना पीना; प्रस्थान, यात्रा, निकट आने और घर आने की आत्माएँ थीं। वाणिज्य में मर्क्यूरियस था, जो लाभ की आत्मा थी, धन की,

पेकुनिया; खेती में, काटने, पीसने, बोने और मधुमक्खी पालन की आत्माएँ थीं। सड़कों और राजमार्गों पर एक देवता का शासन था; सीवर की एक देवी थी, क्लोसीना; बुरी गंध की आत्मा। मेफिटिस। बुरी आत्माओं को भी शांतिदायक अनुष्ठानों द्वारा प्रसन्न किया जाना चाहिए, जैसे कि रोबिगो, फफूंद की आत्मा; रोम में बुखार और बुरे भाग्य के लिए एक वेदी थी।

देश से खेतों और जंगलों के देवता सिल्वेनस और उनके फौन और अप्सराएँ पिकस के साथ आईं, कठफोड़वा देवता जिसने जुड़वाँ रोमुलस और रेमस को जामुन खिलाए थे - ये सभी प्रभाव से ग्रसित थे और उनसे अजीबोगरीब अनुष्ठानों के साथ संपर्क किया जाता था। इन आत्माओं के नाम गोलियों, इंडिजिटामेंटा पर अंकित थे, जो पोप के प्रभार में थे, जो इस प्रकार जानते थे कि किस आत्मा को ज़रूरत के हिसाब से बुलाया जाए।

इनमें से ज़्यादातर आत्माएँ मूल रूप से एनिमिस्टिक थीं। रोमन युद्धपोत में जादुई अनुष्ठान शामिल थे जो मानव जाति को नियंत्रित करने वाली शक्तियों को प्रसन्न करने के लिए थे; मनुष्य को उनके संपर्क में लाना, उसके जीवन और उसे सहारा देने वाली चीज़ों, पेड़ों, मकई और मवेशियों के साथ भूमि को नवीनीकृत करना, बुरे प्रभावों द्वारा लगातार गतिमान पतन की उस प्रक्रिया को रोकना। इससे जुड़ी हर चीज़ इस पुनर्स्थापना का प्रतीक थी। इसलिए पुजारी जो समुदाय के जीवन का प्रतिनिधित्व करते थे, उन्हें किसी भी तरह से इसे खतरे में डालने से सख्त पालन से बंधे थे।
पोशाक, खाने और स्पर्श के नियम कई थे। वांछित लक्ष्य और आह्वान किए गए देवता के अनुसार बलि को व्यवस्थित किया गया था। इस बात के नियम थे कि पीड़ित युवा होना चाहिए या पूर्ण विकसित, नर या मादा; बैलों को बृहस्पति और मंगल को चढ़ाया जाना था; सूअरों को जूनो, सेरेस को मकई-देवी और सिल्वेनस को। एक मंदिर में बछड़े की गाय की बलि दी जाती थी और अजन्मे बच्चे की राख का विशेष जादुई प्रभाव होता था। ऐतिहासिक समय में मानव बलि मौजूद थी। कैने की लड़ाई के बाद रोमनों ने दो यूनानियों को मवेशी-बाज़ार में ज़िंदा दफ़नाकर दुर्भाग्य को दूर करने की कोशिश की थी, जबकि जूलियस सीज़र के समय में दो लोगों को मार्स के पोप और फ़्लेमेन ने बलि की रस्मों के साथ मौत के घाट उतार दिया था।

फिर, सिसेरो और होरेस के समय में जादुई उद्देश्यों के लिए लड़कों को मार दिया जाता था। आग में बहुत गुण थे और वेस्टा की पूजा में इसे पवित्र माना जाता था, शुरुआती मान्यता के अनुसार वेस्टा खुद आग है; यह परिवार के चूल्हे की अध्यक्षता करती है; यह पवित्रता बहाल करती है और सुरक्षा प्रदान करती है।

रक्त में भी यही गुण था और भगवान के चेहरे पर लगाया जाने वाला रक्त समुदाय के साथ देवता की एकता का प्रतीक और प्रतीक था।

महान अवसरों पर जुपिटर की मूर्ति के साथ इस तरह से व्यवहार किया जाता था: बेलोना के पुजारी उनके कंधों में चीरा लगाते थे और छवि पर खून छिड़कते थे; विजयी सेनापति के चेहरे पर रक्त का प्रतीक सिंदूर लगाया जाता था। घुटने टेकने और साष्टांग प्रणाम करने से व्यक्ति पवित्र स्थान की धरती के सीधे संपर्क में आता था। संगीत का प्रयोग भी मंत्रोच्चार की एक प्रजाति के रूप में किया जाता था, संभवतः इसकी उत्पत्ति बुरी आत्माओं को भगाने के लिए की गई ध्वनि से हुई थी। नृत्य भी जादुई प्रभावकारिता वाला था।

रोम में धर्म के उद्देश्यों के लिए नर्तकियों के समूह थे, युवा जो वेदियों के चारों ओर गंभीर तरीके से नृत्य करते थे, जो मंगल के पवित्र महीने में त्योहारों में भाग लेते थे और पूरे शहर में नाचते-गाते घूमते थे। एक अधिकारी ने चार प्रकार के "पवित्र समारोह" बताए हैं; बलिदान, पवित्र भोज, सार्वजनिक उत्सव और खेल। नाट्य प्रदर्शन भी इसी श्रेणी में आते थे, एक उदाहरण में महामारी को दूर भगाने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। पवित्र भोज अक्सर सीनेट द्वारा धन्यवाद के रूप में मनाए जाते थे।

308.देवताओं को देने के लिए। सार्वजनिक स्थानों पर शानदार भोजन के साथ मेज़ें बिछाई जाती थीं और सबसे पहले आस-पास बैठे देवताओं की मूर्तियों को भोग लगाया जाता था। त्यौहार बहुत सारे थे, सभी जादुई और प्रतीकात्मक प्रकृति के थे। वसंत में परिलिया होता था जब पुआल की आग जलाई जाती थी, जिसके माध्यम से लोग शुद्ध होने के लिए गुजरते थे; सेरेलिया, बलिदान और अनाज की देवी सेरेस को प्रसाद चढ़ाने के साथ मनाया जाता था, और उसके बाद भोज होते थे। लूपर कैलिया, फौनस का त्यौहार, फरवरी में मनाया जाता था और वसंत और विकास के जागरण का प्रतीक था। बलि के रूप में बकरियों को मारा जाता था और उनके खून से लुपरसी, खाल पहने हुए युवा अपने चेहरे को मलते थे।

वे बकरी की खाल की पट्टियाँ लेते थे और बेतहाशा हँसते हुए भीड़ पर वार करते हुए शहर में भागते थे, रोमन महिलाओं का मानना था कि इस तरह के वार से वे बहुत अधिक प्रजनन करते हैं। जूनो, विवाह और संतानोत्पत्ति की देवी का भी अपना त्यौहार था, मैट्रोनलिया, जिसे रोम की महिलाएँ मनाती थीं। मृतकों के त्यौहार थे जब दूसरी दुनिया की ओर जाने वाले दरवाज़े को खोला जाता था, कॉमिटियम में उसके प्रवेश द्वार से पत्थर हटाया जाता था, और बाहर आने वाली परछाइयों को प्रसाद से प्रसन्न किया जाता था।

इन दिनों साल में तीन बार, जब उदासी के देवता विदेश में होते थे, सभी कामों से पूरी तरह विराम का आदेश दिया जाता था, कोई लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती थी, न ही जहाज़ रवाना हो सकते थे और न ही कोई पुरुष विवाह कर सकता था। पवित्र खेलों में देवताओं की मूर्तियों को भव्य जुलूस, चांदी के रथ, पुजारियों की टोलियाँ, नाचते-गाते युवा ले जाया जाता था। देवता सोफे पर लेटे हुए खेल देखते थे। रथ दौड़ भी अनुष्ठानों की प्रकृति में भाग लेती थी। मार्स के मैदान में दौड़ के बाद सबसे महत्वपूर्ण रोमन अनुष्ठानों में से एक आया, अक्टूबर घोड़े की बलि। विजयी दल के दाहिने घोड़े की बलि मंगल को दी जाती थी और खून से लथपथ पशु की दुम को केगिया की वेदी पर ले जाया जाता था।

रक्त को अगले वसंत तक वेस्टा के मंदिर में संग्रहीत किया जाता था और पारिलिया के त्यौहार के बलिदान में इस्तेमाल किया जाता था। यह बलिदान अनिवार्य रूप से जादुई था, उपस्थित सभी नागरिकों को रक्त-छिड़काव और पवित्र अलाव द्वारा शुद्ध माना जाता था। जीवन के प्रति रोमन दृष्टिकोण पूरी तरह से जादू से रंगा हुआ था। शारीरिक शत्रुओं के अदृश्य दुनिया में उनके समकक्ष थे, मृतकों की भटकती आत्माएँ, बुरी आत्माएँ, निर्दोष रूप से नाराज देवताओं का क्रोध, बुरी नज़र का खतरा। हर जगह शगुन और चमत्कार थे।

आकाश में अजीबोगरीब चीजें देखी जा सकती थीं। सूरज को दोगुना, यहाँ तक कि तिगुना भी जाना जाता था; इसकी रोशनी खून में बदल जाती थी, या एक जादुई प्रभामंडल दिखाई देता था। गरज और बिजली हमेशा पूर्वाभास से भरी होती थी; जब जोव ने आकाश खोला और अपने तीरों को धरती पर फेंका तो वह क्रोधित हो गया। बादलों के बीच प्रेत भी मंडरा रहे थे; जहाजों का एक बड़ा बेड़ा दलदलों के ऊपर से गुज़रता हुआ देखा गया था। कैम्पाग्ना पर देवताओं को संघर्ष करते हुए देखा गया था, और उसके बाद मैदान के पार लड़ाकों के निशान दिखाई दे रहे थे। पहाड़ों और पेड़ों के बीच अलौकिक आवाज़ें सुनाई दे रही थीं; मंदिरों के भीतर शगुन की चीखें गूंज रही थीं। खून रोमन कल्पना को डराता था। कभी-कभी कहा जाता था कि यह ज़मीन को एक लबादे की तरह ढक देता है, खड़ी फसल खून से रंग जाती है, नदियाँ और झरने उसके साथ बहते हैं, जबकि दीवारें और मूर्तियाँ खूनी पसीने से ढँक जाती हैं।

पक्षियों की उड़ान और गीत शायद भाग्य के फ़ैसलों की भविष्यवाणी कर रहे हों; मृतकों की अप्रसन्न आत्माएँ पास में छुपकर लोगों की आत्माओं को चुरा लेती थीं और फिर वे भी "मृत" हो जाते थे। ये सभी घटनाएँ देवताओं और आत्माओं के कारण होती थीं, यदि कोई खतरा हो तो उन्हें प्रसन्न किया जाना चाहिए, यदि कोई सौभाग्य हो तो उन्हें प्रसाद चढ़ाकर धन्यवाद दिया जाना चाहिए। बाद के

समय तक चमत्कारों की घटनाओं में यह गहरी आस्था बनी रही। जब ओथो इटली के लिए निकला, तो रोम में जूनो के मंदिर से एक विशालकाय प्रेत के निकलने की खबरें गूंज उठीं; जूलियस की मूर्ति पूर्व से पश्चिम की ओर मुड़ गई।

308.शकुन-**:** विवेचन रोमन पूजा से जुड़ा था। कैपिटल पर एक स्थान था जहाँ से सिर पर पर्दा डाले हुए शकुन-विवेचन करने वाला पक्षियों की उड़ान में शुभ संकेत पढ़ता था। शकुन-विवेचन करने वाले सेना और बेड़े के साथ भी जाते थे और किसी लड़ाई में शामिल होने से पहले शकुन-विवेचन करते थे। जानवरों की आँतों को पढ़कर, सपनों के द्वारा, दैवीय शक्ति द्वारा भी शकुन-विवेचन किया जाता था, जैसे कि भविष्यवाणियाँ करते समय भविष्यवाणियाँ की जाती थीं। इन्हें सिबिलीन पुस्तकों (q.v.) में एकत्र किया गया था, और राज्य द्वारा भविष्यवाणियों के रूप में परामर्श किया गया था।

भाग्य की पूजा के साथ प्रमेस्टे के लोट जुड़े हुए थे। देवी से पूछे गए प्रश्नों का उत्तर ओक के लोट के माध्यम से दिया जाता था जिसे एक लड़का पवित्र लकड़ी से बने एक बक्से से निकालता था। भाग्य-बताने वाले एक संकीर्ण गर्दन वाले कलश का भी उपयोग करते थे, जो पानी से भरा होता था, जिससे एक बार में केवल एक लोट ही ऊपर उठ पाता था। चाल्डिया के ज्योतिषियों की भी बहुत मांग थी और वे राजसी और कुलीन घरों से जुड़े हुए थे।

रोजमर्रा की जिंदगी की जानी-पहचानी चीजें जादुई महत्व की होती थीं। शब्द, अंक, विशेष रूप से कलेंड्स के लिए विषम, नॉन और आइड्स को इस तरह से व्यवस्थित किया गया था कि वे विषम दिनों में पड़ें; स्पर्श बाध्यकारी था और रोम के कानून में इस तरह से मान्यता प्राप्त थी, जैसे किसी गुलाम से दूर की संपत्ति के टर्फ तक बेची गई चीज की पकड़; और धागे को गांठ लगाना और मोड़ना हानिकारक था, इसलिए महिलाओं को कभी भी अपने तकियों को घुमाते हुए मकई के खेतों से नहीं गुजरना चाहिए, उन्हें खुला भी नहीं रखना चाहिए। पेड़ों और मानव जाति के बीच एक अजीब सहानुभूति थी, और रोम के पवित्र पेड़ों को बहुत सम्मान दिया जाता था।

जुपिटर के ओक के पेड़ पर विजयी सेनापति ने अपने गिरे हुए दुश्मन की ढाल और हथियार लटकाए; जबकि नेमी में डायना के मंदिर के चारों ओर की बाड़ें मन्नत के प्रसाद से ढकी हुई थीं। पेड़ों में मृतकों की आत्माएँ भी रहती थीं जो सपनों के रूप में मनुष्यों की आत्माओं के सामने आती थीं। इस मामले में प्लिनी द एल्डर कहते हैं •• पेड़ों में आत्मा होती है क्योंकि धरती पर कोई भी चीज़ इसके बिना नहीं रहती। वे आत्माओं के मंदिर हैं और साधारण ग्रामीण इलाके अभी भी किसी न किसी देवता को एक महान पेड़ समर्पित करते हैं।

विभिन्न प्रकार के वृक्ष अपनी रक्षा करने वाली आत्माओं के लिए पवित्र हैं: ओक बृहस्पति के लिए, लॉरेल अपोलो के लिए, जैतून मिनर्वा के लिए, मर्टल शुक्र के लिए, सफेद चिनार हरक्यूलिस के लिए।" इसलिए ये वृक्ष अपनी अध्यक्षता करने वाली आत्माओं की प्रकृति का हिस्सा थे और उनके जादुई प्रभाव के साथ संवाद स्थापित करना वांछनीय था, जैसा कि वसंत में होता था जब लॉरेल की टहनियाँ फ्लेमेंस और पोंटिफ के दरवाजों पर और वेस्टा के मंदिर में लटका दी जाती थीं जहाँ वे अगले वर्ष तक लटकी रहती थीं।

वृक्ष और उनकी पत्तियाँ उपचार और शुद्धिकरण के मूल्य भी रखती थीं; लॉरेल का उपयोग बाद के गुण के लिए किया जाता था जैसे कि रोमन विजयों में कमांडर के मुखौटे, सेना के भाले और भाले को दुश्मन के खून से बचाने के लिए इसकी शाखाओं से लपेटा जाता था। मनुष्य स्वयं एक अध्यक्षता करने वाली आत्मा है, उसकी प्रतिभा है, प्रत्येक महिला का अपना "जूनो" है, सैटर्नलिया वास्तव में इस "अन्य स्वयं" के लिए एक छुट्टी थी। रोमन ने अपने "जूनो" को "अन्य स्वयं" के लिए रखा। अपने प्रतिभाशाली व्यक्ति के सम्मान में जन्मदिन मनाते हुए, फूलों से सजी वेदी पर लोबान, केक और बिना मिलावट वाली शराब चढ़ाते हैं और आने वाले वर्ष के लिए गंभीर प्रार्थना करते हैं।

शहर और गाँव में उनके जिन्न थे, सीनेट से लेकर रसोइयों तक के लोगों के शव भी। माना जाता था कि मृत्यु बदला लेने वाले भूतों द्वारा बहकाया गया जीवन और आत्मा है, इसलिए ऐसी एजेंसियों के बिना मृत्यु कभी नहीं होगी। इसलिए मृतकों को प्रसाद से प्रसन्न किया जाना चाहिए अन्यथा वे जीवित लोगों के बीच बुराई करते हुए विदेश में भटकते हैं। यह विश्वास ओविड की पंक्तियों में मौजूद है: "एक बार एक धुन पर मृतकों का महान भोज नहीं मनाया गया और लोगों को पारंपरिक उपहार, फल, नमक, बिना मिलावट वाली शराब में डूबा हुआ मक्का, बैंगनी फूल नहीं मिले। घायल आत्माओं ने जीवित लोगों से बदला लिया और शहर को उनके पीड़ितों के अंतिम संस्कार की आग से घेर लिया गया।

शहर के लोगों ने रात के शांत घंटों में अपने दादा-दादी को शिकायत करते हुए सुना, और एक-दूसरे को बताया कि कैसे राक्षसी भूतों की असंतुलित सेना उनकी कब्रों से उठकर शहर के साथ चीख रही थी।सड़कों और खेतों में चहल-पहल रहती थी।" बीन्स का इस्तेमाल अंतिम संस्कार की दावतों में किया जाता था। माना जाता था कि बीन्स में मृतकों की आत्माएँ होती हैं और बीन्स के फूलों पर शोक के प्रतीक अंकित होते थे। रोमनों द्वारा सपनों को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था;

भविष्यसूचक सपनों के कई ऐतिहासिक उदाहरण मिल सकते हैं। उन्हें पक्षियों, "कांस्य रंग के" बाजों की तरह माना जाता था; उन्हें मनुष्यों की आत्माएँ भी माना जाता था जो दूसरों की नींद में उनसे मिलने आती हैं; साथ ही मृतकों की आत्माएँ भी जो धरती पर लौटती हैं। वर्जिल में इस विषय पर बहुत कुछ पाया जा सकता है; ल्यूक्रेटियस ने उनके लिए एक वैज्ञानिक कारण खोजने की कोशिश की; सिसरो ने नींद के इन अभिव्यक्तियों में प्रचलित विश्वास के बारे में थोड़ा तिरस्कारपूर्ण तरीके से लिखा, फिर भी अपने स्वयं के सपनों को दर्ज किया, जो घटनाएँ सच साबित हुईं।

जादू-टोना, प्रेम-जादू और मृत्यु-जादू सभी वर्गों में प्रचलित था, इसके अलावा नेक्रोमेंटिक प्रथाएँ भी थीं। सूर्य के नीचे हर चीज़ के लिए मंत्र और जादू थे; पोपों का वर्षा-मंत्र जिसमें कठपुतलियों को तिबर में फेंकना शामिल था; प्याज, बाल और स्प्रैट से बने वज्रपात के विरुद्ध मंत्र; महामारी के विरुद्ध मंत्र जब रोम की स्त्रियाँ अपने बालों से मंदिर के फर्श को साफ़ करती थीं; और देहाती युवती के गले में लटकाए जाने वाले सरल प्रेम-मंत्र तक कई और। चुड़ैलें प्रचलित थीं। कवि अक्सर इन भयावह आकृतियों को अपने विषयों के लिए चुनते थे, जैसे जब होरेस एस्क्विलाइन के कब्रिस्तान में दो चुड़ैलों के भयानक अनुष्ठानों का वर्णन करता है।

नए चाँद की रोशनी में वे ज़हरीली जड़ी-बूटियों और हड्डियों की तलाश में रेंगते हैं; वे भूतों को एक भोज में बुलाते हैं जिसमें एक काले भेड़ के बच्चे को उनके दांतों से फाड़ दिया जाता है, और उसके बाद, इन प्रेतों को जादूगरनी के सवालों का जवाब देना होता है। वे अपने पीड़ितों की छवियाँ बनाते हैं और मदद के लिए नारकीय शक्तियों से प्रार्थना करते हैं; शिकारी कुत्ते और साँप ज़मीन पर सरकते हैं, चाँद खून में बदल जाता है, और जैसे-जैसे छवियाँ पिघलती हैं, पीड़ितों की ज़िंदगी खत्म होती जाती है। वर्जिल एक जादूगरनी की तस्वीर देता है जो उस युवक की मोम की मूर्ति के ज़रिए प्रेम-जादू करती है जिसका प्यार वह चाहती थी।

ल्यूकन ने अपने फ़ार्सालिया में थेसली का वर्णन किया है, जो जादू-टोने के लिए सभी युगों में कुख्यात थी और एक भयानक आकृति खींची है - एरिचथो, असीम शक्तियों वाली एक जादूगरनी, जिसकी आज्ञा देवता भी मानते थे, जिसकी धरती और स्वर्ग की शक्तियाँ दास थीं; और भाग्य उसकी कम से कम आज्ञा का इंतज़ार कर रहा था। नीरो और उसकी माँ एग्रीपिना दोनों के बारे में बताया गया है कि उन्होंने जादू-टोने की कुख्यात कलाओं का सहारा लिया था; जबकि नए नियम में रोम में इन प्रथाओं के बारे में साक्ष्य मिल सकते हैं।

जादू के प्रति सुसंस्कृत वर्ग के दृष्टिकोण को प्लिनी द एल्डर के लेखन में पाए जाने वाले एक रोशन करने वाले अंश द्वारा दर्शाया गया है। वे कहते हैं, "जादू की कला अधिकांश युगों में और दुनिया के अधिकांश भागों में प्रचलित रही है। किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि इसने बहुत अधिक अधिकार प्राप्त किया है क्योंकि यह प्रभाव के तीन अन्य स्रोतों को भी अपनाती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसने चिकित्सा में अपना उदय किया और खुद को सामान्य से अधिक गहन और पवित्र विज्ञान की आड़ में छिपाने की कोशिश की।

इसने अपने लुभावने वादों में धर्म की शक्ति को जोड़ा, जिसके लिए मानव जाति विशेष रूप से इस समय भटक रही है। इसके अलावा इसने ज्योतिष और भविष्यवाणी की कलाओं को भी शामिल किया है। क्योंकि हर कोई जानना चाहता है कि उसके साथ क्या होने वाला है और वह मानता है कि सितारों से परामर्श करके निश्चितता प्राप्त की जा सकती है। इस तरह से मनुष्य की भावनाओं को तीन जंजीरों में जकड़कर इसने ऐसी ऊंचाई हासिल कर ली है कि यह पूरी दुनिया पर राज करता है और पूर्व में, राजाओं के राजा पर शासन करता है।'

309.सड़कों और खेतों में चहल-पहल रहती थी।" बीन्स का इस्तेमाल अंतिम संस्कार की दावतों में किया जाता था। माना जाता था कि बीन्स में मृतकों की आत्माएँ होती हैं और बीन्स के फूलों पर शोक के प्रतीक अंकित होते थे। रोमनों द्वारा सपनों को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता था; भविष्यसूचक सपनों के कई ऐतिहासिक उदाहरण मिल सकते हैं। उन्हें पक्षियों, "कांस्य रंग के" बाजों की तरह माना जाता था; उन्हें मनुष्यों की आत्माएँ भी माना जाता था जो दूसरों की नींद में उनसे मिलने आती हैं; साथ ही मृतकों की आत्माएँ भी जो धरती पर लौटती हैं। वर्जिल में इस विषय पर बहुत कुछ पाया जा सकता है; ल्यूक्रेटियस ने उनके लिए एक वैज्ञानिक कारण खोजने की कोशिश की; सिसरो ने नींद के इन अभिव्यक्तियों में प्रचलित विश्वास के बारे में थोड़ा तिरस्कारपूर्ण तरीके से लिखा, फिर भी अपने स्वयं के सपनों को दर्ज किया, जो घटनाएँ सच साबित हुईं। जादू-टोना, प्रेम-जादू और मृत्यु-जादू सभी वर्गों में प्रचलित था, इसके अलावा नेक्रोमेंटिक प्रथाएँ भी थीं। सूर्य के नीचे हर चीज़ के लिए मंत्र और जादू थे; पोपों का वर्षा-मंत्र जिसमें कठपुतलियों को तिबर में फेंकना शामिल था;

प्याज, बाल और स्प्रैट से बने वज्रपात के विरुद्ध मंत्र; महामारी के विरुद्ध मंत्र जब रोम की स्त्रियाँ अपने बालों से मंदिर के फर्श को साफ़ करती थीं; और देहाती युवती के गले में लटकाए जाने वाले सरल प्रेम-मंत्र तक कई और। चुड़ैलें प्रचलित थीं। कवि अक्सर इन भयावह आकृतियों को अपने विषयों के लिए चुनते थे, जैसे जब होरेस एस्क्विलाइन के कब्रिस्तान में दो चुड़ैलों के भयानक अनुष्ठानों का

वर्णन करता है। नए चाँद की रोशनी में वे ज़हरीली जड़ी-बूटियों और हड्डियों की तलाश में रेंगते हैं; वे भूतों को एक भोज में बुलाते हैं जिसमें एक काले भेड़ के बच्चे को उनके दांतों से फाड़ दिया जाता है, और उसके बाद, इन प्रेतों को जादूगरनी के सवालों का जवाब देना होता है।

वे अपने पीड़ितों की छवियाँ बनाते हैं और मदद के लिए नारकीय शक्तियों से प्रार्थना करते हैं; शिकारी कुत्ते और साँप ज़मीन पर सरकते हैं, चाँद खून में बदल जाता है, और जैसे-जैसे छवियाँ पिघलती हैं, पीड़ितों की ज़िंदगी खत्म होती जाती है। वर्जिल एक जादूगरनी की तस्वीर देता है जो उस युवक की मोम की मूर्ति के ज़रिए प्रेम-जादू करती है जिसका प्यार वह चाहती थी। ल्यूकन ने अपने फ़ार्सालिया में थेसली का वर्णन किया है, जो जादू-टोने के लिए सभी युगों में कुख्यात थी और एक भयानक आकृति खींची है - एरिचथो, असीम शक्तियों वाली एक जादूगरनी, जिसकी आज्ञा देवता भी मानते थे, जिसकी धरती और स्वर्ग की शक्तियाँ दास थीं; और भाग्य उसकी कम से कम आज्ञा का इंतज़ार कर रहा था। नीरो और उसकी माँ एग्रीपिना दोनों के बारे में बताया गया है कि उन्होंने जादू-टोने की कुख्यात कलाओं का सहारा लिया था;

जबकि नए नियम में रोम में इन प्रथाओं के बारे में साक्ष्य मिल सकते हैं। जादू के प्रति सुसंस्कृत वर्ग के दृष्टिकोण को प्लिनी द एल्डर के लेखन में पाए जाने वाले एक रोशन करने वाले अंश द्वारा दर्शाया गया है। वे कहते हैं, "जादू की कला अधिकांश युगों में और दुनिया के अधिकांश भागों में प्रचलित रही है। किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि इसने बहुत अधिक अधिकार प्राप्त किया है क्योंकि यह प्रभाव के तीन अन्य स्रोतों को भी अपनाती है।
इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसने चिकित्सा में अपना उदय किया और खुद को सामान्य से अधिक गहन और पवित्र विज्ञान की आड़ में छिपाने की कोशिश की। इसने अपने लुभावने वादों में धर्म की शक्ति को जोड़ा, जिसके लिए मानव जाति विशेष रूप से इस समय भटक रही है। इसके अलावा इसने ज्योतिष और भविष्यवाणी की कलाओं को भी शामिल किया है। क्योंकि हर कोई जानना चाहता है कि उसके साथ क्या होने वाला है और वह मानता है कि सितारों से परामर्श करके निश्चितता प्राप्त की जा सकती है। इस तरह से मनुष्य की भावनाओं को तीन जंजीरों में जकड़कर इसने ऐसी ऊंचाई हासिल कर ली है कि यह पूरी दुनिया पर राज करता है और पूर्व में, राजाओं के राजा पर शासन करता है।'

310.सेंट जॉन्स वॉर्ट: सेंट जॉन्स वॉर्ट। शास्त्रीय पौराणिक कथाओं में ग्रीष्म संक्रांति सूर्य को समर्पित एक दिन था, और माना जाता था कि यह एक ऐसा दिन था जिस दिन चुड़ैलें अपना उत्सव मनाती थीं। 5/. जॉन्स वॉर्ट उनका

प्रतीकात्मक पौधा था, और लोग इससे यह अनुमान लगाते थे कि उनका भविष्य भाग्यशाली होगा या अशुभ; जैसे-जैसे यह बढ़ता गया, उन्होंने इसके प्रगतिशील चरित्र में अपने भविष्य का भाग्य देखा। ईसाइयों ने इस उत्सव की अवधि को सेंट जॉन्स वॉर्ट या जड़ को समर्पित किया, और यह बुराई के खिलाफ एक ताबीज बन गया।

पुराने रोमांटिक गाथागीतों में से एक में एक युवा महिला एक राक्षस से प्यार करती है, जो उससे कहता है - "जिन तुम मेरी लेमन बनना चाहती हो सेंट जॉन्स वॉर्ट और वर्वेन को अलग रख दो।" जब सेंट जॉन के दिन इसे घरों के दरवाजों पर क्रॉस के साथ लटकाया जाता है तो यह शैतान और अन्य बुरी आत्माओं को दूर रखता है। सेंट जॉन्स डे की सुबह सूर्योदय के समय जड़ को इकट्ठा करना और उसे घर में रखना परिवार को उनके कामों में सौभाग्य देता है, खासकर उस दिन शुरू किए गए कामों में।

311.जादू टोना: मध्यकालीन समय में स्कैंडिनेवियाई जादू टोने के उदाहरण दुर्लभ हैं, लेकिन 1669 और 1670 में स्वीडन में एल्फडेल जिले में इसके खिलाफ कट्टरता का एक बड़ा प्रकोप शुरू हुआ। मोहरा और एल्फडेल के गाँव स्वीडन के मध्य भागों के पहाड़ी जिलों की घाटियों में स्थित हैं। ऊपर वर्णित वर्षों में से पहले में, एक अजीब रिपोर्ट विदेश में चली गई कि पड़ोस के बच्चों को हर रात ब्लॉकुला नामक स्थान पर ले जाया जाता था, जहाँ उन्हें शैतान द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त किया जाता था;

और बच्चों ने खुद, जो रिपोर्ट के लेखक थे, उन्हें कई महिलाओं की ओर इशारा किया, जिनके बारे में उन्होंने कहा कि वे चुड़ैल थीं और उन्हें वहाँ ले गईं। शहर में भय और आतंक इतना बढ़ गया कि आखिरकार राजा को रिपोर्ट भेजी गई, जिसने आयुक्तों को, आंशिक रूप से पादरी और आंशिक रूप से आम लोगों को, उन असाधारण परिस्थितियों की जांच करने के लिए नामित किया, जो उसके ध्यान में लाई गई थीं, और ये आयुक्त मोहरा पहुंचे और 13 अगस्त, 1670 को अपनी कार्यवाही शुरू करने के अपने इरादे की घोषणा की। 12 अगस्त को, आयुक्तों ने पादरी के घर में मुलाकात की, और मंत्री और उच्च वर्ग के कई लोगों की शिकायतें सुनीं, जिन्होंने उन्हें अपनी दयनीय स्थिति के बारे में बताया, और प्रार्थना की कि किसी तरह से उन्हें इस विपत्ति से बचाया जा सके।

उन्होंने गंभीरता से आयुक्तों को बताया कि चुड़ैलों की मदद से उनके सैकड़ों बच्चे शैतान की ओर खिंचे चले आए हैं, जिसे देश भर में एक दृश्यमान आकार में घूमते हुए देखा गया था, और जो प्रतिदिन लोगों को दिखाई देता था; उन्होंने कहा कि उनमें से गरीब लोगों को उसने मांस और शराब खिलाकर बहकाया था।

अगले दिन आयुक्तों ने पूरी तत्परता से अपने कर्तव्यों का पालन करना शुरू कर दिया और उनकी गलत मुहर का परिणाम क्रूर और निर्दयी उत्पीड़न का सबसे उल्लेखनीय उदाहरण बन गया, जो जादू-टोने के इतिहास में कलंकित करने वाला है। मोहरा गांव और जिले के कम से कम सत्तर लोगों को, जिनमें से तेईस ने अपना अपराध स्वीकार किया, दोषी ठहराया गया और उन्हें मार दिया गया।

एक महिला ने दलील दी कि वह गर्भवती थी और बाकी ने अपने अपराध से इनकार किया और उन्हें फहलुना भेज दिया गया, जहां उनमें से अधिकांश को बाद में मौत की सजा दी गई। मृत्युदंड पाने वालों में पंद्रह बच्चे थे और छत्तीस और, जिनकी उम्र नौ से सोलह के बीच थी, को एक साल तक हर रविवार को चर्च के दरवाजे पर हाथों पर कोड़े मारने के लिए मजबूर किया गया; जबकि बीस और, जो इन प्रथाओं में अधिक अनिच्छा से शामिल हुए थे और बहुत छोटे थे, उन्हें चर्च के दरवाजे पर लगातार तीन रविवारों तक हाथों पर कोड़े मारने की सजा दी गई।

जिन बच्चों पर आरोप लगाया गया था उनकी संख्या लगभग तीन सौ थी। ऐसा प्रतीत होता है कि आयुक्तों ने बच्चों से बयान लेना शुरू किया और फिर उनका सामना उन चुड़ैलों से कराया जिन पर बच्चों ने उन्हें बहकाने का आरोप लगाया था। अधिकृत रिपोर्ट के शब्दों में कहें तो चुड़ैलों के साथ, "अधिकांश बच्चों को उन्होंने बहकाया था या बहकाने की कोशिश की थी, जिनकी उम्र सात साल या चार से सोलह साल थी," अब आयुक्तों के सामने पेश हुए। "कुछ बच्चों ने दुख और शरारतों की शिकायत की जो उन्हें कभी-कभी शैतान और चुड़ैलों द्वारा सहना पड़ता था।" जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें यकीन है कि उन्हें कभी शैतान ने बहकाया था?
तो सभी ने सकारात्मक उत्तर दिया। "इसके बाद चुड़ैलों से पूछा गया कि क्या उन बच्चों के बयान सच थे, और उन्हें सच कबूल करने के लिए कहा गया, ताकि वे शैतान से दूर होकर जीवित परमेश्वर की ओर मुड़ सकें। पहले तो उनमें से ज़्यादातर ने बहुत ही कठोरता से और बिना आँसू बहाए, इनकार किया, हालाँकि उनकी इच्छा और झुकाव के विरुद्ध था।

इसके बाद बच्चों की खुद से जाँच की गई, यह देखने के लिए कि उनके बयान एक-दूसरे से मेल खाते हैं या नहीं, और आयुक्तों ने पाया कि उनमें से सभी, कुछ बहुत ही छोटे बच्चों को छोड़कर, जो सभी परिस्थितियों को नहीं बता सकते थे, अपने बयानों में बिल्कुल सहमत थे। इस बीच, पादरी वर्ग के आयुक्तों ने चुड़ैलों की जाँच की, लेकिन उन्हें किसी भी बयान पर नहीं ला पाए, सभी अपने इनकार पर अड़े रहे, जब तक कि उनमें से कुछ फूट-फूट कर रोने लगे, और उनका बयान बच्चों द्वारा कही गई बातों से मेल खाता था;

और उन्होंने इस तथ्य के प्रति अपनी घृणा व्यक्त की, और क्षमा याचना की। उन्होंने यह भी कहा कि शैतान, जिसे वे लोकीटा कहते थे, ने उनमें से कुछ के मुंह बंद कर दिए थे, वह अपने शिकार को छोड़ने के लिए बहुत अनिच्छुक था, और उसने दूसरों के कान बंद कर दिए थे। और इसे छिपाएँ; क्योंकि अब वे उसके विश्वासघात को समझ चुके थे।"

चुड़ैलों ने दावा किया कि ब्लॉकुला की यात्रा हमेशा एक ही तरह के वाहन से नहीं की जाती थी; वे आमतौर पर पुरुषों, जानवरों, यहाँ तक कि थूक और खंभों का इस्तेमाल करती थीं, जैसा कि उन्हें अवसर मिलता था। हालाँकि, वे बकरियों पर सवारी करना पसंद करती थीं, और अगर उनके साथ बच्चे होते थे, तो जानवर आसानी से उन्हें उठा नहीं सकता था, वे अपने जादुई मरहम से अभिषेक किए गए थूक के माध्यम से उसकी पीठ को लंबा कर देती थीं।

यह भी कहा गया था कि अगर बच्चे किसी भी समय उन लोगों के नाम बताते थे, चाहे वे पुरुष हों या महिला, जो उनके साथ थे, और उन्हें ले गए थे, तो उन्हें फिर से बलपूर्वक ब्लॉकुला या क्रॉस-वे ले जाया जाता था, और वहाँ पीटा जाता था, इतना कि उनमें से कुछ की मृत्यु हो जाती थी; और यह कुछ चुड़ैलों ने कबूल किया, और कहा कि अब वे इसके लिए अपने मन में बहुत परेशान और प्रताड़ित थे। एक बात यह थी कि उनके कबूलनामे की इस परिस्थिति की पुष्टि होनी चाहिए थी। पीड़ितों के शरीर पर कोड़े के निशान नहीं पाए गए, सिवाय एक लड़के के, जिसकी पीठ पर कुछ घाव और छेद थे, जो उसे काँटों से दिए गए थे;

लेकिन चुड़ैलों ने कहा कि वे जल्दी ही गायब हो जाएँगे। ब्लॉकुला के बारे में उन्होंने जो विवरण दिया वह यह था कि यह एक बड़े घास के मैदान में स्थित था, एक समतल समुद्र की तरह, ** जिसमें आप कोई अंत नहीं देख सकते।" जिस घर में वे मिले, उसका एक बड़ा द्वार था जिस पर कई अलग-अलग रंग लगे थे। इस द्वार से वे दूसरे से अलग एक छोटे से घास के मैदान में गए और यहाँ उन्होंने अपने जानवरों को चरने के लिए छोड़ दिया।

जब उन्होंने अपने बोझा ढोने वाले जानवरों के लिए मनुष्यों का उपयोग किया, तो उन्होंने उन्हें दीवार के सामने असहाय नींद की स्थिति में खड़ा कर दिया और घर की ओर भागने के लिए वहाँ तब तक रहे जब तक कि उन्हें ज़रूरत नहीं पड़ी। इस घर के एक बहुत बड़े कमरे में एक लंबी मेज़ थी, जिस पर चुड़ैलें बैठती थीं; और इस कमरे से सटा हुआ एक और कमरा था, जहाँ "सुंदर और नाजुक बिस्तर" थे।

जैसे ही वे ब्लॉकुला पहुँचे, आगंतुकों को अपने बपतिस्मा से इनकार करने और खुद को शरीर और आत्मा शैतान को समर्पित करने के लिए कहा गया, जिसकी उन्होंने ईमानदारी से सेवा करने का वादा किया था। इस पर उसने उनकी उंगलियाँ काट दीं और उन्होंने अपनी किताब में खून से उनका नाम लिख दिया। फिर उसने उन्हें बपतिस्मा दिलवाया इस उद्देश्य के लिए नियुक्त पुजारियों द्वारा फिर से। इस पर शैतान ने उन्हें एक पर्स दिया, जिसमें घड़ियों के टुकड़े थे, जिसमें एक बड़ा पत्थर बंधा था, जिसे उन्होंने पानी में फेंक दिया, और कहा, "जैसे घड़ी के ये टुकड़े उस घड़ी में वापस नहीं आते, जहाँ से उन्हें लिया गया था, वैसे ही मेरी आत्मा कभी स्वर्ग में वापस न आए।"

इस कथन की पुष्टि करने में एक और कठिनाई यह थी कि कुछ बच्चों की उंगलियों पर कोई निशान था जो यह दर्शाता था कि उन्हें कहाँ काटा गया था। लेकिन यहाँ भी कहानी को एक लड़की ने मदद की, जिसकी उंगली बहुत चोटिल थी, और जिसने घोषणा की, क्योंकि वह अपनी उंगली नहीं बढ़ा सकती थी, इसलिए शैतान ने गुस्से में उसे घायल कर दिया था। जब ये समारोह पूरे हो गए, तो चुड़ैलें मेज पर बैठ गईं, जिन्हें शैतान सबसे अधिक सम्मान देता था, उन्हें उसके सबसे करीब बैठाया गया; लेकिन बच्चों को दरवाजे पर खड़ा किया गया, जहाँ उसने खुद उन्हें भोजन और पेय दिया।

शायद हम कहानी के इस हिस्से की उत्पत्ति पियरे डी लैंकर के पन्नों में देख सकते हैं। ब्लॉकुला के आगंतुकों को जिस भोजन से प्रसन्न किया जाता था, उसमें शोरबा, कोलेवॉर्ट्स और बेकन होता था; ओटमील ब्रेड पर मक्खन, दूध और पनीर फैलाया जाता था। कभी-कभी वे कहते थे कि इसका स्वाद बहुत अच्छा है, और कभी-कभी बहुत बुरा। भोजन के बाद वे नृत्य करने जाते थे, और यह इन उत्तरी चुड़ैलों के विश्रामदिनों की एक ख़ासियत थी, कि नृत्य के बाद आमतौर पर लड़ाई होती थी।

एल्फडेल के लोगों ने कबूल किया कि शैतान उनके सामने वीणा बजाता था। इन उत्तरी चुड़ैलों की एक और ख़ासियत यह थी कि शैतान के साथ उनके संभोग से बच्चे पैदा हुए, और इन बच्चों ने एक साथ विवाह करके टोड और सांपों के माता-पिता बन गए। स्वीडन की चुड़ैलें कम खतरनाक लगती थीं खुद को स्वीकार करते हुए, ऐसा लगता है कि उनके द्वारा की गई शरारत का कोई सबूत नहीं है।

उन्होंने कबूल किया कि उन्हें शैतान से वादा करना पड़ा था कि वे सभी तरह की शरारतें करेंगे, और शैतान ने उन्हें दूध दुहना सिखाया, जो इस तरह से था। वे दीवार में एक चाकू लगाते थे, और उस पर एक तरह का लेबल लटकाते थे, जिसे

वे बनाते और रगड़ते थे; और जब तक यह चलता रहा, जिन लोगों पर उनका अधिकार था, वे बुरी तरह से पीड़ित थे, और जानवरों को इस तरह से दूध पिलाया जाता था, जब तक कि कभी-कभी वे इससे मर नहीं जाते थे।

एक महिला ने कबूल किया कि शैतान ने उसे एक लकड़ी का चाकू दिया था, जिसके साथ, घरों में जाकर, वह उस चीज़ को मार सकती थी जिसे वह छूती थी; फिर भी बहुत कम लोग थे जो कबूल कर सकते थे कि उन्होंने किसी पुरुष या महिला को चोट पहुँचाई थी। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने किसी बच्चे की हत्या की है, तो उन्होंने कबूल किया कि उन्होंने वास्तव में कई बच्चों को सताया है, लेकिन उन्हें नहीं पता कि उनमें से कोई इन विपत्तियों से मरा है या नहीं, हालाँकि उन्होंने कहा कि शैतान ने उन्हें कई जगहें दिखाई थीं जहाँ उसे शरारत करने की शक्ति थी।

एल्फडेल के मंत्री ने घोषणा की कि एक रात ये चुड़ैलें, उसके विचार से, उसके सिर के मुकुट पर थीं, और तब से उसके सिर में लंबे समय तक दर्द बना रहा। और इस पर चुड़ैलों में से एक ने कबूल किया कि शैतान ने उसे उस मंत्री को पीड़ा देने के लिए भेजा था, और उसे एक कील का उपयोग करने और उसके सिर में ठोकने का आदेश दिया गया था, लेकिन उसकी खोपड़ी इतनी कठोर थी कि कील उसे छेद नहीं पाई, और केवल सिरदर्द पैदा कर रही थी।

कठोर दिमाग वाले मंत्री ने आगे कहा कि एक रात उसे ऐसा दर्द महसूस हुआ जैसे उसे सन की कंघी करने वाले उपकरण से फाड़ दिया गया हो, और जब वह जागा तो उसने किसी को खिड़की पर खरोंचने और खुरचने की आवाज़ सुनी, लेकिन कोई नहीं देख सका; और चुड़ैलों में से एक ने कबूल किया कि वह वह व्यक्ति थी जिसने उसे इस तरह परेशान किया था। मोहरा के मंत्री ने यह भी बताया कि एक रात इनमें से एक चुड़ैल उसके घर में घुसी और उसने इतनी जोर से उसका गला पकड़ लिया कि उसे लगा कि उसका गला घोंट दिया जाना चाहिए था और जब वह जागा तो उसने उस व्यक्ति को देखा जिसने यह किया था, लेकिन वह उसे पहचान नहीं सका और कुछ हफ्तों तक वह न तो बोल पाया और न ही ईश्वरीय सेवा कर पाया।

एल्फडेल की एक बूढ़ी महिला ने कबूल किया कि शैतान ने उसे एक कील बनाने में मदद की थी, जिसे उसने एक लड़के के घुटने में ठोंक दिया, जिसके कारण लड़का लंबे समय तक लंगड़ा रहा। और उसने यह भी कहा कि न्याय के हाथों उसे जलाए जाने या मृत्युदंड दिए जाने से पहले ही लड़का ठीक हो जाएगा।

इन चुड़ैलों द्वारा कबूल की गई एक और घटना यह थी कि शैतान ने उन्हें एक जानवर दिया था, जो बिल्ली के आकार और आकार का था, जिसे वे वाहक कहते थे; और एक पक्षी जो कौवे जितना बड़ा था, लेकिन सफेद था; और इन्हें वे कहीं भी भेज सकते थे, और जहाँ भी वे आते थे, वे सभी प्रकार के भोजन, जैसे मक्खन, पनीर, दूध, बेकन और सभी प्रकार के बीज, ले जाते थे और उन्हें चुड़ैल के पास ले जाते थे। पक्षी जो लाता था, वे उसे अपने लिए रख लेते थे, लेकिन वाहक जो लाता था, उसे वे ब्लॉकुला ले जाते थे, जहाँ महा-दानव उन्हें उतना ही देता था, जितना उसे अच्छा लगता था।

उन्होंने कहा कि वाहकों ने कई बार खुद को इतना भर लिया था, कि उन्हें रास्ते में ही इसे उगलना पड़ा, और जो उन्होंने इस तरह से किया, वह जमीन पर गिर गया, और कई बगीचों में पाया जाता है जहाँ कोलेवॉर्ट उगते हैं, और चुड़ैलों के घरों से बहुत दूर। यह सोने की तरह पीले रंग का था, और इसे चुड़ैलों का मक्खन कहा जाता था। इस असाधारण भ्रम के बारे में, जहाँ तक वे अब प्राप्त किए जा सकते हैं, विवरण इस प्रकार के हैं, इस तरह का एकमात्र ऐसा भ्रम जो हमें ज्ञात है कि 'जादू टोने के युग' के दौरान यूरोप के उत्तरी भाग में हुआ था।

अन्य देशों में हम आम तौर पर किसी विशेष कारण का पता लगा सकते हैं जिसने इस तरह के बड़े उत्पीड़न को जन्म दिया, लेकिन यहाँ, जैसा कि कहानी में बताया गया है, हमें कोई कारण नहीं दिखता, क्योंकि यह शायद ही संभव है कि आरोपों की ऐसी अजीब श्रृंखला छोटे बच्चों के एक समूह द्वारा अनैच्छिक रूप से बनाई गई हो। एल्फडेल और मोहरा के दो पादरियों ने इसमें जो अजीब भूमिका निभाई, उससे संदेह पैदा होता है कि वे थे इस मनगढ़ंत कहानी से बिलकुल भी अनजान नहीं थे।
वे अंधविश्वासी कमज़ोर लोग लगते थे और शायद वे दक्षिण की जादू-टोने की किताबें पढ़ते रहे होंगे जब तक कि उन्हें नहीं लगा कि उनके आस-पास का देश इन हानिकारक प्राणियों से भरा हुआ है। मोहरा की कार्यवाही ने पूरे स्वीडन में इतनी दहशत फैला दी कि सभी चर्चों में शैतान के जाल से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने का आदेश दिया गया, जिसके बारे में माना जाता था कि उसे उस राज्य में छोड़ दिया गया था। अचानक राजा के एक नए आदेश ने पूरी प्रक्रिया को रोक दिया और मामले को रहस्यमय तरीके से समाप्त कर दिया गया।

ऐसा कहा जाता है कि डायन के खिलाफ मुकदमा इतना तीव्र हो गया था कि समाज में उच्च वर्ग के लोगों पर आरोप लगाए जाने लगे और फिर राजा से शिकायत की गई और उन्हें रोक दिया गया। शायद दोनों पादरी स्वयं चिंतित हो गए थे, लेकिन एक बात तो तय है कि जिस क्षण आयोग को रद्द कर दिया गया और उत्पीड़न बंद हो गया, उसके बाद चुड़ैलों के बारे में कोई बात नहीं सुनी गई।

312. अध्यात्मवाद : - 1843 में दक्षिणी स्वीडन में धर्मोपदेश की महामारी फैली, जो एननेइटियोसर को उनके जादू के इतिहास में एक दिलचस्प अंश के लिए सामग्री प्रदान करती है। इसकी अभिव्यक्ति अन्यत्र वर्णित लोगों के चरित्र के समान थी, इसलिए इसका विस्तार से उल्लेख करना अनावश्यक है। 1878 के लंदन मीडियम एंड डे ब्रेक में एक लेखक ने लिखा: "लगभग डेढ़ साल हो गया है जब से मैं स्टॉकहोम से अपना निवास स्थान बदलकर यहाँ आया हूँ, और इस अवधि के दौरान यह आश्चर्यजनक है कि स्वीडन में अध्यात्मवाद ने कैसे अपनी ज़मीन बनाई है।

प्रमुख पत्र, जो मेरे समय में अध्यात्मवाद पर कोई भी लेख प्रकाशित करने से मना कर देते थे, सिवाय उन लेखों के जो सिद्धांत का उपहास करते थे, ने हाल ही में इस मामले की गंभीर चर्चा के लिए अपने कॉलम खोल दिए हैं। इस प्रकार कई गुप्त अध्यात्मवादी, उस राक्षस, सार्वजनिक उपहास, जो हमारे कई भाइयों को डराता है, के भय में बिना किसी भय के अपने विचारों को प्रचारित करने के लिए प्रोत्साहित हुए हैं। एलन कार्डेक की कई रचनाओं का स्वीडिश में अनुवाद किया गया है, जिनमें से मैं वाल्टर जोचनिक द्वारा स्वीडिश में विशेष रूप से अच्छी तरह से प्रस्तुत की गई उनकी इवैंजिल स्कियन ले स्पिरिटिज्म का उल्लेख कर सकता हूँ।

पिछले अप्रैल की पहली तारीख को स्टॉकहोम में एक आध्यात्मिक पुस्तकालय खोला गया, जो निस्संदेह आध्यात्मिकता के प्रसार में बहुत योगदान देगा। धन्य सिद्धांत। श्री एग्लिनटन की स्टॉकहोम यात्रा इस उद्देश्य के लिए सबसे अधिक लाभकारी रही। हमें आशा है कि श्रीमती एस्परेंस का स्वीडन के दक्षिण में रहना भी उतना ही लाभकारी होगा। पड़ोसी देश में इस उद्देश्य की इतनी प्रगति के बावजूद। यहाँ अध्यात्मवाद को पागलपन जैसा कुछ माना जाता है, लेकिन यहाँ भी पतली, बहुत पतली किरणें हैं, और बहुत दूर-दूर तक फैली हुई हैं, जो अंधकार को भेदने का प्रयास कर रही हैं।

नॉर्वे में, आधुनिक यूरोप में ज्ञात अध्यात्मवाद, लगभग 1880 तक अस्तित्व में नहीं आया था। उस वर्ष प्रकाशित डॉन ऑफ़ लाइट के अंक में एक लेखक ने कहा: "नॉर्वे में अध्यात्मवाद अभी अपने अस्तित्व का संकेत देना शुरू कर रहा है। समाचार-पत्रों ने इसे एक भ्रम के रूप में हमला करना शुरू कर दिया है और हाल ही में लंदन के 38, ग्रेट रसेल स्ट्रीट में हुई श्रीमती €. की 'पर्दाफाश' ने स्कैंडिनेविया के सभी समाचार-पत्रों में जगह बना ली है। आखिरकार, इसे जल्द ही या बाद में दुनिया के अन्य भागों की तरह जड़ जमानी ही होगी। अंग्रेजी

माध्यम श्री एग्लिंटन ने स्टॉकहोम में एक अच्छा काम किया है, जिसमें उन्होंने कुछ महान विद्वानों को एक नई दुनिया दिखाई है;

और कुछ साल पहले श्री स्लेड ने कोपेनहेगन का दौरा किया था। लीपज़िग के महान खगोलशास्त्री श्री ज़ोलनर के कार्यों का उल्लेख समाचार-पत्रों में किया गया है और इसने काफी सनसनी पैदा की है।" माध्यमों में कई हैं यहाँ, लेकिन अभी तक सभी बोलने से डरते हैं। कोई दोनों हाथों से लिखता है; एक सज्जन एक चित्रकारी माध्यम के रूप में विकसित हो रहे हैं।

एक किसान, जो लगभग पाँच साल पहले मर गया था, और यहाँ से बहुत दूर नहीं रहता था, एक उत्कृष्ट उपचार माध्यम था; उसका नाम नुड था, और लोगों ने उसे वाइस नुड (बुद्धिमान व्यक्ति) का उपनाम दिया था नुड) ; जब वह किसी रोगी को छूता था तो उसे पता चल जाता था कि उसका इलाज हो सकता है या नहीं, और कई बार, गंभीर मामलों में, बीमार व्यक्ति का दर्द उसके शरीर से होकर गुजरता था। वह एक श्रवण माध्यम भी था, जो लोगों को कई बार यह बताकर चौंका देता था कि भविष्य में क्या होने वाला है; लेकिन बेचारे को अपने आस-पास की अज्ञानता और कट्टरता से बहुत पीड़ा हुई, और कई बार उसे जेल में डाला गया।

(मैं लोगों को हमारे महान उद्देश्य से परिचित कराने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा हूँ।" 1881 में दूसरा और अधिक आशापूर्ण पत्र, रिव्यू स्पिरिट के संपादक को संबोधित करते हुए, इस प्रकार है: - "मेरे प्यारे भाइयों, - यहाँ हमारा विज्ञान बिना शोर के आगे बढ़ता है। हमारे बीच एक उत्कृष्ट लेखन माध्यम विकसित हुआ है, जो एक साथ दोनों हाथों से लिखता है; जबकि हमारे पास एक कमरे में संगीत है जहाँ कोई संगीत वाद्ययंत्र नहीं है; और जहाँ एक पियानो है वह अपने आप बजता है।
बर्गन में, जहाँ मैं हाल ही में गया था, मैंने ऐसे माध्यम पाए, जो अंधेरे में, रेखाचित्र बनाते थे - वे दोनों हाथों का उपयोग करके भी डेसिनेटर थे। मैंने यह भी देखा है, खुशी के साथ कि साहित्य और विज्ञान के कई लोगों ने हमारे विज्ञान की भावना की जाँच शुरू कर दी है। बर्गन के पादरी एकहॉफ ने दूसरी बार आध्यात्मिकतावाद, शैतान के इस उपकरण, इस मनोविज्ञान के खिलाफ प्रचार किया है; और अपने उपदेश को और अधिक महिमा देने के लिए उन्होंने इसे छापने की कृपा की;

इसलिए हम देखते हैं कि आत्माएँ काम कर रही हैं। लंदन में माध्यम, मैडम एफ. के खिलाफ मुकदमा, क्रिश्चियनिया के अखबारों में घूम रहा है; ये पत्रिकाएँ, जब अवसर मिलता है, तो अध्यात्मवाद का उपहास करने के लिए अपने कॉलम

खोलती हैं। हालाँकि, हम सत्य के मित्र हैं, लेकिन हमारे बीच एक अलग स्वभाव के खुजली वाले भेड़ हैं। स्टॉकहोम से वे मुझे लिखते हैं कि वहाँ आध्यात्मिक कार्यों का एक पुस्तकालय खोला गया है, और उन्हें न्यूकैसल से एक माध्यम मिलना है, जिसके साथ सत्र आयोजित किए जाने हैं।"

मई, 1885 के लंदन स्पिरिचुअल मैगज़ीन में स्वीडिश अध्यात्मवाद पर विलियम हॉविट द्वारा एक लंबा और दिलचस्प पेपर है, जिसमें उन्होंने स्वीडन में अभूतपूर्व आध्यात्मिक अभिव्यक्तियों के बारे में आख्यानों का एक उल्लेखनीय संग्रह दिया है, जिनमें से अधिकांश एक प्रतिष्ठित और विद्वान स्वीडिश सज्जन-काउंट पाइपर द्वारा प्रस्तुत किए गए थे। जनता भूत-प्रेत, प्रेत, भविष्यवाणी आदि की कहानियों से इतनी पूरी तरह से तृप्त हो गई है कि काउंट पाइपर के आख्यानों में कुछ ही, यदि कोई रुचि की विशेषताएँ हैं, तो केवल एक दावे के औचित्य को छोड़कर, कि अध्यात्मवाद हर जगह मानव अनुभव में व्याप्त है, भले ही यह एक सार्वजनिक आंदोलन के समान रूप न ले, जैसा कि इसने अमेरिका और इंग्लैंड में किया है।

1864 की शुरुआत में, कई बेहतरीन प्रमुख लेख इस विश्वास की सराहना करते हैं कि आध्यात्मिक मंत्रालय, और ऐसी घटनाओं का अध्ययन जो "दो दुनियाओं" के बीच संवाद को बढ़ावा देगा, स्वीडन में प्रसारित सबसे लोकप्रिय पत्रिकाओं में से एक, आफ़्टन ब्लैड के स्तंभों में दिखाई दिया।

313.जादू टोना.—जादू टोना और टोना टोटका प्राचीन ऐतिहासिक और पारंपरिक समय में प्रचलित था, ऐसा कहा जाता है कि दूसरी शताब्दी में नाथोयोकस के शासनकाल के दौरान आयोना में एक बहुत प्रसिद्ध चुड़ैल रहती थी, और अपनी अद्भुत शक्ति के लिए इतनी प्रसिद्ध थी कि राजा ने अपने एक कप्तान को उसके पास विद्रोह के मुद्दे पर परामर्श करने के लिए भेजा, जो उस समय उसके राज्य को परेशान कर रहा था। चुड़ैल ने घोषणा की कि कुछ ही समय में राजा की हत्या कर दी जाएगी, उसके खुले दुश्मनों द्वारा नहीं बल्कि उसके सबसे पसंदीदा दोस्तों में से एक द्वारा, जिस पर उसे सबसे अधिक भरोसा था। दूत ने हत्यारे का नाम पूछा। चुड़ैल ने उत्तर दिया, "यहाँ तक कि तुम्हारे अपने हाथों से, जैसा कि इन कुछ दिनों में पता चल जाएगा।" इन शब्दों को सुनकर कप्तान इतना परेशान हो गया कि उसने उसके खिलाफ़ कटुतापूर्वक चिल्लाया। उसने कसम खाई कि वह ऐसा कोई भी दुष्ट अपराध करने से पहले उसे जलता हुआ देखेगा।

लेकिन अपने मन में मामले की सावधानीपूर्वक समीक्षा करने के बाद, वह इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यदि उसने चुड़ैल की भविष्यवाणी के बारे में राजा को

बताया, तो राजा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए उसे मौत की सजा दे सकता है, इसलिए उसने नैथोलोकस को अपने निजी कक्ष में बुलाया और खंजर से उस पर हमला करके उसे मार डाला। लगभग 388 वर्ष में शैतान सेंट पैट्रिक की धर्मनिष्ठता से इतना क्रोधित हुआ कि उसने स्कॉटलैंड में चुड़ैलों के पूरे समूह द्वारा संत पर हमला कर दिया। सेंट पैट्रिक आयरलैंड के लिए एक छोटी नाव में सवार होकर क्लाइड भाग गया।

चूंकि चुड़ैलें बहते पानी के ऊपर अपने शिकार का पीछा नहीं कर सकतीं, इसलिए उन्होंने भागते हुए संत के पीछे एक बड़ा पत्थर फेंका, जो हालांकि जमीन पर सुरक्षित रूप से गिरा, और जिसके बारे में परंपरा कहती है कि अब डंबर्टन रॉक बन गया है। चुड़ैलों का उत्पीड़न इतिहास के सबसे काले अध्यायों में से एक है। सभी वर्ग। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों ने समान उत्साह के साथ धर्मयुद्ध का अनुसरण किया, निस्संदेह निर्गमन xxii., 18 के मार्ग से प्रेरित होकर। जबकि यह सबसे अधिक संभावना है कि जादू टोना और टोना करने वालों में से अधिकांश कमजोर दिमाग और कमजोर बुद्धि के थे, फिर भी बड़ी संख्या में लोगों ने अपने पड़ोसियों को डराने और जबरन वसूली के उद्देश्य से कथित कला को अपनाया।

चुड़ैलों को अपने शरीर और आत्मा को शैतान को बेचने के लिए माना जाता था। कहा जाता है कि इस समारोह में शैतान के सामने घुटने टेकना, एक हाथ उसके सिर पर और दूसरा उसके पैरों के नीचे रखना और बीच में सब कुछ शैतान की सेवा में समर्पित करना और बपतिस्मा का त्याग करना शामिल है। इसके बाद चुड़ैल को सुधार के लिए अक्षम माना जाता था। किसी भी संप्रदाय का कोई भी मंत्री उसके लिए मध्यस्थता या प्रार्थना नहीं करता था। समझौते पर मुहर लगाने के बाद शैतान ने उस पर अपना निशान लगाना शुरू कर दिया।

1705 में ग्लैडस्मियर के मंत्री श्री बेल ने "चुड़ैलों के निशान" पर लिखते हुए कहा:
•• चुड़ैलों का निशान कभी-कभी एक फुंसी जैसा होता है, या एक छोटी सी पूंछ, या लाल धब्बे, जैसे कि पिस्सू के काटने के निशान, कभी-कभी मांस अंदर धंसा हुआ और खोखला होता है और इसे गुप्त स्थानों पर लगाया जाता है, जैसे कि सिर के बालों के बीच, या भौंहों के बीच, होठों के भीतर, बगलों के नीचे और यहाँ तक कि शरीर के सबसे गुप्त भागों में।" एबरफॉयल के श्री रॉबर्ट किर्क ने अपने सीक्रेट कॉमनवेल्थ में कहा: "मैंने एक छोटा सा तिल देखा है, सींग वाला, और भूरे रंग का, जिस निशान को जब एक बड़ी पीतल की पिन को (नितंब, नाक और मुंह की छत दोनों में) घुसाया जाता था, ;

तब तक वह निशान झुकता (मुड़ा हुआ) और टेढ़ा हो जाता था, चुड़ैलों, पुरुषों और महिलाओं दोनों को न तो दर्द महसूस होता था और न ही खून बहता था, न ही उन्हें पता था कि यह उनके साथ कब हुआ (उनकी आँखें केवल दिखाई दे रही थीं) कई मामलों में निशान अदृश्य था, और चूंकि यह माना जाता था कि इसे चुभाने से कोई दर्द नहीं होता, इसलिए ऐसे लोगों का एक समूह खड़ा हो गया जो इस काम में बहुत कुशल होने का दिखावा करते हुए खुद को "चुड़ैल चुभाने वाले" के रूप में स्थापित कर रहे थे और उनका काम चुड़ैलों की खोज करना और उनका पता लगाना था।

इस्तेमाल की गई विधि अत्यंत बर्बर थी। अपने शिकार को नंगा करके और बांधकर चुड़ैल चुभाने वाला शरीर के हर हिस्से में अपनी सुइयों को घुसाता था। जब पीड़ित थकावट और पीड़ा से थककर चुप हो गया, तो चुड़ैल चुभाने वाले ने घोषणा की कि उसने निशान खोज लिया है। पता लगाने के लिए एक और परीक्षण पानी से परीक्षण था। संदिग्धों के हाथ और बड़े पैर एक साथ बांध दिए गए, एक चादर में लपेटे गए और एक गहरे तालाब में फेंक दिए गए।

जिन मामलों में शव तैरता था, बपतिस्मा के पानी से आरोपी को छोड़ दिया जाता था, जबकि जो लोग नीचे डूब गए थे उन्हें दोषमुक्त कर दिया गया था, लेकिन बचाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। जब कबूलनामा मांगा जाता था तो सबसे भयानक यातनाओं का सहारा लिया जाता था, लोहे से जलाना आम तौर पर अंतिम यातना होती थी। कुछ मामलों में एक शैतानी युक्ति जिसे "चुड़ैलों की लगाम" कहा जाता था, का इस्तेमाल किया जाता था।

"लगाम" पीड़ित के सिर को घेर लेती थी जबकि मुंह में एक लोहे का टुकड़ा ठूंस दिया जाता था जिससे जीभ, तालू और गालों में छेद हो जाता था। निष्पादन के मामलों में, पीड़ित को आम तौर पर सीधा किया जाता था चुड़ैलों पर कई तरह के अपराधों का आरोप लगाया जाता था। एक आम अपराध दुधारू पशुओं को बहला-फुसलाकर उनका दूध खराब करना, या दूध की आपूर्ति कम करना, तूफान खड़ा करना, कब्रों से बच्चों को चुराना और कई तरह की बीमारियों को बढ़ावा देना था। एक लोकप्रिय तरीका था अपने शिकार की मोम की मूर्ति बनाना, उसमें पिन चुभाना और उसे गर्म लोहे से दागना, जिससे उनका शिकार यह सब महसूस करता और अंततः दम तोड़ देता।

पालतू जानवरों पर वे बुरी नज़र डालती थीं, जिससे वे दुर्बल हो जाते थे और भोजन लेने से मना कर देते थे, जब तक कि उनकी मृत्यु नहीं हो जाती। जो लोग उन पर विश्वास करते थे और उनकी शक्ति को स्वीकार करते थे, उनके लिए चुड़ैलों को अपनी शक्तियों का उपयोग अच्छे कामों के लिए करना चाहिए था,

बीमारी को ठीक करना और समृद्धि लाना। चुड़ैलों की एक साप्ताहिक बैठक होती थी, जिसमें शैतान अध्यक्षता करता था, हर शनिवार को जिसे आम तौर पर "चुड़ैलों का सब्बाथ" कहा जाता था, उनकी बैठकें आम तौर पर उजाड़ जगहों या खंडहर चर्चों में होती थीं, जहाँ वे झाड़ू पर सवार होकर हवा में सवार होकर जाती थीं।

यदि उनके आगमन पर शैतान मौजूद नहीं होता, तो वे उसे देवदार की लकड़ी से धरती पर पीटकर बुलाते थे और कहते थे, "उठो दुष्ट चोर।" चुड़ैलों ने उसे अलग-अलग वेश में देखा; कुछ को वह हरे कपड़े पहने एक लड़के के रूप में दिखाई दिया, दूसरों ने उसे सफेद कपड़े पहने देखा, जबकि दूसरों को वह काले घोड़े पर सवार दिखाई दिया। एक नकली उपदेश देने के बाद, उसने एक दरबार लगाया जिसमें चुड़ैलों को सप्ताह के दौरान अपने कामों का पूरा विवरण देना था। जो लोग पर्याप्त बुराई नहीं कर पाए थे, उन्हें उनकी अपनी झाड़ू से पीटा गया, जबकि जो अधिक सफल रहे थे उन्हें जादुई हड्डियों से पुरस्कृत किया गया।

कार्यवाही एक नृत्य के साथ समाप्त हुई, जिस संगीत को शैतान ने अपने बैगपाइप पर बजाया। रॉबर्ट बर्न्स ने अपनी टेल ऑफ़ टार्नोस्कैंटर में इस तांडव का एक विस्तृत विवरण दिया है। कैंडलमास, बेल्टेन और हेलो-ईव पर बड़ी वार्षिक सभाएँ होती थीं। ये एक अंतरराष्ट्रीय चरित्र के थे, जिसमें सभी देशों की जादूगरनी बहनें एकत्रित होती थीं, जिन्हें समुद्र पार करना होता था, वे अंडे के छिलके के बजरों में यात्रा करते थे, जबकि उनकी हवाई यात्राएँ जादुई लगाम वाले भूत के घोड़ों पर होती थीं।

जादू-टोने को सबसे पहले स्कॉटलैंड में कानून द्वारा निपटाया गया था, जब 1563 में क्वीन मैरी की संसद में पारित एक क़ानून द्वारा यह अधिनियमित किया गया था: "कोई भी व्यक्ति या व्यक्ति, चाहे वह किसी भी तरह की संपत्ति, डिग्री या स्थिति का हो, किसी भी समय जादू-टोना, टोना-टोटका या भूत-प्रेत के किसी भी तरीके का इस्तेमाल करने के लिए हाथ नहीं उठाएगा, मौत की सजा के तहत, साथ ही उपयोगकर्ता, दुर्व्यवहार करने वाले के खिलाफ़, परामर्श की प्रतिक्रिया के साधक के रूप में निष्पादित किया जाएगा।" महान सुधारक, जॉन नॉक्स पर स्कॉटलैंड के कैथोलिकों द्वारा एक प्रसिद्ध जादूगर होने का आरोप लगाया गया था और सेंट एंड्रयूज के चर्चयार्ड में जादू-टोने से संतों को उठाया था, जब शैतान स्वयं प्रकट हुआ और नॉक्स के सचिव को इतना भयभीत कर दिया कि वह पागल हो गया और मर गया। नॉक्स पर यह भी आरोप लगाया गया था कि अपने बुढ़ापे में अपनी जादुई कलाओं से उसने लॉर्ड ओचिलट्री की खूबसूरत युवा बेटी को उससे शादी करने के लिए राजी कर लिया था।

निकोल बर्न ने नॉक्स की कटु निंदा की थी कि उसने "एक खूनी राक्षस, और वह एक बूढ़ा, जीर्ण प्राणी था, जो देश में पाया जा सकता था।" एडिनबर्ग में न्यायिक न्यायालय और सर्किट न्यायालयों में जादू-टोने के लिए कई मुकदमे हुए, साथ ही स्कॉटलैंड भर के चर्चों से संरक्षित सत्र रिकॉर्ड से पता चलता है कि स्थानीय अधिकारियों और चर्च के अधिकारियों द्वारा कई मामलों का निपटारा किया गया था।

ए. जे. बी. जी. रॉजर्स ने अपनी पुस्तक सोशल लाइफ इन स्कॉटलैंड में लिखा है: *'1479 से जब पहली बार मृत्युदंड दिया गया था, तब से तीस हजार लोगों को जादू-टोने के आरोप में ग्रेट ब्रिटेन में क्रूरतापूर्वक जला दिया गया था; इनमें से एक चौथाई स्कॉटलैंड के थे। जादू-टोने के आरोप में पीड़ित लोगों में से बहुत बड़ी संख्या ने दुष्ट या अयोग्य इरादों से जादू-टोने के काम करने का दावा किया था। जब स्कॉटलैंड के जेम्स VI को वर्ष 1603 में मृत्युदंड दिया गया था, तो स्कॉटलैंड के जेम्स VI को जादू-टोने के आरोप में जला दिया गया था।

ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड की गद्दी पर बैठने के लिए बुलाए जाने पर, उनका अपना मूल राज्य एक अजीबोगरीब स्थिति में था। जेम्स खुद काफी विद्वान व्यक्ति थे, लैटिन और धर्मशास्त्र से अच्छी तरह परिचित थे, फिर भी उनकी डेमोनोलॉजी पर लिखी किताब उन्हें स्पष्ट रूप से अंधविश्वासी बताती है; और, जबकि स्कॉटलैंड में इस समय शिक्षा और यहां तक कि छात्रवृत्ति तुलनात्मक रूप से आम थी, समकालीन इंग्लैंड की तुलना में पैरों में अधिक आम थी, स्कॉटिश लोगों का बड़ा हिस्सा चुड़ैलों और इस तरह की चीजों से अपने संप्रभु के डर को साझा करता था।

नॉक्स और उनके साहसी साथियों के प्रयासों ने, यह सच है, स्कॉटिश जीवन में कई बदलाव लाए थे, लेकिन अगर सुधार ने कुछ अंधविश्वासों को खत्म कर दिया, तो निस्संदेह इसने अन्य अंधविश्वासों को भी पेश किया। उस कठोर कैल्विनवादी विश्वास के लिए, जो अब स्कॉटलैंड में जड़ जमाने लगा था, इस विचार को पोषित किया कि बीमारी और दुर्घटना ईश्वरीय क्रोध का संकेत हैं, और यह सिद्धांत राजा जेम्स के दिनों के बहुत बाद तक उत्तर में आम नहीं रहा। यह अफ़सोस की बात है कि शाही लेखक ने ऊपर उल्लेखित विचित्र ग्रंथ में, अपने शासनकाल के दौरान स्कॉटलैंड में पनपने वाले जादू के चिकित्सकों के बारे में बहुत कम सटीक तथ्य दिए हैं। लेकिन सूचना के अन्य स्रोत संकेत देते हैं कि ये लोग बहुत अधिक संख्या में थे, और जबकि एलिज़ाबेथ-इंग्लैंड में, दयापूर्वक फांसी की प्रक्रिया द्वारा चुड़ैल को मौत की सजा देने का रिवाज़ था, जैकोबीन स्कॉटलैंड में कठोर उपाय करना आम बात थी।

संक्षेप में, पीड़ित को खंभे पर जला दिया जाता था; और यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि ईस्ट लोथियन काउंटी में नॉर्थ बेरविक लॉ पर, आज भी एक लंबा पत्थर खड़ा है, जो स्थानीय परंपरा के अनुसार, पहले इस भयानक व्यवसाय के लिए इस्तेमाल किया जाता था। फिर भी यह मानना गलत होगा कि चुड़ैलों और जादूगरों को, हालांकि कभी-कभी कठोर तरीके से व्यवहार किया जाता था, सार्वभौमिक घृणा के साथ देखा जाता था; सत्रहवीं शताब्दी में स्कॉटलैंड में चिकित्सा और जादू साथ-साथ चलते थे, और शारीरिक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति, विशेष रूप से ऐसी बीमारी जिसका कारण वह नहीं समझ सकता था, बहुत कम ही खुद को किसी पेशेवर जोंक के भरोसे छोड़ता था, और ऐसे व्यक्ति से परामर्श करना पसंद करता था जो अदृश्य दुनिया के साथ संपर्क से प्राप्त उपचार क्षमताओं का दावा करता हो।

हालाँकि, बाद के प्रकार के चिकित्सक आम तौर पर जहर देने की कला में विशेषज्ञ होते थे; और, जबकि कई इलाजों का श्रेय उन्हें दिया जाता है, विपरीत दिशा में उनकी जीत कहीं अधिक रही होगी। इस प्रकार हम पाते हैं कि जुलाई, 1702 में, मसलबर्ग के एक निश्चित जेम्स रीड को मुकदमे में लाया गया, न केवल चमत्कारी इलाज करने के लिए, बल्कि एडिनबर्ग के एक बेकर डेविड लिबर्टन की हत्या की साजिश रचने के लिए भी। यह डेविड और उसका परिवार, जैसा कि पता चलता है, एक पड़ोसी घराने, क्रिस्टी के कट्टर दुश्मन थे, और समय के साथ उनका झगड़ा मोंटेग्यू और कैपुलेट्स के बीच के झगड़े जितना भयंकर हो गया; इसलिए क्रिस्टी ने कसम खाई कि वे इस मामले को समाप्त कर देंगे, और रीड के पास जाकर उन्होंने उसकी नापाक मदद की गुहार लगाई।

उसका पहला काम नौ पत्थरों को मंत्रमुग्ध करना था, जिन्हें अपराधी बेकर के खेतों पर फेंकना था ताकि उसकी फसलें नष्ट हो जाएं; जबकि रीड ने फिर कच्चे मांस के टुकड़े को मंत्रमुग्ध किया, और मोम की एक मूर्ति भी बनाई - डिजाइन की प्रकृति दर्ज नहीं है, लेकिन संभवतः लिबर्टाउन खुद को दर्शाया गया था - और श्रीमती क्रिस्टी को अपने दुश्मन के दरवाजे के नीचे मांस को धकेलने और फिर घर जाकर अपनी आग के सामने मोम को पिघलाने का आदेश दिया गया। इन निर्देशों का उसने विधिवत पालन किया, और थोड़ी देर बाद पीड़ित ने दम तोड़ दिया; लेकिन रीड को कोई नुकसान नहीं हुआ और उसके मुकदमे के बाद उसे हमेशा की तरह जिंदा जलाकर मार डाला गया।

जुलाई 1605 में पैट्रिक लोरी पर भी ऐसी ही सजा सुनाई गई, जो आयरशायर के हेलिक का निवासी था और वहां उसे "पैट द विच" के नाम से जाना जाता था, जिसे पड़ोस की अनगिनत जादूगरनियों के साथ मिलकर काम करने और शवों

को खोदकर निकालने में उनकी मदद करने का दोषी पाया गया था, जिन्हें बाद में उन्होंने विच्छेदित। निस्संदेह "एलोवे का पुराना प्रेतवाधित किर्क", बर्न्स की स्मृति के लिए पवित्र, उन लोगों में से था, जिन्हें बैंड द्वारा लाशों के लिए लूटा गया था;

फिर भी यदि अपराध एक भयानक था, तो यह हानिरहित था, और निश्चित रूप से लोरी का अंतिम भाग्य स्पष्ट रूप से एक कठिन था। दूसरी ओर, प्रेस्टनपैन की एक महिला, इसोबेल ग्रियर्सन को मार्च 1607 में एडिनबर्ग के कैसल रॉक में जलाए जाने पर न्याय से अधिक कुछ नहीं मिला; क्योंकि उसके जहर के रिकॉर्ड एक भयानक थे, जो वेनराइट या खुद सेलिनी के रिकॉर्ड से प्रतिस्पर्धा करते थे, जबकि यह भी दर्ज है कि उसने कई लोगों को केवल शाप देकर खत्म करने की कोशिश की थी।

एक अन्य जादूगरनी, लॉन्गनिड्ड्री की बेलगिस टॉड के कारनामे भी उतने ही अद्भुत थे, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति की मौत को केवल उसकी बिल्ली को मंत्रमुग्ध करके पार कर लिया था, जिससे वह नफरत करती थी। लेकिन इस सुंदर कार्यप्रणाली को पर्थशायर की एक कुख्यात चुड़ैल जेनेट इरविंग ने तिरस्कृत किया, जिसने वर्ष 1610 के आसपास एंगस काउंटी में डन के एर्स्किन के परिवार के कई सदस्यों को जहर दे दिया था। अपराधी का तुरंत पता चल गया, और उसे हमेशा की तरह सजा मिली; जबकि कुछ साल बाद मार्गरेट डीन (नी बार्कले) पर यातनाओं की एक लंबी श्रृंखला दी गई, जिसमें जलाकर मार डाला गया, जिनकी उपलब्धियां कोई सामान्य प्रकृति की नहीं थीं।

इरविन के एक बर्गेस, जॉन डीन की पत्नी, इस महिला ने अपने बहनोई, आर्चीबाल्ड के लिए एक हिंसक घृणा की कल्पना की; और एक अवसर पर, जब बाद वाला फ्रांस के लिए निकल रहा था, मार्गरेट ने उसके जहाज पर शाप फेंके, एक दिन स्टीवर्ट नाम का एक फेरीवाला जॉन डीन के घर आया और उसने घोषणा की कि घातक भविष्यवाणी विधिवत पूरी हो गई है। नगर निगम के अधिकारियों को अब इस मामले के बारे में पता चला और स्टीवर्ट को गिरफ्तार कर लिया, जिस पर उन्हें लंबे समय से जादू का अभ्यास करने का संदेह था, उन्होंने उससे जिरह शुरू कर दी। पहले तो उसने कुछ नहीं बताया, लेकिन जब यातना ने उसकी ज़ुबान खोल दी तो उसने कबूल किया कि कैसे मार्गरेट डीन के साथ मिलकर उसने दुर्भाग्यपूर्ण नाव का मिट्टी का मॉडल बनाया था और इसे एक विशेष रूप से तूफानी रात में समुद्र में फेंक दिया था।

उसके श्रोता इस खबर से भयभीत थे, लेकिन उन्होंने जादूगरनी पर हाथ डालने की जल्दी की, जिसके बाद उन्होंने उसके साथ वैसा ही व्यवहार किया जैसा कि

ऊपर उल्लेख किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह कहानी और इसके जैसी कई अन्य कहानियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होने के दौरान काफी हद तक फल-फूल रही हैं और इसमें कोई संदेह नहीं है कि जैकोबीन स्कॉटलैंड की चुड़ैलों को वास्तव में हासिल की गई जीत से कहीं अधिक जीत का श्रेय दिया जाता है।

साथ ही, जादू-टोने के इतिहास को खंगालने पर हम पाते हैं कि इसके कई अभ्यासी, जब किसी भयानक मौत का सामना करते थे, तो दृढ़ता से कहते थे कि उन्हें इस कला में दुष्ट शैतान ने या शायद परियों के एक समूह ने दीक्षा दी थी; और इस प्रकार, इन भूतपूर्व जादूगरों में जो भी क्षमताएँ थीं, यह स्पष्ट है कि उनमें वह आत्मविश्वास प्रचुर मात्रा में था जो शक्ति के रहस्यों में से एक है, और शायद किसी भी कार्य में सफलता की कुंजी है। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उस समय के सीधे-सादे, अनपढ़ लोग उनसे डरते थे; और, इन तथ्यों पर विचार करते हुए, हम जेम्स VI जैसे विद्वान व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित की गई विश्वसनीयता पर कम आश्चर्यचकित महसूस करते हैं, हम उसकी इस घोषणा पर कम आश्चर्यचकित हैं कि सभी जादूगरों को "ईश्वर के कानून, नागरिक और शाही कानून और सभी ईसाई राष्ट्रों के नगरपालिका कानून के अनुसार मौत की सजा दी जानी चाहिए।

स्कॉटलैंड में चुड़ैल का अंतिम निष्पादन 1722 में सदरलैंड में हुआ था। लोथ में रहने वाली एक बूढ़ी महिला पर अन्य अपराधों के अलावा अपनी बेटी को एक टट्टू में बदलने और शैतान द्वारा जूते पहनाने का आरोप लगाया गया था, जिससे लड़की दोनों हाथों और पैरों से लंगड़ी हो गई, एक आपदा जो उसके बेटे पर आ गई। मौत की सजा कैप्टन डेविड रॉस, शेरिफ-विकल्प द्वारा सुनाई गई थी। रॉजर्स बताते हैं: "बेचारी प्राणी को जब खंभे पर ले जाया गया तो वह अपने कारण होने वाली हलचल से अनजान थी, और अपने झुर्रियों वाले हाथों को आग में जलाकर गर्म करते हुए, उसने कहा कि वह इतनी अच्छी ब्लैक्स के लिए आभारी है।

मौत की सजा सुनाने में उसकी 'जल्दबाज़ी के लिए, शेरिफ को जोरदार तरीके से फटकार लगाई गई।" अज्ञानता और अंधविश्वास का शासन तेजी से खत्म हो रहा था। जादू टोना, अगर इसे आजकल ऐसा कहा जा सकता है, तो बदमाशों, आवारा, भाग्य बताने वालों, जुआरियों और इस तरह के चरित्रों से संबंधित कानूनों के तहत निपटा जाता है। (भाग्य बताना देखें।).

313.जादू और प्रेत विद्या : निम्न पंथ का जादू, शायद ड्र्यूडिज्म का अवशेष, स्कॉटलैंड में बाद के समय तक आम था। एडमनान के पन्नों में हम पाते हैं कि

सेंट कोलंबा और उनके पुजारी ड्र्यूड्स को जादूगर मानते थे और उन्होंने अपने खुद के एक बेहतरीन दिव्य जादू से उनके जादू का जवाब दिया। इस प्रकार एक जाति का धर्म दूसरी जाति की नज़र में जादू बन जाता है। तेरहवीं शताब्दी से पहले स्कॉटलैंड में जादू-टोने के बारे में बहुत कम जानकारी है, अगर हम इस परंपरा को छोड़ दें कि मैकबेथ का सामना तीन चुड़ैलों से हुआ था जिन्होंने उसके भाग्य की भविष्यवाणी की थी।

हमारे पास यह मानने का कोई कारण नहीं है कि थॉमस द राइमर (जिसे बाद के अंधविश्वासों ने टैनहॉसर के समान रोमांच से संपन्न किया है) एक गायक और एपिग्राम के निर्माता के अलावा कुछ और था, या कि सर माइकल स्कॉट एक विद्वान और साहित्यकार के अलावा कुछ और था। जादू-टोने के काम करने वाले बहुत थे, लेकिन वे अस्पष्ट थे, और यद्यपि वे अक्सर लेडी ग्लैमिस और लेडी फाउलिस जैसे कुलीन जन्म के थे, लेकिन संभवतः बहुत अज्ञानी व्यक्ति थे।

हमें बाद के मध्य युग में स्कॉटिश दानव विज्ञान की एक झलक मिलती है, जिसे एडिनबर्ग के पास कॉर्स्टॉर्फिन के एक पुजारी "द कर्सिंग ऑफ सर जॉन रॉल" के रूप में जाना जाता है, जो शायद पंद्रहवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही का है। यह कुछ ऐसे लोगों के खिलाफ एक अपमानजनक बात है, जिन्होंने उसके पोल्ट्री-यार्ड पर हमला किया है, जिस पर पुजारी दैवीय प्रतिशोध का आह्वान करता है।

दुष्टों को पीड़ा देने वाले राक्षस हैं: गारोग, हारोग, सिम स्काइनर, डेवेटिनस "शैतान जिसने डायस की दासी बनाई", फायरमाउथ, कोकाडेम, टुटीविलस, ब्राउनव और सीर गरनेगा, जो गिरनिगो के समान हो सकते हैं, जिनके साथ अक्सर स्कॉटिश कामकाजी वर्ग की नाराज माताओं द्वारा क्रॉस बच्चों की तुलना की जाती है, जैसे कि "एह, तुम एक छोटे गिरनिगो हो" और स्कॉटिश क्रिया, **गिरन, की उत्पत्ति मध्ययुगीन शैतान के नाम से हो सकती है, जो अप्रिय गुणों वाले कुछ ट्यूटनिक या सेल्टिक देवता की अंतिम छाया है।

सिम स्काईनार में, हमारे पास स्काईर्निर हो सकता है, एक नॉर्स विशालकाय जिसके दस्ताने में थोर को भूकंप से आश्रय मिला, और जिसने उसे और उसके साथियों को बेवकूफ बनाया। स्काईर्निर, निश्चित रूप से, जोटुन या नॉर्स टाइटन्स में से एक था, और शायद सर्दियों की शक्तियों में से एक; और उसे ** सिम "का लोकप्रिय उपनाम उसी तरह मिला होगा जैसे हम जैक" फ्रॉस्ट के बारे में बोलते हैं। स्कॉटिश पौराणिक कथाओं और दानव विज्ञान के छोटे-छोटे पात्रों को खोजने में अभी भी बहुत कुछ किया जाना है, और यहाँ तक कि बड़े लोगों को भी उतना ध्यान नहीं मिला है जितना उन्हें मिलना चाहिए।

उदाहरण के लिए, एडिनबर्ग के पास एक मछली पकड़ने वाले जिले न्यूहेवन में, हम ब्रूंगर नामक एक शैतान में प्रचलित विश्वास पाते हैं, जिसे एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो स्थानीय मछुआरों पर मछलियों और सीपों का टोल लगाता है। यदि वह इनसे संतुष्ट नहीं होता है, तो वह उन लोगों से बदला लेता है जो उसे आपूर्ति करने में विफल रहते हैं।

उसे "एक चकमक पत्थर और एक चकमक पत्थर का बेटा" के रूप में भी वर्णित किया गया है, जो निर्णायक रूप से साबित करता है कि, थोर और एशिया और अमेरिका के कई अन्य देवताओं की तरह, वह एक गड़गड़ाहट या मौसम का देवता था। वास्तव में उनका नाम संभवतः एक प्राचीन स्कैंडिनेवियाई शब्द का अपभ्रंश मात्र है जिसका अर्थ है "प्रहार करना", जो अभी भी स्कॉटिश अभिव्यक्ति में "एक ब्रींज बनाने" के लिए जीवित है। व्यावहारिक जादू के उदाहरणों पर लौटते हुए, एक भयानक और मनोरम किंवदंती बताती है कि कैसे सर लुईस बेलेंडेन, सत्र के एक स्वामी, और एडिनबर्ग के पास ब्रॉटन के बैरोनी के सुपीरियर, कैनॉनगेट में अपने घर के पिछवाड़े में शैतान को पालने में एक जादूगर की सहायता से सफल हुए, कहीं- कहीं 18 वीं शताब्दी के अंत में।

चुड़ैलों का एक कुख्यात तस्कर था, जिसके साथ ब्रॉटन की उसकी बैरनशिप खत्म हो गई थी। अपनी शैतानी महिमा को व्यक्तिगत रूप से देखने की इच्छा के कारण, उसने रिचर्ड ग्राहम नामक एक व्यक्ति की सेवाएँ प्राप्त कीं। इस आह्वान के परिणाम जिज्ञासु न्यायाधीश के लिए विनाशकारी थे, जिनकी नसें पाताल लोक के भगवान की प्रेतबाधा से इतनी टूट गई थीं कि वह बीमार पड़ गए और कुछ ही समय बाद उनकी मृत्यु हो गई।

मेजर वियर का मामला स्कॉटिश जादू-टोने के इतिहास में सबसे दिलचस्प मामलों में से एक है। ** यह निश्चित है," स्कॉट कहते हैं, ** कि जादूगरी या भूत-विद्या की कोई भी कहानी, जिनमें से बहुत सी एडिनबर्ग के आस-पास और वहाँ घटित हुई, ने लोगों के मन पर मेजर वियर की तरह स्थायी प्रभाव नहीं डाला। जिस घर में वह और उसकी बहन रहते थे, उसके अवशेष अभी भी वेस्ट बो के शीर्ष पर दिखाए गए हैं, जिसका एक उदास पहलू है, जो एक भूत-विद्याकार के लिए उपयुक्त है। यह अलग-अलग समय में एक ब्रेज़ियर की दुकान और लिंट के लिए एक पत्रिका थी, और मेरे छोटे दिनों में इसका उपयोग बाद के उपयोग के लिए किया जाता था; लेकिन कोई भी परिवार निवास के रूप में प्रेतवाधित दीवारों में नहीं रहना चाहता था; और हाई स्कूल का वह बच्चा साहसी था जिसने मेजर के मंत्रमुग्ध कर्मचारियों को पुराने अपार्टमेंटों से गुजरते हुए देखने या भूत-विद्या करने वाले पहिये की गुनगुनाहट सुनने के जोखिम पर उदास खंडहर

के पास जाने की हिम्मत की, जिसने उसकी बहन के लिए एक स्पिनर जैसा चरित्र प्राप्त किया।

"इस कुख्यात जादूगर का मामला मुख्य रूप से उसके कुछ व्यक्तित्व के कारण उल्लेखनीय था। एक सज्जन व्यक्ति का बेटा और उसकी माँ क्लाइड्स डेल में एक परिवार की महिला थी), जो कि शायद ही कभी उन लोगों के साथ होता था जो इसी तरह के आरोपों के अंतर्गत आते थे। उनके मामले में यह भी उल्लेखनीय था कि वह एक अनुबंधकर्ता थे, और विशेष रूप से उस कारण से जुड़े थे। राष्ट्रमंडल के वर्षों में इस व्यक्ति पर उन लोगों द्वारा भरोसा किया जाता था और उसे काम पर रखा जाता था जो तब मामलों के प्रमुख थे, और 1649 में एडिनबर्ग के सिटी-गार्ड के कमांडर थे, जिसने उन्हें मेजर की उपाधि दिलाई।

इस क्षमता में उन्हें समझा जाता था, जैसा कि उस समय उस अधिकारी के कर्तव्यों में निहित था, ऐसे राजभक्तों पर कठोरता से अमल करने में बहुत सख्त होना जो उनके सैन्य प्रभार में आते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि मेजर, एक कुंवारी बहन के साथ, जिसने उनके घर को संभाल रखा था, उदासी पागलपन के दौरों के अधीन था, एक दुर्बलता जो धार्मिक उत्साह के उच्च प्रदर्शन के लिए उनके द्वारा किए गए औपचारिक दिखावे के साथ आसानी से सामंजस्य स्थापित कर सकती थी।

वह प्रार्थना करने में विलक्षण था और, जैसा कि उस समय की प्रथा थी, उसे अक्सर बीमार व्यक्तियों के बिस्तर के पास अपनी प्रतिभा का प्रयोग करने के लिए बुलाया जाता था, जब तक कि यह नहीं देखा गया कि किसी संगति के द्वारा, जिसे समझाना आसान नहीं है, वह उसी गर्मजोशी और अभिव्यक्ति की धाराप्रवाहता के साथ प्रार्थना नहीं कर सकता था जब तक कि उसके हाथ में अजीबोगरीब आकार और दिखावट की एक छड़ी न हो, जिसे वह आम तौर पर साथ लेकर चलता था। संक्षेप में, यह देखा गया कि जब यह छड़ी उससे ले ली गई, तो उसकी बुद्धि और प्रतिभा उसे छोड़ती हुई प्रतीत हुई। इस मेजर वियर को मजिस्ट्रेटों ने एक अजीब फुसफुसाहट पर पकड़ लिया जो कि घृणित प्रथाओं के संबंध में प्रचलित हो गई थी, जिसे उसने बिना किसी शर्म या पश्चाताप के स्वीकार किया था। उसने जो घृणित अनैतिकताएँ स्वीकार कीं, वे इस तरह की प्रकृति की थीं कि यह उम्मीद की जा सकती है कि उनमें से अधिकांश एक भ्रष्ट कल्पना के फल थे, हालाँकि वह कई मामलों में एक दुष्ट और आपराधिक पाखंडी प्रतीत होता है।

जब उसने अपना कबूलनामा पूरा कर लिया, तो उसने गंभीरता से कहा कि उसने अपने द्वारा किए गए अपराधों का सौवां हिस्सा भी कबूल नहीं किया है। इस

समय से वह किसी भी पूछताछ का जवाब नहीं देगा, न ही वह प्रार्थना का सहारा लेगा, यह तर्क देते हुए कि, चूंकि उसे शैतान से बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, इसलिए पश्चाताप के व्यर्थ प्रयासों से उसे भड़काने की कोई ज़रूरत नहीं थी। ऐसा लगता है कि उसके जादू-टोने को उसके अपने कबूलनामे के आधार पर मान लिया गया था, क्योंकि उसका अभियोग मुख्य रूप से उसी दस्तावेज़ पर आधारित था, जिसमें उसने आरोप लगाया था कि उसने कभी शैतान को नहीं देखा था, लेकिन उसके बारे में जो भी भावनाएँ उसे थीं, वे अंधेरे में थीं। * उसे मौत की सजा मिली, जिसे उसने 12 अप्रैल को भुगता,1670 में, गैलो-हिल में, लेथ और एडिनबर्ग के बीच।

वह इतने मूर्खतापूर्ण ढंग से उदास और अपश्चातापी मर गया कि यह राय सही साबित होती है कि वह एक तरह के उदासी भरे उन्माद से पीड़ित था, जो शायद पश्चाताप का परिणाम था, लेकिन ऐसा जिसने उसे पश्चाताप करने के बजाय निराशा में डाल दिया। ऐसा लगता है कि उसे जिंदा जला दिया गया था। उसकी बहन, जिसके साथ उसका अनाचारपूर्ण संबंध था, को भी मौत की सजा दी गई, जिससे उनके आपसी पापों की एक मजबूत और अधिक स्पष्ट गवाही मिली, जो मेजर से नहीं मिल सकती थी।

उसने हमेशा की तरह परियों की रानी के साथ अपने संबंधों का कुछ विवरण दिया, और असामान्य मात्रा में सूत कातने में उस संप्रभु से मिली सहायता को स्वीकार किया। अपने भाई के बारे में उसने कहा कि एक दिन दोपहर के समय एक मित्र ने उन्हें अग्नि रथ के साथ बुलाया और उन्हें दल्केथ में एक मित्र से मिलने के लिए आमंत्रित किया और वहाँ रहते हुए उसके भाई को वॉर्सेस्टर की लड़ाई की घटना की सूचना मिली। उनके अलावा किसी ने उनके हथियारों की शैली नहीं देखी। फांसी के तख्ते पर यह महिला, जैसा कि उसने कहा, "सबसे बड़ी शर्म के साथ मरने" का निश्चय कर रही थी, उसे लोगों के सामने अपने कपड़े उतारने से बड़ी मुश्किल से रोका गया और जल्लाद ने उसे सीढ़ी से नीचे फेंक दिया।

उसके अंतिम शब्द उस संप्रदाय के लहजे में थे जिससे उसका भाई इतने लंबे समय से जुड़ा हुआ था: •• उसने कहा, "बहुत से लोग मेरे जैसे गरीब बूढ़े के लिए रोते और विलाप करते हैं; लेकिन अफसोस, बहुत कम लोग एक टूटी हुई वाचा के लिए रोते हैं।"

314.हाइलैंड्स**. :** —ऐसा प्रतीत होता है कि बुतपरस्त स्कॉटलैंड पूरी तरह से परोपकारी देवताओं से रहित था। आत्मा की दुनिया के वे प्रतिनिधि जो मानव जाति के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखते थे, उन्हें या तो जादू के मंत्रों द्वारा बंदी बना

लिया गया था, या उनके पास कोई भयावह उद्देश्य था जिसके कारण वे सबसे अधिक प्रशंसनीय कपटपूर्ण कार्य करते थे। मुख्य राक्षस या देवता - कोई संकोच करता है कि उसे क्या कहा जाए - एक आँख वाली डायन थी जिसके पास जंगली भालू जैसे दाँत थे।

लोक कथाओं में उसे "बूढ़ी पत्नी" (कैयूएच), ग्रे आइब्रो ""पीला म्यूटर्टीच"" आदि के रूप में संदर्भित किया जाता है, और उसे मंत्रों का महान कार्यकर्ता माना जाता है। जाहिर है कि वह एक खोई हुई सृष्टि मिथक में शामिल थी, क्योंकि इस बात के खंडित विवरण बचे हुए हैं कि उसने कैसे पहाड़ियों को आकार दिया, झीलों को अस्तित्व में लाया और समुद्र में प्रतिशोधी संचालन द्वारा भँवरों का निर्माण किया। वह अंधकार, उजाड़ और सर्दियों की प्रेमी है।

अपने हथौड़े से वह बारी-बारी से पहाड़ों को चीरती है, घास की वृद्धि को रोकती है या तूफान उठाती है। हिरण, बकरियाँ, जंगली सूअर सहित कई जंगली जानवर उसका पीछा करते हैं। जब उसके एक बेटे को उसके द्वारा उसके प्रेम संबंधों में बाधा पहुँचाई जाती है, तो वह उसे एक पहाड़ी पत्थर में बदल देता है "समुद्र की ओर देखता हुआ/" एक ऐसा रूप जो वह गर्मियों के दौरान बनाए रखती है। सर्दियों के आने पर वह फिर से मुक्त हो जाती है।

वसंत के महीनों में डायन मछुआरों को डुबो देती है और भोजन की आपूर्ति पर शिकार करती है: वह बच्चों को भी चुरा लेती है और उन्हें अपनी गुफा में भून देती है। उसकी संतान में कई सिर और भुजाओं वाले राक्षसी दिग्गजों का झुंड शामिल है। ये लगातार मानव जाति के खिलाफ काम कर रहे हैं, घरों को गिरा रहे हैं, महिलाओं का अपहरण कर रहे हैं और बढ़ती फसलों को नष्ट कर रहे हैं। उनके खिलाफ लड़ने वाले नायकों को चुड़ैल की सहायता की आवश्यकता होती है जिसे "बुद्धिमान महिला" कहा जाता है, जिससे वे जादू की छड़ी प्राप्त करते हैं। स्कॉटिश लोक कथाओं की चुड़ैल "मनुष्य की दोस्त" है, और प्राचीन काल में उसका पेशा स्पष्ट रूप से बहुत सम्मानजनक माना जाता था।

जादूगरों को भी उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त थी; वे स्कॉटिश पैगन्स के जादूगर, पुजारी और जादूगर थे, और सोलहवीं शताब्दी तक हाइलैंड जिलों में उन्हें दबाने के लिए कानूनी कदम नहीं उठाए गए थे। स्कॉटलैंड में कोई सूर्य-पूजा या चंद्रमा-पूजा नहीं थी; गेलिक भाषा में न तो सूर्य और न ही चंद्रमा को अलग-अलग माना जाता था; हालाँकि, इन निकायों को जादुई प्रभाव डालने के लिए जाना जाता था। चंद्रमा विशेष रूप से एक "जादुई टैंक" था, जहाँ से आवश्यक समारोह करने में सक्षम लोगों द्वारा बिजली की आपूर्ति की जाती थी। लेकिन हालाँकि कोई चंद्र या सौर आत्माएँ नहीं थीं, फिर भी कई पृथ्वी और जल आत्माएँ थीं।

अंग्रेजी 'मेरी पत्नी' की तरह "जल पत्नी" एक बहुत ही खूंखार प्राणी थी जो लालच से पीड़ितों को खा जाती थी। उसे बंशी के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, वह भाग्य जिसका मुख्य व्यवसाय आपदाओं की भविष्यवाणी करना था, या तो खून से सने कपड़ों को धोकर या नदी के किनारे किसी खास चट्टान पर दस्तक देकर, या उस इलाके में जहाँ कोई बड़ी त्रासदी आसन्न थी। जल पत्नी आमतौर पर एक घाट पर एक दिवंगत यात्री के सामने खड़ा था। उसने उसे अपना होने का दावा किया और यदि उसने उसके दावे पर विवाद किया, तो उसने पूछा कि उसके खिलाफ उसके पास कौन से हथियार हैं।

असावधान व्यक्ति ने बारी-बारी से प्रत्येक का नाम लिया, और जब उसने ऐसा किया तो उसे नुकसान पहुँचाने की शक्ति समाप्त हो गई। इस चरित्र की एक कहानी है: "पत्नी उस लोहार के खिलाफ उठी जो अपने घोड़े पर सवार था, और उसने कहा, "मेरे पास तुम हो: मेरे खिलाफ तुम्हारा क्या है?" ** मेरी तलवार, "आदमी ने उत्तर दिया। "मेरे पास वह है," उसने कहा, "और क्या?" "मेरी ढाल," आदमी ने कहा। "मेरे पास वह है और तुम मेरी हो।" ** लेकिन," आदमी ने विरोध किया, "मेरे पास कुछ और है।" "वह क्या है?" जल पत्नी ने पूछा। इस प्रश्न के लिए सतर्क लोहार ने उत्तर दिया, "मेरे पास मेरी जांघ पर लंबी, ग्रे, नुकीली चीज है।"

यह उसकी तलवार थी, और इसका नाम न होने के कारण, वह इसका उपयोग करने में सक्षम था। जैसे ही उसने बात की, उसने अपनी प्लेड को जल पत्नी के चारों ओर फेंक दिया और उसे अपने घोड़े पर पीछे बिठा लिया। जादुई घेरे में बंद होने के कारण वह उसे नुकसान पहुँचाने में असमर्थ थी, और वह उसके साथ घर चला गया, उसकी विनती और वादों को अनसुना करते हुए। वह उसे अपनी लोहार की दुकान पर ले गया और उसे निहाई से बाँध दिया।

उस रात उसके बच्चे उसे छोड़ने आए। उन्होंने एक अस्थायी कीट उठाया और लोहार की दुकान की छत को उखाड़ दिया, लेकिन लोहार ने उनकी अवहेलना की। जब दिन निकला तो उन्हें पीछे हटना पड़ा। फिर उसने जल पत्नी के साथ सौदा किया, और उसने सहमति व्यक्त की कि अगर वह उसे छोड़ दे तो न तो वह और न ही उसके वंशजों में से कोई भी किसी भी तीन नदियों में डूबेगा, जिनका वह नाम बताए। उसने तीन नाम बताए और उसका वादा पूरा किया, लेकिन जब वह भाग निकली तो उसने उसे चौथी नदी की याद दिला दी। •* यह अभी भी मेरी है," उसने कहा। उस विशेष नदी में लोहार खुद अंततः मर गया।" आज तक मछुआरे न तो उन मछलियों का नाम लेते हैं जिन्हें वे प्राप्त करना

चाहते हैं और न ही उन मछलियों का जो उनके द्वारा पकड़ी गई मछलियों का शिकार करती हैं।

हैडॉक्स "सफेद पेट वाले" होते हैं, सैल्मन "लाल वाले" होते हैं, और डॉग-फिश "बड़े काले साथी" होते हैं। मछली पकड़ने वाली नाव में किसी पादरी का नाम लेना या रविवार का उल्लेख करना भी अशुभ माना जाता है - एक तथ्य जो बताता है कि शुरुआती ईसाई समय में मछुआरे जमीन पर धार्मिक चर्चमैन हो सकते थे, लेकिन जब वे समुद्र में जाते थे, तो बुतपरस्ती का अभ्यास करना जारी रखते थे, जैसे आइसलैंडिक नॉर्समेन जो मानते थे कि मसीह उनके द्वीप पर शासन करते हैं, और थोर समुद्र पर।

शुक्रवार या हैलोवीन और बेल्टेन (मई दिवस) पर परियों का नाम नहीं लिया जाना चाहिए, जब आकर्षण आग जलाई जाती थी। पृथ्वी की पूजा, या बल्कि पृथ्वी की आत्माओं का निवारण, स्कॉटिश बुतपरस्ती की एक प्रमुख विशेषता थी। फिर से जादू ने एक प्रमुख भूमिका निभाई। संधियों की पुष्टि टर्फ के एक टुकड़े पर शपथ लेकर की जाती थी, कुछ दलदली भूमि या टीले औपचारिक प्रथाओं के लिए अलग रखे जाते थे, और इन पर बच्चे पैदा करने और अन्य समारोहों के लिए जाया जाता था जो एक खड़े पत्थर पर किए जाते थे।

बीमारी के मामलों में एक भविष्यवाणी केक पकाया जाता था और एक पवित्र स्थान पर छोड़ दिया जाता था; अगर यह रात के दौरान गायब हो जाता था, तो रोगी को ठीक होने के लिए माना जाता था; अगर यह अगली सुबह तक अछूता रहता था, तो यह माना जाता था कि रोगी मर जाएगा। यह प्रथा अभी भी अप्रचलित नहीं हुई है।

पृथ्वी की आत्माओं को लगातार प्रसाद चढ़ाया जाता था। हंबी किर्क सत्र रजिस्टर (23 सितंबर, 1649) में दर्ज एक चुड़ैल परीक्षण में एक एग्नेस गौर्ले पर दूध का प्रसाद चढ़ाने का आरोप लगाया गया है, जिसमें कहा गया है, ** भगवान हमें आशीर्वाद दें; वे लोग इस क्षेत्र में हैं जिन्हें इसकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि उन लोगों को जो इस क्षेत्र से ऊपर हैं "; यानी, "भगवान हमारी भी रक्षा करें; वे धरती के नीचे हैं जिन्हें इसकी उतनी ही ज़रूरत है जितनी धरती के ऊपर रहने वालों को।"

जादुई समारोहों में धरती पर डाला जाने वाला दूध परियों के पास जाना चाहिए था। ग्रुगाच पत्थर अभी भी हाइलैंड्स में पूरी तरह से गायब नहीं हुए हैं। ये गहरे "कप" के निशान वाले सपाट पत्थर हैं। गाय का दूध निकालने के बाद, दूध दुहने वाला ग्रुगाच के लिए ज़रूरी दूध का हिस्सा एक छेद में डालता है, जो एक लंबे

बालों वाली आत्मा है जो आमतौर पर "एक सज्जन व्यक्ति की तरह कपड़े पहने रहती है।" अगर उसे कोई भेंट नहीं दी जाती है, तो दूध पर मलाई नहीं चढ़ेगी और अगर चढ़ती है तो मंथन विफल हो जाएगा। डिंगवाल, रॉस-शायर के प्रेस्बिटेरी रिकॉर्ड में इसके प्रचलन के बारे में दिलचस्प रिकॉर्ड हैं।

सत्रहवीं शताब्दी में दूध चढ़ाना और अन्य समारोहों की हिम्मत थी। जिन घृणित कामों का उल्लेख किया गया है, उनमें वे हैं जिनके लिए गैरलोच पैरिश कुख्यात रहा है - कुछ खंडहर चैपलों के पास बार-बार जाना और उनका चक्कर लगाना; और यह कि भविष्य की घटनाएँ, विशेष रूप से जीवन और मृत्यु के संदर्भ में, यात्रा करते समय, एक गोल पत्थर के छेद से प्रकट होने की संभावना थी, जिसमें वे अपने सिर को डालने की कोशिश करते थे, जिसे (यदि वे) कर पाते, तो वे उस स्थान पर वापस लौटने की उम्मीद करते थे, और असफल होने पर वे इसे अशुभ मानते थे।

भयभीत प्रेस्बिटेरी ने "कुओं और अंधविश्वासी स्मारकों और पत्थरों की पूजा" और "25 अगस्त को एक निश्चित समय पर बैलों की बलि" और "पहाड़ियों पर दूध चढ़ाने" पर भी आपत्ति जताई। द्रष्टा को आमतौर पर बलि दिए गए बैल की खाल में लपेटा जाता था और पूरी रात नदी के किनारे लेटा दिया जाता था। अंधेरे में अलौकिक प्राणी उससे मिलने आते थे और भविष्य की घटनाओं के बारे में उत्तर प्राप्त करते थे।

इस भविष्यवाणी समारोह को करने का एक और तरीका एक जीवित बिल्ली को भूनना था। बिल्ली को तब तक एक थूक पर घुमाया जाता था जब तक कि "डिग कैट" (शैतान) प्रकट नहीं हो जाता और या तो समारोह के कलाकार की इच्छा पूरी करता था या किसी प्रश्न के उत्तर में भविष्यवाणी करता था कि क्या होने वाला है। वर्तमान समय में जादू टोना, परियों, बुरी नज़र, दूसरी दृष्टि और इलाज या चोट के लिए जादुई आकर्षण के बारे में कई जीवित मान्यताएँ हैं। व्यक्तियों, पालतू जानवरों और घरों को लोहे और कुछ जड़ी-बूटियों या जामुन से जादू टोना के खिलाफ़ मंत्रमुग्ध किया जाता है।

लकड़ी के कटोरे या करछुल से "चाँदी का पानी" पीने से बुरी नज़र का असर दूर होता है। पानी किसी नदी या उच्च प्रतिष्ठा वाले कुएँ से लिया जाता है; उसमें चाँदी डाली जाती है; फिर एक ताबीज़ दोहराया जाता है, और जब इसे आग पर चढ़ाया जाता है, तो पीड़ित को पीने के लिए दिया जाता है और जो बचता है उसे चूल्हे के चारों ओर छिड़का जाता है, जो अलग-अलग जिलों में अलग-अलग होता है। उपचारात्मक ताबीज़ परिवारों में एक पुरुष से एक महिला को और एक महिला से एक पुरुष को दिए जाते हैं।

रक्त-रोकने वाले ताबीज़ों को अभी भी बहुत पवित्र माना जाता है और सबसे लगातार संग्रहकर्ता उन्हें उन लोगों से प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं जिनके बारे में बताया जाता है कि वे इनका प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सक्षम हैं। दूर से "रक्त-रोकने" के बारे में अभी भी विवरण दिए गए हैं। हालाँकि शक्ति के स्वामी के पास आमतौर पर एक पारंपरिक ताबीज़ होता है, लेकिन वह शायद ही कभी प्रार्थना किए बिना इसका उपयोग करता है। कुछ हाइलैंड डॉक्टर "रक्त-रोकने" के ऑपरेशनों के अद्भुत प्रभावों के बारे में निजी तौर पर गवाही देते हैं।

कुछ साल पहले इनवर्नेस-शायर के एक चिकित्सा अधिकारी ने काउंटी काउंसिल को अपनी आधिकारिक रिपोर्ट में कहा था कि वह "किंग्स एविल क्योरर्स" के कार्यों पर दिलचस्पी से नज़र रख रहा है, जो अभी भी पश्चिमी द्वीपों में बहुत प्रतिष्ठा रखते हैं। ये आम तौर पर "सातवें बेटे" होते हैं। "दूसरी दृष्टि" रक्त को ठीक करने और रोकने की शक्ति की तरह परिवारों में चलती है।

स्कॉटिश हाइलैंड्स में ऐसा कोई पैरिश नहीं है जिसके परिवार में एक या एक से अधिक व्यक्तियों के पास गुप्त शक्तियाँ होने की मान्यता हो। कुछ लोगों को जागते या सोते समय दर्शन होते हैं। अन्य लोग कभी-कभी अशुभ ध्वनियाँ सुनते हैं और समझ पाते हैं कि उनका क्या मतलब है। कुछ लोग कबूल करते हैं; लेकिन इस क्षमता की सराहना किए बिना, कि वे कभी-कभी, हमेशा नहीं, यह भविष्यवाणी करने में सक्षम होते हैं कि किसी व्यक्ति की जल्द ही मृत्यु होने वाली है। इस तरह के दो उदाहरण दिए जा सकते हैं। एक छोटे भाई को ठंड लग गई।

जब एक बड़ा भाई उससे मिलने आया तो उसे तुरंत पता चल गया कि युवक जल्द ही मर जाएगा, और उसने इस आशय की एक बात अपने एक मित्र को बताई। चिकित्सा राय के अनुसार रोगी जो बिस्तर पर सीमित नहीं था, उसे कोई खतरा नहीं था, लेकिन तीन महीने बाद उसे गंभीर लक्षण दिखाई दिए और अचानक उसकी मृत्यु हो गई। जब बड़े भाई को मृत्यु की सूचना दी गई तो उसे अस्थायी बीमारी थी। उसी व्यक्ति को एक मित्र के घर में एक सज्जन व्यक्ति से मुलाकात हुई और उसे भी ऐसा ही अनुभव हुआ: उसे लगा कि वह यह नहीं बता सकता कि यह व्यक्ति मृत्यु के निकट था।

अगले सप्ताह में कई बार उन्होंने सज्जन की बेटी से उसके पिता के स्वास्थ्य के बारे में पूछा और बताया गया कि वे "हमेशा की तरह" हैं। बेटी पूछताछ से हैरान थी। इस मुलाकात के दो दिन बाद, संबंधित सज्जन अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे अचानक चल बसे। फिर से, मृत्यु की खबर सुनकर, उस व्यक्ति को एक संक्षिप्त

लेकिन परेशान करने वाली बीमारी हुई, जिसके लक्षण आमतौर पर सदमे से जुड़े थे। इस व्यक्ति की माँ में भी ऐसी ही क्षमता है। कई मौकों पर उसने रोशनी देखी है। बोअर युद्ध के दौरान एक दिन उसके दरवाजे से गुज़रने वाले एक अधिकारी ने उसे अलविदा कहा क्योंकि उसे दक्षिण अफ्रीका जाने का आदेश दिया गया था।

उसने कहा, 'या तो वह मारा जाएगा या विकृत होकर वापस आएगा,' और तुरंत बीमार हो गया। कुछ महीने बाद अधिकारी को निचले जबड़े में गोली लगी और वह अपने चेहरे के साथ घर लौटा। ** दूसरी दृष्टि "क्षमता खुद को विभिन्न तरीकों से प्रकट करती है, जैसा कि इन उदाहरणों से पता चलता है, और इस बात का सबूत है कि यह किसी व्यक्ति में है, जीवन में केवल एक या दो बार ही हो सकता है।

हालांकि, ऐसे मामले भी हैं, जिनमें यह लगातार सक्रिय है। जिन लोगों के पास यह क्षमता है, वे इसके बारे में सबसे अधिक मितभाषी हैं, और इससे डरते हैं। उन्नीसवीं सदी के अंत में मोच और चोट को ठीक करने के लिए दो ताबीज एक प्रसिद्ध हाइलैंड शहर में बेचे जाते थे, एक महिला जो अपने द्वारा बांधी गई प्रत्येक जादुई गाँठ पर एक छंद का प्रयोग करती थी, क्योंकि वह पीड़ित अंग का उपचार करती थी। सभी वर्गों में उसके कई मरीज थे। अस्थि-सेटर अभी भी स्थानीय स्तर पर उच्च प्रतिष्ठा का आनंद लेते हैं: कुछ ही समय पहले रॉस-शायर के एक अस्थि-सेटर को समुदाय के लिए उनकी आजीवन सेवाओं के सम्मान में एक सार्वजनिक प्रस्तुति दी गई थी।

उनकी यह क्षमता उन्हें उनके पूर्वजों से विरासत में मिली थी। हाइलैंड्स में जीवित और मृत लोगों की आत्माओं के प्रकट होने के कई उदाहरण मिल सकते हैं। जीवित व्यक्ति की आत्मा का प्रकट होना उस व्यक्ति की मृत्यु के निकट आने का एक निश्चित संकेत माना जाता है। यह कभी भी परिवार के किसी सदस्य को नहीं दिखता, लेकिन अंतरंग मित्रों को दिखाई देता है। कभी-कभी यह बोलता है और किसी अन्य पारस्परिक परिचित के भाग्य का संकेत देता है।

315.चीखने वाला उल्लू**:** आधी रात को चीखने वाले उल्लू की आवाज को भविष्यसूचक कहा जाता है।

316.सिअन्सेस **:** मृतकों के साथ संवाद करने के उद्देश्य से आयोजित एक बैठक, एक अनिवार्य शर्त यह है कि कंपनी के कम से कम एक सदस्य के पास मध्यस्थ शक्तियां होनी चाहिए। (मीडियम देखें।) पुरातनता में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जिन्हें "टी सेन्स" कहा जा सकता है - जैसे, सॉल का एंडोर की

चुड़ैल से परामर्श - लेकिन इस शब्द का इस्तेमाल आम तौर पर आधुनिक अध्यात्मवाद के संबंध में ही किया जाता है। जब 1848 में हाइडेसविले में फॉक्स परिवार ने अपने पड़ोसियों को रहस्यमयी आवाज़ें सुनने के लिए बुलाया, जो तब से "रोचेस्टर रैपिंग्स" के रूप में प्रसिद्ध हो गई हैं, तो यह सभा इतनी अनौपचारिक थी कि इसे एक रुख नहीं कहा जा सकता था, हालाँकि सभी आवश्यक तत्व मौजूद थे; लेकिन अगले दो या तीन वर्षों के भीतर यह संक्रमण पूर्वी राज्यों के एक बड़े हिस्से में फैल गया, कई "मंडल" बन गए, और जो घटना पहले स्पष्ट रूप से स्वतःस्फूर्त थी, उसे अब जानबूझकर प्रेरित किया गया।

आंदोलन के शुरुआती चरणों में ये रुख निजी माध्यमों द्वारा संचालित किए गए थे, जिन्होंने अपने प्रदर्शन के लिए कोई शुल्क नहीं लिया, लेकिन बाद में पेशेवर माध्यम उभरे जिनके रुख थे शुल्क के भुगतान पर जनता के लिए खुला। सार्वजनिक और निजी दोनों ही तरह के रुख अध्यात्मवाद की एक अनिवार्य विशेषता बने रहे और आज भी बने हुए हैं। एक माध्यम की उपस्थिति के अलावा अन्य शर्तें भी हैं जिनका पालन किया जाना चाहिए यदि रुख को घटनाओं का उत्पादक होना है। इनमें से मुख्य शायद, सेंस-रूम का अंधेरा या अर्ध-अंधेरा है, हालांकि यह किसी भी तरह से एक अपरिवर्तनीय स्थिति नहीं है।

अध्यात्मवादियों द्वारा दिया गया कारण यह है कि प्रकाश आत्माओं की अभिव्यक्तियों में बाधा डालता है, हालांकि अंधेरे की आग्रहपूर्ण मांग पर कभी-कभी कम उदार निर्माण किया जाता है। कभी-कभी वास्तविक रुख से पहले बजाना या गाना होता है, एक ऐसी कार्यवाही जिसके बारे में होम के सिटर में से एक ने कहा है "हमेशा हमें एक अच्छा रुख दिया।" हम आसानी से अनुमान लगा सकते हैं कि यह बजाना और गाना बिना किसी उद्देश्य के नहीं था, क्योंकि इससे प्रत्याशा और बढ़ी हुई ग्रहणशीलता की स्थिति आसानी से पैदा हो सकती है, और यह याद किया जा सकता है कि डी'एसलॉन और मैकस्मर के अन्य शिष्यों ने अपने रोगियों को गाने के लिए कहा था, या जब रोगी बाकेट या चुंबकीय टब के चारों ओर बैठे थे, तो उन्होंने कोई वाद्य बजाया था।

मुद्रा में वापस आने के लिए; बैठने वाले एक मेज के चारों ओर अपनी जगह लेते हैं और हाथ मिलाते हैं, इस प्रकार एक "श्रृंखला" बनाते हैं। बैरन डी गुल्डेनस्टुबे ने एक चक्र बनाने और एक मुद्रा के संचालन के लिए निर्देश देते हुए कहा: * 'एक श्रृंखला बनाने के लिए, बारह व्यक्ति प्रत्येक अपना दाहिना हाथ मेज पर और अपना बायाँ हाथ अपने पड़ोसी के हाथ पर रखते हैं, इस प्रकार मेज के चारों ओर एक चक्र बनाते हैं। ध्यान दें कि माध्यम या माध्यम, यदि एक से अधिक हैं, तो उन लोगों से पूरी तरह से अलग हैं जो श्रृंखला बनाते हैं।" डॉ. लैपोनी ने अपनी पुस्तक हिप्नोटिज्म एंड स्पिरिटिज्म में कहा है: "फिर वह (माध्यम) अपने कुछ

सहायकों को निम्नलिखित तरीके से मेज पर अपने हाथ रखने के लिए आमंत्रित करता है।

प्रत्येक व्यक्ति के दो अंगूठे एक दूसरे को छूते हुए होने चाहिए, और प्रत्येक छोटी उंगली दोनों तरफ के व्यक्तियों की छोटी उंगलियों के साथ संचार में होनी चाहिए। वह खुद अपने दोनों हाथों से श्रृंखला को पूरा करता है। सभी के हाथ एक साथ मेज़ के किनारे पर टिके होते हैं।" कभी-कभी, फिर से, मेज़ पलटने और बात करने की मुद्राओं की तरह, सभी संचालकों द्वारा मेज़ पर अपनी उँगलियाँ रखने से ही श्रृंखला बन जाती है।

जब आत्माएँ अपनी उपस्थिति की घोषणा करती हैं, मेज़ को झुकाती हैं, इत्यादि, तो श्रृंखला टूट सकती है या नहीं भी हो सकती है, लेकिन जब तक यह टूटी नहीं रहती, तब तक बैठने वाले पूरी तरह से आत्माओं की दया पर होते हैं। उसके बाद जो घटनाएँ देखी जाती हैं, वे इतनी विविध और विविधतापूर्ण होती हैं कि शायद ही कोई एक मुद्रा का विवरण दूसरे से सटीक रूप से मेल खाता हो, फिर भी निस्संदेह वे सभी कुछ निश्चित वर्गों से संबंधित हैं। "भौतिक" घटनाओं के क्षेत्र में हमारे पास फ़र्नीचर की हरकतें हैं, जो उस मेज़ से शुरू होती हैं जिसके चारों ओर मंडली के सदस्य बैठे होते हैं, और शायद कमरे में मौजूद सभी फ़र्नीचर को प्रभावित करती हैं।

सेंस-रूम में निर्जीव वस्तुओं की ये हरकतें अक्सर भूत-प्रेत के स्वतःस्फूर्त प्रकोपों के समान होती हैं। फिर वहाँ हैं मानव शरीर और फर्नीचर तथा निर्जीव वस्तुओं दोनों का उत्तोलन हमें भारी अलमारियों के बारे में बताया जाता है जो बिना किसी दृश्य एजेंसी के छत तक उठाई जाती हैं, और कई माध्यमों को इसी तरह ऊपर की ओर तैरते हुए देखा जाता है। विस्तार सेन्स रूम की एक और घटना है, माध्यम की ऊंचाई में कुछ इंच से लेकर एक फुट तक की वृद्धि या स्पष्ट वृद्धि होती है।

बंद दरवाजे और अलमारियाँ बिना चाबी के और हिंसा के किसी भी निशान के बिना खोली जाती हैं। छोटी वस्तुओं के अपॉर्ट्स - फूल, फल, गहने, वास्तव में कुछ भी - दूर से बंद दरवाजों और वर्जित खिड़कियों के माध्यम से लाए जाते हैं, या सीलबंद बक्सों से रहस्यमय तरीके से निकाले जाते हैं। निर्जीव टाइलिंग अपने कार्यों में लगभग मानवीय बुद्धिमत्ता दिखाती है।

भारी वस्तुएं इतनी हल्की हो जाती हैं कि उन्हें उंगली के स्पर्श से उठाया जा सकता है, हल्की वस्तुएं इतनी भारी हो जाती हैं कि सभी उपस्थित लोगों की संयुक्त शक्ति उन्हें उठाने के लिए पर्याप्त नहीं होगी। माध्यम अपने हाथ में या

अपने रूमाल में जलते हुए कोयले को पकड़ सकता है, बिना किसी को जलाए। जब कोई हाथ उनके पास नहीं होता है, तब वाद्य यंत्र बजाए जाते हैं, या बिना किसी वाद्य यंत्र के खाली हवा से संगीत उत्पन्न होता है। चमकते हुए हाथ और चेहरे हवा में तैरते हैं, कभी-कभी बैठने वाले उन्हें मृतक मित्रों और रिश्तेदारों के रूप में पहचान लेते हैं, और स्पर्श और दुलार महसूस करते हैं।

सेंस-रूम में अचानक हवा का झोंका आता है - हालाँकि दरवाज़े और खिड़कियाँ अभी भी बंद हैं - और बैठने वालों के पर्दे और कपड़े फुलाए हुए हैं। यदि मुद्रा विशेष रूप से सफल है, तो पूर्ण आत्मा रूपों को मूर्त रूप दिया जा सकता है। यदि बाद की अभिव्यक्ति के लिए कहा जाता है, तो आमतौर पर एक छोटी सी कैबिनेट प्रदान की जाती है, जिसमें माध्यम सेवानिवृत्त हो जाता है। इसके तुरंत बाद फिल्मी आत्मा रूप या रूपों को कैबिनेट से निकलते हुए देखा जाता है, और उनमें बैठने वाले अक्सर खोए हुए दोस्तों या रिश्तेदारों को देखते हैं।

आत्मा के रूप कमरे में इधर-उधर घूमते रहेंगे, खुद को छूने देंगे और कभी-कभी अपने शारीरिक मित्रों से बातचीत भी करेंगे और अपने बालों के ताले और कपड़ों के टुकड़े दे देंगे। फिर से, भौतिकीकरण खुले में हो सकता है, पहले एक छोटा चमकदार बादल देखा जा सकता है, जो धीरे-धीरे एक पूर्ण मानव आकृति में विकसित होता है; या, जैसा कि ज्ञात है, आत्मा माध्यम की तरफ से निकलती हुई प्रतीत हो सकती है, और एक पतले तंतु द्वारा उससे जुड़ी रहती है।

ज्यादातर मामलों में सिर और ठोड़ी सफेद कपड़ों में लिपटी होती है, चेहरे का केवल एक हिस्सा दिखाई देता है। (भौतिकीकरण देखें।) स्वचालित या "मानसिक" घटनाएँ एक अलग प्रकृति की होती हैं। कुछ अभिव्यक्तियाँ, जैसे कि टेबलो टिल्टिंग , रैपिंग , और स्लेट-राइटिंग , जहाँ संचार स्पष्ट रूप से माध्यम के जीव के माध्यम से नहीं आता है, दोनों भौतिक और मानसिक घटनाओं के चरित्र का हिस्सा हैं।

विशुद्ध रूप से "मानसिक" अभिव्यक्तियाँ स्वचालित लेखन और माध्यम की बात करती हैं। कभी-कभी उत्तरार्द्ध अनायास ही एक ट्रान्स में गिर जाता है, और उस अवस्था में रहते हुए आत्मा संदेश देता है, या माध्यम सभी को सामान्य स्थिति में रह सकता है। न केवल लेखन और कथन, बल्कि चित्र और संगीत रचनाएँ स्वचालित रूप से निर्मित हो सकती हैं, और हालाँकि इस तरह की स्वचालितता किसी भी तरह से सेंस-रूम तक सीमित नहीं है, फिर भी यह इसमें एक बड़ी भूमिका निभाती है, और विशेष रूप से अधिक गंभीर दिमाग वाले अध्यात्मवादियों के पक्ष में है, जिनके लिए आध्यात्मिक दुनिया से संचार घरेलू फर्नीचर की चाल से अधिक महत्वपूर्ण है।

डी.डी. होम के एक रुख का प्रतिनिधि विवरण एच.डी. जेनकेन ने ह्यूमन नेचर, फरवरी, 1867 में इस प्रकार दिया है: "श्री होम अभी भी समाधि में चले गए थे, इसलिए बहुत से लोगों ने देखा, अपनी सीट से उठे, उन्होंने एक कुर्सी पकड़ ली, जिसे उन्होंने अपनी बांह की लंबाई पर पकड़ रखा था, और फिर जमीन से लगभग तीन फीट ऊपर उठा लिया; इस तरह अंतरिक्ष में लटके हुए, उन्होंने कुर्सी को लॉर्ड अडारे के बगल में रखा, और कमरे में मौजूद लोगों के चारों ओर चक्कर लगाया, जैसे-जैसे वे नीचे और ऊपर होते गए।

वह हम में से हर एक के पास से गुजरा। वहाँ मौजूद लोगों में से एक ने ऊँचाई नापी और अपना पैर और हाथ मि. होम के पैरों के नीचे से गुज़ारा। ऊँचाई चार से पाँच मिनट तक चली। अपनी सीट पर वापस आकर मि. होम ने कैप्टन विने को संबोधित किया और उन्हें ऐसी ख़बरें सुनाईं, जिनके बारे में सिर्फ़ मृतक ही जान सकता था। •• वह आत्मा रूप जो सोफ़े पर लेटा हुआ दिखाई दिया था, अब मि. होम के पास आया और उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया;

फिर एक हाथ उनके सिर के ऊपर चमकता हुआ दिखाई दिया, जो उनके सिर से लगभग 1 8 इंच की सीधी रेखा में था। मि. होम की समाधि-अवस्था ने अब एक अलग रूप धारण कर लिया; धीरे से उठते हुए उन्होंने वहाँ मौजूद लोगों से कुछ शब्द कहे और फिर दरवाज़ा खोलकर गलियारे में चले गए; फिर एक आवाज़ ने कहा:—'वह इस खिड़की से बाहर जाएगा और 'उस खिड़की से अंदर आएगा।' एकमात्र व्यक्ति जिसने यह आवाज सुनी, वह लिंडसे का मास्टर था, और जब वह इस घटना की संभावना पर विचार कर रहा था, तो उसे एक ठंडी सिहरन सी महसूस हुई, एक ऐसा काम जो एशले प्लेस की तीसरी मंजिल की खिड़कियों की बहुत ऊँचाई के कारण सामान्य से भी अधिक खतरनाक था।

हालाँकि, उपस्थित अन्य लोगों ने उससे बारीकी से पूछा कि उसने क्या सुना है, तो उसने पहले उत्तर दिया, 'मैं आपको बताने की हिम्मत नहीं कर सकता,' तभी, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, एक आवाज ने कहा, 'आपको बताना होगा; सीधे बताओ।' तब मास्टर ने कहा, 'हाँ; हाँ, यह कहना भयानक है, वह उस खिड़की से बाहर जाएगा और इस पर अंदर आएगा; डरो मत, चुप रहो।' अब मिस्टर होम कमरे में फिर से दाखिल हुए, और ड्राइंग-रूम की खिड़की खोलकर, उन्हें अर्ध-क्षैतिज रूप से अंतरिक्ष में धकेल दिया गया, और ड्राइंग-रूम की एक खिड़की से बगल के कमरे की सबसे दूर की खिड़की तक ले जाया गया।

यह करतब जमीन से लगभग साठ फुट की ऊंचाई पर किया जा रहा था, जिससे स्वाभाविक रूप से सभी उपस्थित लोगों में सिहरन पैदा हो गई। जब श्री होम का

शरीर बगल के कमरे की खिड़की पर दिखाई दिया, तो उसे पैरों के बल कमरे में धकेल दिया गया - खिड़की केवल 18 इंच खुली थी। जैसे ही उसने अपना पैर जमाया, वह हंसा और बोला, * मुझे आश्चर्य है कि अगर कोई पुलिसवाला मुझे टीटोटम की तरह चक्कर लगाते देखता तो क्या कहता! ' दृश्य, हालांकि, इतना भयानक था - इतना अजीब कि मुस्कुराहट पैदा नहीं हो सकती थी;

हर माथे पर पसीने की ठंडी बूंदें थीं, जबकि ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़ा खतरा टल गया हो; उपस्थित लोगों की नसें तनाव की ऐसी स्थिति में थीं कि वे मजाक का जवाब देने से इनकार कर रहे थे। अब श्री होम पर एक परिवर्तन आया, जिसे अक्सर ट्रान्स अवस्थाओं के दौरान देखा जा सकता है, जो निस्संदेह, उनके सिस्टम पर काम करने वाली किसी अन्य शक्ति का संकेत था।

इस बीच लॉर्ड अदारे बगल के कमरे में खुली खिड़की के पास जाकर उसे बंद कर रहे थे - ठंडी हवा अंदर आ रही थी और कमरे को ठंडा कर रही थी; जब उन्हें आश्चर्य हुआ तो उन्होंने पाया कि खिड़की केवल 18 से 24 इंच खुली थी। इससे वे हैरान हो गए, क्योंकि मि. होम केवल 18 से 24 इंच खुली खिड़की से बाहर कैसे निकल सकते थे। हालांकि, मि. होम ने जल्द ही अपने संदेह दूर कर लिए; लॉर्ड अदारे के पास जाकर उन्होंने कहा, * नहीं, नहीं; मैंने खिड़की बंद नहीं की; मैं इस तरह बाहर की हवा में निकल गया।'

तब एक अदृश्य शक्ति ने मि. होम को अंतरिक्ष में लगभग क्षैतिज रूप से सहारा दिया और उनके शरीर को खुली खिड़की से अंतरिक्ष में धकेल दिया, सिर सबसे आगे, उन्हें वापस पैरों के बल कमरे में ले आया, नीचे तहखाने में लगे शटर की तरह। मेज के चारों ओर घेरा फिर से बन गया, हवा की एक ठंडी धारा वहाँ उपस्थित लोगों के ऊपर से गुज़री, जैसे हवा का झोंका आ रहा हो।

यह कई बार दोहराया गया। हवा का ठंडा झोंका, या विद्युत द्रव, या आप इसे जो भी कहें, एक ज़ोरदार सीटी के साथ था, जैसे पहाड़ की चोटी पर हवा का झोंका, या देर से शरद ऋतु में जंगल की पत्तियों के बीच से; ध्वनि गहरी, मधुर और अत्यंत शक्तिशाली थी, और उपस्थित लोगों में एक सिहरन सी दौड़ गई, जिन्होंने इसे सुना और महसूस किया। यह तेज़ आवाज़ लगभग दस मिनट तक चली, एक या दो मिनट के अंतराल में।

सभी उपस्थित लोग बहुत आश्चर्यचकित थे; और उन अज्ञात भाषाओं से दिलचस्पी और बढ़ गई जिनमें अब श्री होम बात कर रहे थे। एक भाषा से दूसरी भाषा में तेज़ी से आगे बढ़ते हुए इसके बाद, उन्होंने दस मिनट तक अज्ञात भाषाओं में बात की। ** अब एक आत्मा का रूप स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा;

यह लिंडसे के मास्टर के बगल में खड़ा था, जैसा कि पहले देखा गया था, कमरबंद के साथ एक लंबे लबादे में लिपटा हुआ, पैर मुश्किल से जमीन को छू रहे थे, चेहरे की रूपरेखा केवल स्पष्ट थी, और आवाज के स्वर, हालांकि समझने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट थे, बोले जाने के बजाय फुसफुसाए गए थे।

अब अन्य आवाजें सुनाई देने लगीं, और फॉस्फोरसेंट रोशनी के बड़े गोले धीरे-धीरे कमरे से गुज़रे।" निम्नलिखित अंश प्रसिद्ध इतालवी माध्यम, यूसेपिया पलाडिनो के साथ प्रोफेसर लोम्ब्रोसो द्वारा रखे गए एक रुख के विवरण से लिया गया है। "काफी लंबे इंतजार के बाद मेज हिलने लगी, पहले धीरे-धीरे, - एक मामला जो उन लोगों के संदेह से समझाया गया था, जो इस रात पहली बार रुख के घेरे में थे।

फिर धीरे-धीरे, आंदोलनों की तीव्रता बढ़ गई। एम. लोम्ब्रोसो ने मेज के उत्तोलन को सिद्ध किया, तथा अनुमान लगाया कि उस उत्तोलन पर काबू पाने के लिए उसे अपने हाथों से जो दबाव डालना पड़ा, उसका प्रतिरोध बारह या पंद्रह पाउंड था। "एक भारी वस्तु के अपने गुरुत्व केंद्र से दूर हवा में लटके रहने तथा बारह या पंद्रह पाउंड के दबाव का प्रतिरोध करने की इस घटना ने विद्वान सज्जन को बहुत आश्चर्यचकित तथा चकित कर दिया, जिन्होंने इसे किसी अज्ञात चुंबकीय बल की क्रिया का परिणाम बताया। *' मेरे अनुरोध पर मेज में टैप तथा खरोंचने की आवाजें सुनाई दीं।

यह आश्चर्य का एक नया कारण था, तथा सज्जनों ने स्वयं मोमबत्तियों को बुझाने का आह्वान किया, ताकि यह पता लगाया जा सके कि शोर की तीव्रता बढ़ाई जाएगी या नहीं, जैसा कि कहा गया था। सभी बैठे रहे तथा संपर्क में रहे।" एक मंद प्रकाश में, जो सबसे अधिक सावधान निगरानी में बाधा नहीं डाल रहा था, मेज के मध्य बिंदु पर पहले हिंसक प्रहार सुनाई दिए।

फिर एक गोल मेज पर रखी घंटी, माध्यम के बाईं ओर एक गज की दूरी पर (इस तरह से कि वह *एम. लोम्ब्रोसो के पीछे और दाईं ओर रखी गई थी), हवा में उठी, और कंपनी के सिरों के ऊपर से झनझनाती हुई चली गई, हमारी मेज के चारों ओर एक चक्र बनाती हुई, जहाँ वह अंततः रुक गई।" इस स्थिति में कंपनी के सदस्यों ने भी खुद को चुटकी काटे जाने और अपने कपड़े खींचे जाने का अनुभव किया, और अपने चेहरे और उंगलियों पर अदृश्य हाथों के स्पर्श का अनुभव किया।

एम. सिओल्फी द्वारा लिखित विवरण की सटीकता की गवाही खुद प्रोफेसर लोम्ब्रोसो ने दी थी।

317. सेल्क कासो **:** पेड़ों पर रहने वाली बुरी आत्माएँ। (बर्मा देखें।)
सेल्कथा : एक बुरी आत्मा। (बर्मा देखें।)

318. असीरिया के राजा असुर्बनिपाल की महान लाइब्रेरी **:** , जिसकी मृत्यु 626 ईसा पूर्व में हुई थी, हमें असीरियन जादू का प्रत्यक्ष ज्ञान प्रदान करती है। उसने बेबीलोनिया के शहरों से कई खंड एकत्र किए, और उन्हें निनवे में अपने पुस्तकालय में संग्रहीत किया, उनकी प्रतिलिपि बनाई और उनका अनुवाद किया, वास्तव में असुर्बनिपाल से उसके कुछ अधिकारियों को लिखे गए पत्र पाए गए हैं, जिसमें कुछ मंत्रों की प्रतिलिपि बनाने के निर्देश दिए गए हैं।

कई ग्रिमोइर भी बेबीलोनिया से आते हैं, जो बाद के साम्राज्य के दौरान लिखे गए थे, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध मक्लु, जलना; उतुखी लिमनुई, बुरी आत्माएँ; लाबर्टू, डायन-दानव; और निस काली, हाथ उठाना नामक श्रृंखला है। कई औपचारिक ग्रंथ भी उपलब्ध हैं जो जादुई अभ्यास पर काफी प्रकाश डालते हैं। उदाहरण के लिए, मक्लु में जादूगरों और चुड़ैलों के खिलाफ़ आठ मंत्र और जादू की गोलियाँ हैं - इसके माध्यम से चलने वाला सामान्य विचार यह है कि मोहित व्यक्ति को निर्देश दिया जाए कि वह अपने दुश्मनों की आकृतियाँ कैसे बनाए और इस तरह उन्हें नष्ट कर दे।

बुरी आत्माओं के भूत-प्रेत को भगाने से संबंधित श्रृंखला में राक्षसों, भूत-प्रेतों और भूतों की गणना की गई है, और इसमें कम से कम सोलह गोलियाँ हैं, 'वे भूत-प्रेत से ग्रसित लोगों से शैतानों को भगाने के लिए भूत-प्रेत भगाने वाले के उपयोग के लिए हैं, और यह देवताओं की सहायता का आह्वान करके पूरा किया जाना है, ताकि राक्षसों को एक दिव्य निषेध के तहत रखा जा सके।

दुर्भाग्यपूर्ण शिकार पर कब्ज़ा करने वाले राक्षस का सबसे सूक्ष्म तरीके से वर्णन किया जाना चाहिए। लेबार्टू या डायन दानव से संबंधित श्रृंखला, जो एक प्रकार की महिला शैतान है जो बच्चों पर हमला करने में प्रसन्न होती है, लेबार्टू की आकृति बनाने और उस पर दोहराए जाने वाले मंत्रों के निर्देश देती है। जादूगर और फी ऐसा प्रतीत होता है कि दार्शनिकों ने असीरिया में एक साथ काम किया था, क्योंकि हम पाते हैं कि चिकित्सक लगातार राक्षसों को भगाने के लिए मंत्रों का उपयोग करते हैं, और मंत्रों को अक्सर नुस्खों के साथ जोड़ा जाता है।

चिकित्सा जादू वास्तव में उसी तरह का प्रतीत होता है जैसा कि हम अमेरिकी भारतीयों और अस्तित्व की एक समान बर्बर स्थिति में रहने वाले लोगों के बीच पाते हैं। हम पाते हैं कि मिस्र के लोगों की तरह ही प्रारंभिक सेमाइट्स के बीच भी

असंप्रेषणीय नाम का सिद्धांत स्थापित था: एक देवता का गुप्त नाम, जिसे खोजे जाने पर वक्ता को उसके उच्चारण मात्र से उस पर पूरी शक्ति मिल जाती थी। जादूगर जिस व्यक्ति या राक्षस के खिलाफ अपना जादू चलाता है, उसके नाम या विवरण का ज्ञान भी सफलता के लिए आवश्यक है।

ड्रग्स भी, जिन्हें मूल रूप से मानव जाति के कल्याण के लिए देवताओं द्वारा दी गई शक्ति माना जाता था, भूत भगाने में बहुत सहायक माने जाते थे। असीरियन जादू-टोने में, ईए और मर्दुक सबसे शक्तिशाली देवता हैं, - बाद वाले को मनुष्य और उसके पिता, ईए के बीच मध्यस्थ के रूप में अपील की जाती है: वास्तव में मर्दुक की सलाह के लिए अपने पिता के पास जाने की किंवदंती को आम तौर पर मंत्रों में दोहराया जाता था। किसी व्यक्ति के खिलाफ काम करते समय, उसके पास कुछ होना ज़रूरी था, - उसके बालों की कतरनें, या यदि संभव हो तो नाखून।

प्रेतग्रस्त व्यक्ति को आमतौर पर धोया जाता था, सफाई का सिद्धांत शायद इस समारोह का आधार था। एरिडू के मंत्र नामक एक मंत्र अक्सर निर्धारित किया जाता था, और यह किसी ऐसी सफाई से संबंधित होना चाहिए, क्योंकि एरिडू समुद्र-देवता ईए का घर है। भूत भगाने या भूत भगाने के लिए एक सूत्र, रबेसु बताता है कि रोगी को दो बार सात बार साफ पानी से छिड़का जाना चाहिए। सभी पानी में से कोई भी यूफ्रेट्स जितना पवित्र नहीं था, और इसके पानी का इस्तेमाल अक्सर जादू और भूत भगाने के लिए किया जाता था।

सेंसर के साथ धूमन का उपयोग सीरियाई लोगों द्वारा भूत भगाने के लिए भी किया जाता था, लेकिन भूत-प्रेत से ग्रसित व्यक्ति को अक्सर आटे के एक जादुई घेरे के बीच में रखकर राक्षसों के हमले से बचाया जाता था, जिसके बारे में माना जाता था कि कोई आत्मा उसे तोड़ नहीं सकती। मछली के मुंह से ग्रंथियों को पहनना भी भूत-प्रेत से बचाव का एक आकर्षण था। जादू का घेरा बनाते समय, जादूगर आमतौर पर भगवान नेरगल के सामने सात छोटे पंखों वाली आकृतियाँ बनाता था, एक लंबे मंत्र के साथ, जिसमें कहा जाता है कि उसने चूने के छिड़काव के साथ उसुरिउ या जादू के घेरे को पूरा कर लिया है।

जादूगर आगे प्रार्थना करता है कि भगवान द्वारा उसके मरीज के लिए मंत्रोच्चार किया जाए। यह मध्ययुगीन काल के जादूगरों के बीच इस्तेमाल किए जाने वाले घेरे का एक प्रोटोटाइप प्रतीत होता है। कैम्पबेल थॉम्पसन ने अपनी पुस्तक सेमिटिक मैजिक में लिखा है: "शक्तिशाली शब्द, शत्रु के किसी अंग को प्राप्त करना, जादू के घेरे और पवित्र जल का प्रयोग, तथा पदार्थों की जादुई शक्तियों

का ज्ञान - इन सभी बातों से लैस होकर प्राचीन जादूगर अपने काम के लिए पूरी तरह से तैयार था।

वह शत्रुतापूर्ण राक्षसों को चुनौती देने या मित्रवत आत्माओं को बुलाने, बीमारी को भगाने या जादू करने, अपने पास आने वाले भोले-भाले लोगों की रक्षा के लिए ताबीज बनाने में सक्षम था। इसके अलावा, उसके पास कुछ खास तरह की तरकीबें भी थीं, जो लगातार राजस्व का स्रोत थीं। प्रेम में डूबे युवक और युवतियां हमेशा उसके जादू-टोने या प्रेम-जादू से कुछ परिणाम की आशा करती थीं; ईर्ष्या की मांग पर, वह पति और पत्नी के बीच नफरत पैदा करने के लिए हमेशा तैयार रहता था;

और जो लोग अंधेरी रात में खंजर चलाने की हिम्मत या कौशल नहीं रखते थे, उनके लिए पिनों से छेदी गई उसकी पुतली मौत का कारण बन जाती थी। एक प्रतिद्वंद्वी। वह एक साथ चिकित्सक और चमत्कार करने वाला था, उन लोगों के लिए जो उसे फीस देते थे।' "अधिक आधुनिक स्मितों में जादू कई रूपों में बहुत प्रचलित है, उनमें से कुछ यूरोपीय लोगों के लिए काफी परिचित हैं: वास्तव में हम लेन द्वारा संपादित अरेबियन नाइट्स में एक झाड़ू पर सवार बूढ़ी महिलाओं की कहानी पाते हैं।

मुसलमानों के बीच जादूगर को इस तथ्य के कारण मौत का हकदार माना जाता है कि वह एक अविश्वासी है। अरबी विद्या में चुड़ैलों का होना काफी आम है, और हम आमतौर पर उन्हें औषधि और फिल्ट्रे बेचने वाले के रूप में पाते हैं। यूरोपीय
माना जाता है कि चुड़ैल रात में चूल्हे की राख को अपने पति के माथे पर छिड़क कर अपना घर छोड़ सकती है, जिससे वह सुबह तक चैन की नींद सोता है। यह फ्रांसीसी मध्यकालीन प्रथा के समान है।

अरब लोक कथाओं में मोगरेबी जादूगर है जो राक्षसों से बातचीत करता है, और हमें पुराने और नए नियम में ऐसे कई जादूगर मिलते हैं, साथ ही साथ ज्योतिषी और गुप्त कलाओं के अन्य अभ्यासी भी मिलते हैं। सैनहेड्रिन में, रब्बी अकीबा एक जादूगर को ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित करते हैं जो समय और घंटों की गणना करता है, और अन्य रब्बी कहते हैं कि "जादूगर वह है जो तब बीमार हो जाता है जब उसके मुंह से रोटी गिर जाती है, या अगर वह अपने हाथ से सहारा देने वाली छड़ी गिरा देता है, या अगर उसका बेटा उसे पुकारता है, या उसके कान में कौआ कांव-कांव करता है, या कोई हिरण उसके रास्ते को काटता है, या वह अपने दाहिने हाथ पर सांप या अपने बाएं हाथ पर लोमड़ी देखता है।"

अरबों का मानना है कि जादू तब तक काम नहीं करता जब तक कि इसका इस्तेमाल करने वाला व्यक्ति सो रहा हो। इसके अलावा शैतान को भी मात देना संभव है, और कई अरबी कहानियाँ मौजूद हैं जिनमें बुद्धिमान और चालाक लोगों ने ऐसा करने में सफलता पाई है। (इब्लीस ने एक बार अपने बेटे को एक चकमक पत्थर के साथ सम्मानित लोगों की एक सभा में भेजा, और उसे चकमक पत्थर बुनने के लिए कहा।

वह अंदर आया और कहा, "मेरे पिता अपनी शांति भेजते हैं, और इस चकमक पत्थर को बुनना चाहते हैं/" बकरी की दाढ़ी वाले एक आदमी ने कहा, "अपने पिता से कहो कि इसे कात लें, और फिर हम इसे बुनेंगे।" बेटा वापस चला गया, और शैतान बहुत क्रोधित हुआ, और उसने अपने बेटे से कहा कि जब बकरी की दाढ़ी वाला आदमी मौजूद हो तो कभी भी कोई सुझाव न दें, "क्योंकि वह हमसे भी ज़्यादा शैतानी है।" दिलचस्प बात यह है कि रब्बी जोशुआ बेन हनन्याह एथेंस के बुद्धिमान लोगों के खिलाफ़ एक प्रतियोगिता में इसी तरह का अनुरोध करता है, जिन्होंने उसे एक टूटी हुई चक्की के टुकड़ों को एक साथ सिलने के लिए कहा है।

वह जवाब में पत्थर के रेशे से बने कुछ धागे माँगता है। मोसुल के अच्छे लोग भी हमेशा शैतान के खिलाफ़ तैयार बुद्धि पर गर्व करते हैं। एक समय था, जैसा कि मेरे नौकर ने मुझे बताया, जब इब्लीस आया था मोसुल में एक आदमी प्याज़ बो रहा था। वे आपस में बात करने लगे और अपनी संगति में बगीचे की उपज को बाँटने पर सहमत हो गए। फिर, एक दिन जब प्याज़ तैयार हो गए, तो साझेदार अपने सब्ज़ी के खेत में गए और उस आदमी ने कहा, "मालिक, क्या आप अपना आधा हिस्सा ज़मीन के ऊपर या नीचे की तरफ़ लेंगे?" अब शैतान ने प्याज़ की अच्छी हरी टहनियाँ उगती देखीं और उन्हें अपने हिस्से के तौर पर ले गया, जिससे माली अपने सौदे पर हँसता रह गया।

लेकिन जब गेहूँ का समय आया और आदमी एक दिन अपनी फसल बो रहा था, तो शैतान ने खाई की तरफ़ देखा और शिकायत की कि उसने समझौते से कुछ हासिल नहीं किया। "इस बार, उसने कहा, हम अलग तरीके से बाँटेंगे और तुम सबसे ऊपर वाले ले जाओगे" और ऐसा ही हुआ। वे साथ-साथ खेत में गए और जब मकई पक गई और किसान ने खेत की कटाई की और बालियाँ निकाल लीं, तो शैतान जड़ों को काटता हुआ चला गया।

एक महीने तक खुदाई करने के बाद, उसे अपनी गलती का पता चला और वह उस आदमी के पास गया, जो खुशी-खुशी अपना हिस्सा काट रहा था। इबलीस ने कहा, "यह एक तुच्छ बात है, तुमने मुझे दो बार धोखा दिया है।" "नहीं," पहले वाले ने कहा, "मैंने तुम्हें तुम्हारी इच्छा पूरी कर दी है; और इसके अलावा, तुमने

अपने प्याज के ऊपरी भाग को नहीं काटा है, जैसा कि मैं कर रहा हूँ।" तो यह एक आशावादी शैतान था जिसने सूखे प्याज के डंठलों को काटने के लिए भेजा, लेकिन व्यर्थ; और वह उदास होकर मोसुल से चला गया, गुस्से में इधर-उधर भागता रहा, और बीच-बीच में इतने चालाक शहर के खिलाफ हाथ मिलाने के लिए रुकता रहा।

शापित हो वह, हे धोखेबाजों 1 जो तुम्हारी तरह शैतानी का मुकाबला कर सकता है? श्री थॉम्पसन कहते हैं, "आधुनिक समय में पूर्व में, मोरक्को से लेकर मेसोपोटामिया तक, जादू की किताबें किसी भी तरह से दुर्लभ नहीं हैं, और अरबी, हिब्रू, गेरशुनी और सीरियाई में पांडुलिपियाँ अक्सर खरीदी जा सकती हैं, जो किसी न किसी तरह के जादू या लोकप्रिय चिकित्सा से संबंधित हैं। सूडान के सुआकिन में मुझे अरबी में ज्योतिष की एक मुद्रित पुस्तक भेंट की गई, जिसमें संकेतों के सबसे विचित्र और विचित्र लकड़ी के कटआउट द्वारा चित्रण किया गया था।

अन्य स्थानों पर कर्तव्य किया। प्राचीन काल में ऐसी पुस्तकें हस्तलिखित रूप में मौजूद थीं, जैसा कि सिबिललाइन पुस्तकों की कहानी या अधिनियमों के अध्याय 19, 19 में वर्णित है; * उनमें से कुछ जो अजीब कलाओं का अभ्यास करते थे, उन्होंने अपनी पुस्तकों को एकत्र किया और सभी के सामने उन्हें जला दिया। "यह जानना दिलचस्प है कि नफरत को बढ़ाने का आकर्षण सेमिट्स के बीच भी लगभग वैसा ही है जैसा हंगरी और बाल्कन राज्यों के लोगों के बीच है: यानी काली मुर्गी के अंडे के माध्यम से।

हम सेमिट्स के बीच भी कई छोटी-मोटी जादू-टोने पाते हैं जो यूरोपीय जातियों के बीच समान हैं। अदृश्य होना एक और उपलब्धि थी जिसकी बहुत मांग थी, और यह माना जाता था कि अगर कोई तांबे और लोहे की अंगूठी पहनता है जिस पर कुछ जादुई चिह्न उत्कीर्ण होते हैं तो यह परिणाम सुरक्षित हो जाता है, या एक काली बिल्ली का दिल, जिसे सुखाकर शहद में भिगोया जाता है।

शक्तिशाली जादू के कई उदाहरणों के लिए "सोलोमन" लेख का उल्लेख किया जा सकता है। सहानुभूतिपूर्ण जादू का सहारा अक्सर अरबी चुड़ैल और जादूगर द्वारा लिया जाता है, जैसा कि प्राचीन हिब्रू और असीरियन के बीच था। सेमिटिक गुप्तविद्या का महान भंडार निश्चित रूप से कबाला है, जिसे बाद के हिब्रू रहस्यमय सिद्धांत के लिए पाठक को संदर्भित किया जाता है।

319. सेथोस: एक भविष्यवक्ता, जिसे जादू की लत के कारण सम्राट मैनुअल ने अपनी दृष्टि से वंचित कर दिया था। ऐसा कहा जाता है कि सम्राट एंड्रोनिकस

कॉमनेनस ने हाइड्रोमेंसी द्वारा उसके माध्यम से इस सवाल का उत्तर प्राप्त किया कि उसका उत्तराधिकारी कौन होगा। दुष्ट आत्मा ने उत्तर में "और मैं" अक्षर दिए; और जब पूछा गया कि कब, तो क्रॉस के उत्थान के पर्व से पहले कहा। यह भविष्यवाणी पूरी हुई, क्योंकि उल्लिखित तिथि से पहले इसहाक एंजेलस ने एंड्रोनिकस को भीड़ द्वारा टुकड़े-टुकड़े करने के लिए फेंक दिया था। जब शैतान जादू करता है, तो वह पीछे की ओर जादू करता है, ताकि यू एस आई " को मा के नियमों के अनुसार इसहाक का प्रतिनिधित्व करने के लिए काफी हद तक लिया जा सके।

320. स्वर्ग के सात प्रबंधक : , जिनके द्वारा ईश्वर दुनिया पर शासन करता है। जादू पर काम करने वालों में उन्हें ओलंपियन स्पिरिट्स के नाम से जाना जाता है, और वे ओलंपियन क्षेत्रों पर शासन करते हैं, जो एक सौ निन्यानवे क्षेत्रों से मिलकर बना है। ओलंपियन भाषा में उनके नाम हैं: - एराथ्रोन, शनि की दिव्य आत्मा, जिसका दिन शनिवार है; बेथोर, बृहस्पति का दूत, जिसका दिन सोमवार है; फालेग, मंगल का राजकुमार, जिसका दिन मंगलवार है; ओच, सूर्य का स्वामी, जिसका दिन रविवार है; हेगिथ, शुक्र का शासक, जिसका दिन शुक्रवार है; ओफील, बुध की आत्मा, जिसका आह्वान बुधवार को किया जाना चाहिए; फुल, चंद्रमा में मामलों का प्रशासक, जिसका दिन सोमवार है। इन सात दिव्य आत्माओं में से प्रत्येक को जादूगरों द्वारा समारोहों और तैयारियों की सहायता से बुलाया जा सकता है।

321. पोप सेक्सटस वी. सेंट पीटर : की वंशावली में से एक थे जिन पर जादू-टोना करने का आरोप था। डे थू ने अपने हिस्टॉयर यूनिवर्सेल (टॉम XI) में उनके बारे में कहा है, "स्पेनियों ने इस पोप के खिलाफ़ अपना प्रतिशोध उनकी मृत्यु के बाद भी जारी रखा, और उनके खिलाफ़ जो मानहानि की गई, उसके द्वारा उनकी यादों को काला करने की उनकी बेचैनी में वे कुछ भी नहीं भूले। उन्होंने कहा कि सेक्स्टस, जो जादुई कला के माध्यम से, एक राक्षस के साथ लंबे समय तक संघ में था, ने मानवता के इस दुश्मन के साथ खुद को उसके हवाले करने के लिए एक समझौता किया था, इस शर्त पर कि उसे पोप बनाया जाए, और छह साल तक शासन करने की अनुमति दी जाए। सेक्स्टस को सेंट पीटर की कुर्सी पर बिठाया गया, और पाँच साल तक रोम में शासन करने के दौरान उसने मानवीय बुद्धि की कमज़ोर पहुँच को पार करते हुए अपने पोपत्व को प्रतिष्ठित किया। अंत में, इस कार्यकाल के अंत में, पोप बीमार पड़ गए, और शैतान उन्हें अपने समझौते पर रखने के लिए आया, सेक्स्टस ने उनके बुरे विश्वास के खिलाफ़ कड़ी आलोचना की, उन्हें इस तथ्य के साथ फटकार लगाई कि जिस अवधि पर उन्होंने सहमति व्यक्त की थी, वह पूरी नहीं हुई थी, और अभी भी वहाँ है उसके पास बारह महीने से ज़्यादा समय बचा था। लेकिन शैतान

ने उसे याद दिलाया कि अपने पोप के कार्यकाल की शुरुआत में उसने एक ऐसे व्यक्ति को दोषी ठहराया था, जो कानून के मुताबिक मौत की सज़ा पाने के लिए एक साल छोटा था, और फिर भी उसने उसे यह कहकर मरवा दिया था कि वह उसे अपनी ज़िंदगी का एक साल देगा;

कि यह साल, बाकी पाँच सालों के साथ मिलकर, उसके लिए वादा किए गए छह साल पूरे कर देता है, और इसके परिणामस्वरूप उसने शिकायत करके बहुत ग़लत किया। सेक्स्टस, उलझन में और कोई जवाब देने में असमर्थ, चुप रहा, और अपने बिस्तर के रूले की ओर मुड़ गया, अपने विवेक के पश्चाताप के कारण भयानक मानसिक उत्तेजना के बीच मौत के लिए तैयार हो गया।

बाकी के लिए," डे थू ने मिलनसार स्पष्टता के साथ कहा, मैं इस विशेषता का उल्लेख केवल स्पेनियों द्वारा फैलाई गई एक अफवाह के रूप में करता हूँ, और मुझे इसकी सच्चाई की गारंटी देने के लिए बहुत खेद होगा।

322. शद्दल**:** स्वर्गदूतों के पदानुक्रम की रब्बी कथा में दिए गए दस दिव्य नामों में से एक। यह सार चंद्रमा के क्षेत्र को प्रभावित करता है: यह वृद्धि और कमी का कारण बनता है, और जिन्न और रक्षक आत्माओं पर शासन करता है।

323. मृतकों का जहाज**:** मृत्यु-कोच के अंधविश्वासी विचार से मिलता-जुलता यह विश्वास है कि कभी-कभी एक प्रेत नौका लोगों की आत्माओं को ले जाती है। बादल-जहाज के रूप में, या एक तेज धुंध में लिपटे हुए, यह पहाड़ों और दलदलों पर तैरता है, और समुद्र में यह हवा और ज्वार के बावजूद भी तैरता रहता है। एक निश्चित समुद्री डाकू की कहानी बताई जाती है, जिसकी मृत्यु के समय एक भूतिया जहाज बादलों में आया था। जैसे ही यह छत के ऊपर से गुजरा, घर में तूफानी समुद्र जैसी आवाज़ गूंजने लगी, और जब जहाज गुजरा, तो समुद्री डाकू की आत्मा उसके साथ चली गई।

324. साइबेरिया**:** साइबेरिया की सभी बर्बर जनजातियाँ कमोबेश जादू-टोने की कला का अभ्यास करती हैं और यह कला प्राचीन काल से ही जादूगरों या औषधि-पुरुष वर्ग के हाथों में रही है। मूर्तिपूजक समोएड्स भी अदृश्य आत्माओं के एक समूह के अस्तित्व में विश्वास करते हैं जिन्हें वे तादेबत्सोई कहते हैं। ये हमेशा वायुमंडल में चक्कर लगाते रहते हैं और स्थानीय लोगों के लिए लगातार खतरा बने रहते हैं जो उन्हें खुश करने के लिए उत्सुक रहते हैं। यह केवल तादीबे या नेक्रोमैंसर के हस्तक्षेप से ही संभव है, जो अपनी सेवाएँ माँगे जाने पर लाल कपड़े से सजे हिरन के चमड़े की जादुई पोशाक, लाल कपड़े का मुखौटा और पॉलिश धातु की छाती की प्लेट पहनता है। फिर वह पीतल के छल्लों से सजा

हुआ हिरन की खाल का एक ड्रम लेता है (देखें लैप लैंड), और एक सहायक के साथ, आत्माओं की उपस्थिति का आह्वान करते हुए एक चक्र में घूमता है, इस दौरान एक बड़ा खड़खड़ाहट हिलाता है।

शोर तेज होता जाता है, और जैसे ही आत्माएं जादूगर के पास आने लगती हैं, वह थॉर्न को संबोधित करता है, अपने ड्रम को और अधिक धीरे से बजाता है, और उनके जवाब सुनने के लिए अपने मंत्रोच्चार में रुक जाता है। धीरे-धीरे वह खुद को उन्माद की स्थिति में ले जाता है, ड्रम को बहुत हिंसा के साथ पीटता है, और ऐसा लगता है कि वह अलौकिक प्रभाव से ग्रसित है और उसके मुंह से झाग निकल रहा है। अचानक वह रुक जाता है, और आत्माओं की इच्छा को दैवीय रूप से बताता है।

ताड़ीबे का पद वंशानुगत होता है, लेकिन अगर जनजाति का कोई सदस्य विशेष योग्यता प्रदर्शित करता है तो उसे पुजारी के पद पर नियुक्त किया जाता है, और उपवास, जागरण, मादक पदार्थों और उत्तेजक पदार्थों का उपयोग उसी तरह से किया जाता है जैसे कि एन.ए. भारतीयों द्वारा किया जाता है, उसे लगता है कि आत्माओं ने उस पर हमला किया है। फिर उसे आधी रात के समारोह के साथ ताड़ीबे के रूप में स्वीकार किया जाता है, और उसे एक जादुई ड्रम पहनाया जाता है।

पुजारी के बहुत से करतब केवल साधारण जादू के होते हैं, जैसे रस्सी का करतब, लेकिन कुछ भ्रम जो ये लोग हासिल करते हैं वे बेहद चौंकाने वाले होते हैं। अपने हाथ और पैर एक साथ बांधकर, वे हिरन की खाल के कालीन पर बैठते हैं, और प्रकाश बुझाकर आत्माओं की सहायता मांगते हैं। अजीबोगरीब आवाज़ें उनके आने का संकेत देती हैं, साँप फुफकारते हैं और भालू गुर्राते हैं, रोशनी फिर से जलती है और तादीबे को उसके बंधनों से मुक्त होते देखा जाता है।

समोएड्स मृतकों के लिए बहुत बलिदान करते हैं और उनके सम्मान में कई तरह के समारोह करते हैं, लेकिन उनका मानना है कि केवल तादीबे की आत्माएँ ही अमरता का आनंद लेती हैं और निरंतर बलिदान की मांग करते हुए हवा में मंडराती रहती हैं।
पूर्व की ओर, साइबेरिया के उत्तरी भाग में ओस्टियाक लोग रहते हैं, जिन्होंने नाममात्र के लिए ग्रीक चर्च के संस्कारों को अपनाया है, लेकिन उनके बीच जादू-टोना बहुत प्रचलित है। कई ओस्टियाक अपने साथ बुतपरस्ती का वर्णन लेकर चलते हैं, जिसे वे शैतान कहते हैं।

क्या यह नाम, अरबी शैतान की तरह, शैतान के नाम का अपभ्रंश मात्र है, यह कहना मुश्किल होगा। इस तरह की बड़ी प्रतिमाएँ ओस्टियाक लॉज के फर्नीचर का हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें सात मोतियों की कढ़ाई वाले वस्त्र पहनाए जाते हैं, और चांदी के सिक्कों की एक माला से गर्दन तक लटकाया जाता है। एक अजीब तरह के द्वैतवाद में उन्हें कई झोपड़ियों में वर्जिन मैरी की छवि के साथ कंधे से कंधा मिलाकर रखा जाता है, और भोजन के समय उनके होठों पर कच्चे शिकार या मछली का खून लगाया जाता है।

यह ओस्टियाक लोग ही हैं, जिनसे "शामन" शब्द की उत्पत्ति हुई। ये शमन केवल औषधि-पुरुष हैं। साइबेरिया के विशाल बंजर क्षेत्र के दक्षिणी भागों में रहने वाले मंगोल भी जादू-टोने के प्राचीन अभ्यासी हैं और वे भविष्यवाणी पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। यह पता लगाने के लिए कि मौसम का कौन-सा विवरण किसी भी समय के लिए प्रचलित रहेगा, वे यदेह-ताश नामक एक पत्थर का उपयोग करते हैं, जिसमें जादुई गुण होते हैं। इसे पानी के एक बेसिन के ऊपर लटकाया जाता है या उसमें रखा जाता है, और ऐसा लगता है कि यह उसी तरह का पत्थर है जिसका उपयोग तुर्कमानों के बीच होता था, जैसा कि इब्न मोहलहल, एक प्रारंभिक अरब यात्री द्वारा बताया गया है।

प्रसिद्ध विजेता, तैमूर ने अपने संस्मरणों में दर्ज किया है कि जेट्स ने भारी बारिश उत्पन्न करने के लिए मंत्रों का सहारा लिया, जिससे उनके घुड़सवारों को उनके खिलाफ़ कार्रवाई करने में बाधा हुई। एक यदाची, या मौसम-जादूगर को कैदी बना लिया गया, और उसका सिर काट दिए जाने के बाद तूफान थम गया। बाबू अपने एक पुराने मित्र ख्वाजा का मुलाई का ज़िक्र करते हैं, जो बाज़बाजी में अपने हुनर और यादगेरी के ज्ञान के लिए जाने जाते थे, यानी जादू के ज़रिए बारिश और बर्फ़ गिराने की विद्या।

1552 में जब रूसियों ने कज़ान की घेराबंदी की थी, तब भारी बारिश से वे काफ़ी परेशान थे और उन्होंने इस प्रतिकूल मौसम के लिए तातार रानी की कला को ज़िम्मेदार ठहराया, जो एक जादूगरनी थी। * 18वीं सदी की शुरुआत में, चीनी सम्राट शि-त्सुंग ने मंगोलिया के आठ बैनरों को संबोधित करते हुए बारिश के जादू के खिलाफ़ एक घोषणा जारी की। "अगर मैं ईमानदारी से प्रार्थना करते हुए भी इस बात से डरता हूँ कि शायद स्वर्ग मेरी प्रार्थना को अनुत्तरित छोड़ दे, तो यह वास्तव में असहनीय है कि बारिश की कामना करने वाले आम लोग अपनी मर्जी से मिट्टी की वेदियाँ बना लें; और होशांग (बौद्ध बोन्ज़ेस) और ताओसी की भीड़ को एक साथ लाकर आत्माओं को उनकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बुलाते हैं।"

325. साइमन मैगस: नए नियम (प्रेरितों के काम 3) में वर्णित जादूगर जिसने सामरिया के लोगों को मोहित किया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उसके पास दिव्य शक्ति है। वह सामरिया या साइप्रस में पैदा हुआ था और वह उन सामरियों में से था जो फिलिप के उपदेश से प्रभावित होकर बपतिस्मा लेने उसके पास आए थे। बाद में, जब पतरस और यूहन्ना ने नए धर्मांतरित लोगों पर हाथ रखा, ताकि उन्हें पवित्र आत्मा मिले, तो साइमन ने शिष्यों को ऐसी ही शक्ति प्राप्त करने के लिए पैसे की पेशकश की।

लेकिन पतरस ने उसे पैसे से परमेश्वर का उपहार खरीदने की कोशिश करने के लिए कड़ी फटकार लगाई और उसे प्रार्थना करने के लिए कहा कि उसके बुरे विचार को क्षमा किया जाए, जिस पर पहले से ही पश्चाताप कर रहे साइमन ने कहा, "मेरे लिए प्रभु से प्रार्थना करो, कि जो कुछ तुमने कहा है, वह मुझ पर न आए।

हालाँकि हमें विस्तार से नहीं बताया गया है कि साइमन ने सामरिया के लोगों को किस जादू से मोहित किया था, लेकिन कुछ शुरुआती चर्च लेखकों ने उसके कामों का रिकॉर्ड छोड़ा है। उन्होंने कहा कि वह जब चाहे खुद को अदृश्य बना सकता था, किसी दूसरे व्यक्ति या निचले जानवरों का रूप धारण कर सकता था, आग से बिना किसी नुकसान के गुजर सकता था, मूर्तियों को जीवित कर सकता था, बिना किसी दृश्य गति के फर्नीचर को हिला सकता था और समान रूप से चमत्कारी प्रदर्शनों की एक लंबी सूची बना सकता था।

प्रेरितों की चमत्कार करने की शक्ति प्राप्त करने की अपनी इच्छा के स्पष्टीकरण में उन्होंने कहा कि उनके जादू-टोने को करने में बहुत समय और परेशानी लगती थी, क्योंकि कई जादुई अनुष्ठानों और मंत्रों की आवश्यकता होती थी, जबकि प्रेरितों के चमत्कार कुछ शब्दों के उच्चारण से आसानी से और सफलतापूर्वक पूरे हो जाते थे। साइमन ने जादू की कला जिस महापुरुष से सीखी थी, उसका नाम डोसिथियस था, जो भविष्यवक्ताओं द्वारा बताए गए मसीहा होने का दिखावा करता था और जो ईसा मसीह का समकालीन था।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस व्यक्ति से उसने गुप्त विद्या का बहुत बड़ा भंडार प्राप्त किया था और अपनी शक्ति का श्रेय मुख्य रूप से उन उन्मादपूर्ण परिस्थितियों को जाता है, जिनमें वह खुद को झोंक सकता था। इन परिस्थितियों के माध्यम से वह खुद को बूढ़ा या जवान दिखाने में सक्षम था, और अपनी इच्छा से बचपन या बुढ़ापे में लौट सकता था। यह स्पष्ट है कि उसे पारलौकिक जादू में दीक्षित नहीं किया गया था, बल्कि वह केवल मानवता और प्रकृति के रहस्यों पर अधिकार की प्यास में भस्म हो गया था। प्रेरितों द्वारा

तिरस्कृत होने के कारण, उसने उनके समान तीर्थयात्राएँ कीं, जिसमें उसने खुद को भीड़ द्वारा पूजे जाने की अनुमति दी।

उसने घोषणा की कि वह स्वयं ईश्वर की महिमा का प्रकटीकरण था और हेलेना, जो उसकी एक यूनानी दासी थी, उसका प्रतिबिंब थी। इस प्रकार उसने ईसाई धर्म का विपरीत अर्थ में अनुकरण किया, बुराई और विद्रोह के शाश्वत शासन की पुष्टि की, और वास्तव में, एक मसीह विरोधी था। कुछ समय बाद वह रोम गया, जहाँ वह सम्राट नीरो के सामने उपस्थित हुआ।

कहा जाता है कि उसने उसका सिर काट दिया था, लेकिन उसका सिर उसके कंधों पर वापस आ गया, और उसे तानाशाह ने दरबारी जादूगर के रूप में नियुक्त किया। किंवदंती कहती है कि रोम में साइमन के सिद्धांत के प्रसार से घबराए सेंट पीटर ने इसका मुकाबला करने के लिए वहाँ की मरम्मत की, कि नीरो को उसके आगमन के बारे में पता चल गया, और पीटर को एक प्रतिद्वंद्वी जादूगर समझकर उसने अपने मनोरंजन के लिए उन्हें एक साथ लाने का संकल्प लिया। सेंट क्लेमेंट को दिए गए एक विवरण में कहा गया है कि पीटर के आगमन पर, साइमन एक खिड़की से बाहर की हवा में शान से उड़ गया।

प्रेरित ने एक जोरदार प्रार्थना की, जिसके बाद जादूगर ने जोर से चिल्लाते हुए धरती पर धमाका किया, और उसके दोनों पैर टूट गए। नीरो ने बहुत नाराज़ होकर संत को तुरंत कैद कर लिया और ऐसा कहा जाता है कि साइमन की मृत्यु उसके गिरने से हुई। हालाँकि, उसने मेरेंडर के नेतृत्व में एक अलग स्कूल की स्थापना की थी, जिसने अपने अनुयायियों को आत्मा और शरीर की अमरता का वादा किया था। 1858 तक फ्रांस और अमेरिका में एक संप्रदाय मौजूद था जो इस जादूगर के सिद्धांतों को मानता था।

326. छठी इंद्री: आध्यात्मिक अनुभूति की क्षमता को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक शब्द, जो पाँच भौतिक इंद्रियों से अलग और उनसे उच्चतर है। यह माध्यम, मानसिक या संवेदनशील और कुछ हद तक सभी सम्मोहन विषयों का अधिकार है। यह बिल्कुल भी एक अलग इंद्रिय नहीं है, बल्कि भौतिक इंद्रियों के आध्यात्मिक सहसंबंधों से मिश्रित है।

327. स्लेट लेखन : तथाकथित "प्रत्यक्ष" आत्मा लेखन या आत्मकथा का एक रूप, जो हमेशा से सिअन्स की सबसे लोकप्रिय घटनाओं में से एक रहा है। अधिकांश मामलों में कार्यप्रणाली एक जैसी होती है। माध्यम और बैठने वाला

एक छोटी सी मेज के विपरीत छोर पर अपनी सीट लेते हैं, प्रत्येक एक साधारण स्कूल स्लेट के एक कोने को पकड़ता है, जिसे वे इस प्रकार मेज के नीचे की ओर मजबूती से दबाए रखते हैं। स्लेट-पेन्सिल का एक छोटा टुकड़ा पहले स्लेट और मेज के बीच में रखा जाता है, कथित आत्मा-लेखक के उपयोग के लिए।

यदि रुख सफल होता है, तो कुछ क्षणों के अंत में एक खरोंचने की आवाज़ सुनाई देती है, जैसे कि कोई स्लेट पर लिख रहा हो, तीन ज़ोरदार आवाज़ें संदेश के समापन का संकेत देती हैं, और स्लेट को वापस लेने पर, यह आंशिक रूप से लेखन से ढका हुआ पाया जाता है - या तो आत्मा-दुनिया से एक सामान्य संदेश, या बैठने वाले द्वारा पहले से लिखे गए किसी प्रश्न का उत्तर। इस तरह से आध्यात्मिक लेखन प्राप्त करने में सबसे सफल माध्यमों में डॉ. स्लेड और मि. एग्लिंटन थे।

पूर्व अमेरिकी माध्यम, 1876 में इंग्लैंड आए और शिक्षा और वैज्ञानिक उपलब्धियों के बहुत से लोगों को चकित करने में सफल रहे। उनके आलोचकों ने उनकी सफलता का श्रेय, कम से कम आंशिक रूप से, उनके स्पष्ट और आकर्षक तरीके को दिया है, जिसने संदिग्ध लोगों को शांत करने में बहुत मदद की। हालाँकि, जल्द ही प्रोफेसर रे लैंकेस्टर ने उनकी चालाकी को उजागर कर दिया, हालाँकि इस खुलासे को कई लोगों ने अनिर्णायक माना, और "डॉ." हेनरी स्लेड पर मुकदमा चलाया गया।

हालाँकि उन्हें तीन महीने की कड़ी मेहनत की सजा सुनाई गई, लेकिन आरोप में कुछ शब्दों को छोड़ देने से दोषसिद्धि का कोई असर नहीं हुआ। लेकिन डॉ. स्लेड ने पाया कि इंग्लैंड उनके लिए बहुत गर्म हो गया था, और वे जल्दी ही वहाँ से चले गए जहाँ से वे आए थे। विभिन्न देशों में उनके रुख के कई विवरण दिलचस्प हैं, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि भोले-भाले आध्यात्मिक लोगों और प्रशिक्षित जांचकर्ताओं के बीच मतभेद हैं।

डॉ. रिचर्ड हॉजसन ने हालांकि बताया कि बाद की कक्षा में भी गलत अवलोकन के उदाहरण अपवाद के बजाय नियम हैं, खासकर जहां प्रदर्शन में हाथ की सफाई प्रमुख भूमिका निभाती है। स्लेड के योग्य उत्तराधिकारी विलियम एग्लिंटन थे, जिन्होंने स्लैट्स-लेखन अभिव्यक्तियों के लिए माध्यम के रूप में काम किया और असाधारण लोकप्रियता हासिल की, आध्यात्मिक पत्रिका लाइट में सौ से अधिक लोगों ने उनकी माध्यमवादी शक्तियों की गवाही दी। उनके प्रदर्शनों के बारे में बोलते हुए, श्री सी. सी. मैसी ने कहा, "कई लोग, जिनमें से मैं भी एक हूं, इस राय के हैं कि इन घटनाओं के लिए आम तौर पर और विशेष रूप से आत्मकथा के लिए मामला पहले से ही पूरा हो चुका है।"

एग्लिंटन की अभिव्यक्तियाँ पूर्ण प्रकाश में बनाई गई थीं, और उनके सत्र शायद ही कभी खाली होते थे, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बहुत से लोग, इस बात से अनभिज्ञ हैं कि जादू किस हद तक किया जा सकता है, और अपनी खुद की क्षमता में अति-आत्मविश्वास रखते हैं स्लेट लेखन : तथाकथित "प्रत्यक्ष" आत्मा लेखन या आत्मकथा का एक रूप, जो हमेशा से रुख की सबसे लोकप्रिय घटनाओं में से एक रहा है।

अधिकांश मामलों में कार्यप्रणाली एक जैसी होती है। माध्यम और बैठने वाला एक छोटी सी मेज के विपरीत छोर पर अपनी सीट लेते हैं, प्रत्येक एक साधारण स्कूल स्लेट के एक कोने को पकड़ता है, जिसे वे इस प्रकार मेज के नीचे की ओर मजबूती से दबाए रखते हैं। स्लेट-पेन्सिल का एक छोटा टुकड़ा पहले स्लेट और मेज के बीच में रखा जाता है, कथित आत्मा-लेखक के उपयोग के लिए।

यदि रुख सफल होता है, तो कुछ क्षणों के अंत में एक खरोंचने की आवाज़ सुनाई देती है, जैसे कि कोई स्लेट पर लिख रहा हो, तीन ज़ोरदार आवाज़ें संदेश के समापन का संकेत देती हैं, और स्लेट को वापस लेने पर, यह आंशिक रूप से लेखन से ढका हुआ पाया जाता है - या तो आत्मा-दुनिया से एक सामान्य संदेश, या बैठने वाले द्वारा पहले से लिखे गए किसी प्रश्न का उत्तर। इस तरह से आध्यात्मिक लेखन प्राप्त करने में सबसे सफल माध्यमों में डॉ. स्लेड और मि. एग्लिंटन थे।

पूर्व अमेरिकी माध्यम, 1876 में इंग्लैंड आए और शिक्षा और वैज्ञानिक उपलब्धियों के बहुत से लोगों को चकित करने में सफल रहे। उनके आलोचकों ने उनकी सफलता का श्रेय, कम से कम आंशिक रूप से, उनके स्पष्ट और आकर्षक तरीके को दिया है, जिसने संदिग्ध लोगों को शांत करने में बहुत मदद की। हालाँकि, जल्द ही प्रोफेसर रे लैंकेस्टर ने उनकी चालाकी को उजागर कर दिया, हालाँकि इस खुलासे को कई लोगों ने अनिर्णायक माना, और "डॉ." हेनरी स्लेड पर मुकदमा चलाया गया।

हालाँकि उन्हें तीन महीने की कड़ी मेहनत की सजा सुनाई गई, लेकिन आरोप में कुछ शब्दों को छोड़ देने से दोषसिद्धि का कोई असर नहीं हुआ। लेकिन डॉ. स्लेड ने पाया कि इंग्लैंड उनके लिए बहुत गर्म हो गया था, और वे जल्दी ही वहाँ से चले गए जहाँ से वे आए थे। विभिन्न देशों में उनके रुख के कई विवरण दिलचस्प हैं, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि भोले-भाले आध्यात्मिक लोगों और प्रशिक्षित जांचकर्ताओं के बीच मतभेद हैं। डॉ. रिचर्ड हॉजसन ने हालांकि बताया

कि बाद की कक्षा में भी गलत अवलोकन के उदाहरण अपवाद के बजाय नियम हैं, खासकर जहां प्रदर्शन में हाथ की सफाई प्रमुख भूमिका निभाती है।

स्लेड के योग्य उत्तराधिकारी विलियम एग्लिंटन थे, जिन्होंने स्लैट्स-लेखन अभिव्यक्तियों के लिए माध्यम के रूप में काम किया और असाधारण लोकप्रियता हासिल की, आध्यात्मिक पत्रिका लाइट में सौ से अधिक लोगों ने उनकी माध्यमवादी शक्तियों की गवाही दी। उनके प्रदर्शनों के बारे में बोलते हुए, श्री सी. सी. मैसी ने कहा, "कई लोग, जिनमें से मैं भी एक हूं, इस राय के हैं कि इन घटनाओं के लिए आम तौर पर और विशेष रूप से आत्मकथा के लिए मामला पहले से ही पूरा हो चुका है।"

एग्लिंटन की अभिव्यक्तियाँ पूर्ण प्रकाश में बनाई गई थीं, और उनके सत्र शायद ही कभी खाली होते थे, इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बहुत से लोग, इस बात से अनभिज्ञ हैं कि जादू किस हद तक किया जा सकता है, और अपनी खुद की क्षमता में अति-आत्मविश्वास रखते हैं.

328. SLAVS - स्लाव: स्लावोनिक जातियों में व्यापक दानव विद्या है, और कुछ हद तक उनका धार्मिक पंथ जीववाद (q.v.) और बहुदेववाद के बीच की अवस्था में प्रतीत होता है, अर्थात ईश्वर और आत्मा-पूजा के बीच। उनमें से सभी जादू-टोना, परी और लोक-कथाएँ मुख्य रूप से प्रकृति की कुछ आत्माओं में विश्वास पर आधारित हैं, जो कुछ हद तक पैरासेल्सस और कॉम्टे डी गैबलिस के न्यूमेटोलॉजी को याद दिलाती हैं।

डॉ. क्रॉस कहते हैं, "नीच लोगों में," जिन्हें समोविले, समोदिवी और विलिव्रजासी के नाम से भी जाना जाता है, हमारे जंगल और मैदानी आत्माओं या मध्य जर्मनी, फ्रांस और बवेरिया के लकड़ी और काई-लोगों या "हेस्से के जंगली लोगों" से निकट संबंध हैं। आइफेल, साल्ज़बर्ग और टायरॉल, बोहेमिया की लकड़हारे औरतें और लकड़हारे, टायरोलिस फैंगगेन, फैंकन, नोर्केल और हैप्पी लेडीज़, रूमानिश ओरकेन, यूगुआन और डायलेन, डेनिश एलेकोनर, स्वीडिश स्कोगस्नुफ़वाज़ और रूसी लेजेसी, जबकि कुछ मामलों में उनका ट्यूटनिक वाल्किरीज़ से संबंध है।"

हालाँकि, वे अधिक दिव्य प्राणियों की तरह हैं, जो लगातार मनुष्यों की नियति पर नज़र रखते हैं और उसे नियंत्रित करते हैं। सभी अवसरों पर उनकी प्रार्थना की जाती है या उन्हें भगाया जाता है। संक्षेप में उनकी उत्पत्ति निश्चित रूप से शैमनिस्टिक है। लेलैंड कहते हैं: "हम अभी भी विला को पुराने गाथागीतों में वर्णित रूप में पा सकते हैं, सुंदरता और शक्ति का अवतार, पीड़ितों का दयालु

मित्र, नायकों की प्रतिभा, चट्टान और नदी और हरे-भरे पेड़ों के किनारे रहने वाले। लेकिन वे उन सभी के प्रति अपने क्रोध में अडिग रहते हैं जो उन्हें धोखा देते हैं या वादा तोड़ते हैं। बल्कि, वे उन लोगों को भी भयानक दंड देते हैं जो उनकी अंगूठियों को या उनके द्वारा गर्मियों की चांदनी में किए जाने वाले नृत्यों को बिगाड़ते हैं।

इसलिए यह कहावत किसी भी ऐसे व्यक्ति पर लागू होती है जो अचानक बीमार पड़ जाता है, 'उसने परी की अंगूठी पर पैर रख दिया।' "(सर्किल देखें।) दक्षिणी स्लावों में तीन प्रकार की चुड़ैलें या आत्माएँ हैं, ज़्राकने विले या हवाई आत्माएँ, जो मनुष्यों के प्रति बुरी तरह से प्रवृत्त होती हैं और उन्हें गंभीर रूप से घायल करती हैं, विल-ओ-द-विस्प्स, जो रातों में लोगों को भटकाती हैं; पोज़ेमने विले, मिलनसार आत्माएँ, जो मनुष्यों को बुद्धिमानीपूर्ण सलाह देती हैं, और पृथ्वी में निवास करती हैं;

और पोडोवने विले या जल आत्माएँ, जो किनारे पर मनुष्यों के प्रति दयालु होती हैं, लेकिन अपने स्वयं के तत्व पर एक हद तक विश्वासघाती होती हैं। एक अन्य जल-आत्मा लिहो है, स्लावोनिक पॉलीफेमस, एक भयानक और भयावह राक्षस, लेशी एक लकड़ी-दानव है, नोरहा निचली दुनिया का डरावना भगवान है, और कोस्ची एक राक्षस का वर्णन है जिसका प्रांत राजकुमारियों का अपहरण करना है।

329.जादू टोना : - स्लावोनिक लोक-कथाओं में चुड़ैल का बहुत बार उल्लेख किया जाता है, खासकर दक्षिणी स्लावों के बीच। उसे वजेस्टिका (पुल्लिंग विएस्टे) कहा जाता है जिसका मूल अर्थ है "जानने वाली" या "अच्छी तरह से जानकारी रखने वाली", विदमा (रूसी)। डालमटिया और दक्षिणी स्लावों में चुड़ैल को क्रस्टा कहा जाता है, "क्रॉस्ड" इस विचार के संदर्भ में कि वह नरक की सींग वाली जाति की है।

चुड़ैलों को इस शब्द से पुकारा जाना इतना क्रोधित करता है कि जब वे सुनती हैं कि किसी ने इस शब्द का इस्तेमाल किया है तो वे रात में उसके घर आती हैं और उसे चार टुकड़ों में फाड़ देती हैं, जिसे वे स्वर्ग की चारों हवाओं में फेंक देती हैं, और उसके सभी मवेशियों और पशुओं को भगा देती हैं। इसलिए देश के चतुर किसान चुड़ैल को हमाना सेना या "आम महिला" कहते हैं। हालांकि, स्लावोनिक चुड़ैल के कई रूप हैं, 'और वजेस्टिका मैकियानिका से अलग है और बाद वाला ज़्लोकोब्निका या "बुराई से मिलने वाला" से अलग है, जिसका सुबह सामना करना दुर्भाग्यपूर्ण है, या जिसके पास बुराई है बुरी नज़र। एक सर्बियाई अधिकारी कहते हैं: "मैंने अक्सर पुराने होडज़ा और कादिजा से सुना है कि हर महिला

वैलाच चालीस साल की होते ही "भगवान हमारे साथ हो" को त्याग देती है और चुड़ैल (वेजेस्टिका) या कम से कम स्लोहोबनीका या मैड'ऑनिका बन जाती है।

एक असली चुड़ैल की नाक के नीचे एक क्रॉस का निशान होता है, एक ग्लोकोबनीका में दाढ़ी के कुछ बाल होते हैं, और एक मैसियोनिका को उसके चेहरे पर खून के धब्बों के साथ काले सिलवटों से भरे माथे से पहचाना जा सकता है।' दक्षिण स्लावोनियन देशों में सेंट जॉर्ज दिवस पर किसान चुड़ैलों से बचाने के लिए मवेशियों के सींगों को मालाओं से सजाते हैं।

वे सातवें या बारहवें बच्चे को बहुत महत्व देते हैं, जो, उनका मानना है, जादू टोने के खिलाफ दुनिया के महान रक्षक हैं। लेकिन सेंट जॉन की पूर्व संध्या पर ये बहुत ख़तरे में होते हैं, क्योंकि तब चुड़ैलों के पास सबसे ज़्यादा ताकत होती है, वे उन पर डंडों या पौधों के स्टंप से हमला करती हैं, जिसके कारण किसान शरद ऋतु में ज़मीन से इस तरह की हर चीज़ को पूरी तरह से हटा देते हैं। क्रिस्टनिह, या जादूगर, विला महिलाओं को आकर्षित करते हैं, जो ज़्यादातर मामलों में उनकी रखैल बनने की इच्छुक होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे सैलामैंडर जैसी महिलाएँ पुरुषों के साथ संभोग करने की इच्छा रखती हैं।

हेनरिक कोर्नमैन की क्यूरियोसा, 1666 देखें।) जिस आदमी को विटा का प्यार मिलता है, उसे बहुत भाग्यशाली माना जाता है। स्लाव का मानना है कि सेंट जॉर्ज के दिन चुड़ैलें चर्च की सीढ़ियों पर चढ़ती हैं, ताकि घंटी की धुरी से ग्रीस निकाल सकें, जिसे वे किसी कारण से बहुत ज़्यादा महत्व देती हैं। स्लावोनिक लोककथाओं में भी परिवर्तन की कहानियाँ काफी आम हैं, जो साबित करती हैं कि यह इन देशों की चुड़ैलों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला जादू का एक रूप था। स्लावोनिक देशों में पिशाचों में विश्वास एक उत्कृष्ट अंधविश्वास है, और इसके संबंधों पर वैम्पायर लेख में पूरी तरह से चर्चा की गई है।

330.स्लावेंटेल पोल्टरजिस्ट: 1806-7 की सर्दियों में काउंसिलर हैन और चार्ल्स कर्न नामक एक अधिकारी, जो उस समय सिलेसिया के साल्वेन्सिक कैसल में रह रहे थे, कुछ अजीबोगरीब घटनाओं से परेशान थे, जिससे पता चलता था कि कैसल में भूत-प्रेत है: अजीबोगरीब आवाजें सुनाई दे रही थीं, छोटी-छोटी चीजें टेबल से उठती हुई कमरे में उड़ती हुई दिखाई दे रही थीं। इसका एकमात्र विवरण काउंसिलर हैन के पास है, और जैसा कि आमतौर पर ऐसी परिस्थितियों में होता है, सबसे आश्चर्यजनक घटनाओं को रिकॉर्डर ने नहीं देखा था, बल्कि उसके दोस्तों ने उसे बताया था। इस प्रकार कहा जाता है कि कर्न ने शीशे में एक सफेद कपड़े पहने महिला की छाया देखी थी; जबकि हैन उस समय मौजूद नहीं थे जब

बीयर के एक जग को अदृश्य हाथों से टेबल से उठाया गया, झुकाया गया और उसकी सामग्री को अदृश्य गले से नीचे उतारा गया।

331.सोलोमन**:** दाऊद के पुत्र, इस्राएल के राजा सोलोमन का जादुई अभ्यास से संबंध, हालांकि इसमें कोई बाइबिल अधिकार नहीं है, फिर भी इसके पीछे प्राच्य परंपरा का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। हालांकि, यह माना जाता है कि यहूदी सोलोमन को कई मामलों में एक और भी पुराने और पौराणिक व्यक्ति के साथ भ्रमित किया गया है। फिर अरबों और फारसियों के पास एक प्रागैतिहासिक जाति की किंवदंतियाँ हैं, जिन पर सुलेमान नाम के बहत्तर राजाओं का शासन था, जिनमें से अंतिम ने एक हज़ार साल तक शासन किया।

यार्कर कहते हैं, "ऐसा नहीं लगता कि ये सुलेमान जो सभी जिन्न, अफ़्रीत और अन्य तात्विक आत्माओं के शासक हैं, इस्राएल के राजा से कोई संबंध रखते हैं।" उनका कहना है कि यह नाम बेबीलोन के एक देवता और दिवंगत डॉ. केनेली के नाम में पाया जाता है। हाफ़िज़ के अनुवादक का कहना है कि शुरुआती आर्य शिक्षकों का नाम मोहन, बॉडीज़ या सोलीमी था और सुलेमान शाही शक्ति का एक प्राचीन शीर्षक था, जो "सुल्तान" या "फ़राओ" का पर्याय था।

एक फ़ारसी किंवदंती बताती है कि काफ़ के पहाड़ों में, जहाँ केवल सुलैमान की जादुई अंगूठी से पहुँचा जा सकता है, वहाँ विशालकाय अर्ज़ेक द्वारा बनाई गई एक गैलरी है, जहाँ एक जाति की मूर्तियाँ रखी गई थीं, जिन पर सुलेमान या पूर्व के बुद्धिमान राजाओं का शासन था। अफ़गानिस्तान और भारत की सीमाओं पर ठोस चट्टान से बनी सुलैमान की एक बड़ी कुर्सी या सिंहासन है, जिसे तख्त-ए-सुलेमान या सुलैमान का सिंहासन कहा जाता है, इसका प्राचीन आर्यन नाम शंकर अचरगा है।

इन पुराने सुलेमान के साथ, हमें संभवतः गुप्तविद्या की परंपरा के साथ संबंध की तलाश करनी चाहिए, और यह असंभव नहीं है कि सुलैमान और उसके मंदिर से संबंधित किंवदंती को इनके साथ भ्रमित किया गया है, और यह कि फ्रीमेसनरी की प्राचीनता के नायक, जो सुलैमान के मंदिर के निर्माण से अपने पंथ की तारीख बताते हैं, ने सुलेमान के प्राचीन राजवंश से संबंधित कुछ और भी पुराने संस्कार या रहस्य को हिब्रू सम्राट की मेसोनिक गतिविधियों की परिस्थितियों के साथ भ्रमित कर दिया है।

जोसेफस कहते हैं, "ईश्वर ने सुलैमान को वह कौशल सीखने में सक्षम बनाया जिससे राक्षसों को बाहर निकाला जा सकता है, जो मनुष्यों के लिए उपयोगी और स्वास्थ्यवर्धक विज्ञान है। उसने ऐसे मंत्र भी रचे, जिनसे व्याधियाँ दूर होती हैं,

और उसने भूत भगाने का तरीका भी छोड़ा, जिससे राक्षसों को भगाया जाता है, ताकि वे कभी वापस न आएँ।

और इलाज का यह तरीका आज भी बहुत कारगर है; क्योंकि मैंने अपने देश के एक व्यक्ति को देखा है, जिसका नाम एलीएज़र था, जो वेस्पासियन और उसके बेटों, उसके कप्तानों और उसके सैनिकों की पूरी भीड़ की मौजूदगी में राक्षसों से पीड़ित लोगों को मुक्त कर रहा था। इलाज का तरीका यह था। उसने एक अंगूठी डाली जिसमें सुलैमान द्वारा बताए गए इन प्रकारों में से एक की जड़ थी; और जब वह व्यक्ति तुरंत गिर गया, तो उसने उसे फिर से उसके पास न लौटने की शपथ दिलाई, सुलैमान का ज़िक्र करते हुए, और उसके द्वारा कहे गए मंत्रों को पढ़ते हुए।

और 'जब एलीएजर दर्शकों को यह समझाता और दिखाता कि उसके पास ऐसी शक्ति है, तो वह थोड़ी दूर पर एक प्याला या पानी से भरा कटोरा रखता और दानव को आदेश देता कि जैसे ही वह आदमी से बाहर निकले, उसे पलट दे और इस तरह दर्शकों को बता दे कि वह आदमी को छोड़कर चला गया है।' सुलैमान की इन जादूई किताबों के कुछ नकली अंश फैब्रीशियस के "कोडेक्स स्यूडेपिग्राफस" में देखे जा सकते हैं और जोसेफुश ने खुद भी एंटीडिमोनियाकल जड़ों में से एक का वर्णन किया है, जो पाठक को "मैनड्रैक" इकट्ठा करने के खतरों की याद दिलाती है।

कुरान में आरोप लगाया गया है कि सुलैमान के पास हवाओं पर शक्ति थी और वह दिन के दौरान दुनिया भर में अपने सिंहासन पर सवार था और हवा हर रात उसे यरूशलेम वापस लाती थी। यह सिंहासन हरे रेशम के कालीन पर रखा गया था, जिसकी लंबाई और चौड़ाई बहुत ज़्यादा थी और सुलैमान की पूरी सेना, उसके दाहिने हाथ के आदमी और उसके बाएं हाथ के जिन्न के लिए खड़े होने की जगह पर्याप्त थी।

सबसे सुंदर पक्षियों की एक सेना सिंहासन के पास मंडरा रही थी, जो उसके ऊपर एक तरह की छतरी बना रही थी, और परिचारक, राजा और उसके साथियों को छिपाने के लिए यह मोती के लिए गोता लगाना और अन्य कार्य करना था। हमें उसी अधिकार से यह भी बताया गया है कि शैतानों को सुलैमान को लुभाने की अनुमति मिली थी, जिसमें वे सफल नहीं हुए, उन्होंने उसके चरित्र को बर्बाद करने की साजिश रची।
उन्होंने कई मैगिल की किताबें लिखीं और उन्हें उसके सिंहासन के नीचे छिपा दिया; और जब वह मर गया तो उन्होंने यहूदियों के प्रमुख लोगों से कहा कि अगर वे यह पता लगाना चाहते हैं कि सुलैमान ने मनुष्यों, जिन्न और हवाओं

पर अपनी पूर्ण शक्ति कैसे प्राप्त की, तो उन्हें उसके सिंहासन के नीचे खुदाई करनी चाहिए। उन्होंने ऐसा किया और पाया कि किताबें सबसे अपवित्र अंधविश्वासों से भरी हुई थीं। अधिक जानकार और प्रबुद्ध लोगों ने उन पुस्तकों में वर्णित प्रथाओं में भाग लेने से इनकार कर दिया, लेकिन उन्हें आम लोगों ने स्वेच्छा से अपना लिया।

मुसलमानों का दावा है कि यहूदी पुजारियों ने सुलैमान के बारे में यह निंदनीय कहानी प्रकाशित की, जिस पर तब तक विश्वास किया गया जब तक कि मुहम्मद ने भगवान के आदेश से उसे मूर्तिपूजक नहीं घोषित कर दिया। मुसलमानों का कहना है कि सुलैमान ने दमिश्क और अन्य शहरों से एक हजार घोड़े लाए थे, जिन पर उसने विजय प्राप्त की थी, हालांकि कुछ लोग कहते हैं कि उनके पिता दाऊद ने उन्हें अमालेकियों से छीनकर उनके पास छोड़ दिया था; और अन्य लोग दावा करते हैं कि वे लाल सागर से आए थे, और उन्हें पंख दिए गए थे।

राजा अपने घोड़ों का निरीक्षण करना चाहता था, और उन्हें अपने सामने परेड करने का आदेश दिया; और उनकी समरूपता और सुंदरता ने उसका ध्यान इतना आकर्षित किया कि वह सूर्यास्त के बाद भी उन्हें देखता रहा, और इस तरह शाम की प्रार्थना को अनदेखा कर दिया जब तक कि बहुत देर नहीं हो गई। जब उसे अपनी चूक का अहसास हुआ, तो वह इस बात से इतना चिंतित हुआ कि उसने सभी घोड़ों को भगवान को भेंट के रूप में मारने का आदेश दिया, सिवाय उनमें से सौ सर्वश्रेष्ठ घोड़ों के।

हमें बताया जाता है कि इससे उसे पर्याप्त प्रतिफल मिला, क्योंकि उसे हवाओं पर अपने घोड़ों के प्रभुत्व को खोने के लिए पर्याप्त प्रतिफल मिला था। यरूशलेम के मंदिर के निर्माण के संबंध में मुसलमान टिप्पणीकारों द्वारा निम्नलिखित परंपरा का वर्णन किया गया है। उनके अनुसार, दाऊद ने इसकी नींव रखी और जब वह मर गया तो उसने इसे सुलैमान को पूरा करने के लिए छोड़ दिया। उस राजकुमार ने इस काम में जिन्न को लगाया, न कि मनुष्यों को; और यह विचार संभवतः राजाओं की पहली पुस्तक में कही गई बातों से उत्पन्न हो सकता है कि मंदिर "पत्थर से बनाया गया था, इसे यहाँ लाने से पहले तैयार किया गया था।

ताकि निर्माण के दौरान घर में न तो हथौड़ा, न कुल्हाड़ी, न ही लोहे का कोई औजार सुनाई दे"; और रब्बियों ने एक कीड़े को देखा, जो, उनके अनुसार, काम करने वालों की सहायता कर रहा था, जिसकी शक्ति इतनी थी कि उसने चट्टानों और पत्थरों को छेनी वाले ब्लॉकों में अलग कर दिया। सुलैमान, जब मंदिर के निर्माण में लगा हुआ था, तो उसने पाया कि उसका अंत निकट आ गया है, और

उसने प्रार्थना की कि जब तक निर्माण पूरा न हो जाए, तब तक उसकी मृत्यु को जिन्न से छिपाया जाए। उसका अनुरोध स्वीकार कर लिया गया। वह प्रार्थना करते हुए मर गया, और अपने डंडे पर झुक गया, जिसने पूरे एक साल तक उसके शरीर को सहारा दिया, और जिन्न, जिन्होंने उसे अभी भी जीवित माना, ने अपना काम जारी रखा।

एक साल की समाप्ति पर इमारत पूरी हो गई, जब एक कीड़ा जो डंडे में घुस गया था, उसे खा गया, और जिन्न के आश्चर्य के लिए शरीर जमीन पर गिर गया, और राजा को मृत पाया गया। लेबनान की घाटी के निवासियों का मानना है कि बालबेक का प्रसिद्ध शहर और मंदिर सुलैमान के निर्देशन में जिन्न द्वारा बनाया गया था। बालबेक के निर्माण का उद्देश्य अलग-अलग रूप से बताया गया है, एक परंपरा यह पुष्टि करती है कि इसका उद्देश्य मिस्र की राजकुमारी का निवास होना था, जिससे सुलैमान ने विवाह किया था, और एक अन्य कि इसे मिस्र की रानी के लिए बनाया गया था।

332.सोरेसरी **:** (लैटिन सोरलियारियस से, वह व्यक्ति जो लॉटरी द्वारा भविष्यवाणी का अभ्यास करता है।) किसी चुड़ैल या काले जादूगर द्वारा मंत्रों द्वारा बुलाई गई बुरी आत्माओं की एजेंसी द्वारा कथित अलौकिक शक्ति का उपयोग।

333.सोरेल**-**लीफ**:** सोरेल-लीफ/ का इस्तेमाल कभी-कभी लोगों को मंत्रमुग्ध करने के लिए किया जाता था, जैसा कि जॉर्ज सिंक्लेयर की शैतान की अदृश्य दुनिया में वर्णित आयरिश चुड़ैल के मामले में हुआ, जिसने एक लड़की को सोरेल का एक पत्ता दिया, जिसे बच्ची ने अपने मुंह में डाल लिया। बच्ची को बहुत यातनाएँ दी गईं, जैसे-जैसे वह करीब आती गई, यातनाएँ बढ़ती गईं।

332. स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ी**:** ऐसी तस्वीरों का निर्माण जिसमें कथित रूप से आत्मा के रूप दिखाई देते हैं। जब प्लेट विकसित की जाती है, तो बैठने वाले की समानता के अलावा, कमोबेश स्पष्ट रूप से मानव रूप जैसा दिखने वाला एक आकार दिखाई देता है, जो एक्सपोज़र के समय सामान्य दृष्टि के लिए अगोचर था। अध्यात्मवादी दावा करते हैं कि आत्माओं की तस्वीरें हैं - बैठने वालों के

दिवंगत मित्रों और रिश्तेदारों की आत्माएँ - और उनके उत्पादन को सुविधाजनक बनाने के लिए एक माध्यम की उपस्थिति की आवश्यकता होती है। इस बात के बावजूद कि बैठने वाले और अन्य लोगों द्वारा कथित आत्मा की पहचान आत्मा फ़ोटोग्राफ़ी के पक्ष में मुख्य सबूत रखती है, "सूक्ष्म आकृति" आम तौर पर बहुत अस्पष्ट और अस्पष्ट होती है, जिसमें सिर और कंधे कसकर लिपटे हुए होते हैं। स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ी का अभ्यास अमेरिका में लगभग पचास साल पहले शुरू हुआ था, और आज तक इसका अस्तित्व अनिश्चित है।

इसे सबसे पहले 1862 में बोस्टन के एक फोटोग्राफर ब्लंडर ने पेश किया था। उसी शहर के डॉ. गार्डनर की तस्वीर मुमलर ने खींची थी और प्लेट पर एक छवि दिखाई दी थी, जिसे बैठे व्यक्ति ने अपने चचेरे भाई के रूप में पहचाना, जिसकी मृत्यु बारह साल पहले हो चुकी थी। डॉ. गार्डनर ने अपने अनुभव को विदेश में प्रकाशित किया और नई फोटोग्राफी को तुरंत अध्यात्मवादियों ने अपना लिया, जिन्होंने इसे अपने विश्वासों को साबित करने का एक साधन माना। हालाँकि, 1863 में डॉ. गार्डनर ने पाया कि कम से कम दो उदाहरणों में एक जीवित मॉडल ने मुमलर की "आत्मा" की तस्वीरों के लिए काम किया था।

हालाँकि वह यह मानते रहे कि कुछ तस्वीरें असली हो सकती हैं, लेकिन मुमलर की धोखाधड़ी का पर्दाफाश करने से कुछ समय के लिए इस आंदोलन पर प्रभावी रूप से लगाम लग गई। छह साल बीतने के बाद मुमलर न्यूयॉर्क में दिखाई दिए, जहाँ अधिकारियों ने उन पर मुकदमा चलाने का प्रयास किया, लेकिन उनके खिलाफ धोखाधड़ी साबित करने के लिए सबूत अपर्याप्त थे और उन्हें बरी कर दिया गया। ब्रिटेन में प्रसिद्ध होने से पहले अमेरिका में स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ी लगभग दस साल तक फलती-फूलती रही।

जाने-माने आध्यात्मिक माध्यम श्री और श्रीमती गुप्पी ने निजी तौर पर स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ बनाने का प्रयास किया, लेकिन वे सफल नहीं हुए और अंततः उन्होंने एक पेशेवर फ़ोटोग्राफ़र, श्री हडसन की मदद ली: श्री गुप्पी की एक फ़ोटो में अब एक धुंधली, लिपटी हुई "स्पिरिट" आकृति दिखाई दे रही थी। हडसन जल्द ही लोकप्रिय हो गए और उनके स्टूडियो को भी मुमलर की तरह ही संरक्षण मिला। लंदन के ऑप्टिशियन श्री थॉमस स्लेटर ने उनकी प्रक्रिया का सावधानीपूर्वक अवलोकन किया, लेकिन किसी भी धोखाधड़ी का पता नहीं लगा पाए।

श्री बीट्टी, जो एक पेशेवर फोटोग्राफर हैं और कुछ हद तक संशयवादी भी, ने हडसन के प्रदर्शनों के बारे में निम्नलिखित बयान दिया: "वे डबल एक्सपोज़र द्वारा नहीं बनाए गए थे, न ही किसी भी तरह से अंतरिक्ष में प्रक्षेपित आकृतियों द्वारा; वे दर्पणों का परिणाम नहीं थे; वे पृष्ठभूमि में, उसके पीछे, उसके ऊपर या

उसके नीचे किसी भी मशीनरी द्वारा निर्मित नहीं थे, न ही स्नान, कैमरा या कैमरा-स्लाइड से जुड़ी किसी भी युक्ति द्वारा।" ब्रिटिश जर्नल ऑफ़ फ़ोटोग्राफ़ी के संपादक श्री ट्रेल टेलर ने कहा कि "चित्रों की तैयारी, एक्सपोज़र या विकास के दौरान कभी भी श्री हडसन दस प्लेटों के भीतर असामान्य प्रकार के नहीं दिखाई दिए।"

इस तरह की तस्वीरें उपरोक्त साक्ष्य, कुशल और उदासीन गवाहों के होठों से, स्वाभाविक रूप से आत्मा फोटोग्राफी को एक वास्तविक मानसिक घटना के स्तर तक बढ़ाते प्रतीत होते हैं। लेकिन साक्ष्य का सावधानीपूर्वक विश्लेषण, जैसा कि श्रीमती सिडविक ने साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की कार्यवाही, खंड VII में स्पिरिट फोटोग्राफी पर अपने लेख में दिया है, यह दिखाने के लिए काम करेगा कि कैसे एक प्रशिक्षित अन्वेषक भी हाथ की सफाई से धोखा खा सकता है।

और यह उल्लेखनीय है कि श्री बीटी ने बाद में खुद हडसन की प्रस्तुतियों में दोहरे प्रदर्शन के उदाहरणों की ओर इशारा किया। इसके बावजूद, हडसन ने अभ्यास करना जारी रखा, और विभिन्न आध्यात्मिक पत्रिकाओं ने उन्हें अपना समर्थन देना जारी रखा, स्पिरिचुअलिस्ट के अपवाद के साथ, जिसके संपादक, जो खुद एक व्यावहारिक फोटोग्राफर थे, ने श्री बीटी को आध्यात्मिक फोटोग्राफी की निंदा करने में सहायता की थी।

एक अन्य उत्साही अध्यात्मवादी, श्री एनमोर जोन्स, जिन्होंने पहले चित्रित "आत्माओं" में से एक में एक मृत बेटी को पहचानने का दावा किया था, बाद में स्वीकार किया कि उनसे गलती हुई थी। जिन लोगों ने फोटोग्राफिक अभिव्यक्तियों की वास्तविकता पर अपना विश्वास जताया था, वे स्वाभाविक रूप से उस चीज़ में अपना विश्वास छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे जिसे वे आत्मा-दुनिया की वास्तविकता का एक निश्चित प्रमाण मानते थे, और स्पष्ट दोहरे प्रदर्शन की परिस्थिति को कवर करने के लिए सरल स्पष्टीकरण पेश किए गए थे।

उन्होंने कहा कि आत्मा आभा, अपनी अपवर्तक शक्ति में प्राकृतिक वातावरण से भिन्न होती है, और यह आश्चर्य की बात नहीं थी कि वस्तुओं को कभी-कभी दोहराया जाता था। और इसलिए हडसन ने काफी लोकप्रियता हासिल की। बाद में खुद श्री बीट्टी ने आत्माओं की तस्वीरें बनाने का प्रयास किया, और अपनी तस्वीरों पर अस्पष्ट धब्बे और दोष प्राप्त करने में सफल रहे, उनमें से कुछ एक मानव आकृति से थोड़ी समानता रखते थे।

लेकिन यह मानने का कारण है कि एक किराए का सहायक, जिसने स्टूडियो और उपकरण प्रदान किए, पूरी तरह से संदेह से परे नहीं था। 1874 में पेरिस के फोटोग्राफर बुगेट (q.v.) लंदन चले गए, जहाँ उन्होंने आत्माओं की फोटोग्राफी का काम शुरू किया। उनके कई चित्रों को उनके ग्राहकों ने पहचाना, और यहाँ तक कि जब उन्हें फ्रांसीसी सरकार द्वारा परीक्षण किया गया, और उन्होंने धोखाधड़ी स्वीकार की, तब भी ऐसे लोग थे जिन्होंने उनके कबूलनामे को सहज मानने से इनकार कर दिया; और इस राय के लिए इच्छुक थे कि उन्हें धोखाधड़ी स्वीकार करने के लिए जेसुइट्स द्वारा रिश्वत दी गई थी, जिसमें वे निर्दोष थे।

अन्य आत्मा फोटोग्राफरों में हडसन के समकालीन पार्क्स और हाल के वर्षों में लंदन में आत्माओं के चित्र बनाने वाले बोर्सनेल शामिल थे। आत्मा फोटोग्राफी के पक्ष में मुख्य सबूत निस्संदेह उनके दोस्तों और रिश्तेदारों द्वारा आत्माओं की पहचान है, लेकिन इस तरह के परीक्षण की अविश्वसनीय प्रकृति तब देखी जा सकती है जब हम याद करते हैं कि बार-बार एक ही "आत्मा" को कई लोगों द्वारा निकट संबंधी के रूप में दावा किया गया है - एक की बहन, दूसरे का दादा, और इसी तरह।

माध्यमवादी फोटोग्राफरों के सबसे प्रमुख समर्थकों में से एक रेवरेंड स्टैनटन मोसेस (q.v.) - "एम. ए. ऑक्सन" थे - जिन्होंने उन्हें आध्यात्मिकता की वास्तविकता का सबसे अच्छा सबूत देखा। इसी दृष्टिकोण को श्री अल्फ्रेड रसेल वालेस (q.v.) ने साझा किया, जिन्होंने जनवरी, 1891 में एरिना में कहा: "यह वह है जो आध्यात्मिक रूपों की वस्तुगत वास्तविकता का संभवतः सबसे अजेय प्रदर्शन प्रस्तुत करता है।"

333.स्पिरिटिज्म**:** यह नाम आध्यात्मिकता के फ्रांसीसी रूप को दिया गया है, जो मुख्य रूप से "एलन कार्डेक" (एम. रिवैल) के सिद्धांत पर आधारित था, (q.v.) स्पिरिटिज्म ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य जगहों पर बताए गए आध्यात्मिकता से अलग था, मुख्य रूप से इसमें पुनर्जन्म के सिद्धांत को शामिल किया गया था।

एलन कार्डेक, जो आध्यात्मिक पंथों को अपनाने से पहले, लगभग 186a में पशु चुंबकत्व और फ्रेनोलॉजी के प्रतिपादक थे, ने अपनी नई शिक्षाओं को दिव्यदर्शी के माध्यम से प्राप्त आत्मा रहस्योद्घाटन पर आधारित किया, और ये शिक्षाएँ इतनी लोकप्रिय थीं कि वे तेजी से पूरे महाद्वीप में फैल गईं। ब्रिटेन में हालाँकि, प्रेतवाद को बहुत कम समर्थन मिला, इसकी एकमात्र प्रतिपादक मिस अन्ना ब्लैकवेल थीं, जिन्होंने इस देश में पुनर्जन्म के सिद्धांत को स्थापित करने का असफल प्रयास किया।

प्रेतवाद और अध्यात्मवाद को भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक खंड के अनुयायी दूसरे के सिद्धांतों के विरोधी थे, और यहाँ तक कि फ्रांस में, जहाँ प्रेतवाद ने सबसे अधिक पैर जमाए, वहाँ एक अलग अध्यात्मवादी दल था जो पुनर्जन्म के सिद्धांत को संदेह की दृष्टि से देखता था। प्रेतवादी शब्द कभी-कभी उस व्यक्ति के लिए लागू होता है जो केवल भौतिक घटनाओं की तलाश करता है, और अध्यात्मवाद के धार्मिक और दार्शनिक पहलू की उपेक्षा करता है.

334. **'**आध्यात्मिकता**:** अपने आधुनिक पहलू में आध्यात्मिकता के मूल सिद्धांत मृत्यु के बाद जीवन की निरंतरता में विश्वास और मृतकों और जीवितों के बीच संचार की संभावना है, एक माध्यम या मानसिक व्यक्ति की एजेंसी के माध्यम से, किसी अज्ञात तरीके से अलौकिक प्राणियों का मुखपत्र होने के लिए योग्य व्यक्ति। इस आधार पर आध्यात्मिकता के रूप में जाना जाने वाला विश्वास उठाया गया है, जिसे विभिन्न धर्म या दर्शन के रूप में माना जाता है।

माध्यम की एजेंसी के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से बोलने (या लिखने, चित्र बनाने आदि) के अलावा, भौतिक अभिव्यक्तियाँ भी हैं, जैसे कि आत्मा के रूपों का भौतिकीकरण, और "अपॉर्ट्स" तथाकथित "प्रत्यक्ष" लेखन, संपर्क के बिना निर्जीव वस्तुओं को हिलाना, और इसी तरह की प्रकृति की अन्य घटनाएँ। फ्रांस में आध्यात्मिकता को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द "स्पिरिटिज्म" इस देश में केवल एलन कार्डेक के सिद्धांतों पर लागू होता है, जो एक प्रसिद्ध अध्यात्मवादी थे, जो पुनर्जन्म में विश्वास करते थे, या आध्यात्मिकता के एक निम्न चरण के लिए, जिसमें केवल भौतिक अभिव्यक्तियों की तलाश की जाती है, और विषय के धार्मिक और नैतिक महत्व को अनदेखा किया जाता है।

हालाँकि अपने वर्तमान रूप में यह आंदोलन 1848 से आगे नहीं है, लेकिन इसके पूर्वजों को जादू टोना, राक्षसी कब्जे, पोल्टरजिस्टिक गड़बड़ी और पशु चुंबकत्व में खोजना संभव है। अध्यात्मवाद पाया जा सकता है, हालांकि पहले के उदाहरणों में परेशान करने वाले प्रभावों को मृतकों की आत्माओं के साथ पहचाना नहीं गया था। महामारी प्रकृति के कई प्रसिद्ध प्रकोप, जैसे कि सेवेन्स के ट्रेम्बलर्स और सेंट मेडार्ड के कन्वल्शननेस के बीच, जो देखने वालों को राक्षसी कब्जे के स्पष्ट संकेत दिखाते थे, उनके लक्षणों में आधुनिक अध्यात्मवाद के साथ काफी समानता थी।

वे सहज ट्रान्स या परमानंद, लंबे-चौड़े प्रवचनों का उच्चारण और अज्ञात भाषाओं में बोलने के साथ थे, जो सभी सेंस-रूम में पाए जाते हैं। भाषण की धाराप्रवाहता, विशेष रूप से इन अज्ञानी किसानों की, उसके "नियंत्रण" के प्रभाव में अशिक्षित माध्यम के बहिर्वाह द्वारा बराबर की गई है, यदि उससे आगे नहीं बढ़ी है। ऐसे मामलों में लक्षणों को आम तौर पर या तो स्वर्गदूतों के शैतानी कब्जे के लिए संदर्भित किया जाता था, और सबसे अधिक बार बाद वाले के लिए।

चुड़ैलों को शैतान के साथ बातचीत भी करनी होती थी, और जादू टोने के कई पहलू - और विशेष रूप से युवा महिलाओं और बच्चों द्वारा संदिग्धों के उत्पीड़न में निभाई गई भूमिका - उन भूत-प्रेत संबंधी गड़बड़ियों से एक स्पष्ट संबंध दिखाती है जो भूत-प्रेत के प्रारंभिक रूपों और आधुनिक आध्यात्मिकता के बीच जोड़ने वाली कड़ी थी। ऐसे मामले जिनमें रुग्ण प्रवृत्ति के बच्चे चुड़ैल के शिकार होने का नाटक करते हैं, वे जादू टोने के हर रिकॉर्ड में पाए जाते हैं।

हालाँकि, यह भूत-प्रेत (q.v.) था, जिसने मध्यमवादी मंडली के "नियंत्रण" के प्रति सबसे अधिक आत्मीयता दिखाई। कम से कम पिछली कुछ शताब्दियों से भूत-प्रेत संबंधी गड़बड़ियाँ समय-समय पर होती रही हैं, और शरारती आत्मा के खुद को प्रकट करने के पसंदीदा तरीके हमारे दिनों के आत्मा नियंत्रण द्वारा अपनाए गए तरीकों के समान ही रहे हैं।

फिर से, दोनों आत्माओं को अपनी घटनाओं के उत्पादन के लिए एक माध्यम की एजेंसी की आवश्यकता होती है, और यह माध्यम की तत्काल उपस्थिति में होता है कि घटनाएँ आम तौर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हैं। चुंबकत्व। - आत्मा के इन चरणों से मोटे तौर पर विकसित होना अभिव्यक्ति, और आंशिक रूप से उनके समानांतर चलने वाला, एक व्यापक आंदोलन था जिसका महत्व, आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, बहुत महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि पशु चुंबकत्व का सिद्धांत पैरासेल्सस से उत्पन्न हुआ था, और पुराने कीमियागरों के बीच काफी लोकप्रिय था।

वास्तविक चुंबक का बहुत अधिक उपयोग नहीं किया गया था, लेकिन इसे चुंबकीय दर्शन का प्रतीक माना जाता था, जो आकाशीय पिंडों, मनुष्यों और वास्तव में, प्रत्येक पदार्थ, सजीव या निर्जीव से निकलने वाले बल या तरल पदार्थ के विचार पर आधारित था, जिसके माध्यम से सभी चीजें एक दूसरे से परस्पर क्रिया करती थीं। जबकि रहस्यवादी एक चुंबकीय दर्शन तैयार करने में लगे हुए थे; वैलेंटाइन ग्रेटरेक्स जैसे अन्य लोग भी थे, जिन्होंने बीमारियों को ठीक किया, उनकी शक्ति को एक दिव्य उपहार के रूप में दावा किया, और इसे कीमियागरों के तर्कवादी विचारों से नहीं जोड़ा।

चुंबकत्व के ये दो चरण एक हो गए और फ्रांज एंटोनी मेस्मर के काम में चरम पर पहुँच गए, जिन्होंने 1766 में अपना डी पियानेटारम इन्फ़्यूक्सु प्रकाशित किया, जो मानव शरीर पर ग्रहों के प्रभाव पर एक ग्रंथ है। उनके विचार मूलतः चुंबकीय दार्शनिकों के थे, और उनके उपचार संभवतः वैलेंटाइन ग्रेटाकेस के स्तर के थे, लेकिन सिद्धांत और व्यवहार दोनों में उन्होंने नया जीवन डाला और अपने लिए मान्यता प्राप्त की, यदि विद्वान समाजों की नहीं, तो कम से कम आम जनता की। चुंबकीय प्रणाली के उस अनुप्रयोग का श्रेय उन्हें जाता है जिसके परिणामस्वरूप प्रेरित सम्मोहन ट्रान्स की खोज हुई, जिसका आध्यात्मिकता पर असर स्पष्ट और महत्वपूर्ण है।

1784 में फ्रांसीसी सरकार ने मेस्मर और उनके अनुयायियों द्वारा चुंबकत्व के अभ्यास पर विचार करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया था, लेकिन इसकी रिपोर्ट ने केवल विज्ञान को बदनाम करने और इसे वैज्ञानिक चर्चा से बाहर करने का काम किया। उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक तक मेस्मेरिज्म की बुद्धिवादी व्याख्याएँ पूरी तरह से ऑपरेटर के शरीर से निकलने वाले तरल पदार्थ या शक्ति से संबंधित थीं, और यहाँ तक कि दूरदर्शी आँखों को भी दिखाई देती थीं।

लेकिन 1823 में पेरिस के एक चिकित्सक एलेक्जेंडर बर्ट्रेंड ने ट्रैटी डू सोमनाम्बुलिज्म और 1826 में फ्रांस में एक ग्रंथ डू मैग्नेटिज्म एनिमल प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने सामान्य नींद में चलने, बीमारी से जुड़ी नींद में चलने और महामारी के बीच संबंधों को स्थापित किया और सुझाव के सिद्धांत को आगे बढ़ाया, जिसे अब आम तौर पर स्वीकार किया जाता है। इस समय तक चुंबकत्व पूरे यूरोप में काफी ध्यान आकर्षित कर रहा था।

1825 में नियुक्त एक दूसरे फ्रांसीसी आयोग ने 1831 में एक रिपोर्ट पेश की, जो हालांकि बहुत मूल्यवान नहीं थी, लेकिन इसमें घटना की वास्तविकता के लिए एकमत प्रमाण था। जर्मनी में भी चुंबकत्व का काफी हद तक अभ्यास किया जाता था, और तर्कवादी व्याख्याओं को कुछ स्वीकृति मिली। हालाँकि, जर्मनी में अन्य जगहों की तुलना में अधिक संख्या में एक वर्ग था, जो मेस्मेरिक घटनाओं की आध्यात्मिक व्याख्या की ओर झुका हुआ था।

वास्तव में, आत्मा-संभोग में विश्वास चुंबकत्व के बगल में अपनी प्रारंभिक अवधारणा से ही विकसित हुआ था, चुंबकीय द्रव के सिद्धांत के विरोध में। "चमत्कारी" उपचार के शुरुआती चरणों में, जैसा कि कहा गया है, इलाज को ऑपरेटर के दिव्य उपहार के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था, जिसने रोगी से बुरी आत्माओं को बाहर निकाल दिया था। धार्मिक समुदायों में महामारी के

मामलों में, साथ ही व्यक्तिगत मामलों में, आत्माओं से व्यक्तिगत मामलों और अमूर्त धार्मिक प्रश्नों दोनों पर सवाल पूछे गए थे।

स्वीडिश एक्सेजहकल और फिलैंथ्रोपिक सोसाइटी की पत्रिकाओं में 1787 में एक सम्मोहन विषय के ट्रान्स उच्चारण का विस्तृत विवरण दिया गया था। समाज स्वाभाविक रूप से अपने देशवासी, इमैनुएल स्वीडनबॉर्ग के सिद्धांतों की ओर झुका, जिन्होंने सबसे पहले मृत पुरुषों और महिलाओं की आत्माओं के साथ "आत्माओं" की पहचान की थी। जर्मनी में डॉ. कर्नर ने फ्रेडरिका हॉफ, "प्रीवोर्स्ट की द्रष्टा" के साथ प्रयोग किया, जिनकी उपस्थिति में भौतिक अभिव्यक्तियाँ हुईं, और जिन्होंने मृत्यु के बाद आत्मा की स्थितियों और मनुष्य के गठन - भौतिक शरीर, आत्मा, आत्मा और तंत्रिका शरीर, एक ईथर शरीर का वर्णन किया।

जो मृत्यु के बाद आत्मा को वस्त्र पहनाता है - ये सिद्धांत बाद में अध्यात्मवादियों द्वारा विस्तृत किए गए। अन्य जर्मन अन्वेषकों, जे. एच. जंग (जंग-स्टिलिंग), डॉ. सी. रेडमर और डॉ. हेनरिक वर्नर ने अपनी कृतियों में दिव्यदृष्टि की घटना को दर्ज किया। एक फ्रांसीसी अध्यात्मवादी, अल्फोंस काहगनेट ने कुछ बेहतरीन सबूत पेश किए जो अध्यात्मवाद दिखा सकता है, उनके खाते उनकी ईमानदारी और सद्भावना के लिए उतने ही उल्लेखनीय हैं जितने कि वे जो बुद्धिमत्ता दिखाते हैं।

उन्नीसवीं सदी के तीसरे दशक तक इंग्लैंड में चुंबकत्व को बहुत कम ध्यान मिला। अठारहवीं सदी के अंत में डॉ. बेल, लॉथरबर्ग और अन्य ने इस देश में विज्ञान का अभ्यास किया, लेकिन लगभग तीस वर्षों तक - 1798 से 1828 तक - यह काफी उपेक्षित रहा। बाद के वर्षों में रिचर्ड चेनेविक्स, एक आयरिश व्यक्ति ने मंत्रमुग्ध कर देने वाले प्रदर्शन किए।

यूनिवर्सिटी कॉलेज अस्पताल के डॉ. यूयोटसन ने अपनी सोमनाम बुल्स, बहनों ओके के साथ सम्मोहन का अभ्यास किया, और हालाँकि वे पहले चुंबकीय द्रव में विश्वास करते थे, लेकिन बाद में वे एक अध्यात्मवादी बन गए। 1843 में इस विषय से निपटने वाली दो पत्रिकाओं की स्थापना की गई - ज़ैस्ट और फ्रेनो-मैग्नेट। उस समय के अधिकांश अंग्रेजी चुंबकत्वविदों ने इस घटना की भौतिक व्याख्या में विश्वास किया।

1845 में डॉ. रीचेनबैक ने अपने शोध प्रकाशित किए, जिसमें एक उत्सर्जन (q.v.) के अस्तित्व को प्रदर्शित करने का दावा किया गया, जिसे उन्होंने ओडिलिक या ओडिक बल कहा, जो हर पदार्थ से निकलता है। इस प्रवाह को

दिव्यदर्शी देख सकते थे, और इसका रंग निश्चित था, और यह गर्मी या ठंड का एहसास कराता था। अलग-अलग लाइनों पर काम करते हुए, ब्रैड बर्ट्रेंड के समान ही निष्कर्ष पर पहुंचे, और "चुंबकीय" प्रयोगों में सुझाव की शक्ति का प्रदर्शन किया, लेकिन उनके सिद्धांतों की उपेक्षा की गई, जैसा कि बर्ट्रेंड के साथ हुआ था।

चिकित्सा पेशे द्वारा, विशेष रूप से, पूरे मामले का खुलकर मजाक उड़ाया गया और इसे धोखाधड़ी घोषित किया गया, इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनका रवैया बदल गया होता - वास्तव में, ऐसा होना शुरू हो गया था - लेकिन अमेरिका और यूरोप में अध्यात्मवाद की लहर नहीं आई, जिसने ट्रान्स अवस्था की असाधारण परिचर्या को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया और इस तरह इसके वास्तविक महत्व और वैज्ञानिक मूल्य को अस्पष्ट कर दिया। इस प्रकार यह देखा जाएगा कि न केवल चुंबकत्व में आध्यात्मिक घटनाओं के बीज निहित थे, बल्कि कई मामलों में ये घटनाएँ अपने वर्तमान विकास के चरण में अध्यात्मवाद के समान थीं।

ट्रान्स भाषण प्रसिद्ध था, भौतिक अभिव्यक्तियाँ, हालांकि कम बार देखी गईं, भी देखी गईं, जैसा कि फ्रैन हॉफ के मामले में हुआ; और दिव्यदृष्टि को ट्रान्स का एक सामान्य सहायक माना जाता था। बाद के वर्षों में, जैसा कि देखा गया है, तथाकथित "चुंबकीय" घटनाओं को बड़े पैमाने पर मृतकों की आत्माओं की एजेंसी के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था।

दूरदर्शिता जैसी स्पष्ट रूप से असाधारण क्षमता के लिए - जिसके माध्यम से विषय ने खुद को दूर से क्या हो रहा है यह देखने में सक्षम बताया, या अपनी सामान्य दृष्टि से सावधानीपूर्वक छिपी हुई वस्तुओं को पहचानने में सक्षम बताया - यहां तक कि बर्ट्रेंड और ब्रेड जैसे लोगों ने भी इसके लिए कोई पर्याप्त स्पष्टीकरण नहीं दिया, न ही उन्होंने इसके लिए सबूतों का खंडन किया, हालांकि फ्रांस और इंग्लैंड दोनों में इसका व्यापक रूप से अभ्यास किया गया था। वास्तव में, इन देशों में एक ऐसा वर्ग उभरा जो दूरदर्शिता में विशेषज्ञ था, और उसने आध्यात्मिकता के लिए और भी रास्ता तैयार किया।

335.प्रारंभिक अमेरिकी अध्यात्मवाद: - जिसे आम तौर पर आधुनिक अध्यात्मवाद का जन्म माना जाता है, वह अमेरिका में 1848 में हुआ था। उस वर्ष अर्काडिया, वेन काउंटी, एन.वाई. के हाइडेसविले में फॉक्स परिवार के घर में रैपिंग का प्रकोप हुआ। घर में जॉन फॉक्स, उनकी पत्नी और उनकी दो छोटी बेटियाँ थीं। मार्गरेटा और केट, जिनकी उम्र क्रमशः पंद्रह और बारह वर्ष थी, और घर खुद एक छोटा लकड़ी का निर्माण था।

31 मार्च, 1848 को, श्रीमती फॉक्स ने अपने पड़ोसियों को दस्तक सुनने के लिए बुलाया, जिसने पिछले कुछ दिनों से परिवार को परेशान कर रखा था। पूछताछ करने पर रैप्स में बुद्धिमत्ता के संकेत दिखाई दिए, और अंततः यह पता चला कि
सबसे भयावह प्रभाव एक फेरीवाले की आत्मा का था, जिसे हाइडसविले में घर के एक पूर्व निवासी ने अपने पैसे के लालच में मार डाला था। बाद में कहा गया कि उसी वर्ष अप्रैल में फॉक्स ने आत्माओं के कहने पर अपने तहखाने में खुदाई करते समय, उसमें बाल, दांत और हड्डियों के टुकड़े पाए थे, जो संभवतः किसी इंसान के थे, लेकिन इस कथन की सही तरह से पुष्टि नहीं की गई थी, और हत्या के सबूत बहुत कम थे।

हालांकि, फॉक्स परिवार के पड़ोसी "खुलासे" से बहुत परेशान थे, और एक परीक्षण के रूप में, आत्माओं से उनके परिचितों की उम्र जैसे मामलों पर सवाल पूछे, जिनके उत्तर, जाहिर तौर पर, कुछ हद तक सही थे। इसके तुरंत बाद मार्गरेटा फॉक्स अपनी विवाहित बहन, श्रीमती फिश से मिलने रोचेस्टर, न्यूयॉर्क गई, जहाँ हाइडसविले में जितनी जोरदार दस्तकें हुई थीं, उतनी ही जोरदार दस्तकें हुईं।

उनकी बहन कैथरीन ऑबर्न में कुछ मित्रों से मिलने गईं और यहाँ भी रैपिंग सुनी गई। कई लोगों ने पाया कि उनमें माध्यमवादी शक्तियाँ थीं और अभिव्यक्तियाँ महामारी की तरह फैल गईं, कुछ ही वर्षों में उन्हें पूर्वी राज्यों के अधिकांश हिस्सों में देखा जाने लगा। निजी व्यक्तियों द्वारा कई मंडलियाँ बनाई गईं और पेशेवर माध्यमों की संख्या और भी बढ़ गई। श्रीमती फॉक्स और उनकी तीन बेटियों ने आध्यात्मिक दुनिया में सम्मान का स्थान बनाए रखा और कई बड़े शहरों में प्रदर्शनियाँ दीं।

1850 में, जब वे बफ़ेलो में थे, बफ़ेलो विश्वविद्यालय के कुछ प्रोफेसरों ने दिखाया कि रैप माध्यम के जोड़ों द्वारा उत्पन्न किए जा सकते हैं और कुछ ही समय बाद श्रीमती नॉर्मन कल्वर, जो फॉक्स परिवार की विवाह से संबंधित रिश्तेदार थीं, ने घोषणा की कि मार्गरेटा फॉक्स ने उन्हें दिखाया था कि जोड़ों के माध्यम से रैपिंग कैसे प्राप्त की जाती है। उसने यह भी आरोप लगाया कि कैथरीन फॉक्स ने उसे बताया था कि रोचेस्टर में एक सत्र में, जहाँ धोखाधड़ी को रोकने के लिए माध्यम के टखने पकड़े गए थे, एक डच नौकरानी ने माध्यम के संकेत पर तहखाने में दस्तक दी थी।

इस बाद के कथन का अध्यात्मवादियों ने जोरदार खंडन किया, लेकिन अन्य आरोपों के संबंध में कोई खंडन करने का प्रयास नहीं किया गया। कई माध्यमों ने

कबूल किया कि उन्होंने छल-कपट का सहारा लिया था, लेकिन अमेरिका में लोकप्रिय पक्ष की लहर ने अभिव्यक्तियों की वास्तविकता को बनाए रखा। जैसे-जैसे समय बीतता गया, ये अधिक विविध और जटिल होते गए। टेबल-टर्निंग और टिल्टिंग ने आंशिक रूप से रैप की सरल घटनाओं को बदल दिया।

अदृश्य हाथों से संगीत वाद्ययंत्र बजाना, "प्रत्यक्ष" आत्मा लेखन, घंटी बजाना, उत्तोलन, और आत्मा के हाथों का भौतिकीकरण, कुछ ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें न्यायाधीश एडमंड्स, माननीय एन.पी. टालमडेज, विस्कॉन्सिन के गवर्नर और विलियम लॉयड गैरीसन जैसे प्रतिष्ठित लोगों ने देखा और पुष्टि की। हम पाते हैं कि डैनियल डी. होम (q.v.) ने अपने करियर के शुरुआती चरण में माध्यम के उत्थान को रिकॉर्ड किया था। स्लेट-लेखन (q.v.) और संगीत वाद्ययंत्र बजाना भी आत्माओं द्वारा किए जाने वाले करतब थे, जो डोवर, एथेंस काउंटी, ओहियो में कून के "आत्मा-कक्ष" (q.v.) में अक्सर आते थे। आयोवा में, 1854 में, दो माध्यमों ने स्विस, लैटिन और भारतीय भाषाओं के रूप में पहचानी जाने वाली भाषाओं में बात की, और इसके बाद से अपनी मूल भाषा में और विदेशी भाषाओं में ट्रान्स-बोलने का माध्यमों द्वारा बहुत अभ्यास किया गया।

मान्यता प्राप्त विदेशी भाषाओं में लैटिन और ग्रीक, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, इतालवी, चीनी और गेलिक शामिल थे, लेकिन आम तौर पर ट्रान्स उच्चारण, जब वे अंग्रेजी में नहीं थे, तो उन्हें किसी भी ज्ञात भाषा के रूप में निश्चित रूप से मान्यता नहीं दी गई थी, और अक्सर एम आत्माओं ने खुद ही "भाषा" की व्याख्या की। बाद की घटनाएँ स्पष्ट रूप से "भूत-प्रेत" के शुरुआती प्रवाह या धार्मिक महामारी के दौरान स्पष्ट लेकिन अर्थहीन उत्साह के प्रवाह के समान हैं।

हालाँकि, ऐसे मामले भी हुए हैं, जहाँ व्यक्ति उत्साह की स्थिति में एक ऐसी भाषा में धाराप्रवाह बोलते हैं, जिसे वे अपनी सामान्य अवस्था में बहुत कम जानते हैं। "आत्मा" से संबंधित कई लेखन महान लोगों के नामों से हस्ताक्षरित थे - विशेष रूप से फ्रैंकलिन, स्वीडन बोर्ग, प्लेटो, श्रोताओं के सामने व्याख्यान देने का भी प्रचलन था, प्रेरणादायी कथनों की पुस्तकें प्रकाशित की गईं और कविताएँ तथा चित्र प्रचुर मात्रा में बनाए गए।

इन स्वचालित उत्पादनों का अपना एक चरित्र था - वे अस्पष्ट, उच्च-ध्वनि वाले, असंगत और स्पष्ट रूप से याद दिलाने वाले थे। ऐसे मामलों में जहाँ उन्होंने उचित मात्रा में योग्यता भी प्रदर्शित की, जैसे कि टी.एल. हैरिस की कविताओं में, यह बताया गया कि वे सामान्य अवस्था में माध्यम की क्षमता से

परे नहीं थे। एक नियम के रूप में उनमें बुद्धिमत्ता का एक सतही आभास होता था, लेकिन विश्लेषण करने पर वे अर्थहीन पाए जाते थे।

अमेरिका में अध्यात्मवाद के शुरुआती वर्षों के दौरान आंदोलन को बड़े पैमाने पर प्रेस द्वारा देखा गया था, और अध्यात्मवाद को समर्पित कई पत्रिकाएँ सामने आईं। स्पिरिट मैसेंजर पहली बार 1849 में, हीट एंड लाइट 1851 में, शेहिना 1852 में, स्पिरिचुअल टेलीग्राफ 1853 में, स्पिरिट वर्ल्ड, स्पिरिचुअल फिलॉसफर के तहत, 1850 में, लैरोय सुंदरलैंड के संपादकत्व में प्रकाशित हुआ। आंदोलन की शुरुआत से ही, जो लोग इस घटना की वास्तविकता को स्वीकार करते थे, वे खुद को दो अलग-अलग स्कूलों में बांट लेते थे, जिनमें से प्रत्येक का प्रतिनिधित्व काफी हद तक राय के एक समूह द्वारा किया जाता था।

पहले का सिद्धांत स्पष्ट रूप से आध्यात्मिक था, दूसरे की व्याख्या मेसमर की थी, जो अब समकालीन वैज्ञानिक विचारों के कमोबेश निश्चित स्वाद के साथ विभिन्न आड़ में दिखाई दे रही है। इन दोनों स्कूलों की नींव, जैसा कि हमने देखा है, पशु चुंबकत्व के शुरुआती दिनों में पड़ी थी, जब चुंबकत्ववादियों के तर्कवादी विचारों को एंगेलिक या शैतानी कब्जे के सिद्धांतों के खिलाफ खड़ा किया गया था। अमेरिका में तर्कवादियों के काल्पनिक "बल" को "ओडिलिक बल", "विद्युत-चुंबकत्व" इत्यादि के नाम से जाना जाता था, और इसे न केवल व्यक्तिपरक घटनाओं, बल्कि भौतिक अभिव्यक्तियों के लिए भी जिम्मेदार ठहराया गया था।

और समय-समय पर होने वाली भूत-प्रेत संबंधी गड़बड़ियों को या तो आत्माओं या ओडिलिक बल के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था, जैसा कि अष्टबुला पोल्टरजिस्ट (q.v.) के मामले में हुआ था। "तर्कवादियों" में से एक, रेव. आसा महान ने सुझाव दिया कि माध्यम ओडिलिक बल के माध्यम से बैठे व्यक्ति के विचारों को पढ़ता है। चुंबकीय सिद्धांत के समर्थकों ने ट्रान्स-स्पीकिंग को विषय की अपनी बुद्धि के लिए जिम्मेदार ठहराया, लेकिन 1848 में अमेरिकी अध्यात्मवाद के जन्म के बाद एक आध्यात्मिक व्याख्या को अधिक सामान्य रूप से स्वीकार किया गया।

इन परस्पर विरोधी सिद्धांतों के बावजूद, जिनमें से कुछ निश्चित रूप से भौतिक थे, वैज्ञानिक जांच के रास्ते में व्यावहारिक रूप से कुछ भी नहीं किया गया था, पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर डॉ. हरे द्वारा किए गए प्रयोगों के अपवाद के साथ, हालांकि वे शायद ही "वैज्ञानिक जांच" के नाम के लायक थे। 1857 में, जब प्रयोग किए गए, हरे पहले से ही उम्र में आगे थे, और ऐसा लगता है कि उन्हें आसानी से थोपा जा सकता था।

धोखाधड़ी के बहुत कम खुलासे हुए, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि अधिकांश बैठने वालों ने इस घटना को निर्विवाद विश्वास के साथ स्वीकार किया, और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि ऐसी मशीनरी जिसके साथ ऐसा पता लगाया जा सकता था, वह सामने नहीं आ रही थी। कुशल, प्रशिक्षित और उदासीन जांचकर्ताओं का सहयोग, जैसे कि हाल ही में मानसिक समस्याओं के स्पष्टीकरण के लिए खुद को लगाया है, उन दिनों पूरी तरह से कमी थी, और जनता को अपने निष्कर्ष बनाने के लिए छोड़ दिया गया था।

अमेरिका में अध्यात्मवाद शुरू से ही समाजवाद के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ था। अध्यात्मवाद का पंथ, वास्तव में, उसी स्थिति का परिणाम था जिसने समाजवादी समुदायों को जन्म दिया और कई अजीब धर्मों के उत्थान और पतन का कारण बना। वॉरेन चेज़, होरेस ग्रीली, टी.एल. हैरिस और अन्य प्रमुख अध्यात्मवादियों ने ऐसे समुदायों की स्थापना की और तथाकथित "प्रेरणादायक" लेखों ने अक्सर उनके निर्माण के लिए दिशा-निर्देश दिए। यह राष्ट्र और समय की विशेषता थी कि धार्मिक और दार्शनिक चिंतन की सामान्य प्रवृत्ति लोकतांत्रिक रेखाओं पर चलनी चाहिए।

यूरोप में जो विचार के निश्चित मानक थे, उन्हें अमेरिका में मान्यता नहीं दी गई; हर कोई अपने लिए सोचता था खुद को, लेकिन बहुत कम शैक्षिक प्रशिक्षण के साथ। जिस पर अपने विचारों को आधारित किया, और इसका परिणाम यह हुआ कि उनके विचारों की तीव्रता अक्सर उनके विवेक से परे हो जाती थी। उन कारणों के लिए जो उस समय के अन्य अजीब सिद्धांतों की तुलना में अध्यात्मवाद को अधिक लोकप्रिय और अधिक स्थायी बनाते थे, वे संभवतः उन विशेष परिस्थितियों में पाए जाते हैं जिन्होंने अध्यात्मवाद के लिए रास्ता तैयार किया।

क्लैरवॉयंट्स ने फॉक्स गर्ल्स के माध्यम से पहले रैपिंग का उपयोग किया था, प्रेरित ट्रान्स को हाल ही में व्याख्याताओं, पादरी और अन्य लोगों द्वारा अमेरिकी लोगों के ध्यान में लाया गया था, जो हर दिशा में रूढ़िवाद से प्रस्थान के आदी थे, उन्हें मानव मामलों में अच्छी या बुरी आत्माओं के हस्तक्षेप को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, जबकि जो लोग आत्मा की परिकल्पना को स्वीकार करने से इनकार करते थे, उनके लिए इस घटना की संतोषजनक व्याख्या बिजली, विद्युत-चुंबकत्व या "ओडिक बल" के रूप में मिली थी।

336.इंग्लैंड में अध्यात्मवाद : - जैसा कि कहा गया है, आध्यात्मिकता के अमेरिकी रूप में आयात से पहले इंग्लैंड में दिव्यदर्शी और सोमनाम्बुल्स काफी

आम थे, फिर भी, इन घटनाओं की व्याख्या मुख्य रूप से तर्कवादी आधार पर की जाती थी, और यहाँ तक कि जब आत्मा सिद्धांत - जो उन दिनों में केवल एक छोटा सा अनुयायी था - व्यापक और महत्वपूर्ण हो गया, तब भी किसी भी तर्कसंगत व्याख्या का सिद्धांत अभी भी प्रस्तुत किया गया था।

1852 में, "रोचेस्टर रैपिंग्स" के चार साल बाद, श्रीमती हेडन नामक एक माध्यम को "इलेक्ट्रो-बायोलॉजी" के एक व्याख्याता द्वारा अमेरिका से लाया गया था। इसके तुरंत बाद एक और पेशेवर माध्यम, श्रीमती रॉबर्ट्स, अटलांटिक पार कर गईं, और दोनों महिलाओं के पास एक प्रतिष्ठित ग्राहक थे, और उन्हें फीस के रूप में पर्याप्त पारिश्रमिक मिलता था। कई सबसे प्रभावशाली पत्रिकाओं ने इन प्रदर्शनों पर तिरस्कारपूर्ण टिप्पणियाँ प्रकाशित कीं, लेकिन इस घटना की वास्तविकता में विश्वास कम से कम एक ने, चैंबर्स जर्नल ने, रॉबर्ट चैंबर्स द्वारा स्वयं लिखे गए एक लेख में व्यक्त किया।

प्रोफेसर डी-मॉर्गन एक और प्रतिष्ठित गवाह थे जिन्होंने इस घटना की वास्तविकता और इसके असाधारण चरित्र की गवाही दी, और फिर भी अन्य लोग इसकी जांच करने के लिए तैयार थे। 1853 में टेबल-टर्निंग (q.v.) की महामारी महाद्वीप से ब्रिटेन तक फैल गई, और सभी वर्गों में अपार लोकप्रियता हासिल कर ली। यह इतना व्यापक हो गया कि ब्रेड, फैराडे और कारपेंटर जैसे लोगों ने इस पर अपना ध्यान केंद्रित किया, और दिखाया कि यह अचेतन-मांसपेशियों की क्रिया का परिणाम है।

"तर्कवादी" व्याख्या, जैसा कि कहा जाता है, अभी भी अच्छी तरह से सामने थी, जिसमें ओडिलिक बल, बिजली या चुंबकत्व की बात थी। फैराडे के प्रयोगों का उपहास किया गया, और एनिमल मैग्नेटिज्म द्वारा टेबल-टर्निंग नामक एक पैम्फलेट एक वर्ष में सौ से अधिक संस्करणों में प्रदर्शित हुआ। इलियटसन और मेस्मेरिज्म के अन्य नायकों ने टेबल-टर्निंग में अपने स्वयं के विचारों का एक उदाहरण पाया।

जो लोग आध्यात्मिक विश्वास के प्रति झुकाव रखते थे, उन्होंने उसी घटना में एक आत्मा एजेंसी को काम करते हुए पाया; जबकि पादरी के एक समूह ने, शास्त्रीय भविष्यवाणी की पूर्ति में समान अभिव्यक्तियों की प्रतीक्षा करते हुए, निष्कर्ष निकाला कि शैतानी एजेंसी मामले की जड़ में थी, और उनके निष्कर्षों का समर्थन "आत्माओं" द्वारा किया गया था, जिन्होंने स्वीकार किया कि वे पतित स्वर्गदूत थे, या दुष्टों की आत्माएँ थीं।

अध्यात्मवाद में सबसे पहले धर्मांतरित लोगों में सर चार्ल्स इशम, डॉ. एशबर्नर और समाजवादी रॉबर्ट ओवेन शामिल थे, जो उस समय अस्सी वर्ष से अधिक उम्र के थे, जिन्होंने 1854 में द न्यू एक्ज़िस्टेंस ऑफ़ मैन ऑन द अर्थ का पहला अंक प्रकाशित किया था, जिसका उद्देश्य आत्माओं द्वारा लाई जाने वाली एक तरह की सहस्राब्दी का अंग बनना था। इस अवधि में स्वचालित लेखन दर्ज किया गया है, एक माध्यम चार साल का बच्चा था, जो लैटिन में लिखता था। 1853 की शरद ऋतु में श्रीमती हेडन अमेरिका लौट आईं, और टेबल-टर्निंग की प्रथा तेजी से कम हो गई।

1860 तक अध्यात्मवाद के बारे में बहुत कम सुना जाता है, हालाँकि इस बीच कुछ पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। ओवेन ने अपना न्यू एक्ज़िस्टेंस जारी करना जारी रखा, जिसमें, हालाँकि, अध्यात्मवाद केवल एक माध्यमिक विचार था। यॉर्कशायर स्पिरिचुअल 1855 में केघली में प्रकाशित टेलीग्राफ 1859 के अंत तक चला (1857 से ब्रिटिश स्पिरिचुअल टेलीग्राफ के नाम से)। कुछ अन्य पत्रिकाएँ भी थीं जो इतने लंबे समय तक नहीं चल पाईं। हालाँकि इस विषय से संबंधित ब्रिटिश पुस्तकें और पत्र बहुत कम थे, लेकिन इस कमी को अमेरिकी प्रस्तुतियों ने पूरा किया, जिन्हें इस देश में बड़े पैमाने पर पढ़ा जाता था।

माध्यमों के साथ-साथ साहित्य भी अमेरिका से आयात किया गया था, उनमें से उल्लेखनीय हैं डैनियल डुंगलास होम (q.v.) जो 1855 में तेईस साल की उम्र में ब्रिटेन चले गए थे, और जिन्होंने पहले ही अमेरिका में लगभग चार साल तक एक माध्यम के रूप में काम किया था। बाद में जो लोग प्रमुख माध्यम बन गए, उनमें से कई होम के सत्रों में पहली बार अध्यात्मवाद की ओर मुड़े थे।

1855 की शरद ऋतु में होम अमेरिका लौट आए और 1856 में उनकी जगह पी.बी. रैंडोल्फ ने ली, जो चैरिंग क्रॉस सर्कल की बैठकों में शामिल हुए। 1859 में रेव. टी.एल. हैरिस आए, जिन्हें आत्माओं ने इंग्लैंड की यात्रा के लिए नियुक्त किया था। मिसेज मार्शल नामक एक अंग्रेजी माध्यम ने पेशेवर रूप से सत्र दिए, लेकिन होम और अमेरिकी माध्यमों की तुलना में बहुत कम सफलतापूर्वक, हालांकि घटनाएँ एक ही तरह की थीं।

हालाँकि, अंग्रेजी अध्यात्मवादियों ने प्रचार नहीं किया, बल्कि अधिकांश भाग के लिए गुमनाम रूप से अभ्यास किया। इन सत्रों में घटनाएँ अमेरिका में होने वाली घटनाओं से मिलती-जुलती थीं - बिना किसी दृश्य एजेंसी के वाद्ययंत्र बजाना, हाथों का भौतिकीकरण, मेज को मोड़ना, इत्यादि - लेकिन बहुत छोटे पैमाने पर। हालाँकि, यह इतना नहीं था कि ये भौतिक अभिव्यक्तियाँ, जिन्होंने शुरुआती अध्यात्मवादियों के आत्मविश्वास को प्रेरित किया या उनकी विश्वसनीयता को

उत्तेजित किया, बल्कि बल्कि स्वचालित लेखन और बोलना, जो पहले दुर्लभ था, बाद में माध्यमवादी सत्रों की विशेषता बन गया।

1854 की शुरुआत में ही एनी नामक एक माध्यम के ट्रान्स कथनों को स्वीडनबोर्गियन के एक समूह द्वारा रिकॉर्ड किया गया था, जिसकी अध्यक्षता एलिहू रिच कर रहे थे। आंदोलन के इस चरण में व्यक्तिपरक घटनाओं को दिया जाने वाला महत्व अचेतन मस्तिष्क की अपूर्ण समझ के कारण माना जाना चाहिए। स्पिरिचुअल मैगज़ीन के संपादक श्री थॉमस शॉर्टर जैसे लोग यह समझने में विफल रहे कि माध्यम ट्रान्स अवस्था में रहते हुए कैसे तर्क करने में सक्षम था, और ऐसे बुद्धिमान कार्य करने में सक्षम था, जिनके बारे में सामान्य चेतना कुछ भी नहीं जानती थी।

इसलिए उन्होंने आत्मा की परिकल्पना को अपनाया। श्रीमती डी मॉर्गन और श्रीमती न्यूटन क्रॉसलैंड ने अपने दोस्तों के स्वचालित कथनों को तुरंत मान्यता दे दी। प्रतीकात्मक चित्र श्रीमती क्रॉसलैंड के समूह की एक विशेषता थी, जैसा कि अज्ञात भाषाओं में बोलना भी था, जिसे आत्मा द्वारा दूसरे माध्यम से अनुवादित किया जाता था।

1860 में एक नया आध्यात्मिक युग शुरू हुआ, और पूरा विषय पहले की तुलना में अधिक प्रमुखता में आया। यह ब्रिटिश माध्यमों की संख्या में वृद्धि और कई अमेरिकी माध्यमों के ब्रिटेन में प्रवास के कारण हुआ, जिनमें डेवनपोर्ट ब्रदर्स और डी. डी. होम शामिल थे, जिन्होंने 1859 में एक बार फिर इंग्लैंड का दौरा किया। होम को प्रेस के बड़े हिस्से और आम जनता द्वारा सम्मानपूर्वक, बल्कि उदारता से, व्यवहार किया गया, और समाज के उच्चतम ग्रेड में भर्ती कराया गया।

एक अन्य अमेरिकी माध्यम जिसने लगभग उसी समय अभ्यास किया था, वह था जे. आर. एम. स्क्वायर, जिसकी अभिव्यक्तियों की पुष्टि डॉ. लॉकहार्ट रॉबर्टसन ने की थी। हालाँकि, अन्य माध्यम थे, जैसे कि कोलचेसटर और फोस्टर, जिन्होंने इतनी खुलेआम धोखाधड़ी की कि अध्यात्मवादियों ने खुद उनकी धोखाधड़ी को उजागर किया, हालाँकि उन्होंने यह बनाए रखा कि कभी-कभी इन माध्यमों की अभिव्यक्तियाँ भी वास्तविक थीं। होम के बाद, सबसे प्रसिद्ध अमेरिकी माध्यम डेवनपोर्ट भाई थे, जिन्होंने भौतिक माध्यम के विभिन्न रूपों का अभ्यास किया।

वे एक छोटे से कैबिनेट में अपना स्थान लेते थे, बैठने वालों की संतुष्टि के लिए हाथ और पैर बांधते थे। जब रोशनी कम हो जाती थी, तो संगीत वाद्ययंत्र कमरे

में इधर-उधर फेंके जाते थे और बजाए जाते थे और अन्य भौतिक घटनाएँ दिखाई देती थीं। जब सेकंड खत्म हो गया और रोशनी एक बार फिर से बढ़ गई, तो डेवनपोर्ट भाई सुरक्षित रूप से बंधे हुए पाए गए कुशलता से निर्मित इस प्रकार के जादू को देखकर बहुत से लोग झिझकते थे कि उन्हें चतुर जादू या आत्मा की घटना के रूप में माना जाए या नहीं।

हालांकि, अंततः डेवनपोर्ट्स को "टॉम फूल्स नॉट" नामक एक गुप्त गाँठ के माध्यम से उजागर किया गया, जिसे वे खोल नहीं पाए और जिससे उनके बंधनों से बच पाना असंभव हो गया। ब्रिटेन में उनका करियर समाप्त हो गया। कुछ ही समय बाद मास्केलिन और कुक के जादू के प्रदर्शनों ने, डेवनपोर्ट ब्रदर्स की नकल करते हुए, अध्यात्मवादियों को यह निष्कर्ष निकालने पर मजबूर कर दिया कि वे भी विद्रोही माध्यम होंगे।

इंग्लैंड में देशी माध्यम का विकास अमेरिकी अध्यात्मवादियों की तुलना में बहुत धीमी गति से हुआ। श्रीमती मार्शल कुछ समय के लिए व्यावहारिक रूप से देश में एकमात्र पेशेवर माध्यम थीं, हालांकि निजी माध्यम कम दुर्लभ थे। बाद के लोगों में उल्लेखनीय थे श्रीमती एवरिट, श्री एडवर्ड चाइल्ड और मिस निकोल, जो बाद में श्री गुप्पी की दूसरी पत्नी बनीं, जो एक प्रसिद्ध माध्यम बन गईं। इस अवधि के दौरान भूत-प्रेत की गड़बड़ियाँ अभी भी दर्ज की गई थीं, जिसमें सभी परिचित घटनाएँ फिर से प्रकट हुईं, लेकिन उन्हें आध्यात्मिकतावादी लाइनों पर समझाया गया। क्रिस्टल विजन का अभ्यास किया गया था और माध्यम द्वारा अपने दोस्तों के सिर के चारों ओर आम तौर पर आभा देखी जाती थी।

स्वचालित लेखन, बोलना और चित्र बनाना जारी रहा, और प्रेरणादायक संबोधन आदि प्रकाशित हुए। 1869 में कई सार्वजनिक माध्यमों की उपस्थिति से अध्यात्मवाद को एक नया आवेग दिया गया, उनमें से प्रमुख थे एफ. हेम, जिन्होंने अपनी प्रतिभा को भौतिक अभिव्यक्तियों के उत्पादन के लिए समर्पित किया, और जिनके संबंध में हम पहली बार "विस्तार" की घटना देखते हैं। कुछ वर्षों के भीतर कई अन्य अंग्रेजी माध्यम उभरे- एग्लिंटन, मोंक, रीटा और कई अन्य, जबकि डॉ. स्लेड, एनी ईवा फे और केट फॉक्स (जिन्होंने बाद में जेनकेन नामक एक अंग्रेजी बैरिस्टर से शादी की) अमेरिका से आए।

1870 में रेव. डब्ल्यू. स्टैनटन मोसेस टी (एम. ए. ऑक्सन) अंग्रेजी माध्यमों में सबसे महान बनने के लिए किस्मत में थे, उन्होंने खुद को निजी माध्यम के लिए समर्पित कर दिया। 1872 में, गुप्पी की एजेंसी के माध्यम से, स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ी (q.v.) की प्रथा इंग्लैंड में शुरू की गई थी, जो अमेरिका में दस साल पहले शुरू हुई थी। बहुत से लोगों के लिए, एक तस्वीर जिसमें बैठे व्यक्ति के

चित्र के अलावा, सफेद रंग का एक अस्पष्ट धब्बा होता है, आत्माओं के भौतिकीकरण का निर्णायक सबूत था।

कई एक्सपोज़र के बाद स्पिरिट फ़ोटोग्राफ़ी का क्रेज़ कम हो गया और हाल के वर्षों में इसके बारे में बहुत कम सुना गया है, हालाँकि स्पस्मोडिक फ़ैशन में कभी-कभी जीवन के सबूत दिखाई देते हैं। स्लेट राइटर (q.v.) प्रत्यक्ष लेखन का एक पसंदीदा तरीका था और इसका व्यापक रूप से अभ्यास किया जाता था। आम तौर पर अंधेरे में बैठकें आयोजित की जाती थीं, और बैठने वालों को बात करने या गाने के लिए कहा जाता था, या शायद एक संगीत बॉक्स बजाया जाता था।

इन पहले के रुखों के अधिकांश अभिलेख धोखाधड़ी के विलक्षण संकेत देते हैं। 1874 में श्रीमती जेनकेन (केट फॉक्स) अपने छह महीने के बच्चे के साथ ब्राइटन में रह रही थीं और यह बताया जाता है कि बच्चा एक लेखन माध्यम बन गया। इसके लेखन की एक प्रतिलिपि 8 मई, 1874 के मीडियम और डेब्रेक में प्रकाशित हुई थी।

उसी वर्ष श्रीमती एनी ईवा फे आईं, जिनके कारनामे डेवन पोर्ट्स से मिलते जुलते थे। एक अन्य प्रसिद्ध माध्यम ग्लासगो के डेविड डुगिड थे, जिन्होंने "नियंत्रण में" पेंटिंग बनाई। 1876 में हेनरी स्लेड अमेरिका से आए और उन्होंने अपना ध्यान मुख्य रूप से स्लेट-लेखन पर केंद्रित किया। ब्रिटेन में उनके आने के कुछ महीने बाद प्रोफेसर रे लैंकेस्टर ने उन्हें धोखाधड़ी करते हुए पकड़ा, उन पर मुकदमा चलाया और अंत में उन्हें देश छोड़ने के लिए बाध्य किया।

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति, आध्यात्मिक घटनाओं का चरमोत्कर्ष और स्पष्ट रूप से सबसे कठिन उपलब्धि, भौतिकीकरण थी (q.v.) इसकी शुरुआत सिर, हाथ और भुजाओं के भौतिकीकरण से हुई और पूर्ण भौतिकीकरण तक पहुँची। 1872 में श्रीमती गुप्पी ने अभिव्यक्ति के इस रूप का प्रयास किया, लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिली।

हेम और विलियम्स ने भी इसे अपने प्रदर्शनों की सूची में शामिल किया, लेकिन एक नए और सफल माध्यम ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई- फ्लोरेंस कुक, जिन्होंने जब एक सत्र के दौरान मिस कुक को श्री वोल्कमैन ने भूत का रूप धारण करते हुए पकड़ लिया, तो सर विलियम क्रुक्स के कई पत्रों से पता चला कि जिस माध्यम के साथ उन्होंने प्रयोग किया था, उसकी ईमानदारी की पुष्टि हुई और इससे अध्यात्मवाद के कारण को मदद मिली।

अन्य निजी माध्यमों ने भी भौतिकीकरण सत्र दिए और उनसे यह संक्रमण उनके पेशेवर भाइयों में फैल गया, जिनमें निस्संदेह सबसे सफल विलियम एग्लिंटन थे। मिस लोटी फाउलर भी लगभग उसी समय - 1870-80 के दशक में एक माध्यम के रूप में लंगड़ा हो गई। ये खुले सत्र अन्वेषक को बेहतर अवसर प्रदान करते थे और हालांकि उनमें भी "प्रतिकूल प्रभावों" के घुसपैठ को रोकने के लिए कुछ सावधानी बरती गई थी, ऐसे कई उदाहरण थे जहां एक संशयवादी ने आत्मा को समझने का साहस किया और जब ऐसा हुआ तो आत्मा और माध्यम हमेशा एक ही माने गए।

इन अप्रिय घटनाओं के लिए क्षमा याचना के रूप में अध्यात्मवादी ने सुझाव दिया कि आत्मा माध्यम से निकलने वाली धाराओं से बनी है, और जब इसे बैठे हुए व्यक्ति द्वारा पकड़ लिया जाता है तो आत्मा और माध्यम एक हो जाते हैं, माध्यम की अधिकांश शक्ति को धारण करने वाला रूप फिर से दूसरे में शामिल हो जाता है। एक और व्याख्या, जो विशेष रूप से भौतिक अभिव्यक्तियों के लिए लागू होती है, वह यह थी कि वास्तविक माध्यम, पेशेवर सत्र देते हैं, और हर अवसर पर घटनाओं को उत्पन्न करने के लिए मजबूर होते हैं, कभी-कभी धोखाधड़ी का सहारा लेते हैं जब उनकी माध्यमवादी शक्तियाँ अस्थायी रूप से विफल हो जाती हैं। यह पूरी तरह से प्रशंसनीय बहाना हमेशा धोखाधड़ी के आरोप का सामना करने के लिए तैयार रहता था।

समय बीतने के साथ व्यक्तिपरक घटनाएँ अन्वेषकों के पक्ष में कम होती गईं, जिन्होंने वास्तव में इसकी व्यक्तिपरक प्रकृति को समझना शुरू कर दिया, लेकिन अध्यात्मवादियों के साथ यह अभिव्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण रूप बना रहा होम स्टेनटन मूसा और मिस लोटी फाउलर के ट्रान्स कथनों को बहुत महत्व दिया गया। डेविड डुगिड, प्रसिद्ध चित्रकला माध्यम, एक नई भावना, हैफेड, प्रिंस ऑफ पर्शिया द्वारा नियंत्रित था, जिसका जीवन और रोमांच इस माध्यम के माध्यम से प्रस्तुत किए गए थे।

प्रमुख प्रेरणादायक वक्ता श्रीमती एम्मा हार्डिंग ब्रिटन, जे. जे. मोर्स और श्रीमती कोरा एल. वी. टप्पन-रिचमंड थे। अध्यात्मवाद को समर्पित अंग्रेजी पत्रिकाओं में ह्यूमन नेचर, जो पहली बार 1867 में जारी हुई थी; मीडियम और डेब्रेक, जो कुछ साल बाद स्थापित हुई; स्पिरिचुअल मैगज़ीन; और स्पिरिचुअलिस्ट (1867), श्री डब्ल्यू. एच. हैरिसन द्वारा संपादित, और विषय को वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत करती है। एक और भी हालिया पेपर। लाइट, 1881 से है, और अभी भी आंदोलन के प्रमुख अंगों में से एक है।

सबसे शुरुआती अन्वेषकों में से एक सर विलियम क्रुक्स थे, जिनके डी. डी. होम के साथ अनुभव को हल्के में नहीं लिया जा सकता। 1863 में प्रोफेसर डी मॉर्गन ने श्रीमती डी मॉर्गन की पुस्तक 'मैटर टू स्पिरिट' की प्रस्तावना में कुछ रहस्यमयी शक्ति की मौजूदगी का सुझाव दिया, हालांकि वे बाद में आध्यात्मिकवादी बन गए। 1868 में इलेक्ट्रीशियन क्रॉमवेल वर्ली ने होम की घटना की गवाही दी। अगले वर्ष लंदन डायलेक्टिकल सोसाइटी ने इस मामले की जांच के लिए एक समिति नियुक्त की, जिसके सदस्यों में अल्फ्रेड रसेल वालेस (क्यूवी), चार्ल्स ब्रैडलॉ और सार्जेंट कॉक्स शामिल थे।

समिति की रिपोर्ट में कहा गया कि यह विषय "अब तक की तुलना में अधिक गंभीर और सावधानीपूर्वक जांच के योग्य है।" क्रॉमवेल वर्ली और ब्रिटिश नेशनल एसोसिएशन ऑफ स्पिरिचुअलिस्ट्स की शोध समिति ने विभिन्न विद्युत और अन्य परीक्षण किए, लेकिन चूंकि ये अपर्याप्त साबित हुए हैं, इसलिए उन पर विस्तार से विचार करना आवश्यक नहीं है। दूसरी ओर फैराडे और टिंडल, हक्सले और कारपेंटर ने मानसिक घटनाओं से कोई लेना-देना नहीं होने दिया और असहिष्णुता की भावना से अध्यात्मवादी आंदोलन का विरोध किया, जो इसके वैज्ञानिक नायकों के रवैये के प्रतिकूल था।

इस बीच चुंबकीय या ओडीलिक उत्सर्जन में विश्वास रखने वाले पुराने तर्कवादी स्कूल अभी भी बने हुए थे और उनका प्रतिनिधित्व मनोवैज्ञानिक सोसायटी (1875 में स्थापित, और 1079 में समाप्त हो गई), इसके अध्यक्ष सार्जेंट कॉक्स के लेखन, और प्रसिद्ध अध्यात्मवादी श्री सैमुअल गुप्पी के लेख। इस संबंध में उस समय के एक अन्य वैज्ञानिक व्यक्ति का उल्लेख करना उचित है। 1876 में प्रोफेसर बैरेट (अब सर विलियम) ने ब्रिटिश एसोसिएशन के समक्ष व्याख्यान देते हुए घोषणा की कि हाइपरस्थीसिया और सुझाव अकेले इस घटना की व्याख्या करने में सक्षम नहीं थे, और उन्होंने जांच के लिए एक समिति नियुक्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

हालाँकि, उनके सुझाव पर अमल नहीं किया गया, और 1882 में उन्होंने इस प्रश्न पर विचार करने के लिए एक सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन का सीधा परिणाम मानसिक अनुसंधान सोसायटी की स्थापना थी। इस बिंदु तक अंग्रेजी आंदोलन अमेरिकी से कम प्रकार में भिन्न था, लेकिन डिग्री में, क्योंकि यह पूरी तरह से कमजोर और अधिक प्रतिबंधित था। वास्तव में, दोनों देशों की परंपराओं में अंतर और उनके लोगों के सामान्य स्वभाव में अंतर के कारण यह असंभव हो गया कि यह आंदोलन अमेरिका की तरह यहां भी तेजी से फैल सके या इसे इतने जोश के साथ अपनाया जा सके।

यह - संभवतः इसी कारण से - इंग्लैंड में ईसाई धर्म के लिए प्रतिकूल नहीं था, बल्कि इसके पूरक था, और ऐसे लोग भी थे जिन्होंने इसके माध्यम से ईसाई धर्म में परिवर्तित होने का दावा किया था। मानसिक अनुसंधान के लिए सोसायटी* - 1882 से लेकर वर्तमान समय तक ग्रेट ब्रिटेन में गुप्त घटनाओं की आलोचना का इतिहास मानसिक अनुसंधान के लिए सोसायटी के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, और ऐसा कोई भी विकास रिकॉर्ड करने योग्य नहीं है जिसकी इसके सदस्यों ने जांच न की हो।

यह पहला निकाय था जिसने बेहतर नाम के अभाव में मानसिक घटनाओं से निपटने के लिए एक संयुक्त और संगठित प्रयास किया, जो कि विषय पर पूर्व-कल्पित विचारों के पूर्वाग्रह से मुक्त, विशुद्ध वैज्ञानिक और निष्पक्ष भावना से था। वास्तव में, उनके प्रॉस्पेक्टस में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि सदस्य किसी भी तरह से किसी एक स्पष्टीकरण को स्वीकार करने या किसी गैर-भौतिक एजेंसी के कामकाज को पहचानने के लिए खुद को बाध्य नहीं करते हैं। सोसायटी के पहले अध्यक्ष प्रोफेसर हेनरी सिडविक थे, और परिषद के सदस्यों में एडमंड गुर्नी, फ्रैंक पॉडमोर, फ्रेडरिक डब्ल्यूएच मायर्स और प्रोफेसर बैरेट शामिल थे; और रेव डब्ल्यू स्टेनटन मोसेस, मोरेल थियोबाल्ड, डॉ जॉर्ज वाइल्ड और डॉसन रोजर्स, जिनमें से बाद के चार अध्यात्मवादी थे। हालाँकि, यह उल्लेख किया जा सकता है कि सोसायटी के स्पष्ट रूप से अध्यात्मवादी सदस्य धीरे-धीरे कम हो गए।

सोसायटी के अन्य अध्यक्ष प्रोफेसर बाल्फोर स्टीवर्ट, आरटी माननीय एजे बाल्फोर, प्रोफेसर विलियम जेम्स, सर विलियम क्रुक्स, सर ओलिवर लॉज और प्रोफेसर बैरेट थे, इनमें से कई मूल सदस्यों में से थे। साइकिकल रिसर्च सोसाइटी का दायरा छह समितियों की नियुक्ति द्वारा परिभाषित किया गया था, जो इस प्रकार हैं: (1) विचार हस्तांतरण पर समिति; (2) सम्मोहन पर समिति; (3) रीचेनबैक के प्रयोगों पर समिति; (4) प्रेत पर समिति; (5) भौतिक (आध्यात्मिक) घटनाओं पर समिति; और (6) विषय के इतिहास और मौजूदा साहित्य पर विचार करने के लिए एक समिति।

इस प्रकार सोसाइटी का क्षेत्र व्यापक था, और बाद के वर्षों में इसे और भी बड़ा किया गया, जब डॉ. रिचर्ड हॉजसन की अध्यक्षता में एक समिति ने थियोसॉफी (q.v.) की जांच की। और साइकिक रिसर्च के तरीकों को अन्य मामलों पर भी लागू किया गया, जो सोसाइटी के मूल दायरे से बाहर थे। आध्यात्मिक घटनाओं के लिए एक स्पष्टीकरण खोजने के लिए, इसके सदस्यों ने मनोविज्ञान के क्षेत्र में यात्रा की, और स्वचालितता, मतिभ्रम और विचार हस्तांतरण का अध्ययन

किया, जिनमें से एक या दूसरे का आध्यात्मिक घटनाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव साबित हुआ है, यदि सभी पर नहीं।

वे मध्यम प्रदर्शनों के संबंध में बहुत अधिक धोखाधड़ी का पता लगाने में भी सहायक थे, विशेष रूप से स्लेट-लेखन और अन्य "भौतिक" अभिव्यक्तियों जैसी घटनाओं में।

337.स्टेन पोल्टरजिस्ट**:** ल्यूसर्न झील के किनारे बसा स्टॉस गांव 1860-62 में आधुनिक अभिलेखों में पाए जाने वाले पोल्टरजिस्ट-प्रेतबाधा के सबसे उल्लेखनीय मामले का दृश्य था। यह प्रकोप एम. जोलर के घर में हुआ, जो एक प्रतिष्ठित वकील और स्विस राष्ट्रीय परिषद के सदस्य थे, एक ऐसे व्यक्ति, जिनका सार्वजनिक और निजी जीवन दोनों में चरित्र निंदनीय था। घर में एम. टोलर स्वयं, उनकी पत्नी, सात बच्चे (चार लड़के और तीन लड़कियाँ) और एक नौकरानी शामिल थे।

1860 की शरद ऋतु में एक रात बाद में उनके बिस्तर पर एक तेज़ खटखटाहट से उनकी नींद खुल गई, जिसे उन्होंने मृत्यु का पूर्वाभास माना। एम. जोलर ने इन ध्वनियों को लड़की की कल्पना बताया और उन्हें इनके बारे में बात करने से मना किया। कुछ सप्ताह बाद, थोड़े समय के बाद वापस लौटने पर उन्होंने पाया कि उनका परिवार बहुत घबराया हुआ था। दस्तकें उसकी पत्नी और बेटी की मौजूदगी में बार-बार सुनाई दे रहीं थीं और यहां तक कि उसमें बुद्धिमत्ता के लक्षण भी दिखाई दे रहे थे।

जब कुछ दिनों बाद उन्हें किसी मित्र की मृत्यु की खबर मिली, तो उन्होंने सोचा कि शायद यही दस्तकें थीं। लेकिन जून 1861 में फिर से यह प्रकोप फिर से शुरू हो गया। इस बार एक लड़का बेहोश हो गया, जो एक सफेद, अस्पष्ट आकृति के भूत के रूप में दिखाई दिया। बच्चों ने अन्य अजीब चीजें देखी और सुनीं और कुछ महीनों बाद नौकरानी ने शिकायत की कि रसोई में धुंधली, धूसर आकृतियाँ हैं जो उसके पीछे-पीछे उसके कमरे तक आती हैं और पूरी रात लकड़ी के कमरे में रोती रहती हैं।

उसी वर्ष अक्टूबर में नौकरानी की जगह दूसरी नौकरानी आ गई, दस्तकें बंद हो गईं और उपद्रव खत्म होता दिखाई दिया। हालांकि, अगस्त 1862 में, जब एम. जोलर, उनकी पत्नी और उनके सबसे बड़े बेटे काम से अनुपस्थित थे, तब वे दस गुना अधिक जोश के साथ फिर से प्रकट हुए। यह इतना बड़ा झुंझलाहट भरा था कि बच्चे अपने पिता की धमकी के बावजूद घर से भागकर बगीचे में चले गए। लेकिन अंततः भूत ने एम. जोलर को ही सताना शुरू कर दिया, जोर-जोर से

दस्तक देकर कमरे-कमरे में उनका पीछा किया, और रहस्य को उजागर करने के लिए उनके सभी प्रयास पर्याप्त नहीं थे।

अदृश्य हाथों से चीजें इधर-उधर फेंकी जाने लगीं, बंद दरवाजे और बंद खिड़कियाँ चौड़ी हो गईं, अजीब संगीत और आवाज़ें और चरखे की गुनगुनाहट सुनाई देने लगी। एम. जोलर द्वारा इन घटनाओं को छिपाने के प्रयासों के बावजूद, खबर विदेश में फैल गई, और सैकड़ों, यहाँ तक कि हज़ारों लोग इस घटना को देखने के लिए उमड़ पड़े। परिस्थितियों के अनुरूप कोई तर्कसंगत परिकल्पना न पाकर एम. जोलर ने कमिश्नर नीडरबर्गर से जांच करने के लिए आग्रह किया, लेकिन उनकी अनुपस्थिति में फादर गार्डियन ने प्रेतवाधित घर का दौरा किया, उसे आशीर्वाद दिया, हालांकि अशांति को कम नहीं किया, और सुझाव दिया कि अधिकारियों द्वारा जांच की जानी चाहिए।

एम. जोलर ने निजी तौर पर अपने परिचित कई वैज्ञानिकों को बुलाया, लेकिन वे भी कोई समाधान नहीं ढूंढ पाए, हालांकि बिजली, गैल्वनिज्म और चुंबकत्व के विभिन्न सिद्धांत आगे बढ़ाए गए। अन्य अधिकारी व्यक्ति, लैंड-कैप्टन ज़ेलगर, पुलिस निदेशक जान, डॉ. क्रिस्टन, न्यायालय के अध्यक्ष, को रोक दिया गया, जबकि कमिश्नर नीडरबर्गर और फादर गार्डियन ने घर की सावधानीपूर्वक जांच की, लेकिन अशांति का कोई कारण नहीं मिला, जो अभी भी जारी था। अंत में एम. जोलर ने पुलिस से औपचारिक जांच की मांग की और जांच के लिए पुलिस के तीन प्रमुखों को चुना गया।

जोलर परिवार को वापस जाने के लिए कहा गया और छह दिनों तक पुलिस ने बिना किसी बाधा के घर पर कब्जा कर लिया। उस अवधि के अंत में, जब उन्हें भूत-प्रेत का कोई संकेत न दिखाई दिया और न ही सुना, तो उन्होंने इस आशय की एक रिपोर्ट तैयार की और चले गए। जोलर के घर में फिर से प्रवेश करने के तुरंत बाद ही यह घटना फिर से शुरू हो गई। दुर्भाग्यपूर्ण परिषद के सदस्य का उपहास किया गया, यहां तक कि उनके अपने दल के लोगों ने भी, और उनके घर में इतना हंगामा हुआ कि उनके लिए अपना काम करना असंभव हो गया।

इसके अलावा, इस चमत्कार को देखने के लिए उमड़ी भीड़ की अवांछित जिज्ञासा भी थी और यह आश्चर्य की बात नहीं है कि अंततः, अक्टूबर 1862 में, एम. जोलर ने हमेशा के लिए अपना पैतृक घर छोड़ दिया। अगली 3 रिंग में वह टैन्स में घर के लिए एक किरायेदार खोजने में सफल रहा, लेकिन पोल्टरजिस्टिक प्रकोप फिर से नहीं हुआ। उपरोक्त घटनाओं को कुछ हद तक पूरी तरह से बताना आवश्यक समझा गया है, क्योंकि वे शायद पोल्टरजिस्टिक मामलों में संचालित होने वाली विवेकहीन बुद्धि की परिकल्पना के लिए सबसे अच्छा सबूत देते हैं।

जोलर केस न केवल उन जिज्ञासु भीड़ द्वारा बहुत अच्छी तरह से प्रमाणित है, जिन्होंने खिड़कियों को खोलना और बंद करना आदि देखा, बल्कि जिम्मेदार लोगों, राष्ट्रीय परिषद, न्यायालय और अन्य संस्थानों के सदस्यों द्वारा भी।

338. विलियम थॉमस: पत्रकार और अध्यात्मवादी, 1849 में नॉर्थम्बरलैंड के एम्बलेटन में पैदा हुए थे। स्कूल छोड़ने के बाद उन्हें एक व्यापारी के कार्यालय में प्रशिक्षु बनाया गया, लेकिन जल्द ही पत्रकारिता में आ गए। 1871 में वे डार्लिंगटन नॉर्दर्न इको के संपादक थे, और 1883 में पॉल गजट के। 1890 में उन्होंने रिव्यू ऑफ रिव्यूज़ की स्थापना की, जिसमें उनकी उल्लेखनीय ऊर्जा के लिए एक आउटलेट मिला। उनके पत्रकारिता के उत्साह ने उन्हें कई कारणों का समर्थन करने के लिए प्रेरित किया - उन्होंने शांति आंदोलन के पक्ष में प्रचार किया, दक्षिण अफ्रीकी युद्ध के दौरान बोअर्स के हितों के लिए खुद को समर्पित किया, और शास्त्रीय कार्यों के सस्ते पुनर्मुद्रण जारी किए।

लेकिन उनकी नवीनतम गतिविधियाँ अध्यात्मवाद की वकालत से संबंधित नहीं थीं। चार साल तक - 1893-97 - उन्होंने एक आध्यात्मिक अंग, बॉर्डरलैंड का संचालन किया, और अपनी मृत्यु तक आंदोलन को अपने पत्रकारिता और व्यक्तिगत प्रभाव का भार दिया। हालाँकि उनके उत्साह में कुछ हद तक कट्टरता थी, और उनका जोश कभी-कभी उन्हें निर्धारित सीमाओं से परे ले जाता था, फिर भी वे राजनीति के क्षेत्र में एक ताकत थे, और सेसिल रोड्स, विशेष रूप से, उनके विचारों से बहुत प्रभावित थे।

अप्रैल, 1912 में टाइटैनिक के डूबने के साथ ही मि. स्टीड की मृत्यु हो गई, तब से कई आध्यात्मिक मंडलियों ने उन्हें देखने और उनसे बात करने का दावा किया है। उनकी बेटी मिस एस्टेले स्टीड ने उनके जीवन के बारे में लिखा है।

339.स्नायु स्व: मानसिक शोध में व्यक्तित्व के उस हिस्से को दर्शाने के लिए बहुत इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द जो सामान्य रूप से चेतना को अचेतन से अलग करने वाली "सीमा" क्यूमेन से नीचे होता है। इस वाक्यांश की लोकप्रियता का श्रेय काफी हद तक स्वर्गीय श्री मायर्स को जाता है, जिन्होंने इसका इस्तेमाल मानसिक घटनाओं को समझाने के लिए किया था, जिन्हें उन्होंने देखा था।

श्री मायर्स का मानना था कि मानव व्यक्तित्व या आत्मा का केवल एक अंश ही सामान्य मस्तिष्क प्रक्रियाओं के माध्यम से पर्याप्त अभिव्यक्ति पाता है, क्योंकि मस्तिष्क और भौतिक जीव अभी तक विकास के बहुत उन्नत चरण तक नहीं पहुंचे हैं। संक्षेप में, आत्मा एक हिमखंड की तरह है, जिसका एक अंश पानी के ऊपर है, लेकिन उसका अधिकांश हिस्सा पानी में डूबा हुआ है। श्री मायर्स के

अनुसार, अवचेतन स्व मानसिक ऊर्जा के एक भंडार के संपर्क में था, जिससे वह ऐसी ताकतें खींचता था जो भौतिक जीव को प्रभावित करती थीं।

इस प्रकार प्रतिभा की प्रेरणा, सम्मोहन में बोधगम्य और बौद्धिक क्षमताओं का उत्थान, और स्वचालित लेखन और बातचीत और मेज झुकाने जैसे अभ्यास, एजेंट में किसी भी रुग्ण प्रवृत्तियों के बजाय इन मानसिक शक्तियों के महान प्रवाह को संदर्भित करते थे। वास्तव में, असामान्य अभिव्यक्तियाँ, और अभी भी, कुछ अधिकारियों द्वारा विकास की प्रगति में एक नए प्रकार की भविष्यवाणी के रूप में देखी जाती हैं, जिनकी क्षमताएँ मनुष्य की क्षमताओं से परे होंगी, जैसे कि हमारी मानवीय क्षमताएँ निचले जानवरों की क्षमताओं से परे हैं।

इस प्रकार आत्मा, सीमित दायरे के तंत्रिका तंत्र पर बहुत अपर्याप्त अभिव्यक्ति के लिए निर्भर है, मृत्यु के समय अपनी सीमाओं से मुक्त हो जाती है और पूर्ण चेतना की अपनी विरासत में आती है। इन परिकल्पनाओं को टेलीपैथी और जीवित और मृत लोगों के बीच संचार, साथ ही मतिभ्रम, स्वचालितता और सभी सम्मोहन घटनाओं को समझाने के लिए उपयोग में लाया गया है। लेकिन पहले दो को, भले ही उन्हें प्रदर्शित किया जा सके, अन्य आधारों पर समझाया जाना आवश्यक होगा, जबकि अन्य, जिनका अस्तित्व निर्विवाद है, को आम तौर पर मस्तिष्कीय पृथक्करण के परिणामस्वरूप माना जाता है - अर्थात, विभिन्न तंत्रिका प्रणालियों के बीच संपर्क लिंक का अस्थायी विस्थापन।

340.सुएबस**:** एक दानव जो एक महिला का रूप ले लेता है। रब्बी एलियास कहते हैं कि कुछ लेखों में उल्लेख किया गया है कि एडम को सौ तीस वर्षों के दौरान महिला राक्षसों ने दौरा किया था, और राक्षसों, आत्माओं, भूतों, लीमर और प्रेत के साथ संभोग किया था। सिसिली के राजा रोजर के शासनकाल में, एक युवक, कई अन्य लोगों के साथ चांदनी में नहा रहा था, उसने सोचा कि उसने किसी को डूबते हुए देखा है, और बचाव के लिए दौड़ा।

पानी से एक सुंदर महिला को खींचने के बाद, वह उस पर मोहित हो गया, उससे शादी कर ली, और उसके एक बच्चा हुआ। उसके बाद वह अपने बच्चे के साथ रहस्यमय तरीके से गायब हो गई, जिससे सभी को विश्वास हो गया कि वह एक सक्कुबस थी। हेक्टर बोएस, स्कॉटलैंड के अपने इतिहास में, बताता है कि एक बहुत ही सुंदर युवक का पीछा एक महिला दानव ने किया, जो उसके बंद दरवाजे से गुजरती थी, और उससे शादी करने की पेशकश करती थी।

उसने अपने बिशप से शिकायत की, जिसने उसे उपवास करने, प्रार्थना करने और खुद को स्वीकार करने का आदेश दिया, जब नरक के आगंतुक ने उसे परेशान करना बंद कर दिया। डेलानक्रे का कहना है कि मिस्र में, एक ईमानदार मार्शल-फेरेंट रात के दौरान फोर्जिंग में व्यस्त था, उसे एक सुंदर महिला के रूप में एक राक्षस दिखाई दिया। उसने राक्षस के चेहरे पर एक गर्म लोहा फेंका, जो तुरंत उड़ गया।

341.सुझाव**:** सम्मोहित व्यक्ति के सुझाव के प्रति संवेदनशीलता सम्मोहन अवस्था की विशेषता और अपरिवर्तनीय संगत है, और यह हिस्टीरिया की एक विशिष्ट विशेषता भी है। वास्तव में, कई आधुनिक वैज्ञानिक सम्मोहन को "सुझाव" नाम देते हैं। असामान्य सुझावशीलता का तात्पर्य मस्तिष्कीय पृथक्करण के कुछ उपाय से है। (सम्मोहन देखें।) इस अवस्था में ऑपरेटर द्वारा दिया गया प्रत्येक सुझाव, चाहे वह शब्द, हाव-भाव या यहाँ तक कि अचेतन नज़र से व्यक्त किया गया हो, विषय के मस्तिष्क में असामान्य बल के साथ कार्य करता है, क्योंकि वह अन्य विचारों के प्रति-उत्तेजना से मुक्त हो जाता है।

प्रोफेसर पियरे जेनेट के दृष्टिकोण में सभी सुझावशीलता पूर्ण मानसिक संतुलन से विचलन का संकेत देती है, लेकिन यह, हालांकि शायद सख्त अर्थों में सच है, कुछ हद तक भ्रामक है, क्योंकि सभी कमोबेश सुझाव के लिए उत्तरदायी हैं। हालाँकि, सम्मोहन और हिस्टीरिया में, सामान्य सुझावशीलता बहुत अधिक अतिरंजित होती है, और सुझाव, प्राप्तकर्ता की आलोचनात्मक या न्यायिक क्षमताओं से किसी भी विरोध को पूरा नहीं करता है (क्योंकि इसकी तुलना करने के लिए कोई अन्य विचार नहीं हैं) कुछ समय के लिए उसका प्रमुख विचार बन जाता है।

इस प्रकार स्वीकार किए गए सुझाव का मन और शरीर दोनों पर एक शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है, इसलिए कुछ शिकायतों में सुझाव का मूल्य अतुलनीय है। ईसाई वैज्ञानिकों द्वारा किए गए चमत्कार, लूर्डेस की तीर्थयात्रा की प्रभावकारिता, उपचार माध्यमों के करतब सभी इसके शक्तिशाली प्रभाव की गवाही देते हैं। पोस्ट-हिप्नोटिक सुझाव शब्द उस सुझाव के लिए लागू होता है जो विषय के मंत्रमुग्ध होने पर दिया जाता है, लेकिन जिसे उसके जागने के बाद किया जाना है।

कभी-कभी किसी आदेश के उच्चारण और उसके पूरा होने के बीच महीनों का अंतराल हो सकता है, लेकिन लगभग हमेशा ही बताए गए समय पर सुझाव का पालन किया जाता है, प्राप्तकर्ता शायद अपने आवेग के स्रोत से अनजान होता है, वह जो कार्य करता है उसके लिए पर्याप्त तार्किक आधार नहीं पाता है, या

शायद स्वचालित रूप से सम्मोहन अवस्था में चला जाता है। स्व-सुझाव किसी बाहरी स्रोत से नहीं आता है, बल्कि व्यक्ति के अपने मन में, या तो स्वतःस्फूर्त रूप से या मौजूदा परिस्थितियों की गलत धारणा से उत्पन्न होता है, जैसा कि किसी व्यक्ति के मामले में होता है जो रंगीन पानी को इस धारणा के तहत पीता है कि यह जहर है, और जहर के सभी लक्षण प्रदर्शित करता है।

स्व-सुझाव स्वप्न में स्वतःस्फूर्त रूप से उत्पन्न हो सकता है, ऐसे सुझाव का स्वतः पालन अक्सर "सत्य" सपनों की कहानियों को जन्म देता है। मध्य युग में यूरोप में धार्मिक उन्माद या परमानंद की लहरें सामूहिक सुझाव के परिणामों के उदाहरण थे - यानी, भीड़ द्वारा दिया गया सुझाव, और एक व्यक्ति द्वारा दिए गए सुझाव से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली। तथाकथित सामूहिक मतिभ्रम के मामलों को उसी कारण से संदर्भित किया जा सकता है। सुझाव निस्संदेह कुछ हद तक दिव्यदृष्टि और माध्यमवादी क्षमताओं के लिए जिम्मेदार है, और कुल मिलाकर मानसिक विज्ञान के अध्ययन में काफी हद तक प्रवेश करता है।

342.मरने वाले व्यक्ति द्वारा सम्मन: पहले धर्मशास्त्रियों द्वारा यह माना जाता था कि यदि कोई व्यक्ति जिस पर अन्यायपूर्ण रूप से आरोप लगाया गया हो या सताया गया हो, अपनी अंतिम सांस में अपने उत्पीड़क को सर्वोच्च न्यायाधिकरण के समक्ष उपस्थित होने के लिए बुलाए, तो चमत्कार होगा, और इस प्रकार बुलाया गया व्यक्ति अपने निर्दोष शिकार द्वारा निर्धारित दिन पर मर जाएगा। इस प्रकार (टेम्पलर्स के ग्रैंड मास्टर) ने पोप और फ्रांस के राजा को एक निश्चित तिथि पर भगवान के सामने उपस्थित होने के लिए कहा, जो बहुत दूर नहीं थी, और कहानी आगे बताती है कि दोनों की मृत्यु नियत समय पर हुई। फ्रेंकोइस I., ड्यूक ऑफ ब्रिटनी ने 1450 में अपने भाई की हत्या के लिए हत्यारों को काम पर रखा। मरते हुए राजकुमार ने अपने हत्यारे को सभी न्यायालयों में से सबसे ऊंचे न्यायालय के समक्ष बुलाया, और फ्रेंकोइस की कुछ ही समय में मृत्यु हो गई।

एक और उदाहरण स्पेन के फर्डिनेंड IV का है, जिसे दो रईसों द्वारा बुलाया गया था, जिन्हें उसने अन्यायपूर्ण रूप से दोषी ठहराया था, और उसने तीस दिनों के अंत में अनिच्छा से जवाब भी दिया। यह दिखाने के लिए कई और उदाहरण दिए जा सकते हैं कि मरने वाले की शक्ति में यह विश्वास कितना दृढ़ था कि वे अलौकिक तरीकों से अपनी मौत का बदला ले सकते हैं। वास्तव में, यह कहना सुरक्षित होगा कि, कारण और प्रभाव के सामान्य क्रम के उलट, सम्मन की प्रभावकारिता में लोकप्रिय विश्वास ऐसे साक्ष्य के लिए जिम्मेदार था जो इसके पक्ष में आने वाले थे।

दोषी न्यायाधीश की कल्पना पर काम करने वाले डर और संभवतः पश्चाताप के कारण, उसे बताए गए समय पर मरना पड़ सकता है, और इन एजेंटों द्वारा की गई मृत्यु के प्रमाणित विवरण अज्ञात नहीं हैं। यह इस तथ्य से और भी पुष्ट होता है कि यदि दोषी व्यक्ति दोषी था - अर्थात, यदि न्यायाधीश का विवेक साफ था - तो सम्मन का कोई प्रभाव नहीं था। जादूगरों ने, विशेष रूप से, अपने न्यायाधीशों को बुलाया, लेकिन व्यर्थ। कॉर्डोवा के गोंजाल्वो की एक कहानी बताई जाती है, जिसने जादू-टोना करने के लिए एक सैनिक को मौत की सजा सुनाई थी।

सैनिक ने कहा कि वह निर्दोष है, और गोंजाल्वो को भगवान के सामने पेश होने के लिए बुलाया। "तो जाओ," जज ने कहा, "और कार्यवाही में तेजी लाओ। मेरा भाई जो स्वर्ग में है, मेरे लिए पेश होगा।" कहने की जरूरत नहीं कि गोंजाल्वो की मौत नहीं हुई, क्योंकि उसे विश्वास था कि उसने न्याय किया है और उसे सम्मन के परिणामों का कोई डर नहीं था।

343.स्वीडनबॉर्ग, इमानुएल, **1688-1772:** सभी समय के सबसे महान रहस्यवादियों में से एक, का जन्म 29 जनवरी को स्वीडन के स्टॉकहोम में हुआ था। उनके पिता उपसाला में धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे, और बाद में स्कैंट के बिशप थे, और उनके समय में उन पर विधर्मी विचार रखने का आरोप लगाया गया था। स्वीडनबॉर्ग ने 1710 में उपसाला विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा पूरी की, जिसके बाद उन्होंने इंग्लैंड, हॉलैंड, फ्रांस और जर्मनी का दौरा किया। पाँच साल बाद वे अपने मूल शहर लौट आए, और प्राकृतिक विज्ञान और इंजीनियरिंग के अध्ययन के लिए बहुत समय समर्पित किया, डेडलस हाइपरबोरियस नामक एक पेपर का संपादन किया जो मुख्य रूप से यांत्रिक आविष्कारों से संबंधित था। लगभग 17 16 में, चार्ल्स XII ने उन्हें स्वीडिश बोर्ड ऑफ़ माइन्स में नियुक्त किया। इस समय उनके पास कई गतिविधियाँ थीं।

उन्होंने विभिन्न गणितीय और यांत्रिक कार्यों को प्रकाशित किया, और यहां तक कि एक इंजीनियरिंग क्षमता में फ्रेडरिकशाल की घेराबंदी में भी भाग लिया। मूल रूप से स्वेडबर्ग के नाम से जाने जाने वाले, उन्हें रानी उल्रिका ने कुलीन वर्ग के पद पर पदोन्नत किया और उनका नाम बदलकर स्वीडनबॉर्ग रख दिया। कुलीनों के घर में बैठकर, उनके राजनीतिक कथनों का बहुत महत्व था, लेकिन उनकी प्रवृत्तियाँ स्पष्ट रूप से लोकतांत्रिक थीं।

उन्होंने ब्रह्मांड की व्याख्या के लिए निजी तौर पर वैज्ञानिक खोजबीन में खुद को व्यस्त रखा और कम से कम दो ऐसे काम प्रकाशित किए जो उन चीज़ों की उत्पत्ति से संबंधित थे जिनका कोई खास महत्व नहीं है, जब तक कि वे भविष्य

के कई वैज्ञानिक तथ्यों और उपक्रमों का पूर्वाभास न करा दें। इस प्रकार प्रकाश, ब्रह्मांडीय परमाणुओं, भूविज्ञान और भौतिकी के बारे में उनके सिद्धांत स्पष्ट रूप से अपने समय से आगे थे और यदि उन्हें उचित रूप से प्रसारित किया जाता तो वे वैज्ञानिक यूरोप को प्रभावित किए बिना नहीं रह सकते थे।

उन्होंने एक उड़ने वाली मशीन का भी खाका तैयार किया और उन्हें पूरा भरोसा था कि हालांकि यह हवाई नेविगेशन के लिए अनुपयुक्त थी, अगर विज्ञान के लोग इस समस्या पर खुद को लगाएंगे, तो यह जल्दी ही हल हो जाएगी। 1734 में उन्होंने अपनी पुस्तक प्रोडोमस फिलोसोफिक रेशियोसिन एंट्रियो डी इनफिनिट प्रकाशित की, जो परिमित के संबंध पर विचार करती है।

आत्मा का अनंत से और आत्मा का शरीर से संबंध है। इस रचना में वह इन दोनों के बीच एक निश्चित संबंध स्थापित करना चाहता है, ताकि उनके संबंधों की कठिनाई को दूर किया जा सके। आध्यात्मिक और दिव्य उसे मनुष्य के सर्वोच्च अध्ययन के रूप में दिखाई देते हैं। उसने शरीर रचना विज्ञान से संबंधित सबसे प्रतिष्ठित शिक्षकों और सर्वोत्तम पुस्तकों की खोज में यूरोप के देशों की छानबीन की, क्योंकि उसका मानना था कि उस विज्ञान में आत्मा और आत्मा के ज्ञान का बीज निहित है।

अपने शारीरिक अध्ययनों के माध्यम से उसने मस्तिष्क के कार्यों से संबंधित कुछ आधुनिक विचारों का अनुमान लगाया, जो सबसे उल्लेखनीय हैं। लगभग पचपन वर्ष की आयु में स्वीडनबॉर्ग के चरित्र में एक गहरा परिवर्तन आया। इस समय तक वह एक वैज्ञानिक, विधायक और मामलों का आदमी था; लेकिन अब आध्यात्मिक चीजों के क्षेत्र में उसकी जांच उसे व्यावहारिक मामलों से पूरी तरह से अलग करने वाली थी।

आध्यात्मिक दुनिया में उसका परिचय, उसका ज्ञान, सपनों और असाधारण दर्शनों से शुरू हुआ था। उसने अद्भुत बातचीत सुनी और एक नया चर्च स्थापित करने के लिए प्रेरित महसूस किया। वह कहते हैं कि उनकी आत्मा की आँखें इतनी खुल गई थीं कि वे स्वर्ग और नरक देख सकते थे, और स्वर्गदूतों और आत्माओं से बातचीत कर सकते थे: लेकिन नए चर्च से संबंधित उनके सभी सिद्धांत सीधे ईश्वर से ही आए थे, जबकि वे सुसमाचार पढ़ रहे थे। उन्होंने दावा किया कि ईश्वर ने खुद को उनके सामने प्रकट किया और उन्हें बताया कि उन्होंने उन्हें पूरे शास्त्रों के आध्यात्मिक अर्थ को मनुष्य के सामने प्रकट करने के लिए चुना है।

उस क्षण से स्वीडनबॉर्ग ने सांसारिक ज्ञान को त्याग दिया और उन्होंने केवल आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए काम किया। उन्होंने अपनी कई नियुक्तियों से इस्तीफा दे दिया और आधे वेतन पर सेवानिवृत्त हो गए। हिब्रू भाषा के अपने ज्ञान को ताज़ा करते हुए, उन्होंने शास्त्रों की व्याख्या पर अपने महान कार्यों की शुरुआत की। वर्ष 1747 के बाद वे स्वीडन, हॉलैंड और लंदन में रहे, जहाँ 29 मार्च 772 को उनकी मृत्यु हो गई।

उन्हें प्रिंस स्क्वायर में स्वीडिश चर्च में दफनाया गया, जो पूर्व में सेंट जॉर्ज के पैरिश में था, और अप्रैल 1908 में स्वीडिश सरकार के अनुरोध पर उनकी अस्थियाँ स्टॉकहोम ले जाई गईं। स्वीडनबॉर्ग के मन और चरित्र की आंतरिक ईमानदारी के बारे में कोई सवाल नहीं हो सकता। वह अपने सिद्धांतों के संबंध में न तो अहंकारी था और न ही दबंग, बल्कि वह विनम्र और विवेकशील था। कम ज़रूरतों वाला व्यक्ति, उसका जीवन सादगी से भरा था - उसका भोजन ज़्यादातर रोटी, दूध और कॉफ़ी से बना था।

वह कई दिनों तक समाधि में पड़े रहने की आदत में था, और उसके लिए दिन और रात का कोई अंतर नहीं था। दुष्ट आत्माओं के साथ उसकी शक्तिशाली कुश्ती ने कभी-कभी उसके नौकरों को इतना भयभीत कर दिया, कि वे घर के सबसे दूर के हिस्से में शरण लेने लगे। लेकिन फिर भी वह दिन के उजाले में दयालु स्वर्गदूतों से बातचीत करता था। हम उनके आध्यात्मिक जीवन और कारनामों के प्रत्यक्ष प्रमाण के बारे में बुरी तरह बाधित हैं - हमारा अधिकांश ज्ञान मूल स्रोतों के अलावा अन्य स्रोतों से प्राप्त हुआ है। एक नया चर्च स्थापित करने, या अन्यथा मौजूदा धार्मिक प्रणालियों के साथ छेड़छाड़ या हस्तक्षेप करने का प्रयास करने से बहुत दूर, स्वीडनबॉर्ग का मानना था कि सभी चर्चों के सदस्य आध्यात्मिक अर्थ में उनके नए चर्च से संबंधित हो सकते हैं।

उनके कार्यों को निम्न में विभाजित किया जा सकता है: व्याख्यात्मक खंड, विशेष रूप से द एपोकैलिप्स रिवील्ड, द एपोकैलिप्स एक्सप्लेन्ड और आर्काना सेलेस्स्टा; आध्यात्मिक दर्शन की पुस्तकें, जैसे इंटरकोर्स बिटवीन द सोल एंड द बॉडी डिवाइन प्रोविडेंस, और डिवाइन लव एंड विजडम; और जो विशुद्ध रूप से सैद्धांतिक हैं, जैसे कि द न्यू जेरूसलम, द ट्रू क्रिश्चियन रिलिजन और कैनन्स ऑफ़ द न्यू चर्च।

इनमें से उनका दिव्य प्रेम और बुद्धि वह खंड है जो सबसे संक्षिप्त रूप से उनकी संपूर्ण धार्मिक प्रणालियों को प्रस्तुत करता है। ईश्वर को वे दिव्य मनुष्य मानते हैं। आध्यात्मिक रूप से वे अनंत प्रेम से बने हैं और भौतिक रूप से अनंत ज्ञान से। दिव्य प्रेम से सभी चीजें पोषण प्राप्त करती हैं। सूर्य,हम जानते हैं कि यह

सृष्टिकर्ता से निकलने वाले आध्यात्मिक सूर्य का एक छोटा सा रूप मात्र है। यह आध्यात्मिक सूर्य प्रेम और ज्ञान का स्रोत है, और प्राकृतिक सूर्य प्रकृति का स्रोत है; लेकिन जहाँ पहला जीवित है, वहीं दूसरा निर्जीव है।

प्रकृति और आत्मा की दो दुनियाओं के बीच कोई संबंध नहीं है जब तक कि निर्माण की समानता न हो। प्रेम, ज्ञान, उपयोग; या अंत, कारण और प्रभाव, क्रमशः ईश्वर और मनुष्य में होने की तीन अनंत और अनिर्मित डिग्री हैं। सभी चीजों के कारण आध्यात्मिक क्षेत्र में मौजूद हैं और उनके प्रभाव प्राकृतिक क्षेत्र में हैं, और सभी सृजन का लक्ष्य यह है कि मनुष्य अपने सृष्टिकर्ता और पूरे ब्रह्मांड की छवि बन सके। यह ऊपर बताए गए डिग्री के प्रेम से प्रभावित होना है।

मनुष्य के पास ईश्वर को धारण करने के लिए दो बर्तन या पात्र हैं - दिव्य प्रेम के लिए इच्छा, और दिव्य ज्ञान के लिए समझ। पतन से पहले, इन गुणों का मानव आत्मा में प्रवाह एकदम सही था, लेकिन बुराई की शक्तियों के हस्तक्षेप और स्वयं मनुष्य के पापों के कारण, यह बहुत बाधित हो गया था। अपने और मनुष्य के बीच संबंध को बहाल करने की तलाश में, भगवान मनुष्य के रूप में दुनिया में आए; क्योंकि अगर वह अपनी अनावृत भव्यता में पृथ्वी पर आए होते, तो उन्होंने नरक को नष्ट कर दिया होता, जिसके माध्यम से उन्हें मनुष्य को छुड़ाने के लिए आगे बढ़ना था, और ऐसा वह नहीं करना चाहते थे, केवल उन्हें जीतना चाहते थे।

ईश्वर की एकता स्वीडनबॉर्गियन धर्मशास्त्र का एक अनिवार्य हिस्सा है, और वह पूरी तरह से विश्वास करते हैं कि ईश्वर अपने पीछे शास्त्र के शब्द में अपना एक दृश्यमान प्रतिनिधि छोड़े बिना अपने स्थान पर वापस नहीं लौटे, जो एक शाश्वत अवतार है, तीन गुना अर्थों में प्राकृतिक, आध्यात्मिक और दिव्य। स्वीडनबॉर्ग इसके प्रेरित हैं; उनसे कुछ भी छिपा नहीं था; वह अन्य दुनियाओं, अच्छे और बुरे, स्वर्ग और नरक और ग्रहों की उपस्थिति और स्थितियों से अवगत थे। "धर्म का जीवन," वे कहते हैं, "रूड को पूरा करना है।" "स्वर्ग का राज्य उपयोगों का राज्य है।" उनकी प्रणाली के केंद्रीय विचारों में से एक को पत्राचार के सिद्धांत के रूप में जाना जाता है।

जो कुछ भी दिखाई देता है, उसके पास एक उपयुक्त आध्यात्मिक वास्तविकता होती है। इस बारे में वॉन कहते हैं: "मनुष्य का इतिहास एक अभिनय दृष्टांत है; ब्रह्मांड, एक मंदिर जो चित्रलिपि से ढका हुआ है। बेहमेन, कुछ विशेष क्षणों पर चमकने वाली रोशनी से, कल्पना करता है कि उसे इन छिपे हुए महत्वों की कुंजी मिलती है - कि वह सिग्नेचर रेरम की व्याख्या कर सकता है। लेकिन वह आत्माओं को नहीं देखता है, या स्वर्गदूतों से बात नहीं करता है।

उनके अनुसार, इस तरह के संचार उनके द्वारा प्राप्त अंतर्ज्ञान से कम विश्वसनीय होंगे। स्वीडनबॉर्ग विपरीत आधार लेते हैं। * मैं जो बताता हूं, 'वह कहता है, * ऐसी किसी भी आंतरिक अनुनय से नहीं आता है। मैं उन चीजों को बताता हूं जो मैंने देखी हैं। मैं किसी परमानंद के क्षण में मेरे द्वारा किए गए प्रकटीकरण को याद करने और व्यक्त करने के लिए श्रम नहीं करता। मैं आपको आध्यात्मिक दुनिया में यात्राओं और वार्तालापों का एक स्पष्ट विवरण लिखता हूं, जो कई वर्षों से मेरे दैनिक इतिहास का बड़ा हिस्सा रहा है।

मैं अनुभव पर अपना रुख रखता हूं। मैंने अवलोकन और प्रेरण के रूप में सख्त रूप से आगे बढ़ाया है जैसा कि आप में से किसी भी वैज्ञानिक व्यक्ति के पास है। केवल मुझे दो दुनियाओं में पहुँचने के अनुभव का आनंद लेने के लिए दिया गया है - आत्मा की, साथ ही साथ पदार्थ की भी।' "स्वीडनबॉर्ग के अनुसार, प्राचीन काल की सभी पौराणिक कथाएँ और प्रतीकवाद इतने सारे अपवर्तित या खंडित पत्राचार थे - उस बेहतर दिन के अवशेष जब प्रत्येक बाहरी वस्तु मनुष्य के मन को उसके उचित दिव्य सत्य का सुझाव देती थी।

दृश्य और अदृश्य के बीच इस तरह के अनिश्चित और अनिश्चित संबंध दो दुनियाओं के उस सामंजस्य की दिशा में इतने सारे अपूर्ण प्रयास हैं, जिन्हें प्रकट करने के लिए वह खुद को नियुक्त मानते थे। कलाकार के सुखद विचार, कवि की कल्पनाशील उपमाएँ, एक विस्तृत प्रणाली के लिए स्वीडनबॉर्ग के साथ आदान-प्रदान की जाती हैं। प्राकृतिक और आध्यात्मिक दुनिया में सभी शब्द और वस्तुएँ जोड़े में सूचीबद्ध हैं। यह विधि।
बहुत औपचारिक पांडित्य दिखाई देता है। हमारी कल्पनाएँ आदेश देने के लिए काम नहीं करेंगी। जिस अर्थ और जीवन से हम बाहरी वस्तुओं को लगातार सूचित करते हैं - दृष्टि और ध्वनि से वे सुझाव, जो लगभग हर व्यक्ति को कभी-कभी कवि बनाते हैं - वे हमारी अपनी रचनाएँ हैं, समय के मूड द्वारा निर्धारित होते हैं, बाहर से थोपे नहीं जा सकते, किसी विज्ञान के नामकरण की तरह व्यवस्थित नहीं किए जा सकते। शास्त्र के आंतरिक अर्थ के संबंध में, किसी भी स्थिति में, स्वीडन बोर्ग कुछ इस तरह के जुए का परिचय देता है।

उस प्रांत में, हालांकि, शायद यह भी अच्छा है कि जो लोग स्पष्ट अर्थ से संतुष्ट नहीं हैं, उन्हें अपनी कल्पना के लिए कुछ संयम, अपनी सरलता के लिए कुछ तरीका, मन के एक निश्चित वर्ग के लिए अनूठा जिज्ञासा में कुछ मार्गदर्शन मिलना चाहिए। यदि कोई आपत्तिकर्ता कहता है, 'मैं नहीं समझता कि गधा वैज्ञानिक सत्य से और घोड़ा बौद्धिक सत्य से क्यों मेल खाता है,' तो

स्वीडनबॉर्ग जवाब देगा, * यह सादृश्य मेरी कल्पना पर आधारित नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक दुनिया में वास्तविक अनुभव और अवलोकन पर आधारित है।

मैंने हमेशा घोड़ों और गधों को मौजूद और परिस्थितियों में देखा है, जब और उसके अनुसार, वे आंतरिक गुण केंद्रीय थे।' लेकिन मैं यह नहीं मानता कि स्वीडनबॉर्ग का यह उद्देश्य था कि वे उन संबंधों को निर्धारित करें जिनके द्वारा मनुष्य लगातार दृश्य और अदृश्य दुनिया को एक कर रहे हैं। संभवतः उन्होंने लोगों को शास्त्रों के दिव्य-क्रमबद्ध पत्राचार, मनुष्य की कई अवस्थाओं के घनिष्ठ संबंध को प्रकट करना और मानव जाति को इस बात से पूरी तरह अवगत कराना अपना मिशन समझा कि पदार्थ और आत्मा न केवल कल्पना की विभिन्न सादृश्यताओं में, बल्कि शाश्वत कानून की गहरी आत्मीयता से जुड़े हुए हैं।

इस तरह, उन्होंने एक योजना निर्धारित करने के बजाय एक आवेग प्रदान करने का प्रयास किया। उनके लगातार अनुयायी स्वीकार करेंगे कि यदि वे किसी दूसरे युग में रहते और एक अलग सामाजिक स्थिति में होते, तो आध्यात्मिक दुनिया उनके भीतर जिस रूप में प्रस्तुत होती, वह अलग होता। इसलिए, काफी हद तक उनके यादगार संबंधों को केवल उनके लिए ही सच माना जाना चाहिए - ऐसे चरित्र के लिए, ऐसे समय में, हालांकि •व्यक्तिगत विशिष्टता और स्थानीय रंग से स्वतंत्र सिद्धांतों को शामिल करना।

यह वास्तव में असंगत होता, यदि प्रोटेस्टेंट जिसने (स्वयं एक सुधारक के रूप में)•सुधार की कमियों को दूर करने और त्रुटियों को सुधारने का प्रयास किया - यदि उसने अपनी स्थिति से परे किसी भी प्रगति को प्रतिबंधित करने का इरादा किया होता।"

स्वीडनबॉर्ग की शैली स्पष्ट और तीक्ष्ण है। वह अदृश्य से प्रकट होने वाली अभिव्यक्तियों से कभी अभिभूत नहीं होता। जबकि अन्य रहस्यवादी इनसे भय या आनंद से ग्रसित हो जाते हैं और समझ से परे हो जाते हैं, वह अपने तत्व में है, और जब परमानंद के शिखर पर होता है तो वह वैज्ञानिक दृष्टि से छोटी से छोटी जानकारी को देख सकता है।

हम आजकल जानते हैं कि उसके बहुत से दर्शन वैज्ञानिक संभावनाओं के साथ मेल नहीं खाते। इस प्रकार जो ग्रहों के बीच उसकी यात्राओं का विवरण देते हैं और वनस्पतियों और जीवों का वर्णन करते हैं, मान लीजिए कि मंगल ग्रह का, उन्हें पूरी तरह से गलत साबित किया जा सकता है, क्योंकि हम जानते हैं कि जीवन के ऐसे रूप जिन्हें उसने देखने का दावा किया है, संभवतः उस ग्रह पर मौजूद नहीं हो सकते। सवाल उठता है क्या विशाल स्वीडनबॉर्ग ने अपने जीवन

के पहले आधे भाग में जो काम किया, उससे कमोबेश गंभीर मानसिक विकार हुआ?

ऐसे ही कारणों से ऐसी ही चोटों के कई मामले हुए हैं। लेकिन उनके दिमाग की वैज्ञानिक सटीकता और स्पष्टता अंत तक बनी रही। जहाँ तक उन्हें विज्ञान का ज्ञान था, उन्होंने इसे अपने सिस्टम में बहुत ही बढ़िया तरीके से और सूक्ष्म सटीकता के साथ लागू किया; लेकिन जिस तरह दांते का विज्ञान मुस्कुराहट लाता है, उसी तरह हम स्वीडनबॉर्ग के आध्यात्मिक चीजों के वैज्ञानिक अनुप्रयोग के प्रति थोड़ा असहिष्णु महसूस करते हैं।

वह शायद एकमात्र रहस्यवादी था जिसे वास्तविक वैज्ञानिक प्रशिक्षण मिला था; अन्य लोग रसायन विज्ञान और संबंधित अध्ययनों में निपुण थे, लेकिन किसी भी रहस्यवादी ने स्वीडनबॉर्ग जितना लंबा और कठिन वैज्ञानिक प्रशिक्षण कभी नहीं लिया, यह उनकी पूरी प्रणाली को प्रभावित करता है। यह कहना बहुत मुश्किल होगा कि वह स्वाभाविक रूप से रहस्यवादी था या वैज्ञानिक।

आध्यात्मिक मामलों में व्यस्त; और यह केवल तब हुआ जब उसने मानव दिनों की मध्याह्न रेखा को पार कर लिया कि उसने अलौकिक मामलों पर गंभीरता से विचार करना शुरू किया। एक रहस्यवादी के जीवन में परिवर्तन, यदि तीव्र नहीं था, तो निश्चित रूप से लंबे समय तक नहीं था: फिर इसका कारण क्या था? हम केवल यह अनुमान लगा सकते हैं कि उसकी पूरी प्रवृत्ति मूलतः शुरू से ही रहस्यवादी थी, और वह किसी अन्य कारण से नहीं बल्कि परिस्थितियों के बल पर वैज्ञानिक था।

आध्यात्मिकता उसके मस्तिष्क में लगातार उबल रही थी, लेकिन, जैसा कि दुनिया हमेशा हमारे साथ रहती है, उसने मामलों के उस अतिभारी द्रव्यमान को उतार फेंकना मुश्किल पाया, जिसने संभवतः उसे वर्षों तक परेशान किया। अंत में उसकी आत्मा के फव्वारे इतने प्रचंड रूप से फूटे कि उन्हें अब और रोका नहीं जा सका; और अपने वैज्ञानिक पतवारों को एक तरफ फेंक दिया, वह आध्यात्मिक महासागर में कूद गया जिसने बाद में उसे जल्दी से डुबो दिया।

विज्ञान की जीवनी में शायद उसके मामले का कोई सादृश्य नहीं पाया जा सकता है। हम मनुष्य की आध्यात्मिकता के स्रोतों को पूरी तरह से उजागर नहीं कर सकते, लेकिन हम जानते हैं कि वे उसके अंदर गहराई से मौजूद थे। अक्सर यह कहा जाता है कि वह एक मात्र दूरदर्शी था, और शब्द के उचित अर्थ में रहस्यवादी नहीं था; लेकिन उसके दर्शन की शर्तें इस विवाद को खारिज करती हैं; हालाँकि

कई मायनों में यह रहस्यवाद के आम तौर पर स्वीकृत सिद्धांतों के साथ मेल नहीं खाता है, यह निस्संदेह इसके लिए सबसे हड़ताली और गर्भवती योगदानों में से एक है।

वह दिव्य मानवता का प्रेरित है, और 'ग्रैंड मैन' उसके साथ रचनात्मक उद्देश्य की शुरुआत और अंत है। उनकी प्रणाली की मौलिकता चिह्नित है, और जिस विस्तार से उसने इसे घेर लिया है, वह वर्तमान समय के अपने अनुयायियों को संभवतः किसी भी अन्य रहस्यवादी गुरु की तुलना में अधिक शिक्षण प्रदान करता है। स्वीडनबॉर्ग के कार्यों से निम्नलिखित अंश पाठक को उनके परलोकवाद और सामान्य सिद्धांत के बारे में कुछ विचार प्राप्त करने में सहायता करेंगे 1: - 41 ब्रह्मांड ईश्वर की एक छवि है, और उपयोग के लिए बनाया गया था।

प्रोविडेंस स्वर्ग और पृथ्वी पर प्रभु की सरकार है। यह सभी चीज़ों पर अपना विस्तार करता है, क्योंकि जीवन का केवल एक ही स्रोत है, अर्थात् प्रभु, जिसकी शक्ति सभी चीज़ों का समर्थन करती है। "प्रभु का प्रभाव एक योजना के अनुसार होता है, और अदृश्य होता है, जैसा कि प्रोविडेंस है, जिसके द्वारा मनुष्य विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं होते हैं, और इस प्रकार अपनी स्वतंत्रता खो देते हैं।

प्रभु का प्रभाव आध्यात्मिक से प्राकृतिक और आंतरिक से बाहरी की ओर जाता है। प्रभु अच्छे और बुरे पर अपना प्रभाव डालते हैं, लेकिन बाद वाला अच्छे को बुरे में और सच्चे को झूठे में बदल देता है; क्योंकि उसकी इच्छा का प्राणी इसी तरह से बना होता है। इस प्रभाव की उत्पत्ति और प्रगति को समझने के लिए, हमें पहले यह जानना होगा कि प्रभु से जो निकलता है वह दिव्य क्षेत्र है जो हमें घेरता है, और आध्यात्मिक और प्राकृतिक दुनिया को भरता है।

वह सब जो किसी वस्तु से निकलता है, और उसे घेरता है और उसे ढंकता है, उसे उसका क्षेत्र कहा जाता है। " चूँकि आध्यात्मिक सब कुछ न तो समय को जानता है और न ही स्थान को, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि सामान्य क्षेत्र या दिव्य क्षेत्र ने खुद को सृष्टि के पहले क्षण से लेकर अंतिम क्षण तक विस्तारित किया है। यह दिव्य उत्सर्जन, जो आध्यात्मिक से प्राकृतिक तक चला गया, सक्रिय रूप से और तेजी से पूरे सृजित संसार में प्रवेश करता है, इसके अंतिम स्तर तक, जहां इसे अभी तक पाया जाना बाकी है, और सभी जानवरों, वनस्पतियों और खनिजों का उत्पादन और रखरखाव करता है।

मनुष्य लगातार अपनी पसंदीदा प्रवृत्तियों के एक क्षेत्र से घिरा हुआ है; ये उसके शरीर के प्राकृतिक क्षेत्र से खुद को जोड़ते हैं, ताकि एक साथ मिलकर वे एक बन

जाएं। प्राकृतिक क्षेत्र प्रकृति के हर शरीर और तीनों राज्यों की सभी वस्तुओं को घेरता है। इस प्रकार यह आध्यात्मिक दुनिया से जुड़ जाता है। यह सहानुभूति और घृणा, मिलन और अलगाव की नींव है, जिसके अनुसार आत्माओं के बीच उपस्थिति और अनुपस्थिति होती है।

देवदूत ने मुझसे कहा कि क्षेत्र ने मुझे घेर लिया पुरुषों में यह स्तन की तुलना में पीठ पर अधिक हल्का होता है, जहां यह मोटा और मजबूत होता है। प्रभाव का यह क्षेत्र, जो मनुष्य के लिए विशिष्ट है, सामान्य रूप से और विशेष रूप से उसके चारों ओर इच्छा, समझ और अभ्यास के माध्यम से कार्य करता है, "ईश्वर से आने वाला क्षेत्र, जो मनुष्य को घेरता है और उसकी शक्ति का निर्माण करता है, जबकि यह उसके पड़ोसी और पूरी सृष्टि पर कार्य करता है, शांति और मासूमियत का क्षेत्र है; क्योंकि भगवान शांति और मासूमियत है।

तभी मनुष्य अपने साथी मनुष्य पर अपना प्रभाव प्रभावी बनाने में सक्षम होता है, जब उसके दिल में शांति और मासूमियत शासन करती है, और वह खुद स्वर्ग के साथ एकता में होता है। यह आध्यात्मिक एकता एक परोपकारी व्यक्ति द्वारा स्पर्श और हाथ रखने के माध्यम से प्राकृतिक से जुड़ी होती है, जिसके द्वारा आंतरिक मनुष्य का प्रभाव तेज, तैयार और प्रदान किया जाता है। शरीर शरीर के माध्यम से अपने आस-पास के अन्य लोगों के साथ संचार करता है, और आध्यात्मिक प्रभाव मुख्य रूप से हाथों के माध्यम से फैलता है, क्योंकि ये मनुष्य के सबसे बाहरी या अंतिम हैं; और उसके माध्यम से, जैसा कि पूरी प्रकृति में है, पहला अंतिम में निहित है, प्रभाव में कारण के रूप में।

संपूर्ण आत्मा और संपूर्ण शरीर प्रभाव के माध्यम के रूप में हाथों में समाहित है। इस प्रकार हमारे प्रभु ने बीमारों को हाथ रखकर चंगा किया, जिसके कारण बहुत से लोग स्पर्श से चंगे हुए; और तब से प्राचीन काल से पुजारियों और सभी पवित्र चीजों का अभिषेक हाथ रखकर किया जाता था। शब्द की व्युत्पत्ति के अनुसार, हाथ शक्ति को दर्शाते हैं। मनुष्य का मानना है कि उसके विचार और उसकी इच्छा उसके भीतर से निकलती है, जबकि यह सब उसके अंदर प्रवाहित होता है।

यदि वह चीजों को उनके वास्तविक रूप में देखता, तो वह बुराई को नरक और अच्छाई को भगवान को सौंप देता; वह भगवान की कृपा से अपने भीतर अच्छाई और बुराई को पहचान लेता और खुश रहता। केवल अभिमान ने ही ईश्वर के प्रभाव को नकार दिया है और मानव जाति को नष्ट कर दिया है।" अपनी रचना स्वर्ग और नर्क में स्वीडनबॉर्ग ने प्रभाव और पारस्परिकता की बात की है - पत्राचार।

पत्राचार की क्रिया मनुष्य के चेहरे पर प्रत्यक्ष होती है। जिस चेहरे ने पाखंड नहीं सीखा है, उसमें सभी भावनाएँ अपने वास्तविक रूप के अनुसार स्वाभाविक रूप से प्रदर्शित होती हैं; इसलिए चेहरे को आत्मा का दर्पण कहा जाता है। इसी तरह, जो समझ से संबंधित है वह वाणी में प्रदर्शित होता है और जो इच्छा से संबंधित है वह हरकतों में। चेहरे पर, वाणी में, हरकतों में हर भाव पत्राचार कहलाता है। पत्राचार के द्वारा मनुष्य स्वर्ग से संवाद करता है और इस प्रकार वह स्वर्गदूतों से संवाद कर सकता है यदि उसके पास विचार के माध्यम से पत्राचार का विज्ञान है।

स्वर्ग और मनुष्य के बीच संचार हो सके, इसके लिए शब्द केवल पत्राचार से बना है, क्योंकि शब्द में सब कुछ पत्राचार है, संपूर्ण और भाग; इसलिए वह रहस्यों को जान सकता है, जिसके बारे में वह शाब्दिक अर्थ में कुछ भी नहीं समझता है; क्योंकि शब्द में, शाब्दिक अर्थ के अलावा, एक आध्यात्मिक अर्थ भी है - एक दुनिया का, दूसरा स्वर्ग का। स्वीडनबॉर्ग ने आध्यात्मिक अर्थ में पत्राचार के माध्यम से स्वर्गदूतों और आत्माओं के साथ अपने दर्शन और संचार किए थे।

"स्वर्गदूत आध्यात्मिक दुनिया से, आंतरिक विचार के अनुसार बोलते हैं; ज्ञान से, उनका भाषण एक शांत धारा में, धीरे-धीरे और निर्बाध रूप से बहता है, - वे केवल स्वरों में बोलते हैं - स्वर्गीय स्वर्गदूत A और O में, आध्यात्मिक स्वर्गदूत £ और I में, क्योंकि स्वर भाषण को स्वर देते हैं, और स्वर से भावना व्यक्त होती है; दूसरी ओर, रुकावटें मन की रचनाओं के अनुरूप होती हैं; इसलिए हम पसंद करते हैं, अगर विषय उदात्त है, उदाहरण के लिए स्वर्ग या भगवान, यहां तक कि मानव भाषण में, स्वर U और O, आदि।

मनुष्य, हालांकि, शब्द के माध्यम से स्वर्ग के साथ जुड़ा हुआ है, और इस प्रकार स्वर्ग और पृथ्वी के बीच, दिव्य और प्राकृतिक के बीच की कड़ी बनाता है।" "लेकिन जब स्वर्गदूत मुझसे आध्यात्मिक रूप से बात करते हैं स्वर्ग में, वे मेरे बगल वाले आदमी की तरह ही बुद्धिमानी से बोलते हैं। लेकिन अगर वे आदमी से दूर हो जाते हैं, तो वह कुछ भी नहीं सुनता है, भले ही वे उसके कान के पास बोलें। यह भी उल्लेखनीय है कि कई स्वर्गदूत एक आदमी से बात कर सकते हैं; वे एक आत्मा को मनुष्य की ओर भेजते हैं, और वह इस तरह उन्हें एक साथ सुनता है।"

एक अन्य स्थान पर वह कहता है: - "प्राकृतिक या भौतिक आत्माएँ भी हैं; इनका दूसरों की तरह विचार से कोई संबंध नहीं है, लेकिन वे शरीर में प्रवेश करती हैं, सभी इंद्रियों पर अधिकार करती हैं, मुँह से बोलती हैं, और अंगों से काम करती हैं,

क्योंकि वे नहीं जानते कि उस आदमी की हर चीज़ उनकी अपनी है। ये वे आत्माएँ हैं जिनके द्वारा मनुष्य ग्रस्त होते हैं।

हालाँकि, उन्हें भगवान ने नरक में भेजा था; इसलिए हमारे दिनों में ऐसे कोई प्रेतबाधित व्यक्ति अस्तित्व में नहीं हैं।" स्वीडनबॉर्ग के आगे के सिद्धांत और दर्शन सद्भाव के बारे में, अर्थात् मनुष्यों के साथ स्वर्ग के बारे में, और प्रकृति की सभी वस्तुओं के साथ; सभी चीजों के एक दूसरे के साथ सामंजस्य और पत्राचार के बारे में; स्वर्ग, नरक और आत्माओं की दुनिया के बारे में; मृत्यु के बाद मनुष्य की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में, आदि - बहुत ही विशिष्ट, महत्वपूर्ण और शक्तिशाली हैं।

"प्रबुद्ध आंतरिक आँख के बारे में उनके चिंतन में रोजमर्रा की संगति और जीवन की वस्तुओं के बारे में कम उल्लेख है (हालाँकि उन्होंने अक्सर भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की थी), क्योंकि उनका मन केवल उच्चतम आध्यात्मिक विषयों की ओर निर्देशित था, जिसमें वास्तव में उन्होंने आंतरिक जागृति की एक असामान्य डिग्री प्राप्त की थी, लेकिन इसलिए इसे समझा या जाना नहीं गया, क्योंकि उन्होंने अपनी दृष्टि को भाषा द्वारा आध्यात्मिक और असामान्य रूप से वर्णित किया।

स्वर्ग की विशालता पर उनका अध्याय विशेष रूप से अधिक आकर्षित करता है क्योंकि इसमें ग्रह प्रणाली के बारे में आत्माओं और स्वर्गदूतों की बातचीत शामिल है। ग्रह पृथ्वी की तरह ही प्राकृतिक रूप से बसे हुए हैं, लेकिन ग्रह के अलग-अलग व्यक्तिगत गठन के अनुसार निवासी अलग-अलग हैं। ग्रहों के निवासियों पर ये दर्शन सबसे उल्लेखनीय रूप से और लगभग बिना किसी अपवाद के एक दिव्यदर्शी के संकेतों से मेल खाते हैं, जिसका मैंने चुंबकीय रूप से इलाज किया था।

मुझे नहीं लगता कि वह स्वीडनबॉर्ग को जानती थी; हालाँकि, मैं इसे बहुत कम महत्व देता हूँ। दोनों द्रष्टाओं ने मंगल को बिल्कुल अलग तरीके से देखा। चुंबकीय द्रष्टा को केवल भय और डरावनी छवियाँ मिलीं। दूसरी ओर, स्वीडनबॉर्ग उन्हें ग्रह प्रणाली की सभी आत्माओं में सर्वश्रेष्ठ के रूप में वर्णित करता है। उनकी कोमल, कोमल, सेफिर जैसी भाषा, दूसरों की तुलना में अधिक परिपूर्ण, शुद्ध और विचारों में समृद्ध है, और स्वर्गदूतों की भाषा के करीब है।

ये लोग एक साथ मिलते हैं, और एक-दूसरे का आकलन शारीरिक बनावट से करते हैं, जो उनके बीच हमेशा विचारों की अभिव्यक्ति होती है। वे भगवान को एकमात्र ईश्वर मानते हैं, जो कभी-कभी उनकी धरती पर प्रकट होते हैं।" "शुक्र के

निवासियों के बारे में वे कहते हैं: - 'वे दो प्रकार के हैं; कुछ सौम्य और दयालु हैं, अन्य जंगली, क्रूर और विशाल कद के हैं।

उत्तरार्द्ध लूटते हैं और लूटते हैं, और इसी तरह से जीते हैं; पहले वाले में इतनी अधिक नम्रता और दयालुता है कि वे हमेशा अच्छे लोगों के प्रिय होते हैं; इस प्रकार वे अक्सर भगवान को अपनी धरती पर अपने रूप में प्रकट होते देखते हैं।' यह उल्लेखनीय है कि शुक्र का यह वर्णन पुरानी कहानी के साथ और शुक्र के बारे में हमारे विचारों और अनुभव के साथ बहुत अच्छी तरह मेल खाता है। "चंद्रमा के निवासी छोटे हैं, छह या सात साल के बच्चों की तरह; साथ ही उनमें हमारे जैसे पुरुषों की ताकत है। उनकी आवाज़ गरजने जैसी होती है, और ध्वनि पेट से निकलती है, क्योंकि चंद्रमा अन्य ग्रहों से बिल्कुल अलग वातावरण में है।"

344.टेबल**-**टर्निंग**:** मानसिक घटना का एक रूप जिसमें एक टेबल को ऑपरेटर की उंगलियों के मात्र स्पर्श से घुमाया, झुकाया या ज़मीन से पूरी तरह ऊपर उठाया जाता है, और मांसपेशियों के बल के सचेत व्यायाम के बिना। यह कार्य-प्रणाली बहुत सरल है। बैठने वाले एक टेबल के चारों ओर अपनी जगह लेते हैं, जिस पर वे अपनी उंगलियों को हल्के से टिकाते हैं, इस प्रकार एक "चेन" बनाते हैं। कुछ ही क्षणों में टेबल घूमने लगती है, और कमरे में इधर-उधर भी घूम सकती है, ऐसा लगता है कि यह प्रयोग करने वालों को अपने साथ ले जा रही है। आध्यात्मिक दुनिया से संवाद करने के साधन के रूप में यह अध्यात्मवादियों के बीच बहुत लोकप्रिय था और है।

वर्णमाला को धीरे-धीरे दोहराया जाता था, या पेंसिल को छपे हुए अक्षर पर चलाया जाता था, टेबल उस अक्षर पर झुक जाती थी जिसे आत्माएँ इंगित करना चाहती थीं। इस प्रकार उपदेश, कविताएँ, आत्मा-दुनिया के बारे में जानकारी और बैठने वालों द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब लिखे जाते थे। अधिकांश आध्यात्मिक घटनाओं की तरह टेबल-टर्निंग की उत्पत्ति अमेरिका में हुई। यह तेजी से यूरोप में फैल गया और 1853 की शुरुआत में ब्रिटेन पहुंचा, जहां यह जल्द ही बेहद लोकप्रिय हो गया और कुछ समय के लिए रैप के माध्यम से संचार के पुराने तरीके की जगह ले ली। इसने लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया क्योंकि इसके लिए महंगे पेशेवर माध्यम की सेवाओं की आवश्यकता नहीं थी। देश के सभी हिस्सों में और समाज के हर वर्ग में लोकप्रिय उन्माद का उत्साह के साथ अभ्यास किया गया और इस मामले में अन्य मामलों की तरह ही परिणाम भी बैठने वालों की विश्वसनीयता के अनुपात में बढ़े।

कार्यवाही के इन शुरुआती चरणों में टेबल के घुमावों को पूरी तरह से आध्यात्मिक एजेंसियों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। आखिरकार मामले इतने गंभीर हो गए कि विज्ञान के लोग अब "अभिव्यक्तियों" को अनदेखा नहीं कर सकते थे और टेबल-टर्निंग की घटना पर वैज्ञानिक ज्ञान की रोशनी डालने और इसे तर्कसंगत आधार पर समझाने का प्रयास करने के लिए मजबूर हो गए।

इन प्रतिष्ठित अन्वेषकों में सबसे आगे रसायनज्ञ फैराडे थे, जिन्होंने अपने स्वयं के आविष्कार के सरल उपकरणों के माध्यम से दिखाया कि मेज की हरकतें बैठने वालों की ओर से अचेतन मांसपेशियों की क्रिया के कारण थीं, जो इस प्रकार स्वयं उन संदेशों के स्वचालित लेखक थे जो आत्मा की दुनिया से आने का दावा करते थे। फैराडे के उपकरण में शामिल थे दो पतले लकड़ी के बोर्ड जिनके बीच में छोटे कांच के रोलर्स लगे होते हैं, पूरे बोर्ड को रबर बैंड से बांधा जाता है और इस तरह से बनाया जाता है कि ऊपरी बोर्ड पर हल्का सा पार्श्व दबाव पड़ने पर यह दूसरे बोर्ड पर थोड़ा खिसक जाएगा। ऊपरी बोर्ड के निचले बोर्ड पर किसी भी तरह की हलचल को इंगित करने के लिए घास का एक डंठल या कागज का टुकड़ा इस्तेमाल किया जाता है।

इन प्रयोगों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि जब बैठने वालों को लगा कि वे नीचे की ओर दबाव डाल रहे हैं, तो वे वास्तव में उस दिशा में तिरछा दबाव डाल रहे थे, जिस दिशा में उन्हें टेबल के घूमने की उम्मीद थी। अन्य जांचकर्ताओं ने भी माना कि ऑपरेटरों की उम्मीद का टेबल की हरकतों से बहुत कुछ लेना-देना था। ब्रैड ने अपने हिप्नोटिक थेरेप्यूटिक्स के परिशिष्ट में बताया कि आम तौर पर कोई व्यक्ति पहले से ही यह घोषणा कर देता था कि टेबल किस दिशा में घूमेगी और इस तरह ऑपरेटरों की उम्मीद को बढ़ावा मिलता था।

एक अन्य अधिकारी, डॉ. डब्ल्यू. बी. कारपेंटर ने भी यही विचार साझा किया, जैसा कि चार चिकित्सा पुरुषों की एक समिति ने किया, जिन्होंने मेडिकल टाइम्स और गॉल में टेबल-टर्निंग के अपने अनुभवों को प्रकाशित किया। टेबल-टर्निंग की घटना के शुरुआती जांचकर्ताओं में काउंट डी गैसपेरिन और जिनेवा के प्रोफेसर थ्यूरी थे, जिन्होंने रुख अपनाया और संतुष्ट थे कि ये हरकतें ऑपरेटरों से निकलने वाले बल के परिणामस्वरूप होती हैं, जिसे उन्होंने "एक्टेनिक बल" का नाम दिया। हालाँकि, ऐसे अन्य लोग भी थे, जो इस घटना को समझाने के अपने प्रयासों में कम तर्कसंगत थे। आम जनता फैराडे और बाकी लोगों के निष्कर्षों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।

वे डॉ. कोच जैसे लोगों के अधिक लोकप्रिय आध्यात्मिक व्याख्याओं या छद्म वैज्ञानिक सिद्धांतों को प्राथमिकता देते थे, जो मानते थे कि ऑपरेटरों की

"श्रृंखला" एक प्रकार की विद्युत बैटरी बनाती है जो टेबल को महत्वपूर्ण ऊर्जा या, जैसा कि इसे कहा जाता था, "इलेक्ट्रो-ऑडिलिक" बल की आपूर्ति करती है, और इसे इच्छा के अनुसार प्रतिक्रिया करने के लिए मजबूर करती है जैसे कि यह मानव शरीर का एक हिस्सा हो। अन्य व्याख्याएँ दी गईं ओडिक बल, गैल्वनिज़्म, पशु चुंबकत्व, और, सबसे अजीब धारणा, पृथ्वी का घूमना।

टेबल-टॉकिंग नामक एक अनाम पैम्फलेट में, जो तर्क और सामान्य ज्ञान के निर्देशों के संबंध में विचार किया गया था, फैराडे के निष्कर्षों का उपहास किया गया था, और एक विद्युत सिद्धांत को इस तरह से आगे बढ़ाया गया है, कि यह पता चलता है कि लेखक अपने विषय से बिलकुल अनभिज्ञ है। एक और पैम्फलेट, जो गुमनाम भी है, जिसका शीर्षक है टेबल-टर्निंग बाय एनिमल मैग्नेटिज्म डेमोनटर्ड, इस घटना को चुंबकत्व के लिए जिम्मेदार ठहराता है, और कुछ प्रयोगों के परिणामों पर अपनी धारणाओं को आधारित करता है जिसमें टेबल को कांच या गुट्टा-पर्चा द्वारा अलग किया गया था।

डॉ. इलियटसन और अन्य विश्वासियों ने एक ऐसे "द्रव" में विश्वास किया जो निर्जीव वस्तुओं के साथ-साथ जीवित प्राणियों को भी प्रभावित करेगा, टेबल-टर्निंग में अपने विचारों के लिए समर्थन देखा। रेव. जी. सैंडबी और रेव. सी. एच. टाउनशेंड ने दावा किया कि टेबल-टर्निंग सेंस के बाद उन्हें थकान की भावना का अनुभव हुआ जैसे कि वे किसी को सम्मोहित कर रहे थे। उन्होंने अपनी उंगलियों में झुनझुनी सनसनी भी महसूस की, और टाउनशेंड ने सुझाव दिया कि आत्मा की रैपिंग "सिस्टम से ज़ूजेन के विघटन" के कारण हो सकती है।

डॉ. इलियटसन ने खुद स्वीकार किया कि इस घटना को मांसपेशियों के बल की सीमा के भीतर समझाया नहीं जा सकता। एक और समूह था, जिसमें मुख्य रूप से इवेंजेलिकल पादरी शामिल थे, जिन्होंने पूरे मामले को शैतानी एजेंसी का श्रेय दिया। रेव. एन.एस. गॉडफ्रे, रेव. ई. गिलसन और अन्य लोगों ने ऐसे सत्र आयोजित किए, जिनमें "आत्माओं" ने खुद को या तो बुरे स्वभाव वाले बेकार लोगों की आत्माएं या शैतान होने के रूप में स्वीकार किया, दोनों ही स्वीकारोक्ति के कारण आदरणीय सज्जनों ने टेबल-टर्निंग की पूरी प्रथा की निंदा की।

उनमें से एक ने फैराडे के प्रयोगों के बारे में टिप्पणी की कि घटनाएँ "जो कुछ भी जांचकर्ता उन्हें मानते हैं, वैसी ही प्रतीत होती हैं," एक कहावत जो उनके अपने दृष्टिकोण को सटीक रूप से दर्शाती है। कैमिल फ्लेमरियन, जिनके विस्तृत प्रयोग और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ उनकी राय को काफी महत्व देती हैं, ने

टेबल-टर्निंग घटना के विभिन्न चरणों की व्याख्या की है। वह मेज के सरल घुमाव को संचालकों द्वारा दिए गए अचेतन आवेग के कारण मानता है और मेज पर बैठे लोगों की अंगुलियों के टिके रहने के दौरान मेज की अन्य हरकतों को भी इसी तरह के कारणों के कारण मानता है।

संचालक से सबसे दूर की ओर मेज का झुकना भी मांसपेशियों की क्रिया द्वारा समझाया जा सकता है। लेकिन मेज की लकड़ी में कंपन, या अंगुलियों के नीचे उसका उत्तोलन, या, और भी अधिक हद तक, संचालक के हाथों के संपर्क के बिना उसका घूमना, वह शरीर से निकलने वाले बल के कारण मानता है, और बाद के मामले में, ईथर तरंगों के माध्यम से दूरी पर कार्य करने में सक्षम है। यह बल, मस्तिष्क की गड़बड़ी का परिणाम है, मांसपेशियों की तुलना में अधिक है, जैसा कि मेजों के उत्तोलन से देखा जाता है जो इतने भारी होते हैं कि संचालकों की संयुक्त मांसपेशी शक्ति इसे उठाने के लिए पर्याप्त नहीं होगी।

संदेशों और अन्य बुद्धिमान अभिव्यक्तियों के निर्देश के लिए वह इस मानसिक शक्ति में एक उत्पत्ति भी देगा, जो शायद थ्यूरी के "एक्टेनिक" बल, या '* साइकोडे' के समान है, और जो इच्छा और इच्छाओं के प्रति आज्ञाकारी है, या यहां तक कि, कुछ मामलों में, ऑपरेटर की अवचेतन इच्छा के प्रति भी। आत्माओं की परिकल्पना को वह आवश्यक नहीं मानते। हालांकि, यह संभव है कि धोखाधड़ी एम. फ्लेमरियन के विचारों में घुस गई हो, जैसा कि कई अन्य मामलों में हुआ है। और मानसिक शोध के सबसे गहन छात्रों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अचेतन मांसपेशियों की क्रिया और जानबूझकर धोखाधड़ी में घटना की संतोषजनक व्याख्या पाते हैं।

345.वर्जित**,** टैबू या तपो**:** एक पोलिनेशियाई शब्द जिसका अर्थ है "निषिद्ध" और धार्मिक या जादुई शक्ति द्वारा लागू निषेध को दर्शाता है, जिसे दुनिया भर के जंगली लोगों के बीच समान उपयोगों के लिए लागू किया गया है। पवित्र चीजों और अशुद्ध चीजों के मामले में निषेध या निषेध लागू किया जाता है। पहले उदाहरण में, निषेध वस्तु पर इसलिए लगाया जाता है क्योंकि उसमें अंतर्निहित रहस्यमय शक्ति होती है। लेकिन, निषेध किसी प्रमुख या पुजारी द्वारा लगाया जा सकता है। इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा करना है; कमज़ोर लोगों, महिलाओं, बच्चों और दासों को उच्च पदस्थ व्यक्तियों के जादुई प्रभाव से बचाना; लाशों को छूने या उनके संपर्क में आने से होने वाले खतरे से बचाना; या कुछ खाद्य पदार्थ खाने से बचाना; और अलौकिक शक्तियों या चोरों के उत्पात से मनुष्यों की सुरक्षा करना। निषेध को सामाजिक उपयोग या सहज ज्ञान द्वारा भी मंजूरी दी जा सकती है। निषेध का उल्लंघन करने पर अपराधी स्वयं भी

निषेध हो जाता है, क्योंकि निषेध की विशेषता यह है कि यह संक्रामक है, लेकिन जादुई या शुद्धिकरण संबंधी अनुष्ठानों द्वारा इसे हटाया जा सकता है।

यह थोड़े समय के लिए हो सकता है, या हमेशा के लिए लगाया जा सकता है। सामान्य तौर पर यह कहा जा सकता है कि निषेध का अभ्यास मानवीय सुविधा के लिए मानवीय प्रवृत्ति के माध्यम से स्थापित किया गया था। यह निश्चित रूप से केवल सबसे सरल प्रकार के निषेध पर लागू होता है। उदाहरण के लिए, किसी कृषि देवता को समर्पित मकई के टुकड़े को काटने या चुराने के लिए मना किया जाता है, इस साधारण कारण से कि ऐसा करने से उसका क्रोध भड़केगा। इसी तरह जनजाति के कुलदेवता पशु का मांस खाना वर्जित है, सिवाय विशेष परिस्थितियों में उसके साथ संवाद स्थापित करने के उद्देश्य से।

ओझाओं या वैद्यों के मामलों में किसी भी तरह से हस्तक्षेप करना वर्जित है: यह भी एक प्रकार का निषेध है जो किसी विशेष जाति की सुविधा के लिए लगाया जाता है। अपने ही कुलदेवता की स्त्री से विवाह करना निषिद्ध है, क्योंकि कुलदेवता समूह के सभी सदस्य रक्त-सम्बन्धी माने जाते हैं, और ऐसा मिलन संरक्षक देवता के क्रोध का कारण बन सकता है। कुछ बर्बर जनजातियों से संबंधित कुछ अनुष्ठानिक उपकरणों को देखने पर बहुत सख्त प्रतिबंध लगाया गया है, लेकिन यह केवल महिलाओं और अविवाहित पुरुषों पर लागू होता है: इस तरह के प्रतिबंध का कारण यह होगा कि महिलाओं द्वारा पवित्र उपकरणों को देखना अपमानजनक माना जाता था।

निषेध, यदि यह सीधे टोटेमिज्म नामक प्रणाली से उत्पन्न नहीं होता है, तो इसका बहुत प्रभाव पड़ता है - अर्थात, कई जटिल निषेध टोटेमिक प्रणाली से उत्पन्न हुए हैं। हमारे पास जादूगर का निषेध भी है, जो वास्तव में एक निश्चित वस्तु पर लगाया गया एक जादू मात्र है, जो इसे दूसरों के लिए बेकार बना देता है। निषेध, या इसके अवशेष, अभी भी सबसे सभ्य समुदायों में भी प्रबल रूप में पाए जाते हैं, और इसके प्रयोग से प्राचीन संस्थाओं और उनका प्रतिनिधित्व करने वालों के प्रति श्रद्धा की भावना निस्संदेह उत्पन्न होती है।

346.तलघ्सलरम**:** नरकीय आत्माओं के लिए बिल्लियों की जादुई बलि, जो पहले स्कॉटिश भूमि के हाइलैंड्स और द्वीपों में प्रचलित थी। ऐसा माना जाता है कि यह मूल रूप से भूमिगत देवताओं के लिए बलि का एक समारोह था, जिसे उत्तरी भूमि से आयात किया गया था, जो ईसाई काल में नरकीय आत्माओं का आह्वान बन गया। शब्द "ताइघीर्म" का अर्थ शस्त्रागार या बिल्ली की चीख है, जिस अर्थ में इसका उपयोग किया जाता है।

होर्स्ट की ड्यूटेरोस्कोपी में काली बिल्लियों के साथ किए जाने वाले समारोह का विवरण दिया गया है: "बिल्लियों को सभी शैतानों को समर्पित करने के बाद, और उनके साथ किए गए शर्मनाक कामों और उन्हें दी गई पीड़ा के कारण जादुई-सहानुभूतिपूर्ण स्थिति में डाल दिया गया, उनमें से एक को तुरंत कटार पर रखा गया, और भयानक गेंदबाजी के बीच, धीमी आग के सामने भुना गया। जिस क्षण एक प्रताड़ित बिल्ली की चीखें मृत्यु में बंद हो गईं, दूसरी को कटार पर रखा गया, यदि वे नरक को नियंत्रित करना चाहते थे तो एक मिनट का अंतराल नहीं होना चाहिए; और यह पूरे चार दिन और रात तक जारी रहा।

यदि भूत भगाने वाला इसे और अधिक समय तक रोक सकता था, और यहां तक कि जब तक उसकी शारीरिक शक्तियां पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जातीं, तो उसे ऐसा करना चाहिए। जब भयानक अनुष्ठान कुछ समय तक जारी रहे, तो राक्षस काली बिल्लियों के रूप में प्रकट होने लगे, जिन्होंने अपनी निराशाजनक चीखों को दुर्भाग्यपूर्ण बलिदानों के साथ मिला दिया। अंत में एक बिल्ली बड़ी और अधिक सुंदर दिखाई दी। दूसरों की तुलना में भयावह रूप, और समय आ गया था कि भूत भगाने वाले को अपनी मांगें बतानी चाहिए।

आमतौर पर वह दूसरी दृष्टि का उपहार मांगता था, लेकिन अन्य पुरस्कार मांगे जा सकते थे और प्राप्त किए जा सकते थे।कहा जाता है कि अंतिम ताइघीर्म सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में मोल में आयोजित किया गया था। भूत भगाने वाले एलन मैकलीन और उनके सहायक लैचलेन मैकलीन थे, दोनों को दूसरी दृष्टि प्राप्त हुई। इस विशेष समारोह के बारे में होर्स्ट कहते हैं: "बलिदान की प्रारंभिक प्रक्रिया में राक्षसी आत्माएँ काली बिल्लियों के रूप में प्रकट हुईं।

बलि के दौरान सबसे पहले जो प्रकट हुआ, उसने बलि पर एक उग्र नज़र डालने के बाद कहा - लैचलेन ओर, यानी बिल्लियों को चोट पहुँचाने वाला।' एलन, मुख्य संचालक, ने लैचलेन को चेतावनी दी कि वह जो भी देखे या सुने, उसे विचलित न हो, बल्कि थूक को लगातार घुमाता रहे। आखिरकार राक्षसी आकार की बिल्ली दिखाई दी; और एक भयानक चीख़ लगाने के बाद, लैचलेन ओर से कहा, कि अगर वह उनके सबसे बड़े भाई के आने से पहले नहीं रुका, तो वह कभी भगवान का चेहरा नहीं देख पाएगा। लैचलेन ने जवाब दिया कि अगर नरक के सभी शैतान आ गए तो भी वह अपना काम पूरा करने तक नहीं रुकेगा। चौथे दिन के अंत में, खलिहान की छत में बीम के अंत में आग की लपटों वाली आँखों वाली एक काली बिल्ली बैठी थी, और मुल्ल के जलडमरूमध्य के पार मोवेन में एक भयानक चीख़ सुनाई दी।

इस समय तक दोनों में से बड़ा आदमी पूरी तरह थक चुका था, और बेहोश होकर गिर पड़ा, लेकिन छोटा आदमी इतना आत्म-संयमित था कि उसने धन और समृद्धि माँगी, जो दोनों को अपने पूरे जीवनकाल में मिली। इससे कुछ समय पहले, लोचिएल के कैमरून को ताइघीर्म में एक छोटा चांदी का जूता मिला था, जिसे उसके परिवार के एक नवजात बेटे के पैर में पहनाने से बच्चे को साहस और धैर्य मिलता था।

हालाँकि, एक लड़के का जन्म के समय एक पैर जूते के लिए बहुत बड़ा था, यह दोष उसे अपनी माँ से विरासत में मिला था, जो कैमरून नहीं थी। शेरिफमुइर में उसके पास जादुई रूप से दिए गए साहस की कमी स्पष्ट थी, जहाँ वह दुश्मन से बचकर भाग गया था।

347.तावीज़**:** एक निर्जीव वस्तु जिसके बारे में माना जाता है कि वह ताबीज़ (q.v.) के विपरीत लाभ या शक्तियाँ प्रदान करने की अलौकिक क्षमता रखती है, जिसका उद्देश्य बुराई को दूर भगाना है। यह आमतौर पर धातु या पत्थर की एक डिस्क होती थी जिस पर ज्योतिषीय या जादुई आकृतियाँ उकेरी जाती थीं। प्राचीन मिस्र और बेबीलोन में तावीज़ आम थे। ज्योतिषीय तावीज़ों के गुण इस प्रकार थे: बुध की ज्योतिषीय आकृति, चाँदी पर उकेरी गई, जो कि इसी धातु की है, और निर्धारित अनुष्ठानों के अनुसार, व्यापार में सफलता देती थी; मंगल की आकृति सैनिक को जीत दिलाती थी; शुक्र की आकृति, सुंदरता और इसी तरह बाकी सभी।

इसी तरह ऐसे सभी तावीज़ अपने ग्रह के उदय के समय अधिक शक्तिशाली होते हैं। इन शक्तिशाली ताबीजों की तीन सामान्य किस्में हैं: i. खगोलीय, जिसमें स्वर्गीय राशियों या नक्षत्रों के लक्षण होते हैं। 2. जादुई, असाधारण आकृतियों, अंधविश्वासी शब्दों या स्वर्गदूतों के नामों के साथ। * 3. मिश्रित, आकाशीय चिह्नों और बर्बर शब्दों से उत्कीर्ण। इनमें, फॉसब्रुक ने अपने एनसाइक्लोपीडिया ऑफ एंटीक्विटीज में दो अन्य जोड़े हैं: - 4. सिगिला प्लेनेटारम, हिब्रू अंक अक्षरों से बना है, जिसका उपयोग ज्योतिषी और भाग्य बताने वाले करते हैं; और 5. हिब्रू नाम और वर्ण।

उत्तरार्द्ध में सबसे शक्तिशाली के उदाहरण के रूप में, यहोवा के पवित्र नाम का उल्लेख किया जा सकता है। यहूदी भक्ति में इस्तेमाल किए जाने वाले प्रसिद्ध टेफिलिन या फिलाक्ट्रीज, और जिन्हें सिर, हाथ और हाथ पर बांधा जाता था, उन्हें तावीज़ माना जा सकता है, और वे कई पारंपरिक समारोहों का विषय थे। हम दरवाजे के खंभों के लिए मेज़ुज़ोथ या अनुसूचियों का भी उल्लेख कर सकते हैं, और इस विवरण का एक अन्य लेख तल्मूड से निम्नलिखित उद्धरण में

उल्लिखित है: - "जिस किसी के सिर और हाथ पर टेलफ़िलिन बंधा हो, और उसके कपड़ों पर त्सित्सिथ डाला गया हो, और उसके दरवाजे के खंभे पर मेज़ुज़ा लगा हो, वह पाप से सुरक्षित रहता है।"

अपने ऑकल्ट साइंसेज में तावीज़ों के बारे में लिखते हुए, श्री ए. £. वेट कहते हैं: "I.) सूर्य का तावीज़ एक धातु से बना होना चाहिए।शुद्ध और बढ़िया सोना, एक गोलाकार प्लेट में गढ़ा हुआ, और दोनों तरफ़ से अच्छी तरह पॉलिश किया हुआ। एक सर्पिन वृत्त, एक पेंटाग्राम द्वारा संलग्न, हीरे की नोक वाले उत्कीर्णन उपकरण के साथ सामने की तरफ़ उकेरा जाना चाहिए। पीछे की तरफ़ सोलोमन के छह-बिंदु वाले तारे के केंद्र में एक मानव सिर होना चाहिए, जो खुद मैगी के अक्षरों में लिखे सौर बुद्धि पी-रे के नाम से घिरा होगा।

यह ताबीज अपने धारक को प्रभावशाली व्यक्तियों की सद्भावना सुनिश्चित करने वाला माना जाता है। यह हृदय रोग, बेहोशी, धमनीविस्फार और महामारी संबंधी शिकायतों से मृत्यु के खिलाफ़ एक संरक्षक है। इसे रविवार को सिंह राशि से चंद्रमा के गुजरने के दौरान और जब वह प्रकाशमान शनि और सूर्य के साथ अनुकूल पहलू में हो, तब बनाया जाना चाहिए। अभिषेक में तावीज़ को दालचीनी, धूप, केसर और लाल चंदन से बने इत्र के धुएँ में उजागर किया जाता है, जिसे लॉरेल-वुड और सूखे हेलियोट्रोप की टहनियों के साथ एक नए चफ़िंग-डिश में जलाया जाता है, जिसे ऑपरेशन समाप्त होने के बाद पाउडर में पीसकर एक अलग जगह पर दफना दिया जाना चाहिए।

तावीज़ को बाद में चमकीले पीले रेशम के एक थैले में रखा जाना चाहिए, जिसे उसी सामग्री के एक इंटरलेस्ड रिबन द्वारा छाती पर बांधा जाना चाहिए, जिसे एक क्रॉस के रूप में बांधा गया है। सभी मामलों में समारोह से पहले चार का जादू होना चाहिए, जिसके बारे में पाठक को पहले ही बताया जा चुका है। पवित्र जल के साथ छिड़काव के साथ अभिषेक का रूप निम्नलिखित तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है: - "एलोहिम के नाम पर, और जीवित जल की आत्मा द्वारा, तुम मेरे लिए प्रकाश के संकेत और इच्छा की मुहर के रूप में हो।" इसे सुगंध के धुएं के सामने पेश करना: - पीतल के सांप द्वारा, जिसके सामने आग के सांप गिर गए, तुम मेरे लिए प्रकाश के संकेत और इच्छा की मुहर के रूप में हो।

"तावीज़ पर सात बार साँस लेना: - आकाश और आवाज की आत्मा द्वारा, तुम मेरे लिए प्रकाश के संकेत और इच्छा की मुहर के रूप में हो। 41 अंत में, पंचकोण पर शुद्ध मिट्टी या नमक के कुछ दाने रखते समय: - पृथ्वी के नमक के नाम पर और अनन्त जीवन के गुण के कारण, तुम मेरे लिए प्रकाश के संकेत और इच्छा की मुहर के रूप में हो। "II. चंद्रमा का तावीज़ शुद्धतम चांदी की एक

गोलाकार और अच्छी तरह से पॉलिश की गई प्लेट से बना होना चाहिए, जो एक साधारण पदक के आयामों का हो। एक पंचग्राम में संलग्न अर्धचंद्र की छवि को अग्रभाग पर उकेरा जाना चाहिए।

पीछे की ओर, एक प्याला सोलोमन की द्वैत मुहर से घिरा होना चाहिए, जो चंद्र प्रतिभा पी-जॉब के अक्षरों से घिरा हो। इस तावीज़ को यात्रियों और अजनबी देशों में रहने वालों के लिए एक सुरक्षा माना जाता है। यह डूबने, मिर्गी, जलोदर, अपोप्लेक्सी और पागलपन से मृत्यु से बचाता है। जन्म कुंडली में शनि के पहलुओं द्वारा भविष्यवाणी की गई हिंसक अंत के खतरों को इसके माध्यम से दूर किया जा सकता है। इसे सोमवार को बनाया जाना चाहिए, जब चंद्रमा मकर राशि या कन्या राशि के पहले दस अंशों से गुजर रहा हो और शनि के साथ भी अच्छी तरह से जुड़ा हो।

इसके अभिषेक में सफेद चंदन, कपूर, एलो, एम्बर और खीरे के चूर्णित बीजों से बनी खुशबू को नए मिट्टी के बर्तन में मगवॉर्ट, मूनवॉर्ट और रैनुनकुलस के सूखे डंठलों के साथ जलाया जाता है, जिसे ऑपरेशन के बाद पाउडर में बदल दिया जाना चाहिए और एक सुनसान जगह में दफना दिया जाना चाहिए। ताबीज को सफेद रेशम के थैले में सिल दिया जाना चाहिए और छाती पर उसी रंग के रिबन से बांधा जाना चाहिए, जिसे क्रॉस के आकार में बांधा और बांधा जाना चाहिए। 44 III. मंगल का ताबीज बेहतरीन लोहे की अच्छी तरह से पॉलिश की गई गोलाकार प्लेट से बना होना चाहिए और एक साधारण पदक के आकार का होना चाहिए।

पेंटाग्राम के केंद्र में तलवार का प्रतीक सामने की तरफ उकेरा जाना चाहिए। छह-नुकीले तारे से घिरा एक शेर का सिर पीछे की तरफ दिखाई देना चाहिए, जिसके ऊपर मंगल ग्रह के ग्रहीय प्रतिभाशाली एरोटोसी नाम के अक्षर होने चाहिए।

बाहरी टखने। यह ताबीज दुश्मनों के सभी संयोजनों के खिलाफ एक संरक्षक के रूप में गुजरता है। यह झगड़ों और लड़ाइयों में, महामारी और बुखार में, और अल्सर को नष्ट करके मृत्यु की संभावना को टालता है। यह जन्म कुंडली में भविष्यवाणी किए जाने पर अपराध के लिए सजा के रूप में एक हिंसक अंत के खतरे को भी बेअसर करता है। "इस ताबीज को मंगलवार के दिन, मेष या धनु राशि के दस प्रथम अंशों से चंद्रमा के गुजरने के दौरान और इसके अलावा, जब यह शनि और मंगल के साथ अनुकूल दृष्टि से जुड़ा हो, बनाया जाना चाहिए। अभिषेक में सूखे चिरायता और रूई से बने इत्र के धुएं के संपर्क में आना शामिल है, जिसे मिट्टी के बर्तन में जलाया जाता है जिसका पहले कभी उपयोग नहीं

किया गया है, और जिसे ऑपरेशन पूरा होने पर पाउडर में तोड़ दिया जाना चाहिए, और एकांत स्थान पर दफन किया जाना चाहिए।

अंत में, ताबीज को लाल रेशम के थैले में सिल दिया जाना चाहिए, और उसी सामग्री के रिबन के साथ छाती पर बांधा जाना चाहिए और क्रॉस के रूप में बांधा जाना चाहिए। *• IV. बुध का ताबीज स्थिर क्विकसिल्वर की एक गोलाकार प्लेट से बना होना चाहिए, या दूसरे विवरण के अनुसार चांदी, पारा और टिन के मिश्रण से बना होना चाहिए, जो एक साधारण पदक के आयामों का हो, दोनों तरफ से अच्छी तरह से पॉलिश किया हुआ हो।

एक पंख वाला कैडुसियस, जिसमें दो इसके चारों ओर लिपटे हुए साँपों को, अग्र भाग पर एक पेंटाग्राम के केंद्र में उकेरा जाना चाहिए। दूसरे पर सोलोमन के तारे के भीतर एक कुत्ते का सिर होना चाहिए, बाद वाले को ग्रह प्रतिभा, पी-एचसीआरएमएस के नाम से घिरा होना चाहिए, जो मैगी की वर्णमाला में लिखा गया है। इस ताबीज को बुधवार को बनाया जाना चाहिए, जब चंद्रमा मिथुन या वृश्चिक के दस पहले अंशों से गुजर रहा हो, और शनि और बुध के साथ अच्छी तरह से जुड़ा हो।

अभिषेक में बेन ज़ोइन, मैड्स और स्टोरैक्स से बने इत्र के धुएं के संपर्क में आना शामिल है, जिसे लिली, नार्सिसस, फ्यूमिटरी और मार्जोलेन के सूखे डंठल के साथ जलाया जाता है, एक मिट्टी के चफ़िंग-डिश में रखा जाता है जिसे कभी किसी अन्य उद्देश्य के लिए समर्पित नहीं किया गया है, और जिसे कार्य पूरा होने के बाद, पाउडर में कम किया जाना चाहिए और एक अछूते स्थान पर दफन किया जाना चाहिए। बुध के तावीज़ को सभी प्रकार के वाणिज्य और व्यापार उद्योग में सुरक्षा माना जाता है।

वाणिज्य के घर में जमीन के नीचे दफन होने पर यह ग्राहकों और समृद्धि को आकर्षित करेगा। यह इसे पहनने वाले सभी लोगों को मिर्गी और पागलपन से बचाता है। यह हत्या और जहर से होने वाली मौत को रोकता है, यह देशद्रोह की योजनाओं के खिलाफ सुरक्षा करता है और जब इसे सोते समय सिर पर पहना जाता है तो यह भविष्यसूचक सपने लाता है।

इसे बैंगनी रेशम के रिबन से छाती पर बांधा जाता है और क्रॉस के आकार में बांधा जाता है, और तावीज़ को उसी सामग्री के एक थैले में बंद किया जाता है। 44 वी. बृहस्पति का तावीज़ शुद्धतम अंग्रेजी पीतल की एक गोलाकार प्लेट से बना होना चाहिए, जिसका आकार एक साधारण पदक के बराबर हो और दोनों

तरफ से अत्यधिक पॉलिश किया गया हो। पेंटाग्राम के केंद्र में चार-नुकीले मुकुट की छवि को सामने की तरफ उकेरा जाना चाहिए।

दूसरी ओर सोलोमन के छह-बिंदु वाले तारे के केंद्र में एक चील का सिर होना चाहिए, जिसके चारों ओर रहस्यमय वर्णमाला में लिखे ग्रहीय प्रतिभा पी-ज़ीउस का नाम होना चाहिए। 44 इस ताबीज को गुरुवार को बनाया जाना चाहिए, जब चंद्रमा तुला राशि के पहले दस अंशों से गुज़र रहा हो, और जब यह शनि और बृहस्पति के साथ अनुकूल पहलू में हो। अभिषेक में धूप, एम्बरग्रीस, बाम, पैराडाइज़ के अनाज, केसर और मैड्स से बने इत्र के धुएं के संपर्क में आना शामिल है, जो जायफल का दूसरा कोट है।

इन्हें ओक, चिनार, अंजीर के पेड़ और अनार की लकड़ी के साथ जलाया जाना चाहिए, और एक नए मिट्टी के बर्तन में रखा जाना चाहिए, जिसे समारोह के अंत में पाउडर में पीसकर एक शांत स्थान पर दफन किया जाना चाहिए। ताबीज को आसमानी नीले रेशम के एक थैले में लपेटा जाना चाहिए, उसी सामग्री के एक रिबन द्वारा छाती पर लटकाया जाना चाहिए, मोड़ा जाना चाहिए।

"बृहस्पति का तावीज़ पहनने वाले की ओर सभी की दया और सहानुभूति आकर्षित करता है। यह चिंताओं को दूर करता है, सम्माननीय उद्यमों का पक्षधर है, और सामाजिक स्थिति के अनुपात में कल्याण को बढ़ाता है। यह अप्रत्याशित दुर्घटनाओं और हिंसक मृत्यु के खतरों से सुरक्षा प्रदान करता है, जब जन्म कुंडली में शनि द्वारा इसे खतरा होता है। यह यकृत के रोगों, फेफड़ों की सूजन और रीढ़ की हड्डी के उस क्रूर रोग से मृत्यु से भी बचाता है, जिसे मध्यकाल में टैब्स डोर्सालिस कहा जाता है।"

शुक्र का तावीज़ शुद्ध और अच्छी तरह से पॉलिश किए गए तांबे की एक गोलाकार प्लेट से बना होना चाहिए। यह एक पदक के सामान्य आयामों का होना चाहिए, जो दोनों तरफ से पूरी तरह से पॉलिश किया गया हो। इसके अग्रभाग पर मैगी की वर्णमाला में अंकित अक्षर G अंकित होना चाहिए, और एक पेंटाग्राम में संलग्न होना चाहिए। छह-बिंदु वाले तारे के केंद्र में, पीछे की ओर एक कबूतर उकेरा जाना चाहिए, जिसके चारों ओर ग्रहीय जीनियस सुरोथ का नाम लिखने वाले अक्षर होने चाहिए।
इस ताबीज को शुक्रवार को बनाया जाना चाहिए, जब चंद्रमा वृषभ या कन्या राशि के पहले दस अंशों से गुज़र रहा हो, और जब वह ग्रह शनि और शुक्र से अच्छी तरह से प्रभावित हो। इसका अभिषेक एक नए मिट्टी के बर्तन में जैतून की लकड़ी के साथ जलाए गए बैंगनी और गुलाब से बने इत्र के धुएं के संपर्क में आने से होता है, जिसे ऑपरेशन के अंत में पीसकर पाउडर बना लेना चाहिए और

एकांत स्थान पर दबा देना चाहिए। ताबीज को अंत में हरे या गुलाबी रंग के रेशम के थैले में सिलना चाहिए, जिसे उसी सामग्री के एक बैंड द्वारा छाती पर बांधा जाना चाहिए, मोड़कर क्रॉस के आकार में बांधा जाना चाहिए।

शुक्र के ताबीज को पति और पत्नी के बीच प्रेम और सद्भाव के बंधन को मजबूत करने की असाधारण शक्ति से मान्यता प्राप्त है। यह इसे पहनने वालों को घृणा और द्वेष की भावना से दूर रखता है। यह महिलाओं को कैंसर नामक भयानक और घातक बीमारियों से बचाता है। यह पुरुषों और महिलाओं दोनों को मृत्यु के सभी खतरों से बचाता है, जिसके वे अनजाने में या जानबूझकर शिकार हो सकते हैं।

यह "जन्म कुंडली में दिखाई देने वाले दुर्भाग्यपूर्ण पूर्वाभासों को संतुलित करता है। इसका अंतिम और सबसे विलक्षण गुण दुश्मन की दुश्मनी को प्यार और भक्ति में बदलने की इसकी शक्ति है जो हर प्रलोभन के खिलाफ सबूत होगा, और यह एकमात्र शर्त पर टिका है कि ऐसे व्यक्ति को उस तरल पदार्थ का सेवन करने के लिए राजी किया जाना चाहिए जिसमें ताबीज को डुबोया गया हो।" शनि का ताबीज परिष्कृत और शुद्ध सीसे की एक गोलाकार प्लेट से बना होना चाहिए, जो एक साधारण पदक के आयामों का हो, जिसे विस्तृत रूप से पॉलिश किया गया हो। इसके अग्र भाग पर हीरे की नोक वाला औजार उकेरा जाना चाहिए जो इन सभी तावीज़ों में ज़रूरी है, एक पंचग्राम में सिकल की छवि।

इसके पिछले भाग पर बैल का सिर होना चाहिए, जो सोलोमन के तारे में घिरा हो, और रहस्यमय अक्षरों से घिरा हो जो मैगी की वर्णमाला में ग्रहीय जीनियस टेम्पा का नाम बनाते हैं। जिस व्यक्ति को यह तावीज़ पहनना है, उसे इसे खुद ही उकेरना चाहिए, बिना किसी गवाह के, और किसी को अपने भरोसे में लिए बिना। "इस ताबीज को शनिवार को बनाया जाना चाहिए जब चंद्रमा वृषभ या मकर राशि के पहले दस अंशों से गुजर रहा हो और शनि से अनुकूल दृष्टि रखता हो।

इसे फिटकरी, अस्सा-फ़सेटिडा, कैमोनी और सल्फर से बने इत्र के धुएं के संपर्क में लाकर पवित्र किया जाना चाहिए, जिसे सरू, राख के पेड़ की लकड़ी और काले हेलेबोर के स्प्रे के साथ एक नए मिट्टी के बर्तन में जलाया जाना चाहिए, जिसे प्रदर्शन के अंत में पाउडर में कम किया जाना चाहिए, और एक सुनसान जगह में दफन किया जाना चाहिए। ताबीज को, अंत में, काले रेशम के एक थैले में सिलना चाहिए और उसी सामग्री के एक रिबन के साथ छाती पर बांधा जाना चाहिए, एक क्रॉस के रूप में मोड़ा और बांधा जाना चाहिए। शनि के ताबीज को एक सुरक्षा कवच माना जाता था।

एपोप्लेक्सी और कैंसर से मृत्यु, हड्डियों में सड़न, क्षय रोग, जलोदर, पक्षाघात और गिरावट; यह एक गुप्त अपराध, जहर या घात द्वारा हिंसक मौत के खतरे के खिलाफ एक संरक्षक भी था। अगर युद्ध के समय सेना के प्रमुख को शनि के तावीज़ को ऐसी जगह दफनाना पड़े, जहाँ उसे डर था कि वह दुश्मन के हाथों में पड़ सकता है, तो तावीज़ की उपस्थिति द्वारा निर्धारित सीमा को विरोधी सेना द्वारा पार नहीं किया जा सकता था, जो निराशा में या एक दृढ़ हमले के सामने जल्दी से पीछे हट जाएगा। (सेरेमोनियल मैगी देखें।

348.तल्मूड, हिब्रू शब्द लामद से लिया गया है, जिसका अर्थ है सीखना; यहूदी नागरिक और विहित कानून की महान संहिता का नाम। इसे दो भागों में विभाजित किया गया है - मिश्ना और गेमारा; पहला भाग पाठ का गठन करता है और दूसरा एक टिप्पणी और पूरक है। लेकिन एक कानूनी संहिता का आधार होने के अलावा, यह यहूदी कविता और किंवदंती का संग्रह भी है। मिश्ना पेंटाटेच में निहित कानूनों का एक विकास है। इसे छह सेडारिम या आदेशों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक में कई ट्रैक्टेट हैं, जिन्हें फिर से पेराकिम या अध्यायों में विभाजित किया गया है।

सेडारिम हैं: (i) ज़ेरैम, जो कृषि से संबंधित है; (2) मोएड, त्योहारों और बलिदानों के साथ; (3) नशीम, महिलाओं के बारे में कानून के साथ; (4) नेज़ाकिन, नागरिक कानून के साथ; (5) क़ोदाश्तम, बलिदान कानून के साथ; और (6) तोहोरोथ या ताह, शुद्धिकरण के साथ। माना जाता है कि मिशना एज़्रा द्वारा दिया गया था और यह आंशिक रूप से जोशुआ, डेविड या सोलोमन का काम था, और मूल रूप से मूसा के समय में देवता द्वारा मौखिक रूप से संप्रेषित किया गया था।

इसके दो संस्करण हैं- यरूशलेम का तल्मूड, और बेबीलोन का तल्मूड; जिसमें बाद में उल्लेखित सेडारिम के अलावा सात अतिरिक्त ग्रंथ शामिल हैं जिन्हें अतिरिक्त-विहित माना जाता है। माना जाता है कि पहला चौथी शताब्दी के अंत में अंतिम रूप से संपादित किया गया था, और दूसरा बेबीलोन में सिरो अकादमी के अध्यक्ष रब्बी आशी द्वारा चौथी शताब्दी में कहीं संपादित किया गया था।

हालाँकि इससे पहले समय-समय पर संशोधित किया गया था, लेकिन दोनों संस्करण सकल परंपराओं के हस्तक्षेप के माध्यम से बहुत भ्रष्ट हो गए हैं। मिशना में रब्बी के निर्णयों को हेलाकोथ और पारंपरिक कथाओं को हग्गदाह कहा जाता है। तल्मूड की ब्रह्मांड विज्ञान की मान्यता है कि ब्रह्मांड का विकास

कई प्रलय के माध्यम से हुआ है: एक के बाद एक दुनिया तब तक नष्ट होती रही जब तक कि निर्माता ने वर्तमान ग्लोब नहीं बनाया और देखा कि यह अच्छा है।

इस विषय पर ड्यूश द्वारा लिखे गए अद्भुत ग्रंथ में, जो पहली बार 1867 में क्वार्टरली रिव्यू में छपा था, और जिसे उनके साहित्यिक अवशेषों में पुनर्मुद्रित किया गया है, निम्नलिखित अंश दिखाई देता है: - "सृजन कैसे हुआ, यह केवल अटकलों का विषय नहीं था। स्वर्गदूतों के सहयोग, जिनके अस्तित्व की पुष्टि शास्त्रों द्वारा की गई थी, और जिनका एक पूरा पदानुक्रम फ़ारसी प्रभावों के तहत बनाया गया था, को स्पष्ट रूप से नकार दिया गया था।

उनके निर्माण के दिन के बारे में चर्चा में, सभी ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि पहले कोई स्वर्गदूत नहीं थे, ताकि लोग यह न कहें कि माइकल ने दक्षिण में आकाश को फैलाया, और गेब्रियल ने उत्तर में।' तल्मूड में ग्नोस्टिक डेमियुर्गोस - दिव्य आत्मा और पदार्थ की दुनिया के बीच प्राचीन संबंध - का एक अलग पूर्वाभास मिलता है। प्लेटो के साथ विचार थे, फिलो के साथ लोगोस, कबालिस्टों के साथ * अज़िलुथ की दुनिया, जिसे ग्नोस्टिक्स ने अधिक जोरदार ढंग से ज्ञान (सोफी 1), या शक्ति (डुनामिस) कहा, और प्लॉटिनस ने नूस, जिसे तल्मूडिकल लेखक मेटाशन कहते हैं।

कैद के बाद के तल्मूड में, स्वर्गदूतों के बारे में बहुत कुछ है, जो फ़ारसी से उधार लिया गया है। महादूत या देवदूत राजकुमारों की संख्या सात है, और उनके हिब्रू नाम और कार्य उनके फ़ारसी प्रोटोटाइप के लगभग समान हैं। मंत्री स्वर्गदूतों के समूह भी हैं, फ़ारसी यक्षता, जिनके कार्य, संदेशवाहक होने के अलावा, दो गुना थे ईश्वर की स्तुति करना और मनुष्य के संरक्षक बनना। अपनी पहली क्षमता में वे प्रतिदिन ईश्वर की सांस द्वारा अग्नि की एक धारा से बनाए जाते हैं जो अपनी लहरों को अलौकिक सिंहासन के नीचे घुमाती है।

अपनी दूसरी क्षमता में, उनमें से दो हर आदमी के साथ होते हैं, और हर नए अच्छे काम के लिए मनुष्य को एक नया संरक्षक देवदूत मिलता है, जो हमेशा उसके कदमों पर नज़र रखता है। जब एक धर्मी व्यक्ति मर जाता है, तो स्वर्गदूतों की तीन सेनाएँ उससे मिलने के लिए स्वर्गीय युद्धक्षेत्र से उतरती हैं। एक कहता है (शास्त्र के शब्दों में), * वह शांति से जाएगा '; दूसरा तनाव उठाता है और कहता है, * जो धार्मिकता में चला है '; और तीसरा निष्कर्ष निकालता है, * वह शांति से आए और अपने बिस्तर पर आराम करे।

इसी तरह, जब दुष्ट व्यक्ति मर जाता है, तो दुष्ट स्वर्गदूतों की तीन सेनाएँ उसे ले जाने के लिए तैयार रहती हैं, लेकिन उनका संबोधन किसी भी तरह की

सांत्वना या प्रोत्साहन की भावना से नहीं होता है।" इस स्थान पर तल्मूड में निहित पारंपरिक विषय का सारांश देना असंभव होगा। यह कहना पर्याप्त है कि यह बहुत व्यापक है। कुछ अधिकारियों द्वारा यह माना गया है कि बहुत सी पारंपरिक कहानियों का एक जादुई आधार है, और उनमें जादुई रहस्य निहित हैं; लेकिन यह पूरी तरह से कांटे पर की गई व्याख्या पर निर्भर करता है, और विषय ऐसा है जिसके लिए यथासंभव गहन अध्ययन की आवश्यकता है।

349.तत्व योग**:** जिसका अर्थ है "श्वास का विज्ञान।" कुछ वर्ष पहले पंडित राम प्रसाद द्वारा संस्कृत से अनुवादित एक छोटी सी पुस्तक का शीर्षक। यहाँ जिस "श्वास" का उल्लेख किया गया है, वह ब्रह्म की जीवनदायी श्वास है, और इसमें प्रकृति के पाँच मूल सिद्धांत समाहित हैं, जो मनुष्य की सभी इंद्रियों के अनुरूप हैं। इन सिद्धांतों को तत्व कहते हैं, और इन्हीं से शरीर बना है।

माना जाता है कि तत्वों का ज्ञान अद्भुत शक्ति प्रदान करता है; और इस उद्देश्य से सभी कार्य ऐसे समय पर शुरू किए जाने चाहिए, जो शरीर में तत्वों की गतिविधियों के कारण अनुकूल माने जाते हैं। पुस्तक में योगाभ्यास की एक महत्वपूर्ण विधि दी गई है, जो निश्चित रूप से अद्भुत परिणाम सुनिश्चित करेगी।

350.टेलीपैथी**:** मानसिक घटनाओं की विभिन्न शाखाओं में से टेलीपैथी या विचार हस्तांतरण से ज़्यादा गंभीर ध्यान देने वाली कोई शाखा नहीं है। मस्तिष्क और मस्तिष्क के बीच सामान्य इंद्रिय-माध्यमों के अलावा अन्य माध्यमों से अंतर-संचार का विचार एक ऐसा सिद्धांत है जिस पर सबसे ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत है, न केवल इसलिए कि यह एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तथ्य के रूप में मान्यता के लिए एक दावेदार के रूप में अपने सरल पहलू में है, बल्कि इसलिए भी कि व्यावहारिक रूप से मानसिक घटनाओं का कोई ऐसा विभाग नहीं है जिस पर इसका कोई असर न हो।

एक उदाहरण लें- कुछ दशक पहले भूतों के बारे में तथाकथित 'तर्कवादी' दृष्टिकोण केवल यह था कि अलौकिक घटनाएँ मौजूद नहीं थीं, लेकिन अब एक टेलीपैथिक व्याख्या, कमोबेश अस्थायी रूप से, लगातार बढ़ती हुई बुद्धिमान राय के समूह द्वारा पेश की जाती है। ऐसे लोग हैं जो मानसिक घटनाओं की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए भी संतुष्ट हैं कि शुद्ध मनोविज्ञान उनके शोध के लिए पर्याप्त रूप से व्यापक क्षेत्र प्रदान करता है, और जो एक अज्ञात आध्यात्मिक दुनिया को शामिल करने के लिए इसकी सीमाओं का विस्तार करने से कतराते हैं जहाँ शोध सौ गुना अधिक कठिन हो जाता है।

ऐसे छात्रों के लिए टेलीपैथी का सिद्धांत अलौकिक के उस तत्व से बचने का एक स्पष्ट तरीका प्रदान करता है जिसका वे विरोध करते हैं, क्योंकि यह आम तौर पर माना जाता है कि विचार हस्तांतरण की व्याख्या की तलाश में यह एक भौतिक प्रक्रिया है जिसे अवश्य देखा जाना चाहिए। सर विलियम क्रुक्स के शब्दों में: "यह ज्ञात है कि विचार की क्रिया मस्तिष्क में कुछ आणविक आंदोलनों के साथ होती है, और यहाँ हमारे पास भौतिक कंपन हैं जो अपनी अत्यंत सूक्ष्मता से कार्य करने में सक्षम हैं।

व्यक्तिगत अणुओं पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, जबकि उनकी तीव्रता परमाणुओं की आंतरिक और बाह्य गति के करीब होती है।" इसलिए विचार कंपन के सिद्धांत को असंभव या यहां तक कि असंभाव्य बनाने के लिए कुछ भी नहीं है, हालांकि इसे साबित करने की कठिनाई को अभी भी दूर किया जाना है। हालांकि, हमें इस तथ्य से जूझना होगा कि कई मामलों में रिकॉर्ड पर सबसे ज्वलंत छापें दूरी से प्रेषित की गई हैं, इस प्रकार यह दर्शाता है कि छाप की स्पष्टता जरूरी नहीं कि दूरी बढ़ने के अनुपात में कम हो जाए।

इस मामले में हमें या तो यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि अन्य कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, जैसे कि छाप की बदलती तीव्रता, और बोधगम्य में संवेदनशीलता की बदलती डिग्री, या हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए, जैसा कि कुछ अधिकारियों ने किया है, कि टेलीपैथिक संचार एक दिमाग से दूसरे दिमाग में सीधे जाता है, दूरी की परवाह किए बिना, जैसे विचार दुनिया के विपरीत दिशा में उतनी ही आसानी से यात्रा कर सकता है जितनी आसानी से वह अगले कमरे में जा सकता है। अन्य अधिकारियों का दावा है कि विचार का संचरण किसी भी अन्य विमान से अलग है।

भौतिक प्रक्रिया, हालाँकि, चूँकि विचार की क्रिया का स्वयं एक भौतिक आधार होता है, इसलिए यह समझना कठिन है कि टेलीपैथी के मामले में अलौकिक व्याख्या क्यों आवश्यक समझी जानी चाहिए। पहले संबंध में यह कहा जा सकता है कि तुच्छ परिस्थितियों को निकट के द्रष्टा तक पहुँचाया जा सकता है, जबकि एक नियम के रूप में केवल अधिक तीव्र और हिंसक प्रभाव ही दूर से प्राप्त होते हैं। यह प्रश्न कि क्या टेलीपैथिक सिद्धांत विसरित है, और सभी दिशाओं में समान रूप से फैलता है, या क्या इसे सीधे एक व्यक्ति की ओर प्रक्षेपित किया जा सकता है, अभी भी एक परेशान करने वाला प्रश्न है।
यदि यह ईथर कंपन के रूप में हो, तो इसे विसरित मानना निश्चित रूप से आसान होगा। दूसरी ओर, व्यावहारिक अनुभव ने दिखाया है कि कई उदाहरणों में, दूर से कार्य करने पर भी, यह केवल एक या दो व्यक्तियों को प्रभावित करता है। हालाँकि, यह इस धारणा से स्वाभाविक रूप से समझाया जा सकता है कि

प्रत्येक प्रेषक को एक विशेष रिसीवर की आवश्यकता होती है - यानी, अपने आप से सहानुभूति रखने वाला मन।

लेकिन अभी तक कोई स्पष्टीकरण नहीं मिल पाया है, और सबसे ज़्यादा जो किया जा सकता है, वह है कि इस समय के लिए अपने निर्णय को स्थगित कर दिया जाए, क्योंकि यह जानते हुए कि इस तरह के संचार के तरीके की केवल संभावना या, ज़्यादा से ज़्यादा, संभावना ही साबित हुई है, और इसकी मशीनरी के बारे में अस्पष्ट अनुमान से परे कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। विचार हस्तांतरण का सिद्धांत कोई नया नहीं है।

गुरुत्वाकर्षण की तरह, यह ज्योतिष के प्राचीन विज्ञान की बेटी है, लेकिन जहाँ गुरुत्वाकर्षण एक पूर्ण विकसित तथ्य है, जिसे विज्ञान में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है, वहीं टेलीपैथी, अपने वैज्ञानिक पहलू में, अभी भी एक शिशु है, और वह भी कमज़ोर। हालाँकि, यह समझना मुश्किल नहीं है कि दोनों ज्योतिष से कैसे निकले, न ही उनके बीच के संबंध का पता लगाना। प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों ने माना था कि तारे एक अदृश्य प्रभाव उत्सर्जित करते हैं जो उन्हें अपने मार्ग में एक साथ रखता है, और जो हमारे ग्रह पर मनुष्यों और घटनाओं को प्रभावित करता है, जो बदले में पृथ्वी और उसके निवासियों से कुछ सूक्ष्म उत्सर्जन प्राप्त करता है।

इस विचार से यह मान लेना एक कदम ही था कि एक उज्ज्वल प्रभाव, चाहे चुंबकीय हो या अन्यथा, एक इंसान से दूसरे इंसान तक पहुंचता है। सूक्ष्म प्रभाव का सिद्धांत पैरासेल्सस और उनके कीमियागर उत्तराधिकारियों द्वारा सर आइज़ैक न्यूटन के युग तक साझा किया गया था, जिनकी गुरुत्वाकर्षण के नियम की खोज ने ज्योतिष के युग को समाप्त कर दिया, चुंबकीय प्रभाव की अवधारणा को मेसमर और उनके अनुयायियों के अभ्यासों द्वारा रंग दिया गया था, जिन्होंने ** चुंबकीय द्रव को सम्मोहन की घटना का श्रेय दिया था।

रहस्यमय और अकथनीय बल के बीच समानता जो दुनिया को एक साथ बांधती है और मन को मन से जोड़ने वाले सूक्ष्म प्रभाव के बीच पर्याप्त रूप से स्पष्ट है, लेकिन कठिनाई यह है कि गुरुत्वाकर्षण को आसानी से प्रदर्शित किया जा सकता है, और कभी भी कुछ निश्चित परिणाम देने के लिए प्रेरित नहीं करता है, टेलीपैथी में प्रयोग केवल सबसे अधिक अनियमित तरीके से घटनाओं को प्रकट करते हैं और सबसे अनुकूल परिस्थितियों में भी सफल होने के लिए उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता है। फिर भी समय-समय पर किए गए ऐसे व्यवस्थित प्रयोगों ने टेलीपैथी में प्रदर्शित रुचि को उचित ठहराया है।

विज्ञान, जब इतने लंबे समय तक खुद को अलग रखता था सम्मोहन से मुक्त होने के बाद, वह अपनी गलती को नए संदर्भ में दोहराना नहीं चाहती थी। 1882 में सोसाइटी फॉर साइकिकल रिसर्च (q.v.) अस्तित्व में आई, जिसके सदस्यों में देश के कुछ सबसे प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल थे। इसका उद्देश्य तथाकथित "अलौकिक" घटनाओं की व्याख्या करना था जो बहुत लोकप्रिय रुचि और जिज्ञासा को उत्तेजित कर रही थीं; और इनमें सबसे प्रमुख थी विचार हस्तांतरण की घटना! या, जैसा कि बाद में इसे टेलीपैथी नाम दिया गया।

अपने विषय को पूरी तरह से वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखते हुए, साक्ष्य को संभालने में प्रशिक्षित, और खुले और निष्पक्ष दिमाग से सत्य की खोज करने का संकल्प लेते हुए, उन्होंने मानसिक घटनाओं के अध्ययन को एक शुद्ध और अधिक सम्मानजनक माहौल में लाने के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने सामान्य रूप से मानव स्वभाव की अविश्वसनीयता को पहचाना, और धोखाधड़ी की व्यापकता को भी पहचाना, जहाँ कोई वस्तु नहीं थी।

प्राप्त करने के लिए केवल एक विकृत घमंड की संतुष्टि थी, और उनके प्रयोग सबसे कठोर परिस्थितियों में किए गए थे, जिसमें सचेत या अचेतन धोखे के खिलाफ हर एहतियात बरती गई थी। प्रयोगात्मक विचार हस्तांतरण से प्राप्त सबसे मूल्यवान साक्ष्यों में से एक वह था जो प्रोफेसर और श्रीमती सिडविक (q.v.) द्वारा 1889-01 में ब्राइटन में उनके प्रयोगों से प्राप्त किया गया था। इस श्रृंखला में, अनुभवकर्ताओं - क्लर्कों और दुकान सहायकों - को सम्मोहित किया गया था। कभी-कभी उन्हें एक खाली कार्ड पर एजेंट द्वारा चुनी गई छवि या चित्र की कल्पना करने के लिए कहा जाता था।

अन्य समय में एजेंट 10 से 90 तक क्रमांकित कार्डों के बंडल में से एक को चुनता था, और प्रज्ञापक को चुने गए कार्ड पर "संख्या" बताने की आवश्यकता होती थी, जो आश्चर्यजनक रूप से कई मामलों में सही ढंग से किया जाता था। हम पाते हैं, काफी उत्सुकता से, कि परिणाम एजेंट और प्रज्ञापक के बीच निकट या दूर होने के अनुपात में भिन्न होते थे, और दोनों के बीच एक दरवाजे या यहां तक कि एक पर्दे के हस्तक्षेप से भौतिक रूप से प्रभावित होते थे, लेकिन इसे प्रज्ञापक की ओर से आत्मविश्वास की कमी, या थकान या ऊब जैसे शारीरिक कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था, न कि टेलीपैथिक सिद्धांत के सीमित दायरे के लिए। कुल मिलाकर हम यह सोचने में उचित हैं कि अकेले संयोग सम्मोहित विषय द्वारा दिए गए सही उत्तरों की संख्या के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

सदी के अंत में कोपेनहेगन के श्री हैनसेन और लेहमैन द्वारा इन प्रयोगों की आलोचना की गई थी, जिनका मानना था कि "अवचेतन फुसफुसाहट" के रूप में जानी जाने वाली घटना, एक साथ बोधक की ओर से हाइपरस्थीसिया के साथ, सिडविक द्वारा प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत करने के लिए पर्याप्त होगा। यह सुझाया गया स्पष्टीकरण, हालांकि यह पूरे क्षेत्र को कवर नहीं करता है, हमारे विचार के लिए कुछ हद तक सही है।

यदि सम्मोहन धारणाओं के इतने अद्भुत परिष्कार को प्रकट करता है, तो क्या हाइपरस्थीसिया के कुछ तत्व सामान्य व्यक्ति की अवचेतना में नहीं रह सकते हैं? यदि सपनों में लगभग सभी के अनुभव में, निगमन के ऐसे विचित्र उदाहरण शामिल हैं, तो क्या मानसिक अंतर्धारा जागृत क्षणों में तर्क की एक ऐसी प्रक्रिया का अनुसरण नहीं कर सकती है जिसके बारे में उच्चतर चेतना कुछ भी नहीं जानती है? ऐसा हो सकता है, और ऐसा होता भी है।

वह "दूसरा स्व", जो कभी भी उतना पृष्ठभूमि में नहीं होता जितना हम कल्पना करते हैं, वह हजारों चीजें देखता और सुनता है जिनके बारे में हम अचेतन हैं, और जो सपनों में सतह पर आती हैं, यह बहुत बाद में हो सकता है; और यह मानने का कोई कारण नहीं है कि यह चेतना के स्थूल क्षेत्र में देखे जाने के लिए बहुत कम संकेतों को देख और सुन नहीं सकता है, और इस प्रकार "विचार हस्तांतरण" के कुछ मामलों के लिए जिम्मेदार है।

दूसरी ओर; हमारे पास टेलीपैथी के ऐसे सबूत हैं जो एक दूरी पर काम करते हैं जहाँ अवचेतन फुसफुसाहट और हाइपरस्थीसिया स्पष्ट रूप से सवाल से बाहर हैं। हालाँकि हाइपरस्थीसिया को टेलीपैथी के कुछ - या, वास्तव में, कई - उदाहरणों में एक प्रशंसनीय स्पष्टीकरण के रूप में आगे बढ़ाया जा सकता है, इसे पूर्ण स्पष्टीकरण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है जब तक कि यह सभी मामलों को कवर न करे, और यह निश्चित रूप से नहीं है।

इसलिए हमें स्पष्टीकरण के लिए कहीं और देखना चाहिए, हालाँकि यह अनिच्छा के बिना नहीं है कि हम एक सिद्धांत को छोड़ दें जो ज्ञात स्थितियों के लिए इतनी सराहनीय रूप से अनुकूलित है कि टेलीपैथी को चीजों की योजना में वायरलेस टेलीग्राफी के रूप में स्वाभाविक रूप से फिट करने के लिए स्थापित शारीरिक कानूनों को शायद ही कभी खींचने की आवश्यकता होती है। * जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, मानसिक घटनाओं की व्यावहारिक रूप से हर शाखा टेलीपैथी के वैज्ञानिक प्रमाण से महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होगी। संयोग से देखे गए सपनों को, अधिकांश मामलों में, आसानी से समझाया जा सकता है। क्रिस्टल-गेजर के दर्शन, माध्यम के ट्रान्स-उच्चारण, सामान्य व्यक्ति को

मिलने वाले कभी-कभार होने वाले भूत-प्रेतों के साथ-साथ उसी तरह से समझाए जा सकते हैं।

हालाँकि, मृतकों के भूत-प्रेत खुद को इतनी आसानी से टेलीपैथिक व्याख्या के लिए प्रस्तुत नहीं करते हैं। यदि वे वास्तविक भूत-प्रेत हैं, और अर्थहीन मतिभ्रम नहीं हैं, तो हमें या तो यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रेत को निर्देशित करने वाला आवेग मृत एजेंट, या यह कि यह तब प्रसारित हुआ जब वह अभी जीवित था। बाद के मामले में हम एक कठिनाई का सामना कर रहे हैं - एजेंट की मृत्यु और दृष्टि के प्रकट होने के बीच बीतने वाले समय का हिसाब कैसे लगाया जाए। इस तरह से बने हुए रस को पाटने के लिए श्री पोडमोर (ओ.वी.) ने टेलीपैथिक मतिभ्रम पर अपने काम में, अव्यक्त छापों का अपना सिद्धांत तैयार किया है, जो सफलतापूर्वक कठिनाई को दूर करता है।

श्री पोडमोर के अनुसार, एक मन से दूसरे मन में प्रेषित छापें विकास के लिए अनुकूल अवसर की प्रतीक्षा में काफी समय तक अव्यक्त रह सकती हैं। इस प्रकार किसी ऐसे व्यक्ति का भूत जो कुछ समय से मृत है, उसके जीवनकाल में प्रसारित किसी छाप के परिणामस्वरूप हो सकता है, जिसे देखने वाले ने तब तक बनाए रखा है, जब तक कि विचारों का एक संयोग उसे मतिभ्रम के रूप में चेतना के ऊपरी स्तर पर नहीं ले आता। जाहिर है कि अव्यक्त छापों का सिद्धांत भूतों के अलावा अन्य घटनाओं पर भी लागू हो सकता है, और उन अंतरालों को भरने का काम कर सकता है जो अन्यथा खाली रह सकते हैं।

उन्नीसवीं सदी के अंतिम चतुर्थांश में टेलीपैथी पर की गई आलोचनाओं के लहजे की तुलना इस विषय पर बाद में की गई टिप्पणियों से करना दिलचस्प है। विज्ञान अब मानसिक घटनाओं में अपने शोध को आगे बढ़ाने में शर्मिंदा नहीं है; विचार हस्तांतरण अब बौद्धिक लोगों को मनोविज्ञान के एक संदिग्ध मार्ग के रूप में नहीं दिखता है, और यह परिवर्तन तर्क देता है कि कम से कम मामले की सच्चाई तक पहुँचने का एक निष्पक्ष प्रयास किया जाएगा।

351.टेम्पोन-टेलोरल्स**-** मृतकों का जहाज**:** बोर्नियो के दयाकों के बीच मृतकों का जहाज, वह जहाज जो परलोक की खोज में दिवंगत आत्माओं को ले जाता है, आम तौर पर एक पक्षी, गैंडे के सींगबिल के आकार का होता है। अग्नि-समुद्र के माध्यम से अपनी यात्रा पर आत्माओं के साथ वे सभी सामान होते हैं जो मृतकों के त्रिवा या दावत में रखे गए हैं, और वे सभी दास जो उस उद्देश्य के लिए मारे गए हैं। अग्निमय समुद्र में कुछ उतार-चढ़ाव के बाद, मृतकों का जहाज, टेम्पोन-टेलन के साथ, धन्य के सुनहरे तटों पर पहुँचता है।

352.तेफ्रामनेई: भविष्यवाणी की एक विधा जिसमें बलि के शिकार लोगों को भस्म करने वाली अग्नि की राख का उपयोग किया जाता है।

353.जादूगर में विश्वास।प्रकृति आत्माओं में विश्वास: - इस कार्य का दायरा पूरी तरह से पौराणिक कथाओं के विचार से परे है, अर्थात यह कि कई मानवीय धार्मिक प्रणालियों के बड़े देवताओं को कई विशेष परिस्थितियों को छोड़कर कोई उपचार नहीं मिलता है। लेकिन पौराणिक कथाओं के छोटे पात्र, जो मनुष्य के साथ सीधे संपर्क में आते हैं और जादुई अभ्यास में उसकी सहायता करते हैं, या उसके साथ जुड़े होते हैं, उन्हें विशेष और अलग नोटिस मिलता है।

इस प्रकार ड्यूगर, या बौने ट्रोल, उंडिन, निक्सी और टेउटोनिक लोक-कथाओं के सभी अनगिनत मेजबान को उनके अलग-अलग शीर्षकों के तहत संदर्भित किया जाता है, और हमें यहां केवल उनके जादुई पहलू में टेउटोनिक मनुष्य के साथ उनके सामान्य संबंध पर विचार करना है। उनमें उनका विश्वास स्पष्ट रूप से एक एनिमिस्टिक चरित्र का था। बौने और ट्रोल पहाड़ों, गुफाओं और अंडरवर्ल्ड की खाइयों में रहते थे।

निक्सी और उंडिन झीलों, नदियों, तालाबों और समुद्र के इनलेट में रहते थे। सामान्य तौर पर ये मनुष्य के अनुकूल थे, लेकिन उसके साथ कभी-कभार होने वाले संपर्क से ज़्यादा पर आपत्ति जताते थे। हालाँकि ये अलौकिक प्राणियों की श्रेणी से नहीं आते थे जो जादुई आह्वान पर मनुष्य के आदेशों का पालन करते हैं, लेकिन ये, खास तौर पर बौने, अक्सर कला-जादू में उसके प्रशिक्षक के रूप में काम करते थे और इसके कई उदाहरण कहानियों और रोमांस में मिलते हैं।

354.जादू-टोना: - जादू-टोना, इसके साथ शैतानी व्यवहार उत्तरी ट्यूटन में जर्मनी की तुलना में कहीं ज़्यादा प्रचलित था, और इस परिस्थिति का श्रेय फिन्स (q.v.) से उनकी निकटता को दिया जाता है, जो अपनी जादुई प्रवृत्तियों के लिए कुख्यात जाति है। नॉर्वे, ऑर्कनी और शेटलैंड में, हम पाते हैं कि जादू-टोना लगभग पूरी तरह से फिनिश जाति की महिलाओं के हाथों में होता था, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि फिन्स ने स्कैंडिनेविया के ट्यूटन पर एक विजित जाति के पौराणिक प्रभाव का प्रयोग किया, यानी, उन्होंने अपने विजेताओं में एक विदेशी और अपरिचित धर्म और अनुष्ठान द्वारा प्रेरित आतंक का पूरा फायदा उठाया, जिसमें बड़े पैमाने पर जादुई तत्व शामिल थे।

ट्यूटनिक जादू टोने की मुख्य मशीनरी तूफान उठाना, रस्सी के गाँठों को बेचना, प्रत्येक गाँठ हवा का प्रतिनिधित्व करती है, भविष्यवाणी और भविष्यवाणी, अदृश्यता प्राप्त करना, और ऐसे जादुई अभ्यास जो आमतौर पर अर्ध-बर्बरता की

स्थिति के साथ होते हैं। स्कॉटलैंड के उत्तर में ट्यूटनिक और सेल्टिक जादुई प्रणालियों के बारे में कहा जा सकता है कि वे आपस में मिल गए और मिल गए, लेकिन आपस में टकराए नहीं, क्योंकि उनके कई समानताएं उनके मतभेदों से अधिक थीं।

चूंकि समुद्र लोगों का तत्व था, इसलिए हम इसे उत्तरी ट्यूटन्स की चुड़ैल का मुख्य तत्व पाते हैं। इस प्रकार हम फ्रिथजॉफ की गाथा में पाते हैं, दो समुद्री चुड़ैल हेडे और हैम तूफान पर सवार हैं और हेल्गी द्वारा एक तूफान उठाने के लिए भेजा गया है जो फ्रिथजॉफ को डुबो देगा, और एक भालू और एक तूफानी चील का रूप ले लेगा। ग्वेउर द स्ट्रॉन्ग की गाथा में हम एक चुड़ैल-पत्नी, थुरिड को एक जादुई लॉग भेजते हुए पाते हैं जो ग्रेटिर के द्वीप पर आना चाहिए, और जो उसके विनाश का कारण बनना चाहिए।

जानवरों का परिवर्तन ट्यूटनिक जादू और जादू टोना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शुरुआती जर्मनी में चुड़ैल (हेक्से) एक पिशाच भी थी।

355.विचार-पठन**:** यह शब्द कुछ हद तक स्पष्ट विचार-हस्तांतरण के विभिन्न रूपों के लिए लागू होता है, यहां तक कि जहां इस्तेमाल की जाने वाली विधि मांसपेशियों को पढ़ना या वास्तविक धोखाधड़ी है। इसे टेलीपैथी के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि, हालांकि दोनों शब्दों को कभी-कभी समानार्थी रूप से उपयोग किया जाता है, बाद वाला एक मन की दूसरे पर सीधी कार्रवाई को दर्शाता है, जो सामान्य इंद्रिय-चैनलों से स्वतंत्र है, जबकि "विचार-पठन" शब्द में ऐसा कोई प्रतिबंध नहीं है।

शुरुआती समय में, जब उन्माद के विस्फोटों को राक्षसी कब्जे के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था, हम पाते हैं कि उन्मादियों को विचारों को पढ़ने की शक्ति का श्रेय दिया जाता है; चुड़ैलों को उसी क्षमता से संपन्न माना जाता था; पैरासेल्सस और शुरुआती चुंबकत्ववादियों ने इसके अस्तित्व को मान्यता दी। अध्यात्मवाद के आगमन ने विचार-पठन को एक नया प्रोत्साहन दिया।

अब आत्माएँ ही थीं जो बैठने वालों के विचारों को पढ़ती थीं और उन्हें थपकी और मेज पलटने के साथ जवाब देती थीं। हाल ही तक, हालांकि, विचार-पठन को या तो गूढ़ विद्या या धोखाधड़ी के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। न केवल "ईथर कंपन" सिद्धांत के बारे में सोचा नहीं गया था, बल्कि हाइपरस्थीसिया और "अवचेतन फुसफुसाहट" की घटनाओं को विचार-पठन पर उनके प्रभाव में बहुत अपूर्ण रूप से समझा गया था। फिर भी यह संभव है कि इनमें से अंतिम ने कई

मामलों में संतोषजनक स्पष्टीकरण दिया हो, खासकर जब विषय मंत्रमुग्ध था। पेशेवर विचार-पाठक जो सार्वजनिक मंचों पर प्रदर्शन करते थे।

356.ह्रासिलस **:** (ज्योतिष शास्त्र देखें।) तिब्बत: इस देश में, जो बौद्ध धर्म का गढ़ है, सभी अंधविश्वास राष्ट्रीय धर्म के इर्द-गिर्द घूमते हैं, जिसने उसी समय आदिवासी मान्यताओं और दानव विद्या को भी अपने में समाहित कर लिया है। शायद कहीं और बौद्ध धर्म के मूल के इर्द-गिर्द शुद्ध अंधविश्वास की इतनी बड़ी मात्रा नहीं जमी है, - जिसके शुद्ध सिद्धांतों को तिब्बतियों के हिंदू विजेताओं ने देश के हुननिश आदिवासियों के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त पाया, जो बौद्ध धर्म के आगमन से पहले धर्म के अमीनिस्टिक चरण में थे।

इसे पुनर्जीवित होने दिया गया और अनुष्ठान और समारोह, मंत्र और जादू, उसी प्रकृति के, जिनकी बुद्ध ने इतनी कड़ी निंदा की थी, तिब्बत में दर्शन के इर्द-गिर्द जल्दी ही एकत्रित हो गए। इसी से तंत्र प्रणाली का उदय हुआ, जो लगभग पूरी तरह से जादुई है। इसकी स्थापना पेशावर के एक भिक्षु असंग ने की थी, जिन्होंने छठी शताब्दी ई. में इसका धर्मग्रंथ योगाचार भूमि शास्त्र लिखा था।

अपने पंथ को तत्कालीन प्रचलित बौद्ध धर्म की निकृष्ट प्रणाली पर आधारित करते हुए असंग ने निचले बौद्ध स्वर्ग में कई शैव शैतान-देवताओं और देवियों को स्थापित करके इसे स्थानीय आवश्यकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित किया। उन्होंने इन्हें बुद्ध के अधीन कर दिया। उनके धर्म को तिब्बत की बर्बर जनजातियों ने जल्दी ही अपना लिया, जिन्होंने इस नए धर्म के देवताओं के लिए आसानी से बलिदान दिया। बहुत स्वाभाविक रूप से उन्होंने इसके जादुई पक्ष को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया, उनका मुख्य उद्देश्य बोले गए मंत्रों और शक्तिशाली शब्दों के माध्यम से अलौकिक शक्ति प्राप्त करना था।

नए धर्म के संबंध में बहुत अधिक साहित्य सामने आया, जिस पर शुद्ध बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने तीखी टिप्पणी की है कि यह केवल बर्बर जादू-टोना से अधिक या कम कुछ नहीं है। बेशक, लामाओं के भिक्षु वर्ग के लिए तंत्र प्रणाली को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ करना असंभव था, लेकिन चौदहवीं शताब्दी के मध्य में त्सोंगकापा ने बिना किसी हिचकिचाहट के पूरी प्रणाली की निंदा की।

लामाओं के पास बौद्ध धर्म का एक गूढ़ रूप था और है, जिसका लोगों की तंत्र प्रणाली से बहुत कम समानता है, लेकिन हम उन्हें त्योहारों और अन्य जगहों पर इस हद तक अडिग पाते हैं कि वे इस धर्म के विभिन्न शैतानों और राक्षसों का प्रतिनिधित्व करते हैं। साहित्य के रूप में, तंत्रों को पुराणों का बाद का विकास माना जा सकता है, लेकिन वे किसी भी काव्यात्मक मूल्य के नहीं हैं। उन्हें

शाक्तों, या काली, दुर्गा या शिव की पत्नी पूर्वी, या किसी अन्य रचनात्मक एजेंसी के उपासकों द्वारा सुसमाचार माना जाता है।

वे जादुई प्रदर्शनों और रहस्यमय अनुष्ठानों से भरे हुए हैं - जिनमें से बहुत से काफी अवर्णनीय चरित्र के हैं। वे आमतौर पर शिव और उनकी पत्नी के बीच संवाद का रूप लेते हैं। मूलतः चौसठ तंत्र थे, लेकिन अभी तक कोई संतोषजनक विद्वत्तापूर्ण परीक्षण नहीं किया गया है.

357.ट्रान्स**:** एक असामान्य अवस्था, जो या तो स्वतःस्फूर्त या प्रेरित होती है, जो सामान्य नींद की अवस्था से कुछ समानता रखती है, लेकिन कुछ विशेष विशेषताओं में उससे भिन्न होती है। यह शब्द कई तरह की रोग संबंधी स्थितियों के लिए शिथिल रूप से लागू होता है - जैसे, सम्मोहन, परमानंद, कैटेलेप्सी, सोमनाम्बुलिज्म, हिस्टीरिया के कुछ रूप और मध्यमवादी ट्रान्स।

कभी-कभी, कैटेलेप्सी की तरह, महत्वपूर्ण कार्यों का आंशिक निलंबन होता है; आम तौर पर, दर्द के प्रति असंवेदनशीलता होती है और इंद्रियों पर लागू किसी भी उत्तेजना के प्रति; जबकि ट्रान्स की विशिष्ट विशेषता यह है कि विषय चेतना बनाए रखता है और बुद्धिमत्ता का सबूत देता है, या तो उसकी अपनी सामान्य बुद्धिमत्ता या, कब्जे और प्रतिरूपण के मामलों में, कुछ विदेशी बुद्धिमत्ता। सम्मोहन में, यद्यपि व्यक्ति अपने शरीर पर लागू संवेदी उत्तेजनाओं के प्रति उदासीन होता है, लेकिन सम्मोहनकर्ता के शरीर पर लागू ऐसी उत्तेजनाओं के प्रति वह एक अजीब संवेदनशीलता प्रदर्शित करता है। (देखें संवेदनाओं का समुदाय।) परमानंद में, जो अक्सर मतिभ्रम के साथ संबद्ध होता है, व्यक्ति बाहरी दुनिया के प्रति बहरा और अंधा होता है।

पहले यह संकेत करने के लिए माना जाता था कि परमानंद की आत्मा समय में दूर किसी महान घटना या आकाशीय क्षेत्र से किसी व्यक्ति या दृश्य को देख रही थी, आजकल ऐसी स्थिति किसी विशेष मानसिक छवि पर तीव्र और निरंतर भावनात्मक एकाग्रता द्वारा लाई गई मानी जाती है, जिसके माध्यम से मतिभ्रम को प्रेरित किया जा सकता है। * माध्यमवादी ट्रान्स को सम्मोहन के साथ एक समानता के रूप में पहचाना जाता है, क्योंकि सम्मोहन ट्रान्स, अक्सर प्रेरित, धीरे-धीरे सहज हो सकता है, जब यह प्रदर्शित करता है।

अध्यात्मवादियों के बीच, "ट्रांस" को उत्कृष्ट माना जाता है, और वे इस शब्द को किसी भी मामले में लागू करने पर आपत्ति करते हैं, जहाँ आत्मा के "कब्ज़" होने का कोई संकेत नहीं है। मंत्रमुग्ध माध्यम - जो अपनी इच्छा से इस अवस्था को उत्पन्न करने में सक्षम लगता है - अक्सर विशेष इंद्रियों (हाइपरस्थीसिया) और

यहाँ तक कि बौद्धिक क्षमताओं की स्मृति (हाइपरमेसिया) का उत्थान प्रदर्शित करता है।

स्वचालित लेखन और कथन आम तौर पर ट्रान्स अवस्था में उत्पन्न होते हैं, और अक्सर ऐसे ज्ञान को प्रदर्शित करते हैं, जिसके बारे में माध्यम को सामान्य रूप से कुछ भी पता नहीं होता है, या जो, कुछ अधिकारियों के अनुसार, टेलीपैथी का प्रमाण देता है। श्रीमती पाइपर के ट्रान्स कथन ऐसे ही हैं, जिनकी स्वचालित घटनाओं ने हाल के वर्षों में ब्रिटेन और महाद्वीप दोनों में विज्ञान के कई लोगों के लिए शोध के लिए एक विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया है।

स्वाभाविक रूप से, इन घटनाओं और सभी ट्रान्स माध्यमों को अध्यात्मवादियों द्वारा देह रहित बुद्धि की एजेंसी के रूप में संदर्भित किया जाता है - मृतकों की आत्माएँ - जो माध्यम के भौतिक जीव के माध्यम से कार्य करती हैं, एक धारणा जो राक्षसी कब्जे के पुराने विचार के समान है, जिसे सहज ट्रान्स के रूप में संदर्भित किया गया था। इसके अलावा, ट्रान्स संदेश स्वयं मृत व्यक्तियों की आत्माओं से आने का दावा करते हैं और ऐसे कई लोग हैं जो "बुद्धिमत्ता" के जोरदार दावे पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं देखते हैं, खासकर जब उस दावे को मृतक मित्र या रिश्तेदार की आवाज़, उपस्थिति और ज्ञात विचारों के सटीक प्रतिनिधित्व द्वारा पूरक किया जाता है, जिसकी आत्मा होने का दावा किया जाता है।

इस तरह के ट्रान्स प्रतिरूपण उस साक्ष्य का एक बड़ा हिस्सा प्रदान करते हैं जिस पर अध्यात्मवाद की संरचना टिकी हुई है। हालाँकि, ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे पता चले कि मृतक के बारे में इस तरह से पुनरुत्पादित जानकारी सामान्य तरीकों से या, अधिक से अधिक, बैठे लोगों के दिमाग से टेलीपैथी रूप से प्राप्त नहीं की गई हो।

358.प्रशिक्षु व्यक्तित्व**:** माध्यम के आत्मा नियंत्रण से आने वाले ट्रान्स संदेश आमतौर पर एक बहुत ही निश्चित व्यक्तित्व को प्रकट नहीं करते हैं। नियंत्रण माध्यम और बैठने वालों के विचारों और राय को दर्शाता है, उनके पास बहुत कम ज्ञान होता है जो उनके पास नहीं होता है, और आम तौर पर कुछ हद तक रंगहीन प्राणी होता है। फिर भी अक्सर एक ट्रान्स माध्यम को एक अलग, प्रतिष्ठित व्यक्तित्व की आत्मा द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जिसकी शिक्षा और संस्कृति माध्यम की तुलना में बहुत उच्च स्तर पर होती है, और जिसके विचार और राय बिल्कुल स्वतंत्र होती हैं। ऐसी आत्माओं को आम तौर पर अलग-अलग नाम दिए जाते हैं।

वे अक्सर अन्य नियंत्रणों के साथ वैकल्पिक रूप से माध्यम को नियंत्रित करते हैं। दूसरी ओर, माध्यम के पास आम तौर पर इनमें से एक या अधिक आत्माओं का एकाधिकार होता है, हालांकि कभी-कभी एक नियंत्रण कई माध्यमों द्वारा साझा किया जा सकता है। जिन लोगों को न्यायोचित रूप से माध्यमवादी बिरादरी की आम संपत्ति माना जा सकता है, उनमें कुछ महापुरुषों की आत्माएँ शामिल हैं - वर्जिल, सुकरात, शेक्सपियर, मिल्टन, बेंजामिन फ्रैंकलिन, विक्टर ह्यूगो, स्वीडनबॉर्ग, इत्यादि।

उनके नियंत्रण के माध्यम से दिए गए संदेश शायद ही कभी उनके जीवनकाल में लिखे गए किसी संदेश से मिलते-जुलते हों। इन महापुरुषों को उनके नाम पर दिए गए कमज़ोर संदेशों के लिए ज़िम्मेदार ठहराना वाकई हास्यास्पद होगा। लेकिन ये आत्माएँ आती-जाती रहती हैं; उन्हें ट्रान्स व्यक्तित्व कहना शायद ही सही हो। बाद के वर्ग में सबसे प्रसिद्ध आत्माएँ वे हैं जिन्होंने दिवंगत श्री स्टैनटन मूसा को नियंत्रित करने का दावा किया था - इम्परेटर, रेक्टर, मेंटर, प्रूडेंस और अन्य। इन नियंत्रणों के वास्तविक नाम क्या हो सकते हैं, यह ज्ञात नहीं है, क्योंकि श्री मूसा ने अपने कुछ सबसे अंतरंग मित्रों को ही रहस्य बताया था।

हाल के वर्षों में श्रीमती पाइपर के नियंत्रण में इम्परेटर और रेक्टर शामिल थे, और वास्तव में उनके स्वचालित प्रवचन का अधिकांश हिस्सा सीधे संचार करने वाली आत्माओं से नहीं आता था, बल्कि उनके द्वारा रेक्टर को निर्देशित किया जाता था। हालांकि, सर ओलिवर लॉज और अन्य अधिकारियों द्वारा यह सुझाव दिया गया है कि श्रीमती पाइपर के नियंत्रण स्टैनटन मूसा के समान नहीं हैं, जिनके द्वारा प्रसिद्ध स्पिरिट टीचिंग्स को उनके हाथ से लिखा गया था, लेकिन वे केवल एक ही हैं।

नकाबपोश। लेकिन श्रीमती पाइपर के पास कई दिलचस्प ट्रान्स व्यक्तित्व हैं, बिना किसी से उधार लिए। उनके शुरुआती नियंत्रणों में से एक सेबेस्टियन बाख थे, लेकिन जल्द ही उन्होंने खुद को "डॉ। फ़िनुइट" कहने वाले एक आत्मा को जगह दी, जिसने काफी समय तक शासन किया, लेकिन बदले में जॉर्ज पेलहम को जगह दी - "जी.पी." पेलहम एक युवा लेखक और पत्रकार थे, जिनकी 1892 में अचानक मृत्यु हो गई।

अपनी मृत्यु के तुरंत बाद उन्होंने श्रीमती पाइपर को नियंत्रित करने का दावा किया, और अपनी पहचान के कई शानदार सबूत दिए। उन्होंने लगातार पेलहम के मामलों के बारे में गहन जानकारी के साथ उल्लेख किया, उनके दोस्तों को पहचाना, और प्रत्येक का उचित स्वागत किया। ऐसा कहा जाता है कि एक बार

भी उन्होंने किसी परिचित को पहचानने या किसी ऐसे व्यक्ति को बधाई देने में चूक नहीं की, जिसे वे नहीं जानते थे।

पेलहम के कई पुराने दोस्तों ने उनमें वह देखने में संकोच नहीं किया, जो वे होने का दावा करते थे। केवल एक अवसर पर, जब उनसे किसी विशेष उद्यम में उनके साथ जुड़े दो व्यक्तियों के नाम पूछे गए, तो "जी.पी." ने यह कहते हुए मना कर दिया कि चूंकि वहां एक व्यक्ति मौजूद था जो उन नामों को जानता था, इसलिए उनका उल्लेख टेलीपैथी के रूप में माना जाएगा। हालांकि, बाद में, उन्होंने नाम बताए - गलत तरीके से। जब "जी.पी." ने श्रीमती पाइपर के नियंत्रण में मुख्य भूमिका निभाना बंद कर दिया, तो उनकी जगह रेक्टर और इम्परेटर ने ले ली, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है।

एक अन्य प्रसिद्ध माध्यम, श्रीमती थॉम्पसन, का मुख्य नियंत्रण "नेली" था, जो उनकी एक बेटी थी जो बचपन में ही मर गई थी; श्रीमती कार्टराइट और अन्य भी। कहा जाता है कि श्रीमती थॉमसन के इन नियंत्रणों ने कोई बहुत ही व्यक्तिगत चरित्र नहीं दिखाया, बल्कि आवाज़ और बोलने के तरीके दोनों में श्रीमती थॉमसन से बहुत मिलते-जुलते थे, हालाँकि श्रीमती वेरॉल ने कहा है कि प्रतिरूपण ने बैठने वाले को अलग पहचान का आभास दिया। श्रीमती थॉमसन के शुरुआती ट्रान्स कथनों को आत्माओं के एक अन्य समूह द्वारा नियंत्रित किया गया था, जिसमें उल्लेखित लोगों की तुलना में भी कम व्यक्तित्व था। अक्सर माध्यम और जांचकर्ता स्वयं, 'अशरीरी तल' पर पहुंचने पर, अपनी बारी में नियंत्रक बन जाते हैं।

स्वर्गीय श्री मायर्स, श्री गुरनी, डॉ. हॉजसन और प्रोफेसर सिडविक ने कई माध्यमों के माध्यम से बोलने और लिखने का दावा किया, विशेष रूप से श्रीमती पाइपर और श्रीमती थॉम्पसन, श्रीमती वेराल और श्रीमती हॉलैंड के माध्यम से। इन नियंत्रकों द्वारा दिए गए कई कथन सही थे, और कुछ ऐसे मामले सामने आए जो स्पष्ट रूप से माध्यम के सामान्य ज्ञान के दायरे से बाहर थे, लेकिन साथ ही नियंत्रकों और उन लोगों के बीच कई घातक विसंगतियां पाई गईं जिन्हें वे प्रतिनिधित्व करने वाले थे।

इस प्रकार श्रीमती हॉलैंड द्वारा निर्मित स्क्रिप्ट में यूसेपिया पल्लाडिनो और उसकी शारीरिक घटनाओं के खिलाफ़ गंभीर चेतावनियाँ थीं, जो मायर्स की ओर से आने का दावा करती थीं, जबकि मायर्स अपने जीवनकाल में शारीरिक अभिव्यक्तियों के पक्ष में राय रखने के लिए जाने जाते थे। कुल मिलाकर ये ट्रान्स व्यक्तित्व खुद को माध्यम के व्यक्तित्व द्वारा निश्चित रूप से रंगे हुए दिखाते हैं। ऐसे मामलों में जहाँ बाद वाला नियंत्रण से परिचित था, ट्रान्स

व्यक्तित्व आनुपातिक रूप से मजबूत है, जबकि जब कोई व्यक्तिगत परिचय नहीं था, तो यह अक्सर एक तटस्थ रंग का होता है, और कभी-कभी गलत अनुमान लगाए जाते हैं, जैसे कि जब श्रीमती हॉलैंड ने गुरनी नियंत्रण को एक असभ्य और लगभग असभ्य स्वभाव के रूप में दर्शाया।

लेकिन ऐसे उदाहरणों को माध्यम की सद्भावना पर आक्षेप के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। यहाँ तक कि जहाँ ट्रान्स व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से माध्यम की अपनी चेतना का उत्पाद है, वहाँ यह मानने का कोई कारण नहीं है कि कोई जानबूझकर धोखा है। जबकि कुछ सबसे निश्चित मामलों में एक विवेकशील खुफिया तंत्र के संचालन के लिए सबूत वास्तव में बहुत अच्छे हैं, और कई प्रमुख अन्वेषकों के लिए संतोषजनक साबित हुए हैं.

359.वृक्ष भूत : भारतीय वृक्ष आत्माएं। श्री क्रुक्स ने अपनी पुस्तक पॉपुलर रिलीजन ऑफ नॉर्दर्न इंडिया में ऐसा कहा है। "यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ये वृक्ष भूत बहुत अधिक हैं। इसलिए अधिकांश स्थानीय मंदिर वृक्षों के नीचे बनाए जाते हैं; और एक विशेष वृक्ष, बीरा में, मिर्जापुर के जंगली जनजातियाँ बाघेश्वर, बाघ देवता, को स्थापित करती हैं, जो उनके सबसे भयानक देवताओं में से एक है। कोंकण में, श्री कैंप बेल के अनुसार, माध्यम या भगत जो प्रेतग्रस्त हो जाता है उसे झाड़, या 'वृक्ष' कहा जाता है, जाहिर है क्योंकि वह आत्माओं के लिए एक पसंदीदा निवास स्थान है।

दक्खिन में यह माना जाता है कि चुरेल की गर्भवती महिला की आत्मा एक वृक्ष में रहती है, और पूर्वी बंगाल के अबोर और पदम का मानना है कि वृक्षों में आत्माएं बच्चों का अपहरण करती हैं। इनमें से कई वृक्ष आत्माएं लोक-कथाओं में दिखाई देती हैं। इस प्रकार, देवदत्त ने एक वृक्ष की पूजा की जो एक दिन अचानक दो टुकड़ों में टूट गया और एक अप्सरा प्रकट हुई जिसने उसे वृक्ष के अंदर पेश किया, जहाँ रत्नों का एक स्वर्गीय महल था, जिसमें एक पर लेटा हुआ था सोफे पर, यक्षों के राजा की कुंवारी बेटी विद्यात्पियाभा प्रकट हुई; एक अन्य कहानी में भिक्षुक ने एक पेड़ के अंदर यक्ष को अपनी पत्नी के साथ मजाक करते हुए सुना। इसलिए डैफ़नी अपने प्रेमी का पीछा करने से बचने के लिए एक पेड़ में बदल गई।

360.जीवन का वृक्ष**,** और अच्छाई और बुराई के ज्ञान का वृक्ष**:** ईडन के बगीचे में भगवान द्वारा लगाए गए दो पेड़, जिन्हें संत एम्ब्रोस ने रहस्यमय महत्व का माना था। पहले को भगवान की अभिव्यक्ति माना जाता है, और दूसरे को सांसारिक ज्ञान का, जिसे हमारा मानव स्वभाव स्वीकार करने के लिए बहुत इच्छुक है।

361.त्रिवाह **:** बोर्नियो के मूल निवासियों में मृतकों के पर्व त्रिवाह को मृत्यु के पश्चात मनाया जाता है। मृतकों के जहाज (q.v.) का चित्रण करने वाला एक पैनल आम तौर पर त्रिवाह में स्थापित किया जाता है, और उस पर पक्षियों की बलि दी जाती है। जब तक त्रिवाह नहीं मनाया जाता है, तब तक आत्मा लेवु-लियाउ तक नहीं पहुँच पाती है।

362.पिशाच**:** (रूसी वैम्पायर, दक्षिण रूसी अपुइर, संभवतः मूल शब्द पी से, पीने के लिए, उपसर्ग वा, या अव के साथ) एक मृत व्यक्ति जो जीवित व्यक्तियों का खून चूसने और उन्हें नष्ट करने के उद्देश्य से कब्र से आत्मा के रूप में लौटता है, या एक जीवित जादूगर जो उसी उद्देश्य के लिए एक विशेष रूप धारण करता है। पिशाच की अवधारणा स्लावोनिक लोगों के बीच सबसे अधिक प्रचलित है, और विशेष रूप से बाल्कन देशों में, और हंगरी, बोहेमिया, मोराविया और सिलेसिया में, और इन क्षेत्रों में 1730-35 से पिशाचवाद की एक अच्छी तरह से चिह्नित महामारी थी, लेकिन यह किसी भी तरह से उन तक ही सीमित नहीं है।

व्हाइट रूस और यूक्रेन में यह माना जाता है कि पिशाच आम तौर पर जादूगर या जादूगर होते हैं, लेकिन बुल्गारिया और सर्बिया में यह माना जाता है कि कोई भी शव जिस पर कोई बिल्ली या कुत्ता कूदता है या जिसके ऊपर कोई पक्षी उड़ता है, वह पिशाच बन सकता है। ग्रीस में पिशाच को ब्रोंकोलिया या बोरकाबाकोस के नाम से जाना जाता है, जिसे स्लावोनिक नाम "वेयरवोल्फ" वल्कोडलक या वुहोडलाक के साथ पहचाना जाता है।

पिशाच को भी अक्सर अपने शिकार का दिल चुराकर धीमी आंच पर भूनने के लिए कहा जाता है, जिससे अंतहीन कामुक लालसाएँ पैदा होती हैं। पिशाचवाद का गणित। पिशाचवाद अपने चरित्र में महामारी है। जहाँ एक उदाहरण पाया जाता है, उसके बाद लगभग हमेशा कई अन्य होते हैं। यह इस परिस्थिति से समझा जाता है कि ऐसा माना जाता है कि पिशाच का शिकार तड़पता है और मर जाता है और बदले में पिशाच बन जाता है।

मृत्यु के बाद खुद को संक्रमित करता है और इस तरह दूसरों को संक्रमित करता है। संदिग्ध पिशाच को खोदकर निकाले जाने पर अनुभवी व्यक्तियों द्वारा विभिन्न जाने-माने चिह्नों की तलाश की जाती है। इस प्रकार, यदि कब्र के ऊपर मिट्टी में एक आदमी की उंगली की चौड़ाई के बारे में कई छेद देखे जाते हैं, तो उसके रहने वाले के पिशाच चरित्र पर संदेह किया जा सकता है। शव को खोदकर

निकालने पर आमतौर पर उसकी आंखें खुली हुई, लाल और सजीव रंग और होंठ और ताजगी का सामान्य आभास होता है, और उसमें भ्रष्टाचार के कोई लक्षण नहीं दिखते।

यह भी पाया जा सकता है कि बाल और नाखून जीवन की तरह बढ़े हुए हैं। गले पर दो छोटे-छोटे नीले निशान देखे जा सकते हैं। ताबूत भी अक्सर खून से भरा होता है; शरीर सूजा हुआ और भरा हुआ दिखता है, और कफन अक्सर आधा खाया हुआ होता है। शव की नसों में मौजूद खून जांच करने पर जीवन की तरह तरल अवस्था में पाया जाता है, और अंग लचीले और लचीले होते हैं।

363.पिशाचवाद के उदाहरण : पिशाचवाद के कई प्रमाणित उदाहरण मौजूद हैं. चार्ल्स फर्डिनेंड डी शेर्ट्ज ने 1706 में ओलमुट्ज़ में छपी अपनी रचना मैगिया पोस्टहुमा में इस तरह के भूतों की कई कहानियाँ बताई हैं और उनके द्वारा की गई शरारतों का विवरण दिया है. उनमें से एक बोहेमिया के कदम शहर के पास ब्लो गाँव के एक चरवाहे की कहानी है, जो काफी समय तक दिखाई देता था और कई लोगों से मिलने जाता था, जो सभी आठ दिनों के भीतर मर गए. अंत में, ब्लो के निवासियों ने चरवाहे के शरीर को खोदा और उसमें एक खूँटा गाड़कर उसे ज़मीन में गाड़ दिया।

इस हालत में भी वह आदमी अपने आस-पास काम करने वाले लोगों पर हँसा और उनसे कहा कि वे उसे कुत्तों से खुद को बचाने के लिए एक छड़ी देकर बहुत आभारी हैं. उसी रात उसने खुद को खंभे से उतारा, कई लोगों को दिखाई देकर उन्हें डरा दिया और अब तक जितने लोगों की जान ली थी, उससे कहीं ज़्यादा लोगों की जान ले ली। फिर उसे जल्लाद के हाथों में सौंप दिया गया, जिसने उसे शहर के बाहर जलाने के लिए गाड़ी में डाल दिया।

जब वे आगे बढ़ रहे थे, तो शव बहुत ही भयानक तरीके से चीख रहा था और अपने हाथ-पैर इधर-उधर फेंक रहा था, मानो वह ज़िंदा हो; और जब उसे फिर से खंभे से मारा गया, तो उसने ज़ोर से चीख मारी और घाव से बहुत सारा ताज़ा, बहता हुआ खून निकला। अंत में, शरीर को जलाकर राख कर दिया गया और इस निष्पादन ने भूत के दिखने और गाँव को संक्रमित करने पर अंतिम रोक लगा दी।

कैलमेट ने अपने शोध प्रबंध में पिशाचों पर शोध प्रबंध को अपने शोध प्रबंध में जोड़ा (अंग्रेजी अनुवाद, 1759)। पिशाचवाद के कई प्रमाणित उदाहरण इस प्रकार हैं: "लगभग पंद्रह वर्ष पहले एक सैनिक, जो हंगरी की सीमा पर हैडामैक किसान के घर में रहता था, ने देखा कि जब वह अपने मकान मालिक के साथ खाने की

मेज पर बैठा था, तो एक अजनबी उसके पास आकर बैठ गया। घर का मालिक और बाकी लोग अजीब तरह से डर गए, लेकिन सैनिक को नहीं पता था कि इसका क्या मतलब निकाला जाए।

अगले दिन किसान की मृत्यु हो गई, और सैनिक द्वारा इसका अर्थ पूछने पर उसे बताया गया कि यह उसके मकान मालिक का पिता था, जो दस साल से अधिक समय से मर चुका था और दफन था, जो आया और खाने की मेज पर बैठ गया, और अपने बेटे को उसकी मृत्यु की सूचना दी।" सैनिक ने जल्द ही अपनी रेजिमेंट में कहानी फैला दी, और इस तरह यह जनरल अधिकारियों तक पहुँच गया, जिन्होंने एलैंडेटी की पैदल सेना की रेजिमेंट के कप्तान काउंट डे कैबरेरस को इस तथ्य की सटीक जाँच करने के लिए नियुक्त किया।

कई अधिकारियों, एक सर्जन और एक नोटरी के साथ काउंट घर आया और पूरे परिवार की गवाही ली, जिन्होंने सर्वसम्मति से शपथ ली कि भूत जमींदार का पिता था और सैनिक ने जो कुछ कहा था वह पूरी तरह सच था। गांव के सभी निवासियों ने भी इसकी पुष्टि की।इसके परिणामस्वरूप भूत के शरीर को कुतर दिया गया और पाया गया कि वह उसी अवस्था में है जैसे कि वह अभी-अभी मरा हो, खून किसी जीवित व्यक्ति जैसा था। काउंट डे कैबरेरस ने उसके सिर को काटने का आदेश दिया और लाश को फिर से दफनाने का आदेश दिया।

फिर उसने उसी तरह के अन्य भूतों के खिलाफ बयान दर्ज किए, और विशेष रूप से एक ऐसे व्यक्ति के खिलाफ जो तीस साल से अधिक समय से मर चुका था और भोजन के समय अपने घर में तीन बार दिखाई दिया था। अपनी पहली यात्रा में उसने अपने भाई की गर्दन पर लिपटा था और उसका खून चूसा था; अपनी दूसरी यात्रा में उसने अपने एक बच्चे के साथ भी ऐसा ही किया था; और तीसरी बार उसने परिवार के एक नौकर पर लिपटा था और तीनों की मौके पर ही मौत हो गई थी।

इस साक्ष्य के आधार पर, काउंट ने आदेश दिया कि उसे खोदा जाए, और पहले की तरह, उसके खून के साथ तरल अवस्था में पाया जाए, जैसे कि वह जीवित था, उसके मंदिरों में एक बड़ी कील ठोंकी गई, और उसे फिर से दफना दिया गया। काउंट ने तीसरे को जलाने का आदेश दिया, जो सोलह साल से अधिक समय से मर चुका था, और अपने ही दो बच्चों का खून चूसकर उनकी हत्या करने का दोषी पाया गया था।

फिर कमिश्नर ने अपनी रिपोर्ट जनरल अधिकारियों को दी, जिन्होंने आगे के निर्देशों के लिए सम्राट के दरबार में एक प्रतिनिधिमंडल भेजा; और सम्राट ने

अधिकारियों, वकीलों, चिकित्सकों, शल्य चिकित्सकों और कुछ दैवज्ञों से मिलकर एक अदालत के लिए आदेश भेजा, ताकि वे मौके पर जाकर इन असाधारण घटनाओं के कारणों की जांच कर सकें। "जिस सज्जन ने मुझे इन सभी विवरणों से परिचित कराया, उन्हें ये विवरण 1730 में ब्रिसगौ के फ़्राइबर्ग में काउंट डी कैबरेरस से मिले थे।" कैलमेट द्वारा उल्लेखित अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं:

—

" हंगरी के उस हिस्से में, जिसे लैटिन में ओपिडा हेइडोनम के नाम से जाना जाता है, टिबिस्कस के दूसरी ओर, जिसे अश्लील रूप से टेयस कहा जाता है; यानी इस नदी के उस हिस्से के बीच जो 'टोके के खुशहाल देश' और ट्रांसिल्वेनिया की सीमाओं को सींचती है, हेयड्यूक नाम के लोगों की धारणा है कि वहाँ मृत व्यक्ति हैं, जिन्हें वे पिशाच कहते हैं, जो जीवित लोगों का खून चूसते हैं, ताकि वे त्वचा और हड्डियों तक गिर जाएँ, जबकि शव खुद, जोंक की तरह, इस हद तक खून से भरे होते हैं कि यह उनके शरीर के सभी छिद्रों से बाहर निकलता है।

इस धारणा की हाल ही में कई तथ्यों से पुष्टि हुई है, जिनके बारे में मुझे लगता है कि हम उन गवाहों पर विचार करते हुए सत्य पर संदेह नहीं कर सकते हैं जो उन्हें प्रमाणित करते हैं। इनमें से कुछ सबसे महत्वपूर्ण तथ्य मैं अब बताऊँगा।

पाँच साल पहले, मेड्रीगा के निवासी अर्नोल्ड पॉल नामक एक हेड्यूक की घास से भरी एक गाड़ी उसके ऊपर गिर जाने से मौत हो गई थी। उसकी मृत्यु के लगभग तीस दिन बाद, चार लोगों की अचानक मृत्यु हो गई, जिसमें वे सभी लक्षण थे जो आमतौर पर पिशाचों द्वारा मारे जाने वालों में होते हैं। तब यह याद आया कि इस अर्नोल्ड पॉल ने अक्सर तुर्की के सर्बिया की सीमा पर कैसोवा के पड़ोस में एक तुर्की पिशाच द्वारा उसे प्रताड़ित किए जाने की कहानी सुनाई थी (क्योंकि धारणा यह है कि जो लोग अपने जीवनकाल में निष्क्रिय पिशाच रहे हैं, वे मृत्यु के बाद सक्रिय पिशाच बन जाते हैं; या, दूसरे शब्दों में, कि जिनका खून चूसा गया है, वे बदले में चूसने वाले बन जाते हैं) लेकिन वह पिशाच की कब्र पर मिट्टी खाने और उसके खून से खुद को रगड़ने से ठीक हो गया था।

हालाँकि, इस पूर्व सावधानी ने उसे अपनी मृत्यु के बाद खुद को दोषी मानने से नहीं रोका; क्योंकि, दफनाए जाने के चालीस दिन बाद जब उसकी लाश खोदी गई, तो उसमें एक महा-पिशाच के सभी निशान पाए गए। उसका शरीर ताजा और लाल था, उसके बाल, दाढ़ी और नाखून बढ़े हुए थे, और उसकी नसों में तरल रक्त भरा हुआ था, जो उसके शरीर के सभी हिस्सों से बह रहा था, जिस कफन में उसे दफनाया गया था। गांव का हडनागी या बेलिफ, जो लाश की खुदाई के समय

मौजूद था, और पिशाचवाद के पूरे काम में बहुत माहिर था, ने मृतक के शरीर में एक तेज खूंटी ठोकने का आदेश दिया, और उसे उसके दिल से गुजरने दिया।

शव को ऐसे काटा जैसे वह जीवित हो। यह समारोह संपन्न होने के बाद, उन्होंने उसका सिर काट दिया और शव को जलाकर राख कर दिया। इसके बाद, उन्होंने उसी तरह से चार अन्य व्यक्तियों के साथ भी काम किया जो पिशाच से मर गए थे, ताकि वे भी परेशानी न पैदा करें।

लेकिन ये सभी निष्पादन इस भयानक चमत्कार को पिछले साल फिर से प्रकट होने से नहीं रोक सके, इसके पहले प्रकट होने के पाँच साल के अंतराल पर। तीन महीनों के अंतराल में, अलग-अलग उम्र और लिंग के सत्रह व्यक्ति पिशाच से मर गए, कुछ बिना किसी पिछली बीमारी के, और अन्य दो या तीन दिनों के बाद। दूसरों के बीच, यह कहा गया था, कि हेड्यूक जोटुइट्ज़ो की बेटी, स्टैनोस्का नाम की एक लड़की पूरी तरह स्वस्थ थी, लेकिन आधी रात को काँपती हुई जाग गई और चिल्लाने लगी कि हे ड्यूक मिलो के बेटे, जो लगभग नौ सप्ताह पहले मर गया था, ने लगभग उसका गला घोंट दिया था जब वह सो रही थी। उस समय से वह दुर्बल अवस्था में आ गई, और तीन दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई।

मिलो के बेटे के खिलाफ उसके सबूत को उसके पिशाच होने के सबूत के रूप में देखा गया, और उसके शरीर को खोदने पर,वह पिशाच ही पाया गया। "स्थान के मुख्य निवासियों के परामर्श पर, जिसमें चिकित्सक और शल्यचिकित्सक उपस्थित थे, इस बात पर विचार किया गया कि कुछ वर्षों पहले बरती गई सावधानियों के बाद पिशाचवाद की महामारी फिर से कैसे फैल सकती है: और, अंत में, यह पता चला कि मूल अपराधी, अर्नोल्ड पॉल ने न केवल ऊपर वर्णित चार व्यक्तियों को मार डाला था, बल्कि कई जानवरों को भी मार डाला था, जिन्हें दिवंगत पिशाचों और विशेष रूप से मिलो के बेटे ने खाया था।

इस आधार पर एक संकल्प लिया गया कि एक निश्चित समय के भीतर मरने वाले सभी व्यक्तियों को खोदकर निकाला जाए। चालीस में से सत्रह ऐसे पाए गए, जिनके पास पिशाचवाद के सभी स्पष्ट संकेत थे; और उनके दिलों में खूंटे ठोंक दिए गए थे, उनके सिर काट दिए गए थे, उनके शरीर जला दिए गए थे, और उनकी राख नदी में फेंक दी गई थी।" ये सभी कई जांच और निष्पादन सभी प्रकार के कानूनों के साथ किए गए थे, और उस देश में गैरीसन में मौजूद कई अधिकारियों द्वारा प्रमाणित किए गए थे, रेजिमेंटों के सर्जन मेजरों और उस स्थान के प्रमुख निवासियों द्वारा। मूल कागजात पिछले जनवरी में वियना में इंपीरियल युद्ध परिषद को भेजे गए थे, जिसने इस तथ्य की सच्चाई की जांच करने के लिए कई अधिकारियों को एक कमीशन जारी किया था।

पिशाचों के उन्मूलन के तरीके - पिशाचों के उन्मूलन के सबसे आम तरीके हैं - (ए) संदिग्ध शव का सिर काटना; (बी) दिल निकालना; (सी) शव को सफेद कांटेदार डंडे (रूस में एस्पेन) से छेदना, और (डी) इसे जलाना। कभी-कभी इनमें से एक या सभी सावधानियाँ बरती जाती हैं। ऐसे उदाहरण रिकॉर्ड में हैं जहाँ पिशाचवाद की महामारी के दौरान तीस या चालीस लोगों की कब्रों को परेशान किया गया है और उनके रहने वालों को छेद दिया गया है या उनका सिर काट दिया गया है।

जो लोग पिशाच के दौरे या हमलों से डरते हैं वे गले में लहसुन की माला डालकर सोते हैं, क्योंकि माना जाता है कि यह माला पिशाच को बहुत अप्रिय लगती है। छेद किए जाने पर पिशाच आमतौर पर कहा जाता है कि यह एक भयानक चीख़ निकालता है, लेकिन यह बताया गया है कि आंतों से गैस गले के माध्यम से शरीर में खूंटे के प्रवेश द्वारा मजबूर हो सकती है, और यह ध्वनि का कारण हो सकता है।

सर्बिया में पिशाच की कब्र की खोज करने की विधि एक कुंवारी लड़के को कोयले के समान काले घोड़े पर रखना है जिसने कभी घोड़ी की सेवा नहीं की है और उस स्थान को चिह्नित करना है जहाँ से वह नहीं गुजरेगा। वलाचिया में तैनात एक अधिकारी ने कैलमेट को इस विधि का एक उदाहरण देते हुए लिखा: - "जब हम वलाचिया के टेमेस्वर में तैनात थे, उस समय इस विकार से उस कंपनी के दो ड्रैगून मर गए जिसमें मैं कॉर्नेट था, और कई और जो इस बीमारी से मर जाते, अगर कंपनी के कॉर्पोरल ने उस देश में आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले उपाय को लागू करके इसे रोक नहीं दिया होता।

यह एक बहुत ही अनोखी बात है और, हालांकि इस पर अचूक रूप से भरोसा किया जा सकता है, लेकिन मुझे कभी भी किसी डिस्पेंसरी में इसका सामना नहीं करना पड़ा। "वे एक लड़के को चुनते हैं, जिसके बारे में वे सोचते हैं कि वह इतना छोटा है कि उसने अपना कौमार्य खो दिया है, और उसे कोयले के समान काले पत्थर के घोड़े पर बिठा देते हैं, जिसने कभी घोड़ी की तरह छलांग नहीं लगाई है।

इस कुंवारी जोड़ी को चर्च के प्रांगण में घुमाया जाता है, और सभी गुफाओं में, और जहाँ भी जानवर रुकता है, और आगे बढ़ने से मना करता है, चाहे वे उसे कितना भी कोड़े क्यों न मारें, वे निष्कर्ष निकालते हैं कि उन्होंने एक पिशाच की खोज की है, कब्र खोलने पर, उन्हें एक मांसल और सुंदर शव मिलता है जैसे कि वह व्यक्ति केवल नींद में हो।

अगला कदम एक कुदाल से उसका सिर काटना है, और घाव से इतनी मात्रा में ताजा और बहता हुआ खून निकलता है, कि कोई भी व्यक्ति शपथ ले सकता है कि उन्होंने एक पूर्ण स्वस्थ और जोश से भरे आदमी का गला काटा है। फिर वे गड्ढे को भर देते हैं, और इस पर भरोसा किया जा सकता है कि विकार समाप्त हो जाएगा, और जो लोग बीमार थे वे धीरे-धीरे ताकत हासिल करेंगे, जैसे लोग लंबी बीमारी के बाद धीरे-धीरे ठीक होते हैं।

तदनुसार यह हमारे सैनिकों के साथ हुआ, जिन पर बीमारी का हमला हुआ। मैं उस समय सेना का कमांडिंग ऑफिसर था, कैप्टन और लेफ्टिनेंट अनुपस्थित थे, और कॉर्पोरल पर बहुत गुस्सा था कि उसने मेरे बिना यह प्रयोग किया। बड़ी मुश्किल से मैंने खुद को उसे एक अच्छा डंडा देने से रोका, एक ऐसी चीज जिसके लिए सम्राट की सेवा के अधिकारी आमतौर पर बहुत उदार होते हैं। मैं, दुनिया के लिए, इस अवसर पर अनुपस्थित नहीं होता, लेकिन अब कोई उपाय नहीं था।

एक बल्गेरियाई मान्यता है कि एक जादूगर या जादूगर एक पिशाच को फंसा सकता है, एक बोतल में कुछ ऐसा खाना डालकर जिसके लिए पिशाच पक्षपात करता है, और उसके प्रवेश पर फुल या भूसे के रूप में, कुप्पी को सील करके आग में फेंक देता है।

364.पिशाचवाद के वैज्ञानिक सिद्धांत : आत्महत्या करने वाले के शरीर को खूंटे से छेदने की अंग्रेजी प्रथा पिशाचवाद में विश्वास का एक अवशेष प्रतीत होती है। इस तरह के राक्षस पोलिनेशियाई टिट, मलय हंटू पेटीयार्डिन, एक कुत्ते के सिर वाला, जल-राक्षस और कैरेंस के थो केफन में भी देखे जा सकते हैं, जो एक जादूगर के सिर और पेट के रूप में मानव आत्माओं को खा जाता है। टायलर पिशाचों को "विषाक्तता की बीमारी के विशिष्ट तथ्यों को ध्यान में रखते हुए आध्यात्मिक रूप में कल्पना किए गए कारण" मानते हैं।

अफानासिफ उन्हें वज्र-देवता और तूफान की आत्मा मानते हैं जो सर्दियों के दौरान अपने बादल-ताबूतों में सोते हैं और वसंत में फिर से उठते हैं और बादलों से नमी खींचते हैं। लेकिन यह सिद्धांत शायद ही किसी को पौराणिक विज्ञान के बारे में थोड़ी सी भी जानकारी रखने वाले व्यक्ति को सुझाएगा। कैलमेट को पिशाचों पर विश्वास करने में कठिनाई यह थी कि वह समझ नहीं पा रहा था कि कैसे कोई आत्मा अपनी कब्र से निकलकर खून के रूप में भारी पदार्थ के साथ वापस आ सकती है, जिससे यह पता चलता है कि कब्र के ऊपर पृथ्वी की सतह हिल गई थी। लेकिन इस दृष्टिकोण का मुकाबला पदार्थ के अवक्षेपण के सिद्धांत से किया जा सकता है।

365.वासागो **:** क्रिस्टल की आत्मा, जिसका आह्वान क्रिस्टल-दर्शक द्वारा अपनी कला के प्रयोजनों के लिए किया जाता है।

366.वाल्डरेल**:** शैतानी शक्तियों के साथ संबंध, जिसे रॉबिनेट डी वाल्स के नाम से जाना जाता है, जो एक साधु था, जो इस अपराध का पहला आरोपी था। 1453 में सेंट जर्मेन एन-ले के पुजारी, गिलौम डी 1'एलिव, जो धर्मशास्त्र के डॉक्टर थे, पर वाल्डरी का आरोप लगाया गया और उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

छह साल बाद लिले में अल्फोंस नामक एक साधु को जला दिया गया, जो विधर्मी सिद्धांतों का प्रचार करता था। यह उत्पीड़न की प्रस्तावना थी, जिसे अगले वर्ष, अर्रास के सूबा के प्रशासक, इंक्वायरी के पादरी, आर्टोइस के गवर्नर काउंट डी'एटैम्प्स द्वारा समर्थित, ने पहले तो बदचलन महिलाओं के खिलाफ, लेकिन बाद में नागरिकों, मजिस्ट्रेटों, शूरवीरों और विशेष रूप से धनी लोगों के खिलाफ निर्देशित किया।

आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही का आधार लगभग हमेशा जादू-टोना का कोई न कोई आरोप होता था। अधिकांश दुखी प्राणियों ने "चुड़ैल के विश्रामदिन" में भाग लेने की बात स्वीकार की, और यातना द्वारा उनसे प्राप्त अजीबोगरीब रहस्योद्घाटन, उन समारोहों का कुछ विचार देंगे जो लोकप्रिय परंपरा के अनुसार शैतान की अध्यक्षता में भयावह त्योहारों में किए जाते थे।

यहाँ 1460 में अरास में पाँच महिलाओं, एक चित्रकार और एक कवि, जिसका उपनाम "एक अल्प बुद्धि वाला मठाधीश" था, और जिसकी आयु लगभग सत्तर वर्ष थी, और कई अन्य लोगों पर घोषित किए गए न्यायदंड के कुछ अंश दिए गए हैं, जो सभी एक बर्बर अज्ञानता और एक क्रूर अंधविश्वास द्वारा पोषित आग में जलकर मर गए।

"और उक्त जांच ने कहा और घोषित किया, कि नीचे दिए गए लोगों ने निम्नलिखित तरीके से वाल्डेरी के दोषी थे, अर्थात्: - जब वे उक्त वाल्डेरी में जाना चाहते थे, तो उन्होंने शैतान द्वारा दिए गए एक मरहम के साथ, एक छोटी लकड़ी की छड़ी और अपने हथेलियों और हाथों का अभिषेक किया; फिर उन्होंने छड़ी को अपने पैरों के बीच रखा, और जल्द ही वे जहाँ भी जाना चाहते थे, सुंदर शहरों, जंगलों और नदियों के ऊपर उड़ गए; और शैतान उन्हें उस स्थान पर ले गया जहाँ उन्हें अपनी सभा करनी थी, और इस स्थान पर उन्होंने अन्य लोगों को पाया, और मेजें रखी हुई थीं, जो शराब और भोजन से भरी हुई थीं;

और यहाँ उन्हें एक बकरी, एक कुत्ते, एक बंदर, या कभी-कभी एक आदमी के रूप में एक राक्षस मिला; और उन्होंने उक्त राक्षस को अपना प्रसाद और श्रद्धांजलि दी, और उसकी पूजा की, और अपनी आत्माएँ, और अपने सभी, या कम से कम कुछ हिस्से को उसे सौंप दिया। शवों को जलाया; फिर, अपने हाथों में जलती हुई मोमबत्तियाँ लेकर, उन्होंने बकरी-शैतान के पिछले हिस्से को चूमा (यहाँ पूछताछकर्ता का अनुवाद करना असंभव हो जाता है) और यह श्रद्धांजलि देने के बाद, उन्होंने क्रूस को रौंदा और उस पर पैर रखा, और यीशु मसीह और पवित्र त्रिदेवों का अपमान करते हुए, अपने थूक से उसे गंदा किया, फिर भगवान का अपमान करते हुए स्वर्ग और आकाश की ओर पीठ कर ली।

और जब वे सब अच्छी तरह से खा-पी चुके, तो उन्होंने एक साथ शारीरिक संबंध बनाए, और यहाँ तक कि शैतान ने भी पुरुष और महिला का वेश धारण किया, और दोनों लिंगों के साथ संभोग किया। और कई अन्य अपराध, सबसे गंदे और घृणित, उन्होंने किए, भगवान के खिलाफ जितना कि प्रकृति के खिलाफ, जिसका नाम लेने की हिम्मत उक्त पूछताछकर्ता ने नहीं की, ताकि मासूम कानों को ऐसे दुष्ट अपराधियों के बारे में न बताया जाए।

जांचकर्ता और उसके अनुचरों द्वारा प्रदर्शित उत्सुकता ने जनता में इतना आक्रोश पैदा कर दिया कि वर्ष 1460 के अंत में न्यायाधीशों ने अभियुक्तों को मृत्युदंड देने की हिम्मत नहीं की, ऐसा केवल उनकी संपत्ति से वंचित करने के उद्देश्य से कहा जाता है। सभी बड़े अपराधों के मामले में, एक प्रतिक्रिया शुरू हुई - सही के पक्ष में एक प्रतिक्रिया; और तीस साल बाद, जब आर्टोइस काउंटी को क्राउन में फिर से मिला दिया गया, तो पेरिस की संसद ने 20 मई, 1491 को इन मुकदमों को "अपमानजनक, शून्य और गलत तरीके से बनाया गया" घोषित किया, और बरगंडी के ड्यूक के उत्तराधिकारियों और मुख्य न्यायाधीशों को 500 पेरिसियन लिवर के जुर्माने की सजा सुनाई, जिसे पीड़ितों के उत्तराधिकारियों के बीच क्षतिपूर्ति के रूप में वितरित किया जाना था।

367.वेदांत योग **:** हिंदू योग अभ्यास की उच्च शाखा।

368.वेहम-गेरीहेट**:** एक गुप्त न्यायाधिकरण जो मध्य युग के दौरान जर्मनी और विशेष रूप से वेस्टफेलिया में एक अजीबोगरीब अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करता था। इसकी उत्पत्ति काफी अनिश्चित है। सत्र अक्सर गुप्त रूप से आयोजित किए जाते थे, और अशिक्षित लोगों को मृत्यु दंड के दर्द पर उनमें भाग लेने से मना किया जाता था। उनके बारे में सबसे बेतुकी कहानियाँ प्रसारित की गई हैं, - कि वे भूमिगत कक्षों में मिलते थे और इसी तरह की अन्य कहानियाँ। आधुनिक शोध द्वारा इन्हें खारिज कर दिया गया है। रहस्यवाद में हाथ डालने

से दूर, ये अदालतें अक्सर जादू-टोना और जादू-टोने के दोषी लोगों को सजा देती थीं।

369.वेल्टल्स**:** एक दुष्ट आत्मा जिसने सेंट मार्गरेट पर हमला किया था, लेकिन उसके द्वारा पराजित हो गई थी। सेंट मार्गरेट द्वारा पूछे जाने पर कि वह कौन था और कहाँ से आया था, उसने उत्तर दिया: मेरा नाम वेल्टिस है, और मैं उन लोगों में से एक हूँ जिन्हें सोलोमन ने अपने मंत्रों के बल पर बेबीलोन में एक तांबे के बर्तन में बंद कर दिया था; लेकिन जब बेबीलोन के लोगों ने खजाना खोजने की आशा में बर्तन को खोदा और उसे खोला, तो हम सभी भाग निकले। 'उस समय से हमारे प्रयास धर्मी व्यक्तियों के विनाश की ओर निर्देशित हैं; और मैं लंबे समय से 'तुम्हें उस मार्ग से हटाने का प्रयास कर रहा हूँ जिस पर तुमने अपना हाथ रखा है।'

370.वर्डेलेट**:** दूसरे दर्जे का एक दानव, नरकीय दरबार में समारोहों का मास्टर। उसे चुड़ैलों को सब्बाथ पर ले जाने का काम सौंपा गया है। वह मास्टर पर्सिल, सैंटे-ब्यूसन और अन्य मधुर ध्वनि वाले नामों का इस्तेमाल करता है, ताकि महिलाओं को अपने जाल में फंसा सके।

371.वर्वेन **:** एक पवित्र जड़ी बूटी जिसे बृहस्पति की वेदियों पर छिड़का जाता था। बुरी आत्माओं को भगाने के लिए घरों में वर्वेन युक्त पानी भी छिड़का जाता था। ड्र्यूड्स के बीच विशेष रूप से इसका इस्तेमाल कई तरह के अंधविश्वासों के सिलसिले में किया जाता था। वे इसे सूर्योदय से पहले, दिन के उजाले में इकट्ठा करते थे। बाद में जादूगरों ने भी यही प्रयोग किया और दानवशास्त्रियों का मानना है कि राक्षसों को बुलाने के लिए वर्वेन से मुकुट पहनाना ज़रूरी है।

372.विएडमा **:** डायन के लिए रूसी नाम।

373.डेमोक्रिटस : का मानना था कि दर्शन और स्वप्न क्षणिक आकार हैं, अन्य प्राणियों से आने वाले आदर्श रूप। मृत्यु-शय्या दर्शन के बारे में प्लूटार्क कहते हैं: "यह संभव नहीं है कि मृत्यु में आत्मा को नई शक्तियाँ प्राप्त हों, जो तब नहीं थीं जब हृदय शरीर की जंजीरों में बंधा हुआ था; लेकिन यह अधिक संभव है कि ये शक्तियाँ हमेशा से थीं, हालाँकि शरीर द्वारा मंद और अवरुद्ध थीं; और आत्मा केवल तभी उनका अभ्यास करने में सक्षम होती है जब भौतिक बंधन ढीले हो जाते हैं, और लटकते अंग और स्थिर रस अब उस पर अत्याचार नहीं करते।" दर्शन के आध्यात्मिक सिद्धांत को शायद ही शारीरिक कहा जा सकता है, सिवाय इसके कि आत्मा को परिष्कृत पदार्थ माना जाता है। इस तरह के दर्शन संबंधी परमानंद का एक पुराना सिद्धांत यह था कि आत्मा शरीर को छोड़कर

आकाशीय क्षेत्रों में चली जाती है, जहाँ वह दिव्य दृश्यों और व्यक्तियों के चिंतन में रहती है। स्वीडनबॉर्ग का सिद्धांत भी इससे बहुत मिलता-जुलता है, जिसकी आत्मा, उनका मानना था, मृतात्माओं की आत्माओं के साथ संवाद कर सकती है।

आधुनिक अध्यात्मवाद के सिद्धांतों का सीधा संबंध इसी से है, जो इस प्रकार दर्शन को वास्तविक आत्मा या आत्मा के दृश्य के रूप में मानता है; जो उस आनंदित या मंत्रमुग्ध व्यक्ति को दिखाई देता है जिसकी आत्मा को निर्जीव तल पर प्रक्षेपित किया गया था।

यह प्रश्न कि क्या दर्शन संक्रामक हैं या नहीं, इस पर बहुत विवाद हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे दर्शन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में हाथ रखने से स्थानांतरित हो सकते हैं। स्कॉटिश द्रष्टाओं के मामले में ऐसा स्थानांतरण द्रष्टा के साथ आकस्मिक संपर्क से भी हो सकता है। हालाँकि, दूसरे व्यक्ति का दर्शन मूल द्रष्टा की तुलना में कम स्पष्ट है।

चुम्बकित रोगियों के दर्शन के संबंध में भी यही विचार प्रचलित था। जहाँ तक इन्हें सम्मोहन अवस्था के सामूहिक मतिभ्रम के साथ पहचाना जा सकता है, उनके अस्तित्व को साबित करने के लिए कोई निश्चित वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। दर्शन किसी भी तरह से अज्ञानी या अंधविश्वासी लोगों तक ही सीमित नहीं रहे हैं। कई प्रतिभाशाली लोग दूरदर्शी दिखने के शिकार हुए हैं। जब राफेल मैडोना को चित्रित करने की कोशिश कर रहा था, तो वह उसे एक दर्शन में दिखाई दी। "डेविल्स सोनाटा" के नाम से प्रसिद्ध रचना को खुद शैतान ने टार्टिनी को सुनाया था। गोएथे अबा को दर्शन हुए थे।

ब्लेक के कुलपतियों के चित्र रात में दिखाई देने वाले दूरदर्शी प्राणियों से बनाए गए थे। और ऐसे उदाहरणों को आसानी से गुणा किया जा सकता है।

374.वेफर**:** पवित्र वेफर का इस्तेमाल अक्सर शैतान-पूजकों द्वारा अपवित्रीकरण के लिए किया जाता है। (शैतान-पूजा देखें।) कुख्यात चुड़ैल के घर में एक पवित्र रोटी का वेफर मिला, जिस पर शैतान का नाम लिखा हुआ था।

375.वामेर**,** फलेई**:** एक स्विस, मूल रूप से एक लूथरन पादरी, एक प्रसिद्ध तांत्रिक और अध्यात्मवादी, और एलीपस लेवी (q.v.) का मित्र। उन्हें "शैतानवाद" के छद्म इतिहासकारों द्वारा चार्ल्सटन, यू.एस.ए. में उनके कथित शैतानी व्यवहारों में अल्बर्ट पाइक (q.v.) के दाहिने हाथ के रूप में दर्शाया गया है।

(डीयल उपासना देखें।) वास्तव में वाल्डर एक ईमानदार राजमिस्त्री और रहस्यवादी थे।

376.वालेस**,** अल्फ्रेड रसेल**:** एक प्रतिष्ठित ब्रिटिश प्रकृतिवादी, जिन्होंने डार्विन से स्वतंत्र विकास के सिद्धांत की खोज की। उनका जन्म 8 जनवरी, 1823 को मॉनमाउथशायर के उस्क में हुआ था। उनके वैज्ञानिक अध्ययनों में अध्यात्मवाद की घटनाओं की जांच शामिल थी, और वे इन अभिव्यक्तियों की वास्तविकता में दृढ़ विश्वास रखने लगे। डॉ. वालेस को श्रीमती गुप्पी के साथ इनका अध्ययन करने के लिए अद्वितीय अवसर मिले, जो मिस निकोल्स के रूप में कुछ समय के लिए उनकी बहन के साथ रहीं।

उनके कार्यों में चमत्कार और आधुनिक अध्यात्मवाद नामक एक पुस्तक 1881 में प्रकाशित हुई थी। डॉ. वालेस के मानसिक घटनाओं पर विचार 1903 में उनकी मृत्यु तक अपरिवर्तित रहे। उनकी वैज्ञानिक स्थिति ने उन्हें अध्यात्मवादियों के लिए एक ताकत का स्तंभ बना दिया।

377.जी**.** प्यूसर लाइकेनथ्रोपी **:** के बारे में कहते हैं: "मेरे लिए, मैंने पहले उन कहानियों को हास्यास्पद और काल्पनिक माना था जो मैंने अक्सर मनुष्यों के भेड़ियों में परिवर्तन के बारे में सुनी थीं; लेकिन मैंने विश्वसनीय स्रोतों से, और भरोसेमंद गवाहों की गवाही से सीखा है कि ऐसी बातें बिल्कुल भी संदिग्ध या अविश्वसनीय नहीं हैं, क्योंकि वे क्रिसमस के बारह दिन बाद लिवोनिया और आस-पास के देशों में होने वाले ऐसे परिवर्तनों के बारे में बताते हैं; जैसा कि उन लोगों के बयानों से सच साबित हुआ है जिन्हें ऐसे अपराधों के लिए कैद किया गया है और यातना दी गई है।

यहाँ बताया गया है कि यह कैसे किया जाता है। क्रिसमस का दिन बीतने के तुरंत बाद, एक लंगड़ा लड़का देश भर में घूमता है और शैतान के इन गुलामों को बुलाता है, जिनकी संख्या बहुत अधिक है, और उन्हें उसका अनुसरण करने का आदेश देता है। यदि वे विलंब करते हैं या बहुत धीमी गति से चलते हैं, तो तुरंत एक लंबा आदमी एक चाबुक के साथ दिखाई देता है, जिसके फीते लोहे की जंजीरों से बने होते हैं, जिसके साथ वह उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है, और कभी-कभी बेचारे दुष्टों को कोड़े मारता है।

इतनी क्रूरता से कि कोड़े के निशान उनके शरीर पर बहुत बाद तक बने रहते हैं और उन्हें बहुत पीड़ा पहुँचाते हैं। जैसे ही वे अपने मार्ग पर निकल पड़ते हैं, वे सब भेड़ियों में बदल जाते हैं। वे हज़ारों की संख्या में यात्रा करते हैं, उनके मार्गदर्शक को कोड़ा धारण करने वाला होता है, जिसके पीछे वे चलते हैं। जब वे खेतों में

पहुँचते हैं, तो वे वहाँ जो भी मवेशी पाते हैं उन पर टूट पड़ते हैं, जितना हो सके उन्हें फाड़कर ले जाते हैं और बहुत अधिक नुकसान पहुँचाते हैं; लेकिन उन्हें लोगों को छूने या घायल करने की अनुमति नहीं है।

जब वे किसी नदी के पास पहुँचते हैं, तो उनका मार्गदर्शक अपने कोड़े से पानी को अलग कर देता है, ताकि वे खुल जाएँ और पार करने के लिए एक सूखी जगह छोड़ दें। बारह दिनों के अंत में पूरा समूह तितर-बितर हो जाता है, और हर कोई अपने घर लौट जाता है, अपना उचित रूप पुनः प्राप्त कर लेता है। वे कहते हैं कि यह परिवर्तन इस प्रकार होता है।

पीड़ित अचानक जमीन पर गिर जाते हैं, जैसे कि उन्हें अचानक बीमारी ने जकड़ लिया हो, और वे लाशों की तरह निश्चल और फैले हुए रहते हैं, सभी संवेदनाओं से रहित, क्योंकि वे न तो हिलते हैं, न ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, न ही किसी भी तरह से भेड़ियों में तब्दील होते हैं, इस प्रकार वे सड़े हुए मांस के समान दिखते हैं, क्योंकि यद्यपि उन्हें लुढ़काया या हिलाया जाता है, लेकिन वे जीवन का कोई संकेत नहीं देते हैं।" बोडिन लाइकेनथ्रोपी और मनुष्यों के जानवरों में बदल जाने के कई मामलों का वर्णन करता है। "पियरे ममोट ने जादूगरों पर लिखे अपने एक छोटे से ग्रंथ में कहा है कि उन्होंने मनुष्यों को भेड़ियों में बदलते देखा है, उस समय वे सेवॉय में थे।

कोलोन के हेनरी ने अपने ग्रंथ डे लैमिस में इस परिवर्तन को संदेह से परे माना है। और उलरिच ने सम्राट सिगिस्मंड को समर्पित एक छोटी सी पुस्तक में सम्राट के समक्ष हुए विवाद के बारे में लिखा है, और कहा है कि तर्क के आधार पर और असंख्य उदाहरणों के अनुभव के आधार पर, यह सहमति हुई थी कि ऐसा परिवर्तन एक तथ्य था; और वह यह भी कहते हैं कि उन्होंने खुद कॉन्स्टेंस में एक लाइकेनथ्रोप को देखा था, जिस पर आरोप लगाया गया, उसे दोषी ठहराया गया, निंदा की गई और आखिरकार उसके कबूलनामे के बाद उसे मार दिया गया।

और जर्मनी में प्रकाशित कई किताबें कहती हैं कि ईसाई धर्म के सबसे महान राजाओं में से एक, जो बहुत पहले नहीं मरा, और जिसकी दुनिया के सबसे महान जादूगरों में से एक होने की प्रतिष्ठा थी, अक्सर एक भेड़िये में बदल जाता था। "मुझे याद है कि राजा के अटॉर्नी-जनरल, बॉर्डिन ने मुझे एक और कहानी सुनाई थी जो उन्हें लो कंट्रीज से भेजी गई थी, जिसमें जज और क्लर्कों द्वारा हस्ताक्षरित पूरी सुनवाई थी, एक भेड़िये की, जिसे जांघ पर एक तीर लगा था, और बाद में वह बिस्तर पर पाया गया, तीर के साथ (जिसे उसने फाड़ दिया था), अपने मानव रूप को पुनः प्राप्त करने पर, और तीर को उस व्यक्ति ने पहचान

लिया जिसने इसे चलाया था - समय और स्थान व्यक्ति के कबूलनामे से प्रमाणित होता है।" "डोले की संसद द्वारा दोषी ठहराए गए गैमियर ने एक वेयरवोल्फ के रूप में, डोले से एक चौथाई लीग दूर, चेस्टेनॉय के एक अंगूर के बगीचे में दस या बारह साल की एक लड़की को पकड़ा और अपने दांतों और पंजे जैसे हाथों से उसे मार डाला, उसने उसके मांस का कुछ हिस्सा खाया और बाकी को अपनी पत्नी के पास ले गया।

एक महीने बाद, उसी रूप में, उसने एक और लड़की को लिया, और उसे भी खा जाता, अगर उसने खुद कबूल किया, तीन लोगों ने उसे रोका नहीं होता जो संयोग से वहां से गुजर रहे थे; और एक पखवाड़े के बाद उसने ग्रेडिसंस के अंगूर के बगीचे में दस साल के एक लड़के का गला घोंट दिया, और उसका मांस खा लिया; और एक आदमी के रूप में, न कि एक भेड़िये के रूप में, उसने पोरोस गांव के जंगल में बारह या तेरह साल के एक और लड़के को खाने के इरादे से मार डाला, लेकिन फिर से उसे रोक दिया गया। उसे जला दिए जाने की सजा सुनाई गई, और सजा को अंजाम दिया गया।"

"बेज़ानकॉन की संसद में, आरोपी पियरे बर्गोट और मिशेल वर्दुन थे, जिन्होंने कबूल किया कि भगवान को त्याग दिया, और शैतान की सेवा करने की शपथ ली। और मिशेल वर्दन ने बरगोट को बोर्ड डू चेस्टेल चार्लोन में ले जाया, जहाँ हर कोई हरे मोम की एक मोमबत्ती ले गया जो नीली लौ के साथ चमक रही थी। वहाँ उन्होंने नृत्य किया और शैतान को बलि चढ़ाई। फिर अभिषेक होने के बाद वे अविश्वसनीय तेज़ी से दौड़ने वाले भेड़ियों में बदल गए; फिर वे फिर से पुरुष में बदल गए, और अचानक भेड़ियों में बदल गए, जब उन्होंने मादा भेड़ियों की संगति का उतना ही आनंद लिया जितना उन्होंने अपनी पत्नियों के साथ लिया था।

उन्होंने यह भी कबूल किया कि बरगोट ने सात साल के एक लड़के को अपने भेड़िये के पंजों और दांतों से मार डाला था, उसे खाने का इरादा था, लेकिन किसानों ने उसका पीछा किया, और उसे रोक दिया। बरगोट और वर्दन ने मिलकर चार लड़कियों को खाया था; और उन्होंने एक खास पाउडर के स्पर्श से लोगों को मरवा दिया था।" "जॉब फाइन्ड ने अपने मार्वल्स की ग्यारहवीं पुस्तक में लिखा है कि पडुआ में एक लाइकेनथ्रोप था जिसे पकड़ा गया और उसके भेड़िये के पंजे काट दिए गए, और उसी क्षण उसने पाया कि उसके हाथ और पैर कटे हुए थे।

यह वर्नोन (1556) के जादूगरों के खिलाफ़ मामले को मजबूत करने के लिए दिया गया है, जो असंख्य बिल्लियों के रूप में एक पुराने और बर्बाद महल में

इकट्ठे हुए थे। एक शाम वहाँ चार या पाँच आदमी पहुँचे, जिन्होंने उस जगह पर रात बिताने का फैसला किया। उन्हें बिल्लियों की भीड़ ने जगाया, जिन्होंने उन पर हमला किया, उनमें से एक को मार डाला, और अन्य को घायल कर दिया। हालाँकि, वे लोग कई बिल्लियों को घायल करने में सफल रहे, जिन्होंने अपने मानव रूप को पुनः प्राप्त करने पर पाया कि वे बुरी तरह से घायल हो गए थे। और यह अविश्वसनीय लग सकता है, लेकिन मुकदमा आगे नहीं बढ़ाया गया।"

"लेकिन इन मामलों में प्रयोग करने वाले पाँच जांचकर्ताओं ने लिखित रूप में यह छोड़ दिया है कि स्ट्रासबर्ग में तीन जादूगर थे, जिन्होंने तीन बड़ी बिल्लियों की आड़ में एक मजदूर पर हमला किया और खुद का बचाव करते हुए उसने बिल्लियों को घायल कर दिया और तितर-बितर कर दिया, जो उसी समय गंभीर रूप से घायल महिलाओं के रूप में बीमार बिस्तरों पर पड़ी थीं। मुकदमे में उन्होंने उस व्यक्ति पर आरोप लगाया जिसने उन्हें मारा था, और उसने न्यायाधीशों को वह समय और स्थान बताया जब बिल्लियों ने उस पर हमला किया था और उसने उन्हें कैसे घायल किया था।" (से लियंथ्रोपी।)

378.वेस्ट इंडियन आइलैंड्स : वेस्ट इंडियन आइलैंड्स में जादू और टोना-टोटका पूरी तरह से नीग्रो आबादी के लिए आरक्षित है, जिनके पास ओबेह और वौडौक्स नामक विशेष जादुई पंथ हैं, जो पश्चिमी अफ्रीकी बुतपरस्ती के रूप हैं। ओबेहिज्म और वौडौक्स का मूल विचार सर्प-देवता ओबी की पूजा और प्रार्थना है - एक पश्चिमी अफ्रीकी शब्द जो बुराई की आत्मा का प्रतीक है। वौडौक्स या वूडू ओबेह का एक रूप है जो हेती, सैन डोमिंगो और फ्रांसीसी वेस्ट इंडीज में प्रचलित है।

इसके अनुष्ठानों में हमेशा पक्षियों और बकरियों की बलि दी जाती है, और बहुत से मामलों में "बिना सींग वाले बकरे" की बलि दी जाती है - मानव बलि, आमतौर पर एक छोटी लड़की या लड़के की। एकांत उपवन और पहाड़ी गुफाएँ जहाँ वौडौक्स के भक्त वालपुरगीस रात के तांडव का आनंद लेते हैं, शायद ही कभी अपने रहस्यों को उजागर करते हैं।

वौडौक्स के दो संप्रदाय हैं- सफेद और लाल। पहला संप्रदाय, जो केवल सफेद पक्षियों और बकरियों की बलि में विश्वास करता है, हेती के कानूनों द्वारा सहन किया जाता है, और इसके अनुष्ठान कैथोलिक चर्च के अनुष्ठानों की तरह ही आम तौर पर किए जाते हैं। लेकिन लाल संप्रदाय भी, जो खुले तौर पर मानव बलि के लिए खड़ा है, शायद ही कभी हस्तक्षेप किया जाता है। अधिकारी इसे दबाने की हिम्मत नहीं करते, क्योंकि उनके अपने पुलिसकर्मी और सैनिक "पापालोई" और "मामालोई" - सांप-देवता के पुजारी और पुजारिनों से डरते हैं।

इससे भी अधिक, हाल के वर्षों में हेती के ऐसे राष्ट्रपति हुए हैं जो वौडौक्स में विश्वास करते हैं। हिप्पोलाइट खुद भी एक पापा थे। उन्होंने राजधानी की गलियों में काले बकरियों के चमड़े का ढोल बजाया ताकि वे विश्वासियों को इकट्ठा करके देखें कि वे सेन-सेल फाउल को कैसे मारते हैं। एक अन्य राष्ट्रपति, गेफ्लफर्ड ने अपना कर्तव्य निभाने और पंथ को खत्म करने की कोशिश की।

उनसे एक भयानक बदला लिया गया। उनकी छोटी बेटी, कोरा को मार दिया गया पोर्ट-ऑ-प्रिंस में एक चर्च की वेदी के सामने प्रार्थना में घुटने टेकते हुए देखा। आज हेटियन राजधानी में एक विजयी मेहराब के पास लाल संप्रदाय का एक मंदिर है, जिस पर "स्वतंत्रता-शिक्षा-प्रगति" जैसे शब्द खुदे हुए हैं। ब्रिटिश सरकार के अधीन ओबेहिज्म सामाजिक व्यवस्था के लिए हेती की तुलना में कम खतरनाक रूप लेता है;

लेकिन यह जमैका और अन्य ब्रिटिश वेस्ट इंडियन द्वीपों में एक निरंतर सार्वजनिक खतरा है। यह धर्म, शिक्षा और सामाजिक उन्नति का कट्टर दुश्मन है। पुराने दिनों में यह बड़े पैमाने पर जहर देकर काम करता था, और हाल के दिनों में ओबेहमेन द्वारा पुराने तरीके से हत्या करने की कोशिश करने के कुछ मामले सामने आए हैं। जमैका और हेती दोनों में ओबेहमेन का एक पसंदीदा तरीका है, उन लोगों के भोजन में बांस के छोटे-छोटे बाल मिलाना जो उनके सामने घुटने टेकने से इनकार करते हैं। इससे अंततः घातक पेचिश हो जाती है। यदि पीड़ित व्यक्ति अवज्ञाकारी बना रहता है, तो वह मर जाता है; यदि वह ओबेहमान के साथ शांति स्थापित कर लेता है, और उसे एक अच्छा उपहार देता है, तो जहर की धीमी प्रक्रिया बंद हो जाती है, और वह जीवित रहता है।

जीवन के सभी संकटों और परेशानियों में नीग्रो ओबेहमान के पास भागता है। यदि उसे पुलिस कोर्ट में पेश होना पड़ता है, तो वह ओबेहमान को वहां भी जाने और मजिस्ट्रेट की "आंख ठीक करने" के लिए पैसे देता है, ताकि उसे छुट्टी मिल जाए। शायद उसे अनैतिकता के लिए एक श्वेत मंत्री द्वारा बैपटिस्ट चैपल में अपने डीकन के पद से हटा दिया गया हो। उस स्थिति में ओबेहमान सबसे शक्तिशाली मंत्रों का एक संग्रह तैयार करेगा - जैसे कि सूखी छिपकलियाँ, पक्षियों की हड्डियाँ, और कब्रिस्तान की मिट्टी, जिसे मंत्री की बाइबिल में रखा जाएगा ताकि वह अपने धर्मोपदेश के पाठ को देखते समय उसे घूर सके।

फिर, यदि ओबेह ठीक से काम करता है, तो गलती करने वाले डीकन को वापस पद पर ले लिया जाएगा। यहां तक कि शिक्षित और आधिकारिक पद वाले अश्वेत लोग भी अक्सर ओबेहिज्म से दागदार होते हैं। वे अक्सर इसका

इस्तेमाल लाभ के लिए और अज्ञानी नीग्रो पर अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए करते हैं। एक पारोचियल बोर्ड के मुलतो चेयरमैन - हमारे काउंटी काउंसिल के जमैका समकक्ष - को कुछ साल पहले ही ओबेह का अभ्यास करने के लिए जेल भेजा गया था। किंग्स्टन सिटी काउंसिल का एक प्रमुख सदस्य द्वीप में अग्रणी ओबेहमैन था - पंथ का पोप। वह इतना चतुर था कि पुलिस उसे कभी नहीं पकड़ सकी, हालाँकि उसे अपने नापाक कामों से सालाना 3,000 पाउंड से अधिक कमाने थे।

एक बार कुछ जासूसों ने उसके घर पर छापा मारा, लेकिन उसे समय पर चेतावनी मिल गई और वह भाग गया। प्रेस को एक लेखक ने "लाल" वाडौक्स समारोह का वर्णन इस प्रकार किया है: "मैंने पोर्ट-ऑ-प्रिंस और अन्य जगहों पर कई बार 'सफेद' अनुष्ठान देखा था, जब आखिरकार मुझे एक मुलतो जनरल की दयालुता के माध्यम से लाल 'संस्कार' देखने की अनुमति मिली। मुझे बताया गया कि केवल मुर्गे और बकरे की बलि दी जाएगी, और यह सच निकला।

जनरल ने मुझे जैकमेल शहर से लगभग तीन मील दूर एक छोटे से जंगल में ले जाया। मिट्टी के तेल की लपटों की रोशनी में मैंने देखा कि लगभग चालीस पुरुष और महिलाएँ एक खुरदरे पत्थर की वेदी के चारों ओर इकट्ठे हुए थे, जिस पर एक कोकोमैकेक स्टिक के चारों ओर लिपटा हुआ पवित्र हरा साँप था। * मामालोई/ एक लंबी, बुरी दिखने वाली नीग्रो, लाल रंग की पोशाक पहने हुए थी, उसके सिर पर लाल पगड़ी थी। वह वेदी के सामने एक घुमावदार नृत्य कर रही थी, और एक प्राचीन पश्चिमी अफ्रीकी मंत्र का उच्चारण कर रही थी, जिसे दर्शक दोहरा रहे थे।

वह तेजी से काम कर रही थी वह उत्तेजना के चरम पर पहुँच गई, बीच-बीच में रुककर रम की बोतलों में से एक से घूँट पीती रही जो एक हाथ से दूसरे हाथ में स्वतंत्र रूप से जा रही थीं। अंत में उसने वेदी से एक चमचमाती हुई कुल्हाड़ी उठाई और अपने दूसरे हाथ से एक काले मुर्गे को पकड़ लिया जिसे एक राहगीर ने पकड़ा हुआ था। उसने पक्षी को अपने सिर के चारों ओर इतनी जोर से घुमाया कि उसके पंख चारों ओर उड़ने लगे और फिर एक तेज झटके से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।

तनावपूर्ण और भयानक उत्तेजना ने उपासकों को चुप करा दिया था, लेकिन जब पुजारिन ने मारे गए मुर्गे की खून से लथपथ गर्दन को अपने होठों से दबाया तो वे एक क्रूर चीख में फूट पड़े। बाद में उसने उसे खून में डुबोया और मुर्गे को उसके शरीर से अलग कर दिया।

.उसके माथे पर क्रॉस का चिन्ह बना दिया और उसे अपने कुछ शिष्यों के माथे पर दबा दिया।" ओबेह आदमी को हमेशा वह व्यक्ति आसानी से पहचान सकता है जिसका नीग्रो से बहुत ज़्यादा संबंध रहा हो। उसका रूप-रंग बहुत ही भयावह होता है। वह बिना नहाए-धोए, फटे-पुराने कपड़े पहने, अक्सर आधा पागल, आमतौर पर बीमार और लगभग हमेशा एक पैर में घाव होता है। यह आखिरी, वास्तव में, जनजाति का प्रतीक है। अक्सर वह एक बहुत बूढ़ा नीग्रो होता है जो "गुलामी के दिनों" को जानता था और आधे से ज़्यादा लोग उसके जादुई दावों पर विश्वास करते हैं।

लेकिन सभी इस बदनाम किस्म के नहीं होते। यहाँ तक कि कुछ सफ़ेद बागान मालिक भी ओबेह का इस्तेमाल करने से नहीं कतराते, हालाँकि, बेशक, उन्हें इसमें कोई विश्वास नहीं है। नीग्रो द्वारा उगाई गई फसलों की चोरी उनके जीवन की सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक है। कभी-कभी वे "केले के टुकड़े" या संतरे के बाग के किनारे के पेड़ों को छोटे-छोटे ताबूतों, पुरानी हड्डियों, गंदे पानी की बोतलों और अन्य ओबेह से सजाते हैं। वस्तुओं को पकड़ो; और फिर नीग्रो घुसने और चोरी करने की हिम्मत नहीं करेंगे।

1908 के दौरान एक जमैकन जर्नल में प्रकाशित एक दिलचस्प रिपोर्ट में भूत-प्रेत के कब्जे या प्रेतबाधा के एक मामले का विवरण इस प्रकार दिया गया है: "हाल ही में हाफ-वे ट्री कोर्ट, जमैका में मामला रेक्स बनाम चार्ल्स डोनाल्डसन के मामले में अवैध रूप से भूत-प्रेत का अभ्यास करने के लिए था। रॉबर्ट रॉबिन्सन, जिन्होंने कहा कि वह सेंट एंड्रयू के पैरिश में ट्रेंच पेन में रहने वाले एक मजदूर थे, ने कहा कि मंगलवार, 8 तारीख को, वह स्पेनिश टाउन रोड पर मे पेन कब्रिस्तान के बाहर बैठे थे।

वह काम से घर लौट रहे थे, और उनके सिर पर एक सफेद रूमाल बंधा हुआ था। उन्हें बीमार महसूस हो रहा था, और इस वजह से वह बैठ गए। जब वह बैठे थे, तो कैदी उनके पास आया। वह उस आदमी को पहले से नहीं जानता था, लेकिन उसने उससे पूछना शुरू किया कि मामला क्या है। गवाह ने जवाब दिया, "मैं बहुत बीमार हूँ।" कैदी ने कहा, "नहीं, तुम बीमार नहीं हो; तुम्हारे ऊपर दो भूत हैं - एक क्रियोल और एक कुली।" गवाह ने कैदी को जाने के लिए कहा और उसे छोड़ दिया गया। उसने अगली बार कैदी को बुधवार 9 तारीख को देखा।

वह बम्पर हॉल में उसके पास आया, जहाँ वह काम कर रहा था, और उसने उससे कहा, "यार, तुम मुझे यहाँ कैसे पा गए?" "ओह," कैदी ने उत्तर दिया, "अगर कोई आदमी नरक में है तो मैं उसे ढूँढ सकता हूँ; मैं तुम्हारे पास काम देने आया हूँ?" गवाह ने फिर पूछा, "कौन सा काम F" और आरोपी ने उससे कहा कि वह "दो

भूतों को हटाना चाहता है।" वह इसे £25 में कर सकता था, और वह £25 से £50 तक की किसी भी राशि के लिए "हत्या" करता था।

उसने सभी वर्गों के लिए काम किया था - श्वेत, अश्वेत, कुली, चीनी, आदि। गवाह ने कहा कि उसने उस समय उसे कोई "अच्छी सहमति" नहीं दी थी, लेकिन आरोपी के चले जाने के बाद मामले की सूचना क्लार्क और राइट को दी, जो मामले के दो गवाह थे। क्लार्क ने उससे कहा कि उसे उस आदमी को डराना नहीं चाहिए बल्कि घर जाना चाहिए।

गुरुवार, 10 तारीख को, प्रतिवादी फ्रेंच पेन में उसके यार्ड में उसके पास आया। आरोपी ने उससे कहा कि वह भूत को हटाने के लिए उसके पास वापस आएगा। उसने उसे रम की एक बोतल और 5 शिलिंग लाने के लिए भी कहा। उसने (गवाह ने) व्यवस्था के लिए सहमति व्यक्त की। प्रतिवादी ने अपनी जैकेट उतारकर शुरुआत की। फिर उसने अपना "संक्षिप्त बैग" खोला और चाक का एक टुकड़ा निकाला। फिर आरोपी ने मेज पर तीन निशान बनाए और एक शीशी और एक सफेद पत्थर निकाला। शीशी में कुछ ऐसा सामान था जो पारा जैसा लग रहा था।

उसने मेज पर अपना सामान सजा दिया। उनमें एक बड़ी व्हिस्की की बोतल थी जिसमें कुछ पीली चीज़ें, एक मोमबत्ती, ताश का एक पैकेट, एक आईना, तीन सिगरेट की तस्वीरें, एक पॉकेट चाकू आदि थे। अभियुक्त ने एक सीटी भी निकाली जिसे उसने बजाया और फिर कार्ड को टेबल पर रख दिया। फिर उसने 58 मांगे जो उसे दिए गए थे। उसने कार्ड पर लगे सिक्कों को एक जलती हुई मोमबत्ती के चारों ओर रख दिया। रम का पिंट जो उसने (गवाह) लाया था, टेबल पर था और कैदी ने उसमें से कुछ पैन में डाला। वह बाहर गया और घर के चारों कोनों में रम छिड़क दिया।

अभियुक्त वापस आया और बोला, "पापा 1 पापा 1 आपका मामला बहुत बुरा है 1 बाहर दो भूत हैं। क्रेओल बुरा है, लेकिन कुली बहुत बुरा है .उसके माथे पर क्रॉस का चिन्ह बना दिया और उसे अपने कुछ शिष्यों के माथे पर दबा दिया।" ओबेह आदमी को हमेशा वह व्यक्ति आसानी से पहचान सकता है जिसका नीग्रो से बहुत ज़्यादा संबंध रहा हो। उसका रूप-रंग बहुत ही भयावह होता है। वह बिना नहाए-धोए, फटे-पुराने कपड़े पहने, अक्सर आधा पागल, आमतौर पर बीमार और लगभग हमेशा एक पैर में घाव होता है।

यह आखिरी, वास्तव में, जनजाति का प्रतीक है। अक्सर वह एक बहुत बूढ़ा नीग्रो होता है जो "गुलामी के दिनों" को जानता था और आधे से ज़्यादा लोग उसके जादुई दावों पर विश्वास करते हैं। लेकिन सभी इस बदनाम किस्म के नहीं

होते। यहाँ तक कि कुछ सफ़ेद बागान मालिक भी ओबेह का इस्तेमाल करने से नहीं कतराते, हालाँकि, बेशक, उन्हें इसमें कोई विश्वास नहीं है। नीग्रो द्वारा उगाई गई फसलों की चोरी उनके जीवन की सबसे बड़ी परीक्षाओं में से एक है। कभी-कभी वे "केले के टुकड़े" या संतरे के बाग के किनारे के पेड़ों को छोटे-छोटे ताबूतों, पुरानी हड्डियों, गंदे पानी की बोतलों और अन्य ओबेह से सजाते हैं।

वस्तुओं को पकड़ो; और फिर नीग्रो घुसने और चोरी करने की हिम्मत नहीं करेंगे। 1908 के दौरान एक जमैकन जर्नल में प्रकाशित एक दिलचस्प रिपोर्ट में भूत-प्रेत के कब्जे या प्रेतबाधा के एक मामले का विवरण इस प्रकार दिया गया है: "हाल ही में हाफ-वे ट्री कोर्ट, जमैका में मामला रेक्स बनाम चार्ल्स डोनाल्डसन के मामले में अवैध रूप से भूत-प्रेत का अभ्यास करने के लिए था। रॉबर्ट रॉबिन्सन, जिन्होंने कहा कि वह सेंट एंड्रयू के पैरिश में ट्रेंच पेन में रहने वाले एक मजदूर थे, ने कहा कि मंगलवार, 8 तारीख को, वह स्पेनिश टाउन रोड पर मे पेन कब्रिस्तान के बाहर बैठे थे।

वह काम से घर लौट रहे थे, और उनके सिर पर एक सफेद रूमाल बंधा हुआ था। उन्हें बीमार महसूस हो रहा था, और इस वजह से वह बैठ गए। जब वह बैठे थे, तो कैदी उनके पास आया। वह उस आदमी को पहले से नहीं जानता था, लेकिन उसने उससे पूछना शुरू किया कि मामला क्या है। गवाह ने जवाब दिया, "मैं बहुत बीमार हूँ।" कैदी ने कहा, "नहीं, तुम बीमार नहीं हो; तुम्हारे ऊपर दो भूत हैं - एक क्रियोल और एक कुली।" गवाह ने कैदी को जाने के लिए कहा और उसे छोड़ दिया गया।

उसने अगली बार कैदी को बुधवार 9 तारीख को देखा। वह बम्पर हॉल में उसके पास आया, जहाँ वह काम कर रहा था, और उसने उससे कहा, "यार, तुम मुझे यहाँ कैसे पा गए?" "ओह," कैदी ने उत्तर दिया, "अगर कोई आदमी नरक में है तो मैं उसे ढूँढ सकता हूँ; मैं तुम्हारे पास काम देने आया हूँ?" गवाह ने फिर पूछा, "कौन सा काम F" और आरोपी ने उससे कहा कि वह "दो भूतों को हटाना चाहता है।" वह इसे £25 में कर सकता था, और वह £25 से £50 तक की किसी भी राशि के लिए "हत्या" करता था।

उसने सभी वर्गों के लिए काम किया था - श्वेत, अश्वेत, कुली, चीनी, आदि। गवाह ने कहा कि उसने उस समय उसे कोई "अच्छी सहमति" नहीं दी थी, लेकिन आरोपी के चले जाने के बाद मामले की सूचना क्लार्क और राइट को दी, जो मामले के दो गवाह थे। क्लार्क ने उससे कहा कि उसे उस आदमी को डराना नहीं चाहिए बल्कि घर जाना चाहिए। गुरुवार, 10 तारीख को, प्रतिवादी फ्रेंच पेन

में उसके यार्ड में उसके पास आया। आरोपी ने उससे कहा कि वह भूत को हटाने के लिए उसके पास वापस आएगा।
उसने उसे रम की एक बोतल और 5 शिलिंग लाने के लिए भी कहा। उसने (गवाह ने) व्यवस्था के लिए सहमति व्यक्त की। प्रतिवादी ने अपनी जैकेट उतारकर शुरुआत की। फिर उसने अपना "संक्षिप्त बैग" खोला और चाक का एक टुकड़ा निकाला। फिर आरोपी ने मेज पर तीन निशान बनाए और एक शीशी और एक सफेद पत्थर निकाला। शीशी में कुछ ऐसा सामान था जो पारा जैसा लग रहा था। उसने मेज पर अपना सामान सजा दिया।

उनमें एक बड़ी व्हिस्की की बोतल, कुछ पीली चीज़ें, एक मोमबत्ती, ताश का एक पैकेट, एक आईना, तीन सिगरेट की तस्वीरें, एक पॉकेट चाकू आदि शामिल थे। अभियुक्त ने एक सीटी भी निकाली जिसे उसने बजाया, और फिर कार्ड को टेबल पर रख दिया। फिर उसने 58 मांगे जो उसे दिए गए थे। उसने कार्ड पर लगे सिक्कों को एक जलती हुई मोमबत्ती के चारों ओर रख दिया।

रम का पिंट जो उसने (गवाह) लाया था, टेबल पर था और कैदी ने उसमें से कुछ पैन में डाला। वह बाहर गया और घर के चारों कोनों में रम छिड़क दी। अभियुक्त वापस आया और बोला, "पापा 1 पापा 1 आपका मामला बहुत बुरा है 1 बाहर दो भूत हैं। क्रेओल बुरा है, लेकिन कुली उससे भी बुरा है लेकिन अगर वह नरक से बना है तो मैं उसे पकड़ लूँगा।

फिर कैदी ने बहुत ही मज़ेदार तरीके से सीटी बजाना शुरू कर दिया - एक ऐसा तरीका जिस तरह से उसने पहले कभी सीटी बजाते नहीं सुना था। उसने एक अनजान भाषा में बोलना भी शुरू कर दिया और भूतों को बुलाने लगा।

मिस्टर लेक- क्या आपमें से कोई ऐसा नहीं है जो यह मानता हो कि भूत आपको नुकसान पहुँचा सकते हैं और परेशान कर सकते हैं? गवाह- "नहीं, मैं ऐसा नहीं हूँ।" मिस्टर लेक- "क्या आपने उसे नहीं बताया कि एक डप्पी ने आपकी पीठ पर वार किया था और आपको आवाज़ें सुनाई दे रही थीं जो आपको बुला रही थीं?" गवाह- "उसने मुझे ऐसा बताया था।"

आगे बोलते हुए, गवाह ने कहा कि उसने सभी तरह के भूतों को अलग-अलग समय पर और अलग-अलग तरह के भी देखा है। मिस्टर लेक- "सभी अलग-अलग लिंगों के, पुरुष और महिला?" गवाह- "हाँ; कोई भी आदमी जो भूत देख सकता है, वह पुरुष भूत और महिला भूत में अंतर पहचान लेगा। वे कभी सीधे नहीं चलते।"

379.वेस्टियर पेपिरस**:** अठारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व का एक मिस्र का पेपिरस, जो मुख्य रूप से जादू और जादू की कहानियों के लिए समर्पित है। शुरुआत और अंत दोनों ही कम हैं, फिर भी विषय-वस्तु का पर्याप्त हिस्सा बच गया है जिससे हम पूरे के बारे में काफी हद तक सही विचार बना सकते हैं। विडे-मैन इसके बारे में कहते हैं (प्राचीन मिस्र में लोकप्रिय साहित्य): "पपीरस बताता है कि कैसे खेओप्स - वह राजा जिसे ग्रीक लेखकों ने गिजेह के महान पिरामिड के निर्माता के रूप में सार्वभौमिक रूप से प्रसिद्ध बना दिया है - उसे जादू की कहानियाँ सुनाने का आदेश देता है।

इनमें से पहली, जिसका केवल निष्कर्ष ही बचा है, तीसरे राजवंश के लुंग त्सेर के शासनकाल में हुई मानी जाती है। अगली, जो पूरी है, कुछ पहले के राजा नेबका के शासनकाल की है। उन दिनों एक महान रईस के कानों में यह बात पड़ी कि उसकी विश्वासघाती पत्नी झील के किनारे अपने प्रेमी से मिलने की आदत में थी। जादू में कुशल होने के कारण उसने मोम से एक मगरमच्छ बनाया और अपने एक सेवक को उसे पानी में डालने का आदेश दिया। यह तुरंत एक असली मगरमच्छ में बदल गया और प्रेमी को खा गया।

सात दिन बाद राजा अपने मित्र रईस के साथ झील के किनारे टहल रहा था, जब राजा के आदेश पर बाद में मगरमच्छ किनारे पर आया और अपने शिकार को उनके पैरों पर रख दिया। राक्षस को देखकर राजा कांप उठा, लेकिन उसके निर्माता के स्पर्श से वह फिर से मोम का एक मात्र पुतला बन गया। फिर पूरी आश्चर्यजनक कहानी राजा को बताई गई, जिसने मगरमच्छ को वह सब कुछ ले जाने की अनुमति दे दी जो उसका अपना था।

वह जीव झील की गहराई में डूब गया और व्यभिचारी के साथ गायब हो गया, जबकि दोषी पत्नी को जलाकर मार दिया गया और उसकी राख को नदी में बिखेर दिया गया। जादू की एक कहानी आगे बढ़ती है, जिसका दृश्य खेओप्स के पूर्ववर्ती राजा स्नेफरू के शासनकाल के दौरान घटित होता है। एक दिन राजा बीस सुंदर युवतियों द्वारा संचालित नाव में झील पर मौज-मस्ती कर रहा था, जब एक लड़की ने एक मैलाकाइट आभूषण पानी में गिरा दिया।

राजा ने उसे इसके बदले में दूसरा आभूषण देने का वादा किया, लेकिन इससे वह संतुष्ट नहीं हुई, क्योंकि वह अपना ही आभूषण चाहती थी, कोई और नहीं। एक जादूगर को बुलाया गया जिसने एक मंत्र दोहराया, जिसके प्रभाव से उसने झील के एक हिस्से को दूसरे हिस्से के ऊपर ढेर कर दिया, जिससे पानी, जो पहले झील के बीच में बारह एल गहरा था, अब चौबीस एल ऊंचा हो गया। झील के सूखे

हिस्से में कीचड़ में पड़ा हुआ वह रत्न उसके मालिक को लौटा दिया गया; और जादूगर ने एक बार फिर अपना मंत्र बुदबुदाया और पानी अपने पहले वाले स्थान पर लौट आया।

जब खेओप्स ने अपने पूर्वजों के समय में घटित हुई विचित्र घटनाओं के बारे में बहुत रुचि के साथ कुछ समय तक सुना, तब राजकुमार होर्डुडुफ आगे आए, जिन्हें हम वास्तव में राजा एंटेफ के मकबरे के मंदिर में गाए जाने वाले गीत से जानते हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने राजा से कहा कि सभी चमत्कार अतीत की बातें नहीं हैं, बल्कि तब भी डेडा नाम का एक जादूगर रहता था, जो एक सौ दस साल का था, और हर दिन पाँच सौ रोटियाँ, एक हिस्सा गोमांस और सौ जार बीयर पीता था।

खेओप्स को इतनी दिलचस्पी थी कि उसने राजकुमार को जादूगर को अपने पास भेजने के लिए भेजा। डेडा ने शाही आह्वान का पालन किया और राजा के सामने अपना मुख्य करतब दिखाया। इसमें एक हंस, एक बत्तख और एक बैल का सिर काटना और फिर उनके सिर को फिर से शरीर पर लगाना शामिल था, ताकि वे जीव पहले की तरह जीवित और सांस ले सकें। खेओप्स जादूगर से बात करने लगा, जिसने उसे बताया कि साखेबू में एक पुजारी की पत्नी तीन बेटों के जन्म की प्रतीक्षा कर रही थी, जो भगवान रा के बच्चे थे, जिन्हें एक दिन मिस्र के सिंहासन पर बैठना चाहिए।

डेडा ने इस सूचना पर लॉन्ग के स्वाभाविक संकट को कम करने के लिए भविष्यवाणी की कि उसके बेटे और पोते के शासनकाल के बाद ही सत्ता सूर्य-देवता के वंशजों के हाथों में आनी चाहिए। लेकिन खेओप्स को सांत्वना नहीं मिली; उसने कहानी के विवरण की जांच की और घोषणा की कि वह खुद साखेबू की यात्रा करेगा, निस्संदेह अपने सिंहासन के दावेदारों को रास्ते से हटाने का अवसर खोजने के अंतिम इरादे से।

अगली कड़ी का दृश्य साखेबू में रखा गया है। तीन बच्चों के जन्म और बचपन का विस्तार से वर्णन किया गया है, और सभी प्रकार की अद्भुत घटनाओं को उनके भाग्य को प्रभावित करने के रूप में दर्शाया गया है। देवताओं ने छोटे बच्चों की सुरक्षा की परवाह की। एक दासी जिसे यह रहस्य पता था, उसे दी गई कड़ी सज़ा से क्रोधित होकर उसने खेओप्स को सब कुछ धोखा देने की धमकी दी। उसके अपने भाई ने उसे पीटा, और जब वह पानी में गई तो उसे मगरमच्छ ने उठा लिया। यहाँ पपीरस समाप्त हो जाता है, लेकिन निष्कर्ष को बहाल करना कुछ हद तक संभव है।

रा के तीन बच्चों के नाम बताते हैं कि वे पाँचवें राजवंश के पहले तीन राजाओं के लिए खड़े हैं, वह परिवार जो खेओप्स के घराने के बाद आया था। इसलिए पपीरस ने बताया होगा कि कैसे लड़के अपने जीवन के लिए बिछाए गए सभी जाल से बच निकले और नियत समय में सिंहासन पर चढ़ गए जिसके लिए वे किस्मत में थे।

380.जंगली औरतें: प्राकृतिक आत्माओं की एक प्रजाति जिस पर जर्मन किसान विश्वास करते हैं। उनके बारे में केइटली कहते हैं: "जर्मनी की जंगली औरतें स्कैंडिनेविया की एली-मेड्स से बहुत मिलती-जुलती हैं। उनकी तरह वे भी सुंदर हैं, उनके बाल बहुत सुंदर हैं, वे पहाड़ियों के बीच रहती हैं और केवल अकेले या एक-दूसरे के साथ दिखाई देती हैं। वे चरित्र की उस पवित्रता का हिस्सा हैं जो हम जर्मन बौनों में पाते हैं।

"साल्ज़बर्ग के पास ग्रेट मूर पर प्रसिद्ध वंडरबर्ग या अंडरबर्ग, जंगली महिलाओं का मुख्य निवास स्थान है। वंडरबर्ग के बारे में कहा जाता है कि यह काफी खोखला है और इसमें आलीशान महल, चर्च, मठ, बगीचे और सोने-चाँदी के झरने हैं।

जंगली महिलाओं के अलावा इसके निवासी छोटे आदमी हैं, जो इसके खजाने की देखभाल करते हैं और जो आधी रात को साल्ज़बर्ग में गिरजाघर में अपनी प्रार्थना करने के लिए आते हैं; दिग्गज, जो ग्रोडिच के चर्च में आते थे और लोगों को ईश्वरीय और पवित्र जीवन जीने के लिए प्रेरित करते थे; और महान सम्राट चार्ल्स पंचम, सुनहरे मुकुट और राजदंड के साथ, शूरवीरों और प्रभुओं के साथ।

उनकी ग्रे दाढ़ी ने दो बार उस मेज को घेर लिया है जिस पर वे बैठते हैं, और जब तीसरी बार यह उसके चारों ओर बढ़ेगी, तो दुनिया का अंत और एंटीक्रिस्ट का प्रकट होना होगा।" जंगली महिलाओं के बारे में हमारे पास केवल यही विवरण है। "ग्रोडिच गांव के निवासी और पड़ोस के किसान दावा करते हैं कि अक्सर, लगभग 1753 के आसपास, जंगली महिलाएं वंडरबर्ग से बाहर आकर उन लड़कों और लड़कियों के पास जाती थीं जो ग्लेनेग के भीतर छेद के पास मवेशियों को पाल रहे थे, और उन्हें खाने के लिए रोटी देती थीं।" जंगली महिलाएं अक्सर वहाँ आती थीं जहाँ लोग कटाई कर रहे होते थे।

वे सुबह उत्सुकता से नीचे आती थीं, और शाम को, जब लोग काम से चले जाते थे, तो वे रात का खाना खाए बिना वंडरबर्ग में वापस चली जाती थीं। "एक बार इस पहाड़ी के पास एक छोटा लड़का घोड़े पर बैठा था, जिसे उसके पिता ने खेत की मेड़ पर बाँध रखा था। तभी जंगली औरतें पहाड़ी से निकलीं और लड़के को

ज़बरदस्ती ले जाना चाहती थीं। लेकिन पिता, जो इस पहाड़ी के रहस्यों से अच्छी तरह वाकिफ़ था और जो कुछ वहाँ होता था, बिना किसी डर के उन औरतों के पास गया और लड़के को उनसे छीन लिया, और कहा: 'तुम इतनी बार पहाड़ी से बाहर क्यों आती हो और अब मेरे बच्चे को अपने साथ क्यों ले जाती हो? तुम उसके साथ क्या करना चाहती हो?' जंगली औरतों ने जवाब दिया: * वह हमारे साथ अच्छा रहेगा और घर की तुलना में उसकी अच्छी देखभाल की जाएगी।

हम लड़के से बहुत प्यार करेंगे और उसे कोई चोट नहीं लगेगी' लेकिन पिता ने लड़के को अपने हाथों से जाने नहीं दिया और जंगली औरतें फूट-फूट कर रोती हुई चली गईं। " एक बार जंगली औरतें पहाड़ी से बाहर निकलीं वंडरबर्ग, कुगेल-मिल नामक स्थान के पास, जो इस पहाड़ी के किनारे पर सुंदर रूप से स्थित है, और एक लड़के को उठा ले गया जो मवेशी पाल रहा था।

यह लड़का, जिसे हर कोई जानता था, लगभग एक साल बाद कुछ लकड़हारों ने हरे रंग की पोशाक में, इस पहाड़ी की एक चट्टान पर बैठे देखा था। अगले दिन वे उसके माता-पिता को अपने साथ ले गए, और उसे पहाड़ी पर खोजने का इरादा किया, लेकिन वे सब बेकार गए, क्योंकि लड़का फिर कभी नहीं दिखा।"

381.विलियम रूइन्स**:** विजेता विलियम का पुत्र और ग्यारहवीं शताब्दी में इंग्लैंड का तानाशाह; एक दुष्ट और क्रूर राजकुमार। वह बहुत नापसंद था, खासकर पुजारी और भिक्षुओं द्वारा, जिन्हें उसने अत्यंत गरीबी में धकेल दिया था। एक दिन जब वह शिकार पर निकला (वर्ष 1100 में, अपने जीवन के चालीसवें वर्ष में, हालांकि अपने शासनकाल के तीसवें वर्ष में) वह एक अदृश्य हाथ से छोड़े गए तीर से मारा गया।

जब वह अपनी अंतिम सांस ले रहा था, तो कॉमन आइल्स के कॉम्टे ने, जो शिकार से अलग हो गया था, एक झबरा काला बकरा एक मानव आकृति को ले जाता हुआ देखा, जिसे एक तीर से छेदा गया था। कॉम्टे ने बकरी को रुकने के लिए जोर से पुकारा और पूछा कि वह कौन है और कहां जा रहा है। बकरी ने जवाब दिया कि वह शैतान है और विलियम रु/अस को महान न्यायाधिकरण के समक्ष पेश करने के लिए ले जा रहा है, जहां उसे उसके अत्याचार के लिए दोषी ठहराया जाएगा और उसे (शैतान को) उसके निवास पर ले जाने के लिए मजबूर किया जाएगा।

382.विलो-वृक्ष**:** विलो के साथ, जैसा कि अपेक्षित था, कई अंधविश्वास जुड़े हुए थे, क्योंकि अंग्रेजी बाइबिल के अधिकृत संस्करण के अनुसार, इस्राएलियों ने विलो के पेड़ों पर अपने वीणा लटकाए थे। कहा जाता है कि बेबीलोन में यहूदियों

की कैद के समय से ही रोते हुए विलो ने इस परिस्थिति के कारण अपनी शाखाओं को झुका दिया था। आम विलो को शैतान के संरक्षण में माना जाता था, और ऐसा कहा जाता था कि अगर कोई युवा विलो पर गाँठ लगाए, उसके नीचे बैठे और उसके बाद अपने बपतिस्मा को त्याग दे, तो शैतान उसे अलौकिक शक्ति प्रदान करेगा।

383.विंडसर कैसल**:** विंडसर कैसल को कई भूत-प्रेतों का अड्डा कहा जाता है। महारानी एलिजाबेथ, हेनरी अष्टम, चार्ल्स प्रथम और कुछ जॉर्ज सभी को इस महल में भूत-प्रेतों का अड्डा माना जाता है, जबकि हेम द हंटर (q.v.) को भी ग्रेट पार्क में घूमते हुए देखा जाता है। फ़ुट गार्ड्स का एक अधिकारी, जब ड्यूटी पर था, एक बार शाम के समय लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ रहा था, जब उसने रेशमी कपड़े की सरसराहट सुनी और ऊपर देखा, तो उसने देखा कि महारानी एलिजाबेथ का भूत कमरे में सरक रहा है।

उसने अपनी तलवार कसी और मामले की सूचना दी। इस कहानी ने कुछ हफ़्तों तक पूरे देश का ध्यान खींचा। सर रिचर्ड होम्स और उनके सहायकों ने कई रातों तक निगरानी की, लेकिन भूत फिर से नहीं दिखा। कुछ समय पहले सेंट जॉन टॉवर में एक नौकरानी को लगा कि उसने भूत देखा है और वह इतनी डर गई कि वह बीमार हो गई और उसे घर भेजना पड़ा। 1908 में एक संतरी ने छत पर दिखाई देने वाली एक आकृति पर बॉल कार्ट्रिज से पांच राउंड फायर किए, जिसके बारे में उसने कहा कि वह एक भूत है।

384.जादू टोना**:** (सैक्सेन विक्का से, विटेगा का संक्षिप्त रूप, एक भविष्यवक्ता या जादूगर।) ऐसे लोगों का पंथ जो शैतानी सहायता या बुरी आत्माओं या परिचितों की सहायता से, मामूली काला जादू करने में सक्षम होते हैं। लेकिन जादूगर और चुड़ैल के बीच अंतर यह है कि जादूगर ने अपनी आत्मा शैतान को एक निश्चित अवधि के लिए पूरी तरह से अपने ऊपर प्रभुत्व के लिए बेच दी है, जबकि चुड़ैल आमतौर पर शैतानी शक्ति के समर्पित और अक्सर बुरी तरह से व्यवहार किए जाने वाले सेवक के रूप में दिखाई देती है।

लेकिन वह अक्सर किसी परिचित की मालकिन होती है, उसका गुलाम होता है, और कुछ जंगली लोगों के बीच उसकी गुप्त शक्तियाँ स्व-विकसित होती हैं। जादू टोने की अवधारणा शायद विजित जातियों के पौराणिक प्रभाव से अस्तित्व में आई थी। यह अनुष्ठान और व्यवहार में सवागो जातियों के प्रभुत्ववाद से काफी मिलता जुलता है, जहाँ से यह संभवतः उत्पन्न हुआ था। {शैतान पूजा देखें।) अर्थात, आर्य आबादी से पहले यूरोप के गैर-आर्य लोग, जो अपने धर्मों की

प्रथाओं और परंपराओं को कमोबेश गुप्त रूप से जारी रखते थे, आर्यन मन में यह विचार जगाते थे कि ऐसी प्रथाएँ एक "जादुई" चरित्र की थीं।
इस विचार को वे सहायता करने में विफल नहीं होंगे, और संभवतः ऐसे विवरणों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करेंगे जो आर्यन मन पर सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं, जिसके लिए उनके देवता "शैतान" के रूप में दिखाई देते हैं, और उनके धार्मिक अनुष्ठान जादू-टोना के रूप में। इस दृष्टिकोण का इस आधार पर मुकाबला किया गया है कि, उदाहरण के लिए, ड्रूइडिज्म के रूप में ज्ञात आर्यन-पूर्व धर्म के विलुप्त होने और जादू-टोने की पहली सूचनाओं के बीच का अंतर बहुत बड़ा है, जिसे पाटना मुश्किल है।

लेकिन आधिकारिक रूप से विलुप्त होने के बाद भी ड्रूइडिज्म लंबे समय तक अस्तित्व में रहा, और ब्रिटिश जादू-टोना इसका उत्तराधिकारी है। इस सिद्धांत को और आगे बढ़ाया गया है कि गैर-आर्य पुरोहिताई की विफलता पर पुराने धर्म को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से आक्रमणकारी जाति से नौसिखियों को अपनाया जाएगा। वर्तमान लेखक को ऐसा लगता है कि इस प्राचीन परंपरा के समर्थकों की अधिक संख्या महिलाओं की थी।

यह इस बात की ओर इशारा करता है कि आर्य महिलाओं को गैर-आर्य लोगों द्वारा गोद लिया गया था या उनसे विवाह किया गया था, जो अपने नौसिखियों और भक्तों को अधिक प्लास्टिक लिंग से भर्ती करना पसंद करते थे, स्वाभाविक रूप से एक विदेशी लोगों के मर्दाना हिस्से पर भरोसा नहीं करते थे कि वे उनके धार्मिक विचारों के साथ जुड़ जाएंगे, और पंथ में महिलाओं का लगभग अनन्य रोजगार (कम से कम ब्रिटेन में) इस प्रथा से उत्पन्न हुआ। फिर व्यक्तिगत रूप से सभी ने दीक्षा लेने का दावा किया।

गोमे कहते हैं, "मैं दीक्षा के कार्य पर बहुत जोर देना चाहता हूँ। यह सामान्य आबादी से अलग एक जाति के विचार पर जोर देता है, और यह इस जाति के अस्तित्व को उस समय से पहले का मानता है जब अपनी कथित शक्तियों का अभ्यास करने वाले लोग पहली बार ध्यान में आते हैं। इस दीक्षा के कार्य को युगों-युगों तक पीछे ले जाना, जैसा कि जादू टोने के निराशाजनक रिकॉर्ड हमें कुछ शताब्दियों तक करने में सक्षम बनाते हैं, यह स्पष्ट है कि समय-समय पर इस तरह से चुड़ैल जाति में शामिल किए गए लोगों ने इस प्रथा को जारी रखा और जाति के कार्यों को ग्रहण किया, भले ही वे नौसिखिए और अजनबी के रूप में इसमें आए थे।

इस प्रकार हम अंधविश्वास के एक अजीबोगरीब समूह के वंश के एक कृत्रिम साधन पर पहुँचते हैं, और इसे दीक्षा वंश कहा जा सकता है। गोमे (लोकगीत एक

ऐतिहासिक विज्ञान के रूप में, पृष्ठ 201 सेक.) का मानना है कि यह अवधारणा मध्य युग में एक अन्य अवधारणा से प्रभावित थी। 44 पारंपरिक प्रथाएँ, पारंपरिक सूत्र और पारंपरिक विश्वास निस्संदेह जादू टोने के तत्व हैं, लेकिन यह परंपरा की शक्ति नहीं थी जिसने मध्य युग और सत्रहवीं शताब्दी में चुड़ैलों के खिलाफ़ दयनीय कामों को जन्म दिया। ये मनोवैज्ञानिक शक्ति के कारण थे, जो आंशिक रूप से लोगों की नई अर्जित शक्ति से उत्पन्न हुई थी कि वे स्वयं बाइबल पढ़ें और इस तरह यहूदियों की चुड़ैलों की कहानियों को अपने पड़ोसियों पर लागू करें जिनके पास ऐसी शक्तियाँ या विशिष्टताएँ थीं जिन्हें वे समझ नहीं सकते थे, और आंशिक रूप से कुछ परिवारों या व्यक्तियों के समूहों द्वारा पारंपरिक प्रथाओं को जारी रखने से उत्पन्न हुई थी जो केवल दीक्षा या पारिवारिक शिक्षा द्वारा ऐसी प्रथाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकते थे।

वकील, मजिस्ट्रेट, न्यायाधीश, रईस और सम्राट जादू टोने से संबंधित हैं। ये वे दिमाग नहीं हैं जिन्हें सभ्यता ने कुचल दिया है, बल्कि वे दिमाग हैं जिन्होंने इसे गलत समझा है या इसका दुरुपयोग किया है।

385.सब्बाथ**. : —**मध्ययुगीन आपराधिक अभिलेखों में एक समारोह का वर्णन प्रचुर मात्रा में है, जिसमें समय-समय पर चुड़ैल पंथ के अनुष्ठान मनाए जाते थे। यह चुड़ैलों का सब्बाथ था। सब्बाथ आम तौर पर किसी जंगली और एकांत स्थान पर मनाया जाता था, अक्सर जंगलों के बीच या पहाड़ों की ऊंचाइयों पर, अधिकांश आगंतुकों के निवास से बहुत दूर। इससे जुड़ी परिस्थिति को साबित करना सबसे कठिन था एक स्थान से दूसरे स्थान पर परिवहन का तरीका।

चुड़ैलों ने लगभग सभी इस कथन पर सहमति जताई कि उन्होंने अपने कपड़े उतार दिए और उस विशेष उद्देश्य के लिए बने मरहम से अपने शरीर का अभिषेक किया। फिर वे एक छड़ी या किसी समान वस्तु पर चलते हुए, एक मंत्र का जाप करते हुए, अविश्वसनीय रूप से कम समय में बैठक के स्थान पर हवा के माध्यम से ले जाए जाते थे। कभी-कभी छड़ी के साथ-साथ उनके शरीर का भी अभिषेक किया जाता था।

वे आम तौर पर खिड़की या चिमनी से घर से बाहर निकलते थे, जो शायद धरती पर रहने वाले लोगों की प्रथा के अस्तित्व का संकेत देता है। कभी-कभी चुड़ैल दरवाजे से बाहर जाती थी, और वहाँ एक राक्षस बकरी के रूप में या कभी-कभी किसी अन्य जानवर के रूप में मिलता था, जो उसे अपनी पीठ पर उठाकर ले जाता था, और बैठक के भंग होने के बाद उसे वापस घर ले आता था।

उनके मुकदमों में उनसे जबरन लिए गए बयानों में, चुड़ैलों और जादूगरों ने इन सभी विवरणों की सच्चाई की गवाही दी; लेकिन जिन्होंने उनका न्याय किया, और जिन्होंने इस विषय पर लिखा, उन्होंने दावा किया कि उनके पास पुष्टि के लिए कई अन्य स्वतंत्र प्रमाण हैं। बोडिन ने हमें बताया कि लोचेस के छोटे से शहर में रहने वाले एक व्यक्ति ने देखा कि उसकी पत्नी अक्सर रात में घर से गायब रहती है, उसे उसके आचरण पर संदेह हुआ, और आखिरकार उसने अपनी धमकियों से उसे यह कबूल करने के लिए मजबूर किया कि वह एक चुड़ैल है, और वह सब्त के दिन जाती है।

अपने पति के क्रोध को शांत करने के लिए, वह उसे अगली बैठक में अपने साथ ले जाकर उसकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए सहमत हो गई, लेकिन उसने उसे चेतावनी दी कि वह किसी भी हालत में ईश्वर या उद्धारकर्ता का नाम अपने होठों से न निकलने दे। नियत समय पर उन्होंने कपड़े उतारे और खुद को अभिषेक किया, और आवश्यक सूत्र बोलने के बाद, उन्हें अचानक बोर्डो की भूमि पर ले जाया गया, जो उनके अपने निवास से बहुत दूर थी।

वहाँ पति ने खुद को दोनों लिंगों की एक बड़ी सभा के बीच पाया, जो खुद और उसकी पत्नी की तरह ही अपवित्र अवस्था में थी, और एक हिस्से में उसने शैतान को एक भयानक रूप में देखा; लेकिन आश्चर्य के पहले क्षण में उसने अनजाने में ही यह उद्गार बोल दिया, "मोन डियू आई ओ सोमेस-नूस?" और अचानक ही सब कुछ उसकी नज़रों से ओझल हो गया, उसे खेतों के बीच में ठंड और नंगा छोड़कर, जहाँ वह सुबह तक भटकता रहा, जब अपने दैनिक कामों के लिए आने वाले ग्रामीण लोगों ने उसे बताया कि वह कहाँ है, और वह अपने घर की ओर सबसे अच्छे तरीके से निकल पड़ा।

लेकिन उसने अपनी पत्नी की निंदा करने में कोई समय नहीं गंवाया, जिसे उसके मुकदमे में लाया गया, उसने अपना अपराध स्वीकार किया और उसे जला दिया गया। चूँकि चुड़ैलें आम तौर पर रात में अपने बिस्तर से उठकर अपने पति और परिवार को छोड़कर बैठकों में चली जाती थीं, इसलिए यह असाधारण लग सकता है कि उनकी अनुपस्थिति कोई बड़ी बात नहीं थी।

अधिक बार देखा गया। हालाँकि, उनके पास इस खतरे से बचने का एक तरीका था, जो गवाह हो सकते थे उन पर तंद्रा डाल कर, और उनके बिस्तर में एक ऐसी छवि रख कर जो बाहरी रूप से बिल्कुल उनकी तरह दिखती थी, हालाँकि वास्तव में वह झाड़ू या किसी अन्य समान वस्तु से अधिक कुछ नहीं थी। लेकिन यह विश्वास इतना गहरा था कि चुड़ैलें हमेशा सब्त के दिन शारीरिक रूप से नहीं

जाती थीं - कि वे केवल आत्मा में मौजूद थीं, जबकि उनका शरीर बिस्तर पर था।

जादू टोना पर कुछ अधिक तर्कसंगत लेखकों ने सिखाया कि यह एकमात्र तरीका था जिससे उन्हें सब्त के दिन ले जाया जाता था, और कई उदाहरणों में यह बात कही गई है कि यह सबसे अधिक बार सच था। राष्ट्रपति, टौरेटा ने बोडिन को बताया कि उन्होंने एक चुड़ैल की जांच की थी, जिसे बाद में डौफिन में जला दिया गया था, और जिसे इस तरह से सब्त के दिन ले जाया गया था। एक रात उसके मालिक ने उसे आग के सामने फर्श पर बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ पाया और उसे मृत मान लिया। उसे उत्तेजित करने के प्रयास में, उसने पहले उसके शरीर पर बहुत ज़ोर से प्रहार किया, और फिर उसके ज़्यादा संवेदनशील अंगों पर आग लगाई, जिसका कोई असर नहीं हुआ, उसने उसे यह विश्वास दिलाते हुए छोड़ दिया कि वह अचानक मर गई है।

उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब सुबह उसने उसे अपने बिस्तर पर बहुत पीड़ा में पाया। जब उसने पूछा कि उसे क्या हुआ, तो उसका एकमात्र उत्तर था./' हा 1 मोन मैटस्ट्रे, टैंट मावेज़ बटु 1

जब उससे और अधिक पूछा गया, तो उसने कबूल किया कि जब उसका शरीर अचेत अवस्था में पड़ा था, तब वह खुद चुड़ैलों के सब्बाथ में गई थी, और इस घोषणा के बाद उसे जेल में डाल दिया गया था। बोडिन ने हमें आगे बताया कि 1571 में बोर्डो में एक बूढ़ी महिला को जादू-टोने के लिए आग में डाल दिया गया था, और उसने कबूल किया कि उसे इस तरह से सब्बाथ में ले जाया गया था। उसके एक न्यायाधीश, जो बोडिन को व्यक्तिगत रूप से जानते थे, ने उससे यह दिखाने के लिए दबाव डाला कि उस पर क्या प्रभाव पड़ा था, और उस उद्देश्य के लिए उसे बेड़ियों से मुक्त कर दिया।

उसने अपने शरीर के विभिन्न हिस्सों पर "एक निश्चित ग्रीस" से खुद को रगड़ा, और तुरंत कठोर और अचेत हो गई और सभी को मृत दिखाई देने लगी। वह लगभग पाँच घंटे तक इसी अवस्था में रही, और फिर जैसे ही वह जल्दी से होश में आई, उसने अपने जिज्ञासुओं को बहुत सी असाधारण बातें बताईं, जिससे पता चला कि उसे आध्यात्मिक रूप से बहुत दूर स्थानों पर ले जाया गया होगा। चुड़ैलों द्वारा दिए गए सब्बाथ के विवरण में केवल थोड़े से विवरण में अंतर था;

क्योंकि उनकी सभी परीक्षाएँ एक ही मॉडल और माप पर की गई थीं - प्रोक्रस्टेस का एक वेरिटाब्लो बिस्तर, और जो लोग उस पर रखे गए थे उनके लिए समान रूप से घातक था। सब्बाथ, आम तौर पर, चुड़ैलों और राक्षसों का एक विशाल

जमावड़ा था, कभी-कभी पृथ्वी के दूर के हिस्सों से, कभी-कभी केवल उस प्रांत या जिले से जिसमें यह आयोजित किया गया था। पहुंचने पर, आगंतुकों ने अनुचित समारोहों के साथ दुष्ट को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की, और अपने नए धर्मांतरित लोगों को पेश किया।
फिर उन्होंने पिछली बैठक के बाद से किए गए सभी शरारतों का लेखा-जोखा दिया। जो लोग बुराई करने से चूक गए थे या जिन्होंने भलाई करने के लिए खुद को अनदेखा कर लिया था, उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया गया या उन्हें कड़ी सज़ा दी गई। इस सदी के उत्तरार्ध में फ्रांसीसी अदालतों के कई पीड़ितों ने कबूल किया कि दुष्ट के आदेशों को पूरा करने में अनिच्छुक या असमर्थ होने के कारण, जब वे सब्त के दिन उपस्थित हुए तो उसने उन्हें सबसे क्रूर तरीके से पीटा।

उसने एक महिला को पकड़ लिया, जिसने अपने पड़ोसी की बेटी को जादू करने से मना कर दिया था, और उसे मोसेल में डूबा देने की धमकी दी। दूसरों को उनके शरीर में पीड़ा दी गई, या उनकी संपत्ति को नष्ट कर दिया गया। कुछ को सब्त के दिन उनकी अनियमित उपस्थिति के लिए दंडित किया गया; और एक या दो, मामूली अपराधों के लिए, हवा में उड़ाए जाने के बजाय सब्त के दिन घर चलने की निंदा की गई। दूसरी ओर, जिन्होंने अपनी शरारती प्रवृत्तियों का सबसे अधिक उपयोग किया था, उन्हें सब्त के दिन बहुत सम्मानित किया गया, और अक्सर पुरस्कृत किया गया।

पैसे के उपहार के साथ। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद, दानव अपने उपासकों के बीच बुराई करने के लिए मलहम, पाउडर और अन्य सामान वितरित करता था। 1580 में मार दी गई एक फ्रांसीसी चुड़ैल ने कबूल किया कि उसके कुछ साथियों ने भेड़ या बछिया की पेशकश की थी; और एक अन्य, जिसे अगले वर्ष मार दिया गया था, ने कहा कि काले रंग के जानवर सबसे स्वीकार्य थे।

1585 में गेरबे विले में मार दी गई एक तीसरी ने घोषणा की कि इस भेंट से कोई भी छूट नहीं थी, और गरीब लोग मुर्गी या मुर्गे की पेशकश करते थे, और कुछ अपने बालों का एक गुच्छा, एक छोटी चिड़िया, या कोई भी छोटी चीज जो वे अपने हाथों में ले सकते थे। इस समारोह की उपेक्षा के बाद कठोर दंड दिया गया। कई उदाहरणों में, चुड़ैलों के कबूलनामे के अनुसार, शैतान की उनकी प्रत्यक्ष पूजा के अलावा, उन्हें क्रूस पर रौंदने, संतों की निंदा करने और अन्य अपवित्रताओं के द्वारा अपने विश्वास से घृणा दिखाने के लिए बाध्य किया गया था।

बैठक समाप्त होने से पहले, नई चुड़ैलों को उनके परिचित या शैतान मिलते थे, जिन्हें वे आम तौर पर अपने "छोटे स्वामी" के रूप में संबोधित करते थे, हालांकि

उन्हें चुड़ैलों के आदेश पर उपस्थित होना पड़ता था और उनकी इच्छाओं को पूरा करना पड़ता था। इन्हें आम तौर पर एक लोकप्रिय चरित्र के नाम दिए गए थे, जैसे कि बिल्लियों, कुत्तों और अन्य पालतू जानवरों को दिए गए थे और विभिन्न देशों में इन नामों की एक-दूसरे से समानता बहुत उल्लेखनीय है। इन सभी प्रारंभिक समारोहों के बाद, एक महान भोज का आयोजन किया गया और पूरी मंडली खाने-पीने और मौज-मस्ती करने में लग गई। कभी-कभी, विलासिता की हर वस्तु उनके सामने रखी जाती थी, और वे सबसे शानदार तरीके से दावत करते थे। हालाँकि, अक्सर, मेज पर परोसे जाने वाले मांस में टोड और चूहे और विद्रोही प्रकृति के अन्य सामान के अलावा कुछ नहीं होता था।

आम तौर पर उनके पास नमक नहीं होता था, और शायद ही कभी रोटी होती थी। लेकिन, जब सबसे अच्छी तरह से परोसा जाता था, तब भी राक्षसों द्वारा प्रस्तुत धन और भोजन सबसे असंतोषजनक चरित्र के होते थे; एक ऐसी परिस्थिति जिसके लिए कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

जब सिक्का खुले दिन के उजाले में लाया जाता था, तो आम तौर पर सूखे पत्तों या मिट्टी के टुकड़ों से बेहतर कुछ नहीं पाया जाता था; और, हालांकि, लालच से उन्होंने मेज पर खाया हो सकता है, वे आम तौर पर भूख से थकावट की स्थिति में बैठक छोड़ देते थे। इसके बाद मेजें हटा दी गईं, और दावत ने जंगली और हंगामे वाले नृत्य और मौज-मस्ती का रास्ता बदल दिया। मध्य युग का सामान्य नृत्य, या कैरोल, एक दूसरे का हाथ पकड़कर एक घेरे में व्यक्तियों द्वारा किया जाता था, बारी-बारी से एक पुरुष और एक महिला। यह, संभवतः किसानों के बीच सामान्य नृत्य था, जो आमतौर पर चुड़ैलों के सब्बाथ पर किया जाता था, इस ख़ासियत के साथ, कि उनके चेहरे के बजाय उनकी पीठ अंदर की ओर होती थी।

पुराने लेखकों ने इसका कारण यह मानकर बताया कि यह नृत्य उन्हें एक-दूसरे को देखने और पहचानने से रोकने के लिए किया गया था। लेकिन यह स्पष्ट है कि यह सब्त का एकमात्र नृत्य नहीं था; शायद समाज में बेहतर परिस्थितियों में चुड़ैलों के लिए अधिक फैशनेबल नृत्य पेश किए गए थे; और बाद के युग के नैतिकतावादी दुर्भावनापूर्ण रूप से यह आरोप लगाते हैं कि शैतान द्वारा अपने पीड़ितों की कल्पना को गर्म करने के लिए आविष्कार किए गए बहुत से नृत्य, जो बहुत ही शालीन चरित्र के नहीं थे, बाद में समाज के उन वर्गों द्वारा अपनाए गए थे जो सब्त के दिन अक्सर नहीं आते थे।

यह एक अजीब परिस्थिति के रूप में देखा जा सकता है कि आधुनिक वाल्ट्ज का पता सबसे पहले चुड़ैलों और उनके शैतानों की बैठकों में लगाया जाता है।

लगभग हर मामले में यह भी स्वीकार किया गया था कि सब्त के दिन नृत्य करने से ऐसी थकावट बहुत अधिक होती है जो आमतौर पर ऐसे अभ्यासों से होती है। कई चुड़ैलों ने घोषणा की कि घर लौटने पर वे आमतौर पर दो या तीन दिनों तक अपने बिस्तर से उठने में असमर्थ होती थीं। उनका संगीत भी किसी भी तरह से सामान्य नहीं था।

गाने आम तौर पर अश्लील, या अश्लील, या हास्यास्पद होते थे। वाद्ययंत्रों में काफी विविधता थी, लेकिन सभी में संगीत की हास्यपूर्ण प्रकृति थी।"कुछ लोग छड़ी या हड्डी पर बांसुरी बजाते थे; दूसरे को वीणा के लिए घोड़े की खोपड़ी पर प्रहार करते देखा गया; वहाँ आपने उन्हें एक ओक के तने पर छड़ी से ढोल बजाते देखा; यहाँ, अन्य लोग शाखाओं से तुरही बजा रहे थे। वाद्य जितना तेज़ बजता, उतनी ही अधिक संतुष्टि मिलती; और नृत्य जंगली से जंगली होता गया, जब तक कि यह भ्रम के एक विशाल दृश्य में विलीन नहीं हो गया, और ऐसे दृश्यों में समाप्त हो गया, जिनके बारे में भूत-विद्या पर पुराने ग्रंथों में विस्तार से वर्णन किया गया है, लेकिन उन पर पर्दा डालना बेहतर होगा।"

चुड़ैलें मुर्गे के बांग देने से पहले अपने घरों तक पहुँचने के लिए समय पर अलग हो गईं। फिर हम देखते हैं कि शैतान ने गैर-आर्यों के पुराने और परित्यक्त पंथों के देवताओं की जगह ले ली थी, जिनके अश्लील अनुष्ठानों में एक जाति के "दीक्षित या "गोद लिए गए" नवदीक्षित लोग शामिल होते थे, जिसके लिए वे आम तौर पर घृणित थे, कि चुड़ैलें अक्सर परिचितों के माध्यम से काम करती थीं, जिनके आकार वे लेने में सक्षम थीं, या सीधे शैतानी एजेंसी के माध्यम से। लेकिन संभवतः जादू टोने में पौराणिक तत्व भी थे।

चुड़ैलों की शक्तियाँ। - जनता की नज़र में चुड़ैलों की शक्तियाँ असंख्य थीं। इनमें से सबसे अनोखी थीं: बुरी नज़र से डराने की क्षमता (q.v.) नाविकों को हवा बेचना, जानवरों पर अधिकार, और खुद को जानवरों के आकार में बदलने की क्षमता। इस प्रकार, गोम्मे कहते हैं - "सबसे सामान्य परिवर्तन बिल्लियों और खरगोशों में होते हैं, और कम बार लाल हिरण में, और इनने भेड़ियों की जगह ले ली है। इस प्रकार, बिल्ली का परिवर्तन यॉर्कशायर में पाया जाता है, खरगोश का परिवर्तन डेवोनशायर, यॉर्कशायर और वेल्स तथा स्कॉटलैंड में, हिरण का परिवर्तन कंबरलैंड में, कौवा का परिवर्तन स्कॉटलैंड में, मवेशी का परिवर्तन आयरलैंड में।

वास्तव में चुड़ैलों और निचले जानवरों के बीच संबंध बहुत करीबी है, और यूरोप में शायद ही कहीं ऐसा होता है कि इस संबंध को गौण स्थान पर रखा गया हो। कहानी के बाद कहानी, प्रथा के बाद प्रथा जादू टोने से संबंधित दर्ज की जाती है,

और पशु परिवर्तन हमेशा दिखाई देता है। चुड़ैलों के पास शैतान द्वारा दिए गए जादुई मरहम के माध्यम से खुद को अदृश्य बनाने और उन्हें दर्शाने वाली मोम की मूर्ति में कील ठोंककर दूसरों को नुकसान पहुँचाने की शक्ति भी थी।

जंगली लोगों के बीच जादू टोना। - जंगली लोगों के बीच जादू टोना, निश्चित रूप से, दुनिया भर में बर्बर लोगों के बीच प्रचलित राक्षसी पंथों से जुड़ा हुआ है। इनका संकेत असभ्य जातियों से संबंधित विभिन्न लेखों में दिया गया है। जादू टोना नाम ऐसे क्रूर राक्षस-पंथों के लिए एक सुविधाजनक अंग्रेजी लेबल मात्र है, जैसे "जादूगर" उन लोगों के लिए लागू होता है जो इन दुष्टों को "पहचान लेते हैं"। जादू टोना के लिए साक्ष्य। - पोडमोर (आधुनिक अध्यात्मवाद) कहते हैं कि जादू टोने के लिए सबूत चार मुख्य शीर्षकों के अंतर्गत आते हैं: (ए) चुड़ैलों की खुद की स्वीकारोक्ति; (बी) लाइकेनथ्रोपी, प्रेत, आदि के पुष्टिकारक सबूत; (सी) चुड़ैल के निशान; (डी) कथित पीड़ितों पर उत्पन्न बुरे प्रभावों का सबूत। "(ए) - जैसा कि कुख्यात है, अधिकांशतः स्वीकारोक्ति यातना द्वारा या रिहाई के झूठे वादों द्वारा प्राप्त की जाती थी।

इंग्लैंड में, जहाँ यातना कानून द्वारा समर्थित नहीं थी, मैथ्यू हॉपकिंस और अन्य पेशेवर जादूगरनी-खोजकर्ता आम तौर पर कुछ समान रूप से कुशल विकल्प तैयार कर सकते थे, जैसे कि धीरे-धीरे भूखा रखना, जबरन नींद न आना, या घंटों तक विवश और दर्दनाक मुद्रा में रहना। लेकिन इन जबरन स्वीकारोक्ति के अलावा, इस बात के सबूत हैं कि कुछ मामलों में आरोपी व्यक्ति वास्तव में उनके खिलाफ गवाही के संचय, जनता की राय के दबाव और उन विलक्षण परिस्थितियों से प्रेरित थे, जिनमें उन्हें रखा गया था, यह मानने और स्वीकार करने के लिए कि वे वास्तव में चुड़ैल थीं। सलेम की कुछ महिलाएँ जिन्होंने जादू-टोने के लिए दोषी होने की दलील दी थी, बाद में जब उत्पीड़न कम हो गया और उन्हें रिहा कर दिया गया, तो उन्होंने बताया कि उन्हें जादू-टोना किया गया था।

"वे अपनी बुद्धि से भी भयभीत और भयभीत थे" और उन्होंने वह स्वीकार किया जिसमें वे निर्दोष थे। और ऐसे बहुत से लोग थे जिन्होंने स्वेच्छा से जादू-टोना, रात्रिकालीन सवारी, शैतान के साथ संधि और बाकी सब करने की बात स्वीकार की/' इस स्वैच्छिक स्वीकारोक्ति के सबसे उल्लेखनीय उदाहरण बच्चों द्वारा दिए गए हैं। जादू-टोने पर पहले के लेखकों में भी यह राय थी कि रात्रिकालीन सवारी और शैतान के साथ भोज केवल भ्रम थे, हालांकि इससे चुड़ैल का अपराध कम नहीं होता।

और सोलहवीं शताब्दी में, कम से कम अंग्रेजी बोलने वाले देशों में यह विश्वास आम तौर पर जादू-टोने में विश्वास करने वालों और उनके विरोधियों द्वारा समान रूप से माना जाता था। इस प्रकार गॉल: "लेकिन अधिक विलक्षण या आश्चर्यजनक (चुड़ैलों द्वारा उनके बयानों में वर्णित बातें) केवल शैतान द्वारा किए गए हैं; चुड़ैलें हर समय या तो एक मग्न परमानंद, एक मंत्रमुग्ध नींद, या एक उदास सपने में होती हैं; और चुड़ैलों की कल्पना, कल्पना, सामान्य ज्ञान, केवल इस बात से भ्रमित होती है कि अब क्या किया जा रहा है, या दिखावा किया जा रहा है। यहां तक कि एंटोनेट बोरिगन ने भी अपने छात्रों को नाश्ते में "रोटी और मक्खन के बड़े टुकड़े" खाते हुए देखा, उन्हें बताया कि अगर वे वास्तव में पिछली रात शैतान के सब्बाथ पर स्वादिष्ट मांस खाते हैं, तो उन्हें इतनी अच्छी भूख नहीं हो सकती है।"

(बी) - लेकिन अगर चुड़ैल के अपने अद्भुत कारनामों के बारे में खुद के विवरण को, सबसे अच्छे रूप में, एक दुःस्वप्न की अस्पष्ट याद के रूप में समझाया जा सकता है, तो दूसरों द्वारा बताए गए चमत्कारों के लिए इस स्पष्टीकरण से परे जाने की शायद ही आवश्यकता है। ज़्यादातर मामलों में चमत्कारों के लिए इतना भी आधार मानने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि सबूत (*.£., लाइकेनथ्रोपी के लिए) पूरी तरह से पारंपरिक हैं। और जब हमें प्रत्यक्ष रूप से विवरण मिलते हैं, तो वे आम तौर पर उड़न या खरगोशों के बूढ़ी महिलाओं में बदलने जैसे मामलों से संबंधित नहीं होते हैं, बल्कि केवल शाम के समय दिखाई देने वाली अस्पष्ट आकृतियों या काले कुत्ते की अस्पष्ट उपस्थिति से संबंधित होते हैं।

फिर भी साक्ष्य लगभग विशेष रूप से अज्ञानी किसानों से आता है, और घटनाओं के वर्षों बाद दिया जाता है।" ** (सी) - "चुड़ैल के निशान" के साक्ष्य हमें बहुत चिंतित नहीं करते हैं। मैथ्यू हॉपकिंस और अन्य चुड़ैल-खोजकर्ताओं ने जिन असंवेदनशील पैच पर भरोसा किया, वे कुछ मामलों में वास्तविक हो सकते हैं। इस तरह के असंवेदनशील क्षेत्र हिस्टीरिकल विषयों में पाए जाते हैं, और आधुनिक समय में सुझाव के माध्यम से असंवेदनशीलता का उत्पादन एक आम बात है।

कथित चुड़ैलों के स्तन, जिन्हें शैतान चूसते थे, लगभग विशेष रूप से अंग्रेजी बोलने वाले देशों में पाए जाते हैं, शैतानों की तरह। कोई भी मस्सा, फोड़ा या सूजन शायद आरोप के लिए पर्याप्त वारंट बन जाएगा; हम कॉटन माथेर में महिलाओं की एक जूरी के बारे में पढ़ते हैं, जो एक चुड़ैल के शरीर पर एक अप्राकृतिक स्तन पाती है, जिसे तीन या चार घंटे बाद दूसरी बार खोजे जाने पर नहीं खोजा जा सका, और एक चुड़ैल के स्तन के बारे में। एक छोटे बच्चे की

उंगली पर निशान,* जो "एक गहरे लाल धब्बे जैसा था, जो पिस्सू के काटने के बराबर था।"

और वह जादू-चिह्न जिसने जॉर्ज बरोज़ के मामले में इंक्रीज माथेर के मन में विश्वास पैदा किया, वह था उसकी एक भारी बंदूक को हाथ की दूरी पर पकड़ने की क्षमता, और डोंगी से किनारे तक साइडर की एक बैरल ले जाने की क्षमता।"
"(घ) - चुड़ैलों के कथित पीड़ितों द्वारा झेली गई चोटों पर आधारित अधिकांश साक्ष्यों के बारे में गंभीरता से बात करना मुश्किल है।

अगर किसी व्यक्ति की गाय सूख गई, अगर उसका घोड़ा लड़खड़ा गया, उसकी गाड़ी गेट में फंस गई, उसके सूअर या मुर्गियाँ बीमार हो गईं, अगर उसके बच्चे को दौरा पड़ा, उसकी पत्नी या खुद को असामान्य दर्द हुआ, तो यह किसी भी बूढ़ी महिला के खिलाफ़ अदालत में स्वीकार्य सबूत था, जिसके बारे में माना जाता था कि उसने पिछले बारह महीनों या बारह सालों में उसके और उसके खिलाफ़ अपराध का कोई कारण सोचा था।

इस तरह की मूर्खताएँ इतनी प्रसिद्ध हैं कि उन्हें दोहराने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जादू टोने की एक और विशेषता है, कम से कम सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैंड और अमेरिका में होने वाले मामलों की तरह, जिसे इतनी अच्छी तरह से पहचाना नहीं गया है, और जिसका हमारे जीवन पर अधिक सीधा असर पड़ता है।

वर्तमान जांच--दुर्भावनापूर्ण या केवल उन्मादी बच्चों और युवा महिलाओं द्वारा डायन उत्पीड़न के प्रारंभिक चरणों में निभाई गई प्रमुख भूमिका।" जादू-टोने के लक्षण। - श्री पोडमोर टिप्पणी करते हैं; "कथित जादू-टोने के लक्षण, इन सभी मामलों में एक जैसे थे। पीड़ितों को दौरे या ऐंठन की समस्या होती थी, जिसका निदान या उपचार करने में डॉक्टर असमर्थ थे। इन दौरों में बच्चे आमतौर पर उस बूढ़ी औरत को पुकारते थे जो उनकी बीमारी का काल्पनिक कारण थी; कभी-कभी, कमरे में उसकी आकृति को देखने का दावा करते थे, और चाकू या अन्य हथियार से उस पर वार भी करते थे।

(अधिकांश निर्णायक मामलों में अभिलेखों में यह बात दर्ज है कि बुढ़िया को तुरंत खोजे जाने पर वह अपने शरीर पर एक घाव को छिपाने का प्रयास करती हुई पाई जाती थी।) ये दौरे, जो कभी-कभी थोड़े-थोड़े अंतराल के साथ, कई सप्ताह तक चलते थे, कथित चुड़ैल के आने से या, जैसा कि हचिंसन ने उल्लेख किया है, सहानुभूति रखने वाले दर्शकों की उपस्थिति से हिंसा में बढ़ जाते थे।

जैसा कि समकालीन इतिहासकारों ने भी आम तौर पर उल्लेख किया है, जब चुड़ैल को कैद कर लिया जाता था या उसे दोषी ठहराया जाता था, तो दौरे कम हो जाते थे या पूरी तरह से बंद हो जाते थे; दूसरी ओर, यदि कथित चुड़ैल को रिहा कर दिया जाता था, तो पीड़ित को भयानक यातनाएँ सहनी पड़ती थीं, इतना अधिक कि सलेम के मुकदमों में एक बुढ़िया को जूरी द्वारा बरी कर दिया गया था, लेकिन पीड़ित व्यक्तियों द्वारा अदालत में की गई भयानक चीख-पुकार के कारण, उसे तुरंत फिर से दोषी ठहराया गया।

चुड़ैल का स्पर्श हमेशा गंभीर हमलों को भड़काता था, वास्तव में, चुड़ैल के साथ संपर्क या पीड़ित द्वारा पहने गए किसी वस्त्र के माध्यम से उसके और पीड़ित के बीच संबंध स्थापित करना, जैसा कि मिस्ट्रेस फेथ कॉर्बेट के मामले में था, आमतौर पर जादू के लिए एक आवश्यक शर्त माना जाता था। एक बार यह संबंध स्थापित हो जाने पर चुड़ैल की मात्र नज़र या उसकी बुरी इच्छा की दिशा ही पर्याप्त होती थी।

सेलम में पीड़ित, जैसा कि मैथर्स गवाही देते हैं, परीक्षण पर मौजूद गरीब दुष्टों की दुर्भावनापूर्ण निगाहों से अदालत में बहुत प्रताड़ित हुए थे; और दो 'दूरदर्शी' लड़कियों ने विलक्षण सटीकता के साथ भविष्यवाणी करके सबूतों के वजन को बहुत बढ़ा दिया, जब उस समय मौजूद पीड़ित व्यक्तियों में से ऐसे या ऐसे लोग हानिकारक प्रभाव महसूस करेंगे, और पीड़ा के लिए चिल्लाएंगे।

यह भी जोड़ा जाना चाहिए - हालांकि साक्ष्य जैसा कि हम अब इस शब्द को समझते हैं, क्योंकि आरोपित तथ्य निश्चित रूप से व्यावहारिक रूप से नगण्य है - कि यह आम तौर पर बताया गया था कि चुड़ैल का शिकार, आंखों पर पट्टी होने के बावजूद, अपने उत्पीड़क को केवल स्पर्श से अन्य सभी व्यक्तियों से अलग कर सकता था, और यहां तक कि उसके दृष्टिकोण का पूर्वानुमान लगा सकता था और काफी दूरी से उसके कार्यों को पहचान सकता था। - • 14 ऐंठन और कैटेलेप्टिक हमलों का प्रभाव, जिसे आधुनिक विज्ञान बिना किसी हिचकिचाहट के केवल हिस्टीरिया का परिणाम मानकर खारिज कर देगा, कई मामलों में अधिक भौतिक प्रकार की अभिव्यक्तियों द्वारा बढ़ गया था।

पीड़ित के लिए पिन, सुई, लकड़ी, ठूंठ और अन्य पदार्थों की उल्टी करना एक सामान्य विशेषता थी; या उसके मांस में कांटे या सुइयां पाई जाती थीं। ग्लेनविल द्वारा दर्ज एक मामले में एक उन्मादी नौकरानी, मैरी लॉन्गडन, सामान्य दौरे, पिन की उल्टी, आदि के अलावा, लगातार उस पर फेंके जाने वाले पत्थरों से पीड़ित थी, जो पत्थर जमीन पर गिरने पर तुरंत गायब हो जाते थे। उसके

मालिक ने अदालत में पत्थरों के गिरने और उनके चमत्कारिक रूप से गायब होने की गवाही दी।

इसके अलावा, उसी मैरी लॉन्गडन को अक्सर एक अदृश्य शक्ति द्वारा घर की छत पर ले जाया जाता था, और वहाँ "दो सोलर बीम के बीच एक बोर्ड पर लिटाया जाता था," या एक संदूक में डाल दिया जाता था, या दो पंखों के बीच आधा दम घोंट दिया जाता था। "ये धोखाधड़ी हमें भले ही घिनौनी लगे, लेकिन यह अनोखी बात है कि अधिकांश भाग के लिए वे अज्ञानी किसानों द्वारा ही नहीं, बल्कि एक अदालत के बड़े थिएटर में, जिनके लाभ के लिए नाटक खेला गया था, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि वे संदेहास्पद रहे। लेकिन वहाँ स्वीकारोक्ति या पता लगाने के कुछ कुख्यात उदाहरण हैं। एडमंड रॉबिन्सन, वह लड़का जिसके आरोप पर लंकाशायर चुड़ैलों की सुनवाई हुई थी, ने बाद में 'धोखाधड़ी' करने की बात स्वीकार की।

अन्य युवकों को मिर्गी के दौरे के दौरान मुंह में ब्लैकलेड के साथ पाया गया, वे अपने मूत्र को स्याही से रंगते थे, बाद में उल्टी करने के लिए अपने शरीर के चारों ओर टेढ़े-मेढ़े पिन छिपाते थे, अपने पैरों की उंगलियों से बिस्तर के खंभों को खरोंचते थे, और दिखावटी उपवास के दौरान चुपके से पेट भर खाते थे। लेकिन आम तौर पर दर्शक ऐसे शगुन की वास्तविकता के बारे में पहले से ही इतने आश्वस्त थे कि वे इस तरह के किसी विशेष प्रदर्शन के दावों की जांच करना बेकार समझते थे।

** ऐसे मामलों में यह जानना मुश्किल है कि आत्म-धोखा कहाँ समाप्त होता है और दुर्भावनापूर्ण छल कहाँ से शुरू होता है। न ही हिस्टीरिया के इन भूतपूर्व प्रकोपों की जांच, जो अपने आप में तुच्छ हैं, लेकिन उनके परिणाम भयानक हैं - "वर्तमान संबंध में रुचिकर होगी, सिवाय इस तथ्य के कि हम यहां उन पोल्टरजिस्ट अभिव्यक्तियों का आदिम रूप पाते हैं, जिन्होंने 1848 में आधुनिक अध्यात्मवाद में विश्वास को लोकप्रिय प्रोत्साहन दिया था, और जो अभी भी उन लोगों द्वारा अपील की जाती है जो आत्म-निरीक्षण कक्ष की भौतिक अभिव्यक्तियों की वास्तविकता को बनाए रखते हैं, जो कि इसी तरह की घटनाओं के उदाहरण हैं।"

386.ब्रिटिश और महाद्वीपीय जादू टोना प्रणालियों के बीच अंतर : .- ब्रिटिश और महाद्वीपीय जादू टोना प्रणालियों के बीच मुख्य अंतर यह प्रतीत होता है कि जहाँ ब्रिटिश और महाद्वीपीय जादू टोना प्रणालियों में लगभग विशेष रूप से महिला प्रणाली थी, वहीं महाद्वीपीय प्रणाली में जादूगरों (जैसा कि विदेशी चुड़ैलों को कहा जाता था) की श्रेणी में पुरुष तत्व को शामिल करने का पक्ष लिया

गया था; कम से कम फ्रांस और जर्मनी में तो ऐसा ही था, लेकिन इस बात के प्रमाण हैं कि हंगरी और स्लावोनिक देशों में महिला तत्व अधिक संख्या में थे।

आयरलैंड में भी हम महिलाओं को प्रमुख पाते हैं; यह संभवतः पहले उल्लेखित परिस्थिति के कारण है कि गैर-विदेशी पुरोहिताई अपने पतन के दौरान लगभग पूरी तरह से महिलाओं के पदों पर निर्भर हो गई थी। लेकिन जादू टोने के विभिन्न रूपों को यूरोपीय देशों से संबंधित कई लेखों में विधिवत दर्ज किया गया है।

387.जादू-टोने में विश्वास का विकास : - यह महत्वपूर्ण है कि शुरुआती समय में जादू-टोने के अलौकिक पक्ष को सार्वजनिक रूप से बहुत कम मान्यता मिली। लोग जादुई जहर और चुड़ैलों द्वारा तूफान उठाने जैसी चीजों पर विश्वास करते थे, लेकिन वे इस तरह के अंधविश्वासों पर विश्वास करने से इनकार करते थे कि चुड़ैल हवा में सवार होती है या किसी भी तरह से शैतानी एजेंसी से संवाद करती है। 800 ई. में एक आयरिश धर्मसभा ने हवा में उड़ने और पिशाचवाद के विश्वास को ईसाई सिद्धांत के साथ असंगत बताया और हंगरी के स्टीफन और रेजिनो जैसे कई शुरुआती लेखकों ने कहा कि रात में उड़ना और इसी तरह की प्रथाएं केवल एक भ्रम हैं।

वास्तव में जो लोग इन मान्यताओं को मानते थे उन्हें प्रायश्चित द्वारा सक्रिय रूप से दंडित किया जाता था। जादू-टोने में विश्वास के बाद के विकास के सामने, यह स्पष्ट संदेह लगभग आश्चर्यजनक है, और यह सबसे अजीब बात है कि दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दियों ने सोलहवीं और सत्रहवीं द्वारा व्यापक रूप से अपनाए गए अंधविश्वासों को अस्वीकार कर दिया। तेरहवीं से पंद्रहवीं शताब्दियों तक हम जादू-टोने और भूत-प्रेत की अवधारणा को विद्वानों के लेखन और अविश्वास के उदय से निपटने के लिए इनक्विजिशन की संस्था द्वारा बहुत आगे और सहायता प्राप्त करते हुए पाते हैं।

जादू और टोना-टोटका से संबंधित प्रश्नों और चुड़ैलों, जादूगरों और "काले जादू" में चिकित्सकों की आदतों और रीति-रिवाजों से संबंधित बहुत सारा साहित्य प्रसारित किया गया, और कई बाल काटे गए। चर्च ने खुशी-खुशी इस अभियान में शामिल हो गया, जिसे वह अंधकार की शक्तियों के रूप में मानता था, और वास्तव में आरोपी और आरोप लगाने वाले दोनों ही सबसे भयानक भ्रमों में फंसे हुए थे - भ्रम जो पूरे समाज को महंगा पड़ने वाले थे। दानव विज्ञान की शैक्षणिक अवधारणा यह थी कि चुड़ैल एक महिला नहीं बल्कि एक राक्षस थी।

मध्यकालीन विद्वानों की सरलता ने जादू-टोने की घटनाओं पर सभी आपत्तियों को दूर कर दिया। बुतपरस्त समय के देवताओं को जादू-टोना करने वाले के रूप में उद्धृत किया गया था, और विशेष रूप से चर्च के हलकों में, इस विषय पर पांडित्य ने दंगा कर दिया। फ्रांस में बोडिन और जर्मनी में स्प्रेंगर जैसे न्यायाधीशों या जिज्ञासुओं का एक वर्ग भी उभरा, जिन्होंने चुड़ैलों की खोज करने, उन्हें परीक्षण में डालने और आम तौर पर जादू-टोने के मुकदमों में अध्यक्षता करने के तरीके पर लंबे-लंबे ग्रंथ लिखे। वर्तमान दानव विज्ञान पर इन पाठ्यपुस्तकों की निर्मम क्रूरता का हिसाब केवल इस संभावना से लगाया जा सकता है कि उनके लेखकों ने अपने चर्च और धर्म के प्रति निष्ठा के उद्देश्यों के माध्यम से अपनी रचना में खुद को उचित महसूस किया।

किसी भी समय जादू-टोने के आरोप में लाए जाने की संभावना से विशेष रूप से बुद्धिमानों के बीच फैला भयानक आतंक ने चीजों की असहनीय स्थिति पैदा कर दी। बुद्धिजीवी को किसी भी समय किसी भी दुष्ट द्वारा जादू-टोने के आरोप में दोषी ठहराया जा सकता है। पद या शिक्षा ऐसे आरोप के विरुद्ध कोई सुरक्षा नहीं थी और यह अजीब बात है कि आबादी के अधिक विचारशील और गंभीर हिस्से ने अज्ञानता और अंधविश्वास के कारण उत्पन्न मामलों की भयावह स्थिति को समाप्त करने का कोई प्रयास नहीं किया।

बेशक ऐसा करने में उनके सक्षम होने के खिलाफ मुख्य कारण यह था कि पूरी व्यवस्था चर्च द्वारा समर्थित थी, जिसके हाथों में जादू-टोने के लिए परीक्षणों की पूरी प्रक्रिया थी। अजीब बात यह है कि कॉन्वेंट और मठ अक्सर राक्षसी कब्जे के केंद्र थे। इनक्यूबी और सक्कुबी की अवधारणा निस्संदेह भिक्षु और नन की तपस्वी यातनाओं से उत्पन्न हुई थी। बड़े पैमाने पर परीक्षण; भी, दुखी लोगों के, जो मानव जाति के दुश्मन के सब्बाटिक तांडव में भाग लेने का आरोप लगाया गया था, इस तरह की विस्तृत रूप से किया गया था कि जनता के दिमाग में आतंक फैल गया।

उन बदकिस्मत लोगों पर की जाने वाली यातनाएँ आम तौर पर सबसे भयानक वर्णन की होती थीं, लेकिन माना जाता था कि ये उन लोगों की आत्माओं की भलाई के लिए होती थीं, जिन्होंने इन्हें सहा था। फ्रांस में इनमें से अधिकांश परीक्षण पंद्रहवीं शताब्दी में हुए थे; जबकि इंग्लैंड में हम पाते हैं कि उनमें से अधिकांश सत्रहवीं शताब्दी में प्रचलित थे।

इनके बारे में पूरा विवरण फ्रांस और इंग्लैंड लेखों में मिलेगा। 1691 से 1692 में कॉटन ब्लैथर (अमेरिका देखें) के तहत न्यू इंग्लैंड में कट्टरता का प्रसिद्ध विस्फोट किसी भी तरह से अंग्रेजी बोलने वाले देश में आखिरी नहीं था, क्योंकि

1712 में इंग्लैंड में एक महिला को जादू टोने का दोषी ठहराया गया था, और स्कॉटलैंड में जादू-टोने के लिए आखिरी परीक्षण और निष्पादन 1722 में हुआ था जर्मनी में 1793* तक और लैटिन दक्षिण अमेरिका के मामले में पेरू में 1888 में एक महिला को जला दिया गया था।

जादू टोने में विश्वास की मृत्यु पहले की तुलना में आलोचना की अधिक समझदार भावना के कारण हुई। यहां तक कि जांचकर्ताओं और अन्य अदालतों की मंद बुद्धि ने भी यह देखना शुरू कर दिया कि जिन दयनीय प्राणियों को उन्होंने सजा सुनाई थी, उन्होंने या तो यातना की चरम सीमा के कारण अपराध स्वीकार कर लिया था, या फिर वे शैतानी शक्ति के साथ अपने संबंध की प्रकृति के बारे में भ्रम में थे। रेजिनाल्ड स्कॉट ने अपनी डिस्कवरी ऑफ विचक्राफ्ट (1584) में साबित किया कि चुड़ैल का यह विश्वास कि वह शैतान की दासी थी, पूरी तरह से काल्पनिक था, और परिणामस्वरूप उनके काम पर ब्रिटिश सोलोमन, जेम्स।

का क्रोध आया, जिन्होंने अपनी डेमोनोलोजी में उनका गर्मजोशी से जवाब दिया। लेकिन फ्रेडरिक वॉन स्पेक की 1631 की पुस्तक कॉटियो क्रिमिनलिस में तर्कवादी दृष्टिकोण से और भी अधिक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए गए - वास्तव में इतने महत्वपूर्ण विचार कि दानवविज्ञानी बोडिन ने उनकी निंदा की और मांग की कि उन्हें उनके पीड़ितों की लंबी सूची में शामिल किया जाना चाहिए।

388.जादू टोने का मनोविज्ञान : - आजकल जब जंगली जादू टोने की स्थितियों की बारीकी से जांच की गई है और उन पर टिप्पणी की गई है, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि मध्य युग की चुड़ैल और जादूगरनी, अफ्रीका, अमेरिका, एशिया और अन्य जगहों की मूल जातियों के बीच उनके प्रोटोटाइप की तरह, अपनी जादुई शक्तियों और अदृश्य और आम तौर पर शैतानी एजेंसियों के साथ अपने संबंध में दृढ़ विश्वास रखती हैं। यह एक अजीब परिस्थिति है कि कई मामलों में दो या दो से अधिक चुड़ैलों से लिए गए बयान, जब उनमें से कई एक ही मामले में शामिल थीं, लगभग हर विवरण में एक दूसरे से मेल खाती हैं।

इसका मतलब यह होगा कि ये महिलाएँ सामूहिक मतिभ्रम से पीड़ित थीं, और वास्तव में उनका मानना था कि उन्होंने अलौकिक प्राणियों को देखा था जिनके साथ उन्होंने संगति की थी, और उन अनुष्ठानों और कृत्यों से गुज़री थीं जिनके लिए उन्हें पीड़ा हुई थी। जादू टोने के खिलाफ मध्ययुगीन अभियान में एक ऐसा दौर आया जब यह स्वीकार किया गया कि पूरी प्रणाली मतिभ्रम की थी; फिर भी, दानवशास्त्रियों ने कहा,यह अपराध का शमन नहीं था, क्योंकि ऐसे शैतानी कृत्यों

की कल्पना करना भी उतना ही बुरा था जितना कि वास्तव में उनमें भाग लेना। ऐसे साक्ष्य भी हैं जो इस विश्वास को जन्म देते हैं कि चुड़ैल के पास सम्मोहन और टेलीपैथी की कुछ छोटी-छोटी शक्तियाँ थीं, जो उसे अपने इस विश्वास में वास्तविक विश्वास दिलाती थीं कि वह जादुई भय का प्रयोग करती है।

फिर से अध्यात्मवाद की घटनाएँ और धोखाधड़ी के लिए इसकी बड़ी संभावनाएँ बताती हैं कि इन सब्बाटिक बैठकों में अधिक चतुर या नेताओं के बीच कुछ समान प्रणाली का उपयोग किया जा सकता था, जो अस्तित्व की बहन के बीच अज्ञानी लोगों को शैतानी शक्तियों के बीच पूरी तरह से आश्वस्त कर देती थी। ट्रान्स और हिस्टीरिया, ड्रग्स और मलहम, यह मानने का अच्छा कारण है, का भी बेहिचक इस्तेमाल किया जाता था, लेकिन चुड़ैलों के बारे में विश्वास का महान स्रोत निस्संदेह आत्म-सुझाव में मौजूद है, जो चर्च और शैक्षिक स्रोतों से पोषित और उकसाया गया है, और किसी भी तरह से लोकप्रिय विश्वास से कम नहीं हुआ है।

जब से उपरोक्त लेख लिखा गया है, मिस एम. ए. मरे, यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन में मिस्र विज्ञान की व्याख्याता द्वारा जादू टोने की घटनाओं की विस्तृत जांच की गई है। सी. जी. लेलैंड के "अराडिया, या द विच्स ऑफ टैली" और अन्य आधुनिक लेखकों के सुझावों पर अपने निष्कर्षों को आधार बनाते हुए, वह इस परिकल्पना की ओर झुकती हैं कि जादू टोना वास्तव में एक प्राचीन प्रकृति-धर्म का आधुनिक और अपमानित वंशज था, जिसके अनुष्ठान वास्तव में निर्जन स्थानों पर किए जाते थे और इसमें बाल-बलि और अन्य बर्बर रीति-रिवाज शामिल थे।

ऐसी सभाओं में शैतानी उपस्थिति में वह पंथ के एक पुजारी की उपस्थिति देखती है। संक्षेप में, उसकी परिकल्पना भ्रम के विपरीत चुड़ैल-धर्म की वास्तविक वास्तविकता को साबित करने की कोशिश करती है, जिसे हाल ही तक इस विषय के छात्रों द्वारा स्वीकार किया गया था। परिचितों पर उसकी टिप्पणी भी यह दर्शाती है कि इस धारणा के लिए सबूतों का एक बड़ा समूह मौजूद है कि यह अवधारणा भी वास्तविक घटनाओं पर आधारित है।

(मैन और अन्य जगहों पर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।) लेखक की ओर से हाल ही में किए गए शोधों ने उसे इन विचारों की वैधता के बारे में आश्वस्त किया है, लेकिन साथ ही यह विश्वास भी जोड़ा है कि जादू टोना धर्म किसी तरह से घुड़सवारी से जुड़ा हुआ था, जिसकी सटीक प्रकृति अभी भी उसके लिए अज्ञात है। झाड़ू एक घोड़े के जादुई समकक्ष प्रतीत होती है, चुड़ैलें कभी-कभी सब्बाथ पर

घोड़े पर सवार होकर जाती थीं, और एक चुड़ैल के लिए एक परीक्षण यह देखना था कि उसकी आंख में घोड़े का प्रतिबिंब या समानता है या नहीं।

क्या यह नहीं हो सकता कि डायन-धर्म प्रागैतिहासिक घोड़ा-टोटेम पंथ का अवशेष था? लेकिन यह, आखिरकार, केवल अनुमान की प्रकृति का है। लेखक ने प्री-कोलंबियन मैक्सिको में यूरोप के समान ही डायन पंथ के अस्तित्व के लिए अच्छे सबूत भी पाए हैं, और यहां तक कि कोडेक्स फेजेरवरी मेयर के नाम से जानी जाने वाली देशी मैक्सिकन पेंटिंग में एक नग्न डायन की तस्वीर भी देखी है, जिसमें वह चोटीदार टोपी के साथ झाड़ू पर सवार है। किसी भी मायने में यह यूरोप तक सीमित नहीं था, और सबसे प्राचीन मूल का था।

369.संसार**,** तल या क्षेत्र**:** थियोसोफिस्टों के अनुसार, इनकी संख्या सात है और ये इस प्रकार हैं: पुराने संस्कृत नाम, जो अब अप्रचलित हो चुके हैं, संदर्भ के लिए दिए जा रहे हैं: दिव्य, या आदि; मोनाडिक या अनुतादक, आध्यात्मिक या निर्वाण, अंतर्ज्ञान या बुद्धि, मानसिक या मानस, सूक्ष्म या काम, और भौतिक या स्थूल। ये संसार भौतिक रूप से अलग नहीं हैं जिस तरह ग्रह प्रतीत होते हैं, बल्कि एक दूसरे में प्रविष्ट हैं, और वे अपने अंतरों के लिए, उन्हें बनाने वाले पदार्थ के सापेक्ष घनत्व पर और परिणामस्वरूप प्रत्येक संसार के पदार्थ के कंपन की दरों में अंतर पर निर्भर करते हैं।

भौतिक संसार (सबसे सघन) को छोड़कर, उनके बारे में हमारा ज्ञान, जहां तक वह विस्तारित होता है, दिव्यदृष्टि पर निर्भर है, और दिव्यदृष्टिवान की दृष्टि जितनी अधिक उत्कृष्ट होती है, वह संसार उतना ही ऊंचा होता है जिसे उसकी दृष्टि भेद सकती है। प्रत्येक दुनिया में उसके उपयुक्त निवासी होते हैं, जो उपयुक्त शरीरों में लिपटे होते हैं, और चेतना की उपयुक्त अवस्थाओं को धारण करते हैं। दो सर्वोच्च दुनियाएँ, दिव्य और मोनाडिक, वर्तमान में मानवीय शक्तियों द्वारा प्राप्त करने में असमर्थ हैं, शेष पाँच अधिक या कम डिग्री में हैं।

अनुभव प्राप्त करने और विकास के उद्देश्य से मोनाड को भौतिक क्षेत्र में नीचे की ओर जाना आवश्यक लगता है, और जब यह आध्यात्मिक, अंतर्ज्ञानात्मक और उच्च मानसिक दुनियाओं पर कब्ज़ा कर लेता है, तो इसे इच्छा, अंतर्ज्ञान और बुद्धि को मूर्त रूप देने वाला अहंकार या आत्मा माना जा सकता है, जो हमेशा एक ही इकाई बनी रहती है, जो बढ़ते विकास के कारण को छोड़कर कभी नहीं बदलती है, और इसलिए अमर है।

हालाँकि, ये दुनियाएँ मोनाड को पर्याप्त गुंजाइश नहीं देती हैं और यह पदार्थ में और भी नीचे, निम्न मानसिक के माध्यम से, सूक्ष्म और भौतिक दुनियाओं में दबाव डालती है। जिन शरीरों से यह वहाँ लिपटा हुआ है, वे इसका व्यक्तित्व बनाते हैं और यह व्यक्तित्व मृत्यु को भोगता है और प्रत्येक नए अवतार में नवीनीकृत होता है। भौतिक शरीर की मृत्यु पर, अहंकार ने केवल एक वस्त्र को अलग रख दिया है और उसके बाद अगले उच्चतर संसार, सूक्ष्म शरीर में रहना जारी रखता है। सूक्ष्म शरीर की मृत्यु पर, बदले में एक और वस्त्र को अलग रख दिया जाता है, अहंकार सभी उपांगों से मुक्त हो जाता है और सघन पदार्थ में उतरने से पहले की तरह मानसिक दुनिया, स्वर्गीय दुनिया में वापस आ जाता है।

अपर्याप्त विकास के कारण अहंकार को यह कुछ अजीब लगता है, और यह फिर से पहले की तरह पदार्थ में उतर जाता है। यह चक्र बार-बार पूरा होता है, और हर बार अहंकार अनुभव और ज्ञान के एक नए भंडार के साथ लौटता है, जो मानसिक शरीर को मजबूत और परिपूर्ण बनाता है। जब अंत में यह प्रक्रिया पूरी हो जाती है, तो इस शरीर को अलग रख दिया जाता है और अहंकार को उसके आकस्मिक शरीर से ढक दिया जाता है।

फिर से यह पाता है.यह अपने आप में अजीब है और फिर से पदार्थों में उतरने का सिलसिला शुरू होता है और तब तक जारी रहता है जब तक कि आकस्मिक शरीर पूरी तरह से विकसित नहीं हो जाता। शेष दो दुनियाएँ अपूर्ण रूप से ज्ञात हैं, लेकिन अंतर्ज्ञानात्मक, जैसा कि इसका नाम इंगित करता है, वह है जहाँ अहंकार की दृष्टि चीज़ों को वैसी ही देखने के लिए तेज होती है जैसी वे हैं, और आध्यात्मिक दुनिया में दिव्य और मानव एकीकृत हो जाते हैं और दिव्य उद्देश्य पूरा हो जाता है। (विभिन्न पर लेख देखें.

370.त **:** जीवित व्यक्ति का भूत या **"**डबल**" :** जिसे आम तौर पर मृत्यु का शगुन माना जाता है। प्रेत शरीर में अपने प्रोटोटाइप से काफी मिलता-जुलता है, यहाँ तक कि कपड़ों के विवरण में भी। ऐसा माना जाता है कि लोगों के लिए अपने स्वयं के प्रेत देखना संभव है, और जिन लोगों को इस तरह से विघटन के बारे में चेतावनी दी गई है, उनमें रानी एलिजाबेथ, शेली और रूस की कैथरीन शामिल हैं, जिनमें से बाद वाली ने अपने "डबल" को सिंहासन पर बैठे देखकर अपने गार्डों को उस पर गोली चलाने का आदेश दिया।

लेकिन दूसरों के प्रेत एक या अधिक व्यक्तियों को दिखाई दे सकते हैं। लॉर्ड बालकार्स ने अपने मित्र "बोनी डंडी" के प्रेत को उस समय देखा जब वह किलीक्रैंकी में गिर गई, जबकि बेन जोंसोआ ने अपने सबसे बड़े बेटे के डबल को

तब देखा जब मूल प्लेग से मर रहा था। यह विश्वास महाद्वीप पर भी पनपता है, और ब्रिटेन के विभिन्न भागों में इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे '• वफ़," "स्वार्थ," "टास्क," "फ़ाई," आदि। प्रेत के विभिन्न रूप आयरिश "फ़ेच" (ए.वी.) और वेल्श "यूड्रिथ" हैं।

स्कॉटलैंड में पहले यह माना जाता था कि मरने वाले व्यक्ति के प्रेत को एक विंडिंग-शीट में लिपटा हुआ देखा जा सकता है। कफन जितना ऊपर जाता था, मृत्यु उतनी ही निकट होती थी। प्रेत-दर्शन के समान कुछ आधुनिक मानसिक विज्ञान के दायरे में आता है, और प्रेत को विभिन्न तरीकों से समझाया जाता है, "सूक्ष्म शरीर" के प्रक्षेपण के रूप में, अपने जीवित प्रोटोटाइप के व्यक्ति से एक उत्सर्जन, या, अधिक वैज्ञानिक रूप से शायद, एक टेलीपैथिक आधार पर। इस मामले में एक प्रसिद्ध मामला बिर्कबेक घोस्ट का है, जहां तीन बच्चों ने अपनी माँ की मृत्यु से कुछ समय पहले उसके प्रेत को देखा था।

यह उदाहरण, जो कि साइकिकल रिसर्च सोसाइटी की "कार्यवाही" में दर्ज यह रिपोर्ट इस तथ्य के कारण उल्लेखनीय है कि श्रीमती बिर्कबेक मरने से पहले अपने बच्चों के साथ समय बिताने के कारण सचेत थीं।

371.यक्ष या जक **:** भारतीय राक्षस या शैतान की एक प्रजाति। श्री क्रुक्स कहते हैं: "जह यक्ष का आधुनिक प्रतिनिधि है, जो बेहतर समय में धन के देवता कुबेर का सेवक था, जिस कार्य में उसे गुह्यक द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। यक्ष का चरित्र कभी-कभी दुष्ट शैतान के रूप में प्रकट होता है। लोक-कथाओं में, यह स्वीकार किया जाना चाहिए, यक्षों की एक अस्पष्ट प्रतिष्ठा है।

एक कहानी में महिला, या याहशिनी, रात में यात्रियों को भ्रमित करती है, उनके माथे पर सींग उगाती है, और अंत में उन्हें खा जाती है; दूसरी में यक्षों के पैर चुरेल की तरह उल्टी दिशा में मुड़े हुए हैं और आँखें तिरछी हैं; तीसरी में वे नायक को नायिका से अलग कर देते हैं क्योंकि वह अपनी शादी के दिन उन्हें उचित प्रसाद नहीं चढ़ा पाता है।

दूसरी ओर, एक चौथी कहानी में यक्षिणी को स्वर्गीय सौंदर्य से युक्त बताया गया है; वह फिर से प्रकट होती है जब उसे नायक के पास लाने के लिए कब्रिस्तान में बलि दी जाती है। शक्ति, एक स्वर्गीय युवती के रूप में सुंदर रूप से सजी हुई, सोने के रथ पर बैठी हुई, सुंदर लड़कियों से घिरी हुई; और अंत में, एक ब्राह्मण कुछ बौद्ध तपस्वियों से मिलता है, उपासना व्रत करता है, और एक देवता बन जाता है, अगर ऐसा न होता कि एक दुष्ट व्यक्ति ने उसे शाम को भोजन करने

के लिए मजबूर किया, और इस तरह उसका पुनर्जन्म एक गुह्यक के रूप में हुआ।

कश्मीर की आधुनिक लोक-कथाओं में, यक्ष येच या याच में बदल गया है, जो एक विनोदी, यद्यपि शक्तिशाली, गहरे रंग की सिवेट बिल्ली के आकार का प्रेत है, जिसके सिर पर एक सफेद टोपी है। यह छोटी ऊँची टोपी आयरिश परियों की निशानियों में से एक है, और इटली के इनक्यूबोन्स टोपी पहनते हैं, जो उनके छिपे हुए, गुप्त स्वभाव का प्रतीक है। येच के पैर इतने छोटे हैं कि लगभग अदृश्य हैं, और यह बिल्ली के समान चीखता है।

यह कोई भी आकार ले सकता है, और यदि इसकी सफेद टोपी सुरक्षित हो जाए, तो यह स्वामी का सेवक बन जाता है, और सफेद टोपी उसे अदृश्य बना देती है। 44 विष्णु पुराण में हम पढ़ते हैं कि विष्णु ने यक्षों को भूख से क्षीण, घृणित रूप और बड़ी दाढ़ी वाले प्राणियों के रूप में बनाया था, और भोजन के लिए रोने की उनकी आदत से उन्हें यह नाम दिया गया था। बौद्धों द्वारा उन्हें दयालु आत्मा माना जाता था। उनमें से एक एक प्रकार से ... कालिदास के मेघदूत या *क्लाउड मेसेनगेर' में कोरस है। फिर भी हम याक अलवाक के बारे में पढ़ते हैं, जो बौद्ध किंवदंती के अनुसार, एक बरगद के पेड़ में रहते थे, और जो कोई भी उसके पास जाता था उसे मार देते थे; जबकि सीलोन में उन्हें राक्षसों के रूप में दर्शाया गया है जिन्हें बुद्ध ने नष्ट कर दिया था। बाद के हिंदू धर्म में वे आम तौर पर अच्छी प्रतिष्ठा के हैं, और उनमें से एक को इंद्र ने जैन संत महावीर का परिचारक नियुक्त किया था।

372.योग**, :** जिसका अर्थ है "मिलन", विकासवादी प्रक्रिया में सहायता के लिए थियोसोफी में लागू किया जाता है। विकास का थियोसोफिकल विचार एक सार्वभौमिक चेतना की कल्पना करता है जिसमें से विशेष चेतना आई है और जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति विकास के मार्ग पर वापस लौट रहा है। इस मार्ग पर यात्रा योग द्वारा तेज की जा सकती है, प्रत्येक व्यक्ति का सार्वभौमिक चेतना के साथ मिलन।

किसी विशेष विचार पर विचार की एकाग्रता से, वह विचार, समय के साथ विचारक के संविधान में काम करता है, ताकि, यदि विचार अच्छा है तो वह विकास की प्रक्रिया में तदनुसार मदद करेगा। यह सामान्य सिद्धांत, पिछले अनुभव के प्रकाश में मानव मन की विविध गतिविधियों पर लागू होता है, व्यक्तियों और समुदायों दोनों के चरित्रों को ढालने में बहुत महत्व और प्रभाव रखता है। (पथ, कर्म, थियोसोफी देखें।)

373.ज़हूरी या ज़होर्लेस: स्पेन में यात्रा करने वाले फ्रांसीसी लोगों के पास अक्सर ज़हूरी के बारे में बताने के लिए अजीबोगरीब कहानियाँ होती थीं; ये लोग इतने तेज़ नज़र वाले थे कि वे पानी की धाराओं और धरती में छिपी धातु की नसों को देख सकते थे, और दफन खजाने और मारे गए लोगों के शवों का पता लगा सकते थे। प्राकृतिक आधार पर स्पष्टीकरण दिए गए हैं। ऐसा कहा जाता है कि ये लोग ऐसी जगहों पर उठने वाले वाष्प से जानते थे कि पानी कहाँ मिलेगा; और वे अपने आस-पास उगने वाली विशेष जड़ी-बूटियों से सोने, चाँदी और तांबे की खदानों का पता लगाने में सक्षम थे।

लेकिन स्पेनवासी के लिए ऐसी व्याख्याएँ असंतोषजनक हैं; वे यह मानते रहते हैं कि ज़हूरी अलौकिक क्षमताओं से संपन्न हैं, कि वे राक्षसों के साथ तालमेल रखते हैं, और कि अगर वे चाहें तो बिना किसी शारीरिक सहायता के, विचारों को पढ़ सकते हैं और रहस्यों की खोज कर सकते हैं जो सामान्य मनुष्यों की स्थूल इंद्रियों के लिए एक सीलबंद किताब की तरह हैं। बाकी के लिए, ज़ाहुरियों की आँखें लाल होती हैं; और ज़ाहुरी बनने के लिए यह ज़रूरी है कि उसका जन्म गुड फ्राइडे के दिन हुआ हो।

374.ज़ापान : विएरियस के अनुसार, नर्क के राजाओं में से एक।

375.ज़्ल्टो: इतिहास में दर्ज सबसे उल्लेखनीय जादूगरों में से एक। वह चौदहवीं शताब्दी के अंत में बोहेमिया के राजा वेन्सलाउस (बाद में जर्मनी के सम्राट) के दरबार में एक जादूगर था, और उसके सबसे प्रसिद्ध कारनामों में से एक ओल्मुट्ज़ के बिशप डुलसावियस ने अपने बोहेमिया के इतिहास में दर्ज किया है। वेन्सलाउस की सोफिया के साथ शादी के अवसर पर, जो बावेरिया के इलेक्टर पैलेटाइन की बेटी थी, इलेक्टर को पता था कि उसके दामाद को करतब दिखाने और जादुई प्रदर्शनियों का शौक है, इसलिए उसने अपने साथ कई मोरिस-नर्तक, बाजीगर और ऐसे ही मनोरंजन करने वाले लोगों को लाया।

जब वे अपना प्रदर्शन देने के लिए आगे आए तो ज़ीटो दर्शकों के बीच चुपचाप खड़ा रहा। हालाँकि, वह पूरी तरह से अनदेखा नहीं था, क्योंकि उसकी उल्लेखनीय उपस्थिति ने उसके आस-पास के लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उसकी सबसे अजीब विशेषता उसका मुँह था, जो वास्तव में कान से कान तक फैला हुआ था।

कुछ देर तक चुपचाप जादूगरों को देखने के बाद, ज़ीटो को यह देखकर गुस्सा आ गया कि जादूगरों ने किस तरह से चालें चल रही थीं, और मुख्य जादूगर के पास जाकर उसने उसे अयोग्यता का ताना मारा। प्रतिद्वंद्वी प्रोफेसर ने अपने

प्रदर्शन का जोरदार बचाव किया, और एक चर्चा शुरू हुई जो अंत में ज़ीटो द्वारा अपने प्रतिद्वंद्वी को निगलने के साथ समाप्त हुई, जैसे ही वह खड़ा था, केवल उसके जूते छोड़ दिए, जो उसने कहा कि गंदे और खाने के लिए अनुपयुक्त थे। इस असाधारण करतब के बाद, वह थोड़ी देर के लिए एक कोठरी में चला गया, जहाँ से वह कुछ ही देर में बाहर आया, प्रतिद्वंद्वी जादूगर का हाथ पकड़कर आगे बढ़ा। फिर उसने अपना एक प्रदर्शन किया जिसने पूर्व प्रदर्शन को पूरी तरह से छाया में डाल दिया।

उसने खुद को कई अलग-अलग आकृतियों में बदल लिया, पहले एक व्यक्ति का रूप लिया और फिर दूसरे का, जिनमें से कोई भी खुद या एक दूसरे से कोई समानता नहीं रखता था। वह खलिहान के दरवाज़े के पक्षियों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी में राजा की गाड़ी के साथ-साथ चलता था। - जब मेहमान खाने के लिए इकट्ठे होते थे, तो वह उनके मनोरंजन या झुंझलाहट के लिए, जैसा भी मामला हो, उन पर कई तरह की परी चालें चलता था।

वास्तव में, वह हमेशा एक बहुत ही शरारती प्राणी था जैसा कि उसके बारे में बताई गई एक और कहानी से पता चलता है। पैसे की कमी का बहाना करते हुए, और जाहिर तौर पर कुछ पाने के साधनों की तलाश में बेचैनी से, उसने आखिरकार एक मुट्ठी मकई ली, और इसे तीस मोटे सूअरों जैसा बना दिया। इन्हें वह माइकल के पास ले गया, जो एक अमीर लेकिन बहुत ही कंजूस व्यापारी था। बाद वाले ने थोड़ी-बहुत मोल-तोल करके उन्हें बेच दिया, लेकिन उसे चेतावनी दी गई कि वह उन्हें नदी में न पिलाए।

लेकिन चेतावनी की अवहेलना की गई, और सूअर मकई के दानों में बदल गए। क्रोधित व्यापारी ज़ीतो की तलाश में चला गया, जिसे उसने आखिरकार एक शराब बनाने वाले की दुकान में पाया। व्यर्थ में माइकल चिल्लाया और मुहर लगाई, जादूगर ने कोई ध्यान नहीं दिया, बल्ला अमूर्तता के दौर में लग रहा था। डीलर, खुद को संभालते हुए, ज़ीटो* के पैर को पकड़ लिया और उसे जितना हो सके उतना जोर से खींचा। उसके निराशा में, पैर और पैर सीधे अलग हो गए, जबकि ज़ीटो ने जोर से चिल्लाया, और माइकल को जज के सामने घसीटा, जहाँ दोनों ने अपनी शिकायतें पेश कीं। निर्णय क्या था, इतिहास नहीं बताता, लेकिन यह संभावना नहीं है कि सरल ज़ीटो इससे भी बदतर हो।

<u>निष्कर्ष</u>

उपर्युक्त - **'**अलौकिक जगत के रहस्यमयी शब्द**'** ; जनसाधारण के लिए उपयोगी है। क्योंकि यह रहस्यमयी ज्ञान हमारे लिए उतना ही आवश्यक और उपयोगी सिद्ध होता है, जितना कि अंधे व्यक्ति के हाथ में लाठी, जब हम अपनी भौतिक मृत्यु के बाद परलोक या अलौकिक जगत की यात्रा पर निकलते हैं।

क्योंकि हम में से हर एक को उस मृत्यु के पश्च्यात के अलौकिक जीवन में , केवल स्वयं को अकेले ही चलना पड़ता है। वह मज़िल अकेले ही तय करनी पड़ती है। उस सूक्ष्मलोक मार्ग में कोई संघी साथी नहीं होते। ऐसा पारलौकिक दुनिया अकाट्य नियम है।

<u>THE END</u>